[संक्षिप्त विद्यार्थी संस्करण]

बूँद और समुद्र

•

अमृतलाल नागर

किताब महल, इलाहाबाद

१९७३

प्रथम सक्षिप्त विद्यार्थी-सस्करण १९६९
तृतीय सक्षिप्त विद्यार्थी सस्करण १९७३

ebookspdf.in

प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद
मुद्रक—ईगल ऑफसेट प्रिन्टर्स, १५ थार्नहिल रोड, इलाहाबाद

ebookspdf.in

'बूंद और समुद्र' के प्रथम सस्करण की भूमिका मे इसके यशस्वी लेखक, हिन्दी के अनन्य उपन्यासकार श्री अमृतलाल नागर ने लिखा

"इस उपन्यास मे मैने अपना और आपका—अपने देश के मध्यवर्गीय नागरिक-समाज का गुण-दोष भरा चित्र ज्यो-का-त्यो आँकने का यथामति, यथासाध्य प्रयत्न किया है, अपने और आपके चरित्रो से ही इन पात्रो को गढा है। इस सत्य को स्वीकार करते हुए यह कहना भी अत्यावश्यक प्रतीत होता है कि पात्र या पात्री के रूप मे किसी एक विशेष, अविशेष व्यक्ति का ज्यो-का-त्यो चित्रण मैंने कही नही किया है। किसी के प्रति असम्मान की तनिक-सी भी भावना इसमे नही है। इसमे आयी छोटे पात्रो की कहानियाँ भी मेरे वर्षों के प्रयत्न से, जाने कहाँ-कहाँ से बटुर कर जमा हुई है, किसी एक नगर या मुहल्ले की नही है।

उपन्यास के क्षेत्र के रूप मे मैने लखनऊ और उसमे भी खास तौर पर चौक को ही उठाया है। यह इसलिए किया कि नागरिक-सभ्यता की परम्परा देखने मे, बोली-बानी का रग घोलने मे मुझे सबसे अधिक सुभीता यही हो सकता था। जिन गलियो मे मेरे उपन्यास की घटनायें घटी है, वे गलियाँ हूबहू लगने पर भी लखनऊ के वास्तविक चौक मे आपको ढूँढे नही मिलेगी। एक तरफ जहाँ शहर का असलीपन दरसाने के लिए मैने यहाँ के अनेक नये-पुराने नागरिको, अखबारो, सस्थाओ और स्थलो के वर्णन किये है, यही नही बल्कि कथा-क्षेत्र के काल मे नगर मे होने वाली बहुत-सी घटनाओ का भी जिक्र किया है, वही सारा चित्रण कहानी से गुँथकर बेलौस भी रक्खा है।"

और, इसके दूसरे सस्करण के समय नागर जी ने लिखा

"पाठको ने उपन्यास को सराहा, दूसरा सस्करण छपने का सुदिन आया। इससे मेरी आस्था और भी बलवती हुई है। इस पुस्तक के रूसी अनुवाद का पहला सस्करण भी एक वर्ष के भीतर ही चुक गया। स्वदेशी और विदेशी विद्वान् आलोचको के विचारो से मैने इस उपन्यास मे अपनी शक्ति और कमजोरियो को पहचाना है, पाठको के पत्रो से भी बहुत कुछ सीखा है, कृतज्ञ हूँ। इस सस्करण मे मैने थोड-बहुत सशोधन अवश्य किये है, परन्तु मूल ढाँचे पर कही आँच नही आने दी।"

और नागर जी की ही बात को आगे बढाते हुए हम निवेदन करना चाहते है कि हमारे विशेष आग्रह पर स्वय उन्होने इसे काट-छाँट कर इसका सक्षिप्त सस्करण तैयार किया, और फिर 'मूल ढाँचे पर कही आँच नही आने दी'।

इस प्रकार यह अद्भुत उपन्यास सामान्य पाठको और विश्वविद्यालय के छात्रो के लिए भी सहज हो गया है। आशा है, अब वे भी इसका अवगाहन करेंगे और भरपूर रस लेंगे।

—प्रकाशक

—————→

१

दोपहर की धूप छतो पर जाडे के दरबार लगाये चारो ओर पसर रही है। औरतो का सीना-पिरोना चल रहा है, गेहूँ फटके जा रहे है, दाले बीनी जा रही है, साग बनाये जा रहे है, कही आराम भी हो रहा है। स्कूल न जानेवाले बच्चो की हुडदग मची है, पतगे भी उड रही है। कही कोई पेशनयाफ्ता आज्ञाकारी-कमासुत सतानो की तरह रक्षा और निश्चिन्तता देनेवाले घाम को सराहता हुआ बुढापे के शरीर पर चढे हुए ऊन और रुई के गिलाफ बेखौफ उतार कर हाथो से घुटने सहलाते हुए अपनी गठिया खोल रहा है, देर से रोटी खानेवाले घरो की छतो पर अब भी कोई-कोई सिर पर लोटे उँडेलते हुए हरगगे कर रहे है। जागती दुनिया के फटखट-झनझन-धमधम करते, चढते-उतरते, क्रोध-ममता-खीझ-गभीरता और हँसी-मजाक से भरे हुए सतरगे स्वर गूँज से सिमट गये है—गूँज अणु-अणु मे व्याप रही है। कही से कोई एक भी स्वर का तार छू ले आज की दुनिया गूँज उठती है।

लखनऊ के एक मुहल्ले मे भभूती सुनार की दोनो जवान बहुएँ अपने मुँडेरे पर झुकी हुई पडोसिन तारा से बाते कर रही है। नीची छत पर भभूती की दीवार से सटाकर रक्खे गये चीड के खाली बक्सो पर बैठकर तारा अपनी पडोसिन सखियो की मुँडेर तक उठ आई है। सलाइयाँ रोक, चुन्ने-मुन्ने स्वेटर के फदो पर नजर डालते हुए, भवो मे बल डालकर तारा कह रही है—"हमे तारा-तारा पुकारना अच्छा नई लगता—देखो भइ, बुरा न मानना। 'तारा' तो बस एक उनके मुँह से ही मीठा लगता है हमे।"

बडी के दाहिने कान की जडाऊ तरकी पर धूप पड रही है, सिर के झटके से हीरे की कनियाँ हल्की निलौस लिये झलझला उठी। गोरे गाल पर पजा टिकाने का अदाज लिये वह बोली—"ऐ तो अब हम तुम्हे और क्या कहके पुकारेगे ?"

"मिसिज वर्मा कहा करो। हम भी तुमको ऐसे ही कहा करेगे।"

छोटी के मोटे होठ का तिल सिकुडा, नाक चढी, लौग का हीरा झलझलाया, भवो पर गुमान के तेवर चढे, गर्दन मे मचलन से लोच आई, वह बोली—"तो तुम हमको क्या पुकारोगी—मिसिज सुनार ? हम तो भाई, नही बोलेगे इस नाम से। हमे बुरा लगेगा।"

बडी बोली—"इसमे काहे का बुरा मानना ? जो जिसकी जात होगी, कही जायगी, और फिर हम लोग कोई नीच कौम थोडी है, बैश्ए (वैश्य) है।"

तारा इटरमीडिएट तक पढी है। उसने अतरजातीय प्रेम-विवाह किया है, पति

के साथ अक्सर हजरतगज, क्वालिटी, सिल्वरस्नो रेस्तराँ, कॉफी हाउस तक दुनिया को देखने के अवसर पाती है। अपने से कम पढी, कम आजाद भभूती की बहुओ की ओर देखकर, आत्मीयता-भरे स्वर में नवयुग की गर्वभरी घोषणा हुए तारा बोली—"अरे बहन, ऊँच-नीच की बाते अब कौन मानता है। और हम तो जात-पाँत ही को नही मानते।"

बडी की नजरो मे तारा हीरोइन है। उसके गौरव से आप गर्वित, गद्गद् हो कहा—"अरे तुमने तो मानना क्या, कर दिखाया बहना। खुल खेली सजन सग!"

वह हँसी। वे दोनो भी हँसी। तारा छोटी की नजरो मे भी हीरोइन है। तारा अपनी नजरो मे भी हीरोइन है।

तारा की सुघर-साँवली सूरत को नशीली चितवन से निहारते हुए, कसक सिंगार-भरे चचल स्वर मे बडी बोली—"कुछ भी कह लो भाई, 'लौ मैरिज' मे होता अजब मजा है। एक बार जब हम एर्थ मे पढते थे तो हमारा भी 'लौ' हुआ था एक लडके से।"

एक क्षण के लिए बडी की गुदगुदी-झेपभरी नजरे पुराने नजारे मे खो गईं। छोटी के चेहरे पर 'हाय दैया' का भाव उदय हुआ। रँगे नाखूनोवाली बीच की दो उँगलियाँ मुस्कुराहट से खुले होठो पर झरोखे-सी जड गईं। और तारा ऐसे हँसी जैसे फर्स्ट आने-वाली छात्रा को देखकर शाबासी देते हुए अध्यापिका हँसती है।

नीचे की छत पर अपनी खटोलिया में पडी हुई बडी की तीन महीने की बिटिया रोने लगी। उसका चार बरस का लडका पास सायबान के नीचे बुखार में पडा सो रहा था। उसके पास ही बैठी खरल मे हिंगाष्टक चूर्ण का नुस्खा घोटती हुई सास ने पुकारा—"बडी! अरे बिटिया रोय रही हैगी।"

उधर तारा बडी बहू से पूछ रही है—"तुम्हारा लवर कैसा था?"

बिटिया हाथ-पैर फेक-फेककर रो रही है। उसकी दादी दत्तचित्त हो चूरन घोट रही है। उसकी बुआ नीचे से कोट पहने, मुँह और हाथ मे पान दबाये, सर्दी मे ठिठुरती हुई ऊपर आईं। एक मिनट नदो मा के पास चुपचाप धूप मे खडी रही, फिर चलते हुए बोली—"ताई के घर जा रही हूँ।"

अम्मा बोली—"उधर से बडी को भेजती जइयो। बतियाने मे ऐसी मगन होती हैगी ये लोग कि लडकन-बिटियन तलक का होस नही रहता।"

सत्ताइस बरस की उमर मे मायामोह से विरक्त, आजकल के लडके-लडकियो, बराबर की उमरवालियो, घर-गृहस्थी मे रमी हुई सुहागिनो और गोदी के बच्चो से घृणा करनेवाली, स्वभाव की भुस्सी, व्रत-नियम-उपवास से कठोर, फीकी कांति वाली नन्दो धरम-सोध और परनिंदाव्रती बडीबूढियो की सगति मे अपना परलोक बनाया करती है।

ताई के घर जाने के लिए नदो ऊपर की छत पर चढ़ी जहाँ उसकी दोनों भावजें तारा से बातें कर रही थी। दबे पाँव छत पर आते हुए नदो अपने कान इस तरह से साधे थी जैसे बिल्ली की निगाह अपने शिकार पर सधती है।

नदो को परनिंदा के लिए बडी अच्छी सामग्री मिल रही थी, पर वैसे ही अम्मा ने फिर जोर से पुकारा—"अरे बडी !"

और दोनो बहुएँ तुरन्त घूमकर देखने लगी। चोर-सी खडी ननद को देखकर दोनो भावजे भी सकपकाई और खुद ननद भी। नदो तेजी से अपने को सम्हालती हुई ताई की छत पर जाने के लिए मुँडेर की तरफ बढ गई।

२

ताई राजाबहादुर सर द्वारकादास अग्रवाल की पहली पत्नी है। राजाबहादुर लखनऊ के रईसो की नाक है। अग्रेजी जमाने मे डिप्टी कमिश्नर से लेकर चीफ सेक्रेटरी और होममेंबर तक, सयुक्त-प्रात के गवर्नर से लेकर वायसराय तक—सब जगह उनकी पहुँच थी। उनका आदर होता था। स्वराज हो जाने पर भी श्री द्वारकादास की पहुँच गो भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री तक नही रही, फिर भी उनका दबाव कम नही हुआ। नई दिल्ली के अनेक उच्च अधिकारी तथा उत्तर-प्रदेश के बडे-बडे मत्री और अफसर अब भी निजी तौर पर उन्हे राजा साहब कहकर ही सबोधित करते है। उनका सरकारी काम-काज भी सिद्धि की मजिल पर कानून की सीढियो से नही, वरन् पक्षपात की लिफ्ट से चढता है। राजाबहादुर की दानशूरता और धर्मनिष्ठा के सबध मे बडे-बडे शकराचार्य तक अपने दैवी फतवे दे चुके है। हर साल उनके यहाँ सत-सम्मेलन होता है, कई लाख रुपये खर्च कर उन्होने लक्ष्मीनारायण का मदिर बनवाया है, जो अपने देवताओ के नाम से नही, बल्कि अग्रवाल-मदिर के नाम से प्रसिद्ध है। कहते है उनकी नई हवेली मे उनके द्वारा स्थापित किये गये लक्ष्मी-चबूतरे पर जो अखड दीप जलता है उसका काजल काला नही, वरन् केसरिया पडता है। ऐसे पति की सुहागिन ताई गली-गली की छू-छू बनी जमाने भर की घृणा और अनादर बटोरती है, इसे लेकर भावनाशील बडे-बूढे अक्सर भाग्यवाद का प्रचार किया करते है।

ताई जब ब्याह कर आई उस समय द्वारकादास के घर मे खाने के लाले पडे हुए थे। पैतृक सपत्ति की झकार बाबाराज में ही छुनन-मुनन के घुँघरुओ मे समा चुकी थी, बची-खुची गूँज पिता के समय म विलीन हो गई। कर्ज हो जाने पर उन्होने गोमती मे डूबकर अपनी इज्जत बचाई। पुरखो की हवेली (जो इस समय फिर द्वारकादास की सपत्ति होकर ताई के कब्जे मे है) पुरखो का कर्ज उतारने के लिये नीलाम के बोल चढ गई। द्वारकादास की माँ उन्हे और अपनी दो कुँआरी बेटियो को लेकर हवेली से लगे हुए एक छोटे-से मकान में गुजर करने लगी। द्वारकादास उस समय चौदह बरस के थे। वे एक रिश्तेदार के साथ सराफे की दलाली का काम सीखने लगे। जैसे-तैसे करके इनकी बडी बहन का ब्याह हुआ। इनका भी ब्याह हुआ। ताई लुटे वैभव की कुल-लक्ष्मी बनकर पधारी।

ताई का पीहर हाथरस मे था। वे लोग गो लुट चुके थे, फिर भी बडे आदमी थे। ताई के माँ-बाप बचपन मे ही मर चुके थे। उस समय तक यह अपने बडे परिवार में एक ही एक बच्ची थी इसलिए बडी दुलारी थी। दादा-दादी के लाड ने इन्हे शुरू से ही हठीला और बदजबान बना दिया था। जब दूसरे चाचाओ के आगे सतानें आईं, लाड-दुलार बँटने लगा तो ताई चिढने लगी। लाड से बिगडी हुई जबान अतर की हिंसा से तीखी हो गई। जब तक दादा-दादी रहे, इन्हे कोई कुछ न कह सका। उसके बाद दुरदुरमारी हो गईं, अपनी तेज जबान के कारण सारे घर की आँखो मे खटकने लगी। जैसे-जैसे इनका निरादर और उपेक्षा हुई वैसे ही इनका अतर भी घृणा से भरता गया। वे मातृसगध से दूर रहकर इकलसूरी हो गई। चाचाओ ने बिना विशेष दान-दहेज के द्वारकादास ऐसे फकीर के साथ ब्याह कर इनसे सदा के लिये छुट्टी पा ली, फिर कभी न्योतने-बुलाने का नाम न लिया।

ब्याह के बाद द्वारकादास के भाग्य ने पल्टा खाया। दलाली में बिगडे रईस-रजवाडो, नवाबो के घर का कीमती सामान औने-पौने दामो इनके हाथ लगा। उसीसे बढने लगे, सराफे की छोटी-सी दूकान कर ली। अच्छे दिनो के आने का श्रेय उन्होंने अपनी पत्नी के भाग्य को दिया और इसीलिए वे उसकी जबान के हलाहल को शिव की तरह पान कर गये।

पहले महायुद्ध में भाग्यलक्ष्मी द्वारकादास पर हजार अदायें दिखाकर रीझी। उसी समय एक पुराना मकान खरीदने पर उन्हे गडा धन भी हाथ लग गया। इसके बाद तो द्वारकादास की महिमा दिग्दिगन्त में व्याप गई। ऐश्वर्य पाकर स्वाभाविक रूप में उनकी इच्छा होने लगी कि पत्नी ऐसी होती, जो उनका मान-सम्मान करती, प्यार करती, उनकी गोद में नये वैभव का उत्तराधिकारी बैठाकर मोद मनाती।

विवाह के कुछ वर्ष बाद एक बार ताई के दिन चढे थे। उनसे घृणा करनवाली सास भी तब उनका लाड करने लगी थी। परन्तु जब ताई ने लडकी को जन्म दिया तो घर भर के हौसले ठडे पड गये। सौरी मे ही सास का कोई बोल-कुबोल ताई के कानो में ठनक गया और उसके बाद ही मन की किसी हीन-भावना की प्रतिक्रिया में उन्हे ऐसा सदेह हो गया कि घरवाले उनकी लडकी को मार डालना चाहते हैं। इस कारण को लेकर उन्हे अपने पति, सास, ननद, नौकर-चाकर—सारे जगत् से तीव्र घृणा हो गई। प्राय चौबीसो घटे अपने कमरे के द्वार बद रखकर वे अपनी बिटिया का दुलार किया करती, पति के लाख समझाने पर भी उन्होंने एक न मानी। लडकी आठ महीने की होकर जाती रही। ताई का शोक घर की शाति को सोख गया। बाहरी ऐश्वर्य से दीप्त होकर भी कुलदीपक के बिना द्वारकादास के मन में घटाटोप अँधेरा छाया रहा—अँधेरा दिनो-दिन बढता रहा। द्वारकादास ने हारकर फिर सेहरा बाँधने का निश्चय किया। जिस दिन उनकी दूसरी बरात चढ़ी, उसी रात ताई घर छोडकर चली गईं।

अपने पुरोहित को गले पडी मेजबानी के भार से मुक्त कर आठ दिन बाद द्वारकादास ताई को इस बात पर राजी कर सके कि वह उनके पुरखो की हवेली में, जो कुछ दिनो पहले ही उन्होंने खरीदी थी, रहेगी। ताई की जनम-जिंदगी तक उस पर उनका ही

अधिकार रहेगा, तथा भरण-पोषण, तीरथ-बरत के लिए दो सौ रुपया प्रति मास उनकी सेवा में नियमित रूप से पहुँचता रहेगा।

तैंतीस वर्षों से यह क्रम अविच्छिन्न रूप से चल रहा है। इतने वर्षों में धर्म-सरक्षक, गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक, दानवीर राजाबहादुर सर द्वारकादास अग्रवाल के० सी० आई० ई० की पहली घरवाली जगत्-ताई बनकर लडाका, टोनही, मनहूस आदि उपाधियो से विभूषित होकर जमाने भर की 'छू-छू' बन गई। उनके जादू-टोने के सैकडो किस्से प्रसिद्ध है। कहते हैं, ताई रात के बारह बजे कुछ दिनो तक किसी मेहतर के यहाँ जादू-टोना सीखने भी जाती थी। काले डोरे की करधनी मे छोटा-सा चाकू और कैंची बाँधकर उन्होने जात-बिरादरी और मुहल्ले-टोले के घरो मे गजब ढाये हैं—किसी के पलँग की पाटी पर सेंदुर मला है, किसी के तकिये में सवा गज लबा काला डोरा पिरोकर सुई खोस आई है, कही साही का काँटा खोस आई है, किसी की ब्याह की चुनरी चौकोर काटी है, कही नन्हें-मुन्ने के चँदोवे मे तेल का टपका लगाकर मारण-मत्र चलाया है, किसी लडकी की बीच-माँग के बाल काटकर उसे बाँझ बनाया है, किसी के दरवाजे पर चालीस दिन तक शाम को दिया बालकर रक्खा है, किसी के लिये चौराहे पर उतारे रक्खे है। ताई अनेक बार टोना करते पकडी गई है, सैकडो बार लडाइयाँ हुई हैं, मारी-पीटी गई है, घर-घर के दरवाजे इनके लिए बद हुए हैं। हर घर के अपशकुन का बोझ ताई की जान पर पडा है।

इस समय धूप मे बैठी बाल सुखा रही ताई को पास-पडोस की छतो का शोर खल रहा है। अपने कच्चे-पक्के बालो पर तेजी से उगलियाँ चलाकर उन्हे सुखाते हुए वे बडबडा रही हैं—"मरो को मौत भी नही आती। सात जलम के दुश्मन निगोडे जहाँ बैठो वही हाय-हाय!"

अगर ताई की जीवन भर की बडबडाहट का रस्सा बँटा जाय तो हनुमानजी अपनी दुम बढा-बढ़ाकर थक जायेंगे, मगर दुम से रस्सा बडा निकलेगा। ताई को सारी दुनिया से शिकायत है, हरदम शिकायत है, फिर बडबडाहट का अत क्योकर हो? छम्मन बजाज की छत पर जोर-जोर से हँसती हुई लडकियाँ बहुएँ ताई की सात जनम की दुश्मन है—"निगोडियो के गले दाई ने बाँस से खोले थे—जब देखो तब हा-हा-हा-हा!" फिर मुँडेर पर ताई के 'निगोडे खसम' सा कौआ बैठकर बीट कर गया, फिर आसपास के रेडियो खुल गये—"हम तुमसे मुहब्बत करके सनम", "भाड मे जायँ निगोडे सनम!" गुन्नो पुरतानी की छत पर होनेवाली सास-बहू की काँव-काँव से कान पक गये—"राँड की जबान बुढापे मे भी कतर-कतर-कतर! ऊँह!" लाले दलाल का लडका अपनी छत पर चिल्ला उठा—"अरे साबुन दे नई गई चुडैलो? हमरा पानी ठडा हुआ जाय रहा हैगा।" ताई के कानो में खौलता तेल पडा—"हाय-हाय! कडसे चिल्लामें हैं निगोडे डाकू जैसे। सत्यानास हो जाय मरो का। बारा-बारा बजे नहायेंगे—अघोरी! ये भभूती नासपीटे की बहुएँ निगोडी आँखो के आगे ही मानुसगध जइसी खडी है। मरे कही भी दो घडी चुप करके बैठने नही देते! ऊँह! अरे, जइसा-जइसा ये सब लोग मेरे ऊपर जुलुम ढामें हैंगे, कलपामें हैंगे, बैसा इनकी सात पीढियो के आगे आवेगा। इनके तन-तन मे कीडे पडेगे। मरो को कफ़न तलक नही जुडेगा। फिर आई—फिर आई कलमुँही! अरे तेरे तन-तन में कीडे. "

मरा चूहा मुँह में दबाये बिल्ली नीचे से आती दिखाई पड गई। ताई बडबडाना छोडकर चीख उठी, और छत पर बडा बाँस लेकर झपटी। बिल्ली जीनेवाले सायबान पर तेजी से छलाँग मार, ताई की ऊपरवाली छत पार कर भभूती की छत की तरफ बढी, उसी समय नदो भी उधर से कूदी। जरा-से फासले पर ही अचानक बिल्ली कूदने से नदो चिहुँक उठी।

ताई उसे देखकर बोली—"नदो, तू छू गई रॉंड! जाके नहा!"

"अरे नही ताई, रामजी की कसम, वो तो मुझसे इत्ती दूर पे कूदी थी। तुम तो देख रही थी ताई। हाय मेरा कलेजा धडक गया। मुँह मे सिकार दबाये थी। तुम्हारे यॉं से ले गई होगी। है न ताई?" ऊपर की छत से तीन सीढी उतरकर ताई के पास आते-आते तक उसने पानवाला हाथ बढा दिया—"लेओ पान खाओ।"

पान देखकर ताई के आँधियो-भरे चेहरे पर थमाव आया, बाँस को दीवार से टिकाकर चबूतरी पर रक्खी कलसिया से हाथ धोने बढी। हाथ धोते-धोते फिर पूछा—"बिल्ली ने तुझे छुआ तो नही था? सच बता?"

"नईं ताई! इत्ती बडी कसम खा गई मै। अरे, मै तो आपी सब तरियो का बिचार-बिबेक रखती हूँ। मेरा तो घर मे पानदान भी अलग ठाकुरजी की कुठरिया में रहता है।"

ताई ने पल्ले से हाथ पोछकर पल्ले से ही पान पकडे और स्निग्ध स्वर में धीरे से कहा—"जै सी-किस्न।"

"जै सिरी किस्" कहकर नदो ने कमर से तमाखू का बटुआ निकाला।

दोनो सूरज की तरफ पीठ करके जरा हटकर बैठ गईं। नदो ने बटुए से दो टुकडे सुपारी और एक चुटकी तमाखू मुँह में डालकर पान ताजा किया, और बटुए को कमर में खोस टाँगे फैलाते हुए बोली—"मेरी तो ताई तुम सब लोग की किरपा से अभी तलक पुरानी मत ही बनी हुई है, सनातन धरम की। सबेरे गोमती जी से न्हाके आई और सीधी अपनी ठाकुरजी की कुठरिया मे चली गई। मुझे किसी की घर-गिरस्ती से मतलब नहीं, सेवा-पूजा मे ही तीन साढे तीन घटे का बखत निकाल देती हूँ।"

"कितने ठाकुर हैं तुम्हारे यहाँ?" ताई ने अपने बालो पर उँगली फेरते हुए पूछा।

"हमारे यहाँ? एक तो राधा-किसन की जोडी है, लच्छमीजी हैं, बालमकुन्दे हैं, गनेसजी, लड्डूगुपाल, बिसुनपदी, बद्रीनाथो-जगन्नाथो के पत्तर, महादेवजी, सालिगराम—औ, बस इत्ते ही हैं। बाकी तसबीरें है।"

"हमारे पास गनेसजी नही हैं। पहले थे तो सही पर चूहे ले गए निगोडे!" ताई ने सिर पर पल्ला डालकर कहा।

"तो फिर दूसरे मँगाय लेओ ताई। पलके में सबसे पहले तो गनेसजी ही होने चाहिये। सिद्धदाता तो यही है।"

"मुझे मरी सिद्धी लेके क्या करना है। भागवत में लिखा है कि भगवान के चरनो में अटल भगती करो, उसके आगे मुकती भी तुच्छ है।"

"हाँ ताई, ऐसी भगती मिल जाय तो जलम-जलम के सिंसकार न सुधर जायँ। उस दिन कथा मे सुना "

"अरे कथा कहाँ होवे है ?" ताई ने बात काटकर पूछा । ताई किसी कथा-सप्ताह में या गोमती-गगा नहाने नही जाती । वे कही नही जाती, बस सबेरे-शाम गोकुलद्वारे में मगला और शयन के दर्शन करने घर से निकलती है तो उनके 'सात-जनम के दुस्मन' गली-मुहल्लेवाले लडके-लडकियाँ, मसखरे-जवान और गालियाँ खाने के शौकीन मनचले अधेड-बूढे भी उन्हे चारो ओर से घेरकर—"ताई छू गई । ताई छू-छू-छू ! ताई कब मरोगी ?" कहकर कदम-कदम पर उनसे छेड ठानते है । रास्ते भर कोसते-चिल्लाते ताई की साँस फूल जाती है । दुनिया उन्हे फूटी आँखो नही सुहाती । अखिल ब्रह्माण्ड में किसी हद तक उनकी सिर्फ नदो से ही बनती है, वही उन्हे दुनिया के किस्से सुना जाती है ।

नदो बोली—"बानवाली गली मे कासीजी के एक बियासजी आये है । ऐसी सुन्दर कथा सुनाउत हैंगे कि तुमसे क्या बताये । सो उन्होने कहा कि सिसकार ही मानुख जलम को सारथक करत हैंगे ।"

"सिसकार तो होवे ही है, जो कुछ भी होवे है । आजकल के मरे सिंसकार ही बिगड गए है दुनिया के । देखो न, मरी पन्नो की लौंडिया बीए-एमे पढके दफ्तर मे नौकरी करने जावे है । बैसिकल ली है उसने ।"

"अरे पूछो न ताई, चारो चरन टेक के कलजुग खडा है आजकल । कोई किसी को कहन लायक नही रह गया । हमरे घर में ही क्या कम चलित्तर उछलते है । सकर, सकर की बहू आठ बजे तो पलँग छोडते है । इस्टोप लाये है सकर, सो उसे सुल्गाय के चाह और अडा-मछली और पावरोटी, जाने क्या-क्या बनाउत हैंगी उनकी बहू, फिर आप भतार सग बैठके सब खउती-पीती हैंगी, ऐसे तो सिंसकार बिगडे है । मनिया की बहू है सो वो भी छोटी के साथ छिप-छिपके सब खान-पियन लगी है । ई दोनो है, और उनकी गुरू वो है तुमरी नई किरायेदारिन—क्या कहें ! —बस !"

"पाप की पुटलिया निगोडी ! सत्यानास जायगा—कोढी होवेगे खसम-लुगैया मरे दोनो के दोनो । मेरी आतमा उठते-बैठते सरापे है इन्हें ।"

ताई को अपने किरायेदार मिस्टर और मिसेज वर्मा से सख्त नफरत है । मिस्टर जब अपनी अतरजातीय प्रेमिका को मिसेज बनाकर आर्यसमाज-मदिर से लौटे तो दोनो के घर दोनो के लिए सदा के वास्ते बद हो चुके थे । मिस्टर वर्मा कुशल रेडियो-मेकैनिक, छोटी-सी चलती दूकान के मालिक थे । उन्होने बाप से बँटवारा कर होटल में डेरा डाला, और घर एलाट करनेवाली कमेटी के मेबरो के यहाँ दौडने लगे । एक जान-पहचानी ने कहा कि घर ढूँढ लो, हम एलाट कर देंगे । ढूँढते-ढूँढते राजाबहादुर सर द्वारकादास अग्रवाल की पुरानी हवेली मिली । चार चौक की हवेली बीसियो बरस से बद पडी थी, उसके एक हिस्से मे राजाबहादुर की पहली पत्नी—ताई रहती थी । हवेली भूतो का वासा मानी जाती थी । हवेली से राजाबहादुर का कोई सबध नही, वह ताई के कब्जे में थी । और ताई ने यद्यपि बाहर की कोठरियाँ, दूकानें और पुरानी गोशालावाले दालान किराये पर उठा रक्खे थे, पर हवेली के अदर किसी तरह भी किरायेदार बसाने को वे राजी न होती थी । मिस्टर वर्मा ने एलाटमेण्ट-कमेटी के जोर से उसके एक हिस्से पर हक जमा लिया । ताई उठते-बैठते वर्मा-दम्पति को कोसती हैं ।

नदो बोली—"अब गुरू-गुरुआइन मुहल्ले में आये है तो यहाँ भी गुल खिलेंगे—खत्री-बाम्हन-बनिया सब एकमेक करवाय के छोडेंगे ये लोग देख लेना ? भला बताओ, ऐसे धरम-भिरष्टन के साथ सकर-मनिया की बहुएँ, उठत-बैठत, खात-पियत हैगी। तभी तो मतें बिगड गई हैं।

तभी किसी ने ताई के दरवाजे की कुण्डी खटखटाई।

ताई ने नदो से कहा—"जा देख तो आ, कौन आया है नासपीटा !"

नदो ने आकर बतलाया कि शरणार्थी किरायेदार, 'गोशाला' के ऊपरवाले कमरे के लिए नया किरायेदार लेकर आया है।

३

राजाबहादुर सर द्वारकादास अग्रवाल के पुरखो की 'गोशाला' मे दालान के ऊपर एक छोटे-से कमरे और छत के किरायेदार बनकर चित्रकार सज्जन ने अनुभव किया कि भावुकता के बहाव मे आकर वह एक बडी गलती कर बैठा है। सज्जन गली-मुहल्ले के जीवन से परिचित होकर उनके चित्र बनाने की इच्छा से यहाँ आया है। वैसे शाहनजफ रोड पर उसकी अपनी कोठी है, अमीनाबाद, केसरबाग मे उसके मकानात हैं जिनके किराये से हजार-आठ सौ के लगभग माहवार आमदनी होती है। पैतृक सपत्ति ने चीन की ऐतिहासिक दीवार की तरह उसके लिए उन सभी अभाव-रूपी शत्रुओ के धावे रोक दिये हैं जो कला-साधना के मार्ग मे रोडे अटकाते है। अपने लैंडस्केप और पोर्ट्रेट चित्रो के लिए सज्जन प्रसिद्ध है। अमरनाथ से कन्याकुमारी तक, तथा द्वारिका से मणिपुर-आसाम तक वह अपने देश के चारो खूँट परिक्रमा कर चुका है। अपने देश के प्राचीन वैभव—साहित्य, शिल्प, चित्रकला, नृत्य, सगीत आदि को देखकर सज्जन जितना ही अधिक प्रभावित हुआ है, उतना ही वह आज के सामाजिक जीवन मे सांस्कृतिक दीवालियेपन का कारण जानने के लिये व्यग्र हो उठा है। आज कही भी नये निर्माण का परिचय नही मिल रहा—जीवन चारो ओर से रुद्ध हो गया है—आश्चर्य है कि सज्जन को नये चित्र बनाने के लिये ढूंढे विषय नही मिल रहे। इसी उलझन को लेकर उसे यह विचार आया कि वह अपनी और समाज की अगति का कारण अपने समाज मे बैठकर खोजे। एक दिन जब बातो-बातो मे प्रसग आने पर उसके फ्रेम बनाने वाले सरदारजी ने उसे अपने घर के पास ही एक कमरा दिलाने का वादा किया तब वह बडा ही प्रसन्न हुआ। उसे इस बात का कतई अदाज नही था कि सरदारजी ने उसका इस्तेमाल अपने एक पडोसी को परास्त करने के लिये राजनीतिक चाल के तौर पर किया है।

गोशाला में दो लम्बे-लम्बे दालान और दो कोठरियाँ नीचे हैं, तथा एक दालान की छत पर एक छोटा-सा कमरा बना है। नीचे के कोठरी-दालानो मे दो शरणार्थी-परिवार

रहते हैं। एक सरदारजी बढई का काम करते है, दूसरे ठेले पर मसाला-फरोशी करते हैं। मसाला-फरोश का एक कुँआरा साला उनकी छत के ऊपरवाले कमरे मे रहता था। इस कारण से उनका बडा परिवार बढई सरदारजी के बडे परिवार की बनिस्बत ज्यादा जगह मे आराम से गुजर करता था। साले साहब इधर अरसे से किन्ही रोमाटिक कारणो से, सिर के बाल छँटवा, दाढी-मूँछ घुटाकर मोने हो गए, उनकी आमदनी का मोटा भाग जो अब तक अपने भाजे-भाजियो के लिए खर्च होता था, कही बाहर खर्च होने लगा और फिर एक दिन वे कोठरी छोडकर चले भी गये। मसालाफरोश जी उसके बाद भी ऊपरवाले कमरे और छत पर अपना अधिकार जमाये रहे। बढई सरदार को इससे स्वाभाविक जलन होती थी। दो-एक बार दोनो में झडप भी हो गई। मसालाफरोशजी कहते थे कि जब कोई किरायेदार आ जायगा तब वे उसे खाली कर देगे। न जाने कौन-सी पट्टी पढाकर उन्होने न केवल ताई की जबान ही चुप रक्खी, वरन् बढई सरदार के खिलाफ उनके कानो मे गरम मसाला भी भर दिया। इधर यदि किरायेदार आते तो वह उन्हे सोलह दूने आठ का पहाडा पढाकर किसी तरह टरका देते थे।

बढई सरदार अपने पडोसी की कूटनीतिक विजय से जले-भुने अपनी घात साधने की ताक मे थे कि सज्जन ने उनसे बातो के प्रसग में जगह की फरमाइश कर दी। बढई सरदार को ताई तथा सज्जन के भले बनकर अपने प्रतिद्वन्द्वी पर विजय पाने का अच्छा मौका हाथ लग गया। सात रुपये की जगह का किराया उन्होने पच्चीस बतलाया और सज्जन ने स्वीकार कर लिया। बढई सरदार ने गोकुलद्वारे जाते समय ताई के सामने यह प्रस्ताव किया और ताई ने खुशी से उसकी स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन दोपहर मे वे सज्जन को जगह दिखाने भी ले आये। उस समय मसालाफरोश सरदार अपना ठेला लेकर बाहर गये हुए थे। उनकी सरदारनी की आपत्तियो की अवहेलना करते हुए बढई सरदार ने सज्जन को वह कमरा दिखा दिया, तथा उसी समय ताई से भेट करा एक महीने का पेशगी किराया भी अदा करवा दिया।

दूसरे रोज सवेरे जब सज्जन अपने दो अतरग मित्रो के साथ उन्हे वह जगह दिखाने आया तो मसालाफरोशजी ने ऊपर का ताला खोलने से इनकार कर दिया। उसने कहा कि जगह सिर्फ घर-गिरस्तीवाले को ही मिल सकती है। सज्जन को बडा कोध आया। उसके मित्र कर्नल साहब और महिपाल भी गरम हो गए। उधर बढई सरदार ने ताई के पास जाकर उनका पारा चढा दिया। ताई विष्णुसहस्रनाम का पाठ छोडकर मसालाफरोश को हजार गालियाँ देती हुई बाहर आ गईं। मसालाफरोश को मजबूर होकर ऊपर की जगह छोडनी पडी।

ऐसी मामूली कोठरी के ऐसे भव्य किरायेदार को लेकर मुहल्लेवालो में तरह-तरह के चर्चे होना बडा स्वाभाविक था। उस मुहल्ले में कुछ ऐसे लोग भी थे जो सज्जन को उसकी प्रसिद्धि के कारण जानते थे। भभूती सुनार का छोटा लडका शकरलाल तथा उसके नेतृत्व में उसी मुहल्ले के निवासी दो-एक नवयुवक सज्जन से मिलने भी आये। उन्होने कलाकार के मुहल्ला-जीवन चित्रित करने के महान् उद्देश्य का बढा-चढाकर प्रचार किया, अफवाहो में वह उद्देश्य बीसो बढकर एक नये अर्थ का जामा पहनकर फैल गया। मसालाफरोश तथा अन्य लोगो ने कहा कि मुहल्ले की बहू-बेटियो को तस्वीर बनाने की लालच देकर फुसलाना

ही चित्रकार और उसके मित्रो का उद्देश्य है । मसालाफरोश तथा दो-एक अन्य लोगो के हस्ताक्षरो से शहर के दो दैनिको मे सपादक के नाम शिकायती पत्र भी छपा डाले गये । उनमे यह भी धमकी दी गई थी कि भले घरो के बीच मे कुछ धनी नौजवानो का यह अड्डा न हटा तो हम अनशन करेंगे ।

सज्जन यह देखकर दग रह गया । अपनी परिस्थिति को स्पष्ट करते हुए उसने अखबारो मे अपना वक्तव्य दिया, साथ ही मुहल्लेवालो को विश्वास प्राप्त करने के उपाय सोचने लगा । व्यर्थ ही उठ खडे होने वाले विरोध से हारकर पीछे हट जाना उसके स्वभाव के विरुद्ध था । उसने निश्चय किया कि वह डटकर मुहल्लेवालो का मन जीतेगा ।

शाम हो गई थी । सज्जन की सिगरट खत्म हो गई थी । बाजार से लाने के लिए वह नीचे उतरा तो देखा राजाबहादुर खडे थे । सज्जन के रग-टेकनीक-भरे मन को दो परस्पर-विरोधी चीजो—बोसीदा गली और वैभवशाली राजाबहादुर—को एक साथ देखकर अचकचाहट हुई, यद्यपि वह ताई, राजाबहादुर और इस गली-हवेली के निकट नाते को जानता था ।

"अरे आप ?" उन्हें देखकर सज्जन सहसा बोल उठा । राजाबहादुर शाहनजफ रोड पर उसके पडोसी है । दोनो घरो मे आज भी स्नेह-सबध है । सज्जन उन्हे छोटे बाबा कहता है, क्योकि राजाबहादुर उसके स्वर्गीय बाबा को भाई साहब कहकर पुकारते थे ।

द्वारकादास उसे देखकर सकुचित हो उठे । वे अपनी टोनही पत्नी से अपने पोते का जीवनदान माँगने आये थे । सबेरे उसकी सगाई की मिठाई ताई को देने के लिये कोठी से नौकर आया था। ताई ने मिठाई लौटा दी और सौत के पोते को खूब कोसा । दिन ही से पोते को तेज बुखार चढ आया था । सभी को शक हुआ कि ताई ने उस पर जादू-टोना किया है । रुँधी वाणी से कुछ न कह पाकर एक कदम आगे बढकर उन्होने सज्जन के कधो को हाथ से दबा दिया, मानो आत्मीयता का बोझ डालकर रँगे हाथो पकडे जानेवाले अपराधी की तरह सहानुभूति और दया माग रहे हो । फिर तुरत अपने को सयत कर उन्होने पूछा—"तुम यहाँ कैसे ?"

"जी, आजकल मै यही—वो ऊपरवाली कोठरी में—काम करता हूँ । मुहल्ला-लाइफ को स्टडी कर रहा हूँ ।"

"तुम्हे मालूम है यह हवेली मेरे पुरखो की है ?"

"जी हाँ ! यहाँ आने के बाद ही मुझे मालूम हुआ । मै तो खुद आपसे मदद माँगने आनेवाला था। ये मुहल्लेवाले गलतफहमियो की वजह से मुझे अक्सर परेशान करते है ।"

मदद माँगनेवाले याचक के सहारे से अपनी थकी अहता को उठाते हुए राजाबहादुर ने पत्नी के दरवाजे की कुण्डी खटखटाने का साहस किया ।

"कौन है निगोडा-नासपीटा ? कौन कुण्डी बजावे है ?" अदर से झल्लाहटभरी ताई की आवाज आई ।

"कुण्डी खोलो ।" द्वारकादास का सहज रोबीला और गभीर स्वर इस समय प्रयत्न के द्वारा ही अपनी सहजता को प्राप्त कर सका ।

ताई बडबडाती हुई आई । कुण्डी खोली, पति को देखकर चुप हो गई । लगभग चौदह-पद्रह वर्षों बाद पति-पत्नी एक दूसरे को निकट से देख रहे थे । पत्नी को देखकर

द्वारकादास के मन मे ललक नही आई, भय का सचार हुआ । बात शुरू करने के लिए सूत्र पकडते हुए बोले—"इस लडके को जानती हो ? कन्नोमलजी का पोता है।"

"होयगा । मुझे क्या करना है ?" कहते हुए ताई अदर की ओर चली । द्वारकादास पीछे-पीछे चले । बगैर किसी खास इरादे के, बगैर विचार किये सज्जन के कदम भी उनके पीछे-पीछे ही बढ चले ।

सीलन-भरी दहलीज, छोटा-सा दालान, सामने आँगन में लालटेन और कुछ चीजें रक्खी है, दाहिनी तरफ के दालान मे चून्हे की लपट निगाहो को खीचती है ।

लालटेन की रोशनी के पास से गुजरते हुए, थाली मे आटे का पुतला बना देखकर द्वारकादास इस तरह सहम गये जैसे साँप देख लिया हो । ताई ने थाली उठाकर सामने वाले दालान मे खम्भे के पास रख दी, फिर आँगन से लालटेन उठाकर दालान मे ले आईं । राजाबहादुर अपनी सौभाग्यवती की झूले ऐसी चारपाई पर बिछे गदे-चीकट बिछावन पर सम्हल-सिकुडकर बैठ गए । सज्जन उनसे सटकर पायताने की तरफ बैठ गया । ताई चारपाई से जरा दूर हटकर जमीन पर बैठते हुए पति से बोली—"क्यो आये हो ?"

द्वारकादास ने मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए उत्तर दिया—"तुमसे मिलने चला आया । यहाँ जानकीसरन के "

थाली मे रक्खा हुआ आटे का पुतला सज्जन का ध्यान आकृष्ट कर रहा था । 'ताई भी कलाकार है, ताज्जुब और प्रशसा-भरी इस अनुभूति ने सज्जन को पुतला उठाकर देखने की प्रेरणा की ।

ताई गुस्से से लाल हो उठी । द्वारकादास की बात जहाँ की तहाँ रह गई । सज्जन उन गदी और फूहड गालियो का अभ्यस्त नही था जो उसे मिल रही थी । द्वारकादास समझाने के अदाज मे कुछ कहकर, फिर कुछ और कहकर, फिर मजबूर-से चुप रह गये ।

सज्जन गर्म पत्नी और नर्म पति के स्वर-तिलस्म से छूटकर फौरन बाहर चला गया।

द्वारकादास रुके रहे । वे अपनी पत्नी से अपने परिवार और पोते की प्राण-रक्षा का वरदान माँगने आये थे । आटे का पुतला ताई की अमानुषी प्राणहन्ता शक्ति का प्रतीक बनकर गवर्नरो, मिनिस्टरो, हाकिम-हुक्काम, और रईसो के सम्मान पानेवाले, हाँ-हुजूरो की सिर-आँखो पर बैठनेवाले व्यक्ति को गिडगिडाकर भीख माँगने के लिए मजबूर कर रहा था ।

× × × ×

बाजार से सिगरेट खरीदकर सज्जन जब अपने कमरे मे पहुँचा तो कर्नल साहब और महिपाल बैठे हुए थे ।

कर्नल साहब श्रीनगीनचद का लोकप्रसिद्ध उर्फ है । वे लखनऊ की एक पुरानी और प्रसिद्ध अग्रेजी दवाओ की दूकान के मालिक है । सामाजिक कामो के लिए जी खोलकर चदा देनेवालो मे उनका नाम शहर के गिने-चुने लोगो के साथ लिया जाता है ।

छ-सात वर्ष पहले महिपाल शुक्ल के कारण ही उनका सज्जन से परिचय हुआ था। यह परिचय अब गाढी मैत्री बन गया है। सज्जन, कर्नल और महिपाल अभिन्न माने जाते हैं। लेखक महिपाल इन दोनो से अपेक्षाकृत बहुत गरीब है, पर बडा मेहनती, खरा और दोस्ती निभानेवाला जीव है।

सज्जन के कमरे मे पैर रखते ही कर्नल ने पूछा—"तुम्हे महाकवि बोर तो नही मिले थे?"

"नही। क्या आये थे यहाँ?"

"हाँ। मैने उन्हे पट्टी पढाकर रवाना कर दिया।"

"साले यहाँ भी बोरियत फैलाने चले आते है।"

महिपाल बोला—"इन कम्बख्त मुहल्लेवालो ने तुम्हारे खिलाफ अखबारो में शिकायत छपवाकर और तो जो कुछ बुरा किया सो किया, इस सीक्रेट अड्डे का पता जगजाहिर कर दिया, यह बहुत ही बुरा किया। बडी मुश्किलो से गए हैं कविजी यहाँ से।"

सिगरेट सुलगाकर अपने को दुशाले से अच्छी तरह लपेटकर बैठते हुए सज्जन खामोशी मे डूब गया। कर्नल उसकी तरफ गौर से देखकर बोला—"क्यो आज फिर कोई नई बात हो गई है?"

"नही, कोई खास नही। द्वारकादासजी आये हुए है यहाँ।"

"द्वारकादासजी? राजाबहादुर?"

"हूँ। अपनी पटरानी के महलो मे है इस वक्त। यार ये औरत तो गजब की कैरेक्टर है। जादू के पुतले बनाती है।"

सज्जन ने थोडी देर पहले घटी हुई आपबीती सुनाई। कर्नल परेशान हो गये—"तुमने वह पुतला छूकर अच्छा नही किया।"

"मुझे क्या मालूम था बे! मै समझा ताई के अकेलेपन का मनोरजन है। तुम यकीन मानो महिपाल, मै बडा ही खुश हुआ, मगर" सज्जन हँसने लगा। हाथ बढाकर ऐशट्रे में राख झाडकर बोला—"मैने अपनी शान में ट्रेडीशनल इडियन स्टाइल की ऐसी ठेठ गालियाँ सुनी है कि क्या बतलाऊँ।"

छत पर किसी की छायाकृति झलकी। सज्जन का ध्यान उधर गया। राजाबहादुर सर द्वारकादास अग्रवाल दरवाजे पर खडे थे।

सज्जन अदब से उठ खडा हुआ। कर्नल साहब के चेहरे पर नम्रता की किरणे फूट पडी, आदर से हाथ जोडे। महिपाल वैसे ही बैठा रहा।

राजाबहादुर का ध्यान किसी की ओर भी न गया, हाथ के इशारे से सज्जन को बुलाते हुए उन्होने कहा—"यहाँ आना बेटा!"

सज्जन फौरन उठकर बाहर आया। उसके कधे पर हाथ रखकर जीने की तरफ बढते हुए द्वारकादास बोले—"आज की बातो का किसी से जिक्र न करना।"

"जी, कतई नही। आप विश्वास रक्खे।"

"उनका दिमाग जरा पलटा हुआ है।"

"जी मुझे मालूम है।"

"क्या कहूँ, सब भाग्य का दोष है। खैर! तुम किसी से भी जिक्र न करना, अपने खास दोस्तों से भी नहीं। और मैं लाला जानकीसरन से कहता जाऊँगा। तुम्हें यहाँ किसी किस्म की भी तकलीफ नहीं होने पायेगी।"

सज्जन उन्हें गली की मोड तक छोड आया। द्वारकादास के दर्पयुक्त मुखमण्डल पर चिन्ता और थकान की झाईं पड रही थी। लौटते हुए सज्जन सोचने लगा—"क्या ये भी सुखी है?"

४

नंदो ने लाले दलाल और उसकी घरवाली को मारने के लिए ताई से टोटका करवाया था। छ बरस पहले मनिया के ब्याह की तैयारी के दिनो मे भभूती सुनार के घर गहनो की चोरी हुई थी। सोने की करधनी, तौक, जोसन और चदनमाला पालिश-मरम्मत के लिए निकालकर अम्मा ने अलग डिब्बे मे रक्खे थे, सो रात में डिब्बा ही उड गया। दूसरे दिन सबेरे ही से घर का नौकर गायब था, फाटक की कुडी खुली थी, सो उसी पर सारा इल्जाम गया। व्यावसायिक कारणो से भभूती ने पुलिस मे रिपोर्ट न कराई, अम्मा हाय करके बैठ रही। चोरी की करधनी नौकर के साथ साझेदारी के सौदे मे नदो के हाथ लगी थी। उन दिनो लाले दलाल की घरवाली से उसका अच्छा घरोवा था। नदो ने उन्ही को करधनी बेचने के लिए दी थी। हीले-बहाने मे इतने बरस निकल गये, नदो के हाथ झझी कोडी भी न आई। वह उनसे खुलकर लड नही सकती थी। चार-पॉच दिन पहले लाले की घरवाली से सबेरे-सबेरे गोमती के तट पर ही बडी जोर की कहा-सुनी हो गई। लाले की बहू घाट पर सब औरत-मर्दों के सामने नदो को चोर-छिनाल कहकर उसके घर की पुरानी चोरी का रहस्य खोल गई, किंतु नदो उन पर अपनी चोरी का खुला इल्जाम न लगा सकी। नदो के आग्रह पर ताई उन्ही को मारने के लिए पुतले बना रही थी, जब द्वारकादास और सज्जन उनके घर आये थे।

द्वारकादास के जाने के बाद ताई पुतले बनाने बैठी। नदो जो ताई के ऊपरवाले जीने मे छिपकर बैठी हुई पति-पत्नी की बाते सुन रही थी, द्वारकादास के जाने के बाद इस तरह पाक-साफ होकर आई जैसे अभी भी अपने घर से आ रही हो। ताई इस समय द्वारकादास की खुशामद के नशे से माती, अपनी विजय से सतुष्ट और प्रसन्न थी। प्रसन्नता का आवेश धमनी बनकर उनकी हिसा के कोयले धौंकने लगा। ताई जोश के साथ नदो का कार्य सिद्ध करने बैठ गईं। लाले और उसकी बहू का मारक सिद्ध किया, मिस्टर

और मिसेज वर्मा से लडाई के काँटे बोने के लिए स्याही का काँटा निकाला, लाला जानकी-सरन (जिनका अपराध यही था कि आज शाम उनके यहाँ द्वारकादास आये थे) के घर बीमारियो का उत्पात मचाने की नीयत से उनकी चौखट पर छीटे जानेवाले काले तिलो की पुडिया बाँधी और शाम के काण्ड की सजा देने के लिए सज्जन का पुतला भी बनाया। पेशेवर हत्यारो की तरह एक-एक के लिए अशुभ-क्रियाये करके उन्हे खुशी होती थी।

नदो के हाथो सबकी व्यवस्था करवा कर, उसे विदा करने के बाद आप नहाईं, धोती सुखाईं और जब सोने गईं उस समय कोतवाली के घडियाल पर बारह के टकोरे बजे।

मुश्किल से घटा-डेढ घटा भी न सो पाई थी कि दो बिल्लियो के महनामथ ने ताई की नीद को व्याघात पहुँचाया। दो जोडी आँखे अँधेरे मे चमकदार ताई को डराने लगी। बिल्लियाँ एक दूसरे पर फुफकार रही थी, प्रतिहिसा से घुमडता रोष आक्रमण की ज्वाला बनाकर दो लपटो के समान एक दूसरे से गुथ गया। ताई की जादू-टोने भरी नजरो में भय की मोहिनी छाने लगी। अपने भय के उतार-चढाव मे उन्हे वे बिल्लियाँ कभी-कभी अपना आकार बढाती-घटाती सी नजर आने लगी। लडते-लडते बिल्लियो का मुँह जब कभी क्षण भर के लिये उनकी ओर घूम जाता तो आँखो की चमक जादू से मत्री हुई सुइयो की तरह ऐन उनके कलेजे मे चुभकर उसी मे गडी रह जाती। बुढापे का सर्द खून भय के अतिरेक से ठिठुर गया, प्राणो की गर्मी उनके कण्ठ मे घिग्घी बनकर घुटने लगी। रोष से चिचियाती हुई बिल्लियो ने फिर एक दूसरे पर उछल आक्रमण किया। ताई की नजरो मे वे बिल्लियाँ किन्ही महाविशालकाय हिंस्र जतुओ की तरह बढकर पूरे दालान को छेंकती हुई-सी लगी। और उस भयकर युद्ध की लपट-झपट में बिल्लियाँ ताई की चारपाई के निकट आ गईं। भयावनी 'घुर्र-घुर्र-खाऊँ-खाऊँ-खा' के शोर में ताई के कण्ठ की सुरसुराती हुई 'हिहिहि ही-ही-ही' बडी जोर से फूटकर सम्मिलित हो गई। आत्मरक्षा की भावना से हिसा जागी, उनके हाथ यो बढे जैसे किसी चमत्कार से पत्थर की मूर्ति के हाथो मे जुम्बिश हुई हो; तकिया उठा तानकर मारा। उस समय उन्हे बिल्ली को मारने से स्वर्ग मे सोने की बिल्ली जमा करने का कठोर धार्मिक नियम भी बिसर गया था।

बिल्लियो के महायुद्ध की तन्मयता ताई के वज्र प्रहार से भग्न हुई, वे आँगन की तरफ भागी। अब ताई मे होश-भरी फुर्ती आई। चारपाई के दूसरी ओर रक्खी हुई लकुटिया तेजी से बढकर उठाई। उनकी गालियो के मसिल फडफडा उठे, वे भी तीसरी बिल्ली बनकर आँगन मे झपटी। एक बिल्ली सीधी आँगन से ही, दूसरी घबराहट मे रसोई के दालान से भटककर ऊपर के जीने की तरफ भागी। ताई जीने की तरफ दौडी, जोश में ऊपर तक चढती चली गईं। ठिठुरती हुई अँधेरी रात मे मुँडेरो पर दौडती हुई छाया-कृति-सी बिल्लियाँ और लकडी उठाये दौडती हुई ताई की सिलहुत-छवि ने सोई छत को बुरे सपने की तरह चौंका दिया। खामोश रात उनकी गलियो के शोर से उसी तरह तिलमला उठी, जैसे भरे जाडे में किसी ने किसी का सुकून से गरमाता हुआ लिहाफ एक झटके से हटा दिया हो।

बडबडाती हुई ताई नीचे उतरी, ऊपर के जीने की कुण्डी चढाई। बकते-झकते-हाँफते जब अपने सोनेवाले दालान मे पहुँची तो उनका पैर गिलगिली-सी चीज से लगा, अँगूठा और उँगलियाँ सन गई। ताई के प्राणो मे अपवित्रता का तअस्सुब भरा कम्प हुआ, तीव्र घृणा और खीझ भर गई, परन्तु जबान पर शब्दो की बाढ सहसा 'उहँ' मे सिमटकर बँध गई। अपने को किसी कदर कुसूरवार-सा महसूस कर, 'इमी शिकार के पीछे लडी थी मरी' सोचकर, सने हुए दाहिने पैर का पजा उठाकर एडी टिकाते हुए अपनी चारपाई के पायताने के पास रक्खी हुई लाल्टेन तक पहुँची। लालटेन जलाई और फिर उसी तरह एडी टिकाती हुई घटनास्थल तक वापिस आई। देखा, एक ताजा पैदा हुए बिल्ली के बच्चे की लाश थी जिसका सिर गायब था। घर के हेरे-फेरे करनेवाली बिल्ली के गर्भवती रूप में इधर कई बार देखे हुए चित्र उनके ध्यान मे उभरकर आये। "भाड मे जाय रडो!" उनके मुँह से छूटते ही गाली निकली। ध्यान गया, उसी के बच्चे को बिलौटा खा गया। यही लडाई का कारण था।

पैर टिकाते हुए वे मोरी तक गई, पैर धोया। लालटेन लिए ठाकुरजी की कुठरिया में गईं। टाँड से पखा उतारा। लाश को पुरान पखे पर रखकर बाहर फेंकने का इरादा लेकर बढती हुई ताई की सहज हिसामयी व्यावहारिक बुद्धि जाग उठी। तुरन्त जीने के नीचे वाली बुखारी से अपने जादू-टोने का सदूक निकाल, उसमे से सेंदुर और थोडे-से काले तिल लिये, टोना-कार्य के निमित्त अलग रक्खे हुए आटे के डिब्बे से थोडा-सा आटा निकालकर दिया बनाया। पखे पर तिल-सेंदुर छिडकी हुई बिल्ली के बच्चे की सिरकटी लाश और जलता हुआ दीया रखकर ताई उसे तारा के दरवाजे पर रख आईं—"राँड बहुत पेट लिए घूमती है। ऐसे ही कट के गिर पडेगा।"

इस तरह लाश घर से बाहर चली गई, और ताई के दृष्टिकोण से उसका सदुपयोग भी हो गया।

ताई जब अपना दालान धोने लगी तब उन्होने देखा, उनकी चारपाई के नीचे बिल्ली के तीन सद्य जात बच्चे सिमटकर गठरी-से बने पडे हुए थे। ताई का क्रोध ज्वालामुखी-सा फूट पडा।

"निगोडी सबकी सब मेरी ही छाती पे मूँग दलने आमे हुंगी। सात जलम की दुस्मन मरी, गली-गली घूमकर मेरे घर बच्चे पटकने आई रडो। अरे तन-तन मे कीडें पडेंगे, सरदी की रात में दौडा मारा।" चारपाई के पास जमीन पर हाथ में बुहारी लिए ताई बैठ गईं। कोसनो की आड मे उनका दिमाग इस विषय पर गौर कर रहा था कि इन बच्चो को किस चीज मे उठाकर बाहर फेका जाय। डलिया ध्यान मे आई। फिर सोचा, अभी एक पखे का नुकसान तो हुआ ही है, डलिया और फेंकनी पडेगी। धोती तो धोनी ही है, यह सोचकर ताई ने बुहारी रख तीनो को आँचल में डाल लिया। पानी से भीजे हाथ से बच्चो के बदन मे सिहरन हुई। ताई के हाथ ने उसे तीन बार महसूस किया। ठडसे सिकुडे बद आँखोवाले तीन बच्चे आँचल मे गठरी-सी होकर उनके पेट से लग गये। तीन जीवो की प्राणशीलता उनके पेट से लगी कुलबुलाई। दहलीज तक जाते-जाते उन्हे कभी अपनी गोद में खेलनेवाली बिटिया की सहसा याद आ गई। वे ठिठक गई। पैर फिर हठ, झुंझलाहट

और निश्चय के साथ आगे बढे, मगर बद दरवाजो पर रुक गये। बेटी की याद तीव्र हो उठी थी।

बिल्ली के बच्चे फिर बाहर न फेके गये।

× × ×

मुंह अंधेरे साढे पाँच बजे के लगभग पूजा की घन्टी-चौपडी लेकर गोमती जाने के लिए लाले दलाल की घरवाली ने दरवाजा खोला। छूटते ही चौखट के बाहर दोनो तरफ रक्खे पुतलो पर नजर गई। डर के मारे उन्होने अपना पैर अन्दर खींच लिया और घबराकर बाहर की लाइट का स्विच दबाया। अपने घर के लिए किये गये मारक प्रयोगो को बिजली के उजाले मे साफ-साफ देखकर उनके दिल की बढी हुई धडकनो मे और तेजी आ गई। वे एकाएक डकरा पडी—"हाय-हाय ! ये कौन ने दुश्मनो निकालो रॉड की। अरे बहुआ, ओ बहुआ !"

अदर से खाँसी के साथ-साथ बुढापे से कॉपता हुआ एक स्वर बोला—"अरे क्या है बहू ?"

"अरे हियाँ आओ जल्दी से। गजब हुई गया।" कहकर श्रीमती लाले अपने चार मन के शरीर में साँसे अमाने का प्रयत्न करते हुए बीच-बीच मे शब्दो को गले मे घोटकर जल्दी-जल्दी प्रार्थना करने लगी—"हे सतनराइन स्वामी, अरे तुम्हरी कथा बोलत हैं —हे बजरगबली, तुम्हरा सवा पाँच रुपया का परसा—मातेसरी, हमरी रच्छा करौ हुँ हुँ हुँ।"

"अरे क्या भया बहू ?" बहुआ जाडे मे झुरझुराती हुई आई।

"अरे बहुआ, ई देखो तौ तनी—कौनौ निपूती राँड हमरे दरवज्जे पर ई पुतले धर गई हैगी। जिसने हमरे लिये किया होय, ईसुरनाथ, उसी के आगे आवै। छिनट्टी, चोट्टी, निगोडी—ये नदो रॉड का काम होगा —वही ताई से कराय के धर गई है।"

"उसी हत्तियारी के कुनबे पै गाज गिरिहै। औ तइया निगोडी का तो जलम बीता एही सब लच्छनन मे।"

दरवाजे से चिपक कर खडी हो, पल्ले से मुंह-नाक ढँक कर बाहर देखती हुई बहुआ बोली।

"ए बहुआ, तनी उन्हे उठाय के चउराहे पै धर अउती। हमे गोमती जान की देर हुई रही हैगी।"

जाडे और बुढापे से कॉपती हुई बहुआ मे भय का कम्प बढा, वह बोली—"ई तौ बहू मेहतर आवेगा वही उठावैगा। की जानै बीच मे कौनौ गैया-वैया आयके खाय जाय तो सबसे अच्छा होय।" कहकर बहुआ फिर अदर चली।

लाले की घरवाली के हत्ते-पत्ते जल गये, बोली—"चिता किनारे आई, आज मरी कल दुसरा दिन होयगा।"

बहुआ दहलीज के दरवाजे पर जरा ठिठकी। लाले की घरवाली न उनकी तरफ देखकर फिर अपील की—"अरे बुड्ढी-ठुड्डिन को नाही लगता जादू-टोना। उठाय देआ तनी, हमका गोमती जान की अबिरिया हुइ रही हैगी।"

सतो छज्जे पर आके खडी हो गई, कहा—"अम्मा, हम आमै ?"

"तुम आय के का करिहौ ? नदो निगोडी हमरे साथ ऐसा कर गई ! राम करै इसके बाप महतारी आधी-रात को मर जायँ। राम करै इसके कुनबे-भर का सतियानास होय। ऊँह, हमरा बखत निकला जात हैगा। आदमी पास-परोस किरायेदार रक्खत है तो कौन दिन के लिए ? अरे जो अपने बख्त पै काम न आवै, ऐसे किरायेदार का रखके हम क्या करेंगे ? बहुआ, हमरा घर आजै खाली कर देना। हमे नही रखने ऐसे किरायेदार।"

उनकी ऊँची आवाज ने लिहाफो मे दुबके हुए पास-पडोस को चौका दिया। दुमजिले से पति और लडकी, तिमजिले से लडका—सब "क्या हुआ ? हम आवे?" कहकर ही रह गये, कोई नीचे न उतरा। लाले की घरवाली धम-धम करती फिर दरवाजे पर आ गई।

धूप केसर-सी खिलने लगी, गली गुलजार हो गई। घरो के दरवाजे खुल गये। पडोस के घरो की औरतो ने लाले की घरवाली से चर्चा चलायी, परनिंदा पाठ किया। ऊपर से लाले, सतो, सिमू भी उतर आये। बात छज्जे-दरवाजे पर खडे मर्दों मे भी छिडी। जमाने की नीचता का बखान हुआ। गली में रामलोटन महाराज का "चाह गरम-बिस्कुट नरम" स्वर गूँजने लगा। शाहजी का टीपदार गला "गुरु ने कहा था मेरी झोली भर कर लाना रे" सुबह की हवा मे लहरे उठाने लगा। पास ही नुक्कड पर दूसरी गली से ताई "ले-ले, ताई छू-छू" का शोर भी रोज के समय पर ही आ गया, पर मेहतर की सूरत अभी तक नही दिखाई दी। सिमू ने सामने के घर मे भोले से, भोले ने गली के सामने वाले घर मे सिरीकिशन से पुकार कर कह दिया कि जैसे ही गली में मेहतर दिखाई दे वैसे ही उसे यहाँ भेज दिया जाय। राह चलतो में चर्चा फैल गई कि लाले दलाल के यहाँ जादू के पुतले रक्खे हैं। छोटी-सी कुलिया मे दो-चार की भीड बडा-सा मजमा बनकर पुतलो को इस तरह देख रही थी, मानो दो कत्ल हुई लाशे रक्खी हो। बडे-बडे चर्चे हो गये, तब कहीं जाकर मेहतर आया।

पुतले हटते ही झट से बाल्टी लाकर लाले की घरवाली ने दरवाजे पर पानी छोडा, फिर घर से यो निकली जैसे तोप के मुहाने से गोला निकलता है।

नदो के घर पर उसके बाप भभूती नीचे नल के पास बैठे मिट्टी से हाथ धो रहे थे। मनियाँ का बडा लडका ऊपर जँगले के पास खडा होकर दादी का पल्ला खीचते हुए जलेबी खाने की जिद कर रहा था। दादी उसे समझा रही थी कि बुखार उतर जाने पर ही जलेबी मिलेगी, और जब तक वह चुपचाप जाकर खाट पर लेट नही जायगा तब तक उसका बुखार जल्दी से अच्छा नही होगा। अपने कमरे में बडी अपनी छोटी बच्ची को पैरो की अटेकन पर बैठाये हुए थी। मनियाँ लिहाफ ओढ कर बाये हाथ के सहारे सिर ऊँचा उठाये, मुट्ठी बाँध कर सिगरेट का कश खीचते हुए अपनी बच्ची को हँसा रहा था। बच्ची की हिलती हुई गर्दन पोपली हँसी से झूल जाती थी, उसके पैरो मे पडे लच्छे और हाथो में सौने के कडो के घुँघरू नन्ही-सी देह की चचलता से ठुमक पडते थे। बडी उसे निहार कर रीझ रही थी।

. . .और शकर के कमरे में अब भी रुई और दुई की रात गरमा रही थी। नदो के गोमती से नहाकर लौट जाने की बेला निकट आ गई थी। नौकर बीच का खन करीबँ-करीब पूरा बुहार चुका था।

सहसा लाले की घरवाली ने एटम बम की तरह बीच चौक मे फटकर भभूती के घर को हिरोशिमा बना दिया। नल के पास बैठे घरधनी को सुनाकर लाले की घरवाली ने कहा—"कहाँ है तुमरी रडो ? तुमरी लाडिली बिटिया ? हमरे घर मे अपने चलित्तर उछाल के आई है। औ जो हमरे घर मे जादू-टोने करवायगा उसी के घर में उलट के बस नास होयगा—कहे जाती हूँ। हाय, हमरा बुरा चेता—हमने कब किसके साथ कौन-सी बुराई की हैंगी आज तलक, जो हमरे घर पर ताई से पुतले कराय के रख गई। अरे आवै तो चोट्टी-छिनट्टी, नउकर से रिस्तेदारी जोड के अपने घर में चोरी कराइन, औ' अब हमरे ऊपर जादू चलउती है कि हम उनकी सोने की करधनी बेचन खातिर काहे नही रक्खा। अरे, हम काहे रखते किसी के घर की फूट-लडाई चोरी का माल। हमरे घर का ई सब कैदा नही होगा। जिनके घर मे चोरी का रुजगार होत है उनही की बिटिया अपना भतार छोड के सत्तर खसम करत फिरत हैगी। ऊपर से भगतिन बनती हैगी, चोट्टी कही की"

जब पहले-पहल ही एटम बम फूट गया, तब अम्मा की मशीनगन ऐसी फिटफिट कहा-सुनी भला क्या असर करती ? भभूती कान में तेल डालकर चुपचाप दातून करता रहा। मनियाँ, मनियाँ की बहू तिमजिले के जँगले से झुक कर देखते रहे। फिर ज्यो ही नदो ने रणक्षेत्र मे आकर गाडीव टकारा तो शकर और शकर की बहू भी कमरे के बाहर आ गये। नदो ने बडे-बडे ब्रह्मास्त्र छोडे, अम्मा की फिटफिटिया भी बीच-बीच मे दग जाती थी, मगर लाले की घरवाली ने वैज्ञानिक युग की तरह गाडीव और ब्रह्मास्त्रो को खिलौना साबित कर दिया। अपराध के खूँटे मे जकडी हुई नदो अपनी उग्रता के नाटक में सत्य की स्फूर्ति नही ला पाती थी। मनुष्य के अतर का परायापन, उसकी घृणा अपने प्रति न्याय की निष्ठा लिये "चाऊँ-चाऊँ-झाऊँ-झाऊँ" की गूँज बनकर मीनार-सी उठ रही थी। तिमजिले से तैश मे आकर मनियाँ भी लाले दलाल को बेईमान सिद्ध करता नीचे उतर आया। शकर भी जेब मे हाथ डाले तमाशा देखने चला आया। बहुएँ छत पर ही रही, पास-पास सिमट आई। नीचे की घटना का खुसफुस विवेचन होने लगा।

छोटी बोली—"हाय ये सतो की अम्मा कैसी मजबूत है लडने मे कि निकली-निकली पडती है।"

बडी ने कहा—"सच्ची बात है भाई। अभी हमारे-तुम्हारे लिए कोई बुरा कर जाय तो हमे-तुम्हे क्या गुस्सा नही चढेगा। और ये नदो बीबी तो महा की कुटाँट हैं। हरेक से जलना, हरेक का बुरा चेतना, यही इनका काम छत्तीसी कही की!"

अपनी छत की मुडेर फलाँग कर तारा चोर की तरह भभूती की ऊपरवाली छत पर आई। छोटी-बडी को देखकर हाथ के इशारे से पास बुलाया। युद्ध का कारण जानकर तारा बोली—"हमारे घर के दरवाजे पर भी रख गई थी। मै दूधवाले को दरवाजा खोलने गई तो बाहर देखकर सहम गई। दूधवाले ने भी जाने क्या-क्या डरा दिया।"

"डराने की बात ही है भाई! अब तुम्हारा आठवाँ महीना चढ रहा है, और "

बडी की बात पूरी होने से पहले तारा ने कहा—"हमारे वो तो कहने लगे कि बेकार का सुपरइस्टीशन है, इन सब बातो का ध्यान न दो। हमने अपने मन में कहा कि हाँ, वैसे तो आज के जमाने में"

नीचे का शोर इस बार तमाम पिछले रिकार्ड तोड कर नई सीमा स्थापित करने लगा। छोटी-बडी दौडकर फिर जँगले के पास आकर नीचे की ओर झुककर देखने लगी। तारा ऊपर छत पर ही बैठ कर कौतूहल से छोटी-बडी का मुँह देखने लगी।

नीचे लाले की घरवाली ने झपटकर नदो का गला पकड लिया। नदो अपने घुटे गले से गोंगियाते हुए दोनो हाथ श्रीमती लाले की ठोडी पर अडाकर पूरी शक्ति से उसे पीछे ढकेलने का प्रयत्न करने लगी। भभूती, अम्मा, मनियाँ, शकर सभी के चिचियाते हुए स्वर एक साथ गुथकर भयकर हुल्लड का रूप धारण कर रहे थे। मनियाँ ने आगे बढकर किसी तरह अपनी वहन को छुडाया। लाले की घरवाली जब अपने जोश में मनियाँ से उलझी तो उसने मारने के लिए हाथ उठाया। भभूती ने फौरन आगे बढकर अपने बेटे का हाथ पकड लिया और उसे पीछे ढकेलते हुए लाले की घरवाली से बोला—"हम तुम्हारे हाथ जोडते है बहूजी ! जो गलती हुई उसे छमा कीजिए। नदो, जा यहाँ से। मनियाँ इसे पकड के ऊपर ले जाओ। चुप नही रहती चुडैल ! बक-बक-बक-बक किये ही जाती है।"

लाले की घरवाली किसी तरह घर से अनिष्टकर ग्रह की तरह टली।

छोटी-बडी फिर रिपोर्टिंग करने के लिए ऊपर की छत पर आ गई।

खसफस बातो के दौर मे छोटी ने कहा—"अगर उसके गला घोटने से नदोबीबी मर जाती तो मै बडी खुश होती। कहने को तो बहन है, पर हमारे वो इनसे सख्त नफरत करते है। और इनसे तो जेठजी भी अब नाखुश ही रहते है।"

"और ये करधनी चुराने की क्या बात है ?" तारा ने पूछा। बडी बोली—"हमारी शादी के पहले यहाँ बडी भारी चोरी हुई थी। अम्मा बतलाती थी कि नौकर चुराकर भाग गया। सो अब देखो इतने बरसो बाद आज ये बात खुली कि ये भी नदो बीबीजी का ही काम था।"

"तो क्या नौकर से इनकी ?"

तारा की भेद-भरी बात का तार लेकर बोलते हुए छोटी ने कहा—"हो सकता है। जो अपने हस्बेंड को छोड दे, घर में चोरी कराये, वो क्या नही कर सकती।"

बडी सिर हिलाती हुई बोली—"हमारी समझ मे नही आता। ये उन औरतों में से है जो मर्दों से नफरत करती है। मेरा तो तजरबा है। मेरे स्कूल मे एक मास्टरनी थी, वो भी ऐसी ही थी।"

नीचे, घर के दुमजिले पर दूसरी लडाई का दौर आरम्भ हो चुका था। छै बरस पहले की चोरी का नुकसान अम्मा के कलेजे मे इस समय माँ की ममता से अधिक कचोट रहा था। मनियाँ को भी धनहानि और अपमान—दोनो की ही तडप खौला रही थी। शकर भी नदो के पक्ष में नही था। नदो सारे परिवार के विरुद्ध अकेली मोर्चा ले रही थी।

अपनी छत पर मिस्टर वर्मा दिखाई दिये। बडी थोडा-सा पल्ला खीच कर हट आई। छोटी ने छत से दिखाई पडती सज्जन की कोठरी की तरफ इशारा करते हुए कहा—

"जीजी, जीजी ! देखो उनके यहाँ भी पुतला रक्खा है।"

बडी ठोडी पर उँगली रखकर बोली—"हाय-हाय ! ये ताई निगोडी तो सबको खा जायगी।"

५

कटी-फटी पतगो, मकडी के जालो, घोसलो, चिडियो, गिलहरियो और पीपली के दाना से लदा, अनगिनत इसानो के चचल मन-समूह-सा हरहराता हुआ घना पीपल कई सदियो से मुहल्ले का साथी है। आज के बडे-बूढो के बचपन तक यह पेड गगे भूरिये के भाड का पीपल कहलाता था। मगर वह दीवाल जो किसी समय, किसी गगे भूरिये का वैभव थी, अब बाबू छेदालाल इश्योरेंस-एजेण्ट की मिल्कियत है। म्युनिसिपैलिटी के रजिस्टर के अनुसार उस मकान का नबर इस समय ४२० है जो सही तौर पर बाबू छेदालाल की ख्याति मे चार चाँद लगाता है। इस पेड के तीन तरफ राजा साहब के किसी पुरखे ने पक्का चबूतरा बनवाकर पत्थर के मण्डप में महावीरजी की मूर्ति स्थापित करवाई थी। उत्साही भक्तो ने सिदूरी चोले पर सोने-चाँदी के वर्कों से आज भी ऐसी सजावट कर रक्खी है कि गली मे धसने-वाले हर ज्योतिर्मय मानव का ध्यान उस ओर आर्कषित होता है। ज्योतिहीनो की लकुटिया को खटका देकर दिशा-ज्ञान कराने का काम राम के सेवक का चबूतरा करता है।

मण्डप के दाहिनी तरफ अदर जानेवाली बडी गली के मुहान पर यह चबूतरा मुहल्ले की चौपाल का काम देता है। उसके सामने एक छोटा-सा टीला होने के कारण धूप वहाँ तक बेरोक-टोक आती है। मुहल्ले के दो-एक हुक्के, नीम की दातूने, एकाध-दो अखबार, तरकारी-फलवालो के डले, कुल्फीनिमिष, कुल्फीमलाई, जलेबी, सुहाल, अदरसे, गजक-लौज-पट्टी-रेवडी-तिल के लड्डू, मूँगफलीवालो के खोचे ऋतु और समय के साथ उस चबूतरे पर दिखाई पडते हैं।

मण्डप के बाईं तरफ, सामनेवाली गली से घुसते ही एक छत्ता है, और उसके पास गौशाला की फटकिया गढे में धँसी आँख की तरह चमकती है। चबूतरे का यह भाग ज्यादा आमदरफ्त न होने के कारण, मगलवार को छोडकर, आमतौर पर सूना रहता है। मगल के दिन बसतू माली फूलहार, बताशा, बेसन के छोटे-बडे लड्डू और छोटे-छोटे पेडे लेकर बैठता है। कुछ बरसो से एक बूढा सिधी भी अपना नन्हा-सा किताबखाना

फैलाकर बैठ जाता है। पीपल के नीचे मण्डप मे विराजमान गदा-पर्वतधारी डेढ़ फुटिया बजरंगबली का चमत्कार एकदम ऐसा बाक्सआफिस है, जो बस 'हिट' होते-होते ही रह गया।

सुबह साढे नौ बजे की धूप चबूतरे से उतरकर गली मे प्रकाश की पट्टी डाल रही है। हनुमानजी के तेजोमय मडप से तनिक परे हटकर ही सूर्यनारायण का तेज तप रहा है। चबूतरे पर टाट बिछाकर बैठे रुई का पाजामा-कोट-कटोप पहने, सोने की कमानी का मोटे शीशोवाला चश्मा लगाये, चाँदी की अँगूठी में नीलम पहने, गुलूबद और जुर्राबो से सर्दी के खिलाफ पूरी मोर्चेबदी कर लाला मुकुन्दीमल हुक्का गुडगुडाते हुए खाँस रहे है। चबूतरे से लगकर गली मे कुर्सी पर सेक्रेटेरियट के एक सुपरिंटेडेट बाबू गुलाबचद बैठे हुए है। उनके पास चबूतरे पर अखबार लिए पढते हुए बाबू रामसरूप बैठे है। महाबीरजी के मण्डप से सटकर बैठा हुआ भगवानदीन मक्खनवाला (टीले से लगकर बने) लाला मुकुन्दीमल के घर से आये हुए बडे थाल में पाव-पाव भर के सात कटोरे तोलकर रख चुका है, आठवाँ उसकी तराजू पर है।

लाला मुकुन्दीमल की नजर भगवानदीन के तराजू पर थी। भगवानदीन कटोरे से एक चम्मच मक्खन निकालकर अपने कूँडे मे डालने जा ही रहा था कि लाला बोले —"धत्, एक-एक चमचे मक्खन मे साले मुनाफे मारने की सोचते हैं। डाल कटोरे मे।"

भगवानदीन मुस्कुराकर चम्मच का मक्खन वापिस कटोरे में डालते हुए बोला —"अरे लाला, हमे तो मुनाफे का एक ही चम्मच मिलता है। बडा मुनाफा तो आप बडे आदमी ..."

"देखो, देखो, बहस करता है ससुरा। गाँधीजी यही तो आजादी दिलाय गये है —ऊच-नीच जिसको देखो—बस जबान लडायेगा। अबे, मुनाफा इसमें नही, गाहक की तबियत खुश करने में होता है।

लाले दलाल दुलाई ओढे हुए अदर की गली से आये। चबूतरे पर बैठी हुई तीनो मूर्तियो से जैरामजी की हुई। बाबू गुलाबचन्द बोले—"अमाँ, तुम्हारे यहाँ आज क्या हुआ था सबेरे-सबेरे ?"

"हाँ, सुना कि ताई कुछ जादू-टोना कर गई थी।" बाबू रामस्वरूप ने गुलाबचन्द के प्रश्न मे अपना प्रश्न जोडकर कहा।

"अडे क्या बतामे याड, मुहल्ले के पचडे हैंगे साले। हजाड दफे मना कड चुका घड मे, कि छोटे लोगो से डाह-डसम न डक्खा कडो। चाड पैसे कमा लेने से ही कोई आदमी सडीफ नही हो जाता, लाला मुकुदीमल ... कि मै कुछ झूठ कहता हूँगा ?"

"अजी बाबू गुलाबचन्द ! कुछ सुना आपने ?" सहसा बाबू छेदालाल ने कही बाहर से आते हुए कहा।

लोगो की नजरें बाबू छेदालाल की तरफ उठ गईं। बाबू छेदालाल बाबू गुलाबचन्द की कुरसी पर हाथ रखकर खडे होते हुए कहने लगे—"आज सबेरे कपनी-बाग मे जिस लडके की लाश पाई गई थी ना ..."

"लाश ?" लाला मुकुंदीमल के प्रश्न मे सबकी जिज्ञासा शामिल थी। बाबू छेदालाल ने एक नजर सबके चेहरो पर बने सवालिया निशान पर डालकर कहा—"हैं! आप लोगो को नही मालूम। इतना बडा मजमा लग गया सबेरे-सबेरे। ताजा पैदा हुए बच्चे की लाश थी जनाब। जगदम्बासहाय मास्टर और उसके भतीजे की बिडो पकडी गई है।"

"जगदबा सहाय, ये अपने ?"

"हाँ-हाँ वही, भैंरोजी की गलीवाले। उनका लडका वो नही है झक्की-सा, और लौंडिया जो कम्युनिस्ट है—वही साला अपने भतीजे की बहू से , हद हो गई जनाब!" बाबू गुलाबचन्द के प्रश्न का उत्तर देते हुए बाबू छेदालाल चबूतरे पर बैठ गये। बाबू गुलाबचन्द ने उनका सामना करने की गरज से फौरन ही कुरसी उनकी ओर घुमा दी।

लाला मुकुन्दीमल जमुहाई लेते हुए बोले—"अजी, ओर होगा क्या? धरम-करम तो अब रहा नही दुनिया मे।"

"मगड भई, हम तो कहते हैंगे कि बडी जल्दी पकड लिया पुलिस ने। साली सबेडे वाडदात भयी औड "

"अजी, बाबू सालिगराम ने पकडवाया है।" छेदालाल बोले।

"अच्छा!" गोल-सा मुँह बनाते हुए बाबू रामसरूप ने गर्दन हिलाई—"ये नेताजी साले की करतूत है, मगर आप कौन दूध का धोया है बेईमान। दो-बार तो रिफ्यूजियो ने जूतो से पीटा था इसे छेडछाड करने पर।"

"हाँ, तो फिर उसका क्या हुआ छेदालाल? वो जगदबा सहाय की बहू का?" बाबू गुलाबचन्द ने पूछा।

"पुलिस आई है डाक्टर लेके। भैंरोजी की गली मे इस वक्त ठट्ठ-के-ठट्ठ जम रहे हैं भीड के।" छेदालाल ने कहा।

चौगोशिया टोपी, चौडे कपाल पर चदन का गोल टीका, चाँदी के फ्रेम मे नीले शीशोवाला चश्मा, चेचक के हल्के दाग लिए बडी-बडी सफेद मूँछोवाला साँवला भव्य मुखमण्डल, लबी-चौडी देह पर ऊनी चोगा, जरी का लाल दुशाला, धोती, ताजा-पालिश किए हुए पम्पशू पहने, मोती-मूँगे की अँगूठियो के साथ हाथ मे चाँदी की मूठवाली छडी लिये पडित शिवनाथ शास्त्री की गुरु गभीर मूर्ति गली में प्रवेश करती दिखाई दी।

"आइये महराजजी, पालागौं।' लाला मुकुन्दीमल उन्हे दूर से ही देखकर बोले। चबूतरे पर बैठे सब लोगो के हाथ उन्हे प्रणाम करने के लिए जुड गये।

"आनन्द रहिये।" शास्त्रीजी ने आगे बढते हुए सबके अभिवादन के उत्तर में कहा।

"कहिये महाराजा, पाठ कर आये राजासाहब के यहाँ?"

"हाँ।"

"अब उनके पोते की तबियत कैसी है? कल तो हालत बहुत खराब थी?"

"नही। ऐसी कोई विशेष बात नही। हाँ, बुखार तो है ही।" कहकर शास्त्रीजी अपने घर जाने के लिए एक पग आगे बढे।

लाला मुकुन्दीमल ने फिर प्रश्न किया—"और राजा साहेब किसके साथ है—कांग्रेस कि जनसंघ ?"

शास्त्रीजी झूम पडे, बोले—"बात ऐसी है मुकुन्दीमल, कि धनी पुरुष और वेश्या उन सबकी कामना-पूर्ति करते है जिनसे उनका स्वार्थ सिद्ध होता हो।"

सब लोग हँस पडे। बाबू गुलाबचन्द कुर्सी से उठते हुए बोले—"बिराजिये पंडित जी।"

चश्मे के नीले शीशो मे से कुर्सी की ओर ताकते हुए शास्त्रीजी बोले—"अब घर ही जाऊँगा।"

"अरे बिराजिये भी।" लाला मुकुन्दीमल जोर देकर बोले, फिर अपने घर की तरफ मुँह उठाकर चिल्लाये—"भगौती, अरे भगौतिया! जरा पान ले आ आठ-दस हाथ धोयके। और एक चिलम तमाखू भिजवा किसी के हाथ लपकके।" फिर कुर्सी पर बैठे शास्त्रीजी से कहा—"बात तो आपने लाख रुपै की कही शास्त्रीजी! मगर एक धनमान ही क्यो, सभी अपना स्वारथ भजते है।"

"स्वार्थ तो केवल ज्ञानी योगी ही भजते है, बाकी सब जो है सो स्वार्थ का अनर्थ करते है। और "

"नमस्ते बाबू साहब! आइबे-आइये।" बाबू रामसरूप ने अपनी कोठरी की तरफ जाते हुए सज्जन को बडे हौसले के साथ पुकारा।

सज्जन यो चबूतरे पर बैठे प्राय सभी सज्जनो की सूरतो से परिचित था, पर इनमें से व्यक्तिगत परिचय उसका किसी के साथ भी अब तक नही हो सका था। बाबू रामसरूप के पुकारने पर उसे अचकचाहट हुई, सकोच हुआ, और साथ ही साथ प्रसन्नता भी। विनयपूर्वक हाथ जोडकर वह आगे बढा। सब चेहरे उसकी तरफ देखने लगे। बाबू रामसरूप हरखकर बोले—"आज तो आपके ऊपर आर्टिकिल छपा है पेपर मे।"

बाबू रामस्वरूप के पुकारने पर सज्जन के मन मे एक हल्का-सा ख्याल यह भी आया था कि कल शाम राजा साहब ने शायद लोगो से उसकी बाबत कुछ कहा होगा, परन्तु स्वय अपनी ही कीर्ति के कारण अपनी आवभगत होती देखकर वह मन ही मन फूल उठा। जाहिरा तौर पर नम्र भाव से उसने कहा—"जी, वह तो "

लाले कौतूहल भरी नजरो से, बाबू गुलाबचन्द शिष्टता की मूर्ति बनकर, और बाबू छेदालाल पैनी कनखियो से उसे देखने लगे। शास्त्रीजी का नीला चश्मा एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर घूमा फिर उनका गभीर मुखमण्डल आत्मलीन हो गया। लाला मुकुन्दीमल का मोटा चश्मा बराबर उसके चेहरे पर डटा रहा।

तभी चाँदी की तश्तरी में पान आये।

बाबू रामसरूप ने पानो की तश्तरी पर एक चटपट नजर डालकर कहा—"शास्त्रीजी आप हमारे भारतवर्ष के बहुत बडे चित्रकार है, शिरीमान सज्जन वर्मा। आजकल तो आप हमारे मुहल्ले ही मे "

बडी देर से कौतूहल में एकाग्र लाला मुकुन्दीमल की गर्दन समझ की स्प्रिंग से लचकी। वो बोले—"अच्छा-अच्छा! तुम ही हौ कन्नोमल के पोते? कल राजा साहेब

शाम को ज़िकिर कर रहे थे जानकीसरन के यहा ।"

शास्त्रीजी की आत्मलीनता कन्नोमल के नाम से भग हुई, नीला चश्मा फिर सज्जन के चेहरे पर अटका, बोले—"कन्नोमलजी हमारे मित्रो मे से थे ।"

लाला मुकुन्दीमल जोश के साथ बोले—"अरे हमारा-उनका तो बडा ब्योहार था। बडी छोटी उमर मे मर गये बेचारे । मै जानूँ, कोई पचास बरसें तो उन्हे मरे भी हो गई होगी । क्यो शास्त्रीजी ?"

"जी हाँ, सन् दो मे उनकी मृत्यु हुई ।" सज्जन ने बतलाया । मुकुन्दीमल बोले— "भरी जवानी मे उठ गये बेचारे उनके लडके ने भी बडी कम उमर पाई—उसे तो शराब ले डूबी माली ।"

स्वर्गीय पिता के सबध मे लज्जाजनक गालीयुक्त बात सुनकर सज्जन का मन तुरन्त सकोच से भर गया ।

शास्त्रीजी बोले—"कन्नोमल पाठशाला मे मेरे सहपाठी थे । साल-सवा साल बडे थे मुझसे । उनके पिता उस समय यही चौक में रहा करते थे । अपने जमाने के बादशाह थे ।"

"अरे, बडे दबग आदमी थे । हमारे यहाँ पहले-पहल वो ही विलायत घूमने गये । पराशचित भी नही किया बचो । शाहनजफ के पास कोठी बनवा ली । बडे-बडे अगरेज हाकिम उनके यहाँ आते थे, लाट साहेब के यहाँ उन्हे कुरसी मिलती थी । बडा नाम कमाया साब ।"

बाबू रामसरूप ने देखा कि सारी आत्मीयता तो यह दो प्रतिष्ठित बूढे ही हथियाये लिये जा रहे है, उनके बुलाने का फल अकारथ चला जा रहा है, तो लपककर बोल उठे —"अजी, इन्होने तो अपने पुरखो से भी ज्यादा शोहरत पाई है । इनके ऊपर पेपरों में आर्टिकिल छपते है । मैने 'इल्स्ट्रेटेड वीकली' मे इनकी तस्वीरें देखी थी ।"

लाले बोला—"तो क्यो बाबू साहब, आप फोटूगिडाफड है कि कलमी तस्वीरें बनाते हैंगे ?'

अपने कलाकार के सबध मे ऐसा दुविधामूलक प्रश्न सुनकर सज्जन झिझक-से भर गया ।

लाला मुकुन्दीमल के हुक्के पर ताजी चिलम आ गई । लालाजी नौकर को हुक्का सरकाने और नली झुकाने आदि के सबध मे आदेश देने लगे । उन बातो के चलते हुए स्वर पर सज्जन ने भी अपना बडा सकोच-भरा, सज्जनता-सजा स्वर डबल लाइन की तरह खीच दिया—"जी मै कलमी तस्वीरे बनाता हूँ ।"

लाला मुकुन्दीमल नई चिलम का पहला कश खीचने जा ही रहे थे, कि उसका मोह त्यागकर बोल उठे—"अरे, कल्मी तस्वीरे तो हमारे यहाँ पडित रामनाथ गुसाईं बनाते थे सोधीटोलेवाले । वाह-वाह, हाथी-दाँत के ऊपर उन्होने ऐसी उम्दा-उम्दा तस्वीरें बनाई हैं कि क्या कोई बनायगा ?"

लाला चुप हुए, उनका हुक्का बोलने लगा । सज्जन इस अपरिचित समाज से आज के इतने परिचय को ही यथेष्ट मानकर अब वहाँ से जाना चाहता था । इस समाज की

सोहबत परायेपन का एहसास लिए अब उसके मन में घुटन पैदा करने लगी थी। शास्त्रीजी को हाथ जोडकर बोला—"अब आज्ञा लेता हूँ। फिर दर्शन करूँगा।"

बात पूरी होने के साथ ही साथ सबको प्रणाम कर सज्जन जाने लगा। शास्त्रीजी ने कहा—"हाँ, अवश्य मिलना। मुझे बडी प्रसन्नता होगी। आयुष्मान् हो! यशस्वी हो!"

शास्त्रीजी के गम्भीर स्वर में सज्जन को गहरी आत्मीयता का स्पर्श मिला। चलते-चलते रुककर सहसा उसने शास्त्रीजी के चरण-स्पर्श कर लिये। माँ को छोडकर उसने कभी किसी के चरण नही छुये थे।

शास्त्रीजी का नीला चश्मा उसे छत्ते की तरफ जाते देखकर चबूतरे पर बैठे सज्जनो से पूछ उठा—"ये लडका यहाँ क्या करने आता है?"

बाबू गुलाबचद बोले—"पता नहीं साहब! वैसे जब वो शरणार्थी वगैरह ने इनके खिलाफ बयान छपवाया था तब इनका स्टेटमेंट आया था कि मुहल्ला-जीवन के कुछ चित्र बनाने आये है। कुछ इडियन ट्रेडीशम वगैरह देखना चाहते है। ताई के ही किरायेदार है।"

लाले उठते हुए हँसकर बोले—"तो मुहल्ले मे ताई की तस्वीड बनाई कि नई इन्होने अभी तलक?"

बाबू छेदालाल भी उठते हुए मुस्कुराकर कहने लगे—"जिस दिन ये ताई की तस्वीर बना लेंगे उस दिन मै इन्हे मुहल्लेवालो की तरफ से एक मेडिल इनाम मे दूँगा।"

"अरे कहाँ चले भाई? तुम्हारी खातिर तो हमने शास्त्रीजी को बिठाया और तुम उठकर चल दिये। बैठो-बैठो। ये बताओ कि वोट किसको दिया जाय?"

चुनाव चर्चा गर्माने लगी, थोडी देर के बाद हाथ मे पुतले की तश्तरी लिए हुए सज्जन चबूतरे की तरफ से गुजर रहा था। लाले दलाल की नजर पडी तो हँसकर बोले—"अच्छा! ये आपके हियन भी सौगात डक्खी गई थी बाबूसाहब? अजी, हमाड़े घड पड तो "

सबकी नजरे सज्जन की ओर उठ गई। लाला मुकुन्दीमल हँसकर बोले—"क्या भैया, मकान-मालकिन का असर तुममे भी आय गया? किसके यहाँ लिये जा रहे हो?"

सज्जन हँसकर बोला—"पूछिये मत। मै जब गया तो कोओ की महफिल जमी थी। वो रिफ्यूजी औरते कहने लगी कि इसे हटवा दो, कौए जूठन गिराते है, उन सबो को डर लगता है। मैने कहा, लाओ मै ही फेंक आऊँ।"

"आप तो नास्तिक आदमी मालूम देते है बाबू साहब, तभी डड नही लगा। हमाड हियन तो सबेडे-सबेडे "

"क्यो बाबू छेदालालजी, यही न है आपका इडियन कल्चर, जिसकी आप लाग रक्षा करना चाहते है?"

बाबू गुलाबचन्द की बात सुनकर बाबू रामसरूप ही-ही-ही-ही करते हुए बाबू छेदालाल की तरफ टिल्ली बजानेवाली मुद्रा मे ताकने लगे। सज्जन भी अधखाये पुतले पर नजर रखकर मुस्कुराने लगा। बाबू छेदालाल जोर देकर बोले—"हम यह कभी भी नही कहते कि हमारे धर्म मे जो बुराइयाँ आ गई है उन्हे हम दूर नही करेगे। मगर हमारा जो असली धर्म है उसकी पूरी रक्षा होनी चाहिये।"

"ठीक बात हैगी ।" लाले दलाल के चेहरे पर धर्म का आवेश आ गया, कहने लगे —"धडम की इच्छा हड हालत मे होनी चाहिये । हम तो भैया सासतडो की बात कडते हैगे । इन बाबू साहब की तडियो से हम नईं हिम्मत कड सक्ते है कि जादू-टोने की तस्तडी हात से उठा ले ।"

"सुन लिया बाबू छेदालालजी ?" बाबू गुलाबचन्द ने फिर जबानी टहोका मारा —"अब यहाँ तो शास्त्री जी भी विराजमान है हमारे सौभाग्य से—बताइये महराज, किस शास्त्र मे लिखा है यह धर्म ?"

शास्त्रीजी का नीला चश्मा उठा, बडी-बडी सफेद मूँछो मे मुस्कराकर कहने लग— "लाले शास्त्र की बात थोडे ही कर रहे है, ये तो साम्न और तड की बात कह रहे हैं ।"

सब लोग हँस पडे । लाला मुकुन्दीमल के कत्थे-रंगे नकली दाँतो के बीच से गुजरती हुई तोद की धडकने 'ह-ह-ह' करने लगी, बोले—"वा महाराज ! क्या नुक्ता निकाला है ! ह ह ह !"

लाले दलाल कुछ भौंचक्के, कुछ कटे, झेपे-से खडे थे । बाबू छेदालाल दोनो घुटनो को हाथो से बाँधे तनकर बैठे थे, उनकी पुतलियो मे जय-पराजय की पैनी काट हीरे की कनियो की तरह चमक रही थी, बाकी चेहरा सधा हुआ था । बाब गुलाबचन्द और बाबू रामसरूप के चेहरे अपना पक्ष प्रबल मानकर चमक रहे थे । शास्त्रीजी ने लाले की ओर देखकर कहा—"हमने तुम्हारे उच्चारण-दोष की हँसी नही उडाई भैया, बुरा न मानना, पर अपने ढग से तुम्हारी बात मे अर्थ मिल गया । इस देश में कोई एक धर्म तो है नही, अनेक है, जितने घर जितनी सासे उतने ही धर्म है । सास गुरू और बहू चेला सो चेलियाँ शक्कर होती गईं । अनेक पीढियो मे जितनी बहुएँ भई उतना ही सास-धर्म का प्रचार भया ।" हँसी उमडी, पर शास्त्रीजी के वाक्य प्रवाह की शक्ति से असयमित न होकर लोगो के चेहरो पर खिल गई । शास्त्रीजी कह रहे थे—"और रहे तड, सो हिन्दुओ मे ईसाई देवी-देवताओ के भी तड है, पीर इलाही ओझा-मुल्ला सभी अपने-अपने तड बनाये बैठे है । अभी एक पुस्तक मे हमने देखा कि बबई मे एक ईसाह देवी कोई माउट मेरी है, उन्हे वहाँ के हिन्दू मौतमाबली कहके पूजते है । मुसलमान शासन के प्रभाव में वहाँ अल्लोपनिषद् नाम के एक नये उपनिषद् की रचना तक हो गई थी । कितने मत्र-प्रयोगो में इसलामियो का प्रभाव पडा । एक चेतरामी सप्रदाय निकला, उसने अजब मत का प्रतिपादन किया कि चतुर्मुखी ब्रह्मा से इस्तीफा दिलवाकर उनके स्थान पर एकमुखी अल्ला और त्रिमुखी दत्तात्रेय दोनो को बिठलाया । इस तरह एक नये चतुर्मुखी सृष्टिकर्ता की सृष्टि की । परमेश्वर शब्द को उन्होने विष्णु का पर्याय माना, और शिवजी खुदा के हाथ में सहार का कार्य सौंपकर भाँग घोटने चले गये ।"

चारो ओर से हँसी उमडी । हँसी की बेहोशी मे सज्जन ने पुतले की तश्तरी चबूतरे पर रख दी । उसे बडा आनन्द आ रहा था ।

लाले दलाले की नजर पुतले की तश्तरी पर गई, फौरन बोले—"बाबू साहब, माफ कीजियेगा, ये महाबीडजी का अस्थान हैगा "

"जी माफ कीजियेगा, मुझसे गलती हो गई।" कहकर तुरन्त तश्तरी उठा ली, और चलते-चलते फिर जैसे सफाई-सी देते हुए बोला—"मैं इसे कही चौराहे पर रख दूँगा, जहाँ शायद किसी को परहेज नही होगा।"

"जिहाँ-जिहाँ—बस आगे नल के पास जो चौडाया हैगा—बस वही पे धड दीजियेगा, औड हात धो लीजियेगा।"

हाथ मे कौओ की चोचो से घायल पुतलेवाली जादू की तश्तरी लिये गली से गुजरते हुए सज्जन को बडी झेप चढ रही थी। खुद अपनी ही नजरो मे वह तमाशा लग रहा था। गली से आते-जाते, घरो की खिडकी दरवाजो पर खडे लोगो की निगाहो से उसे परेशानी हो रही थी। सोचने लगा—'एक नौकर यहाँ भी उसके पास रहना चाहिये।' सोचने लगा—'मुहल्लेवालो का व्यवहार उसे साथ-साथ कितना अपना और पराया-सा लगता है। महिपाल शायद सच कहता है—मुहल्ले के—अपने देश के समाज को वह अजायबघर के सामान की तरह देखता है, अपनापन देकर उनसे घुल-मिल नही सकता। मगर यह काम कोई एक दिन मे तो हो नही सकता—और न उसे कभी पूरी तौर पर इस समाज मे घुलना मिलना है। हमे असस्कारो या कुसस्कारो से जूझना है, उन्हे समझना-सुलझाना है। हमे इस समाज की रूपरेखा बदलकर उसे नई दिशा देनी है।'—फिर ध्यान गया —'शास्त्रीजी के विचार कितने ऊँचे है। उसने उनके पैर छुये थे। सहसा यह भावुकता कैसे आ गई? खैर, वह डिजर्व करते है, वह उनसे और मिलेगा। महिपाल की धारणा गलत है। धीरे-धीरे वह सबसे घुल-मिल जायगा।'

सोचते, देखते, चलते सज्जन चौराहे की तरफ बढता गया।

६

चुनाव के नाम, चिह्न और नारे, माँ-बहन की गालियाँ, अमुक से तमुक के अप्राकृतिक मैथुन की हौसले-भरी सूचना, अजीमुश्शान दगल, बीडी, जादूलोशन, अखड सकीर्तन, सिनेमा, गर्मी-सूजाक-नामर्दी की दवाओ के पोस्टर, पान की पीक वगैरह—जन-जीवन की विभिन्न भावनाओ के दीवारी-अखबार का सिलसिला खत्म हुआ। हाथ मे तश्तरी लिए सज्जन नुक्कड के नल पर आ पहुँचा।

सामने बाजारवाली गली से चार कास्टेबिल बडी फुर्ती के साथ आते दिखाई दिये, उनके पीछे, उनके साथ एक छोटी-सी भीड भी दीख पडी। पुलिसवाले ड्यूटी (यानी चौराहो) पर, कोतवाली थानो मे, मैदान मे परेड करते हुए, बडी शादियो मे बैण्ड बजाते हुए, इक्के ताँगे, रिक्शेवालो की फड के पास चुपके-से हाथ फैलाते हुए यदि देख पडे तो आँखो को कुछ अजब-सा नही लगता, मगर गली-सडको पर चार की टोली मे चलते हुए

पुलिसमैन का महत्त्व कुछ और ही है। वह शासन का प्रतीक है। मनुष्य की सक्रिय न्याय-बुद्धि ने इस प्रतीक का निर्माण किया है।—इस बात का एहसास सज्जन को इस समय हुआ। पुलिसवाले दाहिने हाथ की उस गली मे चले गये, जिसमें लाले दलाल, लाला जानकीसरन, वर्मा, भभूती आदि रहते हैं।

हाथ की तश्तरी को भूलकर सज्जन पुलिस और भीड के दृश्य में रम गया। लगभग उसी समय उस गली से मिस्टर वर्मा और राधेश्याम आये। मिस्टर राधेश्याम ने इसी साल बी० ए० पास किया है, हाल ही मे सरकारी क्लर्की के लिए पब्लिक सर्विस कमीशन का इम्तहान दिया है। अपने आपको सोशलिस्ट भी खयाल करते हैं, साथ ही उन्हे यह खयाल भी है कि वे बहुत ऊँचे विचारो के आदमी हैं। राधश्याम शकरलाल के साथ शुरू-शुरू मे एक बार सज्जन से मिल आये थे, तुरन्त आगे बढकर उन्होने सज्जन को नमस्कार किया। मिस्टर वर्मा ने भी बडी श्रद्धा से उसे हाथ जोडकर नमस्कार किया।

सज्जन के होश मे हाथ की तश्तरी लौट आई, खवे ऊँचे हो गये, मन का सकोच मुस्कुराने का अभिनय करने लगा, बोला—"मुहल्ले से यह पहला सब्जेक्ट मुझे मिला है।—मगर ये बात क्या है? इस गली मे इतनी भीड और पुलिस के सिपाही ..."

राधेश्याम ने फौरन ही हाथ ऊँचा उठाकर बतलाना शुरू कर दिया—"साहब, वो एक मास्टर जगदबा सहाय टीचर है। बडा पर्वर्ट, लुच्चा साला ..."

सज्जन को हाथ की तश्तरी का ध्यान आ गया, फौरन बोला—"माफ कीजियेगा, मै जरा ये तश्तरी चौराहे पर रख आऊँ।"

मिस्टर वर्मा ने कहा—"अजी नही, यही नाली में फेक दीजिये, इसी मैनहोल मे।"

"किसी को एतराज न होगा?" नल पर कपडा धोते हुए एक व्यक्ति पर नजर डालकर सज्जन ने पूछा।

"नही-नही साहब, आप बेखटके फेक दीजिय।"

सज्जन ने टूटे मैनहोल के पास तश्तरी फेंककर नल से हाथ धोये, फिर पास आकर पूछा—"हाँ, तो क्या किस्सा है?"

"जी, उनके भतीजे की विडो, जवान है बेचारी। तीन-चार साल पहले शादी हुई थी, साल-छ महीने बाद ही उसका आदमी मर गया। मास्टर जगदबा सहाय के यहाँ चूँकि रहती है, इसलिये उन्होने उस पर हर तरह का मालिकाना हक जमाया। ये ही तो ट्रेजेडी है हमारे समाज की! हा!"

कहते-कहते मिस्टर राधेश्याम क्रोध और करुणा के मिश्रित आवेश में आ गये।

सज्जन ने पूछा—"फिर क्या हुआ?"

मिस्टर वर्मा ने बात उठा ली, बोले—"कल उसे रात में किसी समय लड़का हुआ। इन्होंने गला घोटकर उसे कम्पनीबाग के पास नाले में फिंकवा दिया। आज सबेरे पुलिस को पता लगा, तो यहाँ रेड आ गई।"

"मगर पुलिस को यह कैसे पता लगा कि ..." सज्जन ने पूछा।

बाबू राधेश्याम ने छूटते ही पोलिटिकल तेवर चढाकर तैश में कहा—"इस देश में

तो घर के भेदी ने ही सदा लका ढाई है। जनाबमन, ये उस साले सालिगराम की करतूत है। जगदबा सहाय की लडकी कम्युनिस्ट है, उसके यहाँ आजकल उसकी पार्टी के ड्रामा-वामा के रिहर्सल्स चल रहे हैं। भला सालिगराम आस्तीन मे साँप पालेगा? अजी, इस वार्ड के चुने हुए लोगो के यहाँ का राई-रत्ती हाल उसके पास पहुँचता है, फिर भला दुश्मन के घर का कोई भेद उससे छूट सकता है? यही तो काग्रेस का गेस्टापो है जनाब। और अगर इस एलेक्शन मे जनता ने इस जाल को नही तोडा, तो मैं कहूँगा कि "

गली मे आवा-जाही कायम थी। नल को दम भर के लिए इस्तेमाल से फुरसत मिली थी। गली के अदर से आते हुए मिस्टर वर्मा के किसी परिचित ने कहा—"उसने आग लगा ली वर्माजी!"

"है? किसने?" सज्जन, राधेश्याम, वर्मा सभी की यही प्रतिक्रिया थी।

"उस औरत ने। जैसे ही डाक्टरी जाँच के लिये उसे बुलाया गया, न जाने किस बहाने वह अदर ही अदर ऊपर के रसोईघर मे चली गई। वहाँ स्प्रिट, मिट्टी का तेल, जो कुछ मिला अब ज्यादा सुनके क्या कीजियेगा। ये जगदबा सहाय कम्बख्त तो फाँसी पर लटका देने काबिल है। उसकी वाइफ, एल्डर ब्रदर की विडो याने कि भावज—याने कि इस विधवा औरत की सास '

"मगर उस औरत का क्या हुआ?" सज्जन ने जरा बेताबी के साथ कहा।

"वो मिन्टो मे भभक उठी जनाब, चारो ओर चिरायध फैल गयी। जब तलक पुलिस दरवाजे तोडकर अदर पहुँची, वह बेहोश हो चुकी थी, एकदम जलकर लोथ हो गई थी। उसके कपडे जल गये थे, वो एकदम नगी "

"आपने खुद देखा?" सज्जन ने पूछा।

"जी मैंने खुद तो " सुनानेवाले मोटे-से तिपखी आँख के एक वकीलनन्दन थे।

सज्जन को यह महसूस हुआ कि सुनाने वाले हजरत उस औरत का बखान करने मे एक प्रकार का निजी और गोपनीय मजा पा रहे थे। यह उसे अखर रहा था। उसने राधेश्याम से कहा—"आप मुझे वहाँ एक बार ले चलियेगा?"

'हाँ-हाँ।" राधेश्याम से पहले वर्मा ने हामी भरी। राधेश्याम भी राजी हो गये।

चलते हुए राधेश्याम ने कहा—"भीडे बडी होगी? आप वहाँ क्या देख पायेंगे?"

"कुछ नही, जरा लोगो के रुख ही देख लूँगा। उनकी बाते सुनूँगा।" सज्जन ने कहा।

सूरज की रोशनी से सदा परहेज करनेवाली गलियो की गदगी, सँकडेपन और उनमें रहनेवालो की घुटन-भरी जिदगी पर राधेश्याम की फब्तियाँ सुनते हुए, मदिर, महाबीरजी का सिदूरी आला, सफेद पुता हुआ फूलहारयुक्त सैयद का आला, गोलियाँ खेलते और लट्टू नचाते धूल में सने हुए हुल्लड मचानेवाले देश के नौनिहालो को देखते-निहारते, गायो और राह चलतो से जरा-सी जगह मे कतराते तीन-चार छोटी-छोटी गलियाँ पार कर सज्जन-मण्डली एक खुली जगह मे पहुँच गई, जहाँ भीड लगी हुई थी।

सामने एक पुराना बडा-सा मकान था, जिसके दरवाजे पर दो पुलिसमैन खडे हुए भीड को आगे बढने से रोक रहे थे। बाएँ हाथ की तरफ एक खुला मैदान था जो आगे चलकर बडी सडक के पास खत्म होता था। सडक पर पुलिस की पिकप मोटर खडी हुई दिखाई दे रही थी। मैदान मे भी काफी लोगो का मजमा था।

इतने मे दरवाजे के अदर से दारोगाजी निकले, उन्होने एक सिपाही से कुछ कहा। वह भागते हुए 'पिक-अप' की तरफ चला गया। दारोगाजी ने एक बार जनता की तरफ देखकर घुडकी दी—"यहाँ क्या लड्डू बँट रहे है? जाइये अक्खाह, आप भी तशरीफ लाये है?" सज्जन को देखकर दारोगाजी बोले।

सज्जन ने पास जाकर उनसे हाथ मिलाया। राधेश्याम और वर्मा भी उसके पीछे-पीछे वहाँ पहुँच गये।

सज्जन ने पूछा—"क्या हाल है?"

दारोगाजी बोले—"अस्पताल मे जाके डाल देंगे खानापूरी के लिये, मगर बचना मुश्किल है।"

"बहुत जल गई है?"

"जी हाँ, जली तो खैर है ही, मगर उससे ज्यादा शॉक बैठा है उसे। अभी तमाम इजेक्शन बगैरा दिये गये है मगर ऐसा लगता है कि सिंक कर जायगी।" कहते हुए दारोगाजी अदर चले। सज्जन ठिठक गया, बोला—"मै "

"आइये, आइये साहब!" दारोगाजी ने उनका हाथ पकडकर घसीटा। फाटक के अदर एक छोटा-सा हाता है जिसमे तीन मकान बने हुए थे। मास्टर जगदबा सहाय के पुरखो का वैभव इस समय ध्वस्त-प्राय हो रहा है। लखौरी ईंटे जगह-जगह मे खिलने लगी है। सामनेवाले मकान मे खुद मकान-मालिक रहते है। पहले मेहराबदार बरामदा, उसमें बायें हाथ पर भारी जोडीवाला सदर दरवाजा, दाहिनी तरफ बहुत बडा हाल बना था।

बरामदे मे पुलिस, दहलीज में पुलिस—घर पुलिस के हवाले था। लडकी के कम्युनिस्ट होने के शक को लेकर घर की तलाशी भी लगे हाथ पुलिस ने कर डाली थी, कोई खास चीज हाथ न लगी।

जब ये लोग दरवाजे से जा रहे थे, उसी समय पुलिसमैन ने प्रवेश किया। दरोगाजी उसे देखकर बरामदे ही मे खडे हो गये। कास्टेबिल ने पास आकर सलूट किया और कहा—"कोतवाली को वैरलैस कर दिया हुजूर! मिरजाजी अटेण्ड कर रहे थे हुजूर, तौन उन्होने मिसेज दिया कि अस्पताल की गाडी भिजवाते हैं हुजूर।"

"ठीक है।" दारोगाजी ने कहा—"और सुनो, कही से दो कुरसियाँ लाकर डाल दो धूप में।"

सिपाही हाल मे चला गया। दारोगाजी सज्जन से कहने लगे—"आज सबेरे से चाय तक नही पी है, आप यकीन मानियेगा। ये साली पुलिस की नौकरी है। सबेरे उठके जरा पेपर पर नजर डाल रहा था—आपवाले आर्टिकिल को भी एक नजर सरसरी तौर पर देखा था—तब तक बाबू सालिगराम आ गये। उन्हे कुछ इलेक्शन के सिलसिले में

जरूरी बात कहनी थी। तभी लाश की रिपोर्ट आई। बाबू सालिगराम ने कहा कि शक में जगदवा सहाय का घर घेर लो। उनका खयाल था कि इस मकान में कम्युनिस्टों का प्रोपेगैण्डा मैटीरियल वगैरह होगा। फिर तो आप समझ सकते हैं, कहाँ की चाय और कहाँ का नाश्ता।"

कुरसियाँ आ गईं, बैठते हुए सज्जन ने जेब से सिगरेट-केस निकाला। हाथी दाँत का यह गोपुरम् की शक्ल का सिगरेट-केस मैसूर से खासतौर पर उसके आर्डर के मुताबिक तैयार होकर आया था। बीच में नटराज की बहुत सुन्दर मूर्ति बनी हुई थी। सज्जन के सिगरेट-केस निकालते ही, शुक्लाजी ने उसे अपने हाथ मे ले लिया। कुछ देर तक देखने के बाद, सिगरेट-केस खोलकर सज्जन की ओर बढाते हुए बोले—"वो क्या है मैथिलीशरण गुप्त की लाइन—"हाई स्कूल में पढी थी—कि—'पाई तुम्ही से वस्तु वह कैसे तुम्हे अर्पण करूँ ?"

सज्जन ने एक सिगरेट निकाली, और जेब से सिगरेट लाइटर। शुक्लाजी ने अपने लिये एक सिगरेट निकाल, केस बद करते हुए उसकी नक्काशी को अच्छी तरह देखकर कहा—"आप आर्टिस्ट लोग जाने कहाँ-कहाँ से सुन्दर चीजे बटोर लाते है।"

"जो जिस फिक्र मे रहता है उसे वह चीज मिलती है।" सिगरेट जलाते हुए सज्जन ने कहा।

शुक्लाजी ने दरवाजे के पास खडे कांस्टेबिल को आवाज दी—"शेरअली !"

"जी हुजूर।" शेरअली पास आया।

"जरा यार, देखो तो जाके अदर—वो साली मरी कि नही।"

शेरअली चला गया। सज्जन बोला—"पुलिस के पेशे में इसान की करुणा मर जाती है।"

"अजी, क्या करें ? रोज ही ऐसे तमाशे देखने पडते हैं। कभी-कभी तो आप सच मानियेगा सज्जन साहब, इस पुलिस-पेशे में रहकर यह बिश्वास होने लगता है कि इसा-नियत-बिसानियत कोई चीज नही। पुलिस का रोजनामचा उठाकर देखिये, यह अनुभव होता है कि सत्य तो यह है, बाकी वे सब मदिर-मस्जिद, धर्म-कर्म—ये तमाम अच्छी बातें, और आपका ये आर्ट-कल्चर वगैरा ढोग है। हजारो बरसो में भी ये खूबियाँ इसान पर कोई प्रभाव न डाल सकी। . हाँ क्या है ?"

शेरअली दारोगाजी को बात करते देख अदर से आकर चुपचाप खडा हो गया था। दारोगाजी के पूछने पर बोला—"डाक्टर साहब कहते हैं हुजूर कि अभी कुछ कहा नही जा सकता।"

"मार डाला साली ने। आज भूखा भी रक्खेगी बचो "

"आपको गालियाँ देने का हक किसने दिया ?" पीछे हाल के दरवाजे पर खडी हुई गोरी-सी युवती ने पूछा।

शुक्लाजी ने त्योरी बदलकर इस तरह पीछे मुडकर देखा, मानो उनके अधिकारो पर आक्षेप किया गया हो। सज्जन की कुरसी से उस जनाने गोरे चेहरे का सामना पड रहा था। सज्जन ने अक्सर इस चेहरे को देखा था, एकाध बार कही दो-चार के झुड मे

उससे बाते करने की याद भी हो आई, पर वह उसे जानता न था। उस युवती के गोल चेहरे और बडी-बडी आँखो मे आवेश की चमक थी।

दारोगाजी मुस्कुराकर बोले—"क्या करे साहब, हमारा पहला मालिक अँगरेज जो था वह भी गालियाँ देता था, और ये नये काग्रेसी आका भी देते है। अब जब आप लोगो का, कम्युनिस्टो का राज आयेगा तब शायद छूट जायँ गालियाँ।

वह युवती सज्जन की ओर परिचित दृष्टि से देखकर, घूरकर, फिर दारोगाजी से यह कहती हुई हाल के अदर चली गई—"तब आप लोगो को मार-मारकर यह आदत छुडाई जायगी।"

दारोगाजी चढते गुस्से की लगाम खीच सज्जन की ओर देखकर मुस्कुराते हुए जोर से बोले —"अजी, इसीलिए तो हम कम्युनिस्टो का राज्य आने नही देंगे, क्यो साहब ?"

सज्जन धीरे से बोला—"ये गालियो की आदत तो माफ कीजियेगा, मुझे भी बुरी लगती है।"

"हाँ, खैर बुरी तो है ही। पर क्या करे साहब, यह पुलिस का महकमा गाली के बगैर काम ही नही कर सकता।"

बाहर से कास्टेबिल ने आकर कहा—"अस्पताल की गाडी आ गई है, हुजूर!"

दारोगा बोले—"आ गई है तो क्या करूँ ? डाक्टर साहब से पूछो, मरीजा ले जाने काबिल है ? या ठहरो, मै ही उनसे बात किये आता हूँ। आप यही विराजिये सज्जन साहब!"

"जी हाँ! मैं बैठा हूँ—बल्कि चलूँगा।"

"अजी ठहरिये! बस मै अभी आया।"

दारोगाजी अदर चले गये, कास्टेबिल भी उनके पीछे-पीछे ही गया।

सज्जन ने जेब से सिगरेट-केस निकाला। वह सोंच रहा था, बेकार के तकल्लुफ में फँस गया। फिर ध्यान गया मरीजा कैसी होगी ? उसे क्या आग लगाने मे जरा भी झिझक नही लगी होगी ? ओफ, कितनी बुरी मौत है ? कल्पना से सज्जन के रोगटे सिहर उठे।

गोरी युवती फिर आई। आकर खाली कुरसी के पास खडी हो गई। सज्जन सभ्य मूर्ति बनकर खडा हो गया—"आइये।"

"आप यहाँ क्या करने आये ?"

अगरेजी मे पूछे गये रूखे सवाल से सज्जन चौंक उठा। युवती ने उसका जवाब आने से पहले ही फिर प्रश्न किया—"आपका पुलिसवालो का साथ कब से होने लगा ? क्षमा कीजियेगा, मैं बहुत ब्लण्ट सवाल पूछ रही हूँ।"

सज्जन ने गभीर स्वर मे उत्तर दिया—"तमाम दूसरे लोगो की तरह से खबर सुनकर आया था। ये मिस्टर शुक्ला मुझे अदर ले आये—मेरी इनकी जान-पहचान है।"

"तो पुलिस की जान-पहचान से क्या आप भी किसी की मजबूरी का फायदा उठायग ?" आवाज ज्यादा रूखी, तीखी थी।

सज्जन ने सिर झुका लिया, फिर कहा—"मुझसे गलती हुई, माफ कीजियेगा। मै जाता हूँ।"

"मैं आपसे जाने के लिये नही कहती।" युवती का स्वर पहले से नम्र था—"किसी और समय आते तो अपना सौभाग्य मानती। क्या आप जानते है कि अपराधी मेरे पिता और मेरी भावज है।"

"यह मै नही जानता था। दरअस्ल, अगर आप बुरा न माने तो मै आपको भी नही जानता। यो देखा कई बार है। आप शायद कम्युनिस्ट पार्टी मे काम करती है।"

"जी नही। मै कम्युनिस्ट नही हूँ। मगर पार्टीवालो से मेरा सबध है।" युवती ने जवाब दिया।

"आपको शायद यह नही मालूम कि आपके घर पर आफत आपकी वजह से आई है?" सज्जन ने कहा।

युवती उसका मुँह देखने लगी। सज्जन ने कहा—"आपके यहाँ कम्युनिस्ट पार्टी के लोग जमा होते है। इसी वजह से निगरानी होती थी, जिससे आपके घर का अपराध "

"अपराध किसका? मेरे पिता का या भाभी का?"

प्रश्न सुनकर सज्जन एक सेकेड रुका, सोचा, फिर बोला—"दोनो का है। परन्तु आपकी भाभी चूँकि इस समय "

"वो मेरे पिता के अपराध की सजा पा रही है?" कह युवती चलने लगी। फिर कुछ सोचा, पूछा—"भाभी का अपराध क्या था?—भरी जवानी मे विधवा होना या माँ बनना?"

सज्जन ने महसूस किया कि वह युवती भावावेश मे है, और किसी न किसी रूप मे उमडना चाहती है, उसे सात्वना देने की गरज से मीठा बनकर सज्जन ने कहा—

"वो इसके लिये मेरी नजरो में गुनहगार नही! हाँ, बच्चे की हत्या को मैं जरूर ."

"वो मेरे पिता ने की है। उन्होने भाभी पर हर तरह की जबरदस्ती की है। मै जानती हूँ, मै कहती हूँ।"

युवती का गोरा चेहरा फिर आवेश से तमतमा उठा, फिर चलने को कदम उठाया, फिर ठिठकी और कहा, जैसे अपने आपसे कहा हो—"भाभी का अपराध यही है कि वे औरत है और एकनामिकली फ्री (आर्थिक दृष्टि से स्वतत्र) नही है।"

जमीन की तरफ नजरें गडाये युवती खडी रही। सज्जन खामोश होकर उसे देखता रहा, उसके मन मे अनदेखी दण्डिता के लिये सहानुभूति उमड रही थी, वही सहानुभूति वह कहनेवाली के दग्ध हृदय को भी अर्पित कर रहा था। युवती के अस्त-व्यस्त घुँघराले बाल, दर्द मे एकाग्र बडी-बडी आँखो की पुतलियाँ, भावावेश से तमतमाया हुआ खूबसूरत गोरा चेहरा करुण-स्निग्ध दृष्टि से देखते-देखते सहसा सज्जन के जी मे आया कि उसे प्यार कर ले। दूसरे ही क्षण उसे अपने ऊपर बडी शर्म आई, बडा गुस्सा आया। उसने नजरें नीची झुका ली।

"आप एक मेहरबानी करेंगे? पुलिसवालो से कह दें, जल्द ही यहाँ से चले जावें।

हम लोगो को फूट-फूट कर रोने के लिए भी अवकाश नही मिल रहा है।"

बडी-बडी आँखो मे जल भर आया था, होठ और नकसोरे काँप रहे थे। सज्जन ने देखा, और फौरन नजरे झुका ली। "छि! नारी क्या केवल भोग की वस्तु है?" —उसने अपने ही से प्रश्न किया। युवती तेजी से हॉल मे चली गई।

७

"ये आल इडिया रेडियो लखनऊ, इलाहाबाद, पटना है। आपकी पसद के फिल्मी रिकार्डों का प्रोग्राम समाप्त "

तारा ने उठकर रेडियो की सुई लाहौर पर लगा दी।

"छम छम छम बाजे पायल मोरी।—
आ जा चोरी-चोरी, आ जा चोरी-चोरी।"

हिन्दुस्तान का टूटा हुआ तार पाकिस्तान रेडियो के फिल्मी प्रोग्राम न जोड दिया, सुनने वालो ने फिर एक ताजगी महसूस की।

तारा फिर पलंग पर आकर सहारे से बैठ गई। छोटी पायताने की तरफ हथेली पर सिर टिकाये लेटी थी। बडी ने कार्पेट की आरामकुर्सी को पलग से सटाकर उस पर आसन जमाया था। तारा के आकर बैठते ही छोटी ने चलती हुई बात का सूत्र फिर उठा दिया, कहने लगी—"मैंने देखा है नदो बीबी के हस्बेड को। हमारी मासी की जिठानी की भतीजी से उनकी दूसरी मैरिज हुई है। जरा पुरानी चाल के आदमी है, मगर भाई बडे शरीफ है। देखने मे भी अच्छे है अपने।"

"अरे इनके लिये तो साकशात कामदेव आ जाय तो भी कुछ नही। चुडैल है चुडैल। ए! तुम्हे एक बात तो सुनाई नही।" बिजली की तेजी से आरामकुर्सी छोडकर बडी पलँग पर आ गई। बडी की आवाज और फुर्ती के प्रभाव से लेटी हुई छोटी गुदगुदी भरी सकपकाहट लिये उठ बैठी।

नारी के देह सौंदर्य को कुरूप करके भी सृजन-सौन्दर्य से उसका मानस अभिभूत करनेवाले सुहागिन तारा की देह पर चढे हुए आठ महीने जिस हद तक उसे अपने पैर सिकोड लेने की इजाजत दे सकते थे, उस हद तक वह भी सीधी सतर्क बैठकर अपनी उत्सुकता प्रकट करने लगी।

बडी बायें पैर से पालथी मार और दाहिना घुटना समेटकर उसके सहारे हाथ टिकाती उँगलियाँ नचाती 'चुपचुप' स्वर में बोली—"नदो बीबीजी के सदूक में फोटुयें मिली हैं, औ पूरी एक दर्जन, सेट का सेट!"

"अरे कैसी फोटो?" छोटी की बेताबी उसके चेहरे पर भेद से बौखलाई आ रही

थी। तारा की आँखो मे भी पहेली चमक रही थी।

बडी ने उसे लहजे में कहा—"अरे जो बुरी-बुरी फोटुयें आती नही है बाजार में हाय, मेरा तो बडा जी खराब होता है उन्हे देख-देखके।" बडी की जबान में फुरहरी चल गई, देह में रस की लहर दौड गई और आँखो मे मद चढ आया।

तारा ने पूछा—"तुमने देखी है वो तस्वीरे ?"

"अरे, हाँ-हाँ भाई! सबेरे हमारे उन्होने नदो बीबीजी की एक-एक चीज की तलाशी ली कि शायद कुछ और चुराया हो। अरे, बडी झक-झक हुई है इस पर। छोटी से पूछो। और हमारे उनका मिजाज तो तुम जानती ही हो—जिस बखत तेज हो जाय उस बखत लाट साहब भी उनके आगे क्या चीज है!"

बडी का पति मनिया अपने ढग का रसिया-छैला है, इसलिये वह बडी को शुरू-शुरू मे रिझाता भी था। परन्तु यह सब थोडी देर के लिये ही होता था, और मनिया की इच्छा से होता था। बडी मनिया से हरदम थर थर काँपती रहती थी। अविवाहित देवर शकरलाल उसे सुहाता था। ननद नन्दो तो पूरी जहर की पुडिया ही थी। भाई से झूठी चुगली खा-खाकर बडी को बहुत सताया, मारे तक खिलवाईं। अपने बस मे रखने के लिये ही मनिया को सतो की बहू से फँसाया। इसीलिये नन्दो की पिटाई से वह बडी प्रसन्न थी।

बाते चल ही रही थी कि छोटी कमरे के बाहर तारा और मिस्टर वर्मा की आवाज के साथ-साथ अपने पति का स्वर सुनकर अचकचा उठी, साथ ही खुश भी हुई। आरामकुर्सी से उठकर फौरन कमरे के दरवाजे पर आ गई, हाथ जोड कर मिस्टर वर्मा को नमस्कार किया और पति की तरफ देखकर कुछ पूछनेवाली ही थी कि मिस्टर वर्मा ने कहा—"देखिये, आपके फरार कैदी को गिरफ्तार कर लाया।"

छोटी लजाकर मुस्कराने लगी। तारा छेडभरी नजरो से उसे देखकर हँस दी। शकरलाल ने वर्मा से कहा—"अजी, तो फिर यो कहिए कि दो फरार आपस में एक-दूसरे को पकडकर अपने हाकिमो के हुजूर में आ गये।"

चार की हँसी एक होकर गूँज गई।

कमरे में पलँग के पायताने से टिककर बाहर की ओर कान लगाये बैठी बडी के मन में उत्सुकता थी कि कैसे ये लोग बातें करते है। तारा, छोटी—विशेषरूप से देवरानी छोटी के प्रति दबी हुई ईर्ष्या होते हुए भी बडी उनसे कुढ नही रही थी। छोटी और तारा दोनों ही इस समय मानो अपने अस्तित्व से कोई मतलब न रखते हुए केवल एक माध्यम बन गई थी जिनके सहारे बडी का रस-विलास चल रहा था।

देवर की आवाज कान में पडी—"चलो सरूप, घर चलकर झटपट तैयार हो जाओ फिर—"

"ठहरिये, अभी चाय पीकर जाइयेगा—" तारा की आवाज आई।

"नही, बेकार में तकलीफ—" शकर की बात काटकर मिस्टर वर्मा बोल उठे—।

"अजी बैठिये भी, आपके बहाने से मुझे भी एक कप मिल जायगा, वरना ये सूखा ही टरका देंगी।"

"सुन रही है मिसेज वर्मा! शिकायत हो रही है आपकी।"

"आप ही सुनिये। जो एहसानफरामोश हो उसकी बात कहाँ तक सुनी जाय ?"

तारा की आवाज दूर चली गई। हल्की हँसी के बाद मिस्टर वर्मा की आवाज बडी के कानो मे आई, वे उसके देवर से पूछ रहे थे—"कही पिक्चर-विक्चर का प्रोग्राम बनाया है क्या ?"

"जी हाँ, वो हमारे दोस्त हैं—शायद आपने नाम सुना हो—विरहेशजी, उन्होंने 'बहार आई रे' पिक्चर के गाने लिखे है।'

"हाँ-हाँ, चल तो रही है आजकल। कैसी पिक्चर है ?" वर्मा ने पूछा।

"सुनो।" दूर से तारा की आवाज आई। बडी ने अनुमान लगाया तारा रसोई घर मे है।

दूर से मिस्टर वर्मा की आवाज आई—"शकर बाबू, अभी आया।"

"सुनिये-सुनिये, मिस्टर वर्मा" शकरलाल बोले—"बैठिये, कहाँ जाइयेगा, कोई तकल्लुफ करने की जरूरत नही।"

"अजी कुछ नही, बस आता हूँ अभी।" मिस्टर वर्मा की आवाज गुप हो गई।

"मिठाई-विठाई लेने गये होगे" बडी ने सोचा। शकरलाल तारा से कह रहा था—"आपने भी मिसेज वर्मा, बेकार दौडा दिया बेचारो को।"

"अजी वाह! कभी भूले-भटके तो हमारे घर आते हैं आप। अरे छोटी, मोहनी को बुला लो। पर्दे की बुबिया बनी बैठी है अदर।"

"क्या भाभी यहीं हैं ?—भाभी।" शकरलाल ने आवाज दी। आवाज के साथ ही अखबार के पन्ने खडखडाये।

बडी सकोच के साथ उठी। कमरे के दरवाजे पर आकर खडी हो गई। दालान में सोफे पर शकरलाल बैठा था। उसे देख मुस्कराते हुए बोला—"तुम तो ऐसी छिपी बैठी थीं जैसे कोई किसी के दिल मे छिपता है। मैं घर में ढूँढते-ढूँढते परेशान हो गया।"

"यह रेडियो पाकिस्तान है। फिल्मी रिकार्ड . "

"मोहिनी, जरा रेडियो बद कर देना।" तारा ने रसोईवाले दालान में खभे के सहारे खडे हुए कहा। छोटी स्टोव से चाय की केतली उतारकर दूध का लोटा चढा रही थी। बडी अपने देवर की बात का जवाब देते हुए कमरे के अदर रेडियो बद करने गई। उसने कहा—"जो दिल मे छिपा है उसे ढूँढते हुए ही तो यहाँ आये हो। मेरे ऊपर क्यों ऐसान करते हो ?"

रेडियो बद हो गया। दालान से शकरलाल का जवाब आया—"अजी, ये दिल मे कहाँ है ? ये तो उजागर हैं ? दिल में तो तुम छिपी बैठी हो।"

बडी मुस्कराते हुए बाहर आयी। शकरलाल ने उसे देखते हुए अपना वाक्य पूरा किया—"न मेरे सही, भैया के दिल में सही, बात एक ही है।"

बडी ने देखा, तारा और छोटी दोनो ही मुस्करा रही थी। बडी ने उन्हे देखा और शोख होकर तारा से कहा—"सुन रही हो इनकी बाते। झूठ बोलने मे ही एमे पास किया है हमारे लालाजी ने! ये तो न कहा कि भाभी चलो तुम्हे पिक्चर दिखा लाऊँ, और ऊपर से दिल की बाते करते है।"

कहते हुए बडी रसोईवाले दालान की ओर बढी। शकर ने जवाब दिया—"भाभियो को दावत नही दी जाती, वो आप गले पकडकर दावत लेती है। मेरा ख्याल है मिसेज वर्मा मेरी बात का समर्थन करेगी।"

तभी मिस्टर वर्मा ने हाथ मे दोने लिये हुए घर मे प्रवेश किया। तारा उनसे दोने लेने के लिये आँगन मे आ गई। छोटी ट्रे मे चाय के बर्तन सजा रही थी। बडी पास ही बैठी थी, उसने हलका-सा घूँघट खीच लिया। मिठाई-नमकीन के दोने देकर वर्मा ने शकरलाल के पास आते हुए पूछा—"किस बात का समर्थन करा रहे थे आप ?"

"कुछ नही, एक भाभी की ज्यादती का फैसला दूसरी भाभी से करा रहा था।"- शकर ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

वर्मा ने सोफे से सिर घुमाकर दालान की रसोईवाले ओर देखकर कहा—"अच्छा, आपकी भाभी साहिबा भी यही तशरीफ रखती है। मगर जिसको आपने फैसले का अधिकार दिया है उसकी योग्यता का अदाज भी तो लगा लेते।"

"मिस्टर वर्मा, अब स्त्रियो को अयोग्य न कहियेगा। कास्टीट्यूशन मे उनको बराबरी का दर्जा मिला है।"

तारा चाय की ट्रे लेकर आ गई, गोल टेबिल पर रखती हुई बोली—"ये सब बात कल्चर्ड लोगो की समझ मे ही आती हैं मिस्टर लाल, गँवारो से कहने से क्या फायदा ?" कहते हुए तारा ने अपने पति की ओर शोखी-सुहाग-भरा तीखा कटाक्षपात किया। वर्मा और शकर के होठो पर मुस्कराहट आई। शकर ने कहा—"बस, अब मै लाजबाब हो गया मिसेज वर्मा!"

छोटी मिठाई-नमकीन की प्लेट लिये आ पहुँची, उसे देखकर शकर की बात में नया उत्साह आया, बोला—"कही सरूप ने भी मुझे गँवार बना दिया तो—"

"जो जैसा होगा उसे वही तो कहा जायगा!" छोटी के जवाब पर तारा-वर्मा जोर से हँस पडे। शकरलाल की हसी भी शामिल हो गई।

रसोई मे खडी हुई बडी ने रस के साथ हाय भरी, वो मजाक में भी अपने पति को गँवार नही कह सकती। तभी सामने खडी तारा ने उसे बुलाया। आँख के इशारे से ही बडी ने कहा—"नही, मुझे शरम लगती है।"

तभी शकरलाल ने उठते हुए तारा से कहा—"आइये, तशरीफ रखिये।"

"अपनी भाभीजी को तो बुलाइये। उन्हे शरम आ रही है।" कहकर तारा ने बडी की तरफ हँसते हुए देखा।

बडी ने तारा को गुस्से से तरेरा। शकर ने आवाज दी—"भाभी।" तारा शकरलाल के पास सोफे पर आकर बठ गई। छोटी प्यालो में चाय ओझ रही थी।

शकरलाल उठकर सामने आया। बडी उसकी ओर झेप भरी दृष्टि से देखकर सिर का पल्ला सम्हालते हुए सकोच भरे डग धरती आँगन पार करने लगी। शकरलाल उसकी ओर देखकर बोला—"हमारी भाभी के नखरे आपको मालूम नही। भैया ने उन्हे बेहद खुशामदपसद बना दिया है!"

बडी दालान में आ गई। मिस्टर वर्मा ने खडे होकर हाथ जोडे। बडी ने भी सकुचाते

हुए हाथ जोडे और तारा के पास जाकर बैठ गई। तारा ने मिठाई की प्लेट उठाकर शकरलाल की ओर बढाई। छोटी ने वर्मा को चाय का पहला प्याला दिया।

स्त्री-पुरुषो के सम्मिलित समाज में बैठकर चाय पीने का यह मौका बडी को बरसो बाद दूसरी बार मिला था। स्कूली जमाने मे ईसाई दीदीजी के घर उनके एक रिश्तेदार दम्पति के साथ उसने चाय पी थी, लेकिन तब की बात और थी—वह कुँआरी थी—इतने अधिक बधनो मे भी नही बँधी थी। उसे मजा आया था। मजा उसे इस समय भी आ रहा था मगर बडे बधनो के साथ। तारा और छोटी के खुले व्यवहार को देखकर वह अपने आप मे छोटापन महसूस कर रही थी। सबको चाय देकर अपना प्याला लिय हुए छोटी उसी के पास आ बैठी।

वर्मा दम्पति द्वारा चाय पिलाये जाने के बदले मे लाल दम्पति ने उन्हे अपने साथ पिक्चर देखने की दावत दी। वर्मा बोले—"आप लोगो को तो साग-राइटर साहब ने पास '

वर्मा ने दूसरी झिझक को काटते हुए शकरलाल ने कहा—"जी नही, पास-वास नही है। उनका बडा आग्रह था और मैंने भी सोचा कि आज इतवार है, कोई पिक्चर तो देखना ही है। आइये, चलिये मिसेज वर्मा, हमारी ओर से दावत रही।"

मिस्टर और मिसेज वर्मा की आँखो ने एक दूसरे से अनुमति ली और राजी हो गये।

शकरलाल ने बडी से कहा—"चलो भाभीजान, आज तुम्हे भी सैर करा लायें। घबराओ मत, भैया से लिखकर आज्ञा मँगा लूँगा।"

आज्ञा माँगने की बात पर बडी मन-ही-मन लाज से गड गई। उसे अपने मन में लगा कि जैसे दोनो जोडे उसकी ओर सहानुभूति से देख रहे हैं।—"हाय मैं कितनी मजबूर हूँ। ऊँची सोसाइटीवालो की नजरो में नीची हूँ और केवल अपने पति के कारण!"

बडी की नजरें न उठी, सब चले, वह सबके पीछे चली।

८

मैटिनी शो खत्म होने पर भीड सिनेमा हॉल से यो निकल रही थी जैसे पानी का मोटा पम्प खोल दिया गया हो। उसी समय शकर-वर्मा-परिवारो के ताँगे रुके।

शकर ताँगे से उतरकर भाडा देने के लिये अपनी पर्स खोलने लगा। उसे देखकर दूसरे ताँगे से अपनी पत्नी और बडी के साथ उतरकर खडे हुए मिस्टर वर्मा ने कहा—"मैंने दोनो का पेमेन्ट कर दिया है मिस्टर लाल!" फिर शकर के ताँगेवाले से कहा—"इससे अपने पैसे ले लेना।"

शकर ने पर्स बन्द करते हुए हँसकर कहा—"आप बडे जल्दबाज हैं। अच्छा, मैं टिकट ले आऊँ।"

"मै जाता हूँ।" वर्मा आगे बढा, शकर ने उसे रोकते हुए कहा—"मिस्टर वर्मा

प्लीज !" और शकर तेजी से आगे बढ गया।

तीनो स्त्रियो के साथ वर्मा धीरे-धीरे आगे बढा। तारा छोटी बडी, तीनो अपनी तरफ उठनी हुई मर्दानी नजरो को नजरअन्दाज कर और जनाने फैशनो पर निगाह दौडाती हुई धीरे-धीरे आगे बढ रही थी।

लम्बे घुँघराले बालोवाले, चश्मा-मडित छोटी आँखोवाले, ऊनी कुरता-सदरी, चूडीदार पायजामा-मोजे, पेशावरी पहने, बाईं बाँह पर चेस्टर और दाहिने हाथ मे 'फाइव-फाइव-फाइव' का टिन लिये एक सज्जन को साथ लेकर शकरलाल वहाँ आये। बडे तपाक से परिचय कराया—"मिस्टर वर्मा, आप ही प्रसिद्ध कवि विरहेशजी हैं, जिन्होंने इस पिक्चर के गाने लिखे है। और आप मि ्टर त्रिभुवननाथ वर्मा, केमरबाग मे जो अजन्ता रेडियो इजीनियरिंग वर्क्स है वो आप ही का है। और आप है मिसेज नाग वर्मा। ये मेरी भाभी हैं मिसेज मोहिनी लाल, और ये—जिसे आप कवि लोग शौक के आलम मे जाने क्या-क्या कहकर पुकारते है—मेरी वही है—मिसेज स्वरूप कुमारी लाल !"

तारा ने अतिरजित भाव से, छोटी ने खिलकर और बडी ने लज्जा की आड मे अपने गद्गद् हृदय की धडकने छिपाकर विरहेशजी को नमस्कार किया। और विरहेशजी का नमस्कार तमाम लेखक, कलाकार, नेता-उपनेता नेति-नेतियो द्वारा पेटेन्ट कराये हुए फार्मूले के अनुसार ही था—जहाँ तक बने बद बत्तीसी की मुस्कराहट और कोमल-कोमल-सा हाथजोडन।

मिस्टर वर्मा भी विरहेशजी को देखकर धन्य-धन्य हुए जा रहे थे। विरहेश उस वर्ग का देवता था जिसे पाने के लिये अस्सी फीसदी बाबू-बच्चे सदा लार टपकाते रहते है। और औरतें भी बेचारी आखिर को है तो बाबूओ की ही बेटियाँ-बहुरियाँ—सबेरे से परभातियो के बजाय 'बेईमान बलमा जा, बलमा जा—बलमा जा जा !' का रिकॉर्ड सुनना और गुनगुनाना पसद करती है। सिनेमा-स्टारो के बाप-दादो के शिजरे उनसे पूछ लीजिये, कौन स्टार कितने का कन्ट्रेक्ट करता है, कहाँ-कहाँ काम कर रहा है। किस स्टार का किससे लव चल रहा है और किसका प्रेम किसके वट्टेखाते नाम पड गया, इसका अपटुडेट हिसाब आपको उनके पास मिल जायेगा। फिल्मी दुनिया से सबधित अनेक प्रोड्यूसर, डायरेक्टर, प्लेबैकसिंगर, म्यूजिक डाइरेक्टर, कैमरामैन, लेखक, गीतकार इस बात का दम्भ कर सकते हैं कि उनका जिक्रे खैर भी इन बबुइयो की जबानो से अक्सर-औकात हो जाया करता है। सिनेमा शहरो की अस्सी फीसदी जवान आबादी का ध्यान और ध्येय है। तारा छोटी-बडी सबको ही विरहेश से मिलकर बडा अभिमान-उल्लास हो रहा था।

शकरलाल ने कहा—"खास मेरी वजह से ही ये इस वक्त यहाँ खडे हुए थे।"

"जी हाँ, मुझे तो आज दो-तीन ऑफिसर फ्रेड्स जबर्दस्ती अपनी कार पर बिठला कर यहाँ मैटिनी मे ले आये कि विरहेश, हम तुम्हारे साथ बैठकर स्क्रीन पर तुम्हारा नाम देखेंगे। मजबूर होकर आना पडा। फिर मैंने उन लोगो से कहा कि भई, मै तो अब यही ठहरूँगा क्योकि मेरे मित्र शकरलाल आने वाले हैं। उनके साथ मैंने पिक्चर देखने का

प्रामिस किया है, वरना मैं उनकी कार पर ही चला जाता।"

इतना प्रवचन करके विरहेशजी महाराज सब भक्तों को अपने दर्शनामृत से कृतार्थ करने लगे। शकरलाल ने हाथ बढाते हुए कहा—"आइये चले।"

विरहेश गोप-गोपियो से घिरे हुए आगे विचरे।

कर्नल ने लाइन मे कार खडी की। कर्नल और सज्जन अपनी-अपनी तरर्फ के शीश चढाकर दरवाजे बद करते हुए उतरकर बाहर खडे हुए। कर्नल कार का ताला बद करने के लिए गुच्छे से चाबी सरकाने लगा। सज्जन ने कार की छत के पार देखा—चारो ओर छिटकी हुई भीड, और उस भीड मे महाकवि बोर। उसकी खोई हुई, निष्क्रिय-सी आँखें सहसा सजग हो उठी। उसने कहा—"कर्नल, लौट चलो, अब यहाँ नही देखेंगे।" उसके चेहरे पर उदासी और कहने के ढग मे ऊब थी।

"क्यो ?" कर्नल ने त्यौरी चढाकर पूछा।

"उहुँ। यार नही देखेंगे। डबल बोरियत होगी!"

सज्जन बच्चो की तरह अनखनाया। कर्नल ने कार का ताला लगाकर चाभियो का गुच्छा जेब मे रक्खा और आगे बढा। सज्जन उसी चिढे हुए मूड मे बोला—"एक तो बबइया फिल्म—एस्थेटिक टेस्ट में सडा पपीता। दूसरे तुम्हारी पसद, तीसरे महाकवि बोर भी दिखाई पड गये!"

बोर के नाम पर कर्नल को हँसी आ गई, सामने देखा, उसे बोर नजर न आया, पूछा—"अर्मा कहाँ है ?"

"वो क्या सामने जीने चढ रहा है। यार, बडी कोफ्त होगी। चलो, बधे के पास गोमती किनारे बैठे एकान्त मे, बाते करे।" सज्जन के स्वर मे थकान थी।

"तुम तो खुद ही बोरियत फैला रहे हो आज! हमारी तबियत है देखने की—वाह! —और यहाँ आये है, तो बस यही देखेंगे। बोर साले को पास नही फटकने दूँगा। तुम देखना तो सही, जाओ।"

सज्जन और कर्नल हॉल के दरवाजे तक पहुँच चुके थे, टिकट-चेकर टिकटो से अपना अद्धा नोच रहा था, तभी बोर की निगाह ने सज्जन को थाम लिया।

विरहेश-दल की सभी नजरे नई चमक के साथ सज्जन को देखने लगी। मझोला-गठीला बदन, खून से झलझलाता गोरा-चिट्टा खूबसूरत पॉलिश्ड चेहरा, ऊँची पेशानी, पश्मीने की शेरवानी, ढीली मोहरी का पाजामा पहने, हाथ मे ओवरकोट लिये सज्जन दरवाजे के पास खडा था। सबने हाथ जोडे। सज्जन ने चेहरे से लापरवाही झलकाते हुए हाथ उठा दिये और हॉल के अदर कदम बढाया। बोर जल्दी से उठकर आगे आया। शकरलाल और वर्मा भी आगे बढे। तारा ने उठकर अपने कोट पर केक के झडे हुए टुकडों को हाथ से हटाया और फिर बेच से प्याला उठाकर जल्दी-जल्दी अपनी कॉफी खत्म करने लगी। छोटी ने उठकर अपने सिर का दुपट्टा सम्हाला, फिर ख्वाहमख्वाह हल्के-से खाँसकर हरे-सफेद नगीनो-जडी गोरी उँगलियो के साथ रूमाल मुँह तक उठाया, फिर लिपस्टिक-रँगे होठ उचका-बिचकाकर रिजर्व हो गई। बडी हाथ जोडने के बाद छोटी की तरफ जरा और मुड गई और जल्दी-जल्दी अपना केक खत्म करने लगी। बडी

के लिये आज की शाम स्वर्गलोग मे कट रही थी। नरगिस-सुरैया, राजकपूर, दिलीपकुमार, देवानन्द, निम्मी, प्रेमनाथ और भी जितने मशहूर नाम है उन सबके खास मित्र कवि-वर विरहेशजी के साथ बैठकर फिल्मी दुनिया की बाते सुनना, उनका गाना सुनना— यह सौभाग्य बडी के मन को बौराये डाल रहा था। उत्साह के अतिरेक से उसका चेहरा हवास-उडाँ, घेघला-सा बन गया था।

बोर ने कहा—"अरे तुम—आप भई ! खूब आये यार—मि० सज्जन ! और कर्नल साहब को देखकर तो तबियत खुश हो गई !"

शकर ने आगे बढकर सज्जन से कहा—"सज्जन जी, मेरी फेमिली के लोग आप से मिलने के लिये बहुत उत्सुक है।"

कहकर उसने छोटी आदि को आने के लिये सकेत किया। सज्जन उसी बेलौस अदा में बाहर निकल आया। सबसे परिचित होकर "बडी खुशी हुई" कहकर सज्जन फिर मुडा।

मिस्टर वर्मा बोले—"मिस्टर वर्मा, मेरी वाइफ और ये मिसेज लाल वगैरा आपकी पेंटिग्ज देखना चाहती है। आज सबेरे हम लोग आर्टिकिल ."

"अजी, जब कहिये तब दिखला दूँ इनकी पेंटिग्ज", विरहेश अपने घुँघराले बाल झटकाते हुए बोले और फिर कुछ और भी कहनेवाले थे कि सज्जन के चेहरे का कसाव देखकर कर्नल ने तेज होकर कहा—"बोरेश !"

यह नाम सुनकर विरहेश सिकुड गये। सज्जन ने मिस्टर वर्मा से शात स्वर में कहा —"आप लोगो को लेकर किसी रोज चले आइये मेरे यहाँ, मगर मेहरबानी कर मुझे पहले सूचना दे दीजियेगा। आओ कर्नल !"

दोनो अन्दर चले गये।

अपने टिकट देकर अदर जाते हुए शकरलाल विरहेश आदि ने देखा, कर्नल और सज्जन एक बॉक्स मे बैठ रहे थे।

विरहेश को बालकनी में बैठना खला मगर जिजमान की 'श्रद्धा' के आगे उनका बस ही क्या था। बडी, तारा और छोटी के बाद एक सीट छोडकर शकर और वर्मा बैठे। छोटी फिर सीट बदलकर अपने पति के पासवाली खाली सीट पर आ बैठी। अब तारा के पासवाली सीट कविवर के लिये खाली हो गई, लेकिन कविवर आते-आते रुक गये।

"अभी आता हूँ" कहकर विरहेश जी सज्जन के बाक्स की तरफ चले।

सज्जन और कर्नल बोर के अदर आते ही कुढ गये।

विरहेशजी ने कहा—"हे-हे, आप लोगो के पधारने से मेरे "

सज्जन ने कर्नल की जाँघ पर चुटकी काटी, कर्नल ने त्योरी चढाकर कहा— "बोरेश, जाओ यहाँ से ! हमें डिस्टर्ब मत करो ! चलो !"

"जाता हूँ, अभी जाता हूँ।" कहते हुए विरहेश पिछली सीट पर बैठ गया और दीनता से हँसकर बोला—"सज्जन भाई, इस पिक्चर मे यानी इसी पिक्चर मे मेरा साँग—"

"ओह ! इसी पिक्चर में है।" सज्जन ने बगैर उसकी तरफ देखे हुए कहा।

कर्नल बोला—"ये पता होता तो हम लोग यहाँ हरगिज न आते। अच्छा अब आप यहाँ से चलते-फिरते नजर आइये झटपट !"

"हाँ, हाँ, बस जा ही रहा हूँ। इसमें म्यूजिक डायरेक्टर ने मेरी ट्यून—"

"बोरेश !" कर्नल ने फिर आँखें दिखाईं।

विरहेश हाथ जोडकर बोला—"आप सबके सामने मुझे इस तरह न पुकारिये, कर्नल साहब ! जी चाहे तो अकेले में सौ जूते "

"अच्छा तो फौरन भागो।"

"हाँ-हाँ—"

"बो—"

बोरेश उठकर चला। तीसरी घंटी बजी। रिकार्ड बजने बन्द हुए, विरहेश अपनी कतार मे आया। चार जोडी टाँगो से "माफ कीजियेगा, थैक्यू" करते हुए आकर बिरहेश बडी के पास खडा हो गया। अपनी खाली सीट की तरफ इशारा करते हुए तारा से कहा—"प्लीज मिसिज—हाँ; मैं जरा यहाँ बैठूंगा, स्क्रीन से यहाँ नजर का ऐंगिल अच्छा बनता है। आपको कोई तकलीफ तो नही ? आपको ?"

विरहेश ने बैठते हुए तारा और बडी से बडी विनम्र भाषा मे पूछा, फिर गोद में ओवरकोट और उस पर सिगरेट का टिन रखकर उन्होने शकर की तरफ देखते हुए कहा —"आप लोग बहुत दूर हो गये। खैर !"

दूरी सबसे अधिक छोटी को खल रही थी। विरहेश उसके पति का मित्र है और वही उसकी बाते नही सुन पायेगी।

न्यूजरील शुरू हो गई। विरहेश ने धीरे-धीरे तारा से कहना शुरू किया—"पिक्चर मे एक जगह मैंने काम किया है। आप पहचानियेगा।"

"सच ?" तारा ने खुशी से चमककर कहा।

"क्या-क्या ?" छोटी ने तारा को कोचकर पूछा। तारा ने छोटी को बतलाया—"मिस्टर विरहेश ने इसमे खुद भी एक्टिंग की है।"

"अच्छा !" छोटी ने हुमसकर यह सुसवाद अपने पति को सुनाया, उसने बर्मा को। सबको अपने सौभाग्य पर गर्व हुआ। बडी जो इस बार भी कान झुकाकर कुछ न सुन पाई थी, विरहेश के सीधे बैठते ही उससे पूछ बैठी—"आपने इन्हे क्या बताया ?"

विरहेश ने अपना सिर उसकी ओर झुकाते हुए मुस्कुरा कर कहा—"मैंने इसमे एक जगह थोडी-सी ऐक्टिंग भी की है। वो डायरेक्टर और सब लोग कहने लगे—बडा जोर देने लगे तो मैंने एक छोटा-सा पीस कर दिया।"

बडी ने फिर आग्रह से कहा—"सुनिये, जहाँ आपकी ऐक्टिंग आवे, वो जगह हमें बतला दीजियेगा।"

"तो क्या आप खुद नही पहचान पायेगी मुझे ?" कहते हुए विरहेश ने उसकी तरफ देखा।

अँधेरे में बिलकुल पास बैठे हुए 'बडे आदमी' को बडी के लाजभरे नैनो ने गौर से देखा, और पूछा—"तो क्या हूबहू बिलकुल ऐसे ही दिखाई पडेंगे उसमें भी ?"

"हूबहू ! ह ह ह—जी हाँ, बिलकुल हूबहू यो ही।" बडी की गोरी सिजल सूरत और इस भोले सवाल पर विरहेश को बडे प्यार से हँसी आ गई। बडी झेंप गई।

न्यूज़रील मे पडित जवाहरलाल नेहरू खेल-कूद का उद्घाटन कर रहे थे।

जब 'बहार आई रे' का सेसर सार्टीफिकेट आया तभी से इन सबकी नजरे स्क्रीन पर विरहेश का नाम बाँचने के लिये ऐसे सध गईं जैसे अर्जुन की दृष्टि चिडिया के सिर पर सधी थी।

स्क्रीन पर विरहेश का नाम आया। उसका प्रशसक दल धन्य-धन्य हो उठा। विरहेश ने अपने नाम पर कश खीचकर हाथ नीचे गिराया तो सिगरेट औचक में बडी की कलाई से छू गई। बडी और विरहेश दोनो ने अपने-अपने हाथ खीचे, विरहेश ने झुककर धीरे से पूछा—"जला तो नही।"

"नही।" आनन्द मे उभचुभ हुई बडी ने कहा। इस समय विरहेश यदि उसे सचमुच जला डालता तो भी वो यो ही कहती—"नही!"

अपना सीन आने से पहले विरहेश ने पहले तारा को झुककर चेतावनी दी, फिर बडी से झुककर कहा। तारा ने उधर सूचना फैला दी। सब लोग इस तरह साँस रोककर तैयार हो गये, मानो उनके सामने ससार का आठवाँ आश्चर्य आनेवाला हो।

हीरोइन की सगाई-पार्टी मे बहुत-से मेहमानो के साथ विरहेश भी आते हैं। हीरोइन को बधाई देकर एक कुर्सी पर बैठ जाते है। उसके बाद दो-तीन बार इनकी झलक और दिखलाई पड जाती है।

अपना सीन आते ही विरहेश ने बडी से धीरे से कहा—"अब पहचानियेगा अपने खाकसार को!"

इन्टरवल होने पर बडी से नजरें मिलते ही विरहेश का जीवन सफल हो गया।

६

सज्जन और कर्नल सिनेमा हॉल से निकलकर हजरत गज पहुँचे। ऊँची आधुनिक इमारतो की पाँत छोडकर कर्नल की गाडी ने सडक का चक्कर लिया। मोटरो की कतार दो निकट के चौराहो के बीच विश्राम कर रही थी। रोशनी, तडक-भडक, फैशन स्टाइल, जनानी-मर्दानी जवानी की चहल-पहल, हुस्न और रग-सुगध से गमकते दमकते हुए हजरतगज का सुहाग तेज जाडे की रात मे अस्त हो चुका था, बस, मेफैयर सिनेमा की जगमगाहट तुरन्त विधवा हुई नारी की देह से उतरते हुए सुहाग-

चिह्नों मे आखिरी चिह्न की तरह बाकी थी। लालबाग की तरफ गाडी बढाते हुए कर्नल ने कहा—"जरा कोट ले लूँ अपना, ड्राईवाश के लिये दिया था। तुम्हारे यहाँ से लौटते तक दूकान "

"मुझे यही छोड दो। तुम उधर ही से निकल जाना।" सहसा सज्जन ने कहा।

"क्यो-क्यो ?"

"मैं टहलता हुआ जाऊँगा। रोको, रोको यार !" गाडी रुक गई। कर्नल बोला—"अरे तो मैं तुम्हे छोडे आता हूँ। कोट कल आ जायगा।"

"नही, अब पैदल ही जाऊँगा।" कार से उतरकर सज्जन की नजरे फुटपाथ पर झुकी हुई थी।

कर्नल ने उसके उदास चेहरे को देखकर कहा—"सुनो। आज दिन भर तुम्हारा चेहरा उदास देखा, कोई खास बात हो गई ?"

"न-ही, खास कुछ नही। ऐसे ही। फिर बतलाऊँगा तुम्हे !"

सज्जन तेजी से फुटपाथ की तरफ बढ गया।

आज सबेरे से ही सज्जन के मन मे घुटन समाई हुई है। पूरे दिन कलाकार के सवेदनशील मन पर चोटे ही पडती रही है। सज्जन की प्रशसा मे छपा लेख देखकर, ईर्ष्यावश, सबेरे महिपाल ने कहनी-न-कहनी सुनाई, उससे जी खट्टा हुआ। फिर चौक मे अपनी कोठरी से पुतला लेकर गलियो मे तमाशा बने जाते हुए उसे अन्दर से बडी झिझक और उलझन हुई थी। उसके बाद जगदम्बा सहाय की प्रगतिशील बेटी ने उसे चुभती हुई दो-चार बाते सुनाई। फिर उस युवती के लिये अपने मन मे काम-विकार जागने से खुद अपनी ही आत्मा के हथौडे चलने लगे और अभी-अभी चित्रा उसके चरित्र के दोनो पहलुओ के हर रग झलकाकर उसकी तस्वीर बना गई है।

बत्तीस वर्ष की उम्र तक अविवाहित रहने की वजह से उसका काम-जीवन अनियमित है। नारी के अतरग सम्पर्क का मौका कभी-कभी तो दो-दो तीन-तीन महीने तक नही मिलता, और जब कभी ऐसा अवसर आ जाता है तब वह अतिरेक कर देता है। उसके जीवन मे तीन तरह की औरते आती है। एक से वह पैसे देकर आनन्द खरीदता है, दूसरी से प्रेमोपहार मे रस पाता है, और तीसरी वे तमाम औरतें है जिनसे केवल शिष्टाचार के ऊपरी नाते हैं। माँ ही एकमात्र ऐसी स्त्री थी जिनके लिये उसके मन मे सदा गहरी श्रद्धा रही। नारी के प्रति वही श्रद्धा आज उसके मन को तमाचे मार रही है। वह बहुत बेचैन है, उसे माँ की याद आ रही है।

सज्जन की माँ को स्वर्ग सिधारे ग्यारह वर्ष बीत गये। सज्जन के पिता श्याममनोहर वर्मा बडे विलासी थ। विलायत से बैरिस्टरी की डिगरी ले आये थे, मगर कचहरी एक दिन भी नही की। नाच, मुजरा, सगीत, शराब और ऐश मे उन्होने आठ-दस लाख रुपये फूँके। घर के जनानखाने मे वह कभी ही कभी आया करते थे, और जब आते थे तब नौकर-चाकर महरियो, माँ तक को साँप सूँघ जाता था। सज्जन अपने पिता से नफरत करता था। वो बेबात की बात पर उसकी माँ से झगडा किया करते थे, भद्दी-भद्दी गालियाँ देते थे, अक्सर हाथ भी उठा बैठते थे, सज्जन की माँ बडी गभीर और शान्त स्वभाव की थी। व्रत, नियम, उपवास का कठोर जीवन वे मुँह बद कर बिताती थी। सज्जन को याद नही आता

कि उसने माँ को कभी घर से बाहर कही आने-जाते देखा हो। एक बार उन्होंने कहा था—"मरते वखत मेरी सास कह गई थी कि घरवा सँभालना, भडारघर की चाभी कलेजे से दूर न करना, और घर की देहरी छोडकर कभी दूर न जाना।" सज्जन की माँ ने तीनो बातें मरते दम तक निभाई।

सज्जन के पितामह रायबहादुर कन्नोमल ने सन् १९०२ मे बत्तीस बरस की आयु भोगकर मरण पाया। श्याममनोहर उस समय साल भर के थे। इलाका कोरट हो गया। श्याममनोहर के बालिग होने तक खानेवाले लाखो रुपया खा गये। सज्जन की दादी, बिचारी औरतबानी, अपना घरवा लुटता देख दिन-रात अपनी छाती फाडा करती थी। यह सतोष उन्हे अवश्य था कि उनका लडका बाप की तरह ही होनहार निकल रहा था। श्याममनोहर हठकर के बैरिस्टरी पास करने विलायत चले गये। उसके बाद ही दादी का देहान्त हो गया। सज्जन को अभी तक उनकी खूब सुधि है।

विलायत से लौटकर श्याममनोहर के रग-ढग कुछ और ही हो गये। मन पर पेरिस के नाइट-क्लबो के नक्शे खिच चुके थे, गाँठ के पूरे थे ही, अधी जवानी की घोडी बेलगाम छोड दी।

सयोगवश अपने पिता लाला कन्नोमल की तरह ही बाबू श्याममनोहर ने भी अपनी उम्र के बत्तीसवे वर्ष मे मौत पाई। सज्जन उस समय जूनियर कैम्ब्रिज मे पढ रहा था। तेरह बरस की उम्र मे नये सिरे से जागनेवाला इसान का सवालिया मन सज्जन को भी सताने लगा था। जीवन-मरण, भगवान्-धर्म, आजादी-गुलामी की राजनीति, भारत देश, और न जाने कितनी तरह की जिज्ञासाओ के साथ-साथ जवानी के छिपे अर्थ को उजागर देखने की तडप भी उसके मन मे जाग उठी थी।

पिता की मृत्यु के बाद माँ सज्जन का ब्याह करने के लिये विकल हो उठी। सज्जन "ना" की हठ पकड गया। वह इतनी छोटी उम्र मे विवाह नही करना चाहता था, उसके मन मे बडे होकर अपनी पसद का ब्याह करने की इच्छा थी। वह अपनी माँ से साफ-साफ यह नही कह सकता था कि उनके द्वारा तय किये गये किसी रिश्ते को वह पसद नही कर सकता। तीन बरस बाद मुँह पर रेखे फूट आने पर वह सोचने लगा कि माँ के द्वारा पसद की गई सुन्दर-से-सुन्दर लडकी भी उसकी जीवन-सगिनी न बन सकेगी। वह रूप के साथ सुगधि भी चाहता था, सुगधि की परिभाषा उसकी अपनी थी। वह व्रत-नियम-सयम की कठोर और घरवा सम्हालनेवाली बहुरिया हरगिज-हरगिज पसद नही कर सकता। उसे पढी-लिखी नये विचारो की, सुन्दर, चतुर और न जाने कितनी तरह की खूबियावाली पत्नी की चाह थी। इसके अलावा शादी के पहले वह रोमास चाहता था।

एक दिन की बात है कि माँ ने अचानक उसके पैर पकड लिये। आँखो मे आँसू भरकर कहा—"बेटा, एक भीख माँगनी है—अपने बाप की राह पर न चलना। जनम भर मेरी आत्मा कलपते ही बीती है तुम मुझे मत सताना।"

अपनी माँ को सज्जन बहुत प्यार करता था। यह उसके मन की विचित्रता थी कि जिन खूबियो को वह अपनी पत्नी मे देखना पसद नही करता था, उन्ही के लिये मा का

आदर करता था। चरित्रहीन पिता के विपरीत अपनी माँ के चरित्र म उसे सदा शक्ति झलकती दिखाई देती थी। पिता मार-दहाड और अत्याचार करके भी उसे अपनी मुँहबन्द सहनशीला, ममतामयी माँ के सामने सदा निस्तेज और घिनौने लगे। उसके पिता को छोडकर और जो कोई भी उनके सम्पर्क मे आता था वह उनका मन से आदर करता था। उसकी माँ सबके दुख-दरद मे हिस्सा बँटाती थी। वैसे बडी शुद्धतावादी थी, पर सज्जन ने उन्हे तपेदिक को मरोजा, घर के एक नौकर की पत्नी का थूक-खखार तक साफ करते देखा है।

सज्जन के मन पर अपनी माँ की एक अमिट छाप पडी है। पिता की राह पर न चलने का वचन माँ को देकर उसने अपने लिये एक अतर्द्वन्द्व मोल ले लिया। इसी दौरान में बचपन से पनपते हुए उसके चित्रकारी के शौक ने लगन पाई।

सीनियर कैम्ब्रिज पास करने के बाद उसने आर्ट्स स्कूल मे नाम लिखा लिया।

पिता की मृत्यु के छ बरस बाद माँ भी जाती रही।

सज्जन का मन सूना हो गया। उस घुटन से निकलने के लिए ही उसने चित्र बनाने के बहाने सैर की ठानी।

अपनी माँ को दिये हुए वचन से सज्जन ने उनके जीवन-काल मे ही गुप्त सधि कर ली थी। उसने अपने पिता की तरह फिजूलखर्च न बनने का दृढ निश्चय कर लिया था। अपने पिता के विपरीत उसमे जायदाद-जमीदारी सम्हालने और हिसाब-किताब का ध्यान रखने की आदत थी, नौकर-गुमाश्तों पर नजर रखने और घर के ढर्रे को मशीन की तरह बाँध देने की क्षमता उसमें थी, अपनी जायदाद को बढ़ाने की नीयत और रुचि न होने पर भी बची-खुची जमा-पूँजी को सुरक्षित रखने के लिये उसकी बुद्धि हरदम चौकस रहती थी। इतने सयम के साथ वह अपने नारी सबधी दृष्टिकोण में असयमी बना था।

पाँच बरस मे आर्टस्कूल का डिप्लोमा पास करने के बाद घूमते, अनुभव और आनन्द लेते हुए उसके मन मे यह सिद्धान्त पनपा कि शादी करना (कम से कम उसके लिये) जरूरी नहीं है और अगर जरूरी है भी तो इन्सान को (उसे) तीस बरस के बाद करनी चाहिये। उस समय उपयुक्त जीवन-साथी चुनने की समझ आ जाती है। अपने चित्रों के द्वारा सफलता और कीर्ति प्राप्त करते हुए उसकी बढती लगन अपना स्वार्थ देखने लगी। इस स्वार्थ की दृष्टि से वह मन ही मन नारी को अक्सर इस्तेमाल मे आने वाली चीज, मनोरजन और दैहिक स्फूर्ति देने का साधन मानने लगा। जाहिर मे ओढ़ी हुई चेतना के तौर पर हिन्दी विलायती आदर्शों की बडाई करते हुए वह भी नारी को बडी-बडी उपमाओं से सजाता था। आज उसी ऊपरी कल्चर की काई एकाएक फट गई। एक स्त्री पर होने वाले अत्याचार और कारुणिक परिस्थिति मे उसकी मृत्यु हो जाने से सज्जन के मन की ईमानदारी जोश के साथ उबल कर बाहर आई, और इसी ईमानदारी के प्रकाश में जब उसने अपने आपको जगदम्बासहाय की खूबसूरत लडकी के प्रति वासना-विकार से ग्रस्त देखा तो अपने प्रति उसकी लज्जा का ठिकाना न रहा।

खुद भागते हुए इसान का दिल भी अजीब गोरखधधा है। पहले-पहल जब वह अपने आपसे कतराना शुरू करता है तब अपनी चतुराई पर गर्व करता है, जब वही चतुराई

भय का कारण बनती है तब उससे भागता है, और भय जब बिगडे सॉंड की तरह उसे रगेदना शुरू करता है तब अपने बचाव के लिये तेज भागते-भागते उसके अणु-अणु बिखरने लगते हैं। इससे भयग्रस्त होकर जब बेतहाशा भागने लगता है तो अपनी ही भूल-भूलैया मे टकरा-टकरा कर पागल हो जाता है। इसी उठते हुए पागलपन को सुलाये रखने के प्रयत्न मे सज्जन की चेतना जड हुई जा रही थी। शारीरिक रूप से गतिमान् होते हुए भी उसका मन एक जगह गडन्त हो गया था। अगति के खूँटे मे बँधा, नये नाथे गये जगली भैसे की तरह उसका मन मुक्त होने के लिये फुफकारे छोड रहा था। इक्का-दुक्का चलती पिछवाडे की सडक पर बेहोश होकर बढते हुए भी वह अपने अदाज मे बँधा सही राह पर ही जा रहा था। मन ने सर्दी महसूस की, तन पर चेस्टर चढ गया। वह शाहनजफ रोड पर चलने लगा। दोनो तरफ बँगलो की खामोश कतार सूनी सडक पर चलते हुए सज्जन नाम के एक 'व्यक्ति' से जितनी बेलौस थी, वह भी उतना ही उनसे तथा इर्द-गिर्द के सारे वातावरण से कटा हुआ चला जा रहा था।

सामने से आती हुई कार की लाइट ऐन उस पर ही पडी। सज्जन चौंका, खोई नजर से कार को देखा, फिर सडक पर बायी की तरफ खिसक पहले की तरह सिर झुकाए चलने लगा।

कार तेजी से उसके पास आकर रुकी। सज्जन के अतर का 'सुप्त महल' वस्तु जगत् का धक्का खाकर ढह पडा। वह अपनी लडखडाहट से सम्हल भी नही पाया था कि कार से एक तेज जनाना ठहाका सुनाई दिया।

"ओह! शीला है!" जान में जान आई। नजरे अपनी सतह पर आई। गाडी में महिपाल और डा० शीला स्विंग दिखाई दिये। सख्त घुटन से उबारने का कारण बनकर इस मानसिक आवश्यकता के क्षण पर ये दोनो दोस्त सज्जन को बहुत अच्छे लगे। वह सुखी हुआ।

"कहाँ से चले आ रहे है हजरत?" हाथ बाहर निकालकर शीला ने उसके ओवरकोट का कालर खीचते हुए मस्ती के साथ सवाल किया।

सज्जन अपने खोयेपन पर काबू पा चुका था। रस के बहाव में आते हुए उसी सवाल को दुहराकर उसने पूछ लिया—"और आप लोग कहाँ से आ रहे है हजरत?"

"शैतान के स्वर्ग से!" महिपाल ने मुस्कराते हुए कहा।

डा० शीला स्विंग ने महिपाल की बाँह पर मुक्का मार, मुस्कुराते हुए कहा—"अपने सीक्रेट स्वर्ग का पता इन दुनिया वालो को मत बतलाओ, यू फूल, वरना ये वहाँ भी खुदा के बाग का सेब लगा देगे!"

खुदा के बाग का सेब इस समय सज्जन के गले मे अटक रहा था। मजाक की चिकोटी से उसकी दुखती रग कटने लगी। बात को ऊपरी फीकी हँसी मे बहकाकर उसने उन दोनों से कहा—"आओ, थोडी देर हमारे यहाँ ही बैठो। कॉफी पिलाऊँगा तुम लोगो को, या तुम लोग चाहो तो अपने मुँह से निकलनेवाली खुशबू को दुबाला कर सकते हो।"

"बडी देर हो जायगी यार! क्यो, डाक्टर, टाइम क्या है?"

"टाइम—टु बी इक्जैक्ट—ग्यारह-बीस। अभी कोई ज्यादा देर नही हुई। आओ

दुर्जन, हम लोग तुम्हे ओब्लाइज करेंगे ।"

"नही यार, अब फिर कभी । शीला के तो कोई मियाँ है नही जो एक्सप्लेनेशन देना पडे, मगर मेरी बीवी तो यक्षिणी बनकर मेरी बाट जोह रही होगी ।"

सज्जन गाडी मे बैठ चुका था । महिपाल की बात अनसुनी करके शीला अपनी लहीम-शहीम स्टूडी-ब्रेकर को पीछे मोडने लगी ।

सज्जन ने महिपाल से कहा—"तुमको किसी दिन जरूर पेंट करूँगा महिपाल ! तुम उस आदमी की तरह हो जो आग और पानी के दो समुद्रो के बीच मे जलता और गलता हुआ खडा हो ।"

"नाउ-नाउ शीला की लेग-पुलिग रहने दो सज्जन । ये न तो हजारो सेंटीग्रेड्ज तक गर्म है और न फ्रीजिंग-प्वाइंट तक ठडी ।"

"बस, मेहरबानी कीजिये, मेरी वकालत करने की जरूरत नही । इन्होने मेरी ओर इशारा नही किया । इज इट नॉट दुर्जन ?"

"सर्टेनली नॉट ! तुम जानती हो, मैं फेयर सेक्स की कितनी इज्जत करता हूँ ।"—कहते हुए सज्जन का दिल धडका, जगदबासहाय की बेटी और चित्रा की याद आई ।

सज्जन की कोठी के फाटक पर पहुँच कर कार ने हार्न बजाया, महिपाल बोला—"इन ऑल फेयरनेस, मैं शीला के बारे में ये कहुँगा कि इसका दिल कलाकारो की तरह गर्म है, और दिमाग वैज्ञानिको की तरह ठडा ?"

महिपाल की बात शीला को अच्छी लगी, वह बोली—"मेरा पेशा यही चाहता है । आर्ट प्लस साइस—"

"तुम मुझे जोश दिला रही हो शीला ! आज के नब्बे फीसदी डॉक्टर साले जल्लाद और कसाई है । और इसाफ के लिये—आलदो अन्फाशली आई नो,—तुम भी हो ।"

चौकीदार ने दौडते हुए आकर फाटक खोल दिया ।

• • • • • •

आधी रात के समय सज्जन मास्टर जगदबा सहाय की कलकगाथा सुन रहा था । स्कॉच ह्विस्की ने उसकी वाणी मे और शीला महिपाल के हृदय मे करुणा का स्रोत खोल दिया था । महिपाल की आँखो मे बडे-बडे आँसू उमड आये ।

सज्जन बोला—"उसके लिये आँसू बहाने की जरूरत नही महिपाल ! मुझे पूरा विश्वास है कि जलते हुए उसे जरा भी तकलीफ नही हुई होगी । वह उस वक्त सेल्फपोजेस्ड—एक आवेश मे—"

"आत्महत्या का आवेश आँसुओ की शक्ति लेकर ही चढता है सज्जन ! भला किसी को इस तरह मरने की नौबत ही क्यूँ आये ? इसान की औलाद को धरती पर पहली साँस लेते ही इस नृशसता से दम घोट कर मारा जाय ! ये खबर हम और आप देखेंगे, सुनेंगे और बर्दाश्त करेंगे ?" सगमरमर की गोल मेज पर तेजी से पजा पटक कर महिपाल उठ खडा हुआ, आराइशो से भरे लम्बे हाल मे तेजी से चहलकदमी करने लगा । उसका क्रोध सहज स्वाभाविक था, नशे ने उसमे बिजली भर दी थी । बार-बार सिहर कर उसके

कलेजे मे टीस उठने लगी। जिस देह मे एक नन्ही-सी फांस चुभने पर भी पीर होती है, उसी देह को इसान अपने हाथो से आग लगाये जल-जल कर मरे! (महिपाल फूट कर रोने लगा) "भोले! ऐसी मौत न देना किसी को—किसी—किस्सी—किसी को नही!"

जलने वाली की तडप इस समय महिपाल के जी मे लोट रही थी। आँसुओ से भरी आखो मे नन्हे-से बच्चे की कोमल गर्दन पर एक ओर कठोर हाथ की तस्वीर खिच गई। महिपाल का शोक, न्याय और क्रोध का आवेश बनने लगा।

महिपाल की बातो का प्रभाव सज्जन के ऊपर भी पडा था। सुबह खबर सुनने ही पर थोडी देर के लिये क्रोध ओर करुणा का जो वेग उसे बहा ले गया था, उसका स्पर्श सज्जन को इस समय फिर मिला। दिन भर मे पहली बार अपने मन के गुताडे से छूटकर उसे किसी और के लिये भी भावना का स्पर्श मिला—यह उसकी सुसस्कृत बुद्धि के ऊपर से बोझ हटने के समान था। उसने ऐसा माना कि इस कोमलता की जागृति से उसके अतर का अपराध कुछ कम हो गया है। इस कोमल क्षण को मूलधन बनाकर सज्जन ने हिसाब फैलाया—"आखिर मै इतना बुरा नही, इतना बुरा नही।"

महिपाल के मेज से उठते ही डा० शीला स्विंग की एक नजर बराबर उस पर पडती रही। उसका दिमाग शब्दो मे न बँधे हुए सवाल की धारा मे बह रहा था। तेजी से उसके सामने ऐसे अनेक 'केसेज' आ रहे थे जिनमें वह इसान की जिंदगी और मौत के क्षणो से खुद जूझी थी—'जिंदगी बचनी चाहिए'—यह उसके दिमाग की राय है और इस समय उसमे हार्दिक करुणा का सयत बहाव भी आ गया है।

महिपाल अपने आवेश को लिये हुए खिडकी के पास जाकर एक पैर ऊपर रख, मुट्ठी बँधी बाँह पर ठोढी टिकाकर खोई दृष्टि से अँधेरे में सोते हुए कम्पाउड के बाग को देखने लगा—कही, कुछ दूर देखने लगा। उसकी सारी भावनाये इस समय सिमटी हुई किसी विचार के आगमन को देख रही है।

पीछे, अपनी जगह पर बैठी हुई शीला बोली—"यह सही है, ऐसी ट्रेजेडीज़ यहाँ सैकडो होती हैं, मगर करना क्या चाहिये? आखिर इसका इलाज क्या है?"

सज्जन बगैर सोचे ही, सोचनेवाला मुँह बनाकर बोल उठा—"ये सब शिक्षा की कमी की वजह से है। हमारी जनता बहुत बैकवर्ड है।"

"शिक्षा, ह्वाट? कैसी शिक्षा? समाज को आखिर क्या सिखाया जाय जिससे कि ऐसे क्राइम्स एकदम से बद हो जायँ।" डाक्टर शीला यह कहते हुए सोच मे डूबने लगी।

"गवर्मेंट उनको एजुकेशन दे, उन्हे समझाया जाय कि मानवता क्या है, ह्यूमन वैल्यूज क्या हैं।"

"मगर आप उनको समझाइयेगा कैसे? आपके पास साधन क्या है?" खिडकी से चलकर आते हुए महिपाल ने सज्जन की बात काटी।

"क्यो? गवर्मेंट टीचर्स अप्वाइन्ट करे, आर्ट और कल्चरल फक्शन्स कराये, कुछ ऐसे स्त्री-पुरुष भी रक्खे जायँ जो घर-घर जाकर लोगो को सफाई, रहन-सहन के कायदे

समझायें, उनकी दिमागी सतह को ऊँचा उठायें।"

"कोरी नसीहत मे मेरा विश्वास नही सज्जन!" सज्जन की बात पर 'होपलेस केस' कहनेवाली मुखमुद्रा बनाकर डा० शीला ने कहा—"अच्छा, नाउ कम आन, यह सोचो, कि तुम मेरे पास आते हो। और मै जैसा कि तुम्हारे दोस्त ने बतलाया, मै कसाई हू। मैं यह जरूर मानती हूँ कि लोगो की जान बचाने से बढकर दुनिया मे कोई काम नहीं, पर वही काम मेरी आमदनी का जरिया भी है। मै सोचती हूँ कि जिस काम को सीखने के लिये मैंने इतनी मेहनत, इतना रुपया बरबाद किया है, उस काम से फायदा क्यो न उठाऊँ। एक आदमी को अगर अपनी जान प्यारी है तो वह उसके लिए रुपया खर्च क्यो न करे? और मैं क्यो न लूँ रुपया? मैं अपने लिये सुख और आराम की जिन्दगी चाहती हूँ। मैं, आपके कथ नाम है कि क्रिश्चियन, गाधियन या रामकृष्ण मिशनवाले उसूल पर नही चल सकती कि सन्यासी होकर लोगो की जानें बचाती फिरूँ।" कहकर शीला चुप हुई। एक सवालिया नजर महिपाल के चेहरे पर डाली, परखना चाहा उसके चेहरे का भाव क्या है? महिपाल सिर झुकाये विचारमग्न बैठा था।

सज्जन भी विचार मे पडा, बोला—"सचमुच यह टेढा सवाल है। अपना स्वार्थ देखना स्वाभाविक है, ह्यूमन नेचर है—यो कुछ एक एब्नार्मल, बडी आत्मायें निकल आती हैं, उनकी बात जाने दो—मगर आम जनता में हकीकत देखो तो यही है। हम पहले अपना स्वार्थ देखेंगे, फिर दूसरो का विचार करेंगे। और दूसरी नजर से देखें, कि अगर इसान की यह नेचर नही बदली तो इसानियत का नारा और उसके आधार पर खडी की गई तमाम वैल्यूज झूठी हैं। समझ मे नही आता किस तरह इसान का बिल बदल सकता है?" कहते-कहते सज्जन की आवाज मे कम्प आ गया—मन मे चित्रा और जगदम्बा सहाय की बेटी के साथ अपनी अपराधी आत्मा झाँक गई थी। सज्जन उससे विचलित हो गया।

"बदल सकता है।" महिपाल ने नजरें घुमाकर सज्जन को देखा और कहा—"अत्याचार—दूसरो का नाजायज फायदा उठाना बद करो। और अगर तुम सीधे से नही करोगे, तो याद रक्खो, मार-मारकर तुम्हारी अकल ठिकाने लगाई जायगी।"

"तुम तो इस तरह कह रहे हो जैसे मै ही अत्याचारी हूँ!" महिपाल की चेतावनी सज्जन के जख्म पर लगी थी। अपनी तिलमिलाहट को ऊपरी हँसी से सँवारते हुए उसने महिपाल को जवाब दिया। शीला को भी हँसी आ गई। महिपाल पर इस हँसी का कोई असर नही हुआ। उसने कहा—तुम, मै, सभी अत्याचारी हैं दोस्त! बात का इशारा किसी एक पर नही, पूरे समाज पर है। दबने और दबाने का सिद्धान्त हमारी घुट्टी मे पडना है। मगर जो लोग दबते चले जा रहे हैं वो किसी दिन अपना दाँव पाकर दबानेवालो का टेंटुआ दबा देंगे, देख लेना। और वह दिन अब बहुत दूर नही है सज्जन!"

"तो क्या तुम समझते हो कि हिन्दुस्तान मे कम्युनिस्टो का जोर बढ जायेगा। वो लोग खून-खराबा करवायेंगे?" शीला ने दोनो हाथो की उँगलियाँ एक दूसरे में फँसा कर पैर हिलाते हुए पूछा।

"मै नही जानता, किस पार्टी का जोर बढेगा। मैं राजनीति का सतर्क विद्यार्थी नही। पर मैं यह जरूर मानता हूँ कि मार्क्स के सिद्धान्त और रूस, इटली, चीन के नये

निर्माण से दुनिया के हर आमोखास के विचारो मे क्रातिकारी परिवर्तन अवश्य हुआ है। जितने मजलूम है, जितने सर्वहारा है, वह अब चोट खाये नाग की तरह फन उठा रहे है। इस बार उन्हे कोई न रोक सकेगा। ···और हमारे समाज की स्त्री भी सर्वहारा है। वह हद से ज्यादा सताई जा चुकी है—हद से ज्यादा !"

सज्जन को अपनी माँ की याद आ गई, उन्होने कितने अत्याचार सहे थ !

शीला बोली—"औरतो के बारे मे तुम बडे रोमाटिक ढग से सोच रहे हो महिपाल ! अब औरत पढी-लिखी कल्चर्ड और पहले से कही ज्यादा आजाद है। मै देखती हूँ कि लडकियो की एजुकेशन "

क्रोध के उबाल को रोकते हुए भी महिपाल अपनी जबान का तीखापन न दबा सका, बोला—"मुट्ठी भर औरते आजाद है, उनमे से एक तुम हो जो बत्तिस रुपया फीस कमा लेती हो। मगर बहुनायत तो उन्ही स्त्रियो की है जिन्हे जल-जलकर मरने के लिये मजबूर होना पडता है !"

"तुम तो अब जिद पकड गये महिपाल," शीला ने जबान मे मिठास लाकर कहा—"ऐसे दस-पाँच केसेज जरूर हो जाते है वो बात दूसरी "

"दूसरी नही, पहली है। यही बात पहली है। सौ मे मुश्किल से दस-पाँच घर छोड दो, बाकी हिन्दुस्तान का हर घर औरतो के लिये कसाईखाना है !"

"तुम्हारा घर भी ?" सज्जन ने व्यग्य किया।

सुनकर महिपाल अटका, उसका चेहरा कस गया, फिर सयत स्वर मे बोला—"हाँ, मै भी एक कसाई हूँ !"

"क्यो ?" सज्जन ने इस तरह रौब से पूछा जैसे कोई जज अपराधी से सवाल कर रहा हो। दूसरे के अपराधो की आड मे लेकर उसका अपराधी हृदय मुँहजोरी करने लगा।

महिपाल बोला—"मेरी शादी असफल रही, जैसे माता-पिता द्वारा तय हो गई शादियाँ आमतौर पर होती है। हमारे अस्सी फीसदी घरो मे ऐसी शादियाँ जीवन भर के कर्ज की तरह निभाई जाती है। नतीजा यह होता है कि कही पति, कही पत्नी और कही पति-पत्नी दोनो ही एक दूसरे के पीठ-पीछे व्यभिचार करते है !"

"सिर्फ ऐसी ही शादियो मे क्यो, लव मैरेजेज में भी यही होता है ! जब तक नये-नये रोमियो और जूलिएट रहे, दोनो मे बडा प्रेम रहा, फिर या तो तलाक या आपस में दगाबाजी—यही रास्ते रह जाते है ! मैं भी इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि शादी का रिवाज इसानो मे धोखा धडी, झूठ और अत्याचारो को जगाता है। इसे हटा दीजिये, औरतो को आर्थिक रूप से आजाद कर दीजिये, फिर देखिये, औरत-मर्द के रिश्ते कितने जल्दी नार्मल हो जायेगे।" शीला बोली।

"फिर औरत-मर्द के बीच में रिश्ता क्या रहेगा ? सिर्फ देह-भोग का !" —महिपाल तमक कर बोला।

"और आज क्या है ? नाइन्टी-नाइन परसेट प्वाइट नाइन रेकरिंग केसेज में औरत-मर्द एक-दूसरे को क्या इस्तेमाल की नजर से नहीं देखते ?" सज्जन मेज से सिगरेट-केस उठाकर बोला।

"अरे, मैं तुमको बतलाती हूँ, मेरी नजरो के सामने से तो न जाने कितने घरो के पर्दफाश हो चुके है। पहले मैं ऐसे एबार्शन केसेज नही किया करती थी। फिर सोचा, इसमे क्या हर्ज है। जिस काम को सिर्फ इसान ही नही, चरिन्दे-परिन्दे तक कुदरती तौर पर करते है, उसे अगर आदम और ईव की सताने शादी और उसके मॉरल कोड की वजह से पाप समझकर करती है तो मै क्यो न उनकी बेवकूफी का फायदा उठाऊँ ?" कहकर शीला ने मानो सात्विक उत्तेजना के उबाल मे गिलास को होठो से लगा लिया।

सज्जन को प्रेरणा मिली, अपने गिलास की तरफ हाथ बढाते हुए बोला—"तुम बिल्कुल ठीक कहती हो। शादी और उसका मॉरल कोड समाज को उठाने के बजाय गिराते है। इन्हे खत्म कर देना चाहिये !"

"अरे, वह आप ही खत्म हो जायगा ! जब औरत और मर्द दोनो ही ऊँची शिक्षा पायेंगे, दोनो ही कमाने लगेगे उसी दिन यह सडा-गला मॉरल कोड भी खत्म हो जायगा !"

"अच्छा अब गेटअप यक्ष ! शीला ने महिपाल से मुस्कुराकर कहा—"घडी देखो। तुम्हारी विरहिणी राह तक रही होगी !"

दो जोडी आँखे खामोशी से मुस्कुराई। महिपाल चट-से नजरे काटकर घडी की ओर देखने लगा। एक बजकर चालीस मिनट हुए थे।

१०

सडक पर शीला की गाडी फुटपाथ से लग कर खड़ी हो गई।

दरवाजा खोलते हुए महिपाल से शीला ने कहा—"एण्ड बी नाइस टु योर मिसेज डार्लिंग ! आज वाकई बहुत देर हो गई तुम्हे। . . ."

"हाँ, मगर वन्स इन ए ब्लू मून यह भी सही है !" बनावटी लापरवाही से कह कर महिपाल हँसा, बोला—"अगर मैं चित्रकार होता तो अपनी तस्वीर मटमैले रग से रँगता, बस दिल की धडकने उजली हैं. दिमाग—हाँ, दिमाग भी उजला है सही, मगर उलझनो के चलते-चक्कर से घिरा हुआ। . . .तुम मेरी थकान की साथी हो, कल्याणी मेरे जीवन की निष्ठा है। मैं तुम दोनो से उऋण नही हो सकता, सच कहता हूँ।". .

महिपाल हारे-थके मरीज की तरह करुण दृष्टि से शीला की ओर देखने लगा शीला ने प्यार से उसके गाल पर हाथ रख कर कहा—"कितने चार्मिंग (मनोहर) हो तुम ? नाउ टेक केयर आफ योर हेल्थ, डियर ! अपनी आत्मा का यह दर्द अपने साहित्य को दे दो. . और सब भूल जाओ।"

शीला की बाँह के जुये से दो गर्दनें झुक गई। अँधेरे मे झुकी चार आँखो मे एक बल दमक रहा था—शीला की नजरो मे हीरे की कनी बनकर और महिपाल की आँखो मे मुरझाते हुए गुलाब के फूल की तरह। शीला के होठो में भाव भरी गर्मी थी, और

महिपाल के होठो मे भाव का स्पर्श तो था, मगर जोश नही।

"कल मिलोगे ?" शीला ने उठ कर पूछा।

"लिखना चाहता हूँ।" महिपाल बाहर निकलते हुए बोला।

"मेरे यहाँ लिखो। ऐसा करो, दोपहर को खाना खाकर मेरे यहाँ—"

"समाधि लगाने के बाद जोगी अपना आसन नही छोड सकता! .. अगर शाम तक आने को जी चाहा तो तुम्हे फोन करके आ जाऊँगा।" महिपाल बोला।

"नही, कल तो तुम्हे जरूर आना है। क्रिसमस-ईव है—"

"ओहो! मै भूल गया था। . आऊँगा. ..कल मै ..करीब सात बजे तुम्हारे यहाँ पहुँच जाऊँगा। बाइ-बाइ!"

"बाइ-बाइ।" कार सरसराती हुई निकल गई। कार की लाल रोशनी भी आँखो मे ओझल हो गई। महिपाल जैसे और कोई चारा न देख कर घर की गली की तरफ चला।

फुटपाथ से घिसे-टूटे ईंटो की चार खाँचेदार सीढियाँ उतर कर सँकडी गली मे प्रवेश करते हुए गली के सूनेपन से महिपाल का सूनापन मिल गया।

बद दरवाजो की खामोश आबादी से गुजरते हुए महिपाल के खयाल अपने से उड़ कर बाहर फैलने लगे। घुटन उसाँस बनकर ऊपर उठी, आँखें अनायास ही आसमान की ओर देखने लगी। ऊँची दीवारो की सँकडी समानान्तर रेखाओ के ऊपर पूस की रात जोरों से जगमगा रही थी।

"दुनिया कितनी फैली हुई है!" महिपाल सोचने लगा—"ये तारे एक साथ कितने फैलाव मे—कितने व्यक्तियो, घरो, आबादियो, देस-परदेस तक को अपनी झलकियों से बाँध रहे है!"

एक गाय आधी गली को छेक कर बैठी हुई थी। बगल की किसी गली से कुत्तो की लडाई का शोर सुनाई दे रहा था। महिपाल को यह शोर रात के सन्नाटे का ही एक अग मालूम हुआ। लगभग इसी समय उससे पन्द्रह-बीस कदम आगे किसी घर की ऊपरी मजिल से कोई चीज गली मे गद्द से आकर पडी। महिपाल चौक उठा, उसके लिये रात का सन्नाटा भग हुआ। क्या गिरा, इस समय कौन जाग रहा होगा?—गली की रोशनी म उसे सफेद पोटली-सी चमकती दिखाई दी। उसका मन चिहुँक कर तुरन्त किसी अपराध—किसी नाजायज बच्चे की लाश की कल्पना से गुथ गया। दिल की धडकनो के साथ कदम भी तेज हुए, पास जाने पर एक फटा हुआ चीकट तकिया दिखलाई दिया, जिसकी कुछ रुई गली मे भी फैल रही थी। यह देखकर उसे ढाढस हुई, हँसी भी आई कि इस समय यह दलिद्दर फेंकने का मूड किसे आया? फिर सोचा, मुहल्ला हे, इतने मन हैं, रात हो जाने से भला जीवन की गति थोडे ही रुक जानी हे? खुद वही चल रहा है, अपनी समस्याओ की कहानी लिये हुए चल रहा है। सोचने लगा, हर चार दीवारो के अदर बद होकर न जाने कितने मनो की कहानियाँ सोती या जाग रही होंगी!

महिपाल की कल्पना ने हर घर के बन्द दरवाजे खोल लिये। कोठरी मे बिछी पुआल और टूटी कमजोर खटोलियो से लेकर उम्दा पलँगो तक के ऊपर, फटी कथडी-

गुदडी और टाटो से लेकर रेशमी फर्दों तक मे गर्माई लेते हुए मुहल्ले की अस्पष्ट झलक उसे दिखाई देने लगी । कितने ही जाग रहे होगे, अकेले विरह मे, या दुकेले आनन्द मे । कई ससारी माया मे भी मशगूल होगे । इन घरो मे कितने ही जगदबा सहाय भी होगे, कितनी ही ऐसी विवश रमणियाँ भी होगी जिन्हे आज के दैहिक सुख की कीमत कल अपनी देह में आग लगा कर चुकानी पडेगी ।

महिपाल के रोगटे खडे हो गये । उसे सर्दी महसूस होने लगी ।....यह जीवन भी अजब समस्या है । यह मुहल्ले उन सब समस्याओ को लेकर गलियो, सडको, बाजारो की लीको और इतिहास की गई-गुजरी सदियो के जटिल जाल से घिरे हुए हैं । इनमें इसानो और हैवानो को एक साथ, और बिना किसी भेद-भाव के सदा पनाह मिली है । रईसो और नगर-सेठो की ऊँची हवेलियो से लेकर कमतरीन जिंदगी बसर करने वाले, इसानी चूहो के बिल जैसे घर तक इन मुहल्लो के नाम और पते के साथ बराबर के हकदार रहे हैं । ईमानदारो के ईमान की परख चार के आगे यही जग-जाहिर होती हे, चोर कातिल और बदमाश भी इन्ही गली-मुहल्लो मे समाते हे ।

सदियाँ गुजरती है, समस्याये बदल जाती हे, घर खडहर होते है, नये बनते हैं ।....मुहल्ला उजाडखड मे सदा नई आस लेकर जीता है । यह इसान का कभी न खत्म होने वाला अफसाना है, इसके दिल मे इसान का घर है ।

.. . ..

घर पहुँच कर महिपाल को कुण्डी खटखटाने मे एक बार सकोच हुआ । सोचा, मुँह से शराब की बू जरूर आ रही होगी । फिर सोचा, शायद न भी आती हो, पिये बहुत देर हो गई ।

कशमकश मे एक मिनट बीत गया, आखिरकार उसने कुण्डी खटखटाई ।

थोडी देर बाद दरवाजे के पीछे से कल्याणी की आवाज आई—"कौन है ?"

"हम ।" महिपाल के कहते ही अदर से खटका हटा, कुण्डी खुल गई । दहलीज की रोशनी महिपाल पर पडने लगी । पति-पत्नी ने एक दूसरे को देखा, पति ने नजरें कतरा ली । अन्दर जाकर अपना मुँह बन्द किये हुए उसने बैठक का दरवाजा खोला । अन्दर स्विच की तरफ बढा ।

बाहर का दरवाजा-खटका बन्द कर कल्याणी ने फीके स्वर मे पूछा—"हियै पौढिहो ?"

"लिखब ।" भारी-सी आवाज मे उत्तर देकर महिपाल ने टेबिल-लैप जलाया और अपनी मेज के कागजात इस तरह उलटने लगा जैसे कोई जरूरी कागज ढूँढ रहा हो । व्यस्त होने का बहाना करते हुए उसकी पीठ अपनी पत्नी की तरफ थी, वैसे ही बोला—"दुइ ठे पान हमै दै जउतिउ ।"

"बिलहिरा मा धरे हैं ।" पत्नी के कहते ही महिपाल ने तुरन्त कागज छोड पान का बिलहरा उठा लिया और मुँह मे चार पान भर कर इस तरह निश्चिन्त हुआ मानो चोरी का माल लेकर भागने वाला चोर डर के इलाके से निकल कर अपनी सरहद मे पहुँच गया हो ।

उसकी पत्नी दरवाजे से जा चुकी थी। निश्चिन्तता की साँस लेकर महिपाल ने मुँह में तम्बाकू की चुटकी डाली।

दो रोज से घर मे पति-पत्नी की खटखट चल रही है। कल दोपहर में तो बहुत जोर से बज गई थी, आज भी कलह-प्रभाती से ही दिन आरभ हुआ, भोजन के समय भी वह खाते-खाते थाली सरका कर उठ आया था। कलह खर्चे को लेकर हुई थी। डेढ़ महीने से उसकी आमदनी का तार-कुतार हो गया है। सितम्बर में महिपाल की बड़ी लड़की को डबल निमोनिया हो गया था, मरने से बच गई वरना सब करम हो गये थे। शीला और कर्नल के कारण इलाज का खर्च तो उसे विशेष नही पड़ा, पर मानसिक अस्तव्यस्तता मे उन दिनो वह कुछ लिख नही पाया। रोज कुआँ खोद कर पानी पीने वाले मनुष्य के लिये एक दिन भी ठाला बैठना भार हो जाता है। महिपाल के लिए नवम्बर से ही तगी शुरू हो गई थी। दिसबर में आशा थी कि पुस्तको की रायल्टी के डेढ पौने दो हजार रुपये आ जायेंगे, सो कुछ दिन पहले महिपाल के कई तकाजो के बाद प्रकाशक का पत्र आया था कि बाजार की मदी के कारण इस समय उनका हाथ तैंला नही, रुपया फरवरी या मार्च तक भेजेंगे।

महज रोटी-पानी चलाने के लिये भी नौ प्राणियो के घर मे कम से कम साढ़े तीन-पौने चार सौ रुपये महीने की सख्त जरूरत पडती ही है। महिपाल के दो बेटे हर्षवर्धन और श्रीवर्धन तथा भाजी शकुन्तला इस समय इटरमीजिएट के दूसरे साल में पढ रहे है, पन्द्रह बरस की बेटी राज्यश्री नवे दर्जे मे, और सिद्धार्थ सातवें में पढता है, तपोधन सात बरस का है, दूसरे दर्जे मे पढ रहा है, और अनामिका अभी साल भर की दूध-पीती बच्ची है।

रेडियो के लिये नाटक-वार्तायें और मासिक पत्र-पत्रिकाओ मे कहानियाँ, लेख आदि लिखने के अलावा महिपाल इधर पाँच-छ महीनो से एक स्थानीय दैनिक पत्र के लिये, नित्यप्रति हास्य का कालम भी लिखने लगा है। फिलहाल हास्य कालम की मजदूरी के डेढ सौ रुपये ही उसकी बँधी आमदनी है, बाकी सब आकाशीवृत्ति है। यो तो बाजार में सब मिलाकर उसकी ग्यारह किताबे चल रही है, परन्तु आमदनी अधिक नही होती। महिपाल के उपन्यासो मे रोमास का नितात अभाव है, और आज कल (प्रकाशक के कथनानुसार) चटपटी किताबो की सबसे ज्यादा माँग है। प्रगतिशील, सामाजिक, विचारशील उपन्यास बिकते है सही, पर । इस 'पर' पर एक 'पर' यह और भी जुडा है कि जिन रचनाओ की हडकपी, हाहाकार खाती समालोचनायें एक 'अध्ययन' दो 'चिन्तन', और दस दृष्टिकोण प्रकाशित होकर मासिक साहित्य पढने वालो को बडे मदिर के सामने बैठे हुए भिखारियो की तरह न घेरे, उनके लेखको की आमदनी और भी कम होती है। महिपाल की रचनाओ को भी यह सौभाग्य कम मिलता है। वह यह महसूस करता है, शिकायत भी किया करता है कि सबसे ज्यादा शोर उन्ही किताबो का होता है जिनके लेखक किसी न किसी राजनीतिक या साहित्यिक गुट के साथ समझौता किये हुए है। जिस गुट का जितना ही अधिक सगठन होता है उसके लेखको को उतनी ही अधिक पब्लिसिटी होती है, और वे उतना ही अधिक कमा भी लेते है। महिपाल अपने आपको किसी गुट के साथ न जोड सका।

इस तरह अपने वर्ग के लोगो से कट कर वह अकेला है। इस अकेलेपन को लेकर वह दिनो-दिन मानसिक झकोलो की दलदल मे पैठता चला जाता है। अभाव के बिच्छू का डंक खाकर कभी लाखो की लक्ष्मी और सातो सुखो की कल्पना से अपना जी बहलाता है, और कभी इस मिथ्या कल्पना की प्रतिक्रिया मे अपने को कोसता हुआ राम, बुद्ध, महावीर, ईसा, गाँधी और प्राचीन भारतीय ऋषियो, सतो के त्याग और तपोनिष्ठा से प्रेरणा लेकर लिखने-पढने के काम मे जुट जाता है। दिन और रात के अटूट क्रम की तरह उसका काम-काज और निकम्मेपन का गुनाह और तौबाभरा सिलसिला कभी खत्म ही नही हो पाता। खुदा और विसालेसनम के बीच मे हसरत से दोनो ओर हाथ फैलाये वह सदा प्यासा का प्यासा रह जाता है।

बैठक से पत्नी के चले जाने के बाद महिपाल का प्रायश्चितवाला मूड तेजी से चढ़ा। सहसा इस बात पर ध्यान गया कि अडतीस बरस की उम्र मे ही कल्याणी के सिर पर सफेदी चमकने लगी है, चेहरे की रेखायें कडी हो गई हैं, वह अपनी उम्र से पाँच-सात वर्ष अधिक बडी लगती है। महिपाल सोचने लगा कि कल्याणी की यह दुर्दशा उसके कारण हुई है। माना कि वह कला-साहित्य आदि को जरा भी नही समझती, बाते भी निहायत दकियानूस करती है, हरदम रुपये-पैसे नाते-रिश्ते, लेन-देन आदि के सबध ही मे विचार करती रहती है फिर भी उसका जीवन जैसा एकनिष्ठ है वैसा उसने कम देखा है। दूसरा को आराम पहुँचाने के लिये वह तन तोडकर मेहनत कर सकती है, अपनी जान तक निछावर कर सकती है। यह विशेषता महिपाल को दूसरी स्त्रियो मे प्राय कम या नही के बराबर ही दिखलाई पडी है। महिपाल सच्चे हृदय से उसके आगे श्रद्धानत हो जाता है।

कल्याणी एक हाथ मे पानी का गिलास और दूसरे मे पथरौटा तश्तरी लिए हुए कमरे मे आई। महिपाल चौंक उठा। यदि पहले से जरा भी आहट पा जाता तो वह लिखने या पढ़ने का ढोग करने लगता, मगर इस समय तो वह कागज-कलम-किताब से दूर तखत पर तकिये के सहारे बैठा हुआ 'प्रायश्चित' कर रहा था। परन्तु यह प्रायश्चित पत्नी के प्रति सहानुभूति-भरा चिंतन-तस्वीर की तरह अपनी पत्नी के सामने झलकाकर वह ये नही कह सकता कि देखो, पीठ पीछे भी हम तुम्हारे ही गौरव का चिंतन कर तुम्हारी प्रतिष्ठा बढा रहे थे, इसलिये एकाएक कल्याणी के आ जाने से उसे उलझन महसूस हुई।

कल्याणी मेज पर गिलास रखकर कोने के स्टूल से एक पुराना अखबार उठाती हुई पूछने लगी—"यू बिछाय देई ? तुम्हार कउनौ काम "

"बिछाय देओ। यू का आय, बेसन क्यार हलुआ ?" देखकर महिपाल को भूख लग आई। उसने उगालदान उठाकर पान की लुगदी थूकी, गिलास के पानी से कुल्ला किया।

हलुये की तश्तरी और दही-बडे का पथरौटा रखते हुए कल्याणी बोली—"बडकऊ बहुत रोज ते कहत रहे कि अम्मा हिलुआ बनाओ, हिलुआ बनाओ, तउ हम कहा की नमकीन महियाँ दहीबरौ बनाय लेई।"

"ये तो बिलकुल गरमागरम मामला है। . वाह, अच्छा बना है !" गिरी के लच्छे, चिरौजी, पिसी हुई छोटी इलायची और मिसरी की डलियो के साथ बेसन का

हलुआ महिपाल को अति प्रिय लगता है।

कल्याणी बोली—"बिजलीवाले इसटोउ पै गरम किहा है अबही तुम सबेरे थरिया सरकाय के चले गये। हमार दिन यइस बीता है ।" बात पूरी न हो पाई, कल्याणी की आँखो मे आँसू छलछला उठे, होठ काँपने लगे।

महिपाल की करुणा जागी। उसे छिपाते हुए मुस्कराकर बोला—"अच्छा! तो ये सब रूठे बलम को मनाने के लटके है। बडकऊ बिचारे का बहाना ही बहाना है!"

कल्याणी के सूखे चेहरे पर मुस्कुराहट की हरियाली लहराई, महिपाल बोला—"एवमस्तु। हम सतुष्ट भयेन'! लेओ "

महिपाल ने चम्मच में हलुआ भरकर उसकी तरफ बढाया, कल्याणी बोली—"ना हम न खाब।"

"काहे, ईमा छूत हुइ गई? बौडम! अरे चोका नाम के याकु कमरा मा न खावा, बइठिके बैठका नाम के दूसरे कमरे महियाँ खाय लिहा। ईमाँ कउन बुराई आय गई, बताओ?"

"तउ हम तुमका थ्वारौ कहिति हयि, बाकी हम पचन का बिचार बिबेकु है "

"अइसी की तइसी तुम्हार बिचार-बिवेक की। खाओ।" लाड से डाँटते हुए महिपाल ने चम्मच उसके होठो से लगा दिया। कल्याणी फौरन ही होठ सिकोड कर पीछे हटती हुई दृढ स्वर किंतु क्षमा माँगनेवाली मुद्रा मे बोली—"ना-ना।"

माथे मे गुस्से की रमक आई, पर महिपाल उसे जब्त करते हुए गभीर स्वर मे बोला—"स्वामी विवेकानन्द कहिनि—जननी हउ विवेकानन्द को रहे?"

"हाँ-हाँ, तस्वीर द्याखा है उनकी।"

"अच्छा हाँ, वहै कहि गये हैं, कि हमार हिन्दुन क्यार धर्म—जानति हउ कहाँ रहति है? —रसुइयाँ मा। अउ हमार भगवान् को आय? —कहिन कि हमार भगवान् आय दारि-चाउर कै बटलोही। अउ हमार धर्म कइसि आय, यहौ बताई?"

कल्याणी ने उत्तर न दिया, सवालिया निशान बनी उसकी ओर देखती रही।

"हमार सनातन धर्म उयि हिजडे की तरह है जो नाक पे उँगली रखकर दीदे मटकाते हुए अपने माननेवालो से कहता है कि ऐ निगोडो, मुओ, मुझे छूना मत, मै बडी पाक-साफ हूँ।"

धर्म का इस प्रकार मखौल उडाया जाना कल्याणी को अखरा, चुभा, वह भयभीत हो उठी। महिपाल बात टुपककर चुप हो गया। हलुये की आधी बची हुई प्लेट रखकर बडे का पथरौटा उठाते हुए अपनी बात की प्रतिक्रिया का इतजार करने लगा। कल्याणी काँपते स्वर मे बाली—"द्याखौ, हम पच घर-गिरस्तीवाले बाल-बच्चेदार हई। तुमका धरम भगवानु का अइसि न कहै का चाही। बडा पाप लागति हयि!"

"पाप तउ ससुर ई तुम्हार छूत-छात मा घुसा बइठि हे। यहिकी छूत, वहिकी छूत—राम राम! अच्छा तो ये बतलाओ कि तुम हलुआ अपने चौके मे क्यो बनाती हो? वहा बैठके इसे खाती-परोसती क्यो हो? तुम्हारे विचार-विवेक से तो यह भी छूत होनी चाहिये।"

"काहे ?' कल्याणी ने चौंककर पूछा ।

"काहे का ? अरे यू अरब देश क्यार भोजन आय—मुसलमानन क्यार ।"

"होई, हमते का मतलब । अरे मुसलमान अपने घरे माँ बनावति हयि, हम पचु अपने घरे माँ बनाइति हयि ।"

"यहै तो हम पूछिति हयि कि काहे बनावति हौ ? अरे तुम पच तउ शब्दन अक्षरन महियाँ पवित्रता-अपवित्रता सूँघैवारे लोग हउ ।"

"नाही तउ—" कल्याणी से कुछ कहते भी न बना और चुप बैठते भी न बना । हडबडाहट मे यही कह बैठी । महिपाल ने फिर उसकी जबान रोकी, कहा—"नाही तउ का ? अरे शब्द अपवित्र न होय तो तुम गाजर, गोभी काहे नाहि खउती ? उसमे—उसमे गाय शब्द का 'गा—गो' आ जाता है इसीलिये ना । तो तो तुम ये बडे भी मत खाया करो । इसमे भी 'गा गो' आता है । (उत्तेजना में आधा बडा खाकर) वाह ! खूब बने हैं ।"

"बरन मा गा-गो कहाँ आवति है ?" बडो की तारीफ से सतुष्ट होकर कल्याणी ने विनोद-भरे स्वर मे पूछा ।

"तेलुगु भाषा मा बडा का गारु कहा जाति है । न खावा-बनावा करौ अब ते भइ, दुइठे बडा अउर ले आओ । तनुकु बुकनू भुरकायके, औ' मिरचा की याक चुटकी जरा झलझलौआ बीस बिस्वा ।"

कल्याणी हँसी, फिर कहा—"अब न खाओ इत्ती बेला । ई तउ हमार जिउ नाही माना तउ लै आईं हम । सबेरे खायो ।"

"ओ के चीफ," कहकर महिपाल पथरौटे का दही सूँतकर चम्मच मे भरने लगा । अपनी पत्नी से छेड के लिये कही हुई बात सहसा उसके मन मे विचार बनकर अटकी —"हलवा परदेशी चीज है । फिर भी आज हमारे देशी भोजन का महत्त्वपूर्ण अग बन गया है । इस तरह खाने-पीने, पहनने-ओढने की चीजे, शब्द, रीति-रिवाज की बहुत-सी विशेषताये एक से दूसरे द्वारा अपनाई जाकर लोकव्यापी जन-जीवन मे समा जाती हैं । ये बडा न जाने भारत के किस प्रात में किस स्त्री या पुरुष ने सबसे पहले प्रयोग की तरह बनाया होगा या शायद कई जगह अलग-अलग पाक-प्रयोग करते हुए लोगो ने इसे ईजाद किया हो । फिर भी यह तो तय है कि एक से दूसरे के द्वारा अपनाया जाकर ही ये आज करीब-करीब समूचे देश की भोजन-सामग्री में जुड गया है । कैसे चीजे एक से दूसरे तक पहुँचती है ? कैसे सस्कृति का प्रसार होता है ? देश-काल के फैलाव मे वस्तु और विचार किस तरह सस्कार बनकर समा जाते हैं ? वाह रे मानव-जीवन ! कितना जटिल और कितना सरल ! एक साथ—"

कल्याणी ने बात शुरू की, महिपाल का ध्यान अन्तर्मुखी से बहिर्मुखी हुआ । कल्याणी कहने लगी—"आज सझा के बखत पारबती की अम्मा आई रही । अरे, बडी बुरी दसा है उनके घर की । सुनिकै हमार तउ जिउ थर्राय उठा "

"क्या हुआ ?" पूछकर महिपाल ने हलुये की प्लेट उठाई ।

"अरे का कही ? पारबती क्यार बाप तउ महा निखिद्द-वाहिहातु मनई है हो ।

अरे, अपन लरिकन-बिटियन का भूखन मारिकै आप ऐसु-आराम करै, वहिका रामजी सात जनम नरक ते न उबरिहैं !"

पार्वती पडोस मे रहनेवाले एक दफ्तरी बाबू की जेठी बेटी है। अठारह बरस की हो गई, न ब्याह हो सका, न पढ ही पाई। उसके पॉच भाई-बहिन और है। दीवाल से दीवाल लगे हुए घर मे पार्वती की मासी अपने बच्चो के साथ रहती है। पॉच बरसो से मौसा ट्रासफर होकर अकेले जलधर मे रहते है, वहॉ से खर्चा भेजते है। पार्वती के पिता की छोटी-सी तनख्वाह का अधिक भाग भी मासी ही की सदूकची मे जाता है। पार्वती की मॉ अपने बच्चो के साथ अपनी छोटी बहन के कारण अनाथ विधवा की तरह अर्थसकट से भरी और सुहागिन की तरह लात-जूतो-गालियो से भरी जिन्दगी बिताने को मजबूर है। सारे मुहल्ले मे साली-बहनोई की हवा उडी हुई है।

महिपाल ने खाली तश्तरी अखबार पर रखते हुए गिलास की तरफ हाथ बढाकर कहा—"का कौनौ नई बात भई ?"

"अरे, अबकी तनखाय क्यार याकु डब्बल नाही दिहिस है घर मॉ। पारबती की अम्मा हमरे आगे फफकि-फफकि कै रौवै, कहे कि बहनजी, सब सह सकते है पर बच्चो को दुइ-दुइ रोज तलक भूखो चिल्लाते देखकर कैसे जी सम्हालूँ अपना ?"

महिपाल का मन अपने शरीर को जड बनाकर फिर अपने आप मे लीन होने लगा।

कल्याणी भीगते-कॉपते स्वर मे कहने लगी—"हमते कहिनि कि बहनजी, पडितजी तौ बडे-बडे लोगो को जानते हैं, कही हमारे एकाध लडके को भी रखाय दे। हमैं कुछ न चहिये, बस, उसे दुइ जून की रोटी और फटा-पुराना "

आँखो से गगा-जमुना बह चली। पल भर के लिये कल्याणी का कठ-स्वर आँसुओ के पाताल मे डूब गया। महिपाल खामोश सुनता रहा। भावावेग पर तनिक काबू पाकर आँचल से आँसू पोछते हुए कल्याणी कहने लगी—"उत्ती बिरिया हमार हिरदै फाट-फाट करै लाग। कौने कलेजा ते महतारी आपन पूत का घर ते निकारै की बात "

वह फिर रोने लगी। निसॉस ढालकर महिपाल बोला—"पेट ! पापी पेट, इससे हारकर मॉ भी कलेजे पर पत्थर रख लेती है। जी चाहता है इस साले दीपनारायण को जाकर खूब पीटूँ—मारति-मारति सारे के पुन्हत्तर ढीले "

जग की करुणा को चीरकर गृहिणी का आदेश-भरा स्वर तीर की तरह आगे बढा —"खबरदार, तुमते कहे देइति है, दुनिया भरे क्यार चकल्लस मॉ न पर्यो। हमते का मतलबु ? अरे हमार जौन धरम रहा तौन हम निभाय दिया। तुम काहे कोऊ की दुसमनी मोल लेत हौ ?" कहते हुए कल्याणी उठी, अदर चली गई।

महिपाल सोच रहा था—"मै क्या दीपनारायण की तरह नीच नही ? अपनी पत्नी को सताता हूँ, धोखा देता हूँ। यह जरूर है कि मै फिजूलखर्ची नही करता, फिर भी अपने बच्चो को पूरी तरह पर खिला-पहना भी नही सकता। और कल क्रिसमस ईव है, शीला के यहॉ जाना है। उसे कुछ प्रेजेट भी देनी होगी। घर मे पॉच रुपये बचे है। और पहली तारीख का भी कोई आकर्षण नही। 'लोकसत्ता' वालो का पैसा भी आठ-दस जनवरी से पहले तो मिलने से रहा। कैसे चलेगा इतने दिन ? कैसे चलेगा ?

भोले !   "

कल्याणी लोटे मे पानी लेकर आ गई। उगालदान उठाकर पति का हाथ-मुँह धुलाने लगी। पास होने के कारण उसे पति के मुँह से निकलनेवाला हल्का-सा भभका महसूस हुआ। कल्याणी ने नाक सिकोडी। पत्नी के पल्ले से हाथ पोछते हुए महिपाल ने उसका सकोच देख लिया। समझ भी गया, चोरी पकड जाने की झुँझलाहट और बेशर्मी भी आई। खुद ही बोला—"आज थोडी-सी पी ली मैडम ! सज्जन के घर—वो जोर देने लगा।"

उगालदान कोने में रखकर बाये हाथ पर पानी डालते हुए बोली—"उयि तउ बडे आदमी है, पियत है तउ तरमाल खायँ का भी पावति हैं। तुम तउ   आखौ ना, कइसि झटकि गये हौ आजुका   "

"अरे, कउन हम रोज-रोज पियत हयि   ? हाँ, काल्हि औ' परौं दुइ दिन और पियब। क्रिसमस के पहले तें चिताये देति हयि, बुरा न मान्यो।"

मेज से पान का बिलहरा और तम्बाकू की डिबिया उठाकर देते हुए कल्याणी ने कहा—"रिसाओना तउ एक बात कही।"

"कही !"

"जाय देओ, न कहब। दुइ दिन बाद इत्ती बेला तउ हमरे ग्रह-नछत्र ठीक भये हैं।" मुस्कुराकर बिलहरे से खुद दो पान निकालकर मुँह में रखे, बिलहरा बद किया। महिपाल ने तम्बाकू की डिबिया उसकी ओर बढाई, मुस्कुराकर बोला—'सकोच न करौ महारानी, हम अभयदान दै चुके।"

"अरे सकुन्तला के हाथ पीले करै की चिंता है। अच्छाई कोउ नाहिं धाखत, बुराई झट्ट सूँघि लेत हैं।" सामने कुर्सी पर एक पैर ऊँचा कर बैठते हुए कल्याणी ने कहा।

तकिये पर ढासना लगाते हुए महिपाल ने अकडकर कहा—"अरे हम आहिन बाला के शुक्ल—बाला पियै प्याला औ, फिर बाला के बाला। कउन सार हमरी ओर उँगली उठाय सकति है ?"

कल्याणी हँस पडी—"ई बखत तउ बाला के सुकुल ऐसे अकडिगे जैसे ननौरे क्यार तालुकेदारी इनही के हिस्सा माँ परी होय। (फिर क्रमश गभीर हो गई)—जो लाख दुइ लाख कै हेसियत हमारो होत तउ हमरी कइती कोऊ आँख थ्वारौ उठाय सकत रहै ? गट्टू बडे आदमी हुइ गये है, उयि चाहे जौन करैं, बाला के बाला बने रहि हैं। मुल हमका तउ सुनायके मुल्लर की अम्मा सबके सामने कहिनि अकि हाँऽऽ   फिर तुम्हार नाम लैके, कि बडे नामी जरूर है, पर बडे आदमी थ्वारी है। इनके पास है का जो भाजी का दहेज माँ देहैं ?"

महिपाल का मन मुल्लर की अम्मा और तमाम समाज के प्रति घृणा से कस गया। गट्टू (उसके छोटे भाई, लखनऊ के धनीमानी चिकित्सक डॉ० जयपाल शुक्ल) की सासारिक सफलता के प्रकाश मे अपनी सासारिक असफलता का चित्र उसके कलेजे में नागफनी का जगल बनकर झलकने लगा, चुभने लगा। आर्थिक असमर्थता के शेर ने पजा उठाकर ऐसा थप्पड मारा कि उसके साहित्यिक वैभव की खाल खिच गई। उसके प्राण

तिलमिला उठे, उत्तेजना मे सीधा तनकर बैठ गया, कडकडाती हुई आवाज में बोला—"मैं भी देखूँगा दस बरस के बाद कौन बडा आदमी कहलाता है ? गट्टू या मै ? ये पैसे की दुनिया बहुत दिनो तक नही रहेगी । आज तो समाज का शासन ही बईमानो और लुटेरो के हाथ में है । लोक-जीवन की मान्यताये वही हैं, जो वे चलाते है । जो इस— इस धाँधलीबाजी को समाज की सौभाग्य-चमक बनाकर अपना खोटा सिक्का चला रहे हैं, वे ये भूल जाते है कि करोडो बीमार भूखे और नगे उनके पीछे "मरता क्या न करता" वाली स्पिरिट लेकर पागल जोश के साथ बढे चले आ रहे हैं । इन मुट्ठीभर धाँधलीबाजो को जलाकर खाक कर देगे तब मेरी लडकियो के साथ ज्ञानरूपी दहेज जायगा—और उसी की कीमत होगी । चोर, साले बदमाश ! मेरी गरीबी का मजाक उडाते है ?"

उत्तजना मे हुकारते हुए महिपाल तखत से उठ खडा हुआ, और कमरे में टहलने लगा ।

कल्याणी उसकी बातो का अर्थ न समझकर भी उसके आवेश से सहम गई । खुद गरीबो और पैसो की तगी से जूझते रहने के कारण एक जगह वह भी अमीरो से घृणा करती है । वह भी देखती है, नित्य अनुभव करती है कि आज की दुनिया मे सीधे और ईमानदार की मरन है, बेईमान फल-फूल रहे है । पर कैसे ये सब बदलेगा ? दुनिया मे सदा यही होता आया है । भगवान की मर्जी ही ऐसी है ।

फिर उसे अपने पति पर दया आने लगी—दुखी हो जाते हैं बेचारे ! इतनी मेहनत करके भी इन्हे सुख नही मिल पाता । दिमाग का काम करके भी बेचारो को छिटाँक भर घी तक नसीब नही, कितने झटक गये हैं !

विषम मानसिक परिस्थिति मे एक मिनट का समय ब्रह्मा के एक कल्प के समान हो जाता है । इससे दुगनी लम्बी अवधि तक कमरे मे सन्नाटा छाया रहा, केवल महिपाल के चलने की पैंछट सुनाई दे रही थी जो गभीर सन्नाटे का ही अग थी ।

एकाएक कल्याणी के सामने खडे होकर महिपाल बोला—"बस, मैंने तय कर लिया है—शिवचरण दुबे के लडके से बात पक्की किये लेता हूँ । उनके विचार और कर्म दोनो अच्छे हैं, उनका लडका भी बडा सुशील है, एन्जीनियरिंग पास करेगा इस साल । क्या समझी ?"

महिपाल की तेजी से सहमते हुए भी कल्याणी ने धीरे से कहा—"सिवचरन तउ ऊगू के दुबे आयँ । हम धकरवन[1] के घरे न करब ।"

[1]कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज में भी दूसरे समाजो की तरह ही अनेक उपजातियाँ है । ये उपजातियाँ अनेक गोत्रो में बँटी हैं, और गोत्र अनेक कुलो में बँटे है । कुल तीन प्रमुख भागो में बँटे हैं—षट्कुल, मध्यम और धाकर । षट्कुल वाले अपने को सर्वोच्च मानते हैं और धाकरो का (अपने समाज में) हीनतम दृष्टि से देखते है । बाला नाम के प्रसिद्ध पूर्वज के कुल में बीस बिस्वा 'मरजाद' लेकर उत्पन्न हुए महिपाल शुक्ल षट्कुलवाले हैं, उनकी भाजी का पितृकुल भी उच्च है । वे बीस बिस्वा मरजादवाले माझगाँव के मिश्र हैं ।

महिपाल ने तडप कर कहा—"तो लाओ ना ढूँढ के लखनऊ के बाजपेयी का बेटा, जो सत्य का समर्थक होय—दहेज न माँगै।"

"तौ का सिउचरन दहेज न ले हैं ?"

"नह ! शिउचरन खरे आदमी है। मै उनको, उनके विचारो को खूब परख चुका हूँ।"

गहरी उसाँस ढीलते हुए कल्याणी ने कहा—"दुनिया का कही ? जौ सकुनतला के बाप-मतहारी जिदा होत तउ का मझगइयाँ मिसिर कै बिटेवा धकरवन के घरे जात ?'

"तो लाओ, निकालो पन्द्रा-बीस हजार रुपै। ये लोग लडके-लडकियो का ब्याह थोडे ही करते है, लक्ष्मी और अहकार का गठबधन कराते हैं। नीच ! इनह्य मन ! उयि उयि तिवारी जी—कहै का तउ बडे भारी लेखक, विचारक, कालेज के प्रिंसिपल आय, पर जन्मपत्र मागै जाओ तउ कहति हयि कि नकद पच्चीस हजार ल्याब, बाकी जौन आपकी श्रद्धा होय ! ये लोग पढे-लिखे हैं ? सभ्य हैं ? छि !"

महिपाल के पैरो मे फिर तेजी आ गई। वह छोटी-सी जगह मे भी यथासम्भव तेजी से चक्कर काटने लगा। फिर एकाएक कल्याणी की कुरसी के पास रुक कर उसके कधे को दबाते हुए त्योरी चढा कर बोला—"कान खोल कर सुन लो, शकुन्तला का ब्याह शिवचरण दुबे के लडके से तय करूगा। —और जन्म-पत्र वगैरा कुछ नही मिलाऊँगा। —और जो ज्यादा मीन-मेख निकालोगी तो उसकी शादी दूसरी जाति मे कर दूँगा। मै जात-पॉत कुछ नही मानता। मुझे इन सबसे घृणा हे—घार घृणा है। सुन लिया ?—सुना कि नही सुना ?"

कल्याणी बात का जवाब देते घबराती थी, उसके चेहरे पर उतार-चढाव चल रहा था। पति को इस तरह हठपूर्वक पूछते देख उसने तुरत निर्णय कर बात का जवाब दिया —"अपने बच्चन के बिहाओ मा जौन मन चाहे तौन रीत बरत्यो। मुल सकुनतला पराई थाती है। छोटी जिया जिदा होती तउ उनकी सलाह से चाहे तुम धकरवन—"

"फिर तुमने धाकरो को छोटा बतलाया ? मै कहता हूँ कोई छोटा-बडा नही है—"

"होय चाहै न होय। हम जहर खाय ल्याब जो सकुनतला का कहूँ ऐसे-वैसे कुल माँ देहौ।"

"मगर रुपया कहाँ से लाऊँगा ?"

"एक अकेले अनोखे गरीब तुम ही हौ षट्‌कुलवाले ? बहुत-से छाती पीटति हैं, मुल दुनिया के काम काज ध्वारौ रुकि सकत है—गरीब ह्योय तो होय।"

"यह छाती पीटनेवालो की दुनिया ही असली दुनिया है, और वो इस समय लडखडा रही है। जानती हो लोग शादी-ब्याह कैसे करते है ? जीवन के मगल सस्कार और उत्सव लोग कैसे मना रहे है ? उधार लेकर।—अपने को चिन्ता, अपमान और आँसुओ में पूरी तरह डुबोकर। मेरे—मेरे पास इतना दिल और दिमाग नही है कि आज की हजार चिन्ताओ को लेकर मै किसी सूदखोर महाजन के अत्याचार का बोझ अपने सिर पर लादूँ। मे यह हरगिज नही कर सकता।"

कल्याणी पति की व्यथा से व्यथित भी हुई, साथ ही साथ उसके नास्तिक-से लगने वाले विरोध से खीझ उठी। महिपाल को वह हर तरह से उत्पन्न समझ लेती है, जब वह उस पर बुरी तरह नाराज होता है, उसका अपमान करता है, तब वह उसे अजीब नही लगता। सारी दुनिया मे घर-घर मे वह सदा से यही देखती चली आई है कि पुरुष स्त्रियो पर शासन करते हैं। इस विरोधी सामाजिक वातावरण मे अमीर-गरीब मध्यम वर्ग—सभी के घर शामिल हैं। महिपाल चरित्रहीन है, कल्याणी उसके इस रूप को भी समझ जाती है। उसने बडे कट्टर सनातन धर्मी घरो मे भी पुरुषो को शराबी, व्यभिचारी और हर तरह से चरित्रहीन देखा है, सुना है। परन्तु जो वह हरगिज बरदाश्त नही कर पाती—वे हैं महिपाल की बातें। अपने चौबीस वर्ष के वैवाहिक जीवन मे अपने पति के जीवन-ढर्रे और विचारो को कभी सच्चे मन से ग्रहण नही कर पाई। उसके मन मे वर्षों से एक छिपी हुई शका है—क्या इन्ही सब नास्तिक अधर्म मत से भरी हुई बातो के लिये दुनिया उसके पति की इज्जत करती है ? इन्ही को लिखकर क्या वह बडा लेखक माना जाता है ? इतने वर्षों से ये ऐसी ही बाते कहते और लिखते हैं, छापे और सभाओ की दुनिया इनका मान करती है, फिर भी ससार अपनी सनातन लीक पर ही चला जाता है। इनकी बातो को कलजुगी मतवाले भले सराहा करे, उनमे कुछ तत्व नही है। दुनिया से कुल, मरजाद, धर्म-कर्म, रीति-रिवाज, ये सब भगवान् के बनाये कारखाने भला थोडे ही लोप हो जायँगे ? दुनिया जैसे अब तक चली आई है वैसे ही आगे भी चलेगी। सभी कर्ज लेकर इस तरह के उपाय कर अपने लडके-बिटियो के शादी-ब्याह करते हैं—तब क्या यही कोई अनोखे है ?

कल्याणी ने दूसरा पैर भी उठाकर कुर्सी पर रख लिया और घुटनो पर हाथ टेकते हुए उँगलियाँ मटकाकर तडप के साथ बोली—"करजा लेओ या चाहे जौन उपाय करौ, बाकी सकुनतला तौ हमार षट्कुल माँ जाई। अपने लरकन-बिटियन का ब्याह चाहे मेहतरन के घर कर्‌यो, चाहे चमारन के—हम न बोलब—हम आपन गगा किनारे जाय पडब। बाकी छोटी जिया की थाती तौ सनातन रीत ते सहेजी जाई। चाहे ई कान ते सुनौ चाहे ऊ कान ते सुनौ।' कहकर कल्याणी एकाएक जाने के लिये उठ खडी हुई।

महिपाल शकुन्तला के विवाह, दहेज और पत्नी की इस नाराजगी को लेकर—साथ ही अपने मन की झुँझलाहट को लेकर भी चितन मे सिमट गया था। पत्नी की कुर्सी के पास मेज से टिककर खडा हुआ वह सोच रहा था ? यह औरत भी क्या मजाक की चीज है दुनिया मे ? इतिहास के आदिमकाल से औरत ही आदमी के लिये सबसे बडी समस्या रही है। मौजूदा समाज मे नारी की एक अजीब सामाजिक स्थिति है। खासतौर से हमारे देश मे तो यह विचित्रता और भी स्पष्ट होकर झलकती है। हम देखते हैं कि औरत इस समय आम घरों में, किसी-न-किसी रूप मे बेइज्जती का जीवन बिताती है। छोटे आदमी कहलानेवालो को कौन कहे, बडे-बडे सभ्य, रईसो और पडितो के घरो मे भी स्त्री-जाति का दमन होता है, तरह-तरह से उनका अपमान होता है। आम-जहनियत मे स्त्री घर का काम-काज, सबकी सेवा-टहल करनेवाली और पुरुष के भोग की वस्तु होने के अलावा और कुछ भी नही। हाँ, उसका एक महत्त्व यह अवश्य है कि यह बच्चे पैदा करनेवाली

मशीन भी है। बच्चे चूँकि इन्सानी जिन्दगी को बढाने के लिये अहम जरूरी है इसलिये उनका उत्पादन करनेवाली फैक्टरी का भी महत्त्व है। पर इतनी बेइज्जती—अमानुषिक व्यवहार होने पर भी नारी से बढकर पुरुष के लिये और कोई भी वस्तु अधिक आदरणीय नही है। दुनिया अब भी समझती है कि नारी समाज की इज्जत है—पुरुष जगत् निश्चित रूप से यह जानता है कि नारी के बगैर वह अधूरा है।

यह विरोधाभास हमारे समाज में नीव के पत्थर की तरह शुरू से टेढा गडा हुआ है, और इस गलत नीव पर ही इन्सान का घर बना है, रीति-रिवाज बने है, सस्कृति, धर्म-कर्म—जगत् का व्यवहार बना है। फिर क्यो न सब कुछ उलटा ही उलटा हो ?

कल्याणी उठी, ता महिपाल के विचारो को झटका लगा, पूछा—"काहे ? चली ?"

प्रश्न इतने सरल भाव से पूछा गया था कि कल्याणी अपना सारा विरोध रखते हुए भी महिपाल से नजरें मिलाकर हँसे बिना न रह सकी। बोली—"हाँ भाई, अब हम जाइति है। छिन भरे माँ तुमका तेहा चढी तौ गरजै-बरसै लगिहौ—सोवत मोहल्ला जागि उठी।"

महिपाल को हँसी आ गई। कल्याणी मान से बोली—"तुमका का ? तुम तौ आपन चिल्लाय-चुल्लूय के चले जात हौ, परोसिनैं हमार हँसी उडावति है—अकि पडितजी को महिने-पन्द्रह दिन मे यह कौन-सा भूत सवार होता है ?"

महिपाल कटा, हँसी भी आई, पूछा—"तुम्हार पडोसिनें हमार मजाक उडावति है ?"

कल्याणी खिलखिलाकर हँसी, पल्ले से दाँत छिपाती हुई फिर बोली—"हमार परोसिनै का, तुम्हरे लरिके-बिटिया तलक हँसी उडावति है तुम्हार। हमते कहति है कि माताजी चुपाय रहौ, नाही तो पिताजी एटम बम्ब बरसावै लगिहैं।"

महिपाल भी जोर से हँस पडा, फिर बोला—"वाकई, मैं तुमको सताता तो बहुत हूँ। लेकिन कल्याणी, मेरा ईश्वर जानता है, तुम्हे सताकर मै अपने आपको सताता हूँ। तुम्हारे बगैर मेरी गति नही—कल्याणी के बगैर महिपाल महिपाल नही !"

कल्याणी निष्ठा मे तन्मय, शान्त मुखमुद्रा लिये खडी रही।

तभी ऊपर से छोटी बिटिया के रोने की आवाज आई। कल्याणी जल्दी से जूठे बर्तन उठाती हुई बोली—"कुछ काम न होय तउ तुमहूँ ऊपर चले आओ। तीन बज रहा होई, हम जानी।"

महिपाल बोला—"अभी नीद नही आ रही। तुम जाओ।"

११

'बड़े दिन' का सबेरा। कर्नल के साथ सज्जन पंडित शिवनाथ शास्त्री के घर गया था, दोनो वहाँ से लौट रहे है। सुबह नौ-सवा-नौ बजे की धूप से आसमान जरूर सुनहला है, मगर गली की सीलन से गल्तान् गल रही है।

कर्नल बोला—"भइ बडी सर्दी है आज। मालूम पडता है, आसपास कही बरफ गिरी है जोर की।"

जब मौसम की बात पर सज्जन का ध्यान भग न हुआ तब कर्नल ने 'इटिलिक्चुअल' बात छेडी, कहा—"भई कुछ भी कह लो, जोतिश-विद्या बडी सच्ची चीज है। बस, यही है कि बताने वाला चाहिये। हम तो आज शास्त्री जी के भक्त हो गये।"

"इसमे शक नही, आदमी बडे उदार और ज्ञानी है," सज्जन बोला—"आज महर्षि व्यास की पाप-पुण्य वाली व्याख्या सुन कर तो मेरे तमाम कन्फ्यूजन्स दूर हो गये। क्या सीधी सी बात है कि परोपकार करना पुण्य है और दूसरो को तकलीफ देना पाप। सचमुच कमाल है ये सादगी—ये सच्ची सीधी दृष्टि!"

"अमाँ, दुकान की चोरी वाली बात, और लल्लू से हमारे बँटवारे की बात, हमारी वाइफ का नाक-नक्शा—सब कुछ तो बता दिया। भला बताओ, अब जोतिश पर कैसे न यकीन किया जाय?" कर्नल अपनी दृष्टि से शास्त्री जी की महिमा बखान रहा था।

सज्जन ने हँस कर दबी जबान से कहा—"मेरे बारे मे तो उन्होने अजीब भविष्य-वाणी की है!"

कर्नल कधे से उसके कधे को हल्का-सा धक्का देकर हँसने लगा, कहा—"अजीब क्या साले, तुम्हारी तो बदनामी ही नही, दुर्गत भी होनी चाहिये। तुम्हारी और महिपाल दोनो की!"

"तो गोया मेरी बदनामी से आपको खुशी होगी! और आप हम लोगो के जिगरी दोस्त है!—क्यो?"

"दोस्त हूँ तो क्या, बुराइयो मे भी साथ दूँगा?' कर्नल ने जवाब दिया।

"मगर उन्होने कोई जोर देकर तो ये नही कहा कि किसी बुरे काम के कारण मेरी बदनामी होगी?"

"हाँ, और वैसे तो यह भी कहा है कि बदनामी सह लेने के बाद तुम्हारा जबर्दस्त नाम होगा।"

एक हल्की-सी निसाँस छोड जेब से सिगरेट-केस निकालते हुए सज्जन ने कहा—"कवि नरेन्द्र की वह क्या एक लाइन है कि 'बद कली सा राज न तेरे खाले से खुल पायेगा!"

कर्नल की तरफ सिगरेट-केस बढाते हुए, खुद भी एक सिगरेट निकाली, और उसे मुँह मे दबा कर बोला—"इसीलिये मै जन्मकुण्डली दिखाना उसूलन पसद नही करता।

भविष्य को न जानना ही अच्छा है—कल की चिंता मे हमारा आज का खेल फीका पड जाता है।"

सिगरेट जलाने के लिये वे एक जगह रुक गये। सिगरेट लाइटर जेब मे रख कर सज्जन और कर्नेल आगे बढे ही थे कि एक नौकर किस्म के आदमी ने सामने आकर उनसे सवाल किया—"बाबूजी, ई गली महियाँ डॉगडर साहेब की दुकान कौन-सी है ?"

कर्नेल ने पूछा—"किस डॉक्टर को पूछते हो ?"

"साहेब, जौन दही बेचति है।"

सुनकर सज्जन और कर्नेल दोनो चौंके, कर्नल को इस बात पर भी ताव आया कि एक मामूली-सा आदमी उससे मजाक कर रहा है। बोला—"बदतमीज, मजाक करता है—"

"नाही सरकार—" पूछने वाले ने अपने दोनो कान पकड कर हाथ जोडते हुए कहा—"हम तो खुदै बडे फेर मा पडे हन, वाकी हमार मालिक कहिन कि डॉगडर की दुकान ते दही लायो। हमार कौनो खता—'

"बडा बेवकूफ हे तुम्हारा मालिक, कही डॉक्टर की दूकान पर दूध-दही मिलता है ?" कर्नेल ने कहा आर आगे बढा।

एक लालाजी ने जाते हुए सुना, और नौकर से पूछा—"डाकटर हलवाई का पूछते हो ?—वो क्या बॉये हाथ पर दुकान है।"

नौकर खाई नजरो से डॉक्टर हलवाई की दूकान देखने की कोशिश करने लगा। लालाजी बोले—"अबे वो। राशन की दूकान के बाद खटिको की दुकाने नही दिखाई दे रही—बस, उससे मिली भई है।"

कर्नेल और सज्जन आगे बढ चले। कर्नेल बोला—"अच्छा मजाक है साला, कि हलवाई का नाम भी डॉक्टर !"

सज्जन बोला—"जब एक दवाफरोश कर्नेल हो सकता है तब—"

"मैं जानता था तुम यह जरूर कहोगे।" झेप के साथ हँसते हुए कर्नेल ने कहा।

डॉक्टर नाम के हलवाई को देखने की चुहलभरी इच्छा लिए सज्जन गली की दोनो ओर की दूकाने देखता हुआ चलने लगा। कुत्ते, गाये, पतली-सी भीड भरी गली मे भी साइकिल सवारी के करतब दिखलाते हुए आदमी, तरह-तरह की बातो, औरत-मर्दों की आवा-जाही से गली का बाजार गुलजार था। इस गली मे शास्त्री जी वाली गली की अपेक्षा धूप भी काफी हद तक फैली हुई थी। बाईं तरफ की पनचक्की मे आटे की गर्द से सफेद-बुर्राक बने हुए मजदूर को देख कर सज्जन को मजा आया। दाहिनी तरफ एक पतली-सी गली मिली, फिर दर्जी की दूकान—मशीन की सडसड करती गूंज, मेंहदी रँगी दाढी वाले खलीफाजी दरवाजे से टिक कर बैठे सुई चला रहे थे, उनके आगे मिट्टी की पेंदी वाला हुक्का रक्खा था। कारीगर शागिर्द कटाई-सिलाई कर रहे थे। दर्जी की दूकान के बाद एक घर का दरवाजा, फिर दर्जी, खटिक, मनिहार, बैद, फिर मकान। बाईं तरफ पनचक्की के बाद पसारी की बहुत बडी दूकान—'दमोदर, पाव भर बेसन ! दो आने की किसमिस देना। अरे हमारा सौदा लाओ भाई। हाँ, लेना जी। अरे फिटकिरी

निकालना अदर से ।   ' आदि के शोर के बाद राजवैद्य की पदवी से युक्त साइनबोर्ड वाले पग्गडधारी वैद्यराज अपनी मरीजविहीन दूकान मे बैठे हुए दिखे, फिर खटिको की दूकाने, दाढी-मूँछ घुटा, जनानी धोती पहिन हुए एक जनखा बैठा पान लगा रहा था। इसके बाद ही हलवाई शिरोमणि डाक्टर की दूकान आई। दूकान बडी थी, गद्दी पर गणशजी से भी सवाये, रग मे हबशियो से भी चार चाशनी ज्यादा, ऊनी कटोप से पूरा मुँह ढँके हुए डाक्टर साहब जलेबी तोल रहे थे। उन्हे देख कर सज्जन बडा प्रसन्न हुआ, कर्नल से बोला—"यार इसके यहाँ से तो जरूर कुछ खरीदेग। आदमी क्या है, खासा जापानी तोप का गोला है।"

फर्श पर पीतल का जगला लगा कर मिठाई के थाल सजाये गय थे। शिवजी, हनुमान जो गाधी, नेहरू, नेताजी, शिवाजी और राणा प्रताप की तस्वीरे टँगी थी। शिवजी क चित्र पर फूलहार भी टँगा था, बाहर पीतल की जजीरो मे दो घटे लटक रहे थे। उस समय दूकान पर मामूली सी भीड थी। कर्नल बोला—"जलेबिया लेते चलो।

कटोप के छेद से डाक्टर साहब की पहिया फिरी हुई फुन्नोटा नाक, चिये जैसी आँखो पर चाँदी की कमानी का चश्मा, कच्ची-पक्की मूँछे और पान की पीक बहते हुए मोटे-मोटे होठ दिखाई द रहे थे। गाहक पाँच-सात ही थे, मगर हुल्लड बडा था। डॉक्टर का हाथ ना दिन मे अढाई कोस की स्पीड से चल रहा था और जबान डाकगाडी बनी हुई थी। सज्जन ने जलेबी, आलू के लच्छे और सेम के बीज का आर्डर दिया।

पीठ पीछे, गली के दूसरी तरफ मकान के चबूतरे पर बैठे धूप सेकते हुए एक जुल-जुल बूढे ने किसी से कहा—"अरे जवानी तो सभी सौक से काट लेते है, पर बुढापा काटना बडे मरद का काम है। दाँत रहे नही, कानो से सुनाई नही देता, आँखो से कम दिखे,   हाथ-पैरो मे, हड्डी-हड्डी मे ऐसा-ऐसा दरद होता है ससरा कि सब पुरखे मैया-बाप तलक याद आ जाते है।   और कोई पानी तलक को पूछने वाला नही—बडे सूरमा का काम है बुढापा काटना। हर कोई नही काट सकता भैया!—मेरी तिरानबे बरस की अवस्था हो गई। भगवान् के यहाँ मेरा कागज ही खो गया है ससुरा। खो-खो- खो!"

सज्जन खडा सुनता रहा। उसके मन पर अनायास ही इन बातो का प्रभाव पडा—किसी दिन वह भी बूढा होगा। शायद इतना ही बूढा हो!   सच कह रहे है ये बुजुर्ग, बुढापा काटना बडे सूरमा का काम है।

"अँरे बाँबू, उँद्दिन के पैसे नई दे गये छै आँने—रँबडी के।"

"इनसे कह रहे हो ?" सज्जन की तरफ इशारा कर कर्नल ने डॉक्टर से पूछा। सज्जन चौक कर उधर देखने लगा, बोला—"मै ? मै तो आपकी दूकान पर पहले कभी आया भी नही।"

"बाँह! तुँम ही तौ लै गये थे रँबडी—अँभी पँरसो पिछले रोज की बाँत है। ये न समँझनाँ कि डॉक्टँर को कुछ याद नईं रहँता। हाँ।"

यह अप्रत्याशित तकाजा सुनकर सज्जन का चेहरा तमतमा उठा। पास ही आँखो

मे सुरमा लगाये, मुंह मे पान दबाये, रुई की मिर्जई कन्टोप पहने एक गोरे-गोरे से लाला जी खड़े हुए थे, उन्होने 'शरीफ बडे आदमी' से लगने वाले सज्जन की परेशानी भाँप कर डाक्टर को डाँट बताई—"डाक्टर, सठियाय गये हो क्या ? आदमी-आदमी की पहचान भी नहीं रहती अफीम की पीनक मे ?"

सज्जन उनकी तरफ देखकर अपनी सफाई देने लगा—"मै आज पहली मर्तबा ही यहाँ कुछ खरीदने आया हू ।"

"पँहँली दफे ? अँरे रौज तो हँमाये याँ से उधाँर लै जाँते हौ ?"

कर्नल ने हँस कर कहा—"अरे भई आपको किसी दूसरे का शक हो गया है डाक्टर साहब ! इनकी नब्ज मे तो रबडी नही, पुडिग बाला करती है । क्या समझे ?"

नौकर ने गर्म जलेबियो का थाल डॉक्टर के पास लाकर रखते हुए कहा—बेकार की हुज्जत करत हौ लाला । ई नही है ?"

हाथ झिटकार कर डॉक्टर अपने नौकर पर ही चिचियाने लगे—"बाँ ! अँलईं काँ पँलवाँ सँमझाँउत हौं हमे ? ई बीमाँ वाँरन कें बेटे है कि नही ?"

लालाजी हँस कर बोले—"अमाँ डाक्टर ईंट का चश्मा बनवाओ ईंट का ! पत्थर के चश्मे मे तुम्हारे जैसे अफीमचियो का काम नईं चलेगा !"

फिर हँसते हुए सज्जन कर्नल से कहने लगे—"इनकी ये पुरानी आदत है बाबू साहेब ! रात के बखत पीनक मे किसी को कम माल तौलते है, किसी को ज्यादा । इनसे रात मे उधार कोई और ले जाता है, सबेरे तगादा किसी और से करते है । आये दिन की झाँय-झाँय लगी रहती है इनके यहाँ । अमाँ वा भई डाक्टर, तुम्हारा भी जवाब नही है शहर भर में ।"

आगे बढते हुए सज्जन ने कर्नल से कहा—"एक तरह से मुझे अफसोस होता है कि जीवन के इतने बरस एक गलत किस्म की दुनिया में बिता दिये मैने । दरअसल कैरेक्टर्स तो यहाँ गली-मुहल्लो मे हैं । जीवन की विभिन्नता तो यही देखने को मिलती है ।"

कर्नल हंसकर बोला—"हाँ-हाँ, ज्यादा आरटिस्टपना न बघारो हमारे सामने । सारी जमाने भर की गदगी, जहालत तो यहाँ ही पलती है । आप कैरेक्टर लिये घूम रहे है !"

सज्जन को कर्नल की बात अखरी, पर उसमे हकीकत भी थी, जिसे नामंजूर करने के लिये सज्जन को कोई जवाब न सूझा ।

दोनो चलते रहे । कर्नल बोला—"महिपाल ससरे का कोई पता ही नही लग रहा कल से ! कल से क्या, मेरी तो परसो दोपहर के बाद से मुलाकात ही नही हुई ।"

"परसो रात मे मेरे यहाँ आया था । अपने उल्टे तवे के साथ थे हजरत !"

"हाँ-हाँ, वो तो मै जानता हूँ । बडे दिन के जशन मना रहे होगे शुकुल जी महाराज ! तभी सुबह देर तक सोते रहते है ।

"सोने दे यार—"सज्जन ने कहा—"इसान का तडपता हुआ दिल टुक नीद का माता हो जाय तो इसमे दुनिया का नुकसान ही क्या होता है ? बेचारा बहुत परेशान रहता है ।"

अपनी गली मे आये तो देखा चबूतरे पर महफिल जुडी हुई थी। आज मंगलवार होने से बसतू माली भी फूल प्रसाद लिये बैठा था और वही पडित महिपाल शुक्ल भी अलथी-पलथी मार कर बैठे गप्पे लडा रहे थे। बाबू छेदालाल ने दोनो को आते देख दूर ही से आवाज लगाई—"आइये-आइये! आपी लोगो की कसर थी बस!"

सज्जन ने सब को हाथ जोडे। कर्नल हँसते हुए बाबू गुलाबचद की कुरसी के पीछे खडे होकर उनके सिर पर एक हल्की-सी टीप रसीद करते हुए बोला—"कहिये सुप्रिटेडेट साहब, क्या चल रहा है? तुम्हे मालूम है सज्जन, गुलब्बू मेरे गाली के रिश्तेदार है—"

गुलाबचद कुछ जवाब दे, इसके पहले ही लाला मुकुदीमल हुक्का छोडकर बोले—"अरे भई नगीनचद!"

"जी लालाजी?' कर्नल ने जवाब दिया।

लाला की बात के बीच मे बाबू राधेश्याम ने छेदालाल से दो कुरसियाँ मँगवाने को कहा। छेदालाल ने अपने घर मे आवाज फेकी।

लाला ने कर्नल से पूछा—"बिजैलक्ष्मी पडित का सुआगत करने नई गये स्टेशन? तुम तो क्या नाम हे कि कागरेस के बडे मुरीद हो!"

"हाँ लालाजी, विचार तो किया था पहले। फिर सोचा जनसघ की तरफ से कोई ऐसी नामी औरत तो आयेगी नही। इसमे जो हम जायेगे तो आपको बुरा लगेगा।"

सज्जन महाबीर जी के मडप मे लग कर महिपाल के पास बैठ गया था। महिपाल ने झुक कर उसके कान मे पूछा—"हाथ में क्या है?"

"जलेबियाँ। कल शाम शीला के यहाँ थे?" सज्जन ने भी उसी तरह धीरे से पूछा।

महिपाल ने मुस्कुरा कर गर्दन हिलाई। सज्जन भी मुस्कुराया। उस समय लाला मुकुदीमल कर्नल के मजाक का जवाब दे रहे थे—"अरे, हमे क्यो बुरा लगेगा भैया! हमारे जनसघ मे न सही, मगर हमारे वार्ड मे तो ऐसी नामी औरत निकलने वाली है कमनिस्टो मे। घर ही मे अधेर मचवाय दिया ससरा!"

सज्जन के कान ठनके। लाला मुकुन्दीमल बाबू छेदालाल की तरफ देखकर बोले—"अरे भई, वो परचा कहाँ है रहसियोघाटन वाला?"

"क्या कोई कमनिस्टो का परचा निकला है?" कर्नल ने उत्सुकता दिखाते हुए छेदालाल से पूछा।

छेदालाल ने जेब से पर्चा निकाला। बाबू राधेश्याम बोले—"अजी सरासर बदमाशी है सालिगराम की। इलेक्शन के फेर मे गुनहगार को छुडवा कर बेगुनाह—"

"ये कैसे कहते है आप? अजी मरबे वाली ने खुद स्टेटमेन्ट दिया है।" परचे को खोलते हुए छेदालाल बोले।

"स्टेटमेण्ट नही खाक—"

छेदालाल का नौकर दो फोल्डिग कुरसियाँ लेकर आ गया। लाला मुकुन्दीमल ने बात काट कर कहा—"अरे पहले सुनने तो देओ। गुलाबचद, तुम बाँचो। तुम जरा अच्छी तरह से सुनाओगे।"

गुलाबचद बोले—"पडितजी को दो, पडितजी को। इतन बडे लेखक है—मै क्या सुनाऊँगा।"

"हॉ-हॉ, महिपाल सुनाओ, तुम्ही सुनाओ।" कुर्सी पर बैठते हुए कर्नल ने उत्सुकता जाहिर करते हुए कहा।

लाला मुकुन्दीमल अपने घर की तरफ मुँह उठा कर चिल्लाये—"अरे भगौतिया रे! पान दे जा जल्दी से। हॉ पडज्जी महाराज, सुनाइयगा।"

महिपाल पढने लगा—"रहस्योद्घाटन! रूस के एजेण्टो की काली करतूत। जनता कम्युनिस्टो से सावधान रहे! गत रविवार दिनाक २३ दिसबर को कपनी बाग के पास बादशाही नाले मे एक सद्य जात शिशु की लाश कुत्तो और सियारो द्वारा नोची हुई पाई गई थी यह समाचार वार्ड की जनता अब तक भली भाति जान चुकी है। हमारी राष्ट्रीय सरकार की कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस ने कितनी तत्परता से इस अमानषिक निर्मम हत्या का पता लगाया यह बात भी अब किसी से छिपी नही है। हमारे वार्ड के सुयोग्य और सुपरिचित अध्यापक श्रीयुत जगदबासहाय जी की जवान विधवा भतीजबहू मुसम्मात जसोदा बीबी (जिसने अपनी कलक-कालिमा को छिपाने के लिय दुर्भाग्यवश आत्महत्या कर ली) इस पाप की भागीदार थी, इसे भी जनता अच्छी तरह जान गई है। इस कलक कहानी के साथ जनता ने भ्रमवश आदरणीय मास्टर जगदबासहाय जी का नाम जोड लिया है। हम जनता को यह बतलाना अपना परम कर्तव्य समझते है कि पूज्य मास्टर साहब का नाम व्यर्थ ही बदनाम किया जा रहा है।

"देव तुल्य अध्यापक जगदबासहाय जी के साथ यह कलक सदा के लिये जुड जाता, इसमे तनिक भी सदेह नही। परन्तु अच्छे के लिये भगवान् भी सदा अच्छा ही करता है। हमारे नगर के महान नेता, हमारे वार्ड के रत्न, लोकसेवा-व्रतधारी बाब सालिगराम जी जायसवाल की अपूर्व सूझ-बूझ, तथा हमारी राष्ट्रीय पुलिस की कार्यपटुता को लाख-लाख धन्यवाद है, जिसके कारण हमारी भोली-भाली जनता एक निर्दोष आत्मा को कलकित करने से बच गई, और असली अपराधी का पता चल गया। क्या जनता जानती है कि वह दुष्ट पातकी कौन है?—कौन है वह नीच पामर जिसने डबल अपराध करके हमारी धर्मप्राण जनता को अपने विकट पापाचार से त्रस्त किया है? इस विषय मे अपनी ओर से कुछ न कह कर हम स्वर्गीया मुसम्मात जसोदा बीबी का वह वक्तव्य यहाँ प्रकाशित करते है जो उन्होने मरने से पहले पुलिस के समक्ष दिया था। पाप ज्वाला से जली हुई भारतीय महिला ने अपने अतकाल के टूटे-फूटे शब्दो मे पुलिस को बतलाया कि, "भल्ले बाबू मेरी ननद के दोस्त थे। दोनो एक पार्टी (अर्थात् कम्यूनिस्ट पार्टी, जो देश के गद्दारो की सस्था है) मे काम करते थ। भल्ले बाबू यहाँ अक्सर आते थे। एक दिन उन्होने और मेरी ननद कुमारी बनकन्या ने मुझको फॉस लिया। तब से भल्ले बाबू मुझ डरा-धमका कर अपने वस मे किये हुए थे। जब मुझे गर्भ रह गया तब घर वाले भी जान गये, पर सब लोग अपनी इज्जत को डरते थे। कल शाम जब मेरे पाप ने जन्म लिया तो मेरे देवतातुल्य पूज्य चचिया ससुरजी ने भल्ले बाबू को बुलाकर लडका देते हुए कहा कि अपना लडका ले जाओ। मेरे लडके को भल्ले बाबू ने ही मार कर फेका है। मै अपनी शरम से आप जलकर मर रही हूँ।"

"इस वक्तव्य का—दीन अबला की इस करुण पुकार को—शुद्ध मन से विचार करने के बाद न्यायपरायण जनता के दिल मे क्या विचार आता है ?—यही कि विदेशी सभ्यता की हवा मे पले हुए, ईश्वर, धर्म-कर्म, पाप-पुण्य का विवेक न रखने वाले आग्ल-शूद्र कम्यूनिस्ट अपने स्वार्थ के लिये नीच से नीच काम तक कर सकते है। यह पर्चा इलेक्शन के पर्चे की हैसियत से नही छापा गया है, जनता इस बात को भली भॉति समझ ले। बल्कि यह पर्चा जनता मे, हमारे वार्ड के एकमात्र लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता बाबू सालिगरामजी जायसवाल के अतर-हृदय की करुण पुकार सुनाने के लिये वितरित किया जा रहा है। जब मे वार्ड मे यह शोकभरी दुर्घटना हुई है पूज्य सालिगरामजी का मन आठो याम बडा दुखी रहता है। और उन्होने इस बात का कठोर प्रण किया है कि वे अब से अपने वार्ड मे इन सन् ४२ के गद्दारो की कलक छाया भी नही आने देगे। जनता से प्रार्थना है कि अपने प्यारे नेता के प्रण को पूरा करने मे पूरी-पूरी सहायता दे।"

पढ कर महिपाल ने पर्चा मोडा, सज्जन का पूरे पर्चे मे सिर्फ एक बात ने आकृष्ट किया जगदम्बासहाय की बेटी का नाम वनकन्या था। मिस वनकन्या ने उस दिन कहा था —"हत्या मेरे पिता ने की है, मैं जानती हूँ, मैं कहती हूँ। मेरी भाभी का अपराध सिर्फ यही है कि वे औरत है, और आर्थिक दृष्टि से स्वतत्र नही है।" सज्जन के सामने वनकन्या का उत्तेजित गोरा-सुडौल चेहरा नाच गया। इस पर्चे मे उसके ऊपर बडे घिनौने इल्जाम लगाये गये हैं। यह पर्चा सरासर झूठ से भरा है।

"यह पर्चा सरासर झूठ से भरा है।" सज्जन ने किसी और के बोलने से पेश्तर ही कहा। महिपाल से पर्चा लेकर जेब मे रखते हुए बाब छेदालाल की नजरे सज्जन को पैनी होकर भॉपने लगी, लाला मुकुन्दीमल का हुक्का चुप हो गया। बाबू गुलाबचद बोले—"खैर, इसमे तो कोई शक ही नही—"

"जी, मै खुद गया था जगदबासहाय के यहॉ। सब-इस्पेक्टर शुक्ला ने मुझे तमाम हकीकत बतलाई। दूसरी बात यह कि लगभग साढे ग्यारह-बारह बजे तक तो वह औरत—क्या नाम है उसका, जसोदा बीबी—होश मे नही आई थी। और डॉक्टर को कोई आशा भी नही थी कि उसे होश आयेगा। बल्कि, मै आपसे बतलाऊँ शुक्ला, परेशान हो रहे थे कि डाइग-डिक्लेरेशन न मिल सकेगा—"

"खैर, हो सकता है कि इसमे कुछ झूठ हो," लाला मुकुन्दीमल बोले—"अरे, इलक्शन के दिन है, परपोगण्डे मे झूठ भी बोला जाता है। पर इस बात का क्या सबूत कि यह कारस्तानी कमनिस्टो की नही है—"

बाबू राधेश्याम तैश खा गये, बोले—"साहब, आप कम्यूनिस्टो को क्यो बदनाम करते है ? जगदबासहाय साले को सब जानते है—महा का जलील आदमी—उसको इसमे देवतुल्य लिखा गया है। सालिगराम की महिमा बखानी गई है, और आप कहते है कि—"

"आप समझे नही इसमे क्या पालिसी है," कर्नल ने ठढे स्वर से बात उठाई—"भल्ले बाबू के पास मेहतरो-चमारो और रिक्शा यूनियन के सॉलिड दो हजार वोट है। भला सालिगराम जैसा घाघ ऐसा मौका छोड देता ? इस परचे से केमनिस्ट लोगो की

हवा बिगाड कर वो ये वोट फोडना चाहता है ।"

"आपका प्वाइट एकदम सच्चा है कर्नल साहब ! मगर ये वोट अब न तो कमनिस्टो को मिलेगे और न कागरेस को—देख लीजियेगा आप ।" छेदालाल ने कहकर चुटकी से सिगरेट की राख झाडी ।

मुकुन्दीमल दूर की सूझ जाने के अदाज मे गर्दन हिलाते हुए बोले—"ठीक कहते हो छेदालाल । ये सब वोट अब जनसघ को मिलेगे ।"

"अजी, आप भी कहाँ पहुँचे लालाजी ! मेहतरो में मुसलमान भी है, रिक्शे वालो मे भी मुसलमान है । उनके वोट भला सघ को कैसे मिल सकते है ? ये वोट तो, आप एकदम फैक्ट बात समझिये, या तो केमनिस्ट लेते, या फिर अब ये कागरेस वाले ले जावेगे । सालिगराम ने मौके पर ये पर्चा फेक कर अपना मतलब साध लिया अब चाहे आप उसको कुछ भी कहते रहिये ।" कर्नल ने अपना मतव्य प्रकट किया ।

"अब हम कहे—"

बाबू गुलाबचद की बात काट कर महिपाल बोला—"हम भी कुछ कहे गुलाबचद, ये इलेक्शन तो चार दिन का हुल्लड है । मगर इस हुल्लड मे समाज का इतना बडा पाप छिप जाय, ये आप लोग कैसे बर्दाश्त कर लेंगे ?"

"अरे भैया, पडितजी महराज, कैसी बात करते हो ?" लाला मुकुदीमल ने बात उठाई । इसी समय उनके घर से पानो की तश्तरी भी आ गई । नोकर ने आगे की कुरसी पर बैठे हुए कर्नल की तरफ पान बढाये । मुकुन्दीमल ने अपनी बात जारी रक्खी, कहा—"ये तो सनसार है, चलता ही रहता है ससरा । ये कोई नई बात भई है ? हम तो बचो बुड्ढे हो गये यही सब देखते-सुनते ।"

"अजी, मगर कब तक सुनियेगा और ? जब तक समाज मे यही सब पापाचार होता रहेगा तब तक आप के ये एलक्शन और पार्टियाँ सब बेकार है ।"

—"बेकार तो हुई है महाराजा, हम भी यही बात कहते है । जिसकी लाठी उसकी भैस । राज सदा ऐसे ही होगा चाहे कोई पार्टी आवै, और परजा भी ऐसी ही बनी रहेगी, पाप भी रहेगा, पुन्न भी रहेगा—ये तो सब भगवान के बनाये खेल है इन्हे कौन बदल सकता है ? इत्ते-इत्ते बड रिखी-मुनी हुइ गये, रामचद जी और सिरीकिशनजी ऐसे-ऐसे औतार भये, तब भी दुनिया न बदली साली—अब क्या बदलैगी ?"

"बोल लाल लँगाटे वाले की जै ? चौरासी घटे वाले की जै ! बजरग, तेरा ही सहारा है स्वामीनाथ !" कडाके की सर्दी मे भी उघाडे बदन, जनेऊ मे बँधा तालियो का बडा-सा गुच्छा कधे पर डाले हुए, सीना, मूँछे और गर्दन ताने हुए एक भक्तराज ने आकर अपना अल्मस्त स्वर गुँजा दिया ।

भक्त की मस्ती से अपने इश्क के लिये जोश और तश्तरी मे पान का बीडा उठाते हुए बाबू राधेश्याम बोले—"बदलेगी लाला । अब कम्युनिस्ट आकर बदलेगे । ये पूँजीवादी खेल अब नही चलेगा जादा दिन ।"

गुलाबचद हँसे, बोले—"यार, तुम तो दिन पर दिन कामरेड स्टालिन हुए जाते हो । अमाँ अपने बाल-बच्चो, नौकरी का भी ध्यान रक्खो यार—ये काग्रेस गवर्मेन्ट है ।"

"काई गवर्मेन्ट हो, बाबू गुलाबचद, दिल जले की आह किसी के रोके से नही रुक सकती।" महिपाल बोला—"मै कम्युनिस्ट नही हूँ, पर आप विश्वास मानिये जब यह सुनता हू कि रूस मे बिल्कुल बेकारी नही है, हर आदमी काम और रोटी पाता है तो मेरा भी जी चाहता है कि हिन्दुस्तान मे कम्यूनिज्म आ जाय।"

इसी समय पीछे की गली से एक औरत दौडती हुई आई। अठ्ठाइस-तीस की उम्र, चेहरा, आँखे कडी रेखाओ और बहक से भरी हुई होने पर भी अपने म्लानपन मे सब का ध्यान आकृष्ट करने लगी। युवती मजमे को देखकर एकाएक रुकी। गली मे पीछे से दौडती हुई आवाज आई—"पकडो! पकडो!!" युवती लाला मुकुदीमल के पास आकर खडी हो गई। लालाजी का कन्टोप सजा, मोटे शीशो का चश्मा जडा, सफेद मूँछो वाला श्रीयुत चेहरा कस गया। युवती ने चट से उनके मुँह पर थूक दिया और दूसरो की तरफ मुँह घुमाया ही था कि भगदड मच गई। सज्जन चबूतरे से उठकर उसकी ओर बढा। उन्नासी बरस के धनी-मानी लाला मुकुदीमल की आबरू मारे क्रोध के अधी हो गई। छटपटा कर गुलूबद से मुँह पोछते हुए उठे तो हुक्का यो धराशायी हुआ जैसे दगे मे शहीद गिरा हो।

सज्जन के पास पहुँचते ही युवती की आँखे उसके चेहरे पर सधी। गली से हाँफते स्वर और दौडते पैरो की ध्वनि निकट आ गई। युवती ने पीछे मुड कर देखा, सज्जन ने भी देखा एक पैसठ-सत्तर वर्ष के 'एरिस्टोक्रेट' दिखाव वाले सज्जन भाग चले आ रहे थे—"पकडना माई डियर! पकडना! थैक्यू-थैक्यू!"

"माई डियर!" कहकर युवती सज्जन से गुथने लगी। सज्जन सतर्क था दोनो कलाइयाँ पकडकर उसने कहा—"खबरदार!"

"अब नही करूँगी। अब नही थूकूँगी। प्लीज एक्सक्यूज मी। मुझे छोड दीजिये। मुझे मत मारिये।"

वृद्ध महाशय आकर खडे हो गये। वो बुरी तरह से हाँफ रहे थे। कर्नल, गुलाबचद मडप के पास खडे थे, छेदालाल चबूतरे पर अपने घर की दीवार से सट कर खडे थे, राधे-श्याम भी उनके पास ही थे, महिपाल अपनी जगह पर बैठा हुआ था, परसाद के थाल और फूलो की डलिया पर दोनो हाथ रक्खे बसतू माली घबराया हुआ मेढक की तरह उचका बैठा था।

वृद्ध सज्जन को देखकर मुकुन्दीमल बोले—"वकील साहब ये—ये आपकी बहू है? —वही पगली?"

"जैटिल मैन, यू आर माई फादर, माई ब्रदर, माई एवरीथिग।" सज्जन के हाथो मे बेबस बधी हुई स्त्री ने झलझलाई आँखो और करुणा से कापते स्वर मे गुहारना आरम्भ किया—"मुझे मेरे राजेश के पास पहुँचा दो। राजेश माई डार्लिग! फ्लावर आफ माई हार्ट! मेरा दिल जल रहा है। यहाँ! यहाँ! मेरा हाथ छोड दीजिये, मै दिखाऊँगी कहाँ जल रहा है। धकधक जलता है शमशान!"

"अच्छा-अच्छा, घर चल बेटा!" उसके ससुर वकील साहब बोले—"घर चल। तेरा कपडा सामान तो बाधे, तब तो चलेगी राजेश के पास!"

"नही, मैं वही जाऊँगी। माई डियर हज्बैण्ड इज कैप्टन ! वो मुझे साडियाँ देंगे, मोटर पर घुमायेंगे। मै जाकर अपने राजेश से चिमट जाऊँगी।" युवती ने सज्जन से सटने का फिर प्रयत्न किया। सज्जन ने उसकी कलाइयो को झटका दिया, कहा—"घर चलिये।"

"नही, मुझे वहाँ मत ले जाइये। यू आर जैन्टिलमैन। हेल्प मी। वहाँ गोपू है, वह अपनी वाइफ को चिपटाता है, किस करता है। मुझे पाखाने मे बन्द कर देते है। और ये बुड्ढा, मेरा ससुर, मुझे बेटी-बेटी कहता है। अम्मा जी भी मीठे मुह से मेरी बिटिया, मेरी रानी करती है। उन्हे भी तरस नही आता। रात मे दोनो बुड्ढे-बुढिया घुस-घुस के—"

सज्जन ने हाथ छोडकर तड से उसके मुँह पर तमाचा मारा, युवती सहम कर बकरी बन गई। अपने आवेश पर काबू पाते हुए, किसी हद तक झेपकर वकील साहब से कहा "मुझे माफ कीजियेगा !"

"नही बेटा ! नो-नो।" वकील साहब ने उपकृत् भाव से कहा।

"घर चलिये।" सज्जन के कहते ही युवती चुपचाप रोती और बुदबुदाती हुई अपने घर की तरफ चली। वकील साहब बगैर किसी को दुआ-सलाम किये सिर झुकाये, थके, खोये से आगे बढ चले।

कर्नल बोला—"सज्जन, मैं चलूँ तुम्हारे साथ ?"

"नही। आता हूँ अभी।" सज्जन ने बगैर मुँह फेरे ही जवाब दिया और चला गया।

१२

लौटने पर चबूतरा खाली देखकर सज्जन अपनी कोठरी की तरफ गया। देखा दरवाजे खुले थे।

अदर आया। वनकन्या बैठी थामस क्रेवन की 'दि स्टोरी ऑफ पेंटिंग' पढ रही थी। उसे देखकर सज्जन का कलेजा बेसाख्ता उछल पडा। फिर ध्यान गया कि वहाँ न कर्नल था, न महिपाल, जलेबी-नमकीन की छितनिया सामने बँधी हुई रखी थीं।

सज्जन ने खुशी मे अपनी हस्ती को भूलकर हाथ जोडे। वनकन्या ने मुस्कराकर हाथ उठाये, फिर बोली—"उस दिन आप अचानक मेरे घर पहुँच गये थे—"

"तो बदले मे आज आपने मुझे चौका दिया, क्यो ?" सज्जन बीच कोठरी में खडा हो गया—"और मेरे दोनो नालायक दोस्त कहाँ चले गये ? आपको मिले तो होगे ही यहाँ ?"

'किसी को' देखते ही हौसले सैलाबी बन गये थे, फिजूल-बेफिजूल लफ्जो की इफरात मे दोस्त सिर्फ 'नालायक' बन कर ही रह गये, यही क्या कम गनीमत है ?

"हाँ, उनमे से महिपाल जी को तो मैं जानती हूँ। और एक दूसरे महाशय भी थे। मैं जब आई तब दोनो यही थे।"

"कहाँ गए है ? आपसे कुछ कह गए है ?"

उँगली से छोटी मेज की तरफ इशारा करते वनकन्या बोली—"कुछ लिखकर रख गये है वहाँ ?"

सज्जन ने उठाकर देखा, बॉम्बे आर्ट सोसायटी के एक पुराने निमत्रण-पत्र वाला बुक पोस्ट लिफाफा बन्द करके रक्खा गया था, छपे पते के ऊपर महिपाल के हस्ताक्षरो मे लिखा था—'मेनी हैपी रिटर्न्स आफ दि डे ! (यह खुशी का दिन बार-बार आवे)"

सज्जन मुस्कराया—"नस-नस मे करन्ट की तरह दौड रही खुशी मुस्कुराहट मे सिमट आई—'बदमाश साले !"

लिफाफा खोला, पुराने निमत्रण पत्र की पुश्त पर महिपाल लिख गया था "जलेबी की कसम, य ब्राह्मण इस वक्त बिरहमन होकर जा रहा है। मेरा आज का जलेबी त्याग अपनी डायरी मे स्वर्णाक्षरो मे लिख लो। कर्नल ने भी स्वादेन्द्रिय को जीत कर अपने जन होने का प्रमाण दिया है। यह निरालापन—अकेलापन—तुम्हे बडे दिन के उपहार के तौर पर भेट कर चले। चचाओ का एहसान मानो, सआदतमद बनो, तुम्हारे हक मे हम फिलहाल मे यही दुआ करते है !"

नीचे कर्नल की कच्ची लिखावट मे अकित था "बेटा, केमनिस्ट न बन जाना।"

खिलखिलाती हुई खुशी को ऊपरी झुँझलाहट से ढककर, पत्र जब मे रखते हुए सज्जन वनकन्या की तरफ मुडा। किसी हद तक 'अति' तक पहुँचा हुआ गोरापन और पानीदार व्यक्तित्व वनकन्या की विशेषता थी। सज्जन की आँखो मे उस दर्शन का प्रभाव झलका, लहराई-झुँझलाई आवाज मे कहा—"ये मेरे दोनो दोस्त ऐसे नम्बरी मूर्ख है, कि आपसे क्या बतलाऊँ। जरूरी काम से जा रहे है यह तो लिखा, मगर यह न लिखा कि इन कम्बख्तो से अब भेट कहाँ होगी। मेरा सारा क्रिसमस डे बरबाद कर दिया।"

कहता हुआ सज्जन कन्या के पास ही एक चौकोर तकिये का सहारा लेकर बैठ गया। वह बोली—"वो दूसरे साहब ही महिपाल जी को अपने साथ ले गए है। बल्कि मै तो चाहती थी महिपाल जी रहे।"

आशिक का दिल काँसे के बर्तन की तरह खन्न से बज उठा। सज्जन ने पूछा—"महिपाल से कोई विशेष काम है आपको ?"

"नही तो। वैसे मैने उनकी बहुत-सी किताबे पढी है। वो मेरे प्रिय लेखक है।"

सज्जन के मन को यह न सुहाया। पर वह सतुष्ट-सा चेहरा बनाये सुनता रहा।

कन्या ने फिर मुस्कुरा कर कहा—"वैसे कई बार सोचा था, उनसे मिल आऊँ। फिर सोचा कि बहुत से बेजान-पहचान के लोग आप लेखको-कलाकारो आदि के पास आये दिन पहुचते रहते है, आप लोगो को बेजा घमड हो जाता है—इसीलिये न मिली। आज सयोग से वे यहाँ मिल गये तो—"

'तो उसमे क्या है। जिस वक्त इच्छा हो आपके प्रिय लेखक का कान पकडकर हाजिर कर दूँ। चलिये, अभी ही चले उसके यहाँ। व दानो घर ही गये होगे।"

वनकन्या ने बडे सयत भाव से कहा—"इस समय तो मै एक काम से आई हूँ—आपके पास।"

सुनकर सज्जन के 'मूड' मे तरावट आई। विषय को समझकर तुरत गभीर हुआ, पूछा "एबाउट दैट पैम्फलेट ?"

"हाँ।"

"मैने अभी-अभी मुहल्ले वालो के साथ सुना था। वह पर्चा सहेज कर रख छोडने के काबिल है। उसे पढकर आने वाली पीढियाँ हमारी जनरेशन के नाम पर थूकेंगी।"

"खैर, आने वाली बात छोडिये, मेरी तो अभी की समस्या है।" कन्या ने कहते हुए अपना विचार-मग्न सिर झुका लिया, दोनो पैरो के अँगूठे और उँगलियाँ आपस मे कैंची की तरह चलने लगे। सज्जन को नजर भरकर उसका चेहरा देखने का अवसर मिला भूरापन लिये बालो की दो घुँघराली लटे दोनो कानो पर लटक रही थी— बहुत सुन्दर लगी—बहोत ही सुन्दर—कितनी तकलीफ में है बेचारी! यह मेरे पास अपनी तकलीफ बँटाने आई है। कितना बडा आसरा लेकर आई है!

तनिक जोश मे आकर सज्जन ने कहा—"आप उसके लिये क्या कार्रवाही करना चाहती है ? मैं दिल से आपकी मदद करूँगा।"

कान मे कही शास्त्री जी का स्वर गूँज उठा—"परोपकार पुण्याय पापाय परपीडन।"

वनकन्या ने सिर उठाया, नजरो मे नजरे डालकर देखा जैसे परखा हो, फिर कहा—"अपनी बदनामी की चिता नही करती। स्वर्गीया भाभी के लिये न्याय चाहती हूँ।"

"पैम्फलेट मे दिया गया डाइग डिक्लेरेशन—"

कन्या रूखी हँसी हँसी, कहने लगी—"बाबू सालिगराम ने छलके हुए दूध से मुनाफा कमाया है। मेरे पिता को भला क्यो न अच्छा लगता! खून करके भी खूनी फाँसी के फदे से बेदाग उतर आया। यह स्वराज्य का न्याय है!"

सज्जन विचारमग्न हो गया।

कन्या फिर बोली—"मरते-मरते भी भाभी की देह से एक और सेवा ली गई। स्टेटमैन्ट पर उनका हाथ पकडकर दस्तखत कराये गये। उस दिन मैने जो अनुभव किया वह कभी नही भूलूँगी। एक मैजिस्ट्रेट, पुलिस, सब-इस्पेक्टर, एक डॉक्टर और एक राष्ट्रीय नेता—ये हमारे न्याय के प्रतीक सरासर न्याय का गला घोट रहे थे। मरने वाली आत्मा धरती से कैसा बुरा अनुभव लेकर गई होगी। आखिरी दम तक उसका अनुचित लाभ उठाया गया। "

"स्काउड्रल्स!"

"एलेक्शन की महज एक चाल के लिये इसानियत के खिलाफ इतना बडा षड्यन्त्र रचा गया। यह हमारी सभ्यता का ताजा नमूना है।"

मिनट भर के लिये कमरे में खामोशी भरी रही। कन्या ने फिर बात उठाई, कहा—"ये लोग तो खैर माने-जाने नीच है, मगर आज पार्टीवालो का रुख देखकर मुझे जो दुःख हुआ है, उसे बयान नही कर सकती।"

आँखो मे सवाल लेकर सज्जन देखने लगा। कन्या कहने लगी—"इस पर्चे के साथ सुबह भल्ले बाबू और दो-तीन साथी एक पर्चे का मसौदा मेरे पास लाये थे। उसमें भी इस अन्याय से ज्यादा पार्टी और भल्ले बाबू की इज्जत बचाने की फिक्र की गई थी। चाहते थे मै उस पर दस्तखत कर दूँ। मैने इनकार कर दिया। —मै पूछती हू, क्या इस स्त्री की इज्जत किसी भी पार्टी या राष्ट्र की इज्जत मे कम है? यह अन्याय क्या पूरे समाज के प्रति अन्याय नही?"

सज्जन खुद अपना दिल टटोल रहा था।

'सब अपना ही स्वार्थ देखते है सज्जन जी! मेरा तो मनुष्य जाति से ही विश्वास उठा जाता है।"

सज्जन कुछ न बोला, मौन उसकी सम्मति का सूचक था। कन्या ने अपना पर्स खोलकर एक कागज निकालते हुए कहा—"मैने एक छोटा-सा लेख लिखा है। आप से इतनी मदद चाहती हूँ कि इसे किसी अखबार मे छपा दे।"

सज्जन फुलस्केप साइज के चार पृष्ठ पढने मे तल्लीन हो गया। वनकन्या की दृष्टि कमरे मे इधर-उधर दौडती हुई बीच-बीच मे सज्जन के चेहरे की प्रतिक्रिया देखती जाती थी।

पढकर सज्जन ने गहरी निसाँस छोडी, कहा—"आपने बहुत अच्छा लिखा है। लेकिन मेरी राय है कि इसे अखबार मे न छापिये। एलेक्शन के हुल्लड मे यह लेख दब जायगा। इस वक्त तो पर्चेबाजी का ही मौसम है।"

"पर मेरे पास तो और कोई साधन नही है।"

"मै कर्नल से जिक्र करूँगा। वही जो महिपाल के साथ आपको यहाँ मिला था। अमीनाबाद मे विक्टोरिया मेडिकल स्टोर्स है न उसी का प्रोप्राइटर है। एलेक्शन के दाँव-पेच वह खूब समझता है। अभी हम लोग चलेगे—मै, आप, कर्नल, महिपाल सब बैठकर कोई राह निकालेगे। मेरा मतलब है कि जब तक यह लेख एलेक्शन के तमाम हुल्लड से ऊपर उठकर नही आयेगा तब तक पब्लिक पर उसका कोई असर नही पड सकता।"

"मै जीवन भर आपका उपकार मानूँगी।"

सज्जन को बात अच्छी लगी, फिर इस अच्छेपन मे अपनी छिपी इच्छा की झलक देख लेने से उसे अपने ऊपर शर्म भी आई, बोला—"मुझे अपनी नजरो मे इतना बुरा न मानिये। यह काम जितना आपका है, उतना ही मेरा भी—हर इसाफ-पसद मनुष्य का है। फिर कौन किस पर उपकार करेगा और कौन एहसान मानेगा?"

वनकन्या की नजरे शका और आदर का मिश्र भाव लिये चुपचाप नीची हो गई।

नाश्ते पर सज्जन की दृष्टि पडी, छितनिया खोलते हुए उसने कहा—"आइये कुछ नाश्ता हो जाय। जलेबियाँ तो एकदम ठडी हो गई है, मगर खैर।"

पुडियाँ खोलते हुए अखबारी कागज की सरसराहट होती रही। सज्जन ने फिर पूछा—"मेरा खयाल है, चाय जरूर चलेगी इसके साथ—क्यो?"

"मै बनाती हूँ।" कहकर कन्या उठी। कोने मे छोटी मेज पर चाय की सामग्री

रक्खी हुई थी।

सज्जन बाजार से दूध लाने चला गया। कर्नल के घर से सीधे शास्त्रीजी के यहाँ चले जाने के कारण वह दूध की बोतल अपने साथ नहीं ला सका था।

चाय पीते हुए सज्जन ने बात उठाई, कहा—"आप जब यहाँ आई है उससे कुछ पहले एक सोशल सर्विस का अनुभव हुआ था मुझे। यहाँ गली मे आगे चलकर एक वकील साहब रहते है। काफी बुजुर्ग है, बातचीत मे बडे इटरस्टिंग लगे। हा तो, उनके छोटे लडके की बहू पागल है। आज एकाएक गली मे निकल आई थी, काफी उत्पात मचा दिया। कट्रोल मे लाने के लिये मैने उसे तमाचा मारा—अपने होश म पहली बार किसी औरत पर हाथ उठाया बडी देरी तक मेरी हथेली मे उस तमाचे की झनझनाहट होती रही।"

"कैसे पागल हो गई वो?"

"आपकी भाभी ने एक किस्म का अत्याचार सहा, इस औरत ने दूसरी किस्म का। अत भी एक-सा होकर दो रूपो मे सामने आया—बस यही फर्क है।" सज्जन के स्वर मे वेदना और विचार दोनो का गहरा स्पर्श था। कन्या उसे पूरे मन से देख और सुन रही थी।

सज्जन ने रुककर फिर नई साँस मे कहा—"वकील साहब के तीनो बेटे ऐसे नसीबेवर उठे कि अब उन्होने माँ-बाप से अपना सबध भी उतनी ही दूर का कर लिया है। बडा लडका इग्लैण्ड डॉक्टरी पढने गया था, वही किसी काउण्टी मे प्रैक्टिस खरीद कर जम गया, अपने बीबी-बच्चो को भी वहीं बुला लिया। अब उससे तो जानो कोई मतलब ही नही रहा, साल-छ महीने मे कभी एकाध चिट्ठी आ जाती है। दूसरे साहबजादे आई० सी० एस० है, वो भी अब इस गली-मुहल्ले और दकियानूस माँ-बाप से भला कैसे सबध रक्खे? हाँ, कुछ रुपयो की मदद जरूर करते रहते है। तीसरे साहबजादे मिलिटरी मे है, यानी कि मिजाजी तोप-बदूको के मालिक, कैप्टेन सो-एण्ड-सो। उनका अपनी सगी चचेरी बहन से रोमियो-जूलियटाना रिश्ता था जिसने प्रोग्रेस करके शादी की सूरत इख्तियार कर ली। और ये औरत करीब सात-आठ साल से कडैम्ड माल की तरह यहाँ पडी है। वकील साहब अपने बेटे की कलक-करतूत से इतने डर गये, कि वो और उनकी बुढिया सदा बडे नर्वस टैन्शन के साथ अपनी बहू पर कडी निगरानी रखने लगे। नतीजा ये हुआ कि मन की चाहते फ्रस्ट्रेट होते-होते आज इस नौबत पर पहुँच गई।"

कहकर दो पल तक विचारलीन दृष्टि से सज्जन कन्या की तरफ देखता रहा, फिर एक घूँट में ठडी चाय का आधा प्याला पीकर प्याला रख दिया।

कन्या ने निहायत भोलेपन और परेशानी के साथ सवाल किया—"मगर होगा क्या? ये सब कब तक चलता रहेगा? इसका कोई अन्त नही है?"

"जरूर है। जरूर होगा।"

"कैसे होगा, यही मेरी समझ मे नही आता। आज सबेरे से मुझे एक नई चिंता परेशान कर रही है। मैं नही जानती कि आपके पोलिटिकल व्यूज क्या है—मग

मेरा कम्यूनिजम से बौद्धिक लगाव है, ये तो आप भी जानते है।—"

"खैर होगा। मै इज्मो की नजर से किसी स्त्री-पुरुष को नही देखता—"

"मैंने इसलिये कहा कि कम्यूनिस्ट कहलाना आजकल भयानक माना जाता है, हालाँकि उसमे भी सैकडो-हजारो हमारे आपके जैसे ही लोग है। खैर, तो भल्ले बाबू को मै करीब-करीब तीन-चार बरसो से जानती हूँ। वे बहुत ज्यादा पढने-सोचने वाले तो नही फिर भी पढते-सोचते रहते है। वैसे वे प्रैक्टिकल वर्कर है। और मै सच कहती हूँ, लोग उन्हे चाहे जो कहे पर वे बडे खरे आदमी है, मै उनका आदर करती हूँ। पर आज सुबह उनकी बात सुनकर मुझे ऐसा लगा कि जैसे मै किसी नये आदमी को देख रही हू।"

सज्जन बुद्धिमान की तरह हँसा, बोला—"मै आपके पोलिटिकल व्यूज पर आघात नहीं पहुचाना चाहता था, मगर इसमे जरा भी सदेह नही कि कम्युनिस्ट कभी जिम्मेदार आदमी नही होते।"

"आपकी लॉजिक भ्रान्त है!" वनकन्या का ठेठ आरोप सुनकर सज्जन के मन को धक्का लगा। वह सम्हलकर बैठ गया। कन्या कहने लगी—"एक बात जो अरसे से मेरे मन मे चुभती थी, वह आज की घटना से मेरा समाधान बन रही है। आज एकाएक मुझे ऐसा लगा कि जैसे फुटबाल का मैच होता है न, राजनीतिक पार्टियो का सघर्ष भी हुबहू वैसा ही है। जनता फुटबॉल है, मैच उसी के नाम पर हो रहा है, पोलिटिकल पार्टियो के खिलाडी ठोकरे भी उसी को लगा रहे है। ये इलेक्शन हमारी जनतान्त्रिक समाज-व्यवस्था का यही रूप दरसा रहे है।"

सज्जन बडे गौर से सुन रहा था।

कन्या कहती रही—"भल्ले बाबू जो स्टेटमैन्ट बनाकर लाये थे उसमे मेरे पिता का पाप और भाभी का अत भी प्रोपेगैण्डा की शक्ल में ही सामने आया। उसमे केवल कम्युनिस्ट पार्टी और इलेक्शन ही का महत्त्व था। उसके खिलाफ झूठा प्रचार क्यो होता है इसकी पोल भी बडी जोश के साथ खोली गई थी।—मैंने पूछा ठीक यही जोश आपको एक स्त्री के साथ होने वाले अत्याचार पर क्यो नही आया?—कहने लगे, पार्टी इन्ही आदर्शो को लेकर चल रही है। जब पार्टी जीतगी तो समाज भी बदलेगा। आपसे सच कहती हूँ, मुझे तसल्ली नही हुई। मुझे ऐसा लगा कि समाज को ये बडे जनरल टर्म्स मे देख रहे है। जिस व्यक्ति की पीडाओ का सामूहिक रूप मे दर्शन करके ये राजनीतिक सिद्धान्त बने है, उसकी अनुभूति, उसकी तडप भी अब हमारे मन से निकल गई है। हमारी नजर अब सिर्फ पोलिटिकल रह गई है—सिर्फ पोलिटिकल—कोल्हू के बैल की तरह आदत के कारण चक्कर काटते चले जा रहे है, काम कुछ भी नही रहा।"

"आप सच कहती है। बिलकुल मेरे मन की बात कर रही है। मै पॉलिटिक्स को हेट करता हूँ।" कहते हुए सज्जन ने केतली उठाई, देखा, कहा—"बातो मे चाय एकदम ठडी हो गई। दुबारा बनाऊँ?"

"आपके लिये बनाऊँ—मै तो अब—"

"हाँ, मन तो मेरा भी दूसरा हो गया। देखिये ये चाय-काफी सिगरेट भी

फुरसत के शौक हैं। दिमाग जब पूरी तौर पर किसी भावना से जुड़ा रहता है, तब ये तमाम चीजें झूठी साबित होती हैं।" कहते हुए सज्जन ने जेब से सिगरेट केस निकालने के लिये हाथ डालना चाहा।

कन्या ने चट-से टोका—"हाथ धोइये। चिपचिपाते नही होगे जलेबी से।"

सज्जन ने झेंप भरी मुस्कुराहट से उसे देखते हुए बाये हाथ से सिगरेट केस निकाला और कन्या से बोला—"ये सब खत्म तो कर डालिये अब। और, इफ यू डोन्ट माइन्ड, चाय एक बार बना ही डालिये। अरे अरे खा तो लीजिये, फिर इतमीनान मे बनती रहेगी चाय।"

"नही, बस अब खा चुकी।"

"ॲंह। ये नही चलेगा। अगर अन्याय को मिटाना है तो खुद अन्यायी न बनिये, पुरुषो से बराबरी चाहती है तो आधा नाश्ता भी खत्म कीजिये!" सज्जन ने बाकायदा ऑंखे-वॉंखे निकाल कर बडा तेहेदार अभिनय किया।

कन्या हॅंस पडी, कहा—"अपने मौके पर न्याय मॉंगते है, मै कभी न्याय मॉंगूंगी तो आप साफ इनकार कर जायेंगे।" कहते हुए उसकी आवाज मे नारी का मान गूज उठा, पुतलियॉं गुलाबी लाज के कच्चे धागे मे बॅंधी अपने आप कानो तक खिच गई।

सज्जन एक बार फिर रीझ उठा, उसने बराबर गौर किया है कि कन्या के मनोभाव सीधी रेखाओ और बिंदुओ की तरह उसके चेहरे और ऑंखो मे आ जाते है, उसके तमाम रग सादे, मगर जानदार हैं।

सज्जन ने मुस्कुराते हुए कहा—"बगैर परखे आपने मेरे खिलाफ इकतरफा डिगरी—"

अपनी दम भर की बहक को रोककर बात सम्हालते हुए कन्या ने कहा—"पर्टिकुलरली आपको नही कहा, मेरा मतलब तमाम पुरुषो से है।"

"देखिये जनाब, अगर आपने ये जातिवाद फैलाया तो मेरी-आपकी लडाई हो जायगी। औरत क्या कम हत्यारी होती है? अजी, मैंने औरतो को चट्टियो से अपने मर्दो की पूजा करते देखा है—"

कन्या हॅंसी।

"अभी कुछ रोज पहले एक उर्दू नाविल 'उमरावजान अदा' पढ रहा था। उसमे एक बूढे मियॉंजी का जिक्र है जिन्हे उनकी बिलवॅंड, एक तवायफ, अपने दूसरे प्रेमियो की खुशी के लिये उन्हे बार-बार पेड चढने-उतरने का हुक्म देती थी—"

कन्या फिर हॅंसी, हॅंसते हुए कहा—"वो कम्बख्त था ही इस लायक। खैर, आपकी बात माने लेती हूॅं। औरते भी मौके पर बडी जल्लाद साबित हुई है।"

नाश्ता खत्म हुआ। पत्ते-कागज समेट कर बाहर कूडे के कनस्टर मे फेके गये, केतली साफ कर दुबारा पानी चढाया गया।

सज्जन ने गद्दे पर इत्मीनान से बैठते हुए सिगरेट निकाली, सुलगाई, और एक कश खीचकर दुनिया की सारी बादशाहत अपने कलेजे मे भर ली। सज्जन के मन मे इस समय अजीब उत्साह था। एक वनकन्या की उपस्थिति से यह छोटा-सा कमरा भरा-पूरा

ससार बन गया था । वह ईजल पर रक्खे अधूरे चित्र को देख रही थी ।

सहसा सज्जन ने पूछा—"ये वनकन्या नाम खुद आपने रक्खा था या आपके पेरेंट्स ने ?"

कन्या मुस्कुराई, कहा—'क्यो पूछते है ?"

सज्जन ने मुँह मे सिगरेट दबाये लापरवाही दिखलाते हुए जवाब दिया—"ऐसे नाम हमारे यहाँ कामन नही । कब बदला आपने ? हाई स्कूल का फार्म भरते वक्त ?"

"'आप तो बिलकुल ज्योतिषी हो गये ।"

"खुद आपको सूझा या किसी ने—"

"खुद मैंने ही सोचा था—कैसा है ?"

"हूँ-हूँ, अच्छा है ! बोलचाल की भाषा मे कहा जायगा—जगली लडकी !" दोनो हँस पडे ।

कन्या ने तस्वीर को ओर देखते हुए फिर पूछा—"ये सत्यानारायण की कथा है न ? बहुत अच्छी बनाई है । ये तो मराठी वातावरण है । कहाँ स्कैच किया था ?"

"कोल्हापुर मे ।"

"आपको इन 'सो काल्ड' गरीब-गुरबो के साथ बैठने मे हिचक नहीं होती, यह देखकर मै बहुत ही आनन्दित हुई ।"

"माफ कीजियेगा, आपके आनन्द मे विघ्न डालूँगा—मुझे झिझक तो होती है"—

"तब फिर ?"

"मगर तबियत आने पर हिचक को तोड भी देता हूँ ।"

"अगर आप इस हिचक को हमेशा के लिये तोड सकते है तो मेरे साथ आइये । एजेण्टा-एलोरा तो बहुत बना चुके आप, अब इन जिदा गुफाओ के चित्र भी बनाइये । ये जो हमारे महान्-महान् नेता लोग है—जो दुनिया को आजाद करने का दम भरते है—इन्हे जरा मालूम तो हो कि उसकी जनता की असली तस्वीर क्या है !" कन्या के चेहरे पर जोश की तमतमाहट आ गई ।

उसकी बात सुनकर सज्जन का मन पुलक उठा, बोला—"आप मुझे इस्पायर कर रही है, कन्याजी ! मै इसी मिशन को लेकर यहाँ प्रयोग करने आया हूँ । लेकिन मै आपकी इस उपयोगी बात से सहमत नही कि एजेण्टा-एलोरा के चित्र बनाना उपयोगी नही है ।"

"मै ये नही कहती—"

"एजेण्टा-एलोरा को देखकर अगर सही इस्पिरेशन लिया जाय तो इसान की पूरी जिदगी को सुन्दर और उपयोगी बनाने के लिये वही अकेले बहुत काफी है—।"

"मै—"

"मै सच कहता हूँ आपसे, जब इन गुफाओ को देख रहा था एकाएक मेरे सामने मिश्र के पिरामिडो की तस्वीर आ गई । जरा इन दोनो को कट्रास्ट मे देखिए—एक ओर तो हमारे इजैप्शियन पुरखो ने पहाड के पहाड खडे कर दिये है, अपनी शक्ति और प्रतिभा से वे आज भी हमारी नजर और बुद्धि को चकाचौध कर रहे है लेकिन इन बनावटी

पहाडो का इस्तेमाल किसलिये किया गया ?—मुर्दों के लिये ! अब दूसरी ओर देखिये, हमारे हिन्दुस्तानी पुरखो ने ऊँचे-ऊँचे पहाडो को पोला करके उन्हे अपनी खूबसूरती से भर दिया। और सबसे बडी खूबसूरती तो यह है कि उन्हे पढने-पढाने के लिये इस्तेमाल मे लाया गया, न कि किसी राजा फरऊन के ऐश-आराम या मुर्दे दफनाने के लिये। इन दोनो कल्चरल दृष्टिकोणो मे कितना फर्क है ! हम कला को अपने यहाँ जिदगी के साथ-साथ बंधा हुआ पाते है। हमारी कला मे चमत्कार खूब है, मगर वह हमे चौकाता नही, बल्कि मन को प्रकाश देता है ! वह खूबसूरती हमारे मनो को अपने निकट खीच ले जाती है—और उन्हे भी उतना ही खूबसूरत बना देती है।"

सज्जन की बातो का प्रभाव कन्या के चेहरे पर चित्र के तरह अकित था। खुद सज्जन भी अपनी बातो के प्रभाव से बँधा हुआ चुप हो गया।

कुछ रुककर कन्या बोली—"आपकी बात ठीक है। अपने अनुभव की यह बात कह कर आपने आज मुझे एक ऊँची कसौटी दी है। आई शैल नैव्हर फॉरगैट इट ! मगर एक बात मेरी समझ मे नही आती—इस देश मे एक तरफ तो ये ऊँचे-ऊँचे दर्शन, साहित्य, शिल्प-कला,—इन सबकी अटूट कडियाँ बिछी हुई है, और दूसरी तरफ ये हमारे घरो के सत्यनारायण, ये ढकोसले भरी रस्मे, मेरी भाभी और आपकी उस पगली जैसी औरते, मेरे पिता, मेरे भाई—

"आपके भाई ? आपके भाई ने क्या किया ?"

सज्जन के प्रश्न से कन्या की बात का बहाव झटके के साथ रुका, न कहने की इच्छा लिये फीकी मुस्कुराहट के साथ उसने धीमे स्वर में कहा—"मेरा घर मेरे लिये सच्चे अर्थों मे यूनिवर्सिटी है—क्या कहूँ। मेरे भाई एक अजब मजबूरी से बँधे हुए है। कैसे बताऊँ आपको (चेहरे पर लाज की लाली आ गई, आँखे नीची हो गई, फिर साहस बटोर कर नजरे मिलाते हुए) मगर आप चूँकि समाज को देखने निकले है इसलिये एक केस की तरह ही बेझिझक कहूँगी—मेरी ये भाभी 'पई' है।"

कन्या के चेहरे का भाव देखकर सज्जन कुछ और सुनने की आशा कर रहा था, इसके विपरीत दूसरी भाभी के सबध मे सुन कर और वह भी एक अजीब शब्द सुनकर चौंक गया, पूछा—"पई क्या—?"

कन्या ने बहुत सम्हल-सम्हल कर कहना शुरू किया—"प्रकृति का एक मजाक ! ऐसी औरत जाहिर मे औरत लग कर भी असल में बेमानी होती है।"

"ओह !—हूँ !—यानी कि हिज—"

"जी हाँ, फर्क यही है कि उनका ऊपरी हिस्सा नार्मल औरतो की तरह पूरी तौर पर डैव्हलप्ड होता है।"

"तब फिर ये शादी कैसे हो गई ?"

"जैसे बहुत से धोखे होते है। अम्मा-बाबू को पद्रह हजार का दहेज मिला, दादा कुछ न पाकर भाभी की हड्डियाँ धुनते है। मैं आपसे क्या बताऊँ ? भाभी की तकलीफ देखी नही जाती। इसमे सदेह नही कि दादा को जॅनुइन शाक लगा है। वो दिल के बडे भोले और अच्छे है। मगर यह कि उन्हे फिट्स आते है। और जब फिट्स आते है

तो राक्षस हो जाते हैं। एक दिन रात मे जब वो सो रही थी तो उसकी चोटी में आग लगा दी। एक दिन उसे तडके ही उठाकर वो गोमती नहाने लिवा ले गये। वहाँ उससे कहा चलो, हम-तुम दोनो जने सिर मुडवावें, और फिर साथ-साथ गोमती जी में डूब मरें—"

"अरे!"—

"वहाँ उन्होने एक सीन क्रियेट करने की कोशिश की। जब भाभी ने मना किया तो वह नाराज होने लगे। भाभी ने फौरन ही समझ से काम लिया, कहा कि पहले तुम मुडन कराओ, फिर मैं करा लूँगी। इस तरह दादा सिर घुटवाने बैठे, जब उनका सिर झुका हुआ था तब ये चुपके से उठकर चल दी। रास्ते मे कही से रिक्शा करके हाँफती-काँपती घर आई।—"

"च्—च्—च्।"

"मैं आपको क्या बताऊँ? उनके कारण घर मे कितनी-कितनी कलहे होती हैं। और और सच कहती हूँ बडी शर्म आती है मेरे घर मे एक ऐसा विशस्-सर्किल-सा बन गया है कि मेरी ताई और माँ मे सौत का रिश्ता चलता है। मेरी ताई ने अपना पक्ष मजबूत करने के लिये दादा की भली बनकर उनसे अपनी विधवा बहू का नाजायज नाता जुडवाना चाहा। मेरे भाई एक जगह पर बडी धार्मिक निष्ठा के हैं, मगर वो झकोले खाते हुए भी विवाह का प्रस्ताव लेकर बढ रहे थे। इसमे शायद मेरी भाभी की भी मर्जी थी। इन दि मीन टाइम, मेरी माँ ने ताई की चाल जान ली। वे चरित्र की साफ होने पर भी पॉवर की भूखी है। उन्होने ही मेरे पिता को उकसा कर उनसे ये जबर्दस्ती करवाई थी। केवल मेरी ताई को सबक सिखाने के लिये—अपना बदला लेने के लिये।"

एक गहरी साँस लेकर सज्जन ने कहा—"मिस कन्या, आइ सिम्पैथाइज विद यू!"

"धन्यवाद! पर मुझे सहानुभूति की जरूरत नही। मैं अपनी लडत अपने आप लड लेती हूँ। मेरा ये तमाम कहने का आशय सिर्फ यही है कि एक तरफ जहाँ हमारी सस्कृति ने ये अजन्ता, एलोरा वगैरा जड पहाडो मे चेतना भरी, वही किसी सिस्टम की खराबी से चेतन आदमी को जड पत्थर बना दिया। हमारे इतने अच्छे-अच्छे आदर्श समाज मे एक जगह अपना सच्चा असर रखते हुए भी सिमट कर नई शक्ति नही बन पाते। वजह क्या है? व्यक्ति की इतनी सच्ची निष्ठा होने पर भी हमारा नेशनल कैरेक्टर कुछ भी नही?"

सज्जन को बुरा लगा। बोला—"मैं यह नही मानता कि हमारा नेशनल कैरेक्टर कुछ भी नही। जिस नेशन में चरित्र बल नही होता उसमे व्यास, बाल्मीकि और कालि-दास जैसे पोएट्स नही होते। यह तमाम शिल्प के जो बढिया-बढिया नमूने देखने को मिलते हैं वह न दिखाई देते। हमारी हिस्टरी मे अशोक जैसा राजा आता है, बुद्ध, महावीर, गाँधी जैसी पर्सनाल्टीज आती हैं। आपको शायद अपने घर के वातावरण से सारा हिन्दुस्तान बुरा दिखाई पडता है। मैं ऐसा नही मानता। मेरे सामने अपनी माँ की मिसाल है—और भी दुनिया मे बहुत से लोग मिलते हैं। बल्कि आज सबेरे ही

मै यही पर, गुन्नोमल के हाते मे पडित शिवनाथ जी शास्त्री रहते हैं—बहुत बडे स्कॉलर हैं, उनमे मिलने गया था। उनसे मुझे जो अपने ट्रेडीशन्स की बाते मालूम हुईं तो मै दग रह गया। समझ मे नही आता कि कैसे आपकी बात को सच मान लूं!"

चाय का प्याला बढाते हुए कन्या बोली—"मे इसमे इनकार नही करती हूँ, मगर यह जरूर करती हूँ कि हमारे सामाजिक ढाँचे मे जरूर ही कोई ऐसी विरोधी धारा भी बह रही है जो इस तमाम नैतिक सुन्दरता की आँख फोड देती है। शक्कर कम तो नही है ?"

"नो, थैंक्स! बल्कि जरा चसक ही है। आपने शायद दो चम्मच डाली ? खैर! मिठास को एनज्वाय कर रहा हूँ।"

मजाक को समझते हुए भी कन्या उसे नजरअन्दाज कर गई। बोली—"देखिये, जैसे यह सत्नारायण की कथा है, इसमे क्या है। करोडो घरो मे बडी श्रद्धा से इसकी कहानी पढी जाती है। इसमे कौन-सा मॉरल है। मैंने तो कथा पढी है। उसमे न तो सत्य है और न नारायण।

सज्जन बनावटी झुंझलाहट के साथ बोला—"भई, हरदम यह कम्युनिज्म हमें अच्छा नही लगता।" (सहसा कुछ ध्यान आ जाने से) "ओ, मगर आपने कुछ खाया नही होगा अभी।"

"क्यो, नाश्ता तो किया है अभी-अभी।"

"अजी, उससे क्या होता है ? और अब दो बज रहे हैं। इतनी देर तक आप खाना न खाये तो आपके घर मे कोई नाराज नही होता ?"

चाय पीने के बहाने कन्या चुप रही। चेहरा कस गया। फिर गभीर भाव से कहा —"पहले नाराज होते थे। परसो से घर का रिश्ता ही न रहा।"

आँखो में सवालिया निशान लेकर सज्जन उसे देखने लगा।

कन्या बोली—"मैं घर से निकाल ही दी गई हूँ।"

"यह कब ?"

"परसो ही!"

"कोई खास बात हुई ?"

"हाँ-आँ-आँ- बात खास तो जरूर हुई। बाबू सालिगराम की सलाह से अपन बयानो मे मेरे तमाम घर वालो ने मेरे फादर के चरित्र को देव तुल्य बतलाया। सब ने भल्ले बाबू और भाभी के ऊपर ही आरोप लगाया। मैंने पुलिस मे ऐसा बयान देने मे इन्कार कर दिया।"

"स्काउन्ड्रल्स! तब फिर आप इस वक्त रहती कहाँ है ? कम्युनिस्ट पार्टी—"

"जी नही। परसो रात से कल दोपहर तक अपने एक दोस्त के यहाँ थी। फिर उसके घर वालो को मेरे रहने से आपत्ति हुई फिर वहाँ से अपनी एक इप्टा (इडियन पीपुल्स थियेटर) की कॉमरेड के घर चली आई। देखिये अब कहाँ जाती हूँ, क्या होता है ? फिलहाल तो सब कुछ अँधेरे मे है।" दबाते-दबाते भी गहरी निराशा निश्वास बन कर फूट पडी।

सज्जन भावोत्तेजित होकर बोला—"नही, आप किसी तरह की तकलीफ क्यो उठाइयेगा । मेरे इतने मकानात है

"मगर आपके मकानो मे मै नही ठहर सकती ।"

"क्यो ?"

"बात क्यो तक भी सोचने से दूर की है ।" कन्या ने दृढता के साथ कहा ।

सज्जन गभीर हो गया । बोला—"मैं आपकी मानसिक हालत को समझता हूँ । आपने अभी तक जो कुछ देखा है उससे हर सच्ची समझदार औरत को आपकी तरह ही पुरुष पर शक और नफरत करने का हक है । मै पुरुष हूँ, बुरा भी हूँ, मगर—विद योर परमिशन मिस वनकन्या, मुझमे कुछ अच्छाइयाँ भी है ।"

नीची नजरो मे पलक उठाकर एक बार उसे ताकते हुए कन्या मुस्कराई । कहा—"ये न समझती तो आज आपके पास मदद माँगने भी न आती ।"

"अच्छा, तब उठिये । हम लोग चलेगे ।"

"क्यो ?"

"मेरे घर । आज महात्मा ईसा का जन्म दिन है । मेरे यहाँ आपकी दावत है ।"

"मै खिलौनो की नुमाइश देखने जाऊँगी अब ।"

सज्जन ने कहा—"हाँ-हाँ, मै भी साथ चलूँगा बल्कि महिपाल और कर्नल को भी ले लेगे ।"

"सज्जनजी, मै—"

"देखिये अब इस प्रस्ताव पर मै एक न सुनूँगा आपकी । आज की दावत तो आपको स्वीकार करनी ही पडेगी । क्या अभी तक आप पुरुषो के साथ खुले मन से नही उठती-बैठती थी ?—तब फिर ?— अलावा इसके आपको इस पैम्फलट के लिये कर्नल से मिलना ही है ।"

कन्या के साथ बाहर जाते हुए सज्जन ने जो सतोष अनुभव किया वह अनेक स्त्रियो का अनुभव होने के बाद भी उसके लिये नया था, पहला था । वह नारी का आदर करना सीख रहा था ।

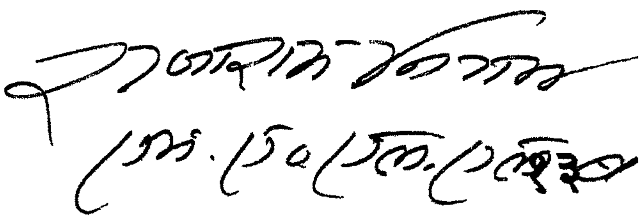

नये साल के खाते मे सन् '५१ की एक खबर 'श्री रोकड बाकी' की तरह आई । चुनाव के फस्ली हो-हुल्लड मे भी आधुनिक डिमाक्रेट समाज की यह 'शाश्वत' खबर ३१ दिसम्बर के अखबारो मे छप कर शहर लखनऊ की इसानियत को चौंका गई थी ।—

नगर के अतिम छोर पर, रेलवे लाइन के किनारे एक लाश गडी हुई पाई गई ।

कुत्ते उसे बाहर घसीट रहे थे। उस दिल कँपान वाले दृश्य पर जब लडको की नजर पडो तो तमाम शहर मे शोर मच गया। पच्चीस के लगभग आयु को एक युवती आसमानी रग की वायल की साडी और प्लास्टिक की चूड़ियाँ पहने हुए दुर्गंधभरी लाश बनकर शायद दो-तीन रोज से उस गड्ढे मे दफन थी, उसके पैर का एक सफ़ेद सैंडिल भी वही पड़ा था।

नये साल के पहले इस सडनी जवानी के चर्चे नगर के गली-बाजारो म चलने रहे। इधर-उधर कत्ल, लूट और बलात्कार के कई काड जनता की नजरो मे बार-बार आ चुके है इसलिये चुनाव की आबहवा मे यह खबर भी काग्रेस सरकार की शिकायत बनकर अमरबेल की तरह हर तरफ फैल गई। अभी तक पुलिस यह पता नही लगा सकी है कि युवती कौन थी। कोई उसे हिन्दू बतलाता है, कोई मुसलमान। कोई कहता है कि औरत इसी शहर की थी, कही यह सिद्ध किया जा रहा है कि रेल मे गला घोट कर या जहर खिलाकर मारी गई है। हत्या के कारणो पर भी कयास भिडाये जा रहे है, जितने मुँह उतनी बातें है। बस बाते है और काम है। नये वर्ष का नया दिन भी पुराने वर्षो के हर दिन की तरह हर व्यक्ति की छाती पर साँप बनकर लहरा रहा है। जनसाधारण का जीवन आर्थिक थपेडे खाते-खाते बालू की तरह बिखर गया है। मुनाफाखोर सन् '५२ के नये दिन पर भी बालू से तेल निकालने मे उसी तरह जुटे हुए है जैसे अब तक जुटे थे। हर तरफ नोन-तेल-लकडी का रोना है, ऊपर से चुनाव की सरगर्मी है, हर वार्ड और गली मुहल्लो मे पोलिटिकल पार्टियो के लाउड स्पीकर अपनी-अपनी सभाओ के शोर से कानो के पर्दे फाड रहे है, मै-तू-वह सभी आपसी कीचड उछाल के पवित्र काम मे प्राणपण से लगे हुए है।

नये साल के नये दिन की रात इस तरह जगमगा रही है, मानो कोई सताई हुई वेश्या अपने मन की पीडा को मन ही मे कसकर पेट के गाहको को रिझाने की खातिर पूरे साज-सिगार के साथ अपने छज्जे पर बैठी हो।

बाजार उन आबरूदार लोगो के घरो की तरह की चहल-पहल और रौनक से भरा है जिनमे कर्ज लेकर शादी-जनेऊ आदि जीवन के उत्सव मनाये जा रहे हैं—जहाँ ऊपरी तडक-भडक, हँसी-खुशी और कहकहो के अदर चिन्ता की चिता धू-धू कर जल रही है।

चौराहो के चारो ओर बसे, मोटरे ताँगे-इक्के, रिक्शे साइकिले और पैदल भीड अनवरत क्रम मे बँधी हुई इस तरह गतिमान है जैसे किसी दिवालिये सेठ की मिल चल रही हो। मिल की गडगडाहट से बाहर वालो को गति का एहसास होता है, वह समझते है कि नया उत्पादन हो रहा है, तब निर्माण हो रहा है, परन्तु अन्दर बहुत कम उत्पादन करके ज्यादा एनर्जी बरबाद की जा रही है—केवल सेठजी की साख कायम रखने के लिये। मगर ढोल मे पोल लेकर पूँजीवादी विकास का यह लक्ष्यहीन क्रम अधिक से अधिक भी चलेगा तो आखिर कब तक ? अब उसमे दम ही कितना रहा है ?

जलपान-घरो, हलवाइयो और तम्बोलियो की दूकानो मे रेडियो से खबरें आ रही हैं बाजारू सडको से गुजर कर घरेलू सडको पर बढते हुए रेडियो का स्वर अटूट

क्रम से सुनने वालो के कानो मे पहुँचने लगता है। किसी-किसी सडक पर तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक, कदम-कदम पर हर घर से आती हुई रेडियो की आवाज समाज के 'एक स्वर' की तरह गूँजती हुई मिलती है। खेल-कूद की खबर आ रही हे "कलकत्त मे होनेवाले भारत और इंग्लैण्ड के तीसरे मैच का आज तीसरा दिन था। राय, उमरीगर, हजारे केवल अट्ठाइस रन बनाकर एक घटे के अदर ही आउट हो गये। माजरेकर ने अडतालिस रन बनाकर आज के सुस्त खेल मे कुछ दिलचस्पी पैदा कर दी। अब मौसम का हाल सुनिये "

रेडियो को ग्रीनविच समय-सकेत की हुचकियाँ आने लगी। नये प्रोग्राम के आने के इतजार मे, सज्जन के ड्राइग रूम मे पास-पास बैठे हुए सज्जन और कन्या एक दूसरे को टकटकी बाँधकर देखने लगे। चार-पाँच रोज मे, दोनो की नजरो मे काफी खुलाव आ गया है। रेडियो ने सूचना दी "ये आल इडिया रेडियो, लखनऊ-इलाहाबाद-पटना है। पराग—इस साहित्यिक प्रोग्राम के अन्तर्गत आज आप महिपाल शुक्ल से उनकी नई कहानी सुनेगे "जब नया युग आता है।" —श्री महिपाल शुक्ल "

सज्जन ने सोफा पर सिर डालकर आँखे बन्द कर ली। कन्या सीधे रेडियो की तरफ देख रही थी, मानो स्वर मे महिपाल का रूप दिखाई दे रहा हो। महिपाल की आवाज गहराई से निकलती है, उसमे ओज और मिठास भी है, शब्द गूँज के छल्ले पहन कर निकलते है, परन्तु स्वर पर थकान चढी है, वह खीच-खीच कर बोलता हे, जिससे रेडियो पर खरखराहट होती है।

आँखे खोलकर सज्जन ने कन्या से कहा "जरा आवाज ट्यून कर देगी उसकी ? —थैक्यू !"

महिपाल अपनी कहानी सुना रहा था। कहानी का विषय था, आदिम युग मे सत्ता और श्रेष्ठता के लिये नर और नारी का सघर्ष। कहानी पूरी हुई।

"अभी आप महिपाल शुक्ल से उनकी कहानी सुन रहे थे। ये ऑल इडिया रेडियो है।"एक नकसुरी जनानी आवाज ने शकरा का खयाल उठाया।

"कैसी लगी कहानी ?" सज्जन ने उठकर टेलीफोन के पास जाते हुए कन्या से पूछा।

"मजे की रही।—काफी हद तक अच्छी !" कन्या अब भी कहानी पर विचार कर रही थी।

सज्जन ने रेडियो से फोन मिलाकर वहाँ के ड्यूटी-ऑफिसर से महिपाल को बुलाने के लिये प्रार्थना की।

कन्या सोफा से उठी, रेडियोग्राम के पास आई, सज्जन ने पूछा—"आपको पसद आ रहा है ये खयाल ?"

टेलीफोन का रिसीवर कान मे लगाये सज्जन ने नकारात्मक सिर हिला कर कहा—"मुझे सिर्फ अपने, और अपनो के खयाल पसद आते है। हाँ, हलो, कहिये महान लेखक जी, आपकी महानता अब दिनोदिन बढती जा रही है देखता हूँ। आपके इस 'क्यो' पर जी चाहता है, दस हटर लगाऊँ कस-कस के। शरम नही आती, छै दिन से सूरत तक नही

दिखाई दी तुम्हारी—न सबेरे न शाम। हाँ हाँ अरे! च्-च्! तब तो बड़ी मेहनत पड़ गई होगी। हो बोडम, इसी से कहता हूँ ज्यादा मत पिया करो। ह ह ह! वेरी गुड, आ जाओ। मेरी राय? अजी मेरी राय से ज्यादा कीमती राय सुनिये आप। आला हज़रत की एक जबर्दस्त फैन—हिन्दी में कहना चाहिये कि प्रशंसिका—इफ आई एम नॉट रॉंग, उनकी राय सुनवाता हूँ। (फिर माउथ पीस मुँह से जरा नीचा कर कन्या से) कम हियर कन्या, आइ'ल इन्ट्रोड्यूस यू टु योर मोस्ट फेवरिस्ट आथर।"

कन्या रेडियो की आवाज मद्धिम कर एक कान टेलीफोन की बातों पर लगाये रेडियो की सुई के सहारे तमाम हिन्दुस्तान में घूम रही थी। जब सज्जन ने उसे बुलाया उस समय रेडियो किसी बड़े ही मधुर कंठ का कर्नाटक संगीत प्रसारित कर रहा था। कन्या कुछ सकुचाते टेलीफोन के पास आई।

सज्जन ने महिपाल से कहा—"लो ये आ गईं—ये हैं मिस वनकन्या, और दूसरे सिरे पर है मेरा एक बेवकूफ दोस्त—" कहते हुए सज्जन ने रिसीवर कन्या को दे दिया।

कन्या ने मुस्कुराते हुए रिसीवर लिया, महिपाल से बातें करने लगी—"नमस्कार। जी? (हँसी) नहीं, मैंने सच नहीं माना। आप दोनों तो मित्र हैं, एक दूसरे को जो चाहे कर सकते हैं। मैं तो आप दोनों की कलाओं से प्रेरणा लेती हूँ। जी, अच्छी लगी। सच! बहुत अच्छी तो नहीं कहूँगी। आपकी 'देवता' कहानी बहुत अच्छी थी।"

सहसा छत के ऐन ऊपर से एक हवाई जहाज बड़ा शोर मचाता हुआ निकल गया, कानों के पर्दे फट गये। वनकन्या ने फिर बातचीत शुरू की। इतने में एक और हवाई जहाज आ धमका—उतनी ही निचाई से उड़ता और शोर मचाता हुआ। वनकन्या के लिये बात सुनना मुश्किल हो गया, सज्जन कौतूहल के साथ बॉलकनी पर देखने के लिये चला गया।

महिपाल ने वनकन्या से यह कह कर रिसीवर रख दिया कि वह अभी सज्जन के घर पहुँच रहा है। दो-दो हवाई जहाजों के उतनी नीची उड़ान भरने से महिपाल और रेडियो स्टेशन के दूसरे लोगों ने झुँझलाहट प्रकट की। इतने में महिपाल के लिये फिर टेलीफोन आया, इस बार कर्नल बोल रहा था।

महिपाल ने कहा—"यहीं रुका रहूँ? क्यों? मैं सज्जन के यहाँ जा रहा हूँ। हैं एयरोड्रोम से बोल रहे हो? वहाँ काहे मरने के लिये तशरीफ ले गये थे आप?"

आसमान पर फिर हवाई जहाज घर्राने लगे—एक के पीछे दूसरा, उतना ही तेज, सनसनीखेज!

हवाई जहाज चक्कर पर चक्कर लगाने लगे, तमाम शहर चक्कर में पड़ गया। जाड़े की रात, सन बावन के पहले दिन ये पहेली-सा आसमानी हंगामा लोगों को अजीब तरह से चौंकाने लगा। पाँच मिनट तक हवाई जहाज यों ही चकरघिन्नियाँ लगाते रहे। बंद होते हुए बाजार थम गये, सैकड़ों-हजारों लिहाफों की गर्मी विधवा हो गई। हाट-बाट, नुक्कड़, चौराहे, गली, छत छज्जे चहुँ ओर मनु की वंश बेल फैल कर, शोर से फूलने लगी।

और फिर हुल्लड़ मचा कि पर्चे गिर रहे हैं। सुहागवन्ती के मुखचंद्र की शोभा जैसी

निर्मल चौथ की चाँदनी मे सफेद कबूतरो की तरह अनगिनत पर्चे उडने लगे।

शहर की गली-सडको मे, छतो पर आसमानी वरदान को रोकने के लिये लाखो हाथ ऊँचे उचकने लगे। सडको पर बिजली के खम्भो से जरा ऊपर तक जब पर्चे रह गये थे, तभी लोगो की नजरो ने उन्हे छोटी-सी किताब के रूप मे उडते हुए पहचान लिया।

जिनके हाथ सहज ही मे किताब लग गई, वह तो मानो डरबी की लॉटरी ही जीत गये, और कही छीना-झपटी होने लगी, धक्कम-मुक्का, गाली-गलौज मच गया, जिन्हे किताब नही मिली वह बौखलाये से घूम रहे है। किसी हिन्दी वाले हाथ मे उर्दू की किताब आ गई वह मुहल्ले मे उर्दू पढने वालो को टटोल रहा है। जिस उर्दू वाले के हाथ मे हिन्दी की किताब आई वह अपने घर के स्कूली लडको को जगाने लगे जो अब आमतौर पर हिन्दी पढते है। जितने लोग थे, उतने करम हो गये।

जनता ऐसे अवसरो पर फुर्ती मे कमाल कर दिखाती है आनन-फानन एक प्रचार पुस्तिका पाने के लिये हजार दुर्घटनाये हो गई, बात आई-गई भी हो गई, और अब तो लोग-बाग अधिकतर टोलियो मे सिमटे हुए किताब पढ रहे है।

किताब के पहले पृष्ठ पर तीन घूँघटो के रफ पेन्सिल स्केच का ब्लॉक छपा है। नीचे छाप के बडे अक्षरो मे लिखा है "घूघट का पट खोल री! लेखिका! कु० वनकन्या।"

अपने घर की दुर्घटना का कच्चा ब्योरा देते हुए अत मे लेखिका ने लिखा था 'पुरुष समाज से मुझे कुछ भी नही कहना। जिसको लूटने की बान पड गई है वह आसानी से अपनी आदत नही छोड सकता। बात कहनी है मुझे अपनी बहनो से। वे बहिने जो स्कूलो और कालेजो मे पढती-पढाती है, वे जो घरो की चहारदीवारी मे कैद है, उन सब से मेरा सत्याग्रह भरा निवेदन है कि 'प्रेम' शब्द के साथ फैली हुई नारी विरोधी जिस गदी तस्वीर को जन-समाज आज अपनाये हुए है, उससे साँप के फन की तरह दूर रहे। अपना गुलाम बनाकर अत्याचारी जिस पर राज करना चाहते है, उसका नैतिक दल वे पहले तोड देते है। हजारो वर्षो के इतिहास मे अधिकतर समाज ने नारी के साथ हर तरह से खेलकर, रस लेकर सदा उसे पैरो तले रौदा है, जीते जी जलाया है। विवाह के मत्रो मे दिया गया नारी का अधिकार अर्द्ध-नारीश्वर के प्रतीक मे दी गई समता—ये महान जनतात्रिक आदर्श महज पोथियो की वस्तु बने आज भारत से अधिक भारत से बाहर पूजा पा रहे है। 'जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओ का निवास रहता है'—इस महान उक्ति को निहायत बेशर्मी के साथ झुठला कर भारतीय पुरुष समाज व्यावहारिक क्षेत्र मे नारी का स्थान ढोल, गवार, शूद्र और पशु के साथ मानता आया है। इसी को वे धर्म मानते है। धर्म, न्याय, राज सब पुरुषो का है, पुरुष अपनी इच्छा की साँकलो मे नारी को धोखे से या जबर्दस्ती बाँधकर अपनी दासी बना ले तो वो बेबस बेचारी क्या क्या कहे? देवता बनकर यह ठग-जगत यदि उसका सर्वस्व हरण कर ले तो वह क्या करे? लेकिन हमें अब झूठे धर्म का भय, और झूठी आबरू का मायाजाल तोड कर कहना भी होगा, और लडना भी होगा।

"मैने जब अपने घर मे अपने पिता द्वारा होने वाले अत्याचारो के खिलाफ कुछ कहना चाहा तो मेरी भाभी ने ही रो-रोकर रोक दिया। लाख कोशिश करने पर भी मै उन्हे यह न समझा पाई कि इस हैवानियत के खिलाफ जनमत तैयार करने मे आबरू नही

जायगी, आबरू तो अब जाती है जब अपनी मर्जी के खिलाफ निरीह पशुओं की तरह स्त्री का इस्तेमाल होता है। स्त्री की आबरू तो तब जाती है जब 'प्रेम' शब्द का लुभाने वाला मायाजाल फैला कर स्त्री की मर्जी को पुरुष बड़ी खूबसूरती के साथ झुठला लेता है। बेचारी भोली-भाली स्त्री समझती है कि पुरुष उससे प्रेम कर रहा है, जीवन भर दुख-सुख में वे दोनों एक दूसरे के सच्चे आधार बनेंगे पर मैं अपनी बहनों से पूछती हूँ, क्या यही प्रेम है जो आज अमृत और कल हलाहल बन जाता है? क्या यही प्रेम है जो हमारी एक-एक साँस में बिंध कर खून को आँसू का खारा पानी बना देता है।

सारा दिन हम एक निर्मोही कपटी के ध्यान में बैठी रहें, न किसी काम की रहें न धाम की आँखें कभी रोते-रोते पथरा जायँ, कभी आँसुओं के भार से दब जायँ हममें न कोई उमंग रह जाय, न उछाह, न दूजी भावना! मैं पूछती हूँ—क्या यही प्रेम है, जिसके भुलावे में पड़कर नारी जाति स्वयं अपना नाश करने में पुरुष को आप मदद देती है? दूर कर नारी यह मोह! घूँघट के पट खोल! पुरुष के अत्याचारों के खिलाफ संगठित होकर अपनी आवाज उठा। जिस दिन स्त्री जाति अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों को अंत करने के लिये निश्चयपूर्वक खड़ी हो जायगी उसी दिन दुनिया से हर तरह के अत्याचार मिट जायेंगे!"

सज्जन और कन्या सोफा पर एक दूसरे की तरफ कुछ झुककर बैठे हुए साथ-साथ पढ़ रहे थे। वनकन्या के लेख की समाप्ति पर,एक छोटा-सा नोट छपा था "बहेन वन-कन्याजी का लेख चुनाओं की पारटी पालीटिक्स और दुनिया के जंजालों से ऊपर उठकर विचारने के जोग है। हम सबसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि जनता इस पर धियान दे। ये इलक्शन जो चल रहे हैंगे और हुल्लड़ जो मच रहा हैगा उसमें जिस न्याये के लिये पब्लिक तड़प रही है मेरी समझ में तो बहेन वनकन्याजी का ये लेख वही न्याये माँगता है। पब्लिक इस पर ध्यान दे। (नीचे हस्ताक्षर थे महिपाल शुक्ल, सज्जन वर्मा, नगीनचंद जैन उर्फ कर्नल साहब)।"

पढ़ते हुए कन्या की आँखों में विनोद लहराया, सज्जन को हँसी और गुस्सा दोनों ही महसूस हुआ। सज्जन बोला—'ये कर्नल गधा का गधा ही रहा हमेशा! क्या ऊल-जलूल स्टेटमेन्ट दिया है और उस पर मेरा और महिपाल का नाम भी डाल दिया कम्बख्त ने!"

कन्या हँसी, कहा—"तो इसमें क्या हर्ज है? मगर कुछ भी कहिये, कमाल कर दिखाया कर्नल साहब ने?

सिगरेट मुँह में लगाकर लाइटर निकालते हुए सज्जन ने कहा—"बस, वहो क्रिसमस के दिन आपके सामने ही तो उसे आर्टिकिल दिया है मैंने। उसके बाद आज शाम तक उसने मुझे इस संबंध में कुछ भी नहीं बतलाया!—किसी तरह की चर्चा नहीं—"

"ऊँ! आपको नहीं बतलाया होगा भला!" आँखों की पुतलियों में बनावटी अविश्वास झलका, सफलता से उछलते हुए दिल ने अचानक बेहोशी में अपने दिल का राज आँखों में उछाल दिया। सज्जन मुग्ध होकर उसे देखने लगा। निजी रहस्य का पहला पर्दा दोनों के सामने से हट रहा था, इस अनुभूति को आज की तिजोरी में भरकर

फिर अपनी बात को उठाते हुए कन्या ने कहा—"ये स्केच तो आप ही का बनाया हुआ है।"

सज्जन ने अकारण जोर से हँसकर जवाब दिया—"इस वक्त तो इसे भी कर्नल का बनाया ही समझिये। मेरी किसी स्केच-बुक से उडा ले गया है, देवा, मिसरिख, बटेश्वर वगैरा किसी देहाती मेले मे स्केच किया था मैंने। अरे, अगर मुझसे कहता तो नया चित्र बना देता—"

"मगर ये अच्छा तो लगता है बडा रुपया खर्च किया होगा उन्होने।"

"उँह! पया और होता किस लिये है?"

"अपने लिये सब खर्च कर सकते हैं। दूसरे के लिये खर्च करना बहुत कठिन काम है—किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये तो और भी कठिन!" कन्या ने भाव भरे स्वर मे जवाब दिया।

सज्जन यह दिखाना चाहता था कि उसके मित्र और वह, विशेष रूप से वह—किसी भी सदुद्देश्य की पूर्ति के लिये सदा अपना तन-मन-धन हथेली पर लिये तैयार खडे रहते हैं। उसने सोफा की बाँहो पर दोनों हाथ पसारकर हवाई लहजे मे कहा—"मेरे जीवन मे यही सिद्धान्त फर्स्ट इम्पॉर्टेन्स का हे, और मेरे दिल का नाता भी सिर्फ उन्हीं लोगो से जुडता है जो इतना बडा दिल रखते हो।—और इसे मैं किसी खास बडप्पन की निशानी नही मानता, हर औसत आदमी में यह गुण होना ही चाहिये।"

कन्या ने रीझी हुई नजरो से उसे देखा। देखने की शर्म अब उसकी दृष्टि मे बाकी नही रही थी—बल्कि चाव बढ रहा था। सज्जन के व्यक्तित्व मे मानो उसे अपना वह आधार मिल गया था, जिसे पाने की इच्छा हर स्त्री-पुरुष में होती है। कन्या की दृष्टि की यही सच्चाई सज्जन के अतर मे अलसाये-पडे सत्य को गुदगुदा रही थी, इस गुदगुदी में उसे रस भी मिलता था, साथ ही उठ खडे होने के लिये चैलेन्ज भी। कन्या के सामने उसे बार-बार अपने मन को कसना पडना था। कन्या को अपनी ओर निश्छल अपनापन लिये देखते देख कर सज्जन खुद अपनी ही बात के वजन को महसूस करता हुआ सावधान हो गया। प्रसग बदलते हुए बोला—"आपका लेख बहुत सुन्दर है। जनता पर शर्तिया इसका अच्छा असर पडेगा।"

कन्या सिर झुका कर सोचने लगी, फिर बोली—"समझ मे नही आता क्या होगा। आप से मन की बात कहूँ, जब तक इस अत्याचार और झूठ का पर्दाफाश नही हुआ था, मैं मन ही मन क्षोभ के मारे बौखलाई रहती थी। आप कल्पना नही कर सकते, उस दिन कितनी तडप के साथ लेख लेकर मैं आपके पास आई थी। आपसे, फिर उसके बाद यहाँ कर्नल साहब से भरोसा मिला तो बडी शाति पाई, सोचा, दुनिया मे अगर अन्याय है तो उसका प्रतिकार करने के साधन भी हैं। मुझे ऐसा लगा कि मैंने अपना बदला पा लिया। पर अब सोचती हूँ कि इतनी धूम-धाम से मेरे मन के सत्य ने प्रचार पा लिया, या फिर भी होगा क्या? हजारो-लाखो लोग इस पैम्फलैट को पढेंगे, दो-चार रोज गर्मागर्म चर्चा भी होगा, पर उसके बाद?—फिर इसी तरह सब कुछ चलेगा, बच्चे नाजायज कह कर मारे जायेंगे, औरते आग लगा कर आत्महत्या करेंगी।

अपनी प्रिया (हाँ, अब सज्जन के मन मे 'प्रिया' शब्द स्पष्ट है, जो अभी जबान पर,

व्यवहार में नही आ सकता) को सात्वना देने के लिये बडे जोश के साथ उसने कहा—"नही, अंत तक हम इस अन्याय को जड से मिटाने के लिये लडेगे।"

सज्जन की नजरो मे उसकी बात की शक्ति अदाजने हुए, फिर उसकी तरफ से दृष्टि हटा कर एक हल्की सी निसाँस डालकर कन्या बोली—"समझ में नही आता कैसे होगा। हमारी पोलिटिकल पार्टियाँ आमतोर पर समाज से कट कर सत्ता के पीछे दौड रही है—"

"दौडने दीजिये। पब्लिक उन्हे आप ही हूट-आउट कर देगी।"

"हूट-आउट करने से समाज मे व्यवस्था नही आती सज्जन जी, अराजकता मानव-समस्या का हल नही। समाजी चेतना बदलने का सवाल है। इसके बदले बिना ये तमाम अन्याय यो ही होते रहेगे। और राजनीति को उसके चालू रवैये के कारण हम कोस भले ही ले, मगर समाज की गाडी का स्टयरिंग व्हील पॉलिटिक्स ही है—"

"मै यह नही मानता। कल्चर—"

"कल्चर पेट्रोल की तरह जरूरी है, जिसके बिना गाडी ही नही चल सकती, मगर मै इससे स्टीयरिंग व्हील का महत्त्व तो आप कम कर नही सकते। जब तक समाज इतना सुसस्कृत और सभ्य नही हो जाता कि बगैर सेक्रेटेरियट पुलिस और मिनिस्टरो के भी आसानी मे चल सके, तब तक राजनीति का महत्व इतना ही जोरदार रहेगा। और ये हालत अभी दुनिया मे अगर अधिक नही, तो कम से कम कुछ सौ वर्षो तक रहेगी ही।"

कन्या चुप हो गई। सज्जन भी विचार-मग्न चुप बैठा रहा। विचारो मे दृष्टि गडाये हुए कन्या ने फिर कहना शुरू किया—"हमारे राजनीतिक नेता, वह चाहे किसी भी पार्टी के क्यो न हो, नब्बे फीसदी सास्कृतिक दृष्टि से सोच ही नही सकते। इन्हे इस बात का कभी अनुभव ही नही होता कि सास्कृतिक दृष्टि का विकास किये बिना पालिटिक्स मे स्पिरिचुअल फोर्स आ ही नही सकता ओर इसके बगैर पॉलिटिक्स बराबर पावर-पलिटिक्स ही बनी रहेगी।"

"आप स्पिरिचुअल फोर्स को मानती है? मै तो समझता था कम्यूनिस्ट यह सब नही मानते।"

"कम्यूनिस्ट नही मानते तो क्या और सब लोग सही तौर पर मानते है?" कन्या ने हँसकर कहा—"वैसे कम्यूनिस्ट भी मानते है। पर हर एक के जानने और मानन के तौर-तरीके अपने-अपने है। सच पूछिये तो मै यह जानती ही नही कि स्पिरिट, आत्मा या परमात्मा शब्द ठीक-ठीक किस शक्ति के नाम है। ये जरूर है कि मन के किसी भाव को व्यक्त करने के लिये यह शब्द बरबस आ ही जाते है।"

"मै जानता हूँ, कम से कम अपने लिये तो जानता ही हूँ।" कन्या उसकी ओर गौर से देखने लगी, सज्जन ने मुस्कुरा कर धीमी रस भरी आवाज मे कहा—"मेरी स्पिरिट, आत्मा या परमात्मा—जो कुछ भी कहिये—एक जगली लडकी है।"

वनकन्या पर इस बात की तीव्र प्रतिक्रिया हुई, एक बार पुतलियो मे बरबस रस बरसा, और तुरत ही वह सयत हो गई, गभीर होकर सिर झुका लिया। उसने जवाब न दिया।

दरवाजे के बाहर से कर्नल और महिपाल की आवाजे सुनाई पडने लगी। दोनो जोर-जोर से बाते करते चले आ रहे थे। कर्नल कह रहा था—"अरे बाबूजी, कल इसका असर देखियेगा शहर मे—"

दोनो के कमरे मे प्रवेश करते ही वनकन्या हाथ जोड कर खडी हो गई। महिपाल ने सास्कृतिक गभीरता से उसे देखा, कर्नल ने बडा अपनापन देकर हँसते हुए।

कर्नल ने उससे पूछा—"कहिए आज का तमाशा कैसा लगा आपको ?"

कन्या के जवाब देने से पहले ही सज्जन ने महिपाल से कहा—"यार, कोई अच्छा वकील बताओ !"

और इसके पहले कि महिपाल कुछ कह सके, कर्नल ने उत्साह से कहा—"वकील ? हाँ-हाँ ! अभी फोन करूँ ? काम क्या है ?"

"आपके ऊपर चार-सौ-बीसी का दावा ठोकना है।" सज्जन ने चेहरा गभीर बना कर जवाब दिया।

"जरूर ठोको साले के ऊपर—" कहते-कहते महिपाल रुक गया और कन्या की तरफ देखकर बोला—"क्षमा कीजियेगा, गाली निकल गई मुँह से !"

कन्या हँसने लगी। सज्जन बोला— ये है ही इस काबिल ! क्या स्टेटमैन्ट छापा है हम लोगो के नाम से, जरा मुलाहिजा फरमाइयेगा ?" कहते हुए सज्जन ने पास ही रक्खी तिपाई से पैम्फलेट उठाने के लिये हाथ बढाया। कर्नल झेप कर हँसने लगा।

महिपाल बोला—"रास्ते भर मै इसको फटकारता चला आया हूँ। इतनी गलत-सलत भाषा के साथ मेरा नाम जोडा है, जरा इस बात पर ध्यान देना।"

"भाषा न देखिये भाव देखिये इनका ! भाषा की गलतियाँ तो बडे-बडे साहित्यकार भी कर जाते है—बालमुकुन्द गुप्त ने महावीरप्रसाद द्विवेदी जैसे महान् आचार्य की गलतियाँ निकाली थी।—बाकी इन्होने आज सारे शहर को चौंका दिया, हमको और आपको भी, यह कोई मामूली बात नही है !

कर्नल बडा ही खुश हुआ। शोर मचाता हुआ बोला—"बस-बस-बस ! जीते रहिये आप ! अब मेरी तरफ से भी इटिलिक्चुअल जवाब देने वाला मिल गया इन मूर्खो को ! ये लोग आम नही देखते, उसकी पत्तियाँ देखते है ! और अपने को बडा आरामतलब समझते है !"

महिपाल बोला— खैर आपकी वजह से इसे छोड दिया। आपका लेख बहुत सुन्दर था, आप अच्छा लिखती है।"

कन्या ने विनय से नजरे नीची कर ली—"छपने से पहले आपको दिखा लेना चाहती थी। गलतियाँ तो बहुत होगी।"

"अजी नही ! बहुत सुन्दर लिखा है ! बस, दुःख इस बात का रह गया कि अगर इस बेवकूफ ने मुझसे पहले कहा होता तो आपके लेख को सपोर्ट करने के लिये मै एक अच्छा-सा वक्तव्य लिख देता।" महिपाल ने कहा।

सज्जन भी तुरन्त बोल उठा—"यही तो मै भी कहता हूँ ! इसे न जाने क्या धुन सवार हो गई कि न किसी से पूछा न ताँछा—"

"यह पालसी है बाबूजी ! इलक्शन मे पर्चे की वैलू होती है।—किसी को कानो-कान खबर न होने पाये कि हमारा कौन-सा पर्चा आउट होने वाला है। तब असर पडता है पब्लिक पर।" कर्नल ने कहा।

"असर नही खाक पडता है—"

"कल देखियेगा—"

"नही, असर तो जरूर पडेगा—" कन्या कहने लगी, उसकी बात काट कर मुस्कुराते हुए सज्जन ने कहा—"अभी तो तुम कह रही थी कि कुछ असर नही होगा !"

कन्या झेप गई, दबी झुंझलाहट के साथ हँसते हुए उसने सज्जन से कहा—"जाइये, आप तो मेरी बात का मतलब ही बदले दे रहे है। (फिर कर्नल से बोली) मैने इनसे ये कहा था भाई साहब कि बेकार आपका इतना रुपया नष्ट करवाया, जनता चार दिन तक शौक मे चर्चे करेगी, फिर यही सब अत्याचार होते रहेगे !"

महिपाल बोला—"सच है ! समाज के बदलने के लिये उसकी बहुत-सी रूढ आस्थाये बदलनी होगी। इसके लिये एक व्यापक सगठन और आदोलन की जरूरत है।"

काफी देर तक चर्चे चलते रहे। कर्नल और महिपाल जब जाने लगे तो सज्जन उनके साथ कमरे के बाहर तक आया। उसने कर्नल से पूछा—"कितना खर्चा हुआ ?"

"क्यो, क्या आप पमेन्ट करेगे मुझे ?"

"हाँ।"

कर्नल महिपाल की तरफ देख कर बोला—"सुन रहे हो रईसजादे की बाते ! (सज्जन से) बाबूजी, अभी क्या खरचा हुआ है, अभी तो आपकी बुल्लो को हजार दो हजार की प्रेजेण्ट और करनी पडेगी मुझे। तब इकट्ठा बिल भेजूगा तुम्हारे पास !"

"अमा हा, हमको भी लगता है, शादी तुम्हारी इसी के साथ होगी। लडकी बडी अच्छी है, मुझ पसद आई।"

सज्जन को मित्रो की ये बाते अच्छी लग रही थी, हँसकर बोला—"आप लोग मेरे दिमाग मे ऑटो-सजेशन भर रहे है। मै तो विचारी को निस्वार्थ भाव से मदद—"

"हाँ-हाँ, बडे निसुआर्थी है आप साले !" कर्नल ने हँसकर कहा—"नही यार, ये लडकी मुझे भी बहुत पसद आई। बस, यही है कि जरा फेमनिस्ट है, बाकी इसकी आँखो में शील है।"

उन दोनो के जाने के बाद सज्जन कन्या को उसके घर छोडने गया। कन्या ने अपनी मैत्रिणी का आश्रय छोड कर दस रुपये महीने की एक तग कोठरी किराये पर ले ली थी। जब गाडी से उतरने लगी तो सज्जन ने अपनी जेब से एक बडा लिफाफा निकाल कर उसकी ओर बढाते हुए कहा—"इसे रख लो।"

"क्या है ?"

"रख लो ?"

"रुपये ?"

"हाँ-हाँ ! काम आयेगे।"

नही ।'

"देखो, मेरे रहते तुम तकलीफ उठाओ, यह मुझसे न देखा जायगा।"

"मै कोई तकलीफ नही महसूस कर रही।"

"तुम्हारे पास खर्च के लिये रुपये है ?"

कन्या चुप रही ।

सज्जन ने कहा—"तब फिर इसे रख लो ना ! देखो, इसके लिये किसी तरह का भी अपमान या एहसान नही महसूस करना होगा।"

"नही नमस्ते !" कन्या धीरे-धीरे सिर झुकाये अपनी कोठरी की तरफ बढ गई।

किसी स्त्री के सामने आज पहली बार सज्जन का रुपया हारा था।

१४

बंद घर मे गुट्टू-मुट्टू से तीन बिल्ली के बच्चे ताई की झंगोले ऐसी खटिया पर उछल-कूद मचा रहे है। जब से आँखे खुल गई है, बच्चे निचित्ते होकर नही बैठते। उन्हे लेकर ताई का मन सदा ऊँचा ही रहता है, मोरी के छेद पर ईंट अडा दी, सीढी की कुण्डी सदा बद ही रहती है कि कही बिलौटा न आ जाय। बच्चो की माँ भी उन्हे फूटी आँखो नही सुहाती, बच्चो को दूध पिलाने के लिये लाख जतन कर वह ताई के घर में घुसती है, और ताई जब उसे देख पाती है तो लठिया लेकर दौडती है।

अँधेरे घर मे बिल्ली ने ऊपर की कानिस से नल के पास रक्खे ढँके गगाल पर छलाँग मारी। उसे देख, खाट की पाटी पर तीनो बच्चे एक दूसरे से सटकर बैठे हुए उतावली से म्याऊँ-म्याऊँ करने लगे। बिल्ली ताई की खाट पर चढकर लेट गई, बच्चे घुस कर दूध पीने लगे। एक बच्चा उसकी पीठ पर चढ कर दूध पीने लगा, और घुस-घुस कर दूध पीने की तडप मे खिसकते-खिसकते नीचे आ पडा। तीन चुन्नी-मुन्नी दुमे आनन्द से लहरा रही है, बिल्ली भी कभी-कभी ममता के अतिरेक मे दुम हिला लेती है।

ताई बाजार से उनके लिये दूध का कुल्हड लिये चली आ रही है। परभू मुरहा गाल में पान दबायें मुट्ठी बाँध कर सिगरेट पीते-पीते ताई को देखकर अचानक खलीफा तमोली के चबूतरे से कूद कर गली में ताई के सामने बैठ गया और उनकी लठिया पकड ली। ताई चिहुँक उठी, कुल्हड से दूध छलक गया।

मुरहू बोला—"ताई, मरन किनारे आईं—दूध-मलाई लडकन खातिर होत है। कुल्हड हमें दिये जाओ, लठिया छोड देई।"

ताई तिलमिलाने लगी, मुरहू ने फिर कहा—"देखो देखो, कोसिहौ-काटिहौ,

गुस्सा हुइहौ तौ तुमरैं नुस्कान होई—दूध ढनक जइहै ।"

ताई सचमुच बडे शशपञ्ज मे फँस गई थी। आज ऐसी परिस्थिति में शायद वे बहुत अरसे से नही घिरी। जीवन मे शायद पहली बार ताई रणक्षेत्र मे परास्त होकर सधि करने पर मजबूर हुई, खीझ कर बोली—"छोड दे मरे! बच्चे भूखे होगें।"

"अरे, हमको छोड के और तुम्हारा कौन बच्चा हुई सकत है? औ' जो कोई हुइहै तौ सारे का समझ लेब। सुन लेओ भई बजार वालो, ताई ने हमें गोद लिया है। अब इनकी जमा-पूँजी हमारी है, चाहे इनके मरन पे ले चाहे इनके जिन्दे म ले!"

गली के दोनो ओर दूकानदार सुनार, दर्जी, विसाती, तम्बोली, हलवाई सब हँस रहे हैं। ताई के आस-पास से लाग हँसते हुए निकल जाते हैं। चारो आर की छेडखानी से बेहद खौलते हुए भी ताई दूध के कुल्हड के कारण बेबस हो रही है। उन्होने कोसना-काटना भी बद कर दिया भट्ठी मे पडे लोहे की तरह तपती हुई खडी है।

अचानक लठिया छोडकर वो आगे निकल गई।

परभू मुरहे को इसकी उम्मीद न थी। सहारा छूट जाने से लठिया गली मे गिरी, मुरहू के हाथ मे झटका लगा। उठकर लठिया बढाते हुए बोला—"अच्छा लेओ, लठिया लै जाव। ए ताई!"

ताई दूर जाकर खडी हो गई, उसकी तरफ तीखी दृष्टि से देख कर बोली—"घर आकर दे जाना निगोडे नही तो कल सबेरे तेरा बस नास कर दूँगी!"

मुरहू के कलेजे मे ताई का सराप लगा, मसखरी भूल गई, डर लगा, सबके सामने, तेहा चढा, अकड कर हँसता हुआ बोला—"अरे तुम तो कल हमरा बस नास करिहौ! हम आजै तुमरा सफाया कर देब। ई लठिया पडी है तुमरी, उठाओ चाहे न उठाओ। हम न पहुँचैबे, सुन लेओ। ओ ताई!"

ताई बजरगबली के चबूतरे के पास पहुँच कर अपनी फटकिया की तरफ मुड रही थी।

बाजार वालो ने परभू को समझाया, पर वह नट गया। एक धर्म-भीरु सुनार ने अपने लडके को ताई की लठिया दे आने के लिये भेजा।

बडबट करती ताई के अदर आते ही बिल्ली उछल कर खटिया के नीचे चली गई। एक बच्चा जो माँ का दूध पीकर मस्ती मे लडने-भिडते हुए किसी समय चारपाई से नीचे गिर पडा था, बरौठे मे ताई को देख कर मुन्नी-महीन सी म्याऊँ-म्याऊँ करता हुआ दौडा। खटोलिया पर गुत्थम-गुत्था करते हुए दोनो बच्चे भी अपने दालान-पतित भाई की म्याऊँ-गुहार का अर्थ समझ कर चटपट म्याऊँ-म्याऊँ करते सिरहाने तक धाये। इस समय दूध मिलता है, इतना होश इन दस-बारह रोज के बच्चो को खूब हो गया है। दालान वाला आगे दौडा तो चबूतरी पर गिरा, और चबूतरी पर दो कदम दौड कर फिर आँगन मे, खटिया वालो मे से एक तो स्टण्ट मार कर लद्द-से धरती पर गिरा, सुखट्टी मियाँ चारपाई से ही म्याऊँ-म्याऊँ करने लगे।

दोनो बच्चे आँगन में आकर ताई के पैरो से म्याऊँ-म्याऊँ करते मुँह रगडने लगे, इनका कदम उठाना भारू कर दिया। ताई की बाहरी खौलन-जलन पर नेह की ठढक

छा गई। दोनो के लिये धरती पर जरा-सा दूध गिरा कर अपना पीछा छुडाते हुए दालान मे आई, खम्भे से लगे रक्खे हुए एलमुनियम के ढक्कन मे कुल्हड का दूध उँडेल कर ताई आँगन से दोनो बच्चो को उठा लाई, फिर खटोलिया से तीसरे बच्चे को भी उठा कर दूध के पास रख- दिया।

इतने मे दरवाजे की कुण्डी बजने लगी। मानुसगध पाकर ताई फिर तमतमाने लगीं।

"अर अपनी लठिया लै जाओ, ताई, आ ताई!" बाहर स आवाज सुनकर ताई कुम्वारी से काले निल निकाल कर गालिया बडबडाती दरवाजे की तरफ बढी।

उस दिन रात के नौ बज तक गली के बाजार मे बडी गर्म चर्चा रही कि परभू मुरहे के धोखे मे ताई ने परसोतम सुनार के लडके पर तिल छींट दिये, उसकी हालत खराब है, झाड-फूक, डाक्टरी इलाज सभी कुछ हो रहा है। भभूती सुनार दुकान बढाकर महाराज के सिर पर सदूक रखवाये भालाधारी चौकीदार के साथ गली मे आये तो ये चर्चा सुनी। परसोतम की दूकान पर खडे होकर उसके छोटे भाई से हाल पूछा। परसोतम से हमदर्दी रखनेवाले सब लोग ताई के लिए अपार घिन और गुस्सा दरसा रहे थे। भभूती बोला—"घर हो आऊँ तो आता हूँ तुम्हारे यहाँ।"

भभूती के घर मे इस समय बडी और नदो को छोड कर और कोई नही है। शकर छोटी मेकड शो मे सिनेमा देखने गये है। अम्मा, आज छह दिन हुए, बहनोई के स्यापे मे कासगज गई है, उनका लडैता पोता भी साथ ही गया है। मनिया कल माल लाने के लिए कलकत्ते गया है।

मनिया द्वारा पीटी जाकर चोरी-रहस्य खुलन के बाद से नदो घर के वाहर कदम नही रख पाई। गोमती, देवदर्शन, यहाँ तक कि ताई के घर भी उसका आना-जाना मनिया के हुक्म से बद हो गया है। पहले दो रोज तो अपनी कुटरिया से बाहर ही नही निकली। फिर घर के काम मे थोडा मन लगाया। अम्मा से अच्छा रुख न मिला। उसने मनिया के बच्चो पर अपने वात्सल्य प्रेम की डोर डाली, मनिया के नहाने-खाने के समय धोती अँगोछे पानी पटरे की तक बजाने लगी। इतने में सगे मौसा के मरने की चिट्ठी आई, सो अम्मा कासगज चली गई। अम्मा के जाने से नदो का हियाव खुला, भौजाइयो के साथ काम-काज मे पूरा-पूरा हाथ बँटाने लगी। छोटी को तो सुबह पति के चायपानी से, फिर अपना हाईस्कूल का कोर्स पढने से, फिर पति द्वारा दिये गये 'होमवर्क' को पूरा करने से, फिर तारा के साथ बतियाने से, और फिर इसी तरह कुछ न कुछ करते रहने से घर के काम-काज के लिये अधिक अवकाश नही मिलता इसलिये सास के जाने और मनिया के अकुश से बडी पर ही घर-गिरस्ती का पूरा भार पड गया है। इसीलिए नदो को उसके साथ रहने का ही अधिक अवसर मिलता है। उसने मुन्नी के लिये स्वेटर के फदे भी डाले है। बडी से नई बुनाई भी सीखने लगी है।

जब भभूती ने 'कुण्डी खोलो' की आवाज लगाई, उस समय नदो-बडी पलग पर

पास-पास लेटी बाते कर रही थी। मुन्नी पास ही अपने हिंडोले मे सो रही थी। रेडियो पर फिल्मी गाना आ रहा था—

"अकेले मे वो घबराते तो होगे।
मिटाकर मुझको तो पछताते होगे।
हमारी याद आ जाती तो होगी ."

भभूती घर आये। सदूक कोठे मे रक्खा, ताला बन्द किया ब्यालू किया और अपनी लडकी को भीतर की कुण्डी चढा लेने का आदेश देकर परमोतम सुनार के घर लडके के हाल-चाल लेने चले गये।

ननद-भौजाई फिर निश्चिन्त हो कर तिमजिले—बडी के कमरे की ओर चली। एकाएक नदो के जी मे मिठाई खाने-खिलाने की आई। बडी को पैसे नही देने दिये, अपनी कुठरिया से पैसे निकाल कर गली मे आई। सामने बरामदे में बिस्तर बिछाये बैठे हुए चौकीदार की खुशामद कर उसे मिठाई-नमकीन और आध सेर दूध लाने भेजा। ऊपर मुन्नी अकेली थी सो बडी चली गई, नदो सौदा आने की बाट मे नीचे ही बैठी रही।

कल रात से अकेले के मारे नदो बडी के पास ही सोती है। सास के जाने के बाद आजकल नदो को अपनी बडी भावज पर उसी तरह प्रेम उमडा है, जैसे उसके ब्याह कर आने पर शुरू-शुरू मे कुछ दिनो तक उमडा था, बल्कि सच तो यह है कि आजकल जैसा प्यार तो उसे पहले कभी उमडा ही नही।

अपने कमासुत भाई से नदो किसी शर्त पर भी बिगाड करने को तैयार नही। मनिया भोला है, जरा-सी सेवा खुशामद से ही पिघल जाता हैं। बडी जब ब्याह कर आई थी, मनिया नई दुलहिन पर हरदम निछावर रहता था, वह भावज का मन लेती रहती थी। फिर जब वह अपनी सहेली सतो की बहू साथ मनिया की साँठ-गाँठ कराने मे सफल हुई, तब से बडी की जानी दुश्मन बन गई, जितने हो सके उतने अत्याचार उस पर कराये। फिर मनिया एकाएक सुधर गया, तब से भाई-बहिन म एक अजीब काँटा पड गया था। आप 'ज्ञान' पाकर मनिया को नदो की छिपी-रुस्तमी हरकतो से और भी ज्यादा नफरत हो गई, वह बहन का कुटनीपेशा छुडाना चाहता था। नदो उससे फिरट हो गई, सबसे बडा सहारा तो उसे बाप के लाड का है। भाई-बहिन दोनो एक-दूसरे की कच्ची पोलें जानते थे मगर जबान पर नही ला सकते थे। इसलिए मनिया ने नदो से एक बेरुखी का रिश्ता बना लिया था। अब तक तो दोनो के गुनाह तराजू के पलडे दोनो ओर काँटे-तोल बराबर थे, मगर एक नये गुनाह की आड पाकर मनिया का पलडा भारी पड गया। उस दिन कुठरिया में तलाशी लेने के बहाने उसने अकेले मे नदो को खूब धमकाया, उसकी सदूक में तस्वीरो का एल्बम निकल आने से वह पूरी तरह शेर हो गया, बोला—"हम अभी घर भर को ये दिखाय के तुम्हारा काला मूँ कराय सकते है, और तुम हमरा कुछ कहोगी वह सब झूट माना जायगा। याद रखना, अब हमारे खिलाफ चली तो झोटा पकड के घर से बाहर निकाल दूंगा, उस दम बाबू भी कुछ न कर सकेगे।" अपनी चोटी हाथ आ जाने से नदो मनिया के बस मे होकर 'सुशील' बनने लगी। अपना वजन बढाने के लिए बडी से भी मेल-जोल बढाया। नदो के किसी बडे चमकदार नक्षत्र के उदय होने से उसके मौसा

मर गये, उसे बडी के साथ अकेली निभाने और मनिया को अपनी सुशीलता से रिझाने का स्वर्ण अवसर मिल गया ।

रात कल ननद-भौजाई दोनो पास-पास सोई थी, सो आज सुबह से बडी नदो के प्रति एकदम•'अपनी' हो गई है । दिन मे उसने छोटी से कहा भी कि—"नन्दो बीबी जी जैसी ऊपर मे दिखाई देती है, वैसी बिलकुल नही है । जो इनको हमारी लागो की सुसाइटी मिले ता ये एकदम सुधर जाये ।"

नन्दो मिठाई, नमकीन और दूध लेकर ऊपर पहुँची । उस समय अकेली लेटी हुई बडी सूने घर मे आजाद—किमी हद तक खुले स्वर से—विरहेश की गजल गा रही थी

"सिर से कफन लपेटे निकले है प्यार करने ।
नजरो को चार करके मीठा गुनाह करने ।"

ननद-भौजाई मे ऐसी बतरस घुली कि बडी का रोम-रोम पुलकित हो उठा । नन्दो ने भी अपने बचपन से लेकर आज तक की बाते सुना डाली, और अत मे बडी ने भी अपने दिल का अपटूडेट अकाउट दिखला दिया ।

नन्दो के बारे मे खुद उसकी मां ही अक्सर कहा करती है कि—"कुएँ-समुन्दर की थाह है, पर नन्दो के पेट की थाह नही !" कासगज जाते समय सास दोनो बहुओ को नन्दो की तरफ से चौकस रहने की चेतावनी दे गई थी । छोटी के स्वभाव मे स्यानापन है, बडी दल-दल मे पडी नाव की तरह हर सैलाब के साथ वह जाती है । और नन्दो के सौभाग्य से दोनो के स्वभाव मे एक कुजी समान लगती थी ।

साँस से साँस छूते हुए दोनो जनी कोहनी पर सिर झुकाए बडे रस से बाते कर रही थी । अलिफलैला की कहानियो की तरह रगीन बहुत से किस्से अपने और पराए बताकर नन्दो ने बडी की एक-एक साँस को अपनी मुट्ठी मे कर लिया । नन्दो ने उसे साफ-साफ बतला दिया कि वह कुटनी पेशा करती है । बोली—"अरे मरद निगोडे करते है तो औरते काहे न करै ? जिसको भगवान ने रूप दिया होए, काहे वह न चार गहने और बटोर ले ? औरत को मरद का किसी तरह का बिसुवास न करना चाहिये । और अपनी छाती सदा सोने से तर रखनी चाहिये । औ अपनी जमा-जथा ऐसी रक्खे कि इस हाथ की रक्खी चीज उस हाथ को भी न मिल पावे ।"

तभी बाबू आए, 'कुडी खोलो' की आवाज आई । नन्दो जाकर खोल आई । बाबू के सिरहाने हुक्का भरकर रक्खा । फिर बडी के पास आ गई ।—फिर रसीली बाते चल पडी ।

बातो मे होते-होते बडी से नन्दो ने यह प्रस्ताव भी किया कि अगर वह चाहे तो नन्दो उसका किसी से रिश्ता बैठा सकती है । किसी को कानो-कान खबर न पडेगी । मिलने-मिलाने का इन्तजाम नन्दो करेगी । जो बडी को अपने यार मे मिले उसकी चवन्नी नन्दो को ईमानदारी से दे दे ।

बडी दरद की मारी भोलेपन के साथ अपना विरहेश-प्रेम बयान कर बैठी । नन्दो को एक थाह मिली । उसी समय ऊपर की छत पर किसी के पैरो की आहट होने लगी । दोनो ने ही छत पर धम-धम की आवाज सुनी, भय के मारे एक दूसरे से चिपट गई फिर नन्दो ने शकर को घिघियाते हुए आवाज दी । ऊपर की आहट दौड कर ताई के घर की

तरफ चली गई।

ताई बच्चो को लिहाफ मे दुबकाए मुँह फाडे खुर्राटे भर रही थी। आजकल ताई को देर से नीद आती है। बच्चो के कारण घर मे गदगी बढ गई है। ताई को झल्ला-झल्ला कर बार-बार धोआ-धाई करनी पडती है। बिल्ली के बच्चो के आने के बाद से उनके काम का भम्भड फैल गया। बच्चे ताई को बहुत तग करते है। वह पूजा करने या जप करने बैठती है तो बच्चे उनकी गोदी मे घुम कर सोते है। दूध के समय बच्चे म्याऊँ-म्याऊँ करते है। रात को लिहाफ मे गुत्थम-गुत्था करते हुए ताई के पेट और छाती को कुरुक्षेत्र का मैदान बना देते है।

आज ताई बच्चो को खिलाते हुए बडे लाड से एक को उठा कर, उसकी आँखो मे आँखे डालकर देखने लगी—लगा मानो अदर से बालमुकुन्द झाँक रहे है।

ताई का मन भक्ति मे भर गया, बडे भाव से उन्हे छाती मे लगा लिया। तीनो को पकड कर अपनी चारपाई मे लिहाफ मे ढक कर आप जप करती-करती सो गई। यह उनकी पहली नीद थी।

जब झटके से आँख खुली तो अपने मुँह मे कपडा ठुसा हुआ पाया। साफो से चेहरे लपेटे हुए शातिर आँखो वाले दो आदमियो ने ताई को जकड लिया था। उनका लिहाफ उठा कर नीचे फेका, बच्चो को उसी बेदर्दी से उठा कर फेका, और खूँटी पर टँगे लाल दुशाले मे लपेट कर नई मजबूत डोरी से उन्हे मुर्दे की तरह बाँध दिया, चेहरा उन लोगो ने खुला रक्खा खाली मुह मे कपडा ठूँस कर पट्टी बाँध दी।

ताई की आँखो के सामने उनकी घर की एक-एक चीज फेकी-उछाली गई। चोरो ने 'कुछ खाया, कुछ फेका, कुछ बाँधकर ले गए' वाला हिसाब कर दिया। एक को तलाशी मे ताई का जादू-टोने वाला सदूक मिल गया, उसने बडे प्रेम से सेंदुर की पुडिया डिब्बे के घी मे घोलकर ताई के बँधे हुए मुँह और बालो पर रच-रच कर पोत दिया, उस पर काजल की लकीरे बना और सन्दूक के तिल-जौ छोड कर ताई के चेहरे के सामने रुपये से झनझनाती थैली उछाल कर चले गए।

बिल्ली के बच्चे चारपाई के पास एक दूसरे से सट कर बैठे हुए मुँह उठा कर म्याऊँ-म्याऊँ करने लगे।

१५

वनकन्या को अपने जीवन मे इतनी तेजी के साथ प्रवेश करते देख कर सज्जन किसी हद तक घबराहट भी महसूस करने लगा है। इतने कम समय में, इतनी तेजी से बढते हुए रिश्ते यद्यपि उसके जीवन में अनेक बार आये है, लेकिन उन रिश्तो से

यह नया नारा अधिक मार्मिक है। सज्जन यह महसूस करता है कि कन्या उन अनेक युवतियो की तरह नही जिनकी स्मृतियो का तकिया बनाकर वह अब तक सोता चला आया है। कन्या का आकर्षण उसे बराबर झकझोर कर जगा रहा है। पहले मिलन से ही कन्या उसके लिये कसौटी साबित हो रही है। यार लोग भी छेड-छाड मे कन्या से ही उसके विवाह होने की भविष्यवाणी करते हैं, खुद वह भी कुछ-कुछ इसी तरह सोचता है। इस तरह न सोचने के अलावा उसके पास और कोई चारा भी तो नही है। आखिर वह और किस तरह से कन्या के प्रति बढते हुए खिचाव को अतिम रूप दे सकता है? लेकिन क्या कन्या भी इसी तरह सोचती है? कही ऐसा तो नहीं कि कन्या केवल उसका लाभ ही उठा रही हो और काम निकल जाने के बाद उसे धोखा देकर चली जाय?—इस शका से भी सज्जन का मन कचोट खा जाता है।

परसो रात कर्नल के करिश्मे ने वनकन्या और उसके लेख को चामत्कारिक रूप से प्रसिद्धि की ऊँचाइयो पर पहुँचा दिया। कल सुबह देश भर के तमाम अखबारो मे हवाई करिश्मे के साथ वनकन्या के लेख की चर्चा छपी थी। शहर के अखबारो ने तो काफी विस्तार के साथ नये साल के पहले दिन की उस घटना को महत्त्व का स्थान दिया था। वनकन्या ने कल सुबह आँख खुलते ही नगर में अपनी प्रसिद्धि का चमत्कार देखा। जान-पहचान वाले उसे बडे उत्साह से बधाई देने आये। अखबार के रिपोर्टरो ने उससे इटरव्यू की, उसकी तस्वीरे भी खीची। वनकन्या इन तमाम बातो से बडी उत्साहित और प्रफुल्ल नजर आती थी। दिन भर के व्यस्त कार्यक्रम के बाद जब सज्जन की कन्या के साथ कुछ देर का एकान्त मिला, तब उसने देखा कि कन्या उससे बदल गई है। वह उससे नजर बचाने, कम बाते करने और जल्दी से पीछा छुडाकर भाग जाने के लिये उतावली हो उठी थी। उसके बाद सज्जन के साथ कार पर बाहर निकलने से भी इनकार कर दिया, और अकेली चली गई। सज्जन की इच्छा थी कि दोनो जने साथ घूमने निकलें, 'सारे शहर की चर्चा' कार मे सडको पर, कॉफी हाउस मे उसकी बगलगीर हो—लोग-बाग उसे और उसकी हीरोइन को लेकर चर्चा करे, ईर्ष्या करे। लेकिन कन्या उसके सारे हौसले और मसूबो को धूल में मिला कर चली गई। चलते समय वह एक बात भी कह गई थी—"महिपालजी की 'देवता' कहानी मे एक बडा मजे का वाक्य आया है, शायद आपने पढा भी हो, वह ये है कि ईश्वर जिस भले आदमी को किसी कारण से सजा देना चाहता है, वह उसे देवता बना देता है।" बात इस तरह से कही गई थी कि सज्जन के लिये तीखा व्यग्य बन गई।

सज्जन के लिये कल की पूरी शाम और रात, और आज का सबेरा भी काँटो भरा हो गया है। उसको ऐसा लगा कि मानो वनकन्या भी उसकी उस नीचता को पहचान गई है। जिसके कारण सज्जन खुद बडी ग्लानि का अनुभव कर चुका है। उसे लगा कि शायद कन्या अब न आय—कभी न आये। कल शाम से बेहद उखडे मूड मे सज्जन ने फिर एकात मनाया। टेलीफोन दूसरे कमरे मे भिजवा दिया, किसी से भी—कर्नल, महिपाल और 'ये मेम साहब जो अभी गई है', तक से न मिलने का अपना निश्चय नौकरो को जतला कर कमरे के दरवाजे बन्द कर लिये। उसी कमरे में रहकर उसने बात-बेबात

पर नौकरो को डाँटा, शराब पी, बावर्चीखाने मे मिनट-मिनट पर नई-नई डिशे तैयार करने का हुक्म दे उसने सबको चौका कर चित्त कर दिया। फिर रेडियो और सगीत से जूझा, फिर किताबो से—गीता से, गौतम बुद्ध मे।

गीता मे लिखा है कि काम मे क्रोध जागता है, क्रोध मे बुद्धि-विभ्रम होता है।

बिखरे मन की अटपटी चालो से थक कर सज्जन किसी हद तक इस बात पर थमा। एक बार बडे फुलाव के साथ उसके मन मे यह विचार भी आया कि वह काम को जीत लेगा। वह अपने जीवन से नारी नाम की चीज को ही मिटा देगा।

एक जगह बुद्ध और उनके पट्टशिष्य आनन्द की बातचीत पढी

आनन्द—"भन्ते! स्त्रियो के साथ हम कैसा व्यवहार करेगे?"

बुद्ध—"अदर्शन—अर्थात् न देखना।"

आनन्द—"दर्शन होने पर क्या करे?"

बुद्ध—"बात न करना, आनन्द।"

आनन्द—"बात भी करनी पडे?"

बुद्ध—"होश सम्हाले रखना।"

—सज्जन भी अब से ऐसा ही करेगा। नारी ने उसे बहुत छकाया है। वह अब से होश सम्हाले रक्खेगा। वह ब्रह्मचर्य का पालन करेगा—जरूर करेगा। दुनिया मे बहुतो ने ब्रह्मचर्य का पालन किया है। वह क्यो नही कर सकता? ब्रह्मचर्य हमारी भारतीय संस्कृति का महान आदर्श है। हमे उस ओर भी गति करनी चाहिये। नये अनुभव से शायद उसे नई चेतना मिले—नई दृष्टि मिले! अब हमे अपने जीवन का सही दिशा ज्ञान मिलना ही चाहिये। हमारी सही गति होनी ही चाहिये। किताब उलटते हुए देखा, बुद्ध ने एक जगह कहा है "गतिवान तो हम भी है, पर कहाँ जाना है, इसका पता नही। यदि गतिशीलता हो किन्तु सयम-साधना मे प्रमाद नही, विरक्ति हो किन्तु सेवा-धर्म मे कमी नही, उचित स्वाभिमान हो किन्तु विनय का अभाव नही, सच्चे अर्थो मे क्षात्र धर्म की अनुभूति हो परन्तु शस्त्र ग्रहण नही, तो साक्षात्कार होने मे क्या देर है?' सज्जन को लगा कि वह अपने जीवन की नई राह पा रहा है। और वनकन्या—वह तो एक मुसीबतजदा औरत थी, जो बन पडा सज्जन ने उसकी सेवा कर दी—परोपकार पुण्य है।'

आध्यात्मिक स्तर पर उठकर, तरह-तरह की कल्पनाओ से अपने भावी जीवन के चित्र सजाते हुये सज्जन ने रात गुजार दी। ढलती रात मे झपकी आई। इस समय जागने पर भी, नशा उतर जाने पर भी सज्जन का ब्रह्मचर्य कायम रहा। उसके मन मे यह विचार आँख खुलते ही सुबह का पहला विचार बनकर आया।

आज सुबह एक स्थानीय अंग्रेजी दैनिक पत्र ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी मे कन्या के लेख की तारीफ करते हुए सरकार से इस मामले की जाच करने की माँग की थी। उसने चुनाव लडनेवाली तमाम पोलिटिकल पार्टी से यह अपील की थी कि वे अपनी हार-जीत के लिये मानवता का गला न घोटे। दुनिया चद विश्वासो पर कायम है, यदि वे ही मिट गये तो हर पोलिटिकल पार्टी के ऊँचे-ऊँचे आदर्श निर्जीव हो जायेगे।

सज्जन को कन्या से ईर्ष्या हुई, फिर ध्यान आया कि वह तो अब ब्रह्मचर्य पालन

करने जा रहा है। उसे भला अब कन्या से क्या लेना-देना ?

अपने मन को हठपूर्वक कसकर सज्जन ने दैनिक कार्यक्रम मे मन लगाया। आज वर्षों बाद सज्जन को सहसा मा के मदिर मे जाने की इच्छा हो आई। तमाम नौकरो-चाकरो को भी इस बात पर बडा आश्चर्य हुआ। कोठी के पीछे वाले हिस्से मे सगमर्मर का ठाकुरद्वारा बना है। ये ठाकुरद्वारा सज्जन की परदादी ने अपने कुल के देवी-देवताओ के लिये बनवाया था। विलायत से लौट आने के बाद कन्नोमल की माँ ने अपने पति को न तो कभी अपनी देह छूने दी और न कभी अपने ठाकुरद्वारे मे ही पैर रखने दिया। परम्परा से कुल के ठाकुरो की सेवा सास से बहू को सुपुर्द होती आई और सज्जन की मा के जीवनकाल तक यह नियम निर्बाधरूप से चला आया। सज्जन की मा के समय मे जो पुजारी ठाकुरद्वारे का इचार्ज था, उसी का भतीजा इस समय भी नौकर है। नित्य-प्रति ठाकुरपूजा और चण्डीपाठ हो जाने के बाद वह सज्जन को चरणामृत और आशीर्वाद देने आता है—बस, इतना ही सज्जन का धर्म का सबध रहा है। ईश्वर है या नही इस समस्या पर उसने गभीरता से एक क्षण भी कभी खर्च नही किया। आमतौर पर वह ईश्वर के प्रति खिल्ली उडाने का भाव रखता है। आज जब वह नहाकर सीधा ठाकुरद्वारे मे पहुँचा तो चण्डी पाठ करते, ऊँघते हुए पुजारीजी ऐसे चोक पडे मानो भूत देख लिया हो।

बरसो बाद अपने ही रहने के घर मे, दूमरे छोर पर उसने कदम रक्खा था। उसने सदा मा के साथ इस ठाकुरद्वारे के कमरे को अपनाया था। मा की मृत्यु के बाद पहली बार उस मा विहीन ठाकुर घर मे आकर सज्जन का जी भर आया। कमरा निस्तेज हो रहा था, उसमे बना हुआ सगमर्मर का खूबसूरत ठाकुर मण्डप मैला हो रहा था। मखमल का चँदोवा, उस पर जरी का काम—सब कुछ मैला-मैला, पुराना हो चुका था। चँदोवे को ताने हुए चाँदी के दड सफाई न होने की वजह से काले पड गये थे। निस्तेज वातावरण मे बहुत से ठाकुरो का दल चदन और फुलहारों से सजा हुआ निष्प्राण-सा बैठा था। सज्जन को यह अच्छा न लगा, पुजारी पर क्रोध आया, डाँटकर बोला—"तुम किस धर्म का पालन करते हो जी ? जिस भगवान को सबमे अधिक पवित्र मानते हो उसी को, इतने अपवित्र और गदे तरीके से रखते हो ? इतने अच्छे काम के लिये तुम्हे हराम की तनख्वाह खाते शर्म नही आती ?"

पुजारी के हाथ-पाँव फूल गये। कई बार उत्तर उठाया पर मन की बात कह न सका। तीस रुपया पानेवाला पेशेवर पुजारी ब्राह्मण अपने मालिक के गुस्से के आगे भला कुछ भी कहने की हिम्मत कैसे कर सकता था ?

आज सज्जन ने अपने नौकरो-चाकरो को सफाई करने का आदेश दिया, माली के लिये भी ये फरमान जारी किया गया कि "उससे कहना कि कल से यहाँ के लिये उम्दा फूल, गुलदस्ते और बदनवार वगैरा ठीक तरीके से लाया करे—जैसे माताजी के टाइम मे होता था। यह क्या है कि वह अपनी तमाम फूलो की मेहनत मेरे ही कमरो मे खर्च कर देता है। अगर कल तक यहाँ की हर चीज ठीक न हुई तो सब पर मै पाँच-पाँच रुपया फाइन करूँगा। और पडितजी आप अगर मन लगाकर, ठीक तरह से पाठ नही कर

सकते तो कल से मै दूसरा इन्तजाम कर लूँगा ।"

"नही धर्मावतार—!"

"बकवास मत करो। मै अपने घर मे शुद्ध पाठ चाहता हूँ, पूरी निष्ठा से उसे होते हुए मै देखना चाहता हूँ।"

पुजारी, नौकरो पर अपने रौब का आतक जमाकर सज्जन का मन जब खाली हुआ तो ठाकुरो पर फिर नजर पडी। उसके मन मे कोई आस्था न जागी, सोचने लगा आखिर इसान इन मूर्तियो मे देखता किस को है, रीझता किस पर है ? उसने अपनी दादी को, माँ को यहाँ घटो बैठ कर सेवा पूजा करते हुए या कथा-पुराण सुनते हुए देखा है। उसने अपनी मा को, बिजली के पखे रहते हुए भी घटो ठाकुर जी के लिये पखिया डुलाते देखा है। हिन्दुस्तान के अनेक मदिरो मे जाकर भी उसने केवल वहाँ की कला ही देखी है भगवान को नही । उसने पण्डे-पुजारियो की बदमाशियो और अनाचार को भी खूब देखा है, पर कभी इस बात पर सतर्क ध्यान नही दिया कि आखिर किस जादू से बँधे हजारो लोग ऐसी जगहो मे नित्य खिचे चले आते है । इस समय सज्जन को यह विचार पहली बार आया । वह गभीर हो गया, किन्तु अपने प्रश्न का उत्तर न पा सका। घिसी हुई, पीतल की, बडे-बडे बनावटी निर्जीव नत्र लगाए हुए राधाकृष्ण की बडी जोडी, बहुत-सी छोटी-छोटी जोडियो, बहुत से पत्तरो, शालिग्राम, ि वजी की बटियो, बालमुकुन्द, चाँदी की जलाधारी मे नागधारी शिव, गणेश, मारुति, त.न बडे-बडे ताम्र यत्र, —इन तमाम चीजो मे उसे कोई सत्य न दिखाई दिया । फिर भी करोडो इसान आखिर इनमे क्या देखते है ?

सज्जन के कुछ एकान्त क्षण पूरी सजीदगी के साथ गुजरे, उनका उन पर प्रभाव भी पडा। सोचने लगा अब यहाँ रोज आया करूँगा—और कुछ नही तो इसे अपने चितन का कमरा बना लूँगा—नियम से आऊँगा । सज्जन को विश्वास था, इतना अनुशासन वह अपने ऊपर कर सकता है।

सज्जन आज सबेरे से एक जिद लेकर उठा है, उसके मन मे तप-तप कर यह निश्चय क्रमश ढल रहा है कि वह नारी के सबध मे अपने विचारो को अब भटकने नही देगा। कन्या अगर उसके जीवन मे आयेगी भी तो वह उसे एक साधारण मित्र की नजर मे देखेगा। हठ के साथ वह उसकी ओर से अपना मन खीचे रहेगा ।

आज जब अपने चौकवाले स्टूडियो के लिये चला तो दो नौकर और बाल्टियाँ वगैरह भी साथ ले ली, बहुत से फूल और गुलदस्ते वगैरह भी रख लिये । आज वह अन्दर बाहर हर तरफ सफाई करने पर तुला हुआ था—नशे के बाद भी वह अपने जुनून को गर्माये रखने की कोशिश मे लगा हुआ था।

नौकरो के साथ पहली बार ही वह अपनी कोठरी मे आया था, अब तक केवल ड्राइवर ने ही यह जगह देखी थी। बँगलो के नौकर सूँघते हुए गौशाला के छत्ते मे अपने मालिक के पीछे-पीछे बढने लगे। जीने चढते हुए एकाएक ताई के घर के खुले हुए दरवाजो पर नजर गई, नौकर के सिर पर फूलो का डला देखकर इच्छा हुई कि लाओ, ताई के

ठाकुरो के लिय उन्हे कुछ फूल दिये जायँ। शायद वह खुश हो जायँ। नौकरो को ताली देकर, कमरा धोने, साफ करने का आदेश दे, और आप छोटी-सी बाँस की डलिया मे फूल लेकर ताई के घर की तरफ चल पडा। दहलीज मे प्रवेश करते हुए विचार आया कि गालियाँ खानी पडी तो ? फिर सोचा कि खालेगे।

आँगन मे बिल्ली के तीन छोटे-छोटे बच्चे एक लाइन मे बैठे हुए थे—उसे देखते ही एक स्वर मे जोर से म्याऊ-म्याऊँ कर उठे। सज्जन का आँगन मे एक कदम चलना दुश्वार कर दिया। सज्जन को यह डर रहता था कि कही कोई कुचल न जाएँ। वे उसके पैरो के इर्द-गिर्द म्याऊँ-म्याऊँ का शोर मचाते हुए उसे बेडियो की तरह जकडे लेते थे।

सामने दालान मे जरा ओट लेकर अपनी चारपाई से बँधी हुई ताई नजर आई। सज्जन एकाएक चौक पडा, उनका तमाम चेहरा हनुमानजी की तरह सेदुर से पुता हुआ था, मुँह पर पट्टी बँधी हुई, गालो और कपाल पर, काजल की लकीरे—लाश की तरह बँधा हुआ ताई का यह शरीर, भयानक तात्रिक मेकपवाला रूप देखकर सज्जन को एक बार यह विश्वास हो गया कि ताई मर चुकी है। लाश के पास जाते हुए उसे झिझक महसूस हुई। इतने मे ताई का सिर डोला, गहरे मेकप मे फटी हुई सफेद आँखे चमक उठी। सज्जन फोरन ही पास गया। उसने उनके मुँह पर बँधी हुई पट्टी खोली, मुँह मे ठूँसा हुआ कपडा बाहर निकाला, ताई के जबडे जकड गये थे, बडी देर तक ज्यो के त्यो खुले रहे। सज्जन ने ताई के बधन खोले, उनके ठडे हाथ-पैरो और जबडे को वह तेजी से मलने लगा।

ताई थोडी देर मे कुछ चैतन्य हुई, अपने जबडो मे पडे हुए तालो की परेशानी से ताई अब भी जूझ रही थी। सज्जन उनके गले मे मालिश करता हुआ जबडे को ठीक बैठाने की कोशिश कर रहा था। ताई अदर से बोलने के लिये किटकिटा रही थी। खटिया के दोनो पायो पर हाथो का जोर देकर ताई उठकर बैठ गई। उन्होने सज्जन को हल्के हाथ से ढकेल दिया।

सज्जन ने कहा, मै डाक्टर बुलवाता हूँ ताई। ताई ने हाथ हिलाकर मना किया। आँगन मे म्याऊँ-म्याऊँ चिल्लाते हुए बच्चो की ओर हाथ उठाकर अपने खुले हुए जबडो वाले विवश कण्ठ से स्वर निकालना शुरू किया।

सज्जन कुछ न समझा। बोला—"मै अभी सेकने का इन्तजाम करता हूँ, जरूरत पडेगी तो डाक्टर भी बुलवा लूँगा।"

ताई आँगन की ओर हाथ उठाकर शब्दविहीन स्वर मे कुछ कह रही थी, जिसे कुछ और समझ कर सज्जन ने जवाब दिया—'मै आपका बच्चा हूँ। मुझसे सेवा करामे मे जरा भी सकोच न कीजिये।"

ताई फिर आँगन की ओर हाथ उठाने लगी। सज्जन नौकरो को बुलाने के लिये बाहर चला गया। —इस बार चौतरिया-चौतरिया गया। बच्चे आँगन मे शोर मचाते रहे।

जब सज्जन अपने एक नौकर के साथ स्टोव लेकर वापस लौटा तो ताई चारपाई

पर बैठी हुई हाथो से अपना सिर और निचला जबडा पकड कर हिलाने की कोशिश कर रही थी। सज्जन नें लगातार मालिश की, अपने और नौकर के मफलरो को स्टोव पर गरमा कर सेक किया। ताई ने अपनी लोदा ऐंठी जबान उठाकर पहला शब्द उच्चारित किया "दूध।" सज्जन ने ताई की दूध पीने की इच्छा जानकर फौरन ही नौकर को बाजार से सेर भर दूध ले आने को भेजा। ताई आँचल के कोने से पैसे खोलती ही रह गई।

ताई थोडी देर तक उसे देखती रही, फिर थके हुए स्वर मे धीरे से कहा "कन्नोमल के पोते!" फिर सास ली और कहा—"नन्दो का बाप था!" कहकर ताई फिर थक गई। उनका काजल सेदुर से रँगा, तिलो से चिपका हुआ चेहरा सज्जन के मन मे एक अजीब कल्पना उठा रहा था। उसे लगता था मानो वह किसी आदिम जाति की पुरोहितानी से मिल रहा हो।

ताई फिर उठी, उठकर आँगन की तरफ बढने लगी। सज्जन उन्हे सहारा देकर चलने लगा। ताई ने दो बार मना भी किया परन्तु सज्जन उनके साथ ही साथ सहारे दिये चलता रहा। चबूतरी पर बैठ कर, बच्चो को अपने आँचल मे भरकर ताई बैठ गईं। फिर सज्जन की तरफ देखकर अपनी धोती की खूंट खोलकर पैसे निकालते हुये ताई मे कहा—"दूध मँगवा दो।"

"मँगवाया तो है ताई।"

"इनके लिये मँगवा दो।"

नौकर के लौट आने तक सज्जन चुपचाप ताई की ओर देखकर यह सोचता रहा—ताई जिसे सब बुरा कहते है, जो हरदम गालियाँ और कोसने दिया करती है, टोने-टोटके किया करती है—हर एक से घृणा किया करती है,—वह ताई इन बिल्ली के बच्चो के लिये न जाने कब से फडफडा रही थी। उन्हे सबसे पहले उन बच्चो की भूख की चिता हुई। सज्जन सोचने लगा, पत्थर भी पिघलना जानता है। मनुष्य के जीवन मे इतना सौन्दर्य जाने कहाँ छिपा रहता है? —और इस सौन्दर्य का धनी होकर भी मनुष्य अपने चारा ओर घृणा, क्रूरता और हिंसा का जाल क्योकर बुन लेता है—यह सज्जन की समझ मे न आया। फिर भी ताई उसके लिये श्रद्धा का विषय बन गई थी।

बच्चे ताई की गोदी मे घुसकर सोने के लिये एक दूसरे से मीठा झगडा कर रहे थे। दो को तो आराम की जगह मिल चुकी थी, एक ताई के हाथ से चढता हुआ उनके कधे पर बैठकर आँखे मीचे हुए झपकी लेने का प्रयत्न कर रहा था, ताई की गर्दन स्नेह से उस पर झुकी हुई थी। कागज-पेंसिल के लिये सज्जन का जी मचलने लगा। इस मनहूस मेकप मे ताई जितनी भयकर लग रही थी, उतनी ही बच्चो के सग से करुणामयी।

नौकर दूध लेकर आया। ताई बच्चो को आँचल मे भर कर उठी, उनके दूध के ढक्कन मे दूध डलवाकर ताई ने सज्जन से कहा—"अब तुम जाओ।"

"थोडा-सा दूध आप भी पी लीजिये ताई?"

"मेरे तो दरसन भी रह गये मरे—कम्मखत के घर भर को हैजा होय। तुम अपना दूध ले जाओ। जाओ!"

भूखे बच्चे उतावली से ढक्कन का दूध चट कर रहे थे। सज्जन और उसके नौकर के जाने के बाद ताई ने घर का दरवाजा बद किया और बडी उतावली के साथ अपने घर की कोठरियो मे घुसकर चोरो द्वारा उलटाई गई चीजे, सदूक वगैरह देखने लगी। ठाकुर जी के आले म गडी हुई उनकी जमा सुरक्षित थी। ताई की जान मे जान आई। अपने रिजर्व बैंक को सुरक्षित पाकर ताई अपने दूसरे छोटे-मोटे बैको की जॉच करने लगी। चक्की उखाड कर उसके नीचे दबी हुई हँडिया खाली की जा चुकी थी। चूल्हा धन की लालच में मुफ्त ही फोडा गया था। दालान की अंदर वाली बडी कोठरी मे चोरो ने धन पाने की लालच में चारो कोने खोल डाले थे। लालटन जलाकर ताई ने धन्नियो मे बँधी हुई रुपयो की पोटली भी देखी—वह नही मिली। ताई बडी देर तक सिर पर हाथ रक्खे गहरे सोच मे बैठी रही। बिल्ली के बच्चे पेट भर जाने पर कुलाचे भर रहे थे।

चोरो द्वारा नष्ट की गई अपनी गृहस्थी को फिर से ठीक कर, रसोई वाले दालान मे फेके गए अनाज, मसाले के कनस्तरो और फूटे मटको को ताई ने सहेजा, घर धोया, नहाई और ठाकुरजी की पूजा की, सज्जन द्वारा लाये गए फूल चढाये। फिर दरवाजे पर ताला लगाकर सज्जन की कोठरी मे जा पहुँची। नौकरो ने [illegible] और छत धोकर साफ कर दी थी, हर चीज करीने से सजाई जा चुकी थी, फूलो के गु[illegible] [illegible]मरे को रगीन बना रहे थे। सज्जन बैठा ताई का ही स्केच कर रहा था। दरवाजे प[illegible]ई को खडे देखकर सज्जन हडबडाकर उठ बैठा—"आइये ताईजी।"

ताई का चेहरा चिता से कठोर हो रहा था, बोली—'मेरा तीन हजार और छै बीसी रुपया चुरा ले गए निगोडे। अरे, इनके रोएँ-रोएँ से कोढ बनके मेरी पाई-पाई बाहर निकलेगी, तुम देख लेना।"

सज्जन ने समझा कि चोर ताई की सारी जमा उठा ले [illegible]। उसने ताई को सात्वना दी। एकाएक वो उससे पूछ बैठी—"तेरा ब्याह हो गया कन्नोमल के पोते ?"

"अभी नही।"

"मेरे यहॉ गोकुलद्वारे मे एक जने आवे है। दस्से है, अपनी बिरादरी के। उनकी लडकी है, बडी सुन्दर, सारे काम-धाम मे हुसियार है। छठे तक अँगरेजी भी पढाई है घर मे। तू कहे तो बात चलाऊँ।"

सज्जन ने हँसकर कहा—"नही ताई जी, अभी तो शादी नही करूँगा।"

"अभी नही करेगा तो क्या बुड्ढा होकर करेगा ? कन्नोमल निगोडा तो धरम-भिरष्ठ था—तू भी वैसई है।"

सज्जन ने हँसकर कहा—"नही ताई, मै तो बडी पवित्रता से रहता हूँ।"

"रोटी कोन करेहैगा, महाराज कि होटल मे खावे है ?"

"महराज बनाता है ताईजी। कभी-कभी मैं भी बना लेता हूँ।" ताई के सामने अपनी पवित्रता का वणन करते हुए सज्जन को मन ही मन बडी जोर से हँसी छूट रही थी। ताई बोली—"तू जा रामचदर की लडकी से ब्याह करने को राजी होवे तो मैं—(आगे खिसककर बहुत धीरे से) सौ तोले सोना चढाऊँगी तेरी बहू को। देख, कोई मुझे चाहे जित्ता लूटने की कोमस करे, पन गोकलनाथ जी महराज मेरी रच्छा करें

है। एक-एक का बस नास कर दूँगी निगोडो का।   पर तू ब्याह करले कन्नोमल के पोते। मौ तोले—'

सज्जन और ताई ने सिर उठाकर देखा—दरवाजे पर कन्या थी। सज्जन घबराया, अपने कारण भी और ताई के कारण भी। ताई उसे परीक्षक की कठिन दृष्टि से देखती रही। कन्या आकर सामने चटाई पर बैठ गई। ताई ने पूछा—"जे कौन है ?"

सज्जन मुश्किल मे पड गया। वह जानता था कि कुमारी ओर विजातीय बतलाने पर ताई कन्या और सज्जन दोनो से ही फिरट हो जायेगी। कन्या के सामने आ जाने से सज्जन का मन डावाडोल होने लगा था। एकाएक उत्तर देने की हडबडी मे सज्जन कहने लगा—"ये अपनी ही बिरादरी की है ताई।"

"किसकी लडकी हो ?"

"ये ये ताई—इनका मैका बाहर है।'

"तो यहा ससुराल है इसकी ? कौन के यहा ?"

सज्जन नही चाहता था कि कन्या कुछ उत्तर दे और इसीलिये वह झूठ पर झूठ गढता चला जाता था। ताई के प्रश्न ओर कन्या की उपस्थिति से घबराहट के मारे उसे सोचने का अवसर नही मिल रहा था। अचानक कन्या के चूडी विहीन हाथो से स्फूर्ति लेकर सज्जन ने कहा—"ये यहाँ स्कूल मे पढाती है ताई जी। इनके ससुराल वाले सब मर गए है।"

"तेरे पास क्या करने आवे है ?"

"काम सीखने आती हूँ माजी।" कन्या ने समझा कि ताईजी सज्जन के निकट की रिश्तेदार है। वह सज्जन की घबराहट का आनन्द लेती हुई ताई को उत्तर से सतुष्ट करने लगी।

ताई एकाएक सज्जन से पूंछ बैठी—"तो क्या विधवा ब्या करेगा इसके साथ ?"

"न-न ताईजी, मै तो इनका मास्टर हूँ, दस रुपये महीने पर पढाता हूँ।"

ताई कुछ न बोली, चुपचाप बैठी सोचती रही फ़िर उठते हुए कहा—"तू सोच ले कन्नोमल के पोते।—मैंने तुझसे बात तो कही है सो। और किसी के अगाडी कहियो मती।"

"नही ताई जी, और आप कहिये तो पुलिस मे रिपोर्ट करा दूँ।"

"ताई बोली—"पुलस-वुलस की जरूरत नही है। मै आप समझ लूँगी निगोडे से। कहकर ताई धीरे-धीरे बाहर चली गई। उनके जाने के बाद कन्या ने पूछा "ये कौन है ?"

सज्जन ने हँसकर कहा—"भारतमाता।"

कन्या उसके उत्तर से कुछ समझ तो न पाई, फिर भी इस खबीस-सी बुढिया मे भारतमाता की कल्पना से उसे हँसी आ गई। पूछा—"आपने इनसे मेरे बारे मे इतना झूठ क्यो कहा ?"

सज्जन प्रश्न सुनकर अचकचा गया, फिर सम्हलकर उत्तर दिया—"अगर सच कहता तो तुम्हारे —आपके बारे मे इनकी धारणा कुछ अच्छी बनती।"

सज्जन के 'आप' कहकर पुकारने पर वनकन्या ने ध्यान दिया। सज्जन भी अपने

नये निश्चय और कन्या के सहज आकर्षण से लडखडा रहा था । उसकी नजरे नीची थी और मुखमुद्रा, गभीर और विचारपूर्ण । कन्या सोच रही थी, सज्जन शायद कल की बातो से कुछ नाराज हो गया है । उसकी नाराजी को नजरअदाज कर कन्या ने कहा—"मैं कर्नल भाई साहब के यहाँ से आ रही हूँ ।"

सज्जन सिर उठा कर उसे देखने लगा । कन्या कहने लगी—"आज सुबह ही सुबह मथुरा से एक सज्जन—(हल्का सा हँसकर) कर्नल भाई साहब के साथ मेरे रहने की जगह तलाश करते हुए आ गए थे ।"

सज्जन का मन तब तक व्यवस्थित हो चुका था । उसने किसी हद तक बनकर पूछा—"उन्हे तुम्हारे—आपके घर का पता कैसे मालूम हुआ ?"

"कल अखबारो मे खबर पढकर वे चले आये । पहले मेरे घर गए, वहाँ से झिडकी खाई । फिर किसी ने उन्हे कर्नल भाई साहब का नाम बतलाया । और इस तरह वो उन्हे साथ लेकर मेरे पास पहुँचे ।" कहकर कन्या ने अपने बैग से एक चौकोर मुडा हुआ कागज निकाला । उसे खोलकर आगे बढाते हुए उसने कहा—"ये भाभी की चिट्ठी है जो उन्होने अपनी एक सखी को लिखी थी ।"

सज्जन पत्र पढने लगा । काफी हद तक मँजी हुई जनानी लिखावट मे लिखा यह पत्र बडा ही करुणापूर्ण था— 'मै राक्षसो के पाले पड गई हूँ । त्रिभुवन लालाजी की औरत मे खोट है । वो मुझसे विधवा विवाह करने को राजी हो गये थे । अम्माजी विवाह के लिये तो राजी नही थी पर चाहती थी कि मेरे साथ त्रिभुवन को बाँधकर वो उन्हे अपने वश मे कर ले । इस घर की लीला तो पूछो मत बहन । किस-किस की बुराई करूँ । त्रिभुवन मन के भोले है । उन्होने अपनी सच्चाई मे घर भर के सामने मुझसे विवाह करने का ढिंढोरा पीट दिया । चाची, चाचाजी मुझे मारने आये । मुझे बचाने के लिये अम्माजी पर भी मार पडी । और चाचाजी ने—उस राक्षस को चाचाजी क्या कहूँ—मार-पीट कर जोर-जबर्दस्ती से मेरा सब कुछ लूट लिया । नन्ही मेरे लिये तो कही मरने की भी ठौर नही । घर मे मेरा कोई सहाय नही । भगवान भी झूठा हो गया है । त्रिभुवन का बाप के आगे कुछ बस नही चल पाता । कन्या बीबीजी मेरा पक्ष लेती है, पर वो बेचारी भी क्या करे । मन का हाल तुम्हे लिखकर मन हल्का कर रही हूँ । पर तुम मुझे उत्तर न देना । कही इन राक्षसो के हाथ चिट्ठी पड गई तो मेरा जीना मुश्किल कर देगे ।"

पत्र को एक बार पढकर सज्जन ने दुबारा पढा, तिबारा पढा, उसी पर नजर गडाये रहा । कन्या बोली—"कर्नल भाई साहब ने कहा है कि इससे बाबू फौरन फँस सकते है । वो मुझे मैजिस्ट्रेट के यहाँ लिये जा रहे थे । मैने कहा कि पहले आपसे पूछ लूँ ।"

सज्जन को फिर झकोला लगा, अपने को सम्हाल कर नीची नजर किये हुए उसने कहा—"कर्नल ने ठीक सलाह दी, आप मैजिस्ट्रेट के यहाँ चली जाती और वो साहब कौन थे जो आप से मिलने आये थे ?"

सज्जन के नये रुख को पढने का प्रयत्न करते हुए बराबर उसकी ओर देखते रहकर दाँत से नाखून चबाते हुए कन्या बोली—"भाभी की इन्ही सहेली के पति है । वो सहेली

बेचारी पैरालिटिक है। छै महीने से उठ बैठ भी नही सकती। य लोग मुझे पूरी मदद देने को तैयार है। वो तो यहाँ तक कहते है कि यहाँ से कोर्ट के आर्डर्स लेकर वो मथुरा मे अपनी पत्नी का स्टेटमैन्ट भी दिलवा सकते है—अगर मैं—हम लोग चाहे।"

सज्जन बोला—"तब फिर आप क्या चाहती है ?'

"जैसा आप कहे।"

जेब से सिगरेट निकालते हुए, मुंह पर दार्शनिक भाव लाकर, उसे एक नजर देख सज्जन ने कहा—"मै क्या कहूँ, य तो आपका मामला है—"

"सिर्फ मेरा ही ? इसानियत का नही ?"

"नही, मेरा मतलब दूसरा था। आपके पिता का, परिवार की प्रतिष्ठा का मामला है—"

"पिता की प्रतिष्ठा !" कन्या तीखी पडी, बोली—"उन लोगो की इज्जत से मुझे कोई वास्ता नही। मै उनसे भाभी का बदला लेने पर तुली हुई हूँ। वो तो कल से मेरे पीछे पडे हुए है। मेरी नाक काटने के लिये गुण्डे लगा दिये है।"

कन्या के प्रति सज्जन के सब विरोधी भाव पलक मारते उडछू हो गए, घबराकर बोला—"उन्होने तुम्हे किसी किस्म का नुकसान तो नही पहुँचाया ?"

कन्या बोली—"कल रात करीब आठ बजे बाबू मेरी कोठरी के दरवाजे पर आकर खूब गरजे। सब के सामने मेरे लिये बुरी-बुरी बाते कही। नाक कटवाने की धमकी दी। मैंने दरवाजे न खोले—"

"फिर ?"

"फिर वो चले गए। उसके बाद उन्ही के लगाए गुण्ड मेरे दरवाजे पर खटखट करते रहे आवाजे-तवाजे फेकते रहे। उस हाते मे सब कहार मजदूर ही रहते है, उनमें बहुत से पैसे, और शायद सालिगराम के प्रभाव से भी मेरे दुश्मन बन गए है। आज सुबह उस अहाते मे रहने वाली दो-तीन महरियाँ, महरे, यहाँ तक कि बच्चे भी मेरी कोठरी के पास से आते-जाते मुझे परेशान कर जाते थे। वो तो कर्नल भाई साहब ने आकर और तब से अभी तक वहाँ गई भी नही हूँ।" कन्या की आँखो मे फिर झलझला आ गया। सज्जन की करुणा फिर घुलने लगी। उत्तेजित होकर बोला—"आप वहाँ रहती ही क्यो है ? इतनी बार कह चुका। आपका खयाल है कि शायद मै औरो की तरह जलील और आवारा हूँ—"

"मैंने ऐसा कभी नही सोचा।"

"तब और क्या सोचती है। खुद मेरा इतना बडा मकान है। पूरे मकान में तो रहता नही मै। आप चाहे तो एक हिस्सा पूरी तौर पर आपके लिये अलग कर सकता हूँ। अपनी तरफ से दीवाल तक चुनवा लूँगा और क्या चाहिये आपको।" कन्या एकाएक हँस पडी। बोली—"आपका गुस्सा भी कितना बेमानी है। पर मुझे बुरा नही लगता।"

सज्जन कन्या के इस तरह हँसने और जवाब देने पर एकाएक सहम गया, छोटा महसूस करने लगा। इस समय उसकी मानसिक परिस्थिति ऐसी थी कि न तो वह अपने रात भर के निश्चय के अनुसार उससे पूरी तरह अलग ही महसूस करता था, और न वह

अपनापन ही दे पाता था जो इधर कुछ रोज से उसके व्यवहार मे आ गया था । हैरत के साथ वह कन्या की नजरो को देखने लगा—वही पहले जैसी निकटता और दूरी का सम्मिलित आभास ।

कन्या फिर बोली—"उस बडी कोठी के किसी हिस्से मे किराया देकर रह सकूं इतनी हैसियत मेरी नही । और मान लीजिये मेरा मन रखने के लिये आप उसका किराया दस रुपया बतलाये तो क्या वह गलत न होगा ?"

सज्जन बोला—"मै अपने किराये के मकानो मे से कोई मकान आपको नही दे रहा हूँ । इस समय कोई खाली भी नही है । मै तो एक दोस्त के नाते आपकी मुसीबत मे काम आना चाहता हू । मुझे आपसे कोई बदला नही चाहिये । कम से कम इस उलझन और परेशानी से आप इस वक्त बच जायेगी । और अभी तो कुछ नही मान लीजिये इस खत के ऊपर आप कोई कानूनी कारवाई करे, उस समय आपको वहाँ रहकर हर वक्त खतरा बना रहेगा ।"

"आप मुझे 'तुम' कहने लगे थे फिर अब 'आप' क्यो ?"

"इसलिये कि देवता हो गया हूँ !" सज्जन ने व्यग्य मे कहा । कन्या सुनकर चुप रही, सिर झुका लिया ।

चद सेकेण्ड खामोशी छाई रही । एकाएक खखार कर कहा—"एक बात कहूँ ?" और उसकी आँखे सज्जन की नजरो से लग गईं । सज्जन ने उसे देखते हुए कहा—'क्या?"

कन्या ने एक बार पलके झुकाईं । चेहरा अधिक गभीर, कुछ लाल भी हो गया । फिर सिर उठाकर बोली—"मै जब आपसे मिली थी तब मेरे मन मे कोई भावना न थी, सिवा एक अच्छे काम मे अच्छे आदमी से मदद पाने की इच्छा को छोडकर । लेकिन आपने जितनी तेजी के साथ हमारी मुलाकातो को जिस रग मे रँगा है, वह—वह— मुझे खास बुरा न लगकर भी चौंकाने वाला लगा ठहरिये, मुझे अपनी बात कह लेने दीजिये—मै आपको बुरा आदमी नही समझती, पर माफ कीजियेगा, यह जरूर महसूस करती हूँ कि आप दोस्त से ज्यादा मुझे और कुछ मान रहे है, या मानना चाहते है । मै उस रुख को नही समझ पाती ।"

सज्जन पर कन्या की इस स्पष्टवादिता का गहरा असर पडा, बोला—"जिस तरह तुम सचाई पर जोर दे रही हो, उसी तरह मै भी कहूँ ? क्या तुमने मुझे कुछ और मानने मे मदद नही दी ?"

कन्या की आँखो मे लाज झुक आई । सज्जन कहने लगा—"अपने बारे में यह कह सकता हूँ कि अगर मै पूरी तौर पर सच्चरित्र नही, तो दुश्चरित्र भी नही हूँ । और जो कुछ तुम्हे मानता हूँ या कहना चाहिये कि कल तक मानता था उसके लिये इतनी जल्दी कुछ भी कहना गलत होगा । बहरहाल, अगर मुझसे कुछ गलती हुई है तो माफ कर दो । मुझे ये साबित कर दिखाने का मौका दो कि मै औरतो की इज्जत करता हूँ ।

"आपके लिये मेरे मन मे जरा भी अविश्वास नही । अब और भी नही रहेगा । आपको पाकर मैंने अपने जीवन मे एक नया विश्वास पाया है ।"

सज्जन का मानसिक आदर्श फिर लडखडाने लगा । कन्या को उसने इतनी तीखी

मर्मभेदी दृष्टि से देखा कि वह भी स्थिर न रह सकी। सम्हल कर बोली—"इस चिट्ठी के लिये क्या करना होगा ?"

सज्जन ने अपने को सम्हालते हुए उत्तर दिया—"चलो, कर्नल के यहाँ चलते है। मेरी समझ मे तो आज ही इस पर कोई न कोई कार्रवाई हो जानी चाहिये।" उठते हुए उसने फिर कहा—"लेकिन अब से तुम रहोगी कहाँ। मै तुमको वहाँ तो रहने ही नही दूगा।"

कन्या चुपचाप बैठी पैर का अँगूठा कुरेदती रही। फिर कहा—"आज कही भी रह सकती हू—आपके यहाँ, कर्नल भाई साहब के यहाँ। कल तक कोई प्रबध करना होगा—आपको ही करना होगा।"

सज्जन कुछ सोचकर बोला—"अपनी केसरबाग वाली बिल्डिंग मे एक मजिल चढ़ाने की इजाजत मुझे मिल चुकी है, नक्शा वगैरह सब पास हो चुका है। मैं फिलहाल तुम्हारे लिये एक फ्लैट जल्द बनवा दूगा। तब तक—"

कन्या उसे देख रही थी। सज्जन ने एकटक उसे देखते हुए अपनी बात पूरी की—"तब तक तुम मेरे यहाँ ही रहो। कर्नल के यहाँ मुझे कोई एतराज तो नही, पर उसकी बीबी पुराने खयाल की है। मै नहीं चाहता कि कोई भी तुम्हारे बारे में बुरा खयाल करे।"

"मगर आपके यहाँ रहने से दुनिया क्या मुझे छोड देगी ? कल मेरे पिता तक ने तो ताना कस दिया। खैर ! मै आपकी बात मानूँगी।"

प्रसन्नता के आवेग में सज्जन फिर अपने को भूल गया, उसका जी चाहा कि कन्या को अपने अक पाश मे भर ले। जाहिरा तौर पर सज्जन सज्जन ही बना रहा। बुद्ध का वाक्य उसके कानो में गूँजने लगा "होश सम्हाले रखना आनन्द !"

१६

सज्जन के दैनिक कार्यक्रम में आज से एक नया परिवर्तन आया। कर्नल के घर से नाश्ता करने के बाद वह चौक आने के बजाय अपनी कोठी चला गया। देवताओ की तरफ मालिक का रुख बदल जाने के कारण कल दोपहर से ही नौकरों की बटालियन परम-भगवद्-भक्त हो गई थी। इस समय ठाकुरद्वारा दूल्हे के चेहरे की तरह चमचमा रहा है। टूल के गिलाफो में बँधे हुये झाड-फानूस खोल कर साफ किये गये है। चँदोवे को ताने हुए चाँदी के डण्डे चमचमा रहे है। ठाकुरजी के मडप मे दोनो ओर सगमर्मर के खम्भो पर बनी हुई मोरछलधारी स्त्रियो की मूर्तियाँ कल की अपेक्षा अधिक साफ है। माली ने भी अपना कर्तव्य दिखाने मे कोई कसर बाकी नही रक्खी। गेंदे के बदनवार और जालियाँ मडप की शोभा बढा रहे है। आज पडितजी भी समय से पहले आकर ठाकुरजी को स्नान और शृगार कराने के बाद बडे भक्ति-आडम्बर के साथ 'ॐ जय

जगदीश हरे। भक्तजनो के—भक्तजनो के सकट छिन मे दूर करे' की आरती गा रहे है। तभी पुजारी के लिये सकट समान सज्जन ठाकुरद्वारे मे पहुँचा। पुजारीजी के हाथ-पैर फूल गए, जैसे-तैसे आरती पूरी हुई। सज्जन एकटक खडा देखता रहा। उसे महसूस हुआ कि मानो उसकी मा स्पिरिट के रूप मे उस जगह मौजूद है, और उन्हे सज्जन के यहाँ आने से बडी शाति मिली है। पडितजी चाभ-चाभ कर शब्दो का उच्चारण करते हुए ऐसी हडबडाहट से पाठ कर रहे थे कि सज्जन को हँसी आ गई। सोचने लगा, ये धम का टुटपुँजिया दलाल ब्राह्मण भला कैसे सच्ची निष्ठा पा सकता है ?

अपनी सच्ची निष्ठा पर गौर करता हुआ वह अपने चितन मदिर से जब बाहर आया तो उसे एक चिट पर बाबू सालिगराम जायसवाल और लाला जानकीशरण के नाम मिले। सज्जन ने नौकर से पूछा—"कितनी देर से बैठे है ?"

"करीब बीस मिनट से बैठे है सरकार !"

"चाय पहुँचाई ?"

"जी सरकार !"

सज्जन ने फिर पूछा—"उनसे क्या कह दिया था ?"

"कहा था कि सरकार पूजाघर मे है।"

"ठीक है।" सज्जन सतुष्ट होकर कपडे बदलने गया।

जब ड्राइग-रूम मे पहुँचा तो दोनो साहबो ने बडे गलगले के साथ सज्जन का उसके ही घर में स्वागत किया। बाबू सालिगराम से उसका परिचय नही था। लाला जानकीशरण से जरूर उसकी रामजुहार थी—वह भी राजा साहब के पडोसी, और कन्नोमल के पोते होने के नाते।

सज्जन ने हाथ जोडकर क्षमा माँगते हुए कहा—"आप लोगो को इन्तजार करना पडा।"

दुबली, सधी हुई देह, पतले होठ, पतली मूँछें और पतली नाकवाले, अधेड उम्र के लाला जानकीशरण बोले—"अरे, नही नही। बल्कि हम तो, सच मानो भैया बडे ही खुश हुए कि तुम पूजा भी करते हो।"

भूरी मूँछोवाले, उजली टोपीधारी बाबू सालिगराम अपने चश्मे से झाँकती हुई आँखो को दीनता से सिकोडकर हँसते हुए बोले—"अरे साब खानदानी आदमी है, और फिर इतने बडे महान् कलाकार है हमारे भारतबर्स हमारी इडिया के। और ये कला तो सरस्सतीजी के बरदान से आती है—भला ये पूजा न करेंगे ? हि-हि-हि !"

चाँदी की नक्काशीदार मूठवाली लकडी पर दोनो हाथ टेक कर सीधे बैठते हुए लाला जानकीशरण ने कहा—"हमको तो भाई बडी खुशी है कि अपने आपुसदारो में तुमने इतना नाम पैदा किया। अब हमारे मुहल्ले मे भी काम कर रहे हो। एक दिन राजा साहेब भी खुद मेरे घर पर आकर तुम्हारे बारे मे कह गये थे। यो भी अक्सर पूछ लिया करते है।"

"वो मेरे बुजुर्ग हैं, हमेशा ही मेरा ध्यान रखते है।" सज्जन ने चेहरे पर, आवाज

मे कृतज्ञता का भाव प्रकट किया ।

बाबू सालिगराम ने कहा—"हम इनके दोनो मित्रो को तो अच्छी तरह से पहचानते है, बाकी इनका तो नाम ही सुन रक्खा था—सज्जनजी तो पूरे सज्जन ही निकले । हे-हे हे-हे !"

"हम भाई आज एक परस्ताव लेके आये है तुम्हारे पास । हमने इनको भी राजी कर लिया है—सालिगराम को । हमने इनसे कहा कि राजनीति तो हरदम चलती ही रह है कुछ जनता मे ठोस काम भी होना चाहिये । तो ये मान गये । अब हमने सोचा कि एक बार तुमसे भी सलाह ले ली जाय । शुकलाजी और कर्नल साहब से तो मेरे भी पुराने रसूख है । तुम्हारी राय मिल जायगी तो फिर आगे की कार्रवाई की जायगी ।"

लाला जानकीशरण ने अपनी बात तरतीब से खोल दी । सज्जन फौरन समझ गया कि यह हवाई पैम्फलैट का प्रताप है । मन से सतर्क होकर ऊपरी सरलता के साथ वह बोला—"मै हर अच्छे काम मे आप लोगो के साथ हूँ । कहिये, क्या करना होगा ?"

बाबू सालिगराम ने कहा—"हम तो साहब राजनीत के कीडे है । हम तो एक ही विषै—भासण देना और मीटिंग करना जानते है । अब आप बतलाइये कि ऐसा क्या उपाय करना चाहिये जिससे पब्लिक का ज्ञान बढे ।"

"हाँ भाई, तुम तो सब कुछ घूमे पढे हौ । ऐसा कोई उपाय निकालो कि जिससे जनता पर असर पडे । हम ने तो इनसे कहा कि ये जो खिलौनो वाली नुमायस निसातगज मे हुई थी, उसी का कुछ भाग मुहल्लो-मुहल्लो में घुमा दो—"

"उससे कोई खास फायदा नही होगा । बहुत से लोग उसे देख आये है, अलावा आप लोगो मे अब कोई खिलौनो से तो खेलेगा नही हे हे मैंने तो इन्हे ये सलाह दी कि आपकी चित्रो की प्रदरसनी हो जाय । लोगो को कुछ नये जमाने की कला का भी ज्ञान हो ।" बाबू सालिगराम का तीर सही निशाने पर बैठा । सज्जन को अपने चित्रो की नुमायश करने का प्रस्ताव अच्छा लगा,

बाबू सालिगराम बोले—"हम हर इक्सीलेन्सी मे उसका उद्घाटन कराएगे । इसी महीने की बीस तारीख तक ठाट की प्रदरसनी हो जाय । सब काम बन जायगा । तो सज्जन जी, आप सबकी तस्वीरे जुटा दे और इसमे कुछ झझट हो तो सिर्फ अपनी ही तस्वीरे दे दीजियेगा—एकाध गाधीजी की भी तस्वीर लगा दीजियेगा—"

सज्जन हँसकर बोला—"तो ये प्रदर्शनी भी आपके एलेक्शन का ही एक प्रोपेगैन्डा स्टन्ट मालूम होती है ।"

लाला जानकीसरण जरा मुस्कुराये । बाबू सालिगराम गभीर बैठे रहे । लालाजी ने कहा—"हाँ, इलक्सन को कुछ तो फायदा जरूर ही पहुँचाया जा रहा है । पर हमारा असल मकसद ये है कि जनता को लाभ पहुँचे ।"

सज्जन ने केवल अपनी ही नही, वरन् नगर के सभी प्रसिद्ध चित्रकारो की एक कला-प्रदर्शनी आयोजित करने के लिये हामी भर ली । चलते-चलाते सालिगराम ने एक बार फिर नुमाइश के परचे के लिये सज्जन और उसके दोनो मित्रो का नाम छापने की अनुमति ले ली ।

सज्जन नहीं जानता था कि महिपाल अपना नाम छापने की अनुमति देने में आपत्ति करेगा। इस समय तो सबसे अधिक वह कन्या से मिलने के लिये ही उत्सुक हो उठा था। वह चाहता था कि कन्या मिले और वह समझा दे कि इस नुमाइश के कारण उसे कोई भ्रम नही होना चाहिये। अगर बाबू सालिगराम उसे अपनी चाल मे फँसाने आये थे तो वह उन्हे अपनी चाल मे फाँस लेगा।

लौटते हुए लाला जानकीशरण सज्जन की गाडी मे ही आये।

'सज्जन अपनी कोठरी मे आया। कल के मुरझाये फूल उसे अकस्मात् ताई की याद दिलाने लगे। कल बेचारी बँधी हुई दुख भोग रही थी। और इतने पर भी, आश्चर्य है कि उन्हे अपनी तकलीफ या चोरी के गम से ज्यादा बिल्ली के भूखे बच्चो का ध्यान था। सज्जन को ताई के चरित्र का यह विरोधाभास हैरानी मे डाल रहा था। ऐसी घृणामयी भी यदि करुणामयी वन सकती है, तब वह अपने व्यभिचारी मन को सदाचारी क्यो नही बना सकता है? फिर उसे कन्या की याद क्यो आती है? उसे कन्या के अच्छा या बुरा मान जाने की इच्छा क्यो हो? सज्जन अपना मन चारो ओर से समेट कर ताई का चित्र बनाने लगा।

महाकवि बोर आहिस्ता कदम हे-हे करते कमरे मे पधारे। बोर को देखने ही सज्जन जल-भुन गया। परन्तु मुख मे कुछ न कहकर, चुपचाप अपना काम करता रहा।

हँसते हुए विरहेश बोला—"मुझे आशा थी कि सज्जन भाई इस समय अपनी कला साधना मे ही लगे होगे। हे हे, क्या बना रहे हो?"

जी मे आया कि कह दे "आपका सिर!" पर कुछ न कहकर तेजी से ब्रश चलाने लगा।

विरहेश बाहर के दरवाजे से टिककर बैठ गया। बडी की खिडकी पर बार-बार नजर डालते, और जोर से हँसते, बाते करते हुए विरहेश ने पौन घण्टा बिता दिया। कभी अपनी नई रचनाओ को गाकर सुनाने लगता था।

सज्जन ने कई बार इशारे-इशारे मे उसे बतलाया कि वह इस समय यहाँ से चला जाय, बल्कि एक बार तो उसने साफ-साफ कहा—"विरहेश, मै इस वक्त एकात चाहता हूँ। किसी और समय आना।"

"और समय तो—हाँ—आऊँगा ही। पर बात ये है सज्जन भाई कि आपके यहाँ आने से मुझे नई प्रेरणा मिलती है। मै यहाँ आकर नई स्फूर्ति, नई चेतना, नये प्राण पाता हूँ। मै तुमको—आपको डिस्टर्ब नही करूँगा सज्जन भाई! अब से मै एकदम चुपचाप बैठा रहूँगा।"

थोडी देर कविवर विरहेश सचमुच चुपचाप बैठे हुए बडी की खिडकी की ओर देखते रहे, फिर गुनगुनाना शुरू किया। फिर एकाएक पूछ बैठे—"सज्जन भाई चाय बना लूं? मुझे मूड आ रहा है।" कहकर सज्जन के हाँ या ना कहे बगैर वह स्टोव के पास पहुँच गया। स्टोव सुलगाया, पानी चढाया और एक ठण्डी साँस लेकर विरहेश कहने लगा—"सज्जन भाई गालिब सच लिख गए है कि 'इश्क पर जोर नही है ये वो आतिश गालिब—कि लगाए न लगे और बुझाए न बने'। (आह) सज्जन भाई, आप से सच कहता हूँ—

'बिना दिल मे आग लगे कोई अमर रचना नही हो सकती।' और अब आप देख लीजिएगा—बहुत जल्दी ही मै अपना दूसरा अमरगीत लिखने वाला हूँ।"

सज्जन कुछ न बोला। विरहेश फिर दरवाजे के पास आ, दरवाजे से एक गाल चिपका कर बडी की खिडकी की तरफ देखकर गुनगुनाने लगा—'बाट तुम्हारी तकते प्यारी। अँखियाँ हारी अँखियाँ हारी।'

चाय बनी, पी। विरहेशजी ने सज्जन की तमाम सिगरटे फूक डाली। कई बार तडप-तडप कर गाना उठाया। एक बार बडी की खिडकी पर एक चेहरा चमका विरहेश ने मजनू की तरह देखा, परन्तु वह कोई और थी। (नन्दो थी) विरहेश निराश होकर जोर-जोर से विरह के गीत गाने लगा।

जीने चढकर छत पर आते हुए महिपाल ने विरहेश को आँखे मूदे, बाये कान पर हथेली लगाये गाते देखा—उसके पीडित, उत्तेजित चेहरे पर झुझलाहट आ गई।

अदर सज्जन को किसी के आने की आहट मिली, तो समझा कन्या आ रही है। उल्लसित हुआ।

दरवाजे पर विरहेश की खोपडी हिला कर महिपाल ने कहा—"टाँगे सिकोडो महाराजा! अदर जाने—"

"गुरू! गुरू!" कहकर चट से विरहेश ने महिपाल की टाँगे पकड ली। लबे बालो को झटकार, मोटे चश्मे मे भावभरी पुतलियाँ झलका कर कहा—"अब गुरू के दर्शन हो गये, मेरा सब काम बन जायगा।"

कन्या के बजाय महिपाल को देख कर, सज्जन निराश हुआ, फिर भी सब मिला कर उसे सतोष मिला।

महिपाल तकिये का सहारा ले इस तरह बैठा मानो टूट गया हो। सज्जन को उसकी तकलीफ का एहसास हुआ। उसने पैलेट-ब्रश रख दिया।

विरहेश बोला—"गुरूजी, एक नया गीत लिख रहा हूँ आजकल—"

सज्जन ने सज्जनतापूर्वक कहा—"विरहेश, मुझे महिपाल से कुछ जरूरी बाते करनी है—"

"हाँ-हाँ, आप शौक से बाते कीजिये। मै छत पर जाकर बैठ जाऊँगा। आज गुरूजी आ गये है, इनकी कृपा से मेरा गीत पूरा हो जाय तो—। गुरूजी, आपके आशीर्वाद मे यह मेरा दूसरा अमर गीत होगा। बस, इसे पूरा कर लूं तो सीधा बबई चला जाऊँगा।" महत्वाकाक्षा की ठढी आह फेक, बाल झटकार कर विरहेश उठ खडा हुआ और अँगडाई लेकर बडी की खिडकी की ओर देखते हुए बाहर निकला।

सज्जन झुँझला कर धीरे से बोला—"ये कम्बख्त जोक की तरह चिपकता है। किसी की सुनता-मानता भी नही, बस एक कर्नल से—। क्यो, इस तरह उदास क्यो हो? भाभी से महाभारत हो गया?"

महिपाल ने गर्दन हिला कर ना की। सज्जन ने फिर पूछा—"तुम्हे कोई न कोई चिन्ता जरूर है। सुबह कर्नल ने बतलाया कि कल तुम्हारे साले की शादी थी यहाँ।"

"शादी परसो थी, कल बडाहार था।"

सज्जन कुछ पल खामोश रहा, फिर बोला—"शादी मे कल तुम्हे प्रेजैन्ट भी देनी होगी कुछ न कुछ ?"

"दे दी।"

सज्जन ने सिगरेट-केस उठाया, खाली निकला, झुँझला कर बाहर की ओर नजर डालते हुए बोला—"ये बोर—"

"सिगरेट है। लो।" सदरी की जेब से महिपाल ने डिबिया निकाल कर फर्श पर फेकी।

"गुरूजी, एक सिगरेट मुझे भी—" कहते हुए विरहेश अदर आ गया।

महिपाल बोला—"विरहेश, काम क्या करते हो आजकल ?"

सिगरेट निकालकर सज्जन और महिपाल की ओर बढाते हुए बिरहेश हँसकर बोला—"काम तो गुरूजी आजकल—यही गीत लिख रहा हूँ।"

"पेट कैसे भरता है तुम्हारा, परिवार को कैसे चलाते हो ? मैने सुना है कि तुम्हारी शादी-वादी तो हो चुकी है, बाल-बच्चे भी है ?"

"बाल-बच्चे सब अपनी ननिहाल मे रहते है। अब आप से क्या कहूँ गुरू, ऐसी मूर्खा है मेरी पत्नी कि अगर उसके साथ रहूँ तो मेरी सब कविता चौपट हो जाय। बज्र देहाती ! बज्र देहाती !"

"और बच्चे कितने है ?"

"पाँच है गुरूजी आपके आशीर्वाद से।"

महिपाल को सुनकर ताव आ गया। बोला—"पाँच बच्चे और तब भी तुम निकम्मे ? तुम्हे शर्म नही आती विरहेश ? आखिर उनका खर्चा कैसे चलता है ?"

विरहेश कुछ न बोला—सिगरेट फूँकता रहा।

महिपाल ने सज्जन से कहा—"कोई खास काम न कर रहे हो, तो अपने घर चलो। यहाँ मेरा दम घुटता है।"

"चलो। वैसे मै एक आदमी को एक्सपैक्ट कर रहा था यहाँ ?"

महिपाल समझा, पूछा—"आने का वादा किया है ?"

"नही—"

विरहेश बोला—"सज्जन भाई, तुम जाओ तो ताली मुझे देते जाना। मै यहाँ कुछ बैठ कर काम करूँगा, मुझे मूड आ रहा है।"

सज्जन अपनी सज्जनता का जामा उतार, किसी हद तक चिढकर बोला—"ये धर्मशाला की कोठरी नही है।"

विरहेश इसपर 'हेहे-हे' कर कुछ कहने ही जा रहा था कि महिपाल बोला—"सज्जन, उठ पडो एकदम। अब मेरा जी यहाँ से एकदम उचट गया है। गुस्सा आ जायगा तो मार भी दूँगा एक आध को !"

विरहेश सिगरेट का कश खीचता हुआ चुपचाप छत पर चला गया। उसके बाहर जाने के बाद सज्जन धीरे से भुनभुनाया। "ऊब गया हूँ। जब आता है, मेरा मूड बिखेर जाता है।"

महिपाल बोला—"तुम्ही ने इसे सिर चढाया है।"

सज्जन बात काटते हुए बोला—"आज सुबह बाबू सालिगराम और लाला जानकी-शरण आये थे मेरे यहाँ। यहाँ मोहल्ले मे एक आर्ट एक्जीबीशन करना चाहते है।"

"करने दो सालो को।"

"हम लोगो को उसका कन्वीनर बनाना चाहते ह।"

"मैं नही शामिल होता ऐसे कमीनो के साथ! ये पैसेवाले और काग्रेसी दोनो ही विश्वास के योग्य नही!"

सज्जन हँसा—"मै जानता हूँ कि ये नरसो के हवाई चमत्कार का प्रताप है पर मैंने हामी भर ली। वो अगर हमे बेवकूफ बनाने आये थे तो हम उन्हे बनायेंगे।"

"तुम अपने को उनसे ज्यादा अक्लमद समझते हो? धोखा खा जाओगे सज्जन!"

"किस बात का धोखा जी?" हमारा उनका कोई पोलिटिकल पैक्ट तो हो नही रहा है। मुझे इस बहाने गली-मोहल्ले वालो का अच्छा परिचय मिल जायगा।"

"तो उसके लिये कोई दूसरा उपाय खोजो। इन लोगो के साथ शामिल होकर कोई भी काम करना गलत है।"

विरहेश मुँडेरे से टिककर सामने की दीवार मे बनी खिडकी की ओर देखता हुआ ज़ोर से गा उठा—

"नही आये अब तक जो थे आने वाले।
कहॉ छिप गए मुझको तडपाने वाले॥
अजब मोहिनी डाल दी यार तूने।
कि मर मर के जीते है दिल देने वाले॥"

महिपाल और सज्जन कोठरी से बाहर आये।

सज्जन जब ताला बद कर रहा था तब खिडकी मे महाकवि बोर को बडी का चद्र-मुख दिखाई दिया। बोर हरा-भरा हो गया। महिपाल अपने विचारो मे डूबा हुआ था। ताला बद करने के बाद सज्जन ने देखा तो उसे छाती पर हाथ रक्खे शरबती आँखो से, गद्‌गद् भाव से ऊपर की ओर ताककर गाते पाया। 'अजब मोहिनी डाल दी यार तूने—' सज्जन ने ऊपर की ओर कुछ ध्यान न दिया, विरहेश से बोला "अच्छा अब चलो।"

"जाता हूँ, जाता हूँ, मेरे दोस्त, जरा ठहरो।"—(फिर गाकर) "जाता हूँ जाता हूँ मेरे दोस्त ठहरो! कि आये है नजरे—"

महिपाल झुँझला गया, डॉटकर बोला—"अच्छा ये नखरे न दिखाओ, चलो, सीधे-सीधे, हमें देर हो रही है।"

महिपाल पहले जीने पर उतरा, फिर सज्जन फिर बोर। बोर की नजरे ऊपर थी, गाते और अलविदा कहते हुए वह उल्टे सीडी की ओर बढ रहा था। औचक मे एक जीना चूका तो भडभडाकर सज्जन की पीठ पर ही गिरा। सज्जन भी लडखडा कर महिपाल पर गिरा। महिपाल सीढी की दोनो दीवालो पर मजबूती से हाथ अडाकर खडा हो गया। सब जने गिरते-गिरते बचे। सरदारिनो का परिवार 'क्या हुआ क्या हुआ', करता नीचे जुड गया। सज्जन के कधे पर चोट आई थी। महिपाल का भेजा गरम हो गया था। क्रोध

मे आ बोर के लम्बे बाल खीच कस-कस कर तीन-चार रहपटे रसीद करते हुए कहा—
"अबे देखके नही चलता ! मारे जूतो के सारा छायावाद ढीला कर दूगा, याद रखना।"

बोर ने अपना चश्मा सम्हालते हुए गिडगिडा कर 'गुरूजी गुरूजी,' करना आरभ किया। सज्जन ने महिपाल का हाथ झिटक कर बोर को छुडाया। सरदारिनियो के बच्चे बोर को पिटते देख खिलखिला कर हँस पडे।

महिपाल विरहेश की तरफ ध्यान न देकर तेजी से सज्जन का हाथ पकड कर फटकिया की ओर बढ चला। विरहेश को मारने के बाद उसे स्वय पछतावा होने लगा था, जिसे वह प्रकट नही करना चाहता था। वह कल रात मे बेहद त्रस्त था।

सगे साले की बरात लखनऊ आई थी। यो वह आमतौर पर अपनी बिरादरी, रिश्तेदारी मे जाने-आने मे बचता है, पर यहाँ मजबूर था। कल रात लडकी वाले के यहाँ होने वाली ज्यौनार—बडाहार—मे वह बातो के आवेश मे अपने समाज की बुराइयाँ करने लगा। एक घुटी खोपडी वाले अक्खड ब्राह्मण देवता ने उलट कर महिपाल पर फब्तियाँ कसनी शुरू की—"नास्तिक है। सनातन धर्म की निदा करते है। पहले एक सेठ को फाँस कर घर भरा, और अब मालदार डाक्टरनी फाँसे हुए है। ईसाइन के साथ खाना-पीना है।" महिपाल बेहद गर्म हो गया। उसके ससुर ने अपने मान्य दामाद और पूज्य अतिथि के हाथ-पैर जोड कर किस्सा शात किया।

पत्नी आज सबेरे से सौत-सवाद पर कई बार अपना पाचजन्य फूँक चुकी है। महिपाल खीझ कर यहाँ चला आया था, सो विरहेश पर अनायास ही खीझ बरस पडी। सज्जन कह रहा था—"तुम्हे अपने गुस्से पर जरा काबू रखना चाहिये दोस्त !"

अतर की खीझ से महिपाल का चेहरा बिगड गया, बोला—"भाड मे जाय काबू ! अब तो जीवन से ही थक गया हूँ !"

इसके बाद सज्जन ने कुछ न कहा। दोनो गलियाँ पार करते हुए आगे बढे।

१७

महिपाल अपनी दो बडी बहिनो और छोटे भाई के साथ ननिहाल मे पला था। उसकी ननिहाल का घराना ताल्लुकेदारो का था। पिता एक जिला हाई स्कूल के हेडमास्टर थ। वे स्वाभिमानी, स्पष्टवक्ता और चरित्रवान् पुरुष थे। महिपाल की मा मे बडे घरो के तमाम दोष मौजूद थे। उनका समय अधिकतर अपने मायके ही मे बीतता था। उनके पिता और बडे भाई उन्हे बहुत चाहते थे, इसी कारण से महिपाल की मामियो आदि के ऊपर महिपाल की माता का शासन निष्कण्टक होकर चलता था। रियासती अन्त पुर के कुचक्र चलाने में वे बडी ही पटु थी, किसी हद तक जालिम भी थी, और इसीलिये लोग उनसे बहुत जलते थे।

महिपाल की दोनो बडी बहिनो का ब्याह-दहेज वही से हुआ। वे बडे घरो मे ब्याही गई। महिपाल का विवाह भी एक बडे घराने मे ही हुआ। विवाह के कुछ दिनो बाद ही भाग्य ने उसके लिये अनेक परिवर्तन लाने शुरू कर दिये थे। पिता बीमार हुए, चल बसे। साल भर बाद ही बडे मामा का देहान्त भी हो गया। बडे मामा की मृत्यु के बाद महिपाल की मा के लिये मैका भारी पडने लगा। घर मे उनके अनेक विरोधी थे ही, अवसर पाकर वे उन्हे नीचा दिखाने का प्रयत्न करने लगे। एक घृणित परिस्थिति मे पकडी जाकर अपना मुँह छिपाने के लिये उन्हे आत्महत्या करनी पडी।

मा की मृत्यु के बाद महिपाल, उसकी पत्नी और छोटे भाई जयपाल के लिये परिस्थितिया विषम होती चली गई। मामियाँ अपनी मरी हुई ननद के अत्याचारो का बदला उनकी सन्तानो से लेने लगी। उन दिनो महिपाल इन्टरमीडियट मे और जयपाल नवे दर्जे मे पढ रहे थे।

साहित्य मे महिपाल की रुचि और लगन किशोरवय से ही उत्पन्न हो चुकी थी। माँ के प्रति मान श्रद्धा और पिता के प्रति भक्ति भरा आकर्षण उसके सम्वेदनशील हृदय मे अभाव के भाव की तरह जागा। बचपन मे उसकी इच्छा अपने पिता के पास रहने की ही होती थी, किन्तु मा के हठ के कारण वह स्थायी रूप से कभी उनके पास न रह पाया। उसके पिता शात, गभीर और बडे ही विचारवान पुरुष थे। वे अक्सर थोडा-बहुत लिखा भी करते थे। खडी बोली के रचे हुए उनके सवैया, घनाक्षरियो का सग्रह महिपाल के पास अब भी सुरक्षित है। उनके इतिहास, समाज और शिक्षा सबधी लेख कभी-कभी 'सरस्वती', 'माधुरी', 'चाँद' और 'सुधा' आदि पत्र-पत्रिकाओ मे छपा करते थे। बचपन ही से महिपाल की इच्छा अपने पिता के समान आदर्शवादी, विद्याव्यसनी और लेखक बनने की हो चली थी। प्रेमचन्द और 'चाँद', 'भविष्य', 'प्रताप', 'अभ्युदय', आदि के सामाजिक, राजनैतिक साहित्य का प्रभाव उस पर बराबर पडता रहा। अपने मामाओ और उनके कारिन्दो द्वारा किसानो पर किये जाने वाले जुल्म उसे बहुत ही अखरते थे। अक्सर परेशान होकर वह सोचता था कि इन फटेहाल मेहनतकशो पर उसके निकम्मे मामा लोग इतना अत्याचार भला किस अधिकार से करते है? किसानो को बेतो से मारना, उन्हे दरख्तो पर उल्टे लटका कर धूनी देना, मनमानी बगार लेकर उन्हे भूखो मारना, घर लूटना आदि अमानुषिक अत्याचार वह आये दिन देखा करता था, और उन्हे देखकर उसका रोम-रोम तडप उठता था। अपने तीनो छोटे मामाओ को उसने गाँव की बहू-बेटियो की इज्जत लूटते भी अनेक बार देखा था। उसके अधेड मँझले मामा खास तौर पर बडे व्यभिचारी थे। उन्हे कुमारी कन्याओ का सर्वनाश करने मे अत्यधिक आनन्द मिलता था। लडकी, भतीजियो की उम्र वाली, गाँव के गरीब किसानो की लडकियो को अपने विषय-भोग की सामग्री मानने मे उनकी आत्मा तनिक भी नही लडखडाती थी।

पिता के घर मे दशहरा, बडे दिन अथवा गर्मी की छुट्टियाँ बिताकर महिपाल जब कभी अपनी ननिहाल लौटता था तो उसे महसूस होता कि मानो हरे-भरे मैदान से जबर्दस्ती खींचा जाकर वह घुटन भरे तहखाने में बन्द कर दिया गया हो। ताल्लुकेदारी वातावरण में मदक, चरस, गाँजा, शराब, मारपीट, अत्याचार, व्यभिचार, रडीबाजी, अप्राकृतिक

मैथुन आदि तरह-तरह की गर्दगियाँ देख-देख कर वह रात-दिन तफ्ता रहता । उसकी दशा उस मनुष्य की तरह थी, जिसकी जीभ काट ली गई हो। साहित्य गूगे की वाणी बनकर उसके जीवन मे आया । पहले तुक-बन्दी शुरू की, बाद मे कहानिया लिखने लगा । पिता की देखा-देखी डायरी लिखने का अभ्यास भी साध लिया था जिसने उसे कहानी लेखक बनने मे बडी भारी मदद दी । इटर का इम्तहान देने तक उसकी पाँच-छ कहानियाँ 'चाँद' और 'सुधा' मे छप चुकी थी ।

माँ की मृत्यु के बाद ननिहाल का वातावरण उसके लिये अत्यन्त अपमानजनक हो उठा । एक दिन जोर का झगडा हो जाने पर इन्टर का परीक्षाफल निकलने से पहले ही महिपाल अपनी नवोढा पत्नी की प्रेरणा से अलग घर बसाने का इरादा लेकर काम की तलाश मे लखनऊ चला आया ।

यह सन् ३० के आन्दोलन का जमाना था । 'सुधा' के सम्पादकीय विभाग मे उसे चालीस रुपये माहवार की जगह मिल गई । 'सुधा' कार्यालय मे आए दिन उसे दिग्गज साहित्यिको के दर्शन होते थे । प्रेमचद, निराला, मिश्रबधु, सुमित्रानन्दन पत, रूपनारायण पाडेय, कृष्णबिहारी मिश्र आदि अनेक साहित्य देवताओ के दर्शन उसे यही प्राप्त हुए, इससे उसके साहित्यिक व्यक्तित्व का विकास तेजी से हुआ । विशेषरूप से वह निरालाजी के निकट सम्पर्क मे आया, यह साथ उसे नौकरी की घुटन से बचाने मे स्वास्थ्यकर सिद्ध हुआ । नौकरी का अभ्यास न होने से, नौकरी से असतुष्ट रहते हुए भी महिपाल गरज-बावरी से मजबूर होकर चिपका ही रहा । तीन महीने के अन्दर ही अमीनाबाद मे एक छोटा-सा मकान किराये पर लेकर अपनी गर्भवती पत्नी और भाई के साथ वह जम गया । उसकी पत्नी के गहने ही उसकी एकमात्र सुरक्षित पूंजी थी ।

ननिहाल से वह एकदम रामभरोसे पर ही निकला था । उसने अपने भाई को हाई-स्कूल मे भर्ती कराया और यह आश्वासन दिया कि निश्चित होकर वह जहाँ तक पढना चाहे, पढे । महिपाल ज्री तोडकर मेहनत करने लगा । 'सुधा' मे काम करते हुए बाकी समय मे वह एक दूसरे प्रकाशक के लिये 'बुक आफ नालेज,' इतिहास तथा कोर्स की पुस्तके दूसरो के नाम से लिखकर या अनुवाद करके कापी राइट बेचता, महीने मे एक-दो कहानियाँ भी लिख लेता, इस तरह उसने सौ रुपये के लगभग हर महीने कमाने का ढर्रा चला लिया ।

समय अपेक्षाकृत अच्छा था । पत्र-पत्रिकाये कम होने पर भी नया लेखक यदि दमदार होता तो शीघ्र ही प्रसिद्धि के पथ पर बढ जाता था । बडे साहित्यिक सदा छोटो को बढावा दिया करते थे । महिपाल की कलम मे जोर था, मन में उठने की लगन थी, धीरे-धीरे वह आगे बढने लगा ।

उसे एक रईस नवयुवक रूपरतन मिल गए जो उसकी कहानियो के प्रशसक थे । वे राष्ट्रीय विचारो के आदमी थे । उनके पिता सेठ भजगोविन्ददास बडे साहूकार थे, स्वय रूपरतन ने एक हैन्डलूम फैक्टरी खोल रक्खी थी, इसके अलावा वैद्यो को रख कर वे एक आयुर्वेदीय रसायनशाला और औषधालय भी चलाते थे; द्राक्षासव, च्यवनप्राश, दशमूलारिष्ट आदि दवाये उनके यहाँ तैयार होती थी । बडे नेताओ को अपनी रसायनशाला घुमाकर वह उनसे सर्टीफिकेट प्राप्त कर लेते थे । विज्ञापनबाजी में उनका विश्वास था ।

उन्हे खासी आमदनी होती थी। रूपरतन काग्रेस के कोमल नेता और कोषाध्यक्ष भी थे, साझे मे विलायती शराब की दूकान भी चलाते थे। रूपरतन बहुधधी, बडे ही मिलनसार, पढे-लिखे, बातचीत मे फरवट, तथा उन थोडे से नौजवानो मे थे जिन्होने अपने को सन् ३१-३२ ही मे सोशलिज्म का हिमायती करार दे दिया था।

महिपाल से रूपरतन की मुलाकात जिमखाना क्लब मे हुई। महिपाल के एक ननिहाली भाई लखनऊ विश्वविद्यालय मे पढते थे। उनसे उसका मधुर सबध था। उन्ही के साथ वह अक्सर क्लब भी चला जाता था। तौर-तरीके उसके भी ऐरिस्टोक्रेट थे, इसीलिये वह बडे लोगो मे जल्दी घुल-मिल जाता था। खादी वह लखनऊ आते ही पहनने लगा था—कुछ दबे शौक को उभारने की स्वतत्रता पाकर, और कुछ इसलिये भी कि कीमती कपडो के अभाव को खादी की वैराग्यपूर्ण वेश-भूषा से बखूबी ढका जा सकता था। गिलासो के दौर मे रूपरतन और महिपाल को लगा कि दोनो के विचार एक दूसरे से काफी हद तक मेल खाते हैं। दोनो के सबध दिनोदिन गाढे होते गये। एक दिन रूपरतन ने अखबार निकालने का प्रस्ताव किया। महिपाल बडा ही प्रसन्न हुआ।

रूपरतन के पिता के पास एक प्रेस गिरवी पडा था। रूपरतन ने अपने पिता से वह कर्ज खरीद लिया, और बाद में कानूनी तिकडम लडा कर वह उस प्रेस के मालिक भी बन बैठे।

साप्ताहिक 'नवचेतना' बडी आग उगलती थी। महिपाल के सम्पादन काल मे तीन बार उसकी जमानते जब्त हुई। जब-जब जमानत जब्त हुई तब-तब 'नवचेतना' की बिक्री अधिक बढी। बाद मे रूपरतन ने महिपाल को इसके लिये समझा-बुझा कर राजी कर लिया कि पत्रिका उतनी ही आग उगले जितने मे उसके प्रकाशन पर आँच न आये। 'नवचेतना' कार्यालय गर्म खून वाले नवयुवक लेखको का अड्डा हो गया। धीरे-धीरे 'नवचेतना' पुस्तक प्रकाशन भी आरम्भ हुआ।

रूपरतन ने इस सस्था को समाजवादी घोषित किया था। वह बार-बार जोर देकर यह बात कहते कि यह सस्था उनके निजी मुनाफे के लिये नही खोली गई, बल्कि लेखको, कवियो और प्रेस कर्मचारियो की आर्थिक सहायता तथा समाजवाद का प्रचार करने के लिये ही स्थापित की गई है। इस तरह समाजवाद के नाम पर वह हरएक से खुशी-खुशी, त्याग और तपस्या करा लिया करते थे।

महिपाल के दिन बडे सुख से बीतने लगे। उसका मासिक वेतन पॉच सौ रुपये था, जिसमे से त्याग के नाम पर तीन सौ रुपये कट जाते थे। रूपरतन की मीठी चाल को भोला महिपाल नही समझता था, उसके त्याग से कम्पोजीटर तथा अन्य प्रेसवाले भी 'अपनी सस्था' के लिये त्याग करने की प्रेरणा मजबूरन पाते थे। इन दिनो महिपाल ने खूब उन्नति की। खूब पढना, कहानियाँ, उपन्यास लिखना, और लगन से घूम-घूमकर जिलो, गाँवो, मजदूर बस्तियो और गरीबो के सकटो का विवरण एकत्र करना—यह उसका काम था। सरकार की ज्यादतियो के साथ-साथ पूजीपतियो की पोल खोलने में उसकी कलम बडे जोश के साथ चलती थी। रूपरतन खुद अन्य पूजीपतियो की कच्ची पोले महिपाल को बतलाते थे। दूसरो पर अपना प्रभाव जमाने के लिये ही रूपरतन ऐसा लिखवाते, बेचारा महिपाल

इस चाल को नही जान पाया ।

उसने जयपाल को इन्टरमीजिएट पास कराया, डाक्टरी मे दाखिल किया । पत्नी से बौद्धिक मेल न होने के कारण प्राय आये दिन उसकी खटपट हो जाया करती थी, परन्तु महिपाल इससे कभी चरित्रहीन न हुआ । रूपरतन के वामा-वारुणी योग मे वह कभी-कभी केवल वारुणी से ही सहयोग करता रहा ।

सन् ३६ के चुनाव मे 'नवचेतना' ने खूब काम किया । रूपरतन कांग्रेस टिकिट पर एम० एल० ए० हो गये, पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी भी हो गए । अब वे अपने पत्र की रीति-नीति को बदलना चाहते थे । उन्होने कार्यालय की छोटी-छोटी बातो मे अडगे लगाने शुरू कर दिये । त्याग के नाम पर उन्होने दो बरस से प्रेस वालो को कोई तरक्की नही दी थी । जमाने की आँखे देखे हुए कर्मचारी सेठ रूपरतन के समाजवाद और त्याग को भली-भाँति समझते थे, परन्तु महिपाल की सज्जनता, सचाई और लगन पर मुग्ध होने के कारण, तथा उसके आश्वासन दिलाने पर मामला अभी तक किसी तरह टलता चला आया । लेकिन अब सारे लोग अड गये थे । महिपाल भी अड गया कि अब हर एक को तरक्की मिलनी ही चाहिये । इस बार रूपरतन ने अपनी मीठी टालूनीति छोड कर साफ-साफ 'ना' कह दिया ।

महिपाल आसमान से जमीन पर आ गिरा । उसने इस्तीफा दे दिया । रूपरतन व्यक्तिगत रूप से महिपाल से रिश्ते बनाये रखना चाहते थे। इसलिये उन्होंने उसे बहुत मनाया, सब्जबाग दिखाये, पर वह न माना । कर्मचारियो का न्यायपक्ष छोडकर उसने केवल अपना स्वार्थ भजने से इनकार कर दिया । कर्मचारियो ने हडताल की, हुल्लड किया । रूपरतन ने पुलिस के जोर से उसे दबाया, अनेक गिरफ्तार हुए, पर महिपाल न पकडा गया । मामला दब जाने पर रूपरतन ने धीरे-धीरे उसके साथ अपने निजी रिश्ते भी खत्म कर दिये ।

इतना राजपाट, इतने लोगो पर हुकूमत, इतने लेखको का आश्रयदाता होने के बाद महिपाल अब कुछ भी नही रह गया था । यह उसे बहुत खलता था । 'नवचेतना' प्रकाशन से छपी हुई उसकी पुस्तके उससे अधिक रूपरतन को मुनाफा पहुँचाती थी ।

कठोर आदर्शवादी होने के कारण एक धेला दहेज लिए बिना ही महिपाल ने एक सुन्दर सुशील कन्या से अपने भाई का विवाह किया । एम० बी०, बी० एस० कर लेने के बाद उसे विलायत जाकर पढने की बार-बार प्रेरणा दी । परन्तु जब जयपाल के विलायत जाने का समय आया तब वह स्वय निराधार हो चुका था । इस पर भी महिपाल हारा नही, अपनी पत्नी के सारे जेवर बेच कर उसने अपने भाई को इग्लैड भेजा । इसी समय दुर्भाग्य से उसकी मँझली बडी बहिन और उसके पति गुजर गये । दादा के घर मे निराधार होकर महिपाल की भाजी शकुन्तला भी उसके पास ही रहने चली आई ।

महिपाल का अपनी पत्नी, बच्चे, भाजी, छोटे भाई की पत्नी तथा उसके गोदी के पुत्र के भरणपोषण के लिये जी तोडकर मेहनत करनी पडती थी, फिर भी वह डेढ पौने दो सौ से अधिक नही कमा पाता था ।

दूसरी लडाई छिड गई । बहुत से बेकारो के लिये लडाई आमदनी का साधन बनी,

मदी के मारे दूकानदार भी क्रमश काले मुनाफे की कृपा से अपनी चर्बी बढाने लगे। महिपाल के लिये यह लडाई जान लेवा थी—आर्थिक सकट तो था ही, साथ ही जयपाल के इग्लैंड मे होने के कारण उसके प्राण हरदम तडपते ही रहते थे। सन् ४१ में जयपाल किसी तरह लौट आया—डिगरी लेकर ही आया। भाई के लौट आने से महिपाल की जान मे जान आई। भाई को जमाने के लिये वह फिर बेशर्म होकर रूपरतन से मिला। उनके प्रभाव से मेडिकल कालेज मे नौकरी दिलाई और सुखद भविष्य की कल्पना करके सतुष्ट हुआ। परन्तु यह सतोष क्षणिक था। देवरानी-जठानी मे अब नही बनती थी। जयपाल भी बदला-बदला सा नजर आता था।

सन् ४२ के आन्दोलन मे महिपाल के जल जाने के बाद जयपाल अपने बड भाई के परिवार को निराश्रित छोडकर अलग हो गया। दो वष बाद कठिन बीमारी के कारण जब वह छूट कर घर आया तब तक उसकी सारी आस्थाय ताश के महल की तरह भरभरा कर गिर पडी थी। उसने देखा रुपये की होड मे दुनिया उससे बहुत आगे बढ गई थी। पास-पडोस के कितने ही मकान नये और आलीशान बन गए थ। उसके पडोस म रहने वाला एक दुबला-पतला, फटहाल युवक राशनिग इन्स्पेक्टर होकर हृष्ट-पुष्ट और चिकना हो गया था उसके घर में चारो ओर जगर-मगर हो रहा था। स्वय उसका छोटा भाई जयपाल मोटर और बगले के वैभव का सुख भोग रहा था। महिपाल के जेल से छूटने के बाद जयपाल सिर्फ एक दिन खडे-खडे आकर भाई से मिल गया, फिर कभी राजी-खुशी से पूछने न आया। वह बाहर वालो से कहता था—"भय्या ने मेरे साथ किया ही क्या है? अगर वह मेरी शादी दहेज लेकर करते तो मेरे विलायत जाने का खर्च उससे ही निकल आता। वह अपने आदर्शवाद के फेर मे बेवकूफिया करते फिरें तो उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर किस तरह आती है?"

मित्र रूपरतन, फिर सगे भाई से झटका खाकर महिपाल सनक गया है। लडाई के दिनो मे, और अब तक बडे कशमकश की जिंदगी बिताते हुए वह चिडचिडा और अस्थिर चित्तवाला हो गया है। स्वाभिमानी इतना है कि कर्नल और सज्जन जैसे अतरग मित्रो से भी किसी प्रकार की सहायता लेना पसद नही करता। डाक्टर शीला स्विग से भी वह दोस्ती मे बराबर होड लेने का प्रयत्न करता है। कर्नल, सज्जन और शीला उसकी दुखती रग को पहचान कर सदा उसके स्वाभिमान की रक्षा करने का प्रयत्न किया करते हैं।

ऐसे व्यक्ति पर यदि कोई भरी सभा मे यह लाछन लगाए कि वह किसी सेठ या मालदार औरत का पैसा चाटकर लाल बूंद हो गया है तो उसे स्वाभाविक रूप से बडी तकलीफ होगी। महिपाल अपनी इस निंदा से बावला हो उठा था।

गलियों से गुजरते हुए कुछ देर सज्जन और महिपाल चुप रहे। महिपाल के दुखी चेहरे को देखकर सज्जन ने कहा—"यार, बात क्या है? तुम आज औसत से ज्यादा अप्सेट नजर आ रहे हो। मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे मदद नही लोगे, मगर क्या कुछ पैसो की परेशानी है घर मे?"

महिपाल सज्जन के कधे पर हाथ रखकर, बगैर उसकी ओर देखे ही सिर झुकाए बोला—"वक्त पडने पर मदद तुम लोगो से ही न मॉगूगा तो मेरा और कौन बैठा है।"

कहकर महिपाल चुप हो गया, सज्जन के कधे पर हाथ रक्खे हुए चुपचाप आगे बढता रहा। गली का बाजार अपनी चहल-पहल मे मगन था। सभी तरह के चर्चे चल रहे थे—चार दिन पहले के हवाई जहाज वाले पर्चे से लेकर आज के साग-तरकारियो के भाव तक। चुनाव की चर्चा आम थी। एक जगह लोगो की बातो में एलेक्शन को लेकर धर्म और जाति का जोरदार चर्चा चल रहा था। महिपाल एकदम से चिढ उठा, सज्जन से बोला—"मेरे हाथ मे दो दिन के लिये शासन आ जाए तो ये जितने धर्म की बात करने वाले है सबको चौराहो पर जूतो से पिटवाऊँ। ढोगी, मक्कार!"

सज्जन हँसा, बोला—"होगा-होगा! जाने दो उस्ताद! आखिर इन धर्मवालो ने तुम्हारा क्या बिगाडा है?"

महिपाल बोला—"मेरा ही नही, ये सारी मानवता का अकल्याण कर रहे ह। अधश्रद्धा से भरे हुए कुछ सिद्धान्तो को लेकर ये लोग स्वस्थ और सस्कारयुक्त चिंतन का गला घोट रहे है—इसकी अधी कट्टरता पूरी जिदगी को निहायत ही गैर इसानी नजर से देखती है।"

सज्जन बोला—मालूम पडता है साले की शादी मे कोई गैर इसानी बात देख ली है तुमने! और जाहिर है ऐसी बात लडकेवालो, यानी तुम्हारी ससुराल वालो की तरफ से ही हुई होगी। क्यो यही है न?

सज्जन की बात पर हुँकारी भर कर दो कदम तक चुपचाप चलने के बाद महिपाल बोला—"कहने को तो ये ब्राह्मण देश के इन्टैलैक्चुअल लीडर है, मगर इनसे बढकर पतित, क्रूर, दभी और मूर्ख शायद जगली जातियो मे भी न मिलेगे। मुझ पर—अपने बाप पर—तोहमत लगाते है कि मै शीला का पैसा खाता हूँ, मैने रूपरतन की जमा मार ली है। हद है!"

सज्जन हँसा, बोला—"खाते तो हो, भला इसमे भी कोई झूठ है?"

महिपाल मजाक के मूड में न था, क्रमश तनता चला जा रहा था। यदि वह इस समय सडक पर न चल रहा होता तो बडी जोर से गरज पडता। झुँझला कर बोला—"ये कबख्त हद दरजे की गदगियो से भरे हुए, नीचो में भी नीचतम, सनातन धर्म की महिमा बघारते है बेईमान! मुझको झूठा दोष लगाते है। रुपये पर जान देता होता तो महिपाल शुक्ल आज लखपति होता, लेखक नही।"

"यार, तुम ख्वामख्वाँ चिढते हो। अरे, दुनिया का कायदा है कि बढने वाले की टाँग पकड कर पीछे घसीटती है। मुकाबले में तुम अपना धैर्य दिखाओ कि किस तरह इन जबर्दस्त विरोधो के रहते हुए भी आगे बढते हो!"

महिपाल के उबाल पर सज्जन के वचन ठडे पानी की तरह पडे। वह चुपचाप सिर झुकाये आगे बढने लगा, फिर एक नि श्वास डालकर निराला की पक्तियाँ बडे भाव से कही—

"करना होगा यह तिमिर पार—
देखना सत्य का मिहिर-द्वार—
बहना जीवन के प्रखर ज्वार में निश्चय—

लडना विरोध से द्वद्व-समर,
रह सत्य-मार्ग पर स्थिर निर्भर—
जाना, भिन्न भी देह, निज घर नि सशय ।"

महिपाल—जीवन से हारे-थके हुए एक व्यक्ति को—महाकवि की वाणी से उसी तरह सहारा मिल रहा था, जैसे रोगी को आधुनिक विज्ञान आक्सीजन से साँसें लेने में मदद पहुँचाता है ।

गली के आगे बडे बाजार की सडक से एलेक्शन का जबर्दस्त हुल्लड सुनाई दे रहा था ।

१८

कन्या आज नही आई थी । पता नही, इसे रहने की जगह कहाँ मिली होगी ? इच्छा हुई एक बार चल कर उसे देखा जाय । वह मुसीबत मे पडी है, स्वाभिमानिनी है—उसके स्वाभिमान की रक्षा करते हुए उसे सकट से बचाना ही मनुष्यता है ।

कार लेकर सज्जन उस हाते मे गया जहाँ कन्या रहती थी । वहाँ पता लगा कि कल रात ही वह अपना सामान लेकर किसी की मोटर पर चली गई । सज्जन को उस अनजाने मोटर वाले से जलन हुई, फिर अवसाद मे ब्रह्मचर्य का ध्यान आया । सोचा मुझे करना ही क्या है ? लेकिन ब्रह्मचर्य व्रतधारी सज्जन का मन कन्या के बिना कसमसाता ही रहा ।

लौटकर सज्जन कर्नल की दूकान पर आया । महिपाल वही बैठा था । उसने कर्नल से सज्जन-सालिगराम पैक्ट की बाबत कह दिया था । कर्नल भी सज्जन से बेहद नाराज था । आते ही उसके ऊपर गरज पडा—"ये तुमने किससे पूछ कर हामी भरी जी ? तुम मेरे सब किये-कराये पर पानी फेरना चाहते हो ?"

कर्नल के विरोध से सज्जन को यह महसूस होने लगा था कि उसने सचमुच गलती की है, पर चूँकि वह गलती कर चुका था, इसलिये उस पर डटा रहना चाहता था । खासतौर पर महिपाल के सामने तो वह अपनी गलती स्वीकार ही नही करना चाहता था, चेहरे पर कसाव लाकर रूखी आवाज मे बोला—"अगर तुम भी शामिल न होना चाहो तो मत होना । मैंने जो किया है वह सोच-समझ कर और सही किया है ।"

"सही नही, खाक किया है !" कर्नल बोला—"मै पूछता हूँ कि तुम किस फेर मे पड गए ? जानकीसरन और सालिगराम सबेरे-सबेरे कोठी पर पहुँच गये थे, इसलिए मुँह देख कर तकल्लुफ आ गया ? ये क्या तुम्हारे भेजे मे नही समाया कि बिन्नो का जो केस चल रहा है उस पर तुम्हारी इस नादानी का क्या असर पडेगा ?"

'बिन्नो' शब्द सुनकर सज्जन चौंका, फिर 'केस' के सिलसिले में समझ गया कि

कर्नल ने कन्या का नया नामकरण किया है। उसे कन्या के प्रति कर्नल के इस लाड से अनुरक्ति हुई। कन्या कहाँ है ?—नये सिरे से चिन्ता हुई, टीस उठी। अपनी गलती पर झेंप चढने लगी। सबेरे स्वीकृति देते समय उसे निस्सदेह कन्या का ध्यान आया था, फिर भी उसने हामी भर ली ! कन्या को लेकर उसका मन सनक गया है।—क्यो ? ब्रह्मचर्य-ब्रह्मचर्य · ये जो दिमाग मे चल रहा है, कही यह कोरा खब्त तो नही ? अचानक मै अपना दिमागी 'सतुलन खो रहा हूँ, ! इसकी वजह ?'—वजह समझ मे नही आई। दिमाग कटे हुए फल की फाँको जैसा बिखर रहा था, जितना ही किसी बात मे उसे एकाग्र करो उतना ही धुआँ-धुआँ हो जाता है। गुस्सा चढा। कर्नल को जवाब दिया—"मै सब कुछ अच्छी तरह सोच चुका हूँ। इसान वही है जो अपने दुश्मन मे भी सदा हाथ मिलाने के लिए तैयार रहे। दैट इज अवर इडियन क्ल्चर ! हम अपना केस लडते हुए भी इस नुमाइश मे शरीक होगे। आप लोग छोटी नजर मे देखते है, मै ऐसा करना एक आर्टिस्ट के मिजाज के खिलाफ मानता हूँ।" सज्जन अपनी बातो पर खुश हुआ। ।

"ब्रेवो ! मेरे साथ रहने का तुम पर अच्छा असर पडा है !" महिपाल ने चेहरे पर गुरुडम लाते हुए कहा—"काश कि इन बातो के साथ आवाज मे कही तुम्हारा दिल भी बोला होता सज्जन, तो विश्वास मानो आज तुम्हारे चरणो पर श्रद्धा से सिर टेक देता !"

सज्जन शर्म और गुस्से से काँप उठा। मन की कटन-खौलन अपना पूरा पैनापन लिये हुए चट-से चेहरे पर चढ आई।

तभी दरवाजे पर पडी चिक से, सामने ऊपर के जीने से वनकन्या उतरती दिखाई दी।

ये लोग दवाखाने के पीछे वाले हिस्से में, कर्नल के प्राइवेट आफिस मे बैठे थे। सज्जन आरामकुर्सी से उठ खडा हुआ, दरवाजे के पास जाकर चिक उठाते हुए, कन्या से उसने कहा—"तुम यहाँ ? मै वहाँ देखने गया था।"

कन्या मुस्कुराई, कुछ जवाब न दिया। चिक पर परदा उसके हाथ मे लेकर कमरे की तरफ बढी, सज्जन रास्ता छोड कर अदर चला आया। कन्या को देखकर महिपाल ने उठ कर हाथ जोडे। कर्नल ने बैठे-बैठे ही उसकी ओर हँसते हुए कहा—'तुम्हे यहाँ देखकर ये आर्टिस्ट साहब सनाका खा गय। आज काम करके आये है बौडमदास। ऊपर से यहाँ लिक्चर झाड रहे थे हमारे सामने !"

सज्जन के चेहरे पर फिर परेशानी झलकी, मगर इस बार जरा सयम के साथ।

कोने से कुर्सी खीच कर बैठते हुए कन्या ने सज्जन से कहा—"कर्नल भाई साहब ने मुझे ऊपर रहने की जगह दे दी है। कल ये मेरे पीछे पड गए कि फौरन चलकर कार पर अपना सामान यहाँ ले आओ।"

कर्नल ने हँस कर महिपाल से कहा—"पहले तो ये हमसे बडी केमनिस्टी छाँटती रही—बडी बहसबाजी की कि यो नही और वो नही। अरे, हमने कहा कि बहस बाद मे करना, पहले चल के सामान लाओ। अगर मुझे भाई बनाया है तो मेरा हुकुम भी मानना पडेगा। भला बताओ, ऐसी जगह में रहती थी—महरी-कहारो के हाते में ! बाप

और वो ससरा सालिगराम खार खाये बैठा है, और कुछ नही, तो पैसे का लालच दे के किसी से छेड ही करवा दे। शरीफ औरत बेचारी तो इत्ते ही मे मर गई जनाब !"

"ये तुमने अच्छा किया। और तुम्हारा ऊपर का कमरा एक तरह से खाली ही पडा था।"

"अरे चीड के बक्से, बोतले—यही अगड-खगड पडा था। आज सबेरे सब उठवा कर पीछे वाले अस्तबल मे भिजवा दिया। यहाँ जगह ही जगह हो गई इनके लिये—ऊपर कमरा है, एक सायबान है, नल-बाथरूम सभी कुछ है।'

सज्जन को इस बात पर हैरत हो रही थी कि कन्या कर्नल के आश्रय मे रहना अस्वीकार न कर सकी। उसने सज्जन का प्रस्ताव न माना। क्यो ? दुनिया अगर सज्जन के साथ या उसके साथ किसी मकान मे कन्या को रहते देखकर उसकी बदनामी कर सकती थी तो क्या कर्नल के साथ रहने से उसे छोड देगी ? तब फिर कन्या का उसके प्रति यह अविश्वास क्यो ? इस समय सज्जन का जी तेज हवा मे उडते हुए कपडे की तरह फरफरा रहा था। उसे लगता था कि सालिगराम के साथ सहयोग करने की बात अब कही ही जायगी। सज्जन उस क्षण का सामना करने मे हिचकिचा रहा था। उसे अपने ऊपर, कर्नल, महिपाल, कन्या, सालिगराम, जानकीशरण—सब के ऊपर तीव्र झुँझलाहट आने लगी। वह चाहता था तेजी से उठकर भाग जाए, पर ऐसा करने के लिये मानो उसके पैरो मे, उसके सारे शरीर मे शक्ति नही रह गयी थी, वह आरामकुर्सी पर गडा हुआ बैठा था।

कर्नल ने कन्या से पूछा—"बिन्नो, कही बाहर जा रही थी ?"

"जी हाँ। जल्दी ही जाऊँगी।"

"तुम किसी वक्त भी आओ। मैने चौकीदार से कह दिया है। एक ताला इधर के दरवाजे पर लग जायेगा। तुम जब भी आओ। चोकीदार को जगाकर खुलवा लेना।"

कन्या हँसी, बोली—"मुझे सेकेन्ड शो मे पिक्चरें देखने की आदत नही भाई साहब !"

महिपाल पहली बार कन्या के लिये 'तुम' शब्द का प्रयोग करते हुए हँसकर बोला—"तुम समझी नही बहन, ये कर्नल हर बात बडी पॉलिसी से कहता है। यह समझता है कि कम्युनिस्ट लडकियाँ रात ही मे हँसिया-हथौडा लिये घूमा करती है !"

कन्या खिलखिला कर हँस पडी, कर्नल भी झेपते हुए हँसा, बोला—"इन लेखक-कलाकारो की बात पर ध्यान न देना बिन्नो ! ये लोग सदा मूरखनाई की बाते करने के लिये ही नाम पाते हैं !"

कन्या हँसी तो जरूर, पर कनखियो से उसकी निगाहे सज्जन के परेशान चेहरे को गौर से देख रही थी। सज्जन सिर झुकाए बैठा था। कर्नल, महिपाल दोनो का ध्यान कन्या की ओर था। कन्या का यो मनमानी होकर सज्जन की ओर ताकना, उसकी खामोश परेशानी महिपाल के मन मे कविता जगा गई। 'प्यार की नजरो मे भी क्या बात होती है !'—सोचते हुए महिपाल को सज्जन से रश्क हुआ हालाँकि उसके मन के किसी कोने मे भी कन्या के लिये किसी प्रकार की कुभावना नही थी। एक बार बडी जोर से उसके जी मे आया कि सज्जन-सालिगराम पैक्ट की चर्चा कन्या के सामने चला कर वह सज्जन को

नीचा दिखाये। फिर अपनी इस इच्छा को दबाकर उससे पूछा—"तुम्हारे केस का क्या हाल है कन्या ?"

कन्या ने चौंककर सज्जन के चेहरे से जुडी अपनी आँखो को महिपाल की ओर घुमाया। कर्नल उसके जवाब देने से पहले ही बोल उठा—"अभी मै जरा वकीलो से सलाह कर रहा हूँ। इनकी भाभी के दो रिश्तेदार जो आए थे कल। उनको मैंने सूर्या हिन्दू होटल मे टिका दिया है। आज दिन में इनके साथ छोटी गाडी पर मैने उन्हें इमामबाडा वगैरह देखने के लिये भेज दिया था—अच्छा, भई सज्जन तुम्हे एक खुशखबरी सुनाऊँ, बिन्नो हमारी ड्राइविंग सीख रही है। आज शिउमगल हमसे बताता था कि बीबीजी बडी जल्दी सीख जायेगी।"

सज्जन ने सूनी नजरे उठायी, कन्या ने हँसी, लाज, और शाबाशी पाने की सुहाग-भरी कामना लिये हुए अपनी पुतलियाँ उसकी आँखो मे डाल दी। छोटे-से कमरे के मद्धिम अँधेरे में पलभर के लिये चार आँखो को सिर्फ दो ही जन दिखलाई दिये। सज्जन की परेशानियो को राहत मिली, बडा सुकून मिला। कर्नल, महिपाल किसी से भी ये नजरे छिपीं न रह सकी। महिपाल के मन में अजब भाव आया, सोचा, लौंडिया चालाक है। सज्जन से शादी करने के बाद उसे कम्यूनिज्म से कैपिटलिज्म की ओर आना पड़ेगा, लिहाजा मोटर चलाना सीख रही है।

कर्नल ने सभी का ध्यान पलटते हुए अपनी बात चालू की, कहा—"मैं जरा बैरिस्टर धवन से एक बार और सलाह कर लूँ। उनसे हर तरह की अच्छी सलाह मिलेगी। वह अकेले सालिगराम से मोर्चा नही है जनाब। इस वखत इलक्शन की पूरी मशीनरी हमारी तरफ अपना मोर्चा साधेगी। ये हवाई जहाज का करतब मेरी सूझ से कही ज्यादा काम कर गया! शहर मे इनकी हवा उखड गई है। लेकिन इस बखत मैं भी श्री दादा गुरु के चरन भेटने की मानता माने, टना हुआ बैठा हूँ। उन्ही के चरनो के प्रिताप से कल ये ऐसा अनमोल डाकूमेन्ट मेरे हाथ में पड गया है कि हम इनकी एक-एक नस हिला देगे। (सहसा बिचार आने से बात का रुख पलट कर) अच्छा, हाँ सज्जन, हमने तुम्हारा और सालिगराम का पैक्ट पास किया। इस मोर्चे पर हमें पब्लिक के सामने अपनी सफाई देने का अच्छा मौका हाथ आयेगा। ये हमे गले-गले डुबाने की स्कीम लेकर आया है, और हम ससरे को खडे हाथी की तरह पूँछ ऐठ कर बैठा देगे। अब तो सालिगराम आज या कल में आयेगा ही, पहले तो खूब खरी-खोटी सुनाऊँगा कि तुमने साले एक आर्टिस्ट की शराफत का फायदा उठाकर मुझे नीचा दिखाने की कोशिश की है! अच्छा बेटा, हम भी तुम्हे ये दिखायेंगे—वोई सज्जन वाली बात कि—हमारी इसानियत दुश्मनो के साथ भी हर अच्छे काम मे खुले दिल से शरीक होती है।"

सज्जन का चेहरा खिल गया, वनकन्या के चेहरे पर प्रश्न उदय हुआ, महिपाल को कर्नल का समर्थन अखरा, वह कन्या को बात की भूमिका सुनाते हुए बोला—"अभी इनको शायद नही मालूम। बात यो है कन्याजी कि आज आपके बाबू सालिगराम और शहर के एक बहुत बडे सूदखोर महाजन सज्जन को खुश करने के लिये इसके चित्रो की प्रदर्शनी का बहाना लेकर इसके पास आये थे। उन्होने सोचा कि वो कलाकार को पूजा देकर

अपनी तरफ फोड लेगे और वे इसमे आसानी से सफल भी हो गये।"

वनकन्या का चेहरा स्याह पड गया, सज्जन के चेहरे पर तेहे की तमतमाहट छाई, कर्नल ने तुरत महिपाल की बात के गलत असर को काटते हुए कहा—"तुमने बात को गलत ढग से कहा है महिपाल! सज्जन ने ठीक सोचा था, दरअसल मे हमारी ही नजर छोटी थी!" वनकन्या के चेहरे पर बढती हुई जिज्ञासा को बोध देने के लिये कर्नल ने फिर कहा—"सज्जन की बात मुझे सवा सोला आने ठीक जँच रही है बिन्नो! इनका कहना है कि वह हमारे पास एक अच्छे काम का प्रपोजल लेकर आये तो जैसे इन्होने एक इसानियत के काम में तुम्हारा हाथ बटाया वैसा ही वे पॉलिटिक्स का भेद-भाव भूलकर हर किसी के साथ अच्छे काम मे शरीक होगे। इसमे क्या गलत बात है?"

कन्या की आँखो मे शका और समर्थन का घुला-मिला भाव झलका। सज्जन उससे आँखें मिलाने को बेकल था। प्यार में जबान एक जगह आँखो से बुरी तरह मात खाती है। चार नजरो में बात करने की जितनी शक्ति होती है उतनी हजार जबानो में एक साथ मिलकर भी नही हो सकती। अपनी नजरो से कन्या की कसे काटती हुई नजरो को बाँधकर सज्जन ने कहा—"वो मेरे चित्रो की नुमाइश का प्रस्ताव लेकर आये थे। मै उनकी नीयत फौरन ही भाँप गया। मैंने उनके प्रोपोजल को पलट कर एक नई बात ही आगे पेश की। मैंने कहा चूँकि मुहल्ले में नुमाइश करने का यह नया आयोजन है इसलिये इसमे तमाम गली-मोहल्लो की औरतें अपनी सिलाई-बुनाई कसीदाकारी और भी जो-जो कला-कौशल परपरा से वे लोग जानती हैं, उनकी नुमाइश हो। उसमें मोहल्ले वाले चुनाव करे, प्राइज बाँटें, सौ रुपै का प्राइज मै भी अपनी मदर के नाम से दूंगा। इसके साथ ही साथ आज की कला से भी इन लोगो की जान-पहचान कराई जाये, लिहाजा शहर के सब अच्छे चित्रकारो की तस्वीरें ले आऊँगा—चालीस-पचास तस्वीरो से ज्यादा वहाँ और क्या चाहिये? जानकीशरण के सामने वाले दो बडे हालो में नुमाइश होगी। इसमें मैंने क्या बुरा किया? महिपाल कहता है मैंने धोका दिया। यह मेरी ईमानदारी पर झूठा कलक है, और मै अपनी बात की सचाई को साबित कर दिखाऊँगा।"

कन्या छूटते ही सज्जन से बोली—"आपने जो हौसला दिखाया है वह आप जैसे कलाकार की प्रतिष्ठा के अनुकूल है। मै तो कोई हस्ती नही, फिर भी इसके लिये जो काम आप मुझे सौपेगे मै उसे जिम्मेदारी के साथ निभाऊँगी।"

सज्जन खिल उठा। महिपाल बोला—"आप लोग अपने कलाकारोचित जोश मे दुनिया की चालो को न भूलिये। ये एलेक्शन के दिन है!"

"इलक्शन के दिन हैं, तो यहाँ भी उनके चचा बैठे भये हैगे—बाबू नगीनचद जैन उर्फ कर्नल साहब!" कहकर कर्नल ने अपनी सफाचट मूँछो पर अकड कर ताव दिया। फिर सज्जन से बोला—"नुमाइश करो जी ठाठ से। कही आज की तारीख में एक बात मेरी भी लिख लो सज्जन, कि इनकी हर चाल पलटकर इस बार अपनी अलग पार्टी—इसानी दल कायम न किया तो कुछ काम न किया। अब हम एक नही सब पोलिटिकल पार्टियो को चुनौती देकर कसौटी पर कसेगे। हम जनता मे रहेगे। जनता के अधिकारो के साथ रहेगे। अब चाहे सरकार हो, ये बडे-बडे कैपीटलिस्ट हो या पोलिटिकल पार्टियाँ

हो—हम सबसे अपने अधिकारो के लिये सावधान रहेगे। क्यो बिन्नो ? क्या राय है ?"

महिपाल कुर्सी से उठते हुए बोला—"बिन्नो बिचरौनी का बतइहै, हम बतायिति हयि अकि आप सब जो रावण की तरह दस-दस सिरो के बराबर बुद्धि लिये फूले नही समा रहे, तो आप लोगो को ये सालिगराम वगैरा नुमाइश के पुरस्कार मे एक-एक गदहे का सिर और प्रदान कर देगे—ये याद रखियेगा ! बेचारी बेचारी वनकन्या का केस अधर म ही छूट जायगा।—देख लेना तुम मूर्खों के लिये मै यह ब्रह्मवाक्य कहे जाता हू।"

सज्जन भी तेजी से उठते हुए बोला—"फिर मेरा भी भरतवाक्य सुनते जाओ महिपाल ! सज्जन हर तरह से तुम्हारे ब्रह्म को झूठा साबित कर दिखायेगा। और यह बात मै उन लोगो के सामने कह रहा हूँ जिनके आगे झूठा बनने के बजाय मै मर जाना बेहतर समझूंगा।"

महिपाल कुछ न बोला, तमक कर चला गया। सज्जन को इस समय महिपाल पर बेहद गुस्सा आ रहा था। उसने कन्या का मन उसकी ओर से बिगाड़ने की कोशिश की, यह बात उसे रह-रहकर तिलमिला रही थी। बडबडाते हुए कहने लगा—"आप झूठी जिन्दगी बसर करता है, अपनी बेवकूफी से लोगो के बहकावे में आता है तो समझता है कि सब लोग ऐसे ही होगे। ईडियट !"

कर्नल बोला—"अरे यार ! तुम भी किसकी बातो पर ध्यान दे रहे हो। अभी कहीं मन की कोई फाँस चुभ गई होगी तो खिलाफ हो गए लेखकजी महाराज, और अभी मन पलट जायगा तो तुमसे आगे बढकर तुम्हारा काम निपटायेंगे। मै सच कहता हूँ बिन्नो, महिपाल ऐसा भोला आदमी मैने नही देखा ! इसकी जबान बुरी है, दिल नही !"

कन्या बोली—"अरे, ऐसे तो कोई मनुष्य दूध का धोया नही भाई साहब, पर सब मिलाकर महिपालजी के लिये मेरे मन में आदर है। दिल के अच्छे न होते तो इतने अच्छे साहित्यकार भी वे न बन सकते।"

सज्जन का क्रोध कन्या, कर्नल और स्वय अपने ही तर्क से परास्त हो रहा था, उसे वह अब भी अपने कलेजे में कसकर रखना चाहता था। यह क्रोध—यह तेजी—उसे कन्या की प्यार भरी दृष्टि ने प्रदान की थी जिसके आगे वह इस समय सब भूला हुआ था। कन्या का स्नेहदान उसके कमजोर मन को इस समय मिथ्या अहकार से सबल कर रहा था। वह चाहता था कि कुछ देर के लिये उसे कन्या के साथ एकात मिल जाय। उसे अपने साथ घुमाने का प्रस्ताव पहले रोज कन्या अस्वीकार कर चुकी थी। सज्जन की आँखो में इस समय जो चमक थी वह 'चितन मदिर' के ब्रह्मचर्य सकल्प से बिलकुल उल्टी दिशा में प्रकाश डाल रही थी। उसके प्राण कन्या की मोहिनी शक्ति से बँधे-बँधे अपनी गूगी चाहत के पख बडी उतावली मे फडफडा रहे थे। इस समय निजत्व को चूँकि और किसी रूप में प्रतिष्ठित न कर सका इसलिये कन्या से यही पूछ बैठा—"तुम्हारा अपना किचन अभी आबाद हुआ या नही ?"

कन्या बोली—"भाई साहब तो मना करते है, लेकिन इस विषय मे इनकी बात नही मानूंगी। दो एक रोज मे—"

"तब तक तुम्हारे खाने का इन्तजाम कहाँ—"

"कल रात भी भाई साहब के साथ ही—"

"जीमनजी किया।" सज्जन ने मुस्कुराकर कहा—"बहुत ज्यादा जैनियो के चक्कर में मत पडना कन्या, ये अहिंसा परमो धर्म कह कहकर तुम्हारा मछली-कबाब छुड़वायेगा।"

हँसी कमरे मे गूँज गई। कर्नल ने कहा—"तुम माँस-मछली खाने वाले हमारे खाने की लज्जत क्या जानो?" कहते हुए कर्नल खडा हो गया। बाहर जाते हुए उसने कहा—"मैं अभी धवन साहब को टेलीफोन करके आता हूँ।"

कर्नल चला गया। सज्जन और कन्या एक दूसरे को देखने लगे। सज्जन ने पूछा—"तुमने दिल से मेरी बात का समर्थन किया था—"

"किस बात का?"

"यही सालिगराम के साथ—"

"आपको यह सदेह क्यो होता है?"

सज्जन उठकर कन्या के पास वाली कुर्सी पर आकर बैठ गया, कहने लगा—"तुमने सदा के लिये आज अपना मुझे दास बना लिया!"

"मैं दासता तोडने मे विश्वास करती हूँ सज्जन जी।"

"फिर भी एक दासता ऐसी है जिसे इसानी बुद्धि का कोई 'इज्म कभी न तोड सकेगा। दिल का नाता बडी चीज है। वह प्रेम और इसानियत का बधन है जिसम बँध कर आदमी कभी आजाद नही होना चाहता, बल्कि यही चाहता है कि वह बधन उसके चारो तरफ हर पल-छिन और कसता जाये—और कसता जाये।"

कन्या चुप बैठी रही। सज्जन उसे देखकर भली-भाति यह न समझ सका कि उसकी बातो की कन्या पर क्या प्रतिक्रिया हुई। कमरे में खामोशी आधे मिनट से भी कुछ अधिक ही रही। सज्जन ने फिर कहा—"कल तुमने मुझसे वादा किया था कि मेरे यहाँ रहोगी।"

कन्या सिर झुका कर दृढ स्वर मे बोली—"यहाँ आपका घर समझ कर ही आई हूँ।"

सज्जन एक तरह से सतुष्ट हुआ। पलभर सोचकर उसने फिर कहा—"मन का यह भी क्या ही अजब रगीन करिश्मा होता है कि जिसके ध्यान मे हरदम डूबा रहता है, उसी का सामना करने में उसे उलझन होती है।"

कन्या चुप रही। सज्जन को उसके चुप रहने से बल मिला। एकाएक झटके के साथ उसने सवाल किया—"क्या तुम ऐसा महसूस नही करती कन्या?"

कन्या ने धीरे से सिर उठाया, आँखो में सवाल लिये उसे देखती रही। फिर साव-धानी से बोली—"मै इस समय ऐसी मानसिक स्थिति में हूँ कि अपने सोचे हुए पर मुझे आप विश्वास नही होता।"

एक क्षण के लिये कन्या रुकी, फिर धीरे-धीरे बात का सूत्र उठाया—"ऐसा तो नही ही मानती कि मै किसी से प्रेम नही कर सकती। लेकिन आमतौर पर अब तक इस विचार से दूर ही रही हूँ, गो एक सपना मन मे अवश्य पलता था। मेरा वो अधूरा-सा सपना आपने बडी नाटकीय परिस्थिति मे आकर पूरा करने की उतावली दिखलाई।

इसीलिये न तो मै आपको ही ठीक-ठीक समझ पाती हूँ और न अपने को ही। आप कठिन समय मे मेरे सहायक बनकर आये है। मुझे डर है कि अपने स्वार्थ के कारण मैं जरूरत से ज्यादा आपका एहसान मान रही हूँ—"

"इसमें एहसान मानने की कोई बात ही नही।"

"आपके दिल में न हो, मुमकिन है आप सच कहते हो मगर मेरे मन मे ये भावना जरूर है, और बिलकुल स्वाभाविक रूप से है।"

"स्वाभाविक क्यो है ?"

"आपसे मेरी कभी पहले की घनिष्ठता नही है, आप मेरे रिश्तेदार भी नही हैं।"

"हम जिस रिश्ते मे बँध रहे हैं, वह दुनिया का सबसे बडा—"

"शून्य है !" कन्या ने शात गभीर स्वर में वाक्य पूरा किया।

सज्जन चौंक उठा, पूछा—"शून्य क्या ?"

कन्या ने पहले से कुछ आवाज को उठाते हुए कहा—"जीरो—सिफर—इससे ज्यादा इस नाते की और कोई परिभाषा मेरे ध्यान मे नही आती।"

सज्जन स्तब्ध् रह गया। उसने कन्या से कभी ऐसा उत्तर पाने की आशा नही की थी।

कन्या फिर कहने लगी—"जिस प्रेम पर दुनिया जान देती है, मै उसे मन का एक अभाव मानती हूँ।"

सज्जन के स्वर में कडक आई, पूछा—"क्यो ?"

कन्या बोली—"अभाव के सिवा ये और है क्या ? लैला को मजनू न मिला, मजनू बिना लैला के रह गया—इसीलिये दुनिया उनके प्रेम के गीत गाती है। मै पूछती हूँ यही लैला-मजनू अगर आपस में विवाह कर पाते तो क्या दुनिया इन्हे अमर प्रेमी मानकर याद रखती ?"

सज्जन गभीर हो गया, सोचकर उसने जवाब दिया—"अभाव का जागना इसान के जीवन मे छोटी घटना नही होती कन्या ! अपने अभाव को पहचान कर ही उसे भरने के लिये इन्सान के अन्दर छिपी हुई ताकत निखरती है—उसका विकास होता है। और रहे लैला-मजनू, सो इसीलिये याद किये जाते हैं कि एक दूसरे के लिये उन्होने हर छिन हर पल दीवानगी के साथ अपने आपको निछावर किया। बडाई इसी निछावर करने की है !"

कन्या एक बार हल्के-से खखार कर फिर चुप हो गई। उसने ऐसा रुख दिखलाया मानो उसे इन बातो मे कोई दिलचस्पी नही। सज्जन चुप होकर उसे देखता रहा। एकाएक कन्या उठकर चलते हुए बोली—"कवियो ने जिन विचारो और अनुभूतियो को सदा आगे बढाया है मै उन्हे धोखे की टट्टी मानती हूँ। बात सीधी होनी चाहिये। स्त्री-पुरुष नाते का अतिम रूप है,—पति-पत्नी होना . । और इस नाते के रूप में मैं अभी आपको अपने साथ-साथ ठीक तरह से नही देख पाती।"

सज्जन को फिर करारी ठेस लगी।

दरवाजे के पास पहुँचकर बाहर जाने से पहले बगैर सिर घुमाये कन्या कह गई—"स्त्री-पुरुष जीवन मे सिर्फ एक ही बार एक दूसरे को पाते है, मेरा इस बात मे दृढ विश्वास

है। और पाने के लिये उन्हे आपस में अपने आपको अनेक कसौटियो पर कसना होता है। ये जिम्मेदारी का नाता है—रईसो, कलाकारो, मनचलो के दिलबहलाव का खेल नही!"

कन्या चली गई। सज्जन का स्वप्नलोक फिर नीव से उलट गया। सज्जन को अपनी बेबसी पर बडा ताव आया। यह युवती रोज आकर उससे खिलौने की तरह खेलती है, और फिर झटक कर चली जाती है। सज्जन रोज उससे बेलाग रहने का प्रण करता है, और वह प्रण कच्चे धागे की तरह बार-बार टूट जाता है।

सज्जन इस तरह बेबस और खामोश तिलमिलाता रहा मानो भरे बाजार मे किसी ने उसे तमाचा मार दिया हो। तभी कर्नल ने आकर हँसते हुए कमरे की लाइट जला कर उससे कहा—"क्यो बेटा, हो गई तुम्हारी लव मेकिंग ? हम तो तुम्हे मौका देने के लिये ही टल गये थे।"

भारी स्वर में सज्जन ने कहा—"आपने मुझ पर बहुत एसहान किया! बेवकूफ, साले!"

१९

कर्नल के यहाँ मे निकल कर अमीनाबाद पार्क की भीड भरी सडको से गुजरते हुए महिपाल की मानसिक उत्तेजना क्रमश इस तरह बैठने लगी जैसे पानी पडने से धूल बैठती है। प्रतिक्रिया में अवसाद बढने लगा। अब कहाँ जाए! उसका कोई ठिकाना नही। किसी के दिल मे ठिकाना नही। वह सब के लिये बोझ है। उसका जीवन किसी के लिए भी उपयोगी नही। असफलता उसके भाल पर लिखी हुई चमक रही थी। ऐसा लगता था मानो सारी दुनिया उस अभागे की असफलता को देखती है, उसी नरह जैसे नुक्कड वाली ऊँची इमारत की छत पर बिजली के बड-बडे अक्षरो में लिखे हुए नीम टूथ पेस्ट के विज्ञापन को सबकी नजरे देखती है। वह कितना मजबूर है।

बहुत सीधा होना भी ठीक नही, महिपाल ने सोचा। सीधा आदमी सदा मजबूरियो का शिकार बना रहने के लिए आज की दुनिया मे बाध्य होता है। सेठ रूपरतन और छोटे भाई गट्टू ने उसे ठग लिया इस बात पर कोई विश्वास नही करेगा। परन्तु यह कहने के लिए हर कोई मुँह उठाए तैयार रहेगा कि महिपाल ने रूपरतन जैसे सेठ को फँसाकर रकम काट ली, या डा० जयपाल से उसे आर्थिक लाभ पहुँचता होता। मै शीला को क्या देता हूँ, यह दुनिया नही जानेगी। अगर जान जायगी तब भी यही कहेगी कि महिपाल शुक्ल, जो बडा भारी लेखक और साहित्यिक बनता है, वह ऐसा राक्षस है कि अपने कगाल बीबी-बच्चो का पेट काटकर अय्याशी मे माल लुटाता है। दुनिया मुझे हर हालत मे बदनाम भी करेगी इसलिए कि मै सीधा हूँ, गरीब हूँ। मेरे हाथ मे किसी प्रकार की भी सत्ता नही।

सामने भगतजी पान वाले की दुकान पर कल रात के 'बड़ा-हार' में शामिल हुए दो व्यक्ति खड़े दिखलाई दिए। उन्हें देखकर महिपाल चौगहे से यो कतराया जैसे चोर ने पुलिसमैनो को देख लिया हो। वह कितना तेज चला इस बात का भान उसे केसरबाग के चौराहे तक—पूरी नजीराबाद की सड़क पर चलते हुए नही हुआ। चौराहा क्रास करती हुई बस ने उसकी तेज चाल पर ब्रेक लगा कर इस बात का भी अहसास कराया कि उसने ख्वाहमख्वाह अपने आप को परेशान किया। उसे उन लोगो से डरने की जरूरत क्या थी? दरअसल वह लोगो से नही अपनी बदनामी से डरकर भागा था। मगर यह तो बेजा बात है। अपने घबराते हुए मन को सयम सिखा कर महिपाल ने अपने आपसे कहा—"मैं कब तक लोगो से भागता फिरूँगा। और मैने ऐसा किया ही क्या है? ससार मे बहुत से ऐसे है जो एक से अधिक स्त्रियो के साथ सबध रखते है, बहुत से है जो अपनी विलास-क्रीडा के लिए स्त्रियो के अनुचित व्यापार को बढावा देते है—क्या महिपाल शुक्ल उनसे भी गया-बीता है?—नही, मैं निष्पाप हूँ। मेरा और शीला का सबध आज की लौकिक दृष्टि से अनैतिक भले ही हो पर हम कोई पाप नही कर रहे है। और जो यह कहा जाय कि मै एक पत्नी-व्रत का पालन न कर सका तब भी कोई पाप नही। तीस-चालीस वर्ष पहले तक कितने लोग दो-दो, तीन-तीन पत्नियाँ रखते थे, स्वय शिव, कृष्ण, यहाँ तक कि भगवान राम के बाप भी बहुपत्नीवादी थे। अनेक ऋषियो तक ने बहुपत्नीवाद के सिद्धात को माना। शीला एक प्रकार से मेरी पत्नी तो है ही, भले ही उससे सात भाँवरो वाला विवाह न हुआ हो।"

महिपाल की बुद्धि अपने अदर पनपते हुए भय का नाश करने के लिए उचित-अनुचित तर्कों का सहारा ले रही थी। होते-होते उसकी विचारधारा यहाँ तक चली आई कि शीला ही उसकी वास्तविक पत्नी है-कल्याणी के साथ उसका विवाह पुर्खों की इच्छा से हुआ। और यह बच्चे?—यह सब बच्चे दरअस्ल शीला के ही होते।

अपने बच्चो की माँ के रूप में शीला की कल्पना करते हुए महिपाल की प्रलापी बुद्धि भी सकुच गई। ना, शीला उसके बच्चो की माँ नही हो सकती। शीला मा बनने के खयाल से ही नफरत करती है। महिपाल को फिर से यह विचार आया कि यदि शीला से भी उसे कोई सतान हो तो—कैसा लगेगा? कल्याणी के बच्चे, शीला की सतान—और दोनो ही के बच्चे उसकी सतान! बच्चो में प्यार का बँटवारा किस तरह से कर सकेगा? जिन लोगो के अलग-अलग स्त्रियो से सतानें होती है उनके मन मे क्या भेद नही पडता? अवश्य पडता है। स्वाभाविक रूप से पडता है। दुनिया मे ऐसी कितनी मिसालें मौजूद है। स्वय दशरथ की मिसाल ही मौजूद है। विभिन्न स्त्रियो से यदि उनकी सतानें न होती तो क्या उनका घर यो तीन-तेरह होता? बहुपत्नीवाद की अन्यतम ट्रेजेडी के रूप में दशरथ का उदाहरण उसके सामने आया। तीन स्त्रियो से उत्पन्न चार बेटो के बाप को कितनी बुरी मौत मरना पडा।

महिपाल अपने विचारो के साथ चलते हुए विक्टोरिया पार्क मे पहुँच गया था। इस समय विचार उसके मन पर इस तरह छा गए थे कि अनजाने में ही उसकी इच्छा बैठने की हुई और विक्टोरिया मडप के चबूतरे पर सीढ़ी की टेक लगाकर वह बैठ भी

गया। जाड़े का अँधरा, पार्क का सन्नाटा, क्यो बैठा है इस बात का ख्याल—सब कुछ इस समय उसके विचारो से बाहर था। जेब से एक सिगरेट निकाली, सुलगाई और अपने विचारो की कडी मे डूब गया।

करीब एक घण्टे तक वह वहीं बैठा हुआ तरह-तरह की बाते सोचता रहा। सर्दी बढ रही थी। विचारो की गर्मी भी अब मौसम की ठडक को बचा न पाती थी। सत्चितन के अनगिनत क्षणो का धनी अपनी गरीबुल-वतनी के अहसास से ठिठुरने लगा। इस समय वह जाय कहाँ, रहे कहाँ ?

महिपाल घर नही जाना चाहता। उसका मन कल्याणी के सामने जाने से मुँह छुपाता था। सबेरे पति-पत्नी की कलह से बच्चे भी जान गए है कि उनका बाप दुश्चरित्र है। अपनी पत्नी, बच्चो की माँ, के रहते हुए भी वह अन्य स्त्री में 'अनुचित' सबध रखता है।

'बच्चे क्या सोचते होगे ? पिता महिपाल अपने बच्चो से कैसे आँख मिलायेगा ? कल्याणी वज्र मूर्खा है। माना कि उसे जो क्षोभ हुआ वह स्वाभाविक था। फिर भी जिस तरह से उसने उसका प्रदर्शन किया वह नितात अभद्रतापूर्ण था।' इस समय महिपाल की मनोदशा विचित्र थी।

चार वर्ष पहले आँतो मे जख्म हो जाने से कल्याणी बहुत बीमार थी। कर्नल के साथ डा० शीला स्विग इलाज करने के लिए उसके घर आई थी। महिपाल से बाते करने पर उन्हे उसके प्रति बौद्धिक आकर्षण हुआ। कर्नल ने भी अपने मित्र की प्रसिद्धि और महानता का भाव भरा, गर्व भरा वर्णन किया। शीला के मन पर उसकी भी छाप पडी। कला और साहित्य में शीला की रुचि परिष्कृत थी। हिन्दी साहित्य से उनका परिचय नही, यद्यपि प्रेमचद की दो-एक किताबे, शरत के दो-एक हिन्दी अनुवाद उन्होने हिन्दी मे पढे थे। उग्र की 'चद हसीनो के खुतूत' की उन्हे आज भी याद आती है।—बस इतनी ही पूँजी पर दोनो की दोस्ती का साझा हुआ। उन दिनो पैसे की तगी थी सो महिपाल ने कर्नल से रुपए उधार लेकर अपनी किताबो का सेट खरीदा और कर्नल की मार्फत डा० शीला स्विग के 'कर कमलो' में भेंट कर दिया। इसके बाद शीला ने फीस लेनी बद कर दी और बे बुलाए विजिट कर कल्याणी को रोगमुक्त करने में बडा श्रम किया। शीला, कल्याणी और बच्चो से बहुत घुल-मिल गई। महिपाल उन्हे लेखक और व्यक्ति दोनो ही बातो से पसन्द आया, शीला अपनी कलाप्रियता, सौजन्य और प्राणशीलता के कारण महिपाल को प्रभावित करने लगी। बस, दोनो में इतना ही नाता था। अक्सर काफी हाउस में भी बैठक हो जाती थी। महिपाल के साथ मे सज्जन और कर्नल से भी उनकी घनिष्टता बढने लगी। महीनो यो ही बीत गये।

एक दिन महिपाल अकेला काफी हाउस मे बैठा था। शीला आई। उस दिन कुछ अनमने मूड में थी। वहाँ बैठने को जी न चाहा। महिपाल से घूमने का प्रस्ताव किया। दोनो लामार्टीनियर कालेज के आगे तक कार में बाते करते हुए चले गये। कार से उतर कर एक जगह एकात में बैठ गए। बातो ही बातो मे बहते हुए शीला की नजरे महिपाल के लिए ऐसे रिश्ते का पैगाम लाई जो अनुभव के तौर पर उसके लिए नया होते हुए भी बडा

रसमय था, ताजगी भरा था। इसके कुछ ही दिनो बाद महिपाल का एकपत्नी-व्रत खडित हो गया। पाप की भावना होने पर शीला से मिलकर आज भी महिपाल के मन में वही ताजगी आती है जो चार साल पहले उसके अनुभव में आई थी। शीला का सबसे बडा गुण यह है कि वह महिपाल को रिझाना जानती है। इतने दिनो में आज तक कभी लडाई नही हुई है, हालाँकि अक्सर मतभेद हो जाया करता है। महिपाल उग्र है। उसका स्वभाव शीला के सामन भी अपना परिचय देता है, परन्तु शीला के सामने उसकी उग्रता को उत्पात मचाने का मौका नही मिलता। शीला उसके क्रोध को जहाँ का तहाँ दबा देने की कला जानती है। बहुत घुल-मिलकर भी शीला ने आज तक महिपाल की आर्थिक स्थिति के सबध मे कभी एक प्रश्न भी नही किया और न अपने ही किसी निजी और घरेलू चर्चों को कभी उसके सामने छेडा। दोनो का मिलना-जुलना भी रोज नही होता। दोनो ही अपने काम-काज मे, अपने-अपने समाज में व्यस्त रहते है। फिर भी जल्दी-जल्दी मिलते रहना उनका अनिवार्य नियम है।

महिपाल के मन मे शीला की स्मृति अपनी मधुरता को लेकर तीव्र हो गई। सोचने लगा—वही चला जाय। वही रात बिताई जाय।

महिपाल उठ खडा हुआ। एक बार फिर झिझक लगी। फिर यह सोचा कि शीला के घर गये बगैर दूजा उपाय नही। यो तो वह सज्जन के घर जाकर भी सो रहता मगर उसके यहाँ इस समय जाना नही चाहता। उसकी नजरो मे सज्जन हिपोक्रेट है। कर्नल का घर उसके घर के बहुत पास है, वहाँ जाने पर वह उपदेश का पचामृत पिलाने लगेगा। शीला के घर ही चलना चाहिए।

हठ के साथ इस विचार को बाँधकर वह दस कदम चला, फिर सोचा कि अब से वह शीला के यहाँ ही रहेगा? क्या वह रह सकता है? महिपाल के पाँव फिर बँधने लगे। उसे फिर तीव्र अवसाद का दौरा आया। उसका जीवन निरर्थक है। वह अब सन्यास लेगा—कही भाग जायगा।

भागने से पहले शीला से अतिम विदा लेने का विचार उसके मन में बचाव के तौर पर आया, और वह यही बहाना लिए हुए चलता रहा।

बगले पर पहुँचकर नौकरो से मालूम हुआ कि मिस साहब विजिट से नही लौटी। उस समय घडी मे पौने दस बजे थे। महिपाल, नौकर को कॉफी बनाने का आदेश दे, शीला के लिविंग रूम मे जाकर सोफा पर लेट गया। बीस मिनट बाद शीला भी आ गई।

शीला के जूडे में तीन पीले गुलाब के फूल और कानो में हीरे की तरकियाँ दमक रही थी। शीला बाहर से बहुत खुश होकर लौटी थी, महिपाल को देखकर उसकी खुशी में चार चाँद लग गए।

"यू रास्कल, व्हाट आर यू डूइग हियर ऐट दिस टाइम ऑफ द नाइट? बीबी ने घर से निकाल दिया है क्या?"

महिपाल ने सूखी हँसी हँसकर कहा—"हाँ"।

"सच बताओ, लडकर आए हो?"

महिपाल ने बात को हँसी में उडा कर उत्तर दिया—"नही जी। मैं तो हँसी में कह

रहा हूँ। ऐसा हुआ कि आज शाम को यह दोनो बेवकूफ मिले नही। मैं कुछ चहलकदमी के मूड में आ गया। बडी देर तक ह्वाइट विक्टोरिया पर बैठा रहा। फिर तबियत हुई तुम्हारे यहाँ चलूँ। चला आया। खाना-वाना खा चुकी हो तुम ?"

"अभी कहाँ। तुमने भी नही खाया है शायद।"

"इसीलिए तो पूछा।"

"अब्दुल।"

"जी मिस साब।" दूर से आवाज आई।

महिपाल को हँसी आ गई। शीला ने देखा, पूछा—"क्यो, किस बात पर हँसी आई ?"

महिपाल ने कहा—"अब्दुल के मिस साहब कहने पर !"

शीला को एक सेकेण्ड बात समझन मे लगा और फिर बडी जोर से हँस पडी। अपने पास रक्खा हुआ गोल तकिया उसने महिपाल पर फेंक मारा। अब्दुल तब तक आ गया था। शीला ने फौरन गभीर होकर उसे आदेश दिया—"साहब यही खाएगे—क्या बनाया है आज ?"

"मुर्गी।"

"ठीक है ! खाना लगाओ। ठहरो ! महिपाल, ड्रिंक लेना पसद करोगे !"

"शर्तिया पसन्द करूँगा।"

अब्दुल को फिर कुछ और आदेश देने की जरूरत न पडी। शीला से दराज की चाभी माँगी। मेज की दराज खोली, दूसरी चाभी निकाली और आलमारी खोल कर मेज पर गिलास और ह्निस्की की बोतल रख दी।

खाने की टेबुल पर बैठते हुए शीला ने पूछा—"तुम्हारे उपन्यास का क्या हुआ ?"

"इधर नही बढ रहा।"

"कब से ?"

"पद्रह-बीस रोज हो गय।"

"अब तक कितना लिख चुके हो ?"

"नउअन पेज।"

"लिखना क्यो बद कर दिया ?"

"ओ, ऐसे ही। बीच में कुछ रेडियो वगैरह का काम आ गया। और फिर रोज की मजदूरी करने से फुर्सत नही मिलती।"

"उसे पूरा कर डालो। तुमने एक अच्छी चीज उठाई है।"

मुर्गी पर छुरी चलाते हुए महिपाल ने लापरवाही से मुंह बनाकर कहा—"ओंह, हो जायगी पूरी। कौन परवाह करता है ?"

"वाह, अगर तमाम आर्टिस्ट यही सोच ले तो कल को आर्ट नाम की कोई चीज ही न दिखाई पडेगी।"

"पुरानी पिटी हुई बात—इतनी पिटी हुई कि सिनेमा वाले भी उसके डायलाग बना लेते है। देखो शीला, लिखने के लिये कोई किसी लेखक को मजबूर नही कर सकना। लेखक खुद अपने आप को भी मजबूर नही कर सकता। इसका कारण यह है कि लेखक—

या कोई भी आर्टिस्ट अपने आर्ट से खुद इतना मजबूर होता है कि जरा सी शांति पाते ही अपना काम शुरू कर देता है ।"

"क्यो, आजकल किसी खास परेशानी मे हो ?"

महिपाल ने प्रश्न सुनकर अपने को सँभाला, उसने कहा—"खास परेशानी क्या—भाजी की शादी की चिंता है। हर रोज कही जन्मपत्र मागो, कही खुशामद करो, यही सब उलझने मन पर बोझ डाल देती है ।"

"शकुन की शादी कही पक्की कर ली है क्या ?"

"अरे, कही नौशा तो खरीद लूं पहले। हमारे यहाँ का यह अजब कायदा है कि ऊँचे दाम पर खरीदी गई चीज पर खुद हमारा ही अधिकार नही है। लडकी के लिए वर के दाम देकर भी हमी को हर तरह से बेवकूफ बनना पडता है, अपमान सहना पडता है ।"

"महिपाल, तुम क्यो नही यह तमाम जाति वगैरह के बधन तोड देते ? अब अगर तुम्हारे जैसे लोग भी इन मामलो मे लीड् नही लेगे तो समाज आखिर बदलेगा कैसे ?"

"अजी, मै तो लाख बदलूँ मगर वह जो आपकी है—वह कहती है कि हम जहर खाय ल्याब जो शकुन्तला का बिहाओ खटकुलन मा न भा तौ ।"

परिस्थिति की मजबूरी को पूरी सहानुभूति से समझते हुए भी शीला को बात कहने के ढग पर हँसी आ गई। उसने कहा—"तुम तो कल्याणी की ऐसी नकल उतारते हो कि—अच्छा मिलने दो इस बार, तुम्हारी शिकायत करूँगी ।"

महिपाल ने इस बात का कुछ जवाब न दिया। चुपचाप खाता रहा।

"अब्दुल ।"

"हजूर ।"

"मियाँ, गिलास भर दो एक बार ।"

"बहुत अच्छा, हुजूर ।"

शीला बोली—"मै तुम्हारी परेशानी को खूब समझ रही हू। लडके वाले ढेर सा दहेज माँगते होगे ।"

"माँगने दो सालो को !" गिलास मे रग ढलते ही उसके मन में नई मस्ती छा गई। उसने कहा—"मैंने इसकी चिन्ता करनी ही छोड दी। कल्याणी को गरज होगी तो आप कर लेंगी।" फिर अब्दुल से कहा—"अमाँ और डालो यार !"

गिलास मे दो पैग ढालकर वह सोडे की बोतल खोलने लगा था। अब्दुल ने फौरन ही सोडा रखकर बोतल खोली। दो पैग और ढाले। शीला ने पूछा—"तुम्हे यकीन है कि तुम ओवर नही जा रहे हो ।"

"नही। आई नीड इट।" अब्दुल को बोतल बद करते देख उसने पूछा—"मिस साहब को नही दी ?"

"मै अब नही लूंगी ।"

"साथ देने के लिये ?"

"नही। सबेरे पेशेण्ट्स अटेण्ड करने है ।"

"एक पैग—साथ देने के लिए ?"

"अब्दुल तुम जाओ, मै ले लूँगी। सोडा खोल दो और जाओ।"

अब्दुल के जाने के बाद शीला ने उठकर महिपाल के गिलास से ही एक पैग के करीब अपने गिलास मे ढाल ली। फिर सोडा मिलाया।

गिलास खनके। दोनो ने अपने प्यार के घूँट पिये। गिलास रखकर खाना शुरू करते हुए शीला ने कहा—"महिपाल, एक बात कहूँ ?"

"क्या ?"

"मेरा काफी रुपया ब्लैक होकर पडा है—उसे ह्वाइट करने में मुझे मदद दोगे ?"

"नही।"

"पहले मेरी बात समझ लो। तुम्हे मेरी सिर्फ इतनी ही मदद करनी होगी कि मुझे जिस तरह के आदमी चाहिएँ वैसे चुन कर ला दोगे।"

"किस काम के लिये ?"

"मै पब्लिकेशन करना चाहती हूँ। एक तो तुम मुझे अपनी सब किताबें पब्लिश करने का हक दो। वह जहाँ-जहाँ से छपी है मै सब के स्टाक खरीदने तो तैयार हूँ। जो बिक चुकी है उनके नये एडिशन मै छापूँगी। किताबो का धधा समझने वाला एक अच्छा मैनेजर तुम मुझको दो—बस इतनी ही मदद चाहती हूँ।"

महिपाल चुपचाप सुनता रहा। शीला की बात पूरी हो जाने पर भी उसने अपनी तरफ से जवाब मे कोई बात न उठाई। शीला ने फिर पूछा—"बोलो, मजूर है ?—और यह बात मै पहले ही साफ किये देती हूँ कि यह मेरा प्योर बिजनेस फार्मूला है। इस गिरती के जमाने में, थोडी बहुत किताबे लोग जरूर ही खरीदते है। और मै तो ऐसे नये ढग र इसकी पब्लिसिटी कर सेल पुश करूँगी कि तुम देखते ही रह जाओगे।"

महिपाल हँसा—जोर से सनक भरी खोखली हँसी हँसा। शीला उसकी सूरत देखने लगी। महिपाल ने कहा—"तुमसे न माँगने पर तो यह हाल है कि लोग खुलेआम मुझे बदनाम करते है और जो कही तुम्हारे पैसे से मेरी किताबें छपने लगी तब तो लोग-बाग महज आपसी कानाफूसी में नही बल्कि इतिहासो मे मेरा कलक लिखने के लिये धाएँगे।"

"तुम्हारे साथ एक बडी भारी दिक्कत मुझे यह पडती है महिपाल कि जब तुम अपने बारे मे सोचते हो तब निहायत नामाकूल हो उठते हो। अरे बकौल तुम्हारे ही जिंदगी अब आधा सफर तै कर चुकी है। कब तक बेवकूफियो का शिकार बने रहोगे ? मै तुमसे सच कहती हूँ—बहुत दिनो से मै इस बात पर गौर कर रही थी। मैंने बहुत सोच-समझ कर ही तुमसे आज यह बात कही है। इस काम मे हम दोनो का फायदा है। अरे, मैंने सेल बढाने के, पब्लिसिटी के ऐसे अच्छे-अच्छे तरीके सोचे है "

"सोचे होगे। मुझे सुनाने की जरूरत नही।"

"तुम ज्यादती कर रहे हो। जरा देर के लिए भूल क्यो नही जाते कि तुम वह नही हो जो कि—जो कि तुम मेरे हो। हम सीधे-सादे दो दोस्त है। आपस में मिलकर ऐसा बिजनेस करते है तो उसमे क्या नुकसान है ?—दुनिया की बातो को छोडो। दुनिया न जाने क्या-क्या बकती रहती है।"

"मैं दुनिया से नही डरता शीला। अपने मन के चोर से डरता हूँ।"

"डरते-वरते तुम कुछ नही हो, अभी सच कह दूँ तो बुरा मान जाओगे। मगर तुम हो मूर्ख ! मैं हँसी में नही कह रही हूँ। तुममें वाकई एक ऐसी जहालत है जो खुद तुम्हें ही चैन नही लेने देती। दूसरो की तो चर्चा ही फिजूल है।"

महिपाल कुछ कहने ही जा रहा था कि शीला समझाने के स्वर में कहने लगी—"देखो, मैंने बडी अच्छी-अच्छी स्कीमें सोची है। तमाम स्कूलो और कालेजो, यूनिवर्सिटियो में इस तरह की पब्लिसिटी कराऊँगी कि जो तुम्हारी किताबो को पढ़कर उनका अच्छा क्रिटिसिज्म करेंगे, उनके कम्पिटिशन मे जो फर्स्ट आयगा उसे इनाम दिया जायगा। इस तरह लोग तुम्हारी किताबो को ज्यादा से ज्यादा तादाद में पाने और पढने के लिये उत्सुक होगे।"

महिपाल यह सुन कर मन ही मन बहुत सुखी हुआ। जैसे रेगिस्तान के प्यासे को पानी मिला हो। यह महिपाल की बडी भारी तमन्ना रही है कि लोग चारो तरफ उसकी किताबो को पढें और तारीफ करे, मगर इस स्वार्थ सिद्धि के कारण महिपाल अपनी मर्यादा नही तोडेगा। शीला को हतोत्साहित करता हुआ बोला—"देखो, यह प्रकाशन का काम पूरा समय और पूरी मेहनत माँगता है। तुम्हे इतनी फुर्सत है नही—"

"तुमने यह कैसे समझ लिया कि मैं इस काम में अपना समय न दे सकूँगी। बस, मुझे एक अच्छा बिजनेस मैनेजर दे दो।—देखो, महिपाल मेरा बेकार पैसा मुनाफा देने लगेगा, तुम्हे भी रॉयल्टी की बँधी रकम मिलेगी। मै सच कहती हूँ, इस गिरे हुए जमाने में भी मैं तुम्हारी किताबो की सेल को न बढा दूँ तब कहना।"

"बहुत हो गया। अब कोई नई बात शुरू करो !"

"मैं बहुत खास बात कर रही हूँ।"

"मेरे जीते जी तुम्हारा यह बिजनेस नही चल सकता। मरने पर करना !"

"महिपाल"—शीला ने बनकर नजाकत के साथ कहा—"तुम कभी मेरी बात नहीं मानते।"

महिपाल ने गिलास उठाते हुए फीकी हँसी के साथ कहा—"खैर, आज मैं तुम्हारी ऐसी हर बात मान लूँगा जो आज ही पूरी हो जाने के काबिल हो !"

"क्या मतलब ?"

"आज मै तुमसे अंतिम विदा लेने आया हूँ।"

शीला सन्न रह गई। कुछ समझ न पाई। मगर सहम जरूर गई। पूछा—"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

• •　　　　　　• •

दोनो शीला के पलँग पर बैठे हुए थे—एक साथ लिहाफ ओढे हुए। शीला दुखी थी। उसे लेकर महिपाल की इतनी बडी बदनामी हो गई यह बात रह-रह कर उसका मन कचोट रही थी। बडी देर तक खामोश बैठ रहने के बाद, एकाएक महिपाल के गले में बाँह डाल कर उसे अपने सीने से कसते हुये आँसू भरी आँखो से देख कर शीला ने कहा—"दुनिया को कहने दो !"

"दुनिया की मुझे परवाह नही। बात, कल्याणी और बच्चो तक पहुँच गई है। मुझे इस बात का बडा दु ख है कि वे लोग तुम्हे अब तक जिस नजर से देखते थे वैसे अब फिर न देख पाएँगे। मेरे लिए उन्हे छोडने, या तुम्हे छोडने का सवाल आ गया है।"

शीला कुछ न बोली। वैसे ही जकडी रही।

"यह जानता हूँ कि घर और बाहर दोनो जगह कुछ दिनो के बाद यह हगामा दब जायगा। हर हगामा अपनी तेजी दिखाकर दब जाया करता है। उसके बाद हम फिर इसी तरह से मिलेगे और दुनिया फिर हमे बेशर्म मानकर हमारी तरफ उगली उठाना छोड देगी।"

शीला सीधी होकर बैठ गई। बोली—देखो महिपाल, हम आपस मे एक-दूसरे को जानते है फिर उस ईमानदारी को हम दुनिया से छिपायें ही क्यो? हमारे ईमान को दुनिया अगर गलत समझती है तो समझे मगर हम क्यो गलत समझे? और इसके अलावा एक बात मै तुमसे यह पूछती हूँ कि इतने दिनो में मैने तो कभी कल्याणी का अधिकार नही छीना, फिर कल्याणी के लिए तुम मेरा अधिकार क्यो छीन रहे हो?"

"तुमने कल्याणी से मुझे छीना है शीला! जिस मनुष्य पर बीस बरस तक उसका एकच्छत्र अधिकार रहा उस पर आज तुम साझा बटा रही हो।"

"कल्याणी जितना तुम्हे जीत सकी उतने तुम आज भी उनके हो, मगर जो मेरी जीत का हिस्सा है उसे लेने वाली वह कौन होती है? मै हर्गिज तुम्हारा साथ नही छोडूगी। प्रामिस करो कि तुम आइदा से कभी ऐसी बाते मेरे सामने न करोगे। यह लव-ट्रायएँगल खीचकर उसकी प्राब्लम्स के चक्कर मे पडने की अब हमारी उम्र नही रही। हम जैसे अब तक रहे है वैसे ही रहेगे। बोलो, वादा करो कि पीछे न हट जाओगे?"

महिपाल का पौरुष पीछे पैर रखने को तैयार न था। बोला—"मै वादा करता हूँ। हमारा जो नाता है वह सदा जुडा रहेगा।" शराब के नशे ने प्रतिज्ञा में अपार जोश भर दिया, परन्तु ऐसी हालत मे भी वह पूरी तौर पर अपना होश नही खो पाया था। किसी हद तक नशे से बेकाबू होने पर भी महिपाल को अपने स्वाभिमान का ध्यान बना रहा। वचन देकर खुद उसने भी शीला से वचन माँगा—"और तुमको भी वचन देना होगा कि आइदा से मेरे सामने बिजनेस की बाते न करोगी। तुम अपने को लखपती समझती हो। मैने आज तक तुम्हारे लाखो की परवाह नही की।"

"बात यही रहने दो। अब कभी ऐसी बात न करूँगी।" अपना गुनाह माफ करवाने के लिये महिपाल के सीने पर अपना सिर टेक कर उन्होने ऐन उसके दिल से अपील की। चतुर औरत पुरुष को रिझाना खूब जानती है।

महिपाल जब शीला के घर से बाहर निकला तब रात के डेढ बज रहे थे। उसने शीला की मोटर न ली। कहा—"शहर में कोई चीज किसी समय भी लुप्त नही होती। इस चौराहे पर या डालीगज मे तो जरूर ही रिक्शा या ताँगा मिल जायगा।"

शीला ने अपना शाल जबरदस्ती दे दिया, सर्दी तेज होने की वजह से महिपाल ने भी नाही न की। सडक पर आकर वह सोचने लगा—"अब कहाँ जाऊँ।"

• • • • • •

संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए महिपाल ने जाड़े की रात को गोमती घाट के एक खुले शिवाले में अपनी ज्ञान-चेतना से गर्माते हुए शेष किया। इस पर भी वह इस ख्याल से न उबर सका कि वह कमजोरियों का गुलाम है। ऐसी दशा में उसकी विवेक-बुद्धि कभी विकसित नहीं हो सकती, उसका कोई निर्णय न्याय और औचित्य का आधार नहीं पा सकता। वह कमजोर है, अन्यायी है, उसका घर छोड़ने का इरादा भी अनुचित है, पाप है।

दुर्बल मन महिपाल का दम-सा घुटने लगा। आसमान में चमकते हुए तारे कुछ-कुछ लुप्त हो चले थे। महिपाल सोचने लगा कि रात तो अब बीत ही चली, परन्तु दिन कहां, और कैसे कटेगा? भटकता हुआ आखिर वह जायगा कहां तक? क्या भटकना ही उसके जीवन का मिशन हो जायगा? यह विचार अपने आप में क्या कायरतापूर्ण नहीं? ये ज्ञान चिन्तन जो कुछ वह करता है क्या महज समय बिताने के लिये ही शौक के रूप में करता है? क्या उसका कोई सामाजिक मूल्य नहीं? पिता होकर क्या बच्चों के प्रति कोई उसका नैतिक कर्तव्य नहीं? महज मुंह छिपाते रहना आखिर संभव ही कैसे हो सकता है? उसे मुसीबत का डट कर मुकाबला करना चाहिये।

"घर जाऊँगा। कल्याणी को एक बार सारी परिस्थिति समझाऊँगा फिर जैसा निश्चय होगा, देखा जायगा।"

महिपाल अपने घर पहुँचकर दरवाजे से ही लौट आया, कुण्डी खटखटाने का साहस उसे न हुआ।

कर्नल के घर वह करीब-करीब नित्य के समय पर पहुँच गया।

सज्जन और कर्नल स्वप्न में भी ये न सोच पाये कि उनका मित्र पिछले दिन सबेरे से ही घर से भागा हुआ है।

२०

"अजी साहब, वो ठीक ही कह रही होगी। आजकल के बाबा-बैरागियों का कोई ठिकाना है?"

चौराहे से जरा हटकर चायवाले की दूकान के पास भारी मजमा लगा हुआ था। भीड़ से आधी सड़क घिरी हुई थी, कुछ लोग भीड़ में घुस कर तमाशा देखने के लिये आगे बढ़ रहे थे, कुछ तमाशा देखकर लौटते हुए तरह-तरह की राय जाहिर कर रहे थे। एक औरत गला फाड़-फाड़कर लड़ रही थी, उसकी आवाज पर कई आवाजों का हुल्लड़ बीच-बीच में छा जाता था—खूब बमचख मची हुई थी।

सज्जन ने रोज की जगह अपनी कार खडी की। आते ही भीड की तरफ उसका ध्यान गया। कार की चाभी लगा कर निकलने के बाद वह कार के पास ही खडा होकर भीड को देखने लगा। पास से गुजरते हुए दो आदमियों की बातचीत से उसके मन में भी तमाशा देखने का कौतूहल जागा।

भीड में आगे पहुँच कर उसने देखा, एक कुरसी पर वकील साहब की पगली बहू बैठी हुई जोर-जोर से रो और चिल्ला रही थी। पास ही एक लँगोटीधारी वृद्ध साधु खडे मुस्कुरा रहे थे। अपनी परिचित पगली को इस तमाशे की प्रमुख नायिका के रूप में देख कर सज्जन से तमाशाई बनकर खडा न रहा गया। आगे बढ़कर उसके सिर पर हाथ रखते हुए उसने पूछा—"क्या हुआ ?"

बात पूरी तरह पूछ भी न पाया था कि उसे देखकर वह पगली युवती ऐसे उठ खडी हुई मानो डूबते को सहारा मिल गया हो। उसने हर्ष से गद्‌गद् स्वर में कहा—"ओह, यू हैव कम जेन्टिलमेन! मुझे इसके हाथ से बचाइये। ये साधू-आधू कुछ नही, कसाई है कसाई। ये मुझे रंडी बनाना चाहता है। मैं रंडी हूँ? आप बतलाइये कि मै कितने ऊँचे घराने की—अभी मेरे राजेश को मालूम हो जायगा तो वह इस बाबाजी को आकर गोली मार देंगे। आप मुझे मेरे राजेश के पास ले चलिये। मेरा राजेश कैप्टेन! वह जब आकर देखेंगे इन सब लोगो ने भीड लगा रक्खी है तो इन सब को गोली से 'टक-टक'—एक-एक को शूट कर देंगे। और ये बाबा, हरामी का पिल्ला—"

पगली एक बार बाबा की ओर मुट्‌ठियाँ बाँध कर बढी। सज्जन ने उसके दोनो हाथ पकडकर जोर से झटक दिया और पूछा—"अपने घर चलेंगी आप ?"

"उस बुड्‌ढे के यहाँ? नही, कभी नहीं जाऊँगी। आप मुझे मेरे राजेश के पास पहुँचा दीजिये। बस, आप इसी वक्त मुझे वहाँ ले चलिए। बस, अब मैं यहाँ नही रुकूगी। चलिये—चलिये!" वह सज्जन को आग्रह से ढकेलने लगी।

सज्जन ने एक बार पास खडे हुए लँगोटीधारी वृद्ध साधु को देखा। बुढापा केवल उनके दाँत-विहीन झुरिया पडे चेहरे पर ही दीखता था, बाकी सारा शरीर फौलाद की तरह ठोस था। वर्ण श्याम होते हुए भी तेजोमय था। बाबा की तरफ सज्जन को देखते हुए पगली ने कहा—"बाबा की तरफ क्या देखते है? यह मुझे हरगिज नही रोक सकता।" पगली फिर उसे अपने गिरफ्तार हाथों से झकझोरने लगी।

साधु ने सज्जन से कहा—"इस समय भीड का बल पा गई है रामजी! आप जरा मेरे साथ आने का कष्ट कीजियेगा? हाथ छोड दीजिये उसके।"

सज्जन ने तुरत पगली के हाथ छोड दिये और साधु के साथ भीड से निकलने के लिये बढा। पगली ने फौरन उसकी बाँह पकड कर चिमटते हुए कहा—"नही! बाबा के साथ मत जाइये। यह आपको भी पागल बना देगा, जडी पिलायगा, कसरत करायगा, मारेगा। बाबा ने आगे बढकर चायवाले के नौकर से कहा—"बेटा जरा ध्यान रखना।"

सज्जन ने पगली को समझाना शुरू किया कि वह बाबाजी को कोतवाली मे बद कराने जा रहा है। पगली इससे बेहद खुश हुई। और फिर पगली की इच्छा के अनुसार

सज्जन ने उसे आश्वासन दिया कि बाबा को गिरफ्तार कराने के बाद वह उसे तुरन्त हवाई जहाज पर बैठाकर राजेश के पास ले जायगा।

भीड से बाहर निकलकर साधु और सज्जन एक जगह बात करने के लिये खडे हुए, पाँच-सात की भीड फौरन ही उनके आस-पास भी जुट गई। वृद्ध साधु ने कहा—"रामजी मै इस लडकी का उपचारक हूँ। आप क्या इसके कोई रिश्तेदार है ?

सज्जन बोला—"जी नही। एक दिन ऐसे ही ये गली से निकल भागी थी। मै इसे पकडकर घर वापिस ले गया था, तभी इस बेचारी की हिस्ट्री मालूम हुई। इनके ससुर—"

"इनके ससुर को भी रामजी कहलवाया था अभी। हम कहा कि इस-इस प्रिकार से आश्रम से निकल भागी है तो न आप आने का कष्ट कीजिये वो बिचारे अपनी इज्जत आबरू के डर से बाजार मे आने को राजी न हुए। हम से कहलवाय दिया कि बाबा जानै। खैर, अब प्रिस्न ये पड गया है रामजी, ये भीड में पड गई है—चार ने उल्टी कह दी, चार ने सीधी, तौन इस समय ये हमारे अंकुस मे नही आवैगी। और भीड मे पागल को, बिसेस करके स्त्री रोगी पर बल प्रिजोग करना हमारी नीति के विरुद्ध है। आप एक सेवा कर देगे रामजी ? इसको बहलाय के हमारे आश्रम तलक छोड दें तो बडा उपकार होय।"

सज्जन ने कहा—"मेरे पास गाडी है—"

पोपले मुँह से मगन होकर हँसते हुए साधु ने कहा—"बस-बस, तब तो आपने सारा काम ही बनाय दिया। आप इसे अपनी गाडी पर लेकर चलिये। मै दौडकर पहुँचता हूँ। ये बगैचा पार करके सीधी सडक घाट पर हमारा आश्रम है।"

"मै समझ गया, अब कोई अडचन न होगी। आपको दौडकर पहुँचने की आवश्यकता नही। मै इसे जरा एक राऊड घुमाकर दस मिनट मे पहुँचता हूँ—मेरे घुमाने से आपको कोई आपत्ति तो नही होगी ?"

साधु अपने पोपले मुँह से खिलखिला कर हँस पडे। उनकी हँसी बच्चे के किलकारी भरे निर्मल हास्य के समान थी, छोटी-छोटी आँखो की काली पुतलियो मे अपार स्नेह चमक रहा था। सज्जन को उस हँसी ने प्रभावित किया। साधु बोले—"रामजी के काम मे हम आपत्ति करने वाले कौन ? वे सदा उचित करते है। अच्छा रामजी, अब आश्रम में भेंट होवैगी।"

कार पर बैठ कर पगली बेहद खुश हुई। पहले एक बार उसे सकोच हुआ था, कार पर बैठते समय एकाएक हिचक कर उसने कहा था—"मै ऐसे जाऊँगी कार पर ? मेरे पैरो मे सैन्डिल नही, मेरी ये धोती ! छि मै ऐसी फटी धोती पहनकर कार पर जाऊँगी ? मै नही जाऊँगी।" सज्जन ने उसे आश्वासन दिया कि वह सैन्डिल और साडी दिलाने के लिये चल रहा है। तब वह खुशी-खुशी गाडी पर बैठ कर चली आयी। सज्जन ने अपने दोनो वादे पूरे किये।

सैडिल और साडी लेकर कैप्टेन राजेश की पगली पत्नी बडी खुश है। उसकी बातो का सिलसिला कभी टूटने में ही नही आता। बातो मे यही सब है कि किस तरह वह अपने राजेश को प्यार करने के लिये तडप रही है। अपने प्यार-शृगार की गुप्त लीलाओ की मधुर कल्पना करते, और उत्साह से बखान करते हुए पगली को अपार उल्लास हो

रहा है। सज्जन के लिये यह समय बडा कठिन बीत रहा है। स्त्री-पुरुष का अति गोपन मधुर रहस्य एक अतृप्त वासना भरी पगली की महत् कामना बनकर उसके मन में रस के बजाय पीडा जगा रहा है। वह गभीर हो रहा था—गभीर बनने मे सज्जन को कठिन श्रम भरा मानसिक खिचाव महसूस हो रहा है। उसे एक ध्यान, एक भय सता रहा है कि अतृप्ति मन को किस हद तक बेसुध बना देती है! इसान जिन बातो को अपना प्यारा से प्यारा और कीमती रहस्य समझता है, उसे भी बेझिझक और इतने विकृत रूप मे जाहिर कर देता है! उसे बडी चोट लग रही थी—कोई भी मनुष्य पागल हो सकता है, कभी हो सकता है। यह सज्जन नाम का प्रतिष्ठित धनी नागरिक, प्रसिद्ध कलाकार और सुन्दर सजीला युवक अपनी अतृप्तियो के कारण यदि कभी पागल हो जाय तो? ओ भगवान्! सज्जन सिहर उठा। गाडी मेडिकल कालेज पार कर, पक्का पुल, बडा इमाम-बाडा और मच्छी भवन होती हुई घाट के निकट पहुँच गई।

घाट की गली के मुहाने पर लैम्प पोस्ट के पास, लैम्प पोस्ट की तरह ही तन कर लँगोटीधारी वृद्ध साधु खडे थे। उनके सामने गाडी रुकते ही पगली चिल्लाकर रोने लगी—"मै नही जाऊँगी! मै बाबा के यहाँ नही जाऊँगी।"

साधुजी ने गाडी का दरवाजा खोल हाथ पकड कर खीचते हुए पगली को एक तमाचा लगाया। उसके सैडिल और साडी के बक्से बिखर गए। स्त्री उस समय मार को भूल कर भी अपनी चीजो के लिये आतुर हो उठी। तमाचा खाकर वह एकदम से चुप हो गई। मानो उसमें समझ आ गई हो। वह साधुजी के हाथ से छूटने का प्रयत्न करने लगी। साधुजी उसकी आतुरता देखकर मीठे स्वर मे बोले—"ये क्या लाई बेटी?"

उनकी मजबूत मुट्ठी से अपने को छुडाने का हलका प्रयत्न करती हुई उसने कहा—"मेरे सैडिल, साडी—मेरे राजेश ने मुझको दिलवाये है।"

साधुजी ने फिर पूछा—"कि इन्होने दिलवाये है?"

"नही, नही। मै भला किसी पराये मर्द से चीज ले सकती हूँ? आप मुझे छोड दीजिये। मेरे राजेश ने मुझसे कहा है कि वो साडी और सैडिल पहनाकर—"

"अच्छा लो छोड दिया।" कहकर वृद्ध साधु ने उसे छोड दिया। वह सडक पर खुला पडा हुआ अपना साडी का बक्सा उठाने चली। साधु ने भी उतनी ही फुर्ती से लपक कर वह बक्सा और कार की सीट पर पडा हुआ सैडिल का बक्सा उठा लिया।

पगली बहुत मचलने लगी। साधुजी ने उससे कहा—"ये सब चीजे तुम्हारे राजेश ने दी है न?"

"हाँ।"

"इन्होने तो नही दी है?"

"नही।"

"अच्छा तो अब इन दोनो चीजो को हम गोमतीजी मे फेंके देते है।"

सुनकर बेचारी पगली की मानो जान ही निकल गई। साधुजी का हाथ नीचा कर वह उनसे अपनी चीजे लेने के लिये बच्चो की तरह मचलने लगी। साधुजी मुस्कुराते रहे।

इस आपा-धापी मे भी सज्जन मे बोले—"रामजी बडा उपकार किया। आइये, आश्रम पर पधारिये थोडी देर।"

पगली अपनी चीजो के लिये दुद मचा रही थी, उसकी ओर एक नजर देखते हुए सज्जन ने हाथ जोडकर कहा—"फिर कभी आऊँगा। आपके यहाँ बहुत से पागल है?"

"हाँ रामजी। हम को आपने पगली दुनिया का सेवक बनाय दिया है तौन यही ड्यूटी बजाने है। अच्छा, अब चलता हूँ। ये चीजे जो इनके राजेश न दी है वा सब गोमतीजी मे बहाये देता हूँ। जयरामजी की।" कहकर साधुजी बक्सो के साथ घर की सडक पर पगली को चिढाते हुए दौडने लगे—"मै इन्हे अभी फेकता हूँ—फेकता हूँ।"

पगली अपनी चीजो को बचाने के लिये आतुर होकर बाबा के पीछे दौडने लगी।

सज्जन खडा-खडा यह दृश्य देखता रहा। पगली और साधु घाट पर जाकर आँखों से ओझल हो गए।

अपनी कोठरी मे आकर सज्जन इस तरह निढाल होकर पड गया मानो उसमे दम ही न हो। उसका चेहरा एकदम फीका पड गया था। इन दिनो वनकन्या तथा अपनी कामवासना को लेकर सज्जन गहरे मानसिक संघर्ष से गुजर रहा है। कल शाम कन्या जाते समय उसकी बढती हुई चाहत के साथ फिर खिलवाड कर गई थी। रात को उसका मन उलझा रहा। एक बार ह्विस्की, सोडा मँगवाया भी, पर गिलास होठो तक लाकर रोक दिया। मन प्रतिज्ञा तोडने के लिये बार-बार हठ करने लगा। सज्जन ने झुँझला कर उन चीजो को नजरो के सामने से हटाने के लिये नौकर को आदेश दिया। आज सुबह के समय भी अनमना ही रहा। अपने 'चिंतन-मंदिर' मे भी आज उसका जी न लगा। उसके मन मे उत्तरोत्तर यह हठ जोर पकड रहा था कि इस बार कन्या का दूर से ही झिडक देगा, उससे किसी तरह का वास्ता न रक्खेगा। वह हर स्त्री से दूर रहेगा। और अगर जरूरत पडी ही तो वह ताई की बतलाई हुई अनजानी, अनदेखी लडकी से विवाह कर लेगा।

सज्जन अपने हठ, तर्क, सयम-असयम, शकाओ और समाधानो के बीहड जगल में भटक कर फडफडा रहा था। उसे क्षण के लिये भी शांति नहीं मिल रही थी। इस समय पगली ने मानों उसी के मन की साकार मूर्ति धारण कर उसके हर हठ और निश्चय को परास्त कर दिया था। सज्जन के मन मे अनायास ही यह भय घर कर गया था कि एक दिन वह भी इसी तरह चेतना मुक्त पागल हो जायगा। सज्जन इस समय तक टूट चुका था। उसे नीद आ गई।

कोठरी मे महाकवि बोर ने हे-हे करते कदम रक्खा। सज्जन को सोते देखकर वह उसकी ओर से निश्चित हो छत पर आकर बडी की खिडकी की तरफ नजरें उठाये हुए एक फिल्मी गीत गाने लगा—

"आ हा हा हा! ठडी हवायें, लौट के आये
हम है यहाँ, तुम हो वहाँ—कैसे बुलायें।।"

ऊपर की खिडकी पर गाने का असर न दिखलायी दिया। विरहेश ने दूसरा गीत उठाया—

"उनके बुलावे पे डोले मेरा दिल—
जाऊ तो मुश्किल न जाऊँ तो मुश्किल।"

ऊपर की खिडकी विरहेश की प्रेयसी के मुखचद्र बिना सूनी रही। अपराजित प्रेमी ने तीसरा गीत उठाया—

"दिल किसी को दीजिये, दिल किसी का लीजिये
जिदगी है चार दिन, यही काम कीजिये ॥"

दरवाजे मे सिर टिका कर खिडकी की तरफ नजरें उठाये विरहेश अपनी प्रेयसी तक आवाज पहुँचाने के लिये जोर-जोर से गाने लगा। सज्जन की नीद उचट गई। आँख खुलने ही दरवाजे पर खडे-खडे गला फाडते हुए बोर को देखकर सज्जन आज आपे मे न रह सका। अपनी शराफत के सारे बधन गुस्से की बेहोशी मे अनायास तोड कर वह चिल्लाया—"बोर! गॅट आउट!!"

विरहेश कर्नल या महिपाल से हर प्रकार के दुर्व्यहार की कल्पना कर सकता था, परन्तु सज्जन से नहीं। अपनी चातक की सी रटन छोड कर हडबडाकर हाथ जोडते हुए गिर्डगिडाहट भरे स्वर मे कहा—"हे-हे भाई साहब, आप सो रहे थे, मुझे मालूम न था।"

सज्जन अपनी अभद्रता पर स्वय सकुचित हो उठा। प्रकट रूप मे किसी बाहर वाले से असभ्य वचन बोलने का अभ्यास उसे नही था। बोर ने अपनी बोरियत फैलानी शुरू की, कहने लगा—"मै तो सज्जन भाई —भाई साहब—हे-हे आजकल अपना दूसरा अमर गीत लिखने के मूड मे इतना खोया हुआ रहता हूँ कि—"

दरवाजे पर कन्या हाथ मे एक दोना लिये हुए आते-आते ठिठक कर खडी हो गई। उसे देखकर सज्जन की मिलन और दमन की इच्छा साथ ही साथ तेजी से उभर पडी।

विरहेश ने वनकन्या को देखकर अपनी हे-हे का रुख सज्जन के बजाय उसकी ओर पलट दिया। हाथ जोडकर बोला—"आप ही शायद हे-हे—आप ही शायद कुमारी वनकन्या जी है। मैं आपको नाटको मे पार्ट करते देख चुका हूँ। आपका तो बडा यश फैल रहा है आजकल। हे हे सज्जन भाई साहब ने आपको कीर्ति के आकाश मे उडा दिया। हे-हे'

कन्या गभीर भाव से "जी हाँ" कहकर अदर आ गई। एक नजर सज्जन के उतरे हुए चेहरे पर डालकर लडडुओ का दोना मेज पर रख उसके सामने, पास आकर पूछा—"तुम्हारी तबियत कैसी है?"

कन्या का 'तुम्हारी' शब्द का प्रयोग सज्जन के लिये जादू का काम कर गया। कन्या के प्रति उसका सारा विद्रोह पानी मे नमक की तरह गल गया, और वह खारापन विरहेश की तरफ बह चला। उसने कहा—"विरहेश, मेरी तबियत ठीक नही है। मैं एकान्त चाहता हूँ। तुम मेहरबानी करके यहाँ से चले जाओ।" कहकर सज्जन तकिये पर सिर डाल, आँखे बन्द कर लेट गया।

कन्या चिंतित भाव से उसे देखने लगी। विरहेश दोनो की तरफ अर्थभरी दृष्टि

डालकर कर मुस्कुराते हुए बोला—"भगवान आपकी तबियत को शीघ्र ही आनन्द लाभ कराये! विरही विरहेश अपने सज्जन भाई को सदा यही दुआ देता रहेगा!" कहकर विरहेश बाहर की तरफ चला। दोनो ने समझा, जा रहा है। सज्जन को राहत मिली, परन्तु बूटी का विरही छत पर जाकर फिर बैठ गया। सज्जन दाँत पीसकर रह गया। कन्या ने दरवाजे की तरफ पीठ कर सज्जन के सामने बैठते हुए फिर पूछा—"तुम्हारा जी कैसा है?"

सज्जन को मान आया बोला—"मै मर रहा हूँ—लेकिन तुम्हारी बला से!"

कन्या मुस्कराई, बोली—"मै सजीवनी बूटी लाई हूँ!"

सज्जन आज पहली बार कन्या से अपने लिये रस की बाते सुनकर बडी राहत पा रहा था। उसे अपने अदर उसी प्रकार का सुहावनापन अनुभव हो रहा था जैसा कि हवा मे लहराते हुए धान के हरे-भरे खेत मे होता है। भोला मन पिछला सब कुछ भूल कर रस निमग्न होने लगा। उसने कहा—"बचपन मे दाई मुझे एक कहानी सुनाया करती थी कि एक परी एक राजकुमार को उडाकर ले गई। दिन भर वह उसे जादू की लकडी से मुर्दा बनाकर रखती थी, और रात मे जब उसका खेलने को जी चाहता तब फिर जिला लेती थी। खेल के बाद राजकुमार फिर मुर्दा हो जाता था।"

सुनकर कन्या हँस पडी।

बाहर विरहेश ने तान छेडी

"ये राते, ये मौसम, ये हँसना हँसाना
मुझे भूल जाना, इन्हे ना भुलाना॥"

कन्या और सज्जन दोनो को ही बहुत बुरा लगा। कन्या ने धीरे से पूछा—"ये कौन है?"

"बदतमीज है एक! कम्बख्त यहाँ भी पीछा नही छोडता। दुखी हो गया हूँ इससे।"

विरहेश का गायन पचम स्वर पर चढने लगा।

कन्या सहसा उठी। दरवाजा उडका दिया। फिर मेज से लड्डुओ का दोना उठाकर एक रद्दी अखबार बिछा सज्जन के सामने रखती हुई बोली—"मुझे नौकरी मिल गई।"

सज्जन को झटका लगा। कन्या के लिये नौकरी तलाश करने की बात उसने अब तक खुद क्यो नही सोची, उसके लिये प्रयत्न क्यो नही किया? क्या यह नौकरी भी उसे कर्नल के प्रयत्न से ही मिली है?—एक पल मे उसके मन को अनेक धक्के लग गए।

दोने के अदर एक पत्ते में लगा हुआ गीला सिंदूर अपनी उँगली मे लगाकर सज्जन को टीका करने के लिये कन्या ऐन उसके पास आ गई। सज्जन उसके स्पर्श से शीतल हो उठा। कन्या उसकी आँखो मे आँखे डाल कर हँस रही थी। उसके गोरे ललाट पर सिंदूरी बिंदी बडी ही भली मालूम पड रही थी। सज्जन ने सहसा उसका हाथ पकड कर बहुत धीरे से कहा—"कन्या, मै तुमसे शादी करना चाहता हूँ।" कन्या गभीर हो गई, पर उसने हाथ छुडाने की चेष्टा न की, बोली—"अभी उसका समय नही आया है!"

कहकर धीमे-धीमे उसने अपना हाथ छुडा लिया, और बात बदल कर उसकी ओर दोना बढाती हुई बोली—"महाबीरजी का प्रसाद है।"

सज्जन अपनी बात का तार उठाना चाहता था। उसने लड्डुओ की तरफ ध्यान न दे फिर प्रश्न किया—"देर क्यो है ?"

कन्या ने शात भाव से कहा—"अभी हम दोनो एक दूसरे को अच्छी तरह जानते नही है।"

"ये तुम्हारा खयाल है ! तुम जानती हो कि मै तुम्हे चाहता हूँ, और मै भी जानता हूँ कि तुम भी मुझे—"

"ये तुम्हारा खयाल है ! लो, लड्डू उठाओ, भगवान का प्रसाद ग्रहण करने मे देर नही करते।"

"तुम भी मुझे भगवान के प्रसाद की तरह मिली हो कन्या। मैं तुम्हे ग्रहण करने में देर नही करना चाहता।" सज्जन की आँखो मे अतृप्ति की उत्तेजना चमक उठी।

बाहर से विरहेश की आवाज आई—"भाभीजी अगर आप सज्जन भाई के लिये चाय बनाये तो एक कप मुझे भी दीजियेगा। भगवान आपका भला करे ! (फिर गाने लगा) दया करो हे दयालु भगवन, मैं बैठा-बैठा तडप रहा हूँ—"

सज्जन और कन्या को विरहेश की यह बदतमीजी भरी बात असह्य हो उठी। कन्या तेजी से दरवाजा खोल कर विरहेश से कहने लगी—"महाशय, आपसे बडा बदतमीज मैंने अब तक नही देखा था। आपको ये झूठी रिश्तेदारी फैलाने का अधिकार किसने दिया ?"

"हटाओ भी कन्या ! चली आओ न !" अदर से सज्जन ने पुकारा।

बाहर, बडी अपनी खिडकी पर आ गई थी। विरहेश की आँखे वहाँ अटक गई थी। वनकन्या की तेजी उसके आशिकाना रग को बदरग कर रही थी, हाथ जोड कर बोला—"क्षमा चाहता हूँ देवी जी ! मैं—मैं अपने दूसरे अमर गीत के मूड मे था। . मेरा दूसरा अमर गीत मेरी पलको के झरोखे मे बैठा हुआ मेरी आँखो मे समा रहा है !" विरहेश की स्वप्नभरी दृष्टि फिर बडी की खिडकी पर पहुँच गई। बडी ओट में खडी अपने घुघराले प्रियतम को एक सुन्दर गोरी 'मुँहझौसी' द्वारा फटकारे जाते देख सकपकाई-सी देख रही थी। वनकन्या विरहेश का बावलापन देख खीझ कर लौट आई। उसके हटते ही विरहेश ने कन्या द्वारा खोला गया दरवाजा अपनी ओर खीच कर बन्द कर लिया।

वडी मैदान साफ देख कर खिडकी पर सामने आ गई। विरहेश का मुखकमल खिल उठा। दोनो ओर से इशारेबाजियाँ होने लगी—"अब रहा नही जाता, अब सहा नही जाता, हाय, क्या-क्या मजबूरियाँ है। कब मिलेगे। हम जान दे देगे।" आदि भावो की फुलझडियाँ दोनो ओर से छूटने लगी। फिर आपसी मनावनी चलने लगी—"तुम अपनी हालत सम्हालो। हाय, तुम्हारी ये दशा हमसे देखी नही जाती।" विरहेश ने अपनी जेब से एक पत्र निकाल कर दिखलाया, बडी ने खिडकी से अपना खत हिलाया, फिर हाथ का इशारा कर खिडकी से हट गई। थोडी देर मे विरहेश की चिरपरिचित थैली डोरी के सहारे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगी। विरहेश और बडी ने दो-तीन बार इस थैली के सहारे पत्रो का आदान-प्रदान किया है। पिछली बार बडी को दिखा-दिखा कर विरहेश

ने इस थैली को चूमा था, कलेजे से लगाया था, अपने पत्र मे थैली पर कविता भी लिखी थी।

पत्र लेने के लिये विरहेश जीने की तरफ आया। उसी समय डा० शीला स्विंग और उनके पीछे-पीछे वर्मा आये। जब बडी का पत्र नीचे पहुँचा, तब डा० शीला छत पर आ चुकी थी। विरहेश के हाथ ने डोर थामी ही थी कि शीला ने उसका हाथ पकड लिया। विरहेश सकपका गया।

"ये क्या हो रहा था यहाँ ?" डा० शीला ने दबग आवाज मे पूछा।

बडी वर्मा को देखकर पहले ही खिडकी से रफूचक्कर हो गई थी। विरहेश रँगे हाथो पकड जाकर हर तरह से मूढ हो गया था, उसके चेहरे पर पसीना झलक उठा, बोलती बद हो गई।

डॉ० शीला ने विरहेश को अक्सर देखा तो था, मगर वो इसे जानती न थी। थैली मे कागज देखकर उसे निकालने लगी। विरहेश को कुछ न सूझा तो रोते हुए उनके पैरो पर गिर पडा—"सेव सी सर। आई एम योर सर्वेन्ट सर !"

छत पर शोर सुन कर सज्जन ने दरवाजे खोले—"हैलो शीला !" वर्मा ने भक्ति भाव से हाथ जोडे। सज्जन ने सिर हिलाकर उत्तर दिया और विरहेश की ओर देखकर पूछा—"क्या माजरा है ?"

रोते हुए विरहेश ने कहा—"इनसे मेरा अमर गीत दिलवा दीजिये, सज्जन भाई।"

डॉ० शीला थैली से कागज निकाल कर पढने लगी। रूलदार नोटबुक के चार पन्नो पर दोनो तरफ लिखा हुआ बडी का प्रेम पत्र शीला के लिये बडा मजेदार साबित हुआ, दूसरी-तीसरी पक्ति पढते ही वह खिलखिला कर हँस पडी, सज्जन की ओर चिट्ठी बढाते हुए बोली—"ये इनका अमर गीत देखो—"

वनकन्या बाहर आ गई थी, उस पर शीला का ध्यान गया, गौर करने लगी, सज्जन और कन्या के कपालो पर एक सी बिन्दी देखी, समझ गई। फौरन विरहेश और उसके पत्र को भूल कर हँसते हुए वह बोली—"आइ एम श्योर, तुम्ही मिस वनकन्या हो !"

विरहेश सज्जन से अपना पत्र माँग रहा था। सज्जन ने एक नजर डालते ही पत्र पढना बद कर, त्यौरियाँ चढा विरहेश से कहा—"तुम यहाँ ये सब करने आते हो जी ? शरीफो के मुहल्ले में मुझको बदनाम कराओगे ?"

वर्मा भी इस समय विरहेश को अच्छी नजरो से नही देख रहे थे। विरहेश ठडी साँस लेकर बोला—"सज्जन भाई—"

"चुप रहो !" सज्जन ने डॉट बतलाई और बोला—"अब अगर यहाँ कभी दिखलाई भी पडे तुम, तो याद रखना पुलिस के हवाले कर दूगा तुम्हे। जाओ फौरन !"

"जाता हूँ ! जाता हूँ ! पर मेरा पत्र तो दीजिये।"

सज्जन ने झटक कर पत्र उसके मूँह पर फेक दिया। वर्मा ने आगे बढकर उस पत्र को विरहेश से छीन लिया और उसे बीच से फाडते हुए बोला—"मुहल्ले की इज्जत इसके साथ जाना टीक नही। चले जाओ यहाँ से !"

कुछ दिनो पहले भक्त के रूप में मिलने वाला वर्मा भी इस समय विरहेश का अनादर करने का हौसला दिखला रहा था। विरहेश उसे घूर कर देखने लगा मानो फाड खायगा।

कन्या और शीला बाते करती हुई कमरे के अदर चली गई थी।

वर्मा ने चालाकी से फटा हुआ पत्र अपनी जेब मे रख लिया। विरहेश हार कर जाने लगा, जाते-जाते पलट कर जोश दिखलाते हुए सज्जन की तरफ देख कर बोला —"गरीबो का प्रेम भी ये पूजीपति लोग सहन नही कर सकते। आप तो दरवाजे बन्द कर अपनी प्रियतमा के साथ हास विलास करते—"

सज्जन ने घुडक कर उसकी ओर देखा। विरहेश चुपचाप नीचे उतर गया।

वर्मा ने सज्जन से भेद भरी आवाज मे कहा—"इसका लव अफेयर शकरलाल के यहाँ किसी से चल रहा है। यह खिडकी, जहाँ मे पत्र गिराया गया, उसके बडे भाई के कमरे की है। आपकी बडी बदनामी हो जाती !"

सज्जन परिस्थिति की गभीरता का अनुभव कर रहा था, कहने लगा—"यहाँ इसका शिप्पा कैसे भिड गया, कुछ समझ मे नही आता !"

कमरे मे सज्जन के घुसते ही शीला ने हँसकर कहा—"यू रास्कल ! कला के बहाने तुमने यहाँ प्रेम की दूकान खोल रक्खी है ?"

सब लोग हँसने लगे। सज्जन ने कहा—"तो क्या तुम भी प्रेमी की लालच से यहाँ आई हो ? कहो तो तुम्हारा नमूना लाकर पेश करूँ ?"

वर्मा की उपस्थिति मे शीला मनचाहा जवाब न दे सकी, उसकी बाँह पर घूँसा मारते हुए हँसने लगी, फिर कहा—"यहाँ एक पेशेण्ट देखने आई थी, इनकी वाइफ को। बातो मे इन्होने तुम्हारा जिक्र कर दिया। मैंने सोचा कि इस मरीज के हाल भी पूछ आऊँ। और मेरी खुशकिस्मती देखो, कि हाल के बजाय मुझे तुम्हारा मर्ज मुजस्सिम देखने को मिल गया।" कहकर शीला ने प्यार भरी नजरो से कन्या की ओर देखा। कन्या झेप कर हँसने लगी। सज्जन भी हँसने लगा।

"लो, लड्डू खाओ। ये महाबीर जी का प्रसाद लाई है।"

सज्जन ने शीला और वर्मा की तरफ दोना बढाया। लड्डू उठाते हुए शीला पूछने जा ही रही थी कि सज्जन ने कहा—"इन्हे नौकरी मिल गई है।"

"गुड ! कहाँ ?"

"नवजीवन के एडिटोरियल स्टाफ में।" कन्या ने उत्तर दिया और फिर पूछा—"मेरा खयाल है, चाय तो हम सभी लोग पियेंगे।"

"मै माफी चाहता हूँ।" वर्मा ने हाथ जोडकर कहा।

"क्यो ?" सज्जन ने पूछा

"दूकान जाना है, बडी देर हो गई है।"

"ठीक है ! ठीक है !" शीला ने कहा—"एन्ड थैंक्स यू वेरी मच फॉर टेकिंग सो मच ट्रबुल ! और फिक्र मत कीजियेगा। अभी बीस-पच्चीस रोज कुछ नही होने वाला है। आप भी महाबीर जी के लड्डू-वड्डू मान रखिये कि लडका हो।"

वर्मा हँसने लगा, बोला—"वक्त आने दीजिये ! आपके बँगले पर मिठाई लेकर हाजिर होंगे हम लोग ।"

"थैंक्यू !" शीला ने हाथ जोड। वर्मा सब को नमस्ते कर चला गया। शीला ने आजादी की एक साँस ली और बेतकल्लुफ होकर तकिये के सहारे लेट गई। स्टोव सुलगाती हुई कन्या की ओर देखकर सज्जन से कहा—"दुर्जन ! तुम नसीबवाले हो। लाओ, एक लड्डू मेरे मुँह मे और डाल दो। लेकिन महिपाल तो मुझसे कहते थे कि मिस वनकन्या कम्यूनिस्ट है।"

"हाँ भई, ये तो मै भी तुमसे पूछने वाला था कन्या, तुम ये सब माननी हो ?" सज्जन ने शीला के पास ही एक दूसरे तकिये का ढासना लगाकर आराम से टाँग फैला कर बैठने हुए पूछा।

कन्या बोतल से दूध निकाल कर पतीली को स्टोव पर चढाती हुई एक पल चुप रही, फिर बोली—"मैने कभी इस बात पर सीरियसली विचार तो नही किया कि ईश्वर है या नही , और विचार किया भी है तो किसी तर्क से ईश्वर को काट नही पाई। अच्छे बुरे समय मे औरो की तरह वह मेरे मन का सहारा भी है।"

"ईश्वर तर्क की चीज नही !" शीला ने कहा—"मेरा खयाल है कि हर आदमी पूरी जिंदगी मे अपनी तमाम कारगुजारियो से ईश्वर का ही निर्माण करता है—"

"महिपाल भी यही कहा करता है।"

"तुम समझते हो कि मै महिपाल से बहुत ज्यादा अलग होकर सोच सकती हूँ ?"

"ग्रेट ! इसी को कहते है प्रेम !" सज्जन ने यह बात इस तरह से कही मानो कन्या को सुना रहा हो। कन्या के चेहरे पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया न झलकी।

शीला कहने लगी—"दुनिया मे, खासतौर पर हमारे देश से ईश्वर नाम की चीज मिट जाय, यह मुझे नामुमकिन ही लगता है।"

"साइन्स एक दिन जरूर इसका खुलासा करेगी। या तो इस धारणा को मजबूत बनायेगी—या फिर सदा के लिए खत्म कर देगी। अब हमने एटामिक-युग मे कदम रक्खा है डॉक्टर। हम पृथ्वी को छोडकर दूसरे ग्रहो मे पहुँचने की बात सोचने लगे है, इस तरह क्या एक दिन ईश्वर की असलियत तक न पहुच जायेगे ?" कन्या ने बात पूरी कर एक नजर गर्म होते हुए दूध पर डाली, उबाल आने मे जरा कसर थी।

"और उसके पहले ही क़यामत आ गई तो ?" सज्जन ने प्यार की नजर से कन्या की ओर देखते हुए पूछा।

"क़यामत आ गई तब तो इंसाफ के दिन खुदा मियाँ को देख ही लेंगे सब लोग ! उस दिन मैं तुम्हारे खिलाफ गवाही दूगी दुर्जन ! खुदा से कहूँगी कि इस शख्स ने एक गोरी, खूबसूरत, भोली-सी लडकी का दिल लूट लिया था !"

दूध मे उबाल आ चुका था। कन्या ने उठकर साडी के पल्ले से पकड कर गरम पतीली उतार कर जमीन पर रक्खी और केतली को सुराही मे भरने चली। सुराही खाली थी। सज्जन उठ कर बोला—"लाओ मै भर लाऊँ।"

"नल कहाँ है ?"

"नीचे ।"

"तुम बैठो, मैं लिये आती हूँ ।"

"तुम वहाँ कहाँ जाओगी ? रिफ्यूजी लोग है, तुम्हे देख कर चौकेगे ।"

सुराही की गर्दन दोनो के हाथ मे थी, दोनो की आँखो मे रसमयी आत्मीयता थी —सज्जन के मन से मुक्त धारा बह रही थी, कन्या लज्जा और सयम के कपाट जड़े खड़ी थी, रस उस कपाट की झिरियो से झर रहा था। वह बोली—"मै क्या डरावनी लगती हूँ ?"

"कम से कम मुझे तो डर लगता ही है !" मुस्कुराते हुए कहकर उसने सुराही ले ली और चला गया ।

बेकार जलता हुआ स्टोव बुझा कर कन्या शीला के पास बैठ गयी। शीला प्यार से उसका हाथ लेकर चूमती हुई बोली—"मैंने सपने मे भी नही सोचा था कि तुम इतनी प्यारी हो ! सज्जन खुशकिस्मत है, और तुम भी ! बस, अब झटपट शादी कर लो तुम लोग । मुझे दावत खाने को मिले !"

"अभी मेरा इरादा नही ।"

"क्यो ?"

"आपका रिश्ता रोगियो से कितना रहता है ? —सिर्फ फीस और विजिट का—है ना ! मगर जो अपने घर के रोगियो की दिन-रात सेवा करते है, उनका नाता आप से ज्यादा गहरा होता है !"

"तुम्हारा मतलब है कि शादी तुम्हारे लिये गभीर चिन्ता की प्रॉब्लम है ! सच कहना डार्लिंग, क्या तुम भी उन लोगो मे से हो जो प्रेम को स्कूल का कोर्स समझ कर इम्तहान पर इम्तहान पास करते है, और अत मे सर्टीफिकेट लेकर शादी करते है ? मुझे इस बेवकूफी के सिद्धान्त पर हँसी आती है । अरे, अपने ऊपर भरोसा रक्खो, जब एक दूसरे पर दिल आया है, और जब दोनो ही पढे-लिखे शरीफ और समझदार है, तो यकीन मानो उम्र भर दोनो मे प्रेम की गाँठ खुल नही सकती ।"

"मै इससे सहमत नही ! और मुझे ताज्जुब है कि आप—"

"मुझे 'तुम' कहो प्यारी ! सज्जन के रिश्ते से मुझे अनदेखे मे भी तुमसे प्यार था, मगर अब तो उम्र भर के लियें मै तुम्हारी हो गई । मैने कहा न, मै दिल की कशिश में विश्वास रखती हूँ !"

सुराही लेकर सुज्जन कमरे मे दाखिल हुआ । कन्या ने फौरन उठकर उसके हाथ से सुराही ली, और चाय के प्रबध मे जुट गई । सज्जन उसे मदद करने के बहाने उसके पास-पास रहा ।

शीला ने सज्जन से कहा—"दुर्जन, औरत मर्द के रिश्ते को लेकर मैंने अपनी जिंदगी से एक बात सीखी है—प्रेम थ्योरी नही, प्रैक्टिस है, जितना ज्यादा प्यार करो, रिश्ता उतना ही गहरा पैठता है, और रिश्ता जितना ही पुराना होता है उसमें रोज उतनी ही नई ताजगी आती है । तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"मैं तुम्हारे खयाल के साथ हूँ ।" सज्जन ने जवाब शीला को दिया, बात कन्या

को सुनाई, कहने लगा—"वाह, क्या बात कही है तुमने, लव इज नॉट थ्योरी बट प्रैक्टिस !"

शीला भाव मे रम रही थी, फिर बोली—"दुर्जन, कल तक जिस बात मे यकीन करती थी, आज वह झूठी साबित हो चुकी है । —औरत हो या मर्द—इसान के लिए शादी करना बहुत जरूरी है । इससे यह होता है कि इसान जिसे चाहता है उसे हरदम अपने पास, अपने घर मे, अपने कलेजे मे छिपा कर रख तो सकता है । कोई उँगली उठा कर यह तो नही कह सकता कि यह 'तुम्हारा'—कानूनन तुम्हारा—नहीं है ।"

शीला की आखो मे झलझला आ गया । सज्जन कन्या के पास सुखी गृहस्थ की तरह बैठा स्टोव की सूरजमुखी के फूल जैसी लौ और उसकी गूज मे अपने सुखद भविष्य की लौ लगा रहा था । कन्या शात गभीर बैठी केतली की तरफ नजर रख कर शीला की बाते सुन रही थी ।

सज्जन ने शीला के आँसू न देखे, उसकी बात का उत्तर पाने के लिये कन्या के चेहरे पर आँखे गडा दी, मानो हठ कर रहा हो—"इधर देखो ! मुझे देखो ! जवाब दो !"

सहसा शीला ने पूछा—"अच्छा दुर्जन, ये जो अभी लव कास्पिरेसी हम लोगो ने पकडी, इसमे दोनो शादीशुदा है ?"

"विरहेश बाल-बच्चे वाला है । और इस घर मे जो लडकी इससे प्रेम करती है—"

"वह भी कच्ची उम्र की नही है । इतना तो खत के मजमून से जाहिर है । अच्छा दुर्जन, मैंने उसका खत पकड कर अच्छा नही किया—यह मैं अब सोचती हूँ । उस वक्त जाने कौन सा जुनून मुझ पर सवार हो गया था । सीढियाँ चढते हुए ही मैंने तमाम तमाशा देखा—दीवार के सहारे थैली का उतरना, उस बडे बालो वाले की सूरत पर खुशी और उतावली ! सच मानो, जाहिरा तौर पर हँसते हुए भी मैं उस वक्त नफरत से भर गई थी, दिल को यकीन हो गया था कि यह गदा काम है ।"

"वाकई गदा काम है ! इस आदमी को बुरी तरह पीटना चाहिये था ।" स्टोव बद करते हुए कन्या ने कहा ।

"क्यो ?" शीला ने इस तरह सम्हल कर पूछा मानो उसे धक्का लगा हो । सज्जन खामोश निगाहो से कन्या को देखता रहा ।

प्याले लेने के लिए खडी होती हुई कन्या बोली—"ये लोग प्रेम के पीछे नही, शारीरिक शौक के पीछे दीवाने हो रहे है ।"

"तो इसमे बुराई ही क्या है ?" शीला ने दबी जबान से पूछा, कन्या से अपनी नजरें बचा कर चाय के प्याले पर झुक गई ।

कन्या ने जरा उत्तेजित भाव से कहा—"बुराई पूछती है ! मैंने इस शौक को राक्षसी भूख बन कर अपने घर मे दो जाने ले जाते हुए देखा है । इस शौक के भुलावे में पडकर कितनी ही औरतो की जिदगी बरबाद होते देखी है ।"

"यह बुराई तो सामाजिक व्यवस्था की है, डार्लिंग । तुम इसान की इस कुदरती

जरूरत को बुरा क्यो कहती हो ?" कन्या शीला की इस बात का उत्तर देना ही चाहती थी कि उन्होने जोर देकर अपनी बात और आगे बढाई, बोली—"भूख भी इंसान की एक कुदरती जरूरत है, तुम किसी खाने के शौकीन को बुरा नही कहती ।"

'डॉक्टर, तुम यह बात दिल से कह रही हो, या महज मेरी परीक्षा लेने के लिए ?" कन्या ने यो तो यह बात बडे ठडे तरीके से पूछी, पर उसका हर शब्द राख ढँकी चिनगारी के समान था । सज्जन इन दो महिलाओ की बात सुनता हुआ चुपचाप चाय पी रहा था, कन्या जिस सत्व पक्ष का समर्थन कर रही थी वह सज्जन की जबान मे सदा जाहिर होने वाली विचारधारा के अनुकूल था और शीला की बाते उसके दिल मे छिपे घायल चोर की रक्षा कर रही थी । उसका अपना चिन्तन दो विचारधाराओ की रस्साकशी मे स्तब्ध था ।

शीला भी कन्या के इस प्रश्न से ठिठक गई थी, सम्हल कर उन्होने फीकी हँसी के साथ प्रश्न का उत्तर प्रश्न में दिया, बोली—"अगर मै कहूँ कि दिल से कह रही हूँ, तो ?"

"तो मै तुम्हे दिल से कभी न अपना सकूँगी !"

"इतनी नफरत ?"

"मेरे पास यही पूजी है ।"

"कभी नही गँवाई ?"

कन्या ने एक बार सज्जन की ओर देखा, फिर कहा—"इसका जवाब इस समय नही दूँगी ।"

"जाने दो । पर एक बात बतलाओ डार्लिग, इसान की कमजोरियो के पीछे क्या सचाई नही होती ? ये बडे बालवाला जो अपने घर मे बीवी, बच्चो के रहते हुए भी यहाँ एक औरत से प्रेम करने आया, क्या ये मुमकिन नही कि इसकी घरवाली बडी सती होकर भी फूहड और लडाकी हो और उसकी वजह से ये प्रेम का प्यासा—"

"तब भी मै इसके साथ सहानुभूति नही करूँगी । ये अपनी भूल के लिए एक स्त्री का जीवन बिगाडने आया है !"

"मै समझ गई, तुम्हारा खास एतराज यह है कि ऐसे लोग आज की समाजीगठन मे औरतो को नुकसान पहुँचाते है । सच है, मगर मान लो, यह समाज बदल दिया जाय—"

"तब भी व्यभिचार के लिये गुजाइश नही रहेगी ।"

शीला सुनकर चुप हो गई । चाय का आखिरी घूट पीकर उन्होने प्याला रख दिया । कन्या गुनगुनी चाय के बडे-बडे घूँट पीने लगी । सज्जन हाथ में खाली प्याला लिये बैठा था, कन्या का ध्यान उधर गया, पूछा—"और चाहिये ?"

सज्जन ने चुपचाप अपना प्याला बढा दिया । शीला ने कहा—"कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि . अब जैसे मान लो मै शादीशुदा, बाल-बच्चो वाली हूँ, मुझे अपने पति से प्रेम है, और मान लो कि यह सज्जन मेरी जिदगी में आता है, यह भी शादी-शुदा है, हम दोनो आपस मे एक दूसरे के गहरे दोस्त हो जाते है—ऐसी हालत मे अगर हम दोनों एक दूसरे से जिस्मानी—"

"मै तुम दोनो से नफरत करूँगी !"

शीला हार कर कहने लगी—"तुम जिद्दी हो वनकन्या। नफरत बडी चीज नही। इसान को उसकी अच्छाइयो और बुराइयो के साथ अपनाओ, प्यार करो। इसानियत औरत या मर्द के सतीपन मे कही ज्यादा ऊँची चीज है।"

"हियर हियर," ताली पीटते हुए सज्जन ने फिर कन्या की तरफ विनोद और बनावटी भय भरी दृष्टि डालकर कहा—"ये मत समझना कि मै तुम्हारा विरोध कर रहा हूँ। मै तो खाली इस बात की तारीफ कर रहा हू कि शीला इस समय इतने दर्द और तडप के साथ विचारो की नई ऊँचाइयो पर पहुँच रही है। लेकिन तुम्हारे दर्द और तडप की सब तरह से कद्र करते हुए भी मै एक बात पूछूं शीला, लैट् अस टेक हर फादर्स केस, तुम्हारा इसानियत का सिद्धान्त क्या उनको भी प्यार मे अपना लेगा ?"

शीला चारो ओर से घिर गयी थी। उनके चेहरे पर थकान बोल रही थी। बडी करुणा भरी दृष्टि से उन्होने सज्जन की ओर देखा और बोली—"गुनाह से भले ही नफरत करो सज्जन, लेकिन गुनाहगार को कलेजे से लगाए रक्खो—तुम्हारा प्रेम पाकर मुमकिन है कि वह किसी दिन अपनी गलतियो को सुधार ले।"

"मै आपकी इस खोखली अहिंसा मे विश्वास नही करती हूँ। धरती से पाप को खत्म करने के लिये पापियो का सिर काटना ही होगा।"

कन्या की तपती हुई बात ने दो पापियो को अपनी-अपनी तरह मे दहला दिया। शीला अपने डर पर पर्दा डालने के लिये हँसते हुए सज्जन से कहने लगी—"दुर्जन, शादी हो जाने के बाद ये लडकी तुम्हे तोते की तरह पिजडे मे रक्खेगी, याद रखना।"

कन्या हँसी, कहा—"अगर इन्हे पिजडे मे बंद करने की ही नौबत आयी तो फिर शादी क्यो करूँगी।"

"लेकिन सज्जन वाकई वैसा सज्जन नहीं है जैसा कि तुम समझती हो। मै इसे सोच-समझ कर ही दुर्जन कहा करती हू।"

सज्जन को शीला की बात न भायी, पर उसने कुछ जवाब न दिया। कन्या बोली—"तुमने इन्हे कल तक देखा था, मै इन्हे आज से देख रही हू। इनके बीते हुए कल को मै देखना भी नहीं चाहती, लेकिन आने वाले कल मे अगर इनकी तरफ से मुझ कोई आँच लगी तो ..." अपने आवेग को रोकने के कठिन श्रम से भरी सर्दी मे भी कन्या के चेहरे पर पसीना झलझला उठा।

सज्जन उसे देखकर सिहर उठा।

शीला ने अपना सिर झुका लिया। उनमे कन्या का तेज देखने की क्षमता बाकी न रह गई थी, गो इच्छा जरूर थी।

बातचीत का सिलसिला यहीं खत्म हो गया।

२१

आज दिन भर कन्या के साथ रहकर सज्जन को कठिन मोर्चे पर लडना पडा है। सज्जन उससे पूरी तरह आतंकित हो उठा है, और जितना ही वह आतंकित हुआ उतना ही उसके मन पर कन्या का सम्मोहन जाल फैला। दिन मे शीला के चले जाने के बाद सज्जन ने उससे पूछा था—"मुझमे अगर बुराई देखोगी तो तुम क्या करोगी कन्या ?"

"भाभी की तरह आग लगा कर मर जाऊँगी ! '

सज्जन सहम गया, लडखडाते हुए स्वर मे उसने कहा—"तुम पागल हो—जरूर पागल हो !"

कन्या बोली—"औरो की बुराई देखकर उनसे लडना या दूर हट जाना मेरे लिए आसान है, मगर तुम्हारे वास्ते मेरे पास और कोई उपाय नही।"

"लेकिन मान लो—मान लो हमारी शादी न हो, हमारा ये रिश्ता टूट जाय ?"

"शादी भले ही न हो, लेकिन रिश्ता नही टूट सकता।" कन्या की बात सज्जन के लिये पहेली बन गई। आँखो मे रस बरसा कर हँसती हुई वह बोली—"रिश्ता मैंने बाँधा है, उसे रूप भले ही तुमने दिया हो। रूप को सँवारना तुम्हारे हाथ मे है, मगर रिश्ते का निबाह तो मैं ही करूँगी, तुम नही।"

उसके बाद से कन्या दिन भर उस पर शासन करती रही। निश्चित समय पर वह उसको साथ लेकर कर्नल के पास आयी। मथुरा से आए हुए महाशय को साथ लिया, वकील के पास गई और मजिस्ट्रेट की कोठी पर जाकर अपनी स्वर्गीया भाभी का पत्र पेश कर दिया। मैजिस्ट्रेट ने उस पर तहकीकात करने का आश्वासन दिया।

मैजिस्ट्रेट की कोठी से निकलने के बाद जब कर्नल ने कन्या को मेहमान महाशय के साथ जाकर उनकी खरीद-फरोख्त मे मदद पहुँचाने की ड्यूटी सौंपी, और कन्या चली गई, तब सज्जन को एक तरह से बडा आराम मिला। आज उसे मन ही मन इस बात का निश्चय हो गया था कि कन्या उसके जीवन मे अब किसी प्रकार भी हट नही सकती। और उसे यह भी विश्वास हो गया था कि वह उसे अपने अंकुश मे रख कर चलायेगी—सज्जन को इसी बात की परेशानी थी, वह इसी से झुंझलाया जा रहा था। उसका मन उस जगली के समान हो रहा था जिसे अभी-अभी पकडकर बाँधा गया है। अनेक अनर्गल विद्रोह भरी बाते उसके मन मे झडी बाँधकर आप ही आप उठती चली जाती थी, वह उनसे—अपने आपसे—घबरा उठा था। सोचने लगा, वह पागल हो जायगा।

सज्जन की कार गोमती किनारे, पागलो वाले बाबा के आश्रम पर ही जाकर रुकी। बाबा का पागलखाना एक अजब दृश्य उपस्थित करता था। पक्की बारहदरी में पास-पास आठ-दस चारपाइयाँ बिछी हुई थी। सामने फूस का छप्पर, उसके नीचे एक कोने

में तीन लँगोटेधारी युवक रसोई बना रहे थे। स्त्री रोगियो को छोडकर और सब रोगी परिचारक बाबा की तरह ही लँगोटीधारी थे, सिर सब के ही मुँडे हुए थे। दूसरे कोने में एक चक्की गडी हुई थी। बाहर खुले में वृद्ध साधु एक ऊनी स्वेटर पहने, कानो पर अँगोछा लपेटे दो-तीन लोगो से बाते कर रहे थे। एक मारवाडी युवक बारहदरी में बैठा गीता, पुराण आदि का हवाला देकर इस ससार को असार ठहराता हुआ इस प्रकार प्रवचन कर रहा था मानो उसके आगे हजार दो हजार की भीड श्रद्धा से बैठी सुन रही हो। एक ठिगना बगाली अपने साहब के साथ होने वाली अपनी तारीफ भरी बाते कहकर खुद ही खुश हो रहा था। एक पहलवान का पैर बारहदरी के खम्भे मे जजीर से बँधा था। वह अपने को छुडाने के प्रयत्न मे जूझते हुए, सामने बैठे बाबा को एक साँस मे सैकडो गालियाँ सुना उन्हे कुश्ती लडने के लिये ताल ठोक कर ललकार रहा था। दूसरे खभे में बँधा हुआ एक जगल का ठेकेदार गालियो में पूरी तरह से साथ देता हुआ पहलवान को गम खाने के लिये समझा रहा था। "ये बाबा साला पाकिस्तानी एजेण्ट है। रोज रात मे इसका हवाई जहाज आता है। मेरा ढाई लाख रुपया ले गया। आज रात इस साले को कत्ल कर हम लोग हवाई जहाज मे भाग चलेगे। अभी चुप रहो।" एक दुबला-पतला सिंधी जवान अपनी चारपाई पर पालथी मारे, मुँह मे पानी का घूँट भरे, गाल फुलाए हुए यो बैठा था मानो योग साध रहा हो। दो स्त्रियाँ बाल्टियो मे गोमती से पानी भर-भर कर ला रही थी। कैप्टेन राजेश की पगली पत्नी सो रही थी। इस समय उसके सिर के बाल भी मुडवा दिये गये थे।

तमाम शोर से बेलाग होकर बाबा आये हुए सज्जनो से बाते कर रहे थे। सज्जन के पहुँचते ही वृद्ध साधु उठकर इस तरह प्रसन्न होकर भेटे, मानो अब तक उसी की प्रतीक्षा मे बैठे थे। कहने लगे—"हमको करोडो का धन मिल गया रामजी, आप के आने से इतनी प्रसन्नता भयी है।" फिर बैठे हुए लोगो से कहा—"यही रामजी सबेरे हमारी मदद को आये थे। इन्होने ऐसा उसको अपनी बातो के नक्से मे उतारा कि वह साथ ही साथ चली आयी।"

सामने बैठे हुए पडितजी बोले—"अरे उपकारी जीवो की कमी नही है महराज! आप ही लोगो से तो धरती टिकी हुई है। आज बाजार में जब एक ने ये कहा कि उस स्त्री का कहना सत्य हो सकता है, बाबाजी उस पर किसी प्रकार का अनुचित—अरे, हमने कहा हम उन्हें अच्छी तरह से जानते है। ऐसे-ऐसे महात्मा—"

"हम सेवक है रामजी—न साधू न सत न बैरागी। हमारे गुरूने हमको दो उपदेस दिये और गुरूदक्षिणा मे दो बचन दिये। जो उपदेस मे दिया वही बचनो में लै लिया। उपदेश ये दिया कि जग को हमारा रूप समझकर हमारी सेवा करना, और हमारी सेवा में मरते दम तलक चूक न होय इसके लिये लँगोट कसे रहना। हम तो बस इत्ता ही पढे हैं रामजी!"

एकाएक मुँह में कुल्ला भरे बैठा हुआ सिंधी युवक तेजी से उठा, और दालान से बाहर मोरी तक आते आते उसे वमन होने लगा, युवक उसी तरह ओकते हुए मोरी तक चला गया। उसके कपडे खराब हुए, जगह-जगह फर्श खराब हुआ।

"धत्तेरे की राम भगतवा!" कहते हुए बाबा तेजी से उठे। सज्जन उनकी कार्य-

तत्परता को देखता रहा। पागलखाना उसके दिमाग पर छाने लगा—अजब समाँ है! किसी के घर मे यदि एक पागल हो जाता है तो सम्हालना मुश्किल पडता है, घर-भर की खोपड़ियाँ चौबीसो घण्ट के लिये चिता की खूँटी पर टँग जाती है। यहाँ दस-पन्द्रह पागलो के जमघट को बाँध कर वह वृद्ध साधु हर तरफ चौकस नजर रख, मार-पीट, चिल्लाना-बकना, 'बेटा-मुन्ना' करना, फुर्ती से इतजाम करना—यह सब करके जब अपनी चौकी पर आकर बैठा तो ऐसा लगा मानो वह उठकर कही गया ही नही था, उसने कुछ भी नही किया, उसे कोई चिन्ता नही, मगन होकर मुस्कुराने के लिये वह सदा मुक्त रहता है।

'आपकी क्या सेवा करूँ रामजी, चाह बनै? भाँग-बूटी का सौक होय तो वो भी प्रिबन्ध हो सकता है।"

"मुझे केवल आपकी कृपा चाहिये।"

"पर चाह तो अवश्य पीजिये रामजी। आप आश्रम में पधारें और हमारी सेवा न लें—"

"सेवा हमे करनी चाहिये—"

"सेवा प्रित्येक मनुस्य को करनी चाहिये रामजी। अरे रमासकर, चाह तौ चढ़ाओ बेटा। लौंग-इलाइची मसाल्ला सब डारि देओ। हमारा तो ऐसा विचार है रामजी कि मनुस्य के मन मे जब तक सेवा भाव का लेशमात्र भी रहेगा तब तक वह निज सक्ति भर भति भ्रम होने से रोकता रहेगा।"

"आपकी यह बात मेरी समझ में नहीं आई।

"सच्चा सेवक सदा सान्त चित्त और सतर्क रहता है। अपनी चूक होने पर भी वह सांति और तर्क नही खो सकता रामजी—इस बात का बस यही रहस्य है।"

सज्जन के मन को यह बात न भायी, उसने कहा—"आप सेवक होने पर क्यो जोर देते है। मनुष्य अपना स्वामी क्यो न बने?"

साधु हँसे, उत्तर दिया—"एक ही बात है रामजी। पूर्व आश्रम में हम मोटर मिकैनिक रहे। अत मे मालिक की चाकरी से छूटकर विघ्याचल मे रम गये। त्रिकुटी में ध्यान साधा, निर्जल, निराहार रहे—जाने क्या-क्या अट-सट किया। वहाँ एक महात्मा के दर्सन भये। तौन उन्होने कहा कि ड्यूटी बजाना छोडकर यहाँ क्या ढोग करता है—जा सेवा कर। फिर हम क्या करते रामजी? जिसको गुरू माना उसकी आज्ञा भी तो माननी पडैगी। तो कहने का साराश यह है कि अपनी ड्यूटी का पायबद हुए बिना कोई अपना स्वामी बन ही नही सकता। पर हमे तो अपने को आपका सेवक मानने मे ही सतोष मिलता है—'आप रामजी है।'"

सज्जन को साधु की बाते उलझी हुई लगी, फिर भी उनका व्यक्तित्व उसे अपनी ओर खीच रहा था। और इसी आकर्षण के कारण उनके सेवा सिद्धान्त से विरोध रखते हुए भी उसका मन साथ ही साथ यह स्वीकार कर रहा था कि साधु के व्यक्तित्व का आकर्षण उनका सेवा-व्रत ही है। "मै"—सज्जन वर्मा—साधु-सन्यासियो के पास भला क्यो आता? सेवा की महिमा मसीहा, विवेकानन्द, गाधी, जैसे महापुरुषो के व्यक्तित्व से बढी है। मगर सेवा करना कठिन व्रत है। सेवा सज्जन के मन में अपने चार नौकरो, ड्राइवर, पुजारी, माली, बावर्ची, दीवानजी, क्लर्क, मुख्तारो और पहाडी चौकीदारो की सेवक-सेना नाच

गई। एक व्यक्ति जो अनेक व्यक्तियो मे सेवा पाने का लक्ष्मीसिद्ध, जन्मसिद्ध अधिकारी रहा है, जिसके सामने सेवक सदा 'हुजूर, सरकार, माई-बाप, मालिक' आदि शब्दो की गुहार करते हुए आते है, और जो सदा उन्हे अपने से नीचा समझ कर उनके ऊपर रौब-दाब रखने और डाँटने-फटकारने का आदी रहा है—वह सेवा के आदर्श को इत्र की तरह सूँघ कर आनन्दित भले ही हो ले, मगर सेवा के फूल को अपने हाथ में लेकर स्पर्श और गध का आनन्द साथ-साथ ग्रहण करना उसके वश के बाहर की बात है। सज्जन अपनी विवशता को पहचान कर सुखी न हुआ, उसकी खीझ बढी। वह अपनी कामुकता से हारा है, अपने ही मुँह से बार-बार बखाने जाने वाले आदर्शों पर अमल करने की नैतिक शक्ति भी उसके पास नही। वह कितना पतित है! बत्तीस बरस बीत गए, उसने अभी तक अपने आपको भी नही समझा। अब तक कितने इतमीनान से, ठाठ से, जोशीली ईमानदारी के साथ वह अपने व्यक्तित्व के सारे विरोधो को एक गठरी मे समेट कर निर्द्वन्द्व चला आया है—जो जी चाहा किया, जो मन मे आया कह डाला—अब अपना होश अपनी ही तमन्नाओ को तमाचे मारता है! तब क्या मै बहुत बुरा आदमी हूँ। मैने अब तक सब कुछ गलत ही गलत किया है ?"

"कुछ गलत नही किया रामजी। आरम्भ मे आदमी गलती करके ही अनुभव पाता है। हम आपबीती सुनावैं—"

अपने मन मे चलने वाले प्रश्न का उत्तर सहसा साधु के मुँह से सुन कर सज्जन चौंक उठा। साधुजी आप बीती सुना रहे थे—"पहले जब हम मोटर कपनी मे मिकैनिक रहे रामजी, उस काल मे मोटरो का धधा इस देस मे नया ही नया चला था, मिस्त्रियो की कमी होने के कारण उनकी पूछ बहुत थी, अगरेज लोग बकसीस खूब देते रहे, तौन सब मिलाय के हमारी आमदनी दुई-ढाई सौ रुपये की थी। हम गँवईं-गॉव के लडके, इतना द्रव्य पाकर दर्प से कठोर हुइ गये। पचास-पचपन बरिस पहले दुइ-ढाई सौ रुपै की बडी कदर होती थी रामजी। धन मद मे हम कोट-पतलून पहनने लगे, मजे से दोनो टैम कसरत-नियम, भॉग-बूटी, घी-दूध, रबडी-मलाई का सेवन चलने लगा। जो सौ-सवा सौ खाय-पी के बचैं वह हम हर महीना पिताजी को भेज देते थे। सो खा-खा के मुटाये और उद्दण्ड हो गये। दुइ बाते हमारे पास सदा से सच्ची थी—एक तो अपनी ड्यूटी के हम बडे पायबन्द थे, दूसरे लँगोट के बिसेस उतावले न थे। बदन कमाने का सौक था, सो सबसे अकड के चलते थे। एक बार एक आदमी से हमारी अदावत हो गई। उसने हमारे ऊपर एक बडा ऐब लगाया, मालिक से सिकाइत की कि मै उनका पैसा खा जाता हूँ। इस मिथ्या कलक से हमको बडा उद्वेग भया रामजी, बडा क्रोध आया। हम एक मोटर ट्रक ठीक कर रहे थे, साम को उसे ही टेस्टिग के बहाने लेकर अपनी कोठरी पर आये, नियम आदि किये। उस दिन भाग जरा बिसेस मात्रा मे चढाई, और अपना सैर करते-करते आधी रात मे जाय के उसके फुटपाथ पर ट्रक चढाय दी। वो मनुष्य चरपैया समेत कचर गया रामजी। हमने तेजी से दिवाल तोडते-फोडते फुल स्पीड मे गाडी को छोड दिया और चक्कर काट-कूट के अत मे अपने कारखाने पहुँचे। हमारा मालिक अँगरेज था, उसका बँगला भी उसी कम्पान

में था। हमने साहब को जाकर सारा हाल उनसे सच्चा-सच्चा कह दिया। साहब हमारी ड्यूटी से बहुत खुस रहता था। वो बिचार में पड गया, फिर कहा कि अच्छा जाओ, तुमने हमसे जथार्थ वर्णन करिके सुदर काम किया है, हम तुम्हे बचाय लेंगे, बाकी हत्यारे को हम नौकर नही रक्खेंगे। तो कहने का तात्पर्य ये है रामजी कि मूढता मे मनुष्य पहले अपनी गलतियो से अनुभव पाता है, परन्तु बाद मे यदि सतर्क हुइके चेष्टा करै तो सद्भाव सद्गुणो से सद्अनुभव ग्रिहण करने की सकती सचय करता है।"

सज्जन के मन पर इस कहानी की अजीब प्रतिक्रिया हुई—उसके मन मे निर्मम हत्यारे और सदय लोक सेवक के रूप मे साधु के दो चरित्रो की टक्कर होने लगी। उनके प्रति अपनी श्रद्धा को न तो वह तोड ही पाता था और न उस पर स्थिर ही रहा जाता था। साधु के सामने उसे बडी उलझन महसूस हो रही थी, साधु फिर बोले—"उलझन बढाने से बढती है और घटाने से धीरे-धीरे मन के तार सुलझ जाते हैं।"

सज्जन फिर चौका, साधुजी हँसे, कहने लगे—"आस्चर्ज की कोई बात नही रामजी। गुसाईंजी के वचन सत्य है 'सकल पदारथ या जग माही, कर्म हीन नर पावत नाही'।"

बैठे-बैठे सज्जन को नीद के तेज झोके आने लगे। उसकी चितन शक्ति बिखर रही थी। उसे सहसा ये महसूस होने लगा था कि साधु की स्नेहमयी काली-काली पुतलियाँ उसके मन के प्रत्येक कोने मे प्रवेश कर रही हैं—उनसे जैसे कुछ भी छिपा नही। सज्जन अनुभव कर रहा था कि उसका अस्तित्व लोप होता जा रहा है। साधु की पैनी स्नेहमयी दृष्टि उसके पर्दे-पर्दे पर पड रही थी। ऐसा लगता था कि वह अतरिक्ष की तरह भाग रहा है और साधु की दृष्टि सूर्यकिरण की तरह अतरिक्ष को पार कर आगे निकल जाती हैं। सज्जन के अहकार ने हार कर भी हार मानने से इकार कर दिया। परन्तु उस इकार को वह अपना बल न दे सका, उसकी चितन शक्ति बिखर रही थी, उसे बैठे-बैठे ही नीद का तेज झोका आया—एक बार, दो बार,—पलके उठाना भारी पड गया। सज्जन अधीर हो चुका था, मिर्च-मसालेदार चाय बडे मौके से उसके सामने आई।

२२

बाबा राम जी के आश्रम से घर आते समय सज्जन ने छतर मजिल के पास महिपाल को पैदल जाते हुए देखा। उसने गाडी रोक कर महिपाल को आवाज दी। महिपाल का चेहरा बेहद उतरा हुआ उदास था। गाडी मे बैठते हुए बोला—"अच्छा हुआ कि तुम मिल गये। मुझे शीला के यहाँ छोड दो। रास्ते का बातचीत मे जब महिपाल ने अपने और शीला के आत्म-भाव की तुलना में सज्जन और कन्या के बढते हुए संबध की चर्चा चलाई, तब सज्जन ने छूटते ही उसका विरोध किया, उसने कहा—"शीला की मैं इज्जत करता हूँ, मगर कन्या को

उसके मुकाबिले मे लाने के लिए हर्गिज तैयार नही। मेरी माँ को छोड़कर कन्या अपनी निष्ठा मे उन तमाम औरतो से बडी है जिनके जीवन को मैं अब तक नजदीक से देखता-पहचानता चला आया हूँ।"

"निष्ठा मे मैंने अपनी पत्नी को भी कम नही पाया सज्जन—"

"तब फिर? उन्हे छोडकर शीला—"

"शीला मेरे लिए नशे की तरह जरूरी है। यह तमाम ऊपरी नशे तुम जानते हो कि मैं इनका गुलाम नही शौकीन भर हूँ। मगर शीला ऊपरी नशा नही है उसका सबंध मेरे अतर से है। सज्जन, मैं तुमसे झूठ नही कहूँगा, जितनी उखडी, थकी हुई जिंदगी को लेकर मैं दिन-रात सघर्ष करता हूँ, उसकी तुमने शायद कभी सपने मे भी कल्पना नही की होगी। शीला मेरे थके हुए घायल अहकार का बल है। उसके अलावा एक कर्नल ही ऐसा है जिससे मुझे बल मिलता है। बुरा न मानना सज्जन, उसके मुकाबले मे तुम भी मेरे सामने भार बन कर ही आते हो।"

सज्जन ने कहा था—"हो सकता है। पर तुम क्या निष्पक्ष होकर अपनी वाइफ के मुकाबिले में शीला को उसी तरह बडा मान सकते हो जिस तरह तुम मेरे और कर्नल के मुकाबिले मे कर्नल के प्रेम को बडा मानते हो?"

महिपाल कोई उत्तर न दे पाया था। सज्जन ने आवेश मे आकर फिर कहा था—"मैं अभी अपने मन को नही जानता। इस वक्त मैं जितना लडखडा रहा हूँ। अनिश्चित हूँ उतना कभी नही हुआ। कभी सोचता हूँ कि कन्या जैसी जनूनी जोश भरी स्त्री के साथ जीवन निबाहते हुए मैं शायद सुखी न हो पाऊँ—"

"उसी तरह जैसे कल्याणी मेरे लिए समस्या बन जाती है।"

"मगर फिर सोचता हूँ कि इस खरे सोने में मैं अपनी निष्ठा को हीरे की तरह न जड पाया तो मेरी जिंदगी ही फिजूल है। कन्या मेरी कमजोरियो के लिए चुनौती की तरह आई है।

"इन दो को लेकर हालाँकि मेरे मन मे टेरिबिल खीच-तान चल रही है, मेरे चरित्र की कमजोरियाँ लाख न चाहने पर भी मुझे अपनी ओर घसीटती है। बट आई नो, कि अत में मेरी कमजोरियाँ कन्या की निष्ठा के सामने घुटने टेक देंगी।"

सज्जन की बातो पर महिपाल को लगा कि वह ऐसा न कर पायगा। कल्याणी से बँधे रहने पर भी, उसके लिये वह शीला का त्याग न कर पायगा।

सज्जन से विदा लेने के थोडी ही देर बाद शीला के सीने में मुँह छिपाते हुए महिपाल ने उससे कहा—"ओ मेरी कमजोरी, तुम मेरा साथ कभी न छोडना।"

उसके बालो पर हाथ फेरती हुई शीला बोली—"साथ छोडने का सवाल ही तुम्हारे मन मे क्यो पैदा होता है? क्या जरा सी बदनामी से ही तुम्हें इतना डर लगने लगा?"

"बदनामी से नही डरता हूँ, शीला। डर दरअस्ल मुझे अपने मन में बैठे उस खुदा से लगता है जो बार-बार मुझसे यह कहता है—'तुम गलत कर रहे हो, महिपाल। तुम किसी का अधिकार हरण कर रहे हो'।"

"मैं ऐसा नही मानती। तुम जिस अधिकार हरण करने की बात कर रहे हो मैं उसे अहमियत नही देती। हम एक-दूसरे की रूहानी जरूरतो को पूरा करते हैं, जिन्हे पूरा

करना हर-एक का पैदाइशी हक होता है। मैं अपने और तुम्हारे नाते को पाप भी नही मानती।"

"हाँ। एक जगह अपने तमाम मारेलिस्टिक सस्कार अलग कर मै भी यह मानता हूँ कि हम कोई पाप नही कर रहे है। फिर भी कल्याणी को लेकर सोचो शीला, उसका जीवन कितना एकनिष्ठ है।"

"ठीक है। उनके टेम्परामेंट को यह सूट करता है। बहुत से ऐसे होते है जो बगैर सोचे-समझे जिस बधन को मान लेते है, उसी मे सदा के लिए बँध जाते है। तुम्हारी वाइफ भी ऐसी ही है, मगर हम, जो जिदगी को खुद अपने विचारो की कसौटी पर कसने के आदी है वे बुरे क्यो है ?—उनसे छोटे क्यो है जिन्हे मॉरल्स का गुलाम होने की वजह से शुरू से ही एक निष्ठा मे बँध जाने की आदत होती है ?"

"क्या जानूँ शीला, दुनिया बुरा कहती है, मै भी शायद आदत की वजह से ही ऐसा कहता हूँ कुछ समझ मे नही आता कभी-कभी दुर्योधन की तरह ही यह कहने को जी चाहता है

जानामि धर्म न च मे प्रवृत्ति,
जानाम्यधर्म न च मे निवृत्ति।

—धर्म को जानता तो हूँ पर उस ओर मेरी रुझान नही, अधर्म को भी जानता हूँ पर उससे मेरा छुटकारा नही। अपने दिल मे बैठे हुए किसी देवता के इशारे पर जैसा वह मुझे नियुक्त करता है वैसा ही करता हूँ। (आह भर कर) वैसा ही करता हूँ।"

"यही फिलासफी सबसे अच्छी है। इसान को अपनी इमोशनल नीड्ज पहचाने बगैर छुटकारा नही मिल सकता। तुम्हारी वाइफ अगर उसे पूरा कर पाती तो मैं अच्छी तरह जानती हूँ, तुम भी उनकी तरह ही आज एकनिष्ठ होते। इतने वर्षों में तुम्हारे चरित्र को मैंने किसी भी बडे से बडे मॉरेलिस्ट से कम नही पाया।"

अपनी प्रशसा सुनकर महिपाल शीला को प्यार भरी नजरो से देखने लगा। भावावेश मे उसे अपनी बाहो मे कस लिया। उस समय दोनो एक-दूसरे के आलिगन मे बँधे हुए भी सेक्स उत्तेजना से दूर, एक प्रकार का गहरा मानसिक सतोष पा रहे थे।

कुछ पलो मे व्यवस्थित होकर महिपाल ने कहा—"शीला, जमाने को देखते हुए हम अब अधेड हो चुके। जोशीली जवानी को अब तर्क बुद्धि बाँध लेती है। समझ में नही आता, भविष्य हमे किस ओर ले जाएगा। जाहिर है कि अब तक जो बात मेरे घर वालो से छिपी हुई थी वह अब छिपी नही रही। कल्याणी से विद्रोह कर मैं तुम से बँधा रह सकता था पर अपने बच्चो की जानकारी मे कैसे यह नाता निभा सकूँगा ? वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे ? तुम्हे, जिसे मैं अपनी प्रेरणा की देवी मानता हू, वे लोग अपने परिवार को छिन्न-भिन्न करने वाली, कुटिल और नीच मानेगे।—मैं कैसे यह बर्दाश्त कर पाऊगा ? अगर घरवालो के प्रति अपनी ईमानदारी निवाहता हू तब तुम्हारे प्रति मैं वफादार नही रहता। और तुम्हारे प्रति सच्चा बनता हूँ तो अपनी तमाम जिदगी को झूठा बनाना पडेगा।"

"क्यो ?"

"मान लो, म यह स्वीकार कर लूँ कि तुम्हारे बगैर नही रह सकता तब मेरे सामने

सिर्फ यही एक उपाय रह जाता है कि मै घर से अलग रहूँ। खर्चा देने के सिवाय घरवालो से कोई संबंध न रखखूँ लेकिन ऐसा करने मे भी एक दिक्कत है। मै तुम्हारे साथ एक घर मे रह न सकूँगा। दुनिया सोचेगी कि मैंने तुम्हारे लिए नही बल्कि तुम्हारे पैसे के लिए अपने घर-बार को भी छोड दिया।"

"लेकिन तुम्हे घर छोडने की जरूरत क्या है ? मेरी समझ मे नही आता कि तुम इस तरह से सोचते ही क्यो हो।"

"तब फिर दूसरा उपाय ही क्या है ?"

"डोण्ट बी फनी डार्लिंग ! तुम जरूरत से ज्यादा भावुक होकर इस मसले को सोच रहे हो। दोनो ही बाते सच है—कल्याणी और बच्चे तुम्हारे लिए निहायत जरूरी है। इनमे अलग होकर तुम इसानियत से गिर जाओगे। और मै—और तुम—हाँ, अलग तो हो सकते है, पर अलग होकर हमारी जिदगियाँ बुझ जायँगी। तुमने अभी सच कहा था—हम करीब-करीब अधेड हो चुके। ढलती उम्र मे प्यार जिस्मानी जोश नही बल्कि रूहानी आसरा होता है। पद्रह-बीस बरस पहले—आठ-दस बरस पहले भी हो सकता था कि तुम मेरी जिदगी मे आते और शायद बेलौस निकल भी जाते। जैसा कि तुमसे मेरा मन बँधा हुआ है, अगर उस वक्त भी ऐसी ही दशा होती तो शायद है मै महीने-दो-महीने, हद छै महीने तुम्हारे विरह मे दीवानी रहती फिर सब भूल जाती। मगर अब ऐसा न कर सकूँगी।"

"करो शीला, यही करो। तुम्हारे साथ रहकर मेरा जीवन भले ही सुखी हो जाए, पर तुम सुख न पा सकोगी। समझ लो कि मर गया—या बेवफा निकला। फिर दिल को समझा कर किसी भले आदमी से शादी कर लो। इस बार अपनी जिदगी का परमानेन्ट सेटिल्मेट करना। शादी मानव समाज की जरूरी रस्म है, ऊँचा सिद्धान्त है। अब इसे मान लो।'

"मान लिया। पर मेरी शादी हो गई। और आयदा इस चर्चा को कभी मत चलाना।"

"कर्नल साब का टेलीफोन आया है हुजूर।" नौकर ने दरवाजे पर पडे पर्दे के बाहर खडे होकर कहा। दोनो ने चौक कर एक दूसरे को देखा।

"किसको पूछ रहे है ?" शीला ने प्रश्न किया।

"आप के वास्ते भी पूछा हुजूर, और साहब के वास्ते भी।"

"जाओ, तुम बात कर लो। मेरे बारे मे उसे यह तो मालूम हो ही गया है कि यहाँ हूँ, पर कह देना इस वक्त किसी से भी नही मिलना चाहता।"

शीला बात करने चली गई। महिपाल हारा हुआ मन लिए पलँग पर लेट गया। सोचने लगा—"शायद घर से कोई पूछने आया होगा। कल सुबह से घर नही गया। बच्चे, कल्याणी सब परेशान हो रहे होगे।—होने दो। चरित्रहीन पिता किस मुँह से अपने बच्चो के सामने जायगा ? कल्याणी कितनी बडी मूर्खा है। बिना सोचे-समझे सब के सामने इतना बडा तूफान उठा के उसने मुझे कही का न रक्खा। मै अब उसकी सूरत नही देखूँगा। —कभी नही देखूँगा।"

शीला कमरे मे आई। पास आकर बोली —"कल रात तुम कहाँ थे ?"

महिपाल ने कोई जवाब न दिया। आँखें मीचे पड़ा रहा। शीला ने फिर कहा—"कल से तुम घर नही गए—यह कितनी बेजा बात है।"

महिपाल कुछ न बोला। शीला उसके पास बैठ कर उसके सिर पर हाथ फेरती हुई बोली—"खाना खा लो। फिर चलो मैं तुम्हे छोड़ आऊँ। उठो।"

"घर नही जाऊँगा। कल रात सो नही पाया, घर जाने पर आज की रात भी कलह मे बीत जायगी। मैं अब इतना थक चुका हूँ कि अपना हल्का-सा विरोध भी बरदाश्त नही कर पाऊँगा। कर्नल को फोन कर दो—बच्चो से कह देगा, चिंता न करें। मैं सज्जन के यहा सोऊँगा।"

बातो के प्रसग मे शीला को यह मालूम हो गया कि पिछली रात महिपाल ने ठिठुरते हुए, लावारिस की तरह शिवाले मे बिताई थी। उसके बाद उन्होने महिपाल को जाने न दिया।

अपने चार वर्षों के घनिष्ठतम सबध मे पहली बार महिपाल ने इस घर मे पूरी रात बिताई।

२३

मन मे चोर लेकर सज्जन माखनचोर की लीलाभूमि में आया। पछतावे की आग में उसका अहकार जल-जल कर, वेदना से तप-तप कर करुण बन गया था। वनकन्या उसके साथ इस यात्रा मे आठो पहर की परीक्षा-सी चल रही थी। दो दिन मथुरा में साथ रहने से विकलता पाकर सज्जन का रुँआसा करुण मन उड़कर, अपने घर के वैष्णव सस्कार और मा की कृष्ण सेवा के प्रभाव से श्रीकृष्ण के चरणो में जा लिपटा।

सज्जन अपने आप को कन्या की ओर से खीचे रहता था। कन्या के नेह से नाता तोड़, सज्जन श्रीकृष्ण की भक्ति से सहसा विभोर होकर अपने मन को ब्रह्मचारी बना रहा था। मथुरा आकर उसने वनकन्या की स्वर्गीया भावज के सम्बन्ध मे होनेवाली कानूनी कार्रवाई में तनिक भी भाग न लिया, बल्कि जाते ही उसने कन्या को घर पर छोड़कर अकेले मथुरा भ्रमण करना आरम्भ किया। विश्राम घाट, द्वारिकाधीश, किशोरीरमण, बिहारीजी, राधाकृष्ण आदि के प्रसिद्ध मन्दिरो मे घूमता, दर्शन करता, जबर्दस्ती अपने अंग्रेजियत के सस्कारो वाले व्यक्तित्व को भुलाकर, वह अपने आपको चिर सस्कारी हिन्दू वैष्णव अनुभव करने का प्रयत्न कर रहा था। वह अपने अन्दर उस भक्ति प्रपात के दर्शन करना चाहता था जिसने इस देश के जनसाधारण मे से न जाने कितनो को असाधारण बना दिया है। सूर, मीरा आदि के जी की लगन जिस लाल से लगी वह कौन है?—क्या है?

सज्जन हठपूर्वक अपनी इस भाव भरी जिज्ञासा को मन्दिर-मन्दिर हर मूरत में

झाँकता फिरा, मगर व्रज के लाडले लाल उसे कही भी न दिखाई दिये। हर जगह आडम्बर था।

ताँगे वाला उसे घुमाते हुए कृष्णजी की जन्मभूमि दिखाने ले आया। कृष्ण की जन्मभूमि !—इसके ध्यान से ही सज्जन का मन एक विचित्र कौतूहल से भर गया। वह कृष्ण, जो परमात्मा बनकर इस विशाल महाद्वीप-से देश मे घर-घर पुज रहा है, इसी भूमि पर जन्मा था। परमात्मा मनुष्य होकर जन्मा था, पृथिवी पर जन्मे हुए कंस के कारागार मे उसने जन्म लिया था।

वह कारागार स्थल, श्रीकृष्ण की जन्मभूमि, उसकी नजरो के सामने आ गई। भगवान की जन्मभूमि पर खुदा का घर बना हुआ देखकर सज्जन अचकचा उठा। उसके हिन्दू मन को गहरा धक्का लगा। ताँगेवाले ने उसे इतिहास बतलाना आरम्भ किया—"औरंगजेब ने मन्द्र को टुरवाया कै वाही पै जा मस्जिद ठाडी कर दई म्हाराज।"

सज्जन मन-ही-मन उबल उठा। उस साम्प्रदायिक उबाल ही मे एक बार सहसा उसको यो महसूस हुआ कि कृष्ण की जन्मभूमि पर, खँडहरो के चबूतरे पर सगोन पत्थर की कलाहीन मस्जिद की जगह कन्या खडी है। कृष्ण की जन्मभूमि पर पहुँच कर मस्जिद और कन्या—दोनो ही से कटकर सज्जन कृष्ण के भाव से भर जाना चाहता था। औरंगजेब की मस्जिद और वनकन्या का ध्यान—इन दोनो से ही उसकी आस्था डगमगा उठती थी। और वह अपने मन को जमा रहा था। श्रीकृष्ण के ध्यान में अपने आपको लय कर देना चाहता था।

मस्जिद के नीचे खँडहर पर हाथ रखकर खडे हुए सज्जन का ध्यान कारागार के दृश्य में रम गया।

मस्जिद पर नजर गई। सज्जन का मन क्रोध से भर गया। मस्जिद एक जहालत भरी शक्ति का प्रतीक बनकर उसकी संस्कारो से सजी हुई कल्पना को ऊँचाइयो पर चढने से रोक रही थी। उसका जी चाहने लगा कि मस्जिद ढह जाय—ढा दी जाय।

इस समय उसके मन मे एलोरा, अजन्ता की गुफाएँ, सोमनाथ, विश्वनाथ के मन्दिर तथा उन सब जाने-अनजाने मन्दिरो, मूर्तियो का, जिन्हे मुसलमानो ने तोडा था, क्षोभ उभर रहा था। वह सोचने लगा जिस तरह यहाँ केशव का मन्दिर तोड कर मस्जिद खडी की गई है, उसी तरह अगर दिल्ली की जुम्मा मस्जिद को तोड कर उस पर केशवदेव का मन्दिर बना दिया जाय तो मुसलमानो को कैसा लगेगा ? लेकिन सज्जन के मित्रो-परिचितो मे अनेक मुसलमान भी है। उन मुसलमानो मे अनेक बडे ही भले है। मुसलमानों मे भी बडे-बडे सूफी, सन्त पैदा हुए है। मस्जिद मे उन्होने जिस खुदा को देखा है, कबीर ने जिस निर्गुन राम-रहीम को पहिचाना है, चैतन्य-रसखान, मीरा, जिस पर आशिक हुए हैं, सूर-तुलसी जिनके भक्त होकर तर गये वे भगवान अलग-अलग नही एक है। इन मुसलमान हरिजनन पै राजर्षि भारतेंदु कोटिन हिन्दू वार गये है।

मस्जिद के प्रति अपनी हिंसा के भाव से सज्जन को लज्जा का बोध हुआ। इस मजिस्द को ढाने, या जुम्मा मस्जिद को केशवदेव के मन्दिर के रूप मे परिवर्तित किये जाने की बात उसे ओछी और गन्दी मालूम हुई। इतना होने पर भी कृष्ण की जन्मभूमि

पर खडी हुई इस मस्जिद को सज्जन का मन क्षमा न कर पाया। उसका क्षोभ बना ही रहा। यह मिथ्या दभ भरी धर्मान्धता, किसी भी रूप मे क्षमा नही की जा सकती। हो चुका सो हो चुका, आयन्दा हर वर्ग और प्रकार की प्रतिक्रियावादी शक्तियो के खिलाफ लडना ही चाहिये। इनसे लडना इसान का फर्ज है।

हो चुका सो हो चुका, आयन्दा सज्जन कन्या से किसी प्रकार का सबध नही रक्खेगा। उससे घृणा नही, वह अब किसी से घृणा नही कर सकता। कन्या से घृणा करना तो हद दर्जे की गैरइसाफी है। कन्या के चरित्र की दृढता ने ही उसे नये जीवन की राह दिखाई है। बल्कि सच तो यह है कि उसने ही कन्या के साथ नीचता की है। क्रोध और वासनाभरी बहशी के एक झोके मे वह अपना भरम गँवा बैठा। परसो के काड के बाद से वह कन्या के सामन अपनी नजर नही उठा सकता। और कन्या महान् है। मै नीच हूँ। वासना का कीडा हूँ। मुझमे स्वाभिमान नही हे। कोरा घमडी ही हूँ। घमडी आदमी दुनिया मे कुछ हासिल नही कर सकता। और फिर मै किस बात का घमड करूँ?—खादानी पैसे का? पैसे की सत्ता और उसके गलत महत्त्व की साख अब और पुजेगी कितने रोज?—दस-पद्रह बरस—हद से हद! बडा कलाकार होने का घमड करूँ? यानी चैन के क्षणो मे भी अपने आपको धोखा दूँ?

सज्जन आत्मग्लानि से पानी-पानी हुआ जा रहा था। अगरेजियत, आबरूदारी शोहरत और हैसियत के हिमालय का बर्फ जो गला तो ऊँचे शिखरो पर टिक न सका, पहाडियो पर तेज झरने की तरह गिरकर छाती दहलाता हुआ मैदान की सतह पर प्रार्थना की गगा बनकर उतर आया। आत्मग्लानि मे कृष्ण जन्मभूमि दर्शन से जागे हुए सस्कार जुडकर प्रार्थना के सिवा और दूजा रूप धारण ही न कर सके।

•

काले ऊन के रेशो की तरह सिमट कर, रात काली कमली की तरह धरती पर पसर गई। चिंता के रेशे आपस में जुडते हुए कन्या के मनोलोक पर काली रात की तरह छा गये—"ये कहाँ रह गये? इन्हे क्या हो गया?"

सज्जन के लौट कर घर न आने से कन्या के मन की उथल-पुथल का पारावार न था। उसकी स्वर्गीया भावज की अपाहिज सखी दस बार पूछ चुकी, उसके पति लाला मुरली मनोहर भी दूकान से वापिस आकर कई बार चिंता प्रकट कर चुके। दिन की रसोई झीकती रह गई, ब्यालू के व्यजन भी रसिया के अभाव में सजी-बजी सुहागिन की तरह फीके पड गये। सज्जन रईस, फिर मुँहबोलेपन के नाते से इस घर के दामाद—वह कहाँ रह गये? क्यो नही आये? पुलिस मे रिपोर्ट की जाय?

कन्या ने जाहिरा तौर पर तो हँस-हँसकर सबको समझा दिया कि दामाद साहब कलाकार हैं। उनके इस तरह अचानक गायब हो जाने से किसी को चिता नही करनी चाहिये। मदिरो की सैर करने निकले ही थे, धुन के फेर मे हजार हाथ वृन्दावन चले गये होगे।

रात में, अपने सोने के कमरे मे जाकर, एकान्त पाते ही कन्या फूट कर रो पडी। सज्जन का अभाव, उसे इस प्रकार छोडकर उसका चला जाना मानवती कन्या से सहा नही जाता था—'कही ऐसा तो नही कि लखनऊ लौट गये हो? आज तो उनसे किसी

तरह की कडवी-मीठी उलझन भी नही हुई। हॉ, परसो सबेरे की घटना के बाद से वे अपने मन को सम्हाल नही पाये। मैंने उन्हे अपनी ओर से आश्वस्त करने मे कोई कसर बाकी नही रक्खी। उनकी गलती का कारण मेरी गलती है, उन्हे बतला चुकी हूँ, स्वय भी अब अनुभव कर रही हूँ।'

कन्या अहकारिणी है। नैतिकता की शक्ति उसके अहकार का पोषण करती है। घर के गदे वातावरण की प्रतिक्रिया मे उसका बडा भाई और वह आत्मतेज से दीप्त होकर बालिग हुए। अपने विवाह की ट्रेजेडी के बाद उसके बडे भाई तो जिदगी से जूझते-जूझते थक कर बौरा गये, कन्या ने उनके दिमागी असतुलन से भी नसीहत लेकर अपनी नैतिकता को अधिक कसा। हॉ, इतना प्रभाव अवश्य पडा कि उसका आतरिक विद्रोह अधिक मुखर हो उठा। वह खुले शब्दो मे अपने घर के गुरुजनो के कुकृत्यो की उनके मुँह पर निदा करने लगी। अपनी एक प्रगतिशील सहपाठिनी के उत्साह मे उसका लगाव इडियन पीपुल्स थियेटर, कम्यूनिस्ट पार्टी के लोगो, और मार्क्सवाद से भी होने लगा। उसकी विद्रोहात्मक वृत्ति को इससे बल मिला। परन्तु अपने गुरु और बडे भाई की छत्र-छाया मे उसके साथ ही साथ बालिग होने वाली आस्तिकता विद्रोह करने पर भी उसके मन से न गई। इस तरह जहॉ तक मन के विद्रोह को सतोष देने की बात थी वहां तक तो वह प्रगतिशील बन गई, उससे अधिक वह आगे न बढ सकी, यद्यपि बौद्धिक और भावनामूलक उलझने उससे गहरा विचारमथन कराती रही।

उसकी इन उलझनो मे एक निजी और गोपनीय उलझन भी पैना काम कर रही थी, अब भी करती है। पैना इसलिए कि अपनी इस उलझन को लेकर आज तक वह किसी के सामने अपना मन खोल नही सकी। बडे भाई से लिहाज के मारे कुछ कहा नही जा सकता था, और बाहर किसी से भी कहकर वह अपनी नैतिकता सच्चरित्रता पर ऑच नही आने देना चाहती थी। आज, चौबीस वर्ष की आयु तक, वनकन्या देह से ब्रह्मचारिणी है। यद्यपि सस्कारो ने उसके मनोलोक मे अब्रह्मचर्य नही फैलने दिया, फिर भी वह मदन दहन कर वीतराग तो नही ही हो पाई है। उम्र के तकाजे से पुरुष के अग-सग की सहज स्वाभाविक इच्छा कही उसके मन मे भूखी रेगती थी। पिता की काम विकृतियॉ, चाची की चरित्रहीनता, और स्वय उसकी सुन्दर जवानी को लालच के प्याले मे पीनेवाली पुरुष-ऑखें, तथा इन सब बातो के साथ ही इस देश के अनेक आदर्श पुरुषो द्वारा कामवृत्ति को विकार समझने के उपदेश, दबे तौर पर निरतर उसे दो सिरो पर खीच कर हैरान किया करते थे, कामेच्छा और कामदमन की इच्छा दोनो साथ ही साथ उससे उलझती थी। समाज के अभिशाप-सी उसकी स्वर्गीया भावज, और प्रवृत्ति के अभिशाप-सी उसकी जीवित भावज के दृष्टान्त उसे पुरुष से घृणा उत्पन्न कराते रहते थे। आधुनिक सामाजिक चेतना के अनुसार पाई हुई समझ से भी वह यही अनुभव करती थी कि मानव समाज में, मुख्यत भारतीय समाज में पुरुषो ने नारी जाति की दुर्गति कर रक्खी है। इन सब बातो को लेकर उसके अदर का स्वाभिमान—पौरुष—पुरुषो के खिलाफ विद्रोह करता रहता था, यद्यपि अब, साल-दो-बरस से, मनमथन के प्रभाव मे उसने जो सिद्धान्त-नवनीत पाया था, उससे वह काफी हद तक शात, गभीर और सतुलित हो गई थी। कन्या ने एक तरह से मन-ही-मन यह तय-सा कर लिया था कि यदि उसे कभी अपने ही समान सस्कारी,

सिद्धान्तवादी पुरुष मिल गया तो वह विवाह कर लेगी।

भाभी की आत्महत्या और उसे लेकर होने वाली पुलिस कार्रवाही के दौर मे, उसे सज्जन मिल गया। चित्रकार सज्जन की ख्याति से वह परिचित थी, प्रगतिशील कैम्प के लोग उसे अपना न मानते हुए भी उसके उन्नत विचारो की सराहना करते थे, कन्या ने प्रदर्शनी में उसके चित्र भी देखे थे, दूर स्वय उसे भी पहले देख चुकी थी। इस तरह ख्याति और उन्नत विचारो की पृष्ठभूमि के साथ सज्जन उसे बडी ही उत्तेजना के क्षणो में मिला था। फिर उसने उसकी स्वर्गीया भावज पर हुए अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने में बडी मदद दी। सज्जन का व्यक्तित्व भी आकर्षक था। इन सब बातो ने मिलकर सज्जन के प्रति उसमें कृतज्ञता भरी श्रद्धा जगा दी। फिर सज्जन उसकी ओर आकर्षित होता गया, उसके आकर्षण मे तेजी आई, और बहुत जल्द ही उसने उससे अपनी जीवन-सगिनी बन जाने का प्रस्ताव भी कर दिया।

कन्या ने महसूस किया कि वह जीवन मे पहली बार किसी पुरुष के आकर्षणपाश मे पूरी तौर पर बँध गई है। और इसके साथ ही साथ आत्म-प्रशसा का फाटक लगाकर नैतिकता के गढ मे सुरक्षित रहनेवाली अहकारिणी नारी को—पुरुषो को ओछी और शका भरी दृष्टि से देखने वाली कन्या को—सज्जन के प्रति अपने मन का बधन मानने में झिझक भी होती रही। इसीलिए वह सज्जन को बार-बार बढावा देने, और बार-बार रोक देने के लिए अपने आपसे विवश थी।

पिता के द्वारा घर से निकाले जाने पर जब वह कहारो के अहाते मे कोठरी लेकर रही उस समय किराये के कुत्तो ने आवाजे-तवाजे फेंके, फूहड इशारे किये, कन्या उनसे डर गई। इस डर ने ही उसके मन मे यह विश्वास जमाया कि मानपूर्वक सुरक्षित जीवन बिताने के लिए आज के युग मे स्त्री को एक पुरुष-साथी चाहिये ही। सज्जन के प्रति उसके मन का बधन और दृढ हो गया, परन्तु वह सज्जन के घर, यहाँ तक कि उसके किराये के घरो मे भी रहने के लिए न जा सकी। यह अजीब बात थी कि कर्नल के घर रहते हुए वह अपने आपको सज्जन की सुरक्षा ही मे मानती थी, और यह भी अजीब बात थी कि अकेले मथुरा आने मे, या सज्जन के सिवा अपने कर्नल भाई साहब तक के साथ आने मे उसे सकोच लगा था।

परसो सज्जन ने अनायास उस पर प्रहार किया। सज्जन की ओर से इस प्रकार के व्यवहार की कल्पना भी वह नही कर सकती थी। उसके स्वाभिमान को गहरा धक्का लगा। यह होते हुए भी सज्जन द्वारा किये गये प्रयोग से उसे अपने मन की हजार तहो के अदर गुदगुदी भी महसूस हुई, उसे राहत हुई। समझ मे न आने वाला, ऊपरी सतह पर जाहिर न होने वाला एक अजब तर्क लगाकर सज्जन के प्रति उसका मन और अधिक दृढता से बँध गया। इसके बाद ही समझ से काम लेकर सज्जन के पश्चाताप को दूर करते हुए, उसकी गलती के लिए अपने अहकार को ही अधिक दोषी ठहरा कर यहाँ तक राजी हो गई कि सज्जन जब, जिस समय चाहे, वह उससे विवाह करने को तैयार है। . .

और आज सज्जन—? क्या वह उसे छोड गया? अगर उन्हे छोडना ही था तो क्या इस पराये नगर, पराये घर, पराई नजरो में यो मजाक का सामान बनाकर? रमा

भाभी क्या सोचती होगी ? हो सकता है कि वे और उनके पति इस समय अपने कमरे में बैठे हुए हमारी ही चर्चा कर रहे हो ! जाने क्या-क्या कहते-सोचते होगे ? इन्होंने मुझे नजरें उठाने लायक नही रक्खा !—कही का नही रक्खा !"

पानी से बाहर छिटक कर पडी हुई मछली की तरह कन्या तडपती रही। मान के तीर—आँसू—भी तरकस रीता कर गये। जी हलका हुआ, मगर खोखला हो गया, जिसे वह ठडी आहो से भरती रही। एक भाव, एक रूप में तल्लीन होकर बनकन्या—एक पढी-लिखी, तेज-तर्रार, सबला नारी—काव्य में बखानी गई वियोगिनी बाला की तरह मति-गति-हीन होकर स्तब्ध हो गई। मार्क्स, गाधी आदि का दर्शन, बहस मुबाहसा, एलेक्शन, राजनीति, स्त्री-स्वातत्र्य, साहित्य, कला और सस्कृति,— ज्ञान-विज्ञान भरी, हलचल भरी ऊपरी दुनिया से वह उसी तरह बेभान हो गई जैसे नीद में देह बिसर जाती है। मगर यह नीद, बेहोशी, या जडता न थी, एक ऐसे होश का जागरण था जिसमे इसान अपना आपा खोकर अपने आपको पा लेता है। बिरहिन के नैनो ने ऐसी बेल बोई कि 'सींचत नीर नैन के सजनी, मूल पताल गई।' इस समय कन्या कन्या न थी, उसका अतर-बाहर एकाकार हो रहा था—और वह आकार सज्जन का था। इस समय सुधि ही उसका प्राण थी।

•

सज्जन उस समय थके तन और मन को लेकर वृन्दावन की ए,क धर्मशाला के अदर सुन्दर हॉल में रास देख रहा था। गुजराती सेठ-सेठानियो की एक भक्त मडली की ओर से यह प्राइवेट आयोजन था, फिर भी बाहर के पच्चीस-तीस आदमी देखने को आ ही पहुँचे थे। सज्जन उसी धर्मशाला के एक कमरे में टिका हुआ था। वृन्दावन आकर उसे गहरी निराशा ही हाथ लगी थी। जो वृन्दावन लोक-गीत, लोक-नाट्य और भारतीय साहित्य की प्रबल प्रेरक शक्तियो मे माना जाता है। जहाँ के अनेक स्थलो पर सोलह कला-धारी भगवान् कृष्णचद्र की बाल-लीलाओ की स्मृति आज तक पूजी जाती है, वहाँ उसे भगवान् नजर ही न आये। मथुरा से भक्ति की जिस लौ को जगा कर वह बडी ललक के साथ वृन्दावन आया था, वह लौ यहाँ की अधार्मिकता और मुगलिया आडम्बर के करारे झोको से बुझने-बुझने को हुई। उसे बार-बार यह लगा कि वृन्दाबन माहात्म्य मुनाफाखोरी के लिए रचा गया एक बहुत बडा षडयत्र है, यद्यपि उस घटाटोप अँधेरे में बिजली की कौंध की तरह अनेक बार भक्त-जन और व्रज के सबल देह और सरल मन वाले लोग लुगाइयो के रूप मे वृन्दावन चद्र की झलक उसे मिलती ही रही। रास लीला का आरकेस्ट्रा छिडते ही सज्जन मन बहलाने के खयाल से अपनी कोठरी से निकल कर देखने आ गया।

वदना, आरती के बाद कृष्ण-लीला आरम्भ हुई। कृष्ण भगवान् अपनी बडाई में बडी-बडी फिलासफी भरी बाते बघारने लगे। सज्जन को ऊब मालूम होने लगी। सज्जन को महसूस होने लगा मानो कृष्णजी रासलीला मडली के मालिक और तमाम पडे-पुजारियो की मुनाफखोरी के साधन बने, उस जिन्स के प्रचार एजेन्ट का काम कर रहे थे, जो आनन्दकद, सच्चिदानद, आदि अनेक नामो से इस वैष्णव तीर्थ मे, मदिरो में झाँकी झूले और प्रसाद के बहाने बिकती है। उसकी मानसिक थकान चौबाला हो गई। क्या यही है हमारे धर्म का रूप ? क्या यही धर्म, यही भगवान् उसकी स्वर्गीया माँ तथा भारत

के करोडो लोगो के हृदय मे सदियो से सस्कार बन कर पुज रहा है ?

लबे ताड जैसे एक सरूपधारी की पुरुष देह केसरिया चुनरी में छिपकर डेढ हाथ घूँघट के साथ जसोदा मैया के रूप में प्रकट भई। फटे बाँस से स्वर मे जसोदा मैया कहती भई—

जसोदा—आज मेरो कनैया दुहताय कौ खेलबे गयो है। और आज तो कलेऊ हू नायँ कर गयो। जाने कहाँ चलो गयो है।

अपने लाल की प्रतीक्षा और चिंता करती हुई नदरानी टहलने लगी। इतने में मोर-मुकुटधारो मुरलीधर नद-नदन पधारे। उन्हे देख कर यशोदाजी कहने लगी—

"जसोदा—अरे लाला तू आय गयो ! तू तो ऐसो बाबा को लाडलो है गयो है कि दिन और रात खेल्यो ही करे है। अरे लाला, देख अब तू दूर खेलबे मती जायो करे। यहाँ हाऊ आय गये हैं।

दूर खेलन जिन जाउ लाल बन हाऊ आये है।
कृष्ण—तब हँसि बोले कान्ह री मैया किनन पठाये है।।
चार बेद लै गयो सखासुर जल मे रह्यो लुकाऊ।
मीन रूप धरि ताकूँ मार्‌यो तहाँ न देखे हाऊ।

—अरी मैया, देख चार बेदन कूँ लैके सखासुर दानव जल मे जाय दुबक्यौ हौ। वा जल मे कोउ जाय सकै नाय हौ। तब मैया मैंने मच्छी को रूप धरि के वाकू मार्‌यो हौ। अरी मैया हाऊ तो मैंने वहाँ देखे नायँ है।

जसोदा—अरे लाला सखासुर दानव तैंने ही मार्‌यो, और मीन को रूप तैंने ही धर्‌यौ।

कृष्ण—हाँ मैया मैंने ही।

जसोदा—(चौंक कर) तैंने ही ?

कृष्ण (बात को बहलाकर)—अरी मैया नाहै, मोते तो बाबा कह्यो करै है।
जमुना के तट धेनु चरावत जहाँ सघन बन झाऊ।
बैठि पताल ब्याल गहि नाथ्यौ तहाँ न देखे हाऊ।

—अरी मैया, मै जमनाजी के तट पै अपने गैया बछरान कूँ चरायो करूँ हूँ। और पाताल मे पैठ के काली नाग नाथ्यो हौ। हाऊ तो मैंने वहाँ हूँ नाय देखे।"

इसी तरह भगवान् फिर अपने कच्छ, वाराह, नृसिंह, वामन अवतारो के अनुभव बखानने लगे।

बोले—"अरी मैया देख, राजा बलि कू छलिबे के ताईं ब्राह्मण को रूप धारन कियौ है। और वापै तीन पैंड पृथ्वी माँगी ही, सो तीन पैंड मे तीनो लोक नाप लिये हैं, तौ मैया मेरो एक चरन स्वर्ग में गयौ, और एक पताल में गयौ और एक मे ये भूलोक नाप्यो हौ। अरी मैया, हाऊ तो मैंने वहाँ हूँ नाय देखे।

जसोदा (आश्चर्य से)—अरे लाला, कहा बामन रूप तैंने ही धारन कियौ हौ, और राजाबली को तैंने ही छल्यौ हौ ?

कृष्ण—हाँ मैया, मैंने ही छल्यौ हौ।

जसोदा--और लाला ये गगाजी तेरे ही चरन सो निकसी है ?

कृष्ण (बहलाकर)—अरे नाहै मैया, मोते तो बाबा कह्यो करै है ?

जसोदा—हाँ, जब ही तौ कहूँ हूँ कि तू कब को चतुर है। तोहि खेलिबे ते तौ छुट्टी ही नाय मिले है।"

सज्जन मुग्ध होने लगा। पहली लीला का प्रचार एजेण्ट कृष्ण इस हाऊ लीला के रचयिता की लेखनी से सहज मनुष्य बनकर प्रकट हुआ है। यह मनुष्य भगवान् धरती पर आदि काल से अपनी शक्ति का इतिहास बनाता आया है और फिर भी विनयशील है। वह क्रमश विकसित हो रहा है, और फिर भी उसकी माता—मानव की धरती माता—उसे अभी तक बाल रूप मे ही देख रही है। भोली स्नेहमयी मा को यह विश्वास नही होता कि उसका बेटा ऐसी-ऐसी प्रबल पराक्रम भरी घटनाओ का नायक है। मा के लिए बेटा बेटा ही रहेगा।

अपनी मा की याद कर सज्जन की आँखो मे आँसू आ गये। उसने महसूस किया कि दर्शक वृन्द भी उसकी तरह ही इस लीला से आनदित हो रहा है। इस कृष्ण को—निज रूप—को मनुष्य भली भाँति पहचानता है। सर्वशक्तिमान् भगवान् अपने भक्तो को भय मुक्त कर रहा है। माँ भले ही मोहवश अपने लाल को हाऊ से डराया करे, परन्तु वह स्वय अपने को अपने ही भय से मुक्त कर आनन्दमग्न है।

सज्जन सोचने लगा, आज का सर्वशक्तिमान् भगवान् जो अपने ही बनाये हुए एटम हाइड्रोजन बमो से डर रहा है जिस दिन इस हाऊ-भय से मुक्त हो जायगा, उस दिन फिर इसी तरह बाल रूप होकर नव सस्कृति का निर्माण करेगा। कच्छ-मच्छ, वाराह-नृसिह आदि रूप धारण कर विघ्न रूपी असुरो को मारता हुआ जब वह एटमासुर का सहार करेगा, जब फिर मोहमयी धरती जननी के सामने वह सहज भाव से भयमुक्त होकर आयेगा तब किसे अच्छा न लगेगा ? कौन ऐसा होगा जो अपने इस सहज भाव भरे रूप पर मुग्ध नही हो जायगा।

इस भगवान् पर विश्वास करने को जी चाहता है। यह भगवान् आत्म-विश्वास का प्रतीक है।

सज्जन अपनी दिन भर की थकान को हाऊ भय से मुक्त कर नए आवेश, नए भाव से स्फूर्ति लेकर सो गया। उसे एक बार भी कन्या की याद न आई।

सबेरे सज्जन एक मन्दिर के बाहर पत्थर के चबूतरे पर बैठकर 'ज्ञानगुदडी' का स्केच बना रहा था, और कन्या उसे 'निधिवन' मे ढूँढ रही थी। कन्या हठपूर्वक वृन्दावन आई थी। लाला मुरलीमनोहर ने बहुतेरा समझाया कि वृन्दावन भले ही, लन्दन, न्यूयार्क, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली न हो फिर भी वह छोटी-छोटी गलियो, सडको और प्रसिद्ध पौराणिक धार्मिक स्थानो से गँजा हुआ तो है ही। अपरिचित के लिये तो ढूँढना कठिन हो ही जायेगा। किन्तु कन्या न मानी।

कन्या निधिवन मे चारो कोने भटक कर रीते हाथ अपनी खोई निधि को कही और पाने के लिये लौटने लगी। सज्जन को निधिवन मे न पाकर भी वहाँ से असन्तुष्ट नही लौट रही थी। निधिवन एक महान् नादयोगी, तानसेन और बैजूबावरा के गुरू को

तपोभूमि है। रसिकवर ने यहाँ सगीत को सिद्ध कर परम सतोष की निधि को प्राप्त किया था। निधिवन मे आकर ऐसे लगता है कि हम सचमुच उस वृन्दावन मे खडे है जो कृष्ण काल मे भी करीब-करीब इस रूप मे आबाद रहा होगा। सघन कुजो, लताओ, वृक्षो से निधिवन समृद्ध है। कही खडहर, कही तीन-चार वृक्ष मिलकर सघन मडप-सा बना रहे है कहीं करील का काँटा उलझ कर छेड देता है। पछियो का कलरव, बन्दरो की उछल-कूद, एक हिरन के बच्चो की किलोल,—सज्जन के ध्यान मे खोई हुई रहने पर भी निधिवन मे कन्या को शाति मिली।

उदास लौट रही थी, सामने स्वामी हरिदासजी की समाधि पर चश्मा लगाये भस्म रमाये घुटमुन्ड, मुछमुन्ड लँगोटीधारी मस्तमौला साधु अपने बेसुरे स्वर में बडे प्रेम से हरिदासजी का कान्हरा राग में बाँधा गया भजन गा रहे थे।

माईरी सहज जोरी प्रगट भई जो रग की
गौर श्याम घन दामिनि जैसे।
प्रथम हूँ हुती अब हूँ आगे हूँ
रहे है न टरि है तैसे
अग अग की उजराई सुघराई
चतुराई सुन्दरता ऐसे।

श्रीहरिदास के स्वामी श्यामा कुज बिहारी कन्या को लगा कि यह भजन अदृश्य ने उसे आशीर्वाद के रूप में सुनाया है। उसकी और सज्जन की—स्त्री-पुरुष की—सहज जोडी देश काल से परे है। वह नित्य है। उसका अन्त नही।

२४

'पति-पत्नी के रूप मे स्त्री-पुरुष की सहज जोडी देश-काल से परे है। वह नित्य है, उसका अत नही।'

—यद्यपि अपने और शीला के बडे कोमल, बडे मार्मिक नाते से इस समय महिपाल का मन उसी प्रकार घिरा हुआ था जैसे चित्रो में देवताओ का मुखमडल श्रीचक्र से घिरा रहता है, फिर भी सिद्धान्त और न्याय के तौर पर वह अपने और कल्याणी के 'वैध' नाते को महत् सत्य मानने के लिये मजबूर है। और इसी मजबूरी के साथ महिपाल, घर से दो दिन दूर रहने के बाद, कर्नल की कार पर, घर के लिए शीला के घर से लौट रहा है।

साले के विवाह के बडाव्वर में उसके और शीला के प्रेम की कलक-गाथा ने पति-पत्नी के बीच जो चौडी और गहरी मानसिक खाई खोद दी थी, इसमें इन दो दिनो में महिपाल ने गहरी डुबकियाँ खाई हैं। वह और शीला—वह और कल्याणी—महिपाल शुक्ल अब दोहरे बंधनों में नही रह सकता। इस द्वन्द्वात्मक जीवन में उसका कोई रूप

भी साफ-साफ उभर नही पाता है ।

सुबह—अब से घटा सवा घटा पहले—कर्नल जब उसे ले जाने के लिए शीला के घर पर आया था उस समय महिपाल का मन पिघले हुए गर्म मोम का सागर बनकर एक बार ज्वार की तरह उमडा , फिर कुछ पलो के तीव्र ज्वार के उतार के बाद फर्लांगो पीछे हटकर करुण मर्मर करने वाले समुद्र की तरह गिडगिडाहट से भर गया था । वह जानता था कि उसे शीला का घर छोड कर अपने घर जाना ही पडेगा । महिपाल अपने आप मे उसी प्रकार अनुभव कर रहा था, जैसे लडकी पीहर से ससुराल जाते समय करती है । वह जानता था कि गए बिना उसकी आन गति नही । पति-पत्नी की सहज जोडी दुनिया मे रहेगी ही । वह नित्य है । उसका अत नही । सस्कार युक्त, ऊर्ध्वचेता महिपाल इस सत्य से मुँह कैसे चुरा सकता है ?

दो दिनो तक घर से मुँह चुरा कर, सन्यास और विलास के झूले पर अपने अतृप्त अनबूझे विद्रोही मन को झुलाकर कर्नल के साथ वह उसी तरह लौट रहा है जैसे घर से रूठ कर भाग जाने वाला लडका गिरफ्तार होकर लौट रहा हो ।

चलते समय शीला ने सूनी पथराई हुई दृष्टि से उसे देखा था । महिपाल को ऐसा लगा मानो पहाड की सुरग मे न दिखलाई पडने वाला विकल झरना बह रहा है । उसका मन खामोशी के इस्पाती सदूक मे अपने आपको बदकर हुडक-हुडक उठा । और यही हुडक क्रमश जम कर उसकी सैद्धान्तिक पीठिका बन गई । महिपाल घूम-फिर कर फिर अपनी बात पर आ गया—पति-पत्नी का नाता नित्य है, अनन्त है, अभेद्य है ।

• •　　　　•　　　　• •

कर्नल के दवाखाने के पीछेवाले हिस्से में, कन्या के कमरे मे कल्याणी अपने छोटे लडके तपोधन के साथ बैठी थी । कर्नल ने उसे वहाँ बुलाया था । इन दो दिनो के तप ने कल्याणी को निखार दिया है । गहरी वेदना से अभिभूत उसका गभीर शात-अशात चेहरा ताजा नहाया हुआ-सा लगता है । तपोधन कुर्सी पर बैठा-बैठा टाँगे हिला रहा है ।

कसे हुए चेहरे के साथ महिपाल ने उस कमरे में प्रवेश किया, कर्नल उसके पीछे था । कल्याणी और महिपाल की नजरें एक बार मिले बिना रह न सकी । दोनो ने ही उतावली के साथ नजरे हटा ली—निमिषमात्र में ही दोनो ने नये सिरे से अपनी अभेद्यता को पहचान लिया, परन्तु मन के विरोधो ने आपस में मुँह फेर लिया । कल्याणी ने सिर झुका लिया, महिपाल सिर घुमाकर तपोधन को देखने लगा ।

बच्चा सिकुडा सकपकाया हुआ बैठा था । पिता को अपनी ओर देखते देखकर उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । जैसे शेर के सामने आ जाने पर भय की मोहिनी से इसान की नजरें बँध जाती है, भयभीत तपोधन उसी तरह टकटकी बाँध कर अपने पिता को देखने लगा । पिता का स्नेह अपने बच्चे से विमुख न हो पाया , मन झुक गया, आँखो में ममता झलक पडी । पिता महिपाल अपने बच्चे की उपस्थिति में विलासी महिपाल को क्षमा करने में असमर्थ हो झिझक से भर उठा—"ये—मेरे—सब बच्चे—एक अन्य स्त्री के साथ मेरे सबध को अपने मन मे किस दृष्टि से देखते होगे ?"

पुराना सवाल बहुत नया, नोकीला होकर अनी-सा उसके मन में चुभने लगा ।

महिपाल को तपोधन की उपस्थिति से लज्जायुक्त अनखनाहट महसूस हुई। उसे दबा कर ललक के साथ वह आगे बढा, तप्पू के रूखे बालो पर हाथ फेर कर बोला—"आज स्कूल नही जाना—क्यो रे ?"

"जी, अब जाऊँगा।"

बेटे के सिर पर हाथ रक्खे बेरुखी से नजरे उठाकर अपनी पत्नी से पहली बात—पहला सवाल किया—"बच्चे क्या आज भूखे स्कूल कॉलिज जायेंगे ?"

कल्याणी पहले चुप रही। कौतूहल का क्षण महिपाल के लिये बहुत बडा हो गया। अधीर होकर वह अधिक क्रोध प्रकट करने वाला ही था कि कल्याणी अपने दाहिने पैर की बिछुए वाली उँगली और अँगूठे को सिकोड उसी तरफ दृष्टि रखकर बोली—"रज्जो अउ सकुन्तला बनाय रही हैं। तप्पू, घर चलौ। हम अबहे आइति हयि।"

"हाँ बेटे, चलो, हम लोग आते है।"

जाने से पहले सात वर्ष के बालक तपोधन ने एक बार मा को, फिर अपने पिता को देखा—इतनी झलझलाई हुई दीन दृष्टि से देखा मानो कह रहा हो—"मेरी मा को मत सताइएगा।"

तपोधन के वापस जाने के बाद कमरे में कुछ पलो के लिए मौत का-सा सन्नाटा छा गया, कल्याणी सिर झुकाए बैठी रही, महिपाल का सिर भी नीचा ही रहा, कर्नल दोनो को खोई हुई दृष्टि से देखता चुटकी से अपने निचले होठ को धीरे-धीरे खीचता रहा।

महिपाल ने अचानक बात उठाई, कर्नल से पूछा—"ये लोग मथुरा से कब तक वापस आयेंगे ?"

"कल नही तो परसो सबेरे आ ही जायेंगे। बिन्नो सिर्फ चार दिन की छुट्टी लेकर गई है।"

इसके बाद फिर पल भर का सन्नाटा छाया। कर्नल ने एकाएक कल्याणी की ओर देखकर कहा—"भाभी, अब बीती बातो को दिल से निकाल दीजिये। बात अब सिरफ आप दोनो के शिकवे-शिकायत या लडाई की नही है, सवाल तो यह है कि जवान-जवान बेटे बेटियाँ हैं। उन पर क्या असर होगा ? अब आप को यही सोचकर गंभीरताई से काम लेना चाहिये भाभी।"

"ये ? इस जन्म में क्या, चौरासी हजार जन्मो में भी इस बात को नही सोचेंगी। इनकी तो ये आन है कि जिस बात को मैं मना करूँ उस बात को ये दस लाख बार दुहरायेंगी, वरना गिगासौं के पाँडे की बिटिया की नाक न नीची हो जाय। इससे—"

"महिपाल, अब तुम चुप होते हो या नही ? मैं कहता हूँ इतने बडे लेखक—"

"भाड मे गया लेखक। लेखक साले की कोई कदर है ?—घर तक में नही। जिस दिन—जिस दिन इनकी चूडियाँ फूटेंगी, उस दिन इन्हे मालूम होगा कि मैं कितना बड़ा लेखक था।" कह कर वह तेजी से कमरे के बडे-बडे चक्कर काटनें लगा।

कल्याणी सिर झुकाये बैठी रही।

कर्नल ने फिर बात उठाई, कल्याणी से बोला—"महिपाल ने आपके साथ बहुत

ज्यादती की है भाभी—मैं इनके मूं पर कहता हूँ। पर ये आपकी बेहद कदर करते है।—ये बात भी इनके ही सामने मैं आपसे कह रहा हूं। "

विलासी महिपाल के अपराधी मन को अपने न्याय पक्ष का समर्थन मिला। उत्तेजित होकर बोला—"तुम क्या, ब्रह्मा आकर समझायें तब भी ये नही मानेगी कि मै इनकी कद्र करता हूँ। अरे, समझाने की बात ही जाने दो। मेरे आचरण से इन्हे नही सूझता। मेरी चीख-चिल्लाहट तो इन्हे दिखलाई देती है, पर मै जो इनका आदर करता हूँ, इन्हे जो बल देता हूँ उसे ये कौडी की मोल भी नही मानती। और मानें कैसे, इनका खयाल तो ये है कि—कि मुझमे कोई अच्छाई है ही नही। ये समझती है कि मैं इनका शत्रु हूं। (दाँत पीसकर) जाहिल! अकल की लट्ठ।—"

"महिपाल!"—

"इस औरत ने मेरा जीवन नष्ट कर दिया जी। कभी मेरी बात न सुनी। कभी मुझे समझने की कोशिश नही की कि आखिर ये आदमी क्या चाहता है—क्या कहता है—"

"अच्छा, अब हम कहते है कि—"

"कर्नल, मै इस समय उत्तेजित जरूर हूँ पर नाराज नही हूँ। मैं अपने जी की सब बातें इनकी मौजूदगी मे तुम्हारे सामने रख दूंगा। अब—अब मेरी इकतालीस बयालिस की उमर होने को आई। अल्हड जवानी नही रही कि लड-भिड कर सब भूल जाऊँ। अब मुझे थकान चढती है। मुझे भी बल चाहिये। मैं अधिक से अधिक यही आठ-दस वर्ष मेरे काम करने के हैं। जीवन मे कुछ न मिले न सही, पर मै शाति चाहता हूँ। और ये औरत मुझे अशान्त करती है—"

"तौ इनसे कहि दीजिये भाई साहेब अकि वही जायँ जहाँ इन्हे साती—

"देख लो! देख लो कर्नल"—

"मै कहता हूँ, तुम चुप रहो महिपाल!" कर्नल ने जोर से डाँट कर कहा, फिर आवाज को नीची सतह पर लाकर बोला—"भाभी से मुझे बात करने दो। और खबरदार जो बीच मे जरा भी बोल तो! हाँ भाभी, देखिये बात जरा पेचीदा है। मुझसे अगर कोई चूक हो जाय तो बुरा मत मानियेगा—मैं पहले से ही माफी मागे लेता हूँ—देखिये महिपाल को समझने मे आप गलती करती है। ये मै मानता हूँ कि महिपाल मे बुराइयाँ है, पर ये भी आपको मानना पडेगा कि इनके जैसे औला दौला, दिल के साफ इसान आपको फी जमाना इक्के-दुक्के ही देखने को मिलेगे। मैं बिलकुल भी झूठ नही कह रहा हूँ भाभी, दूकानदार दुनियादार आदमी हूँ, दस तरह के लोग नित मेरी नजरो में आते है। अपना आदमी है, इसलिए कदर नही होती, मगर इनके गुन औ' जो जोग्गता के आगे मैनें अच्छे-अच्छो को सिर नवाते देखा है।"

उँगलियो मे जली सिगरेट दबाए, सिर झुकाए महिपाल कुर्सी पर सीधा बैठ कर तल्लीन भाव से आत्म-प्रशसा सुन रहा था। इस समय कर्नल के उपकार से वह बँधा जा रहा था। कर्नल कह रहा था—"महिपाल जैसे लेखक की कदर तो भाभी विलायत मे ही हो सकती है। इनके जैसे आरटिस्ट इण्टिलिक्चुअल को ऐसी-ऐसी मुसीबतो का

सामना करना पडता है। ऐसे आदमी मे अगर एकाध कोई कमजोरी हो भी तो मेरी राय मे उसे छिमा कर देना चाहिये।"

कर्नल चुप हुआ। कमरे में सन्नाटा छा गया। तीनो के सिर विचारमग्न मुद्रा में झुके रहे। कर्नल बाँये हाथ की उँगली मे पडी हुई नवरत्न की सुन्दर जडाव वाली अँगूठी को दाहिने हाथ से इधर-उधर घुमाने लगा। दाहिने हाथ की उँगली में बडा-सा लहसुनिया फब रहा था। कर्नल ने हल्के से खखार कर फिर कहना शुरू किया—"मै ये नही कहता कि महिपाल को आप कुछ न कहे, मगर जो कुछ भी कहना-सुनना करे वो इसका मूड देखकर। अब आप ही सोचिये, जवान-जवान लडके-लडकियो के आगे आप दोनो की आपसी रंजिश का कारन खुल गया। जमाना कैसा खराब जा रहा है ये तो आप जानती ही हैं। कुँवारे लडके-लडकियाँ है, जरा से मे हाथ से बेहाथ हो गए—"

"ये ही वजा से हम इनको कहती हैं, भाई साहेब, और कोई वजा नही है।" इतनी देर के बाद कल्याणी का कंठ फूटा। महिपाल के भँवो की कमाने चढ गईं, पुतलियो को तिरछी घुमा पत्नी को इस तरह घूरकर देखने लगा, मानो हिप्नाटिज्म की कोई क्रिया कर रहा हो। कल्याणी उत्तेजित किन्तु सधे हुए स्वर मे बोल रही थी—"हम सब कुछ सह सकती हैं, मुल ऐसी बुराई-बदनामी की बाते जो इन्हे करनी होय तो इनसे कहिये, हमें थोडा-सा जहर लाय के पहले दै दें। हम अपाने घर में किसी की खोट नही बरदास कर सकेंगी, चाहे इनकी होय चाहै लडके बिटियो की होय।" कल्याणी के चेहरे पर तेज चढ़ आया था।

यह तेज महिपाल के मन का आदर्श है। इस आदर्श को वह बहुत इच्छा करके भी अपने प्रत्यक्ष जीवन में न पा सका। कल्याणी का हठी और उजड्ड स्वभाव ही इसका एकमात्र कारण है। 'इसने कभी मेरे कलाकार साहित्यिक व्यक्तित्व को प्रेरणा नही दी। सदा मेरा विरोध किया। पतिव्रता, तपस्विनी, तेजस्विनी है तो क्या हुआ, ये—चरम परम घोर अन्यतम वज्र मूर्खा है।' शब्दो और विचारो की छायाएँ सैलाब की लहरो सी दौडती निगल गईं, शेष क्रोध भरी जडता का दलदल रहा जिसमें उसका दिमाग अटक गया। गरज कर बोला—"मैं तुम्हारे बाप का दबैल नही हूँ, समझी। तुम्हे दस लाख बार गरज हो तो मेरे साथ रहो, अन्यथा मैं तो एक क्षण के लिए भी तुम्हे बर्दाश्त करने को तैयार नही—अहंकारिणी, स्वार्थी, नीच!"

कर्नल ने उठकर फौरन उसके मुँह पर हाथ रख दिया, दबे स्वर में झिडकते हुए उसने कहा—"महिपाल! महिपाल!" महिपाल उसके हाथ से हल्का-सा जूझ कर मुक्त हो गया। कर्नल का झिडकना जारी रहा, बोला—"हम कहते हैं सिडी हो गए हो क्या? बस जी, अब हम समझ गए। सारा दोष तुम्हारा है।"

"क्या बकता है?" महिपाल ने कर्नल को भी तुच्छ बनाना आरंभ किया। कर्नल महोदय का मूड इस समय ऐसा कांटे-तोल सधा हुआ है कि वे धोखे से भी किसी प्रकार की तुच्छता के पास फटक ही नही सकते। और कर्नल महोदय जब ऐसे मूड में आ जाते हैं, तब दो लडने वाली पार्टियों में समझौता होकर ही रहता है वरना फिर एक पार्टी को कर्नल से मोर्चा लेने के लिए तैयार होना पडता है। लाला नगीनचंद जी उर्फ कर्नल साहब

ने न जाने कितने नाते-रिश्तेदार और मेल-जोल के घरो म चूल्हे को फूटने से बचाया है। दबगियत से उँगली उठाकर कहा—"देखो जी, ये झूठा रौब मत झाडो इस वक्त, समझे। मै एकदम सीरियस मूड मे हूँ—इस दम मै न तो तुम्हारा हूँ और न भाभी का। जो मुझको सच जँचेगा वही कहूँगा। और मैं फिर कहता हूँ, सारा दोष तुम्हारा है। तुम भाभी जैसी सती के पैर की धोवन भी नही हो साले, इटिलिक्चुअल चाहे जित्ते बडे हो।"

महिपाल को लगा जैसे कर्नल ने अचानक वो कुर्सी खीच ली, जिस पर कि वह बैठा है। सज्जन की मौजूदगी में यदि कर्नल ने इतनी साफ बाते कही होती तो वह उन्हे दूसरी दृष्टि से देखता, पर इस समय कल्याणी के सामने कर्नल की ये फटकार उसे बडी अखरी। वह अपनी लडखडाहट को सम्हालकर, अपने आपको कस कर, कर्नल के ऊपर गहरा प्रहार कर अपनी पत्नी की दृष्टि में विजेता होने की तैयारी पर आ ही रहा था कि तब तक कर्नल ने एक बडा चुभता सत्य कहकर उसकी जबान बन्द कर दी। कर्नल ने कहा—"तुमने अपने लेखकपने में इसानियत चाहे जितनी पहचान ली हो, पर इसान को तुम अब तक न पहचान सके! माना कि भाभी हठी हैं, पर तुम तो मूर्ख हो मूर्ख! तुम इत्ते बरसों साथ रह के उनके मन का भाओ नही पहचान पाये, और म समझ गया। ये जितनी शुद्ध विचारो की पवित्र देवी हैं उतना शुद्ध बिचारो का जो भी कोई होगा वो किसी किस्म की गदगी बरदाश्त नही कर पायेगा बाबूजी। अब आप ही हैं, जिस हद तक आपके इटिलिक्चुअल विचार ऊँचे उठ है उस हद तक आपको जो किसी की गदगी नजर आती है तो आप नही बमक उठते जनाब? सैकडो बार तो मैंने ही आपको देखा है।"

रोगी मनुष्य को जैसे कभी-कभी शुद्ध वायु नुकसान कर जाती है, उसी तरह कर्नल की बातो का महिपाल पर असर हुआ। उसके अन्दर का सत्य उभरा किन्तु सतुलित शात भाव से नही, वरन् विद्रोही होकर। उसने सिर उठा तमक कर कहा—"मै जानता हूँ, बल्कि नि सकोच हरेक के सामने कह भी देता हूँ कि कल्याणी मुझसे अधिक एकनिष्ठ है। मैंने भी सत्रह-अठारह वर्ष एक पत्नीव्रत धारण कर शुद्ध निष्ठा से बिताये हैं, अब भी इनकी (कल्याणी की) वज्रमूर्खता से घोर घृणा करते हुए भी इनके लिए मेरे हृदय मे प्रेम भरा पूज्य भाव है। पर चाहे जो कहो कर्नल—आज मै कल्याणी के सामने भी बेझिझक कहूँगा कि शीला और अपने प्रेम मे मै कोई गदगी नही पाता। और मै उससे नफरत करूँगा जो—जो मेरी शीला से नफरत करेगा!"

'मेरी' शब्द पर जोर था, उस शब्द ने अपना काम किया, कल्याणी अदर ही अदर फूल उठी, परवशता घुटी निसाँस बनकर प्रकट हुई, कल्याणी की आँखे तिरछी घूम कर अपने पति को इस तरह देखने लगी मानो कह रही हो, तुमने मुझे धारोधार डुबो दिया। तुमने ये क्या कह दिया?

महिपाल ने उत्तेजना मे बात कह कर फिर तुरन्त चोर की तरह अपनी पत्नी की ओर ताका। तभी कल्याणी ने भी उसकी ओर शिकायत, पराजय और करुणाभरी दृष्टि मे देखा। नजरें मिलना फिर घातक सिद्ध हुआ, महिपाल इस समय सत्य से सत्रस्त था। "पति पत्नी का बधन अटूट है, अनत है। मै इसको तोडूंगा। स्त्री-पुरुष का प्रेम महा बंधन है; स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी हो या न हो। कल्याणी सती है तो बनी रहे। हम पतित

होकर भी महान् हैं। शीला मुझे प्रेरणा देती है, मैं शीला के प्राणो में बसता हूँ। सामाजिक दृष्टि मे यह भले ही अनैतिक हो—समाज साला हमारे प्रेम के आगे क्या वस्तु है ?"

महिपाल एकाएक उत्तेजित भाव से खडा हो गया, कर्नल से बोला—"कर्नल, आई एम गोइग। इनसे कह दो, अपनी कमाई में अब से पिछत्तर रुपए निजी खर्च के लिए काट कर बाकी तुम्हारे जरिये इन्हे हर महीने भेजता रहूँगा।"

महिपाल दरवाजे की ओर बढा, कल्याणी और कर्नल दोनो ही सकपका गए। कर्नल ने पूछा—"क्या अब से शीला के यहाँ ही रहोगे ?"

प्रश्न सीधे भाव से पूछा गया था, पर महिपाल को ताना-सा लगा, चिढ कर बोला —"मैं औरतो के पैसे पर जीने वाला कुत्ता नही हूँ।"

"तुम्हार दुस्मनौ यू कलक नाही लगाय सकत है।" अपने सर्वस्व को जाते देखकर कल्याणी के हाथो के तोते उड गए, हडबडा कर आगे बढी, फिर कर्नल का खयाल आया, रुक गई और अपने को सयत करते-करते भी सम्हाल न पाई, बोली—"तुम चले जैहौ तो हम लरिकन ते का कहब ? दुनिया का कौन मुँह दिखाउब ?"

"काहे ? तुम सती, देवी हउ। तुम्हार तौ सब पूजा करिहैं। दुनिया थुकिहै तो हम पतितन—"

"आज सकुतला का द्याखै अइहैं मुरादाबाद वाले। हम एही खातिर इन भाई साहब के पठवा रहै तुम्हरे पास।"

महिपाल की उत्तेजना, विचारधारा, मानसिक प्रण और योजनाएँ यह सुनते ही तिरोहित-सी होने लगी। पत्नी, प्रेमिका और प्रेम, यह सब जवानी भरी समस्याएँ नई पीढी का जिक्र आते ही उस चोर की तरह अपने को छिपाने का प्रयत्न करने लगी जिसके चोरी करते समय ही उस स्थान पर घर मालिक आ गए हो। महिपाल ने फिर अपने आप को हठपूर्वक कसा। कहा—"अब कोई आए, मेरा तुमसे कोई सबध नही रहा।"

कर्नल आगे बढ कर बोला—"बचपना कर रहे हो, महिपाल! इनसे तुम लड सकते हो, मगर बच्चो से लडकर कहाँ जाओगे। अब बहुत हो गया। जाओ, दो दिन से तुम्हारे घर मे क्या हालत हो रही है सबकी, इसका अदाज तुम्हे नही है।"

"और इन दो दिनो तक मेरे दिल पर क्या-क्या बीती है, इसका अदाज तुम्हे भी नही है। पर मैंने यह तय कर लिया है, कर्नल कल्याणी से मेरा समझौता नही हो सकता।"

"देखो—"

"देखो-वेखो कुछ नही। चौबीस बरस जिस स्त्री के साथ मैंने बिताये, और चौबीस बरसो मे जो स्त्री मुझे समझ नही सकी, उसके साथ अब कोई सम्बन्ध रखने को जी नही चाहता।"

"आखिर कही रहोगे न। शीला के यहाँ तो रहोगे नही। ऐसे मौके पर मेरे या सज्जन के यहाँ भी तुम रहने से रहे—"

महिपाल के मन में गोमती किनारे के उस शिवाले का चित्र आ रहा था जहाँ उसने परसो की रात बिताई थी। शिवाला आध्यात्मिक सतोष के साथ उसे अपने लिए इस समय

सबसे सुन्दर आश्रय-स्थल लग रहा था। शिवाले का ध्यान आते ही कल्याणी और शीला दोनो ही अपनी पूरी समस्या को लेकर उसके मन से निकल गई। एक नई स्फूर्ति से उसका मन भर गया। वह बोला—"मेरे जैसे साहित्यिक के लिए रहने को महल-दुमहले नही चाहिए। तीन गाँठ कौपीन में बिन भाजी बिन लौन—"

कर्नल उसे समझाते हुए बोला—"वह तो मै जानता हूँ। मगर अब मेरी भी मान लो। जाओ, घर जाओ। लडकी का रिश्ता आया है। यह बेचारी कल से बहुत परेशान थी। मैं तो सच पूछो तुम्हे लाने-बुलान के फेवर मे नही था। जानता था, जब तुम्हारा मूड ठीक हो जायगा तब उचित-अनुचित को समझ कर तुम आप चले जाओगे। पर भाभी बेचारी इतनी परेशान थी कि—चलो इस बहाने भाभी के दर्शन तो हो गए। अब कभी तुम्हारे घर जाऊँगा तो परदे की कैद नही रहेगी। किचन में—" कर्नल जानबूझ कर बातो को हलके रस मे वहा ले जाने का प्रयत्न करने लगा।

कल्याणी के चेहरे पर सतोष की झलक दिखलाई पडने लगी।

कर्नल अपनी वाग्धारा को तोड कर पल भर रुका, फिर नये सिरे से बात चलाते हुए बोला—"अच्छा भाभी, यह बताइये आप हम म्लेच्छों के यहाँ चाय-वाय पी लेती है या नही? खैर, न पीती हो तो कोई हर्ज नही, पर मिठाई खाये बगैर न जाने दूँगा। मैं अभी आया।" कहकर कर्नल तेजी से कमरे से बाहर चला गया।

पति-पत्नी दोनो को एकात मिला। कल्याणी ने खुल कर सकरुण दृष्टि से अपने पति की ओर देखा। महिपाल उस दृष्टि का सामना नही कर पाया। उसे आज का समझौता अब तक रह-रहकर अखर रहा था। इस समय अकेले में कल्याणी के सम्मुख वह कुछ-कुछ उसी प्रकार अनुभव कर रहा था जैसे हारे हुए राजा पुरु ने विजेता सिकदर के सम्मुख अनुभव किया होगा।

घर लौटते समय महिपाल के मन की हालत अजीब-सी हो रही थी। दो रोज तक बाहर रह कर उसे अपने बच्चो का सामना करने से अत्यधिक सकोच अनुभव हो रहा था। जवान-जवान बच्चे हैं। जितना ही अधिक उसे इस बात का ध्यान आता उतना ही उसे कल्याणी पर क्रोध चढता। घर आकर वह घर के अदर न जा सका। बैठक के दरवाजे में बने हुए लेटर बाक्स की जाली से उसे डाक झाँकती दिखाई दी। कल्याणी से कहा—"बैठक की चाबी हमें दे जाओ। और तुम्ही दे जाना।" तब तक महिपाल गली में ही टहलता रहा। एक पडोसी महाशय अपने घर जाते हुए नजर आए। नमस्कार-चमत्कार हुआ। पडोसी सज्जन बडे लहके से पूछने लगे—"कहिए पडित जी। वोट किसे दे रहे है आप?"

"भाड में जाय वोट! मै तो इन सब से नफरत करता हूँ।"

पडोसी महाशय को इस बात से सतोष न हुआ। मुँह बनाकर बोले—"हाँ, सो तो है ही मगर हम तो सुन रहे थे कि आपने, कर्नल साहब वगैरह ने कम्युनिस्टो को बैक करना शुरू किया है। उस दिन हवाई जहाज वाला पर्चा तो बडा जोरदार रहा आपका। जिसने पढा उसी ने कहा कि ऐसा गजब का पिरपोगेंडा तो किसी पार्टी की तरफ से भी नही हुआ। हमने तो कह दिया पडितजी कि यह सब हमारे पडितजी की ही माया है। कोई ऐसा जोरदार लिख ही नही सकता। हे-हे-हे!"

महिपाल को बडी चिढ हो रही थी। परन्तु वह मजबूर था। कल्याणी उसी समय दरवाजे के पीछे दिखाई पडी। उसने किसी तरह पडोसी महाशय से अपना पीछा छुडाया। कल्याणी ने जाने से पहले कहा—"अब तुमहूँ नहाय-खाय लेओ।"

महिपाल ने कहा—"लडको को खिला दो।"

"उइ तो सब लोग गए। खाली तप्पू है, रज्जो है और सकुतला है।'

"क्यो ?"

"अब सकुतला का तौ जाये ते रोकै लिया। रज्जो, हम स्वाचा कि हमार हाथ बटाय लेहै तौन—"

महिपाल ने कुछ न कहा। बैठक खोल कर अदर चला गया। लेटर-बाक्स मे दो पत्र और एक पत्रिका मिली।

कल्याणी चली गई थी। रज्जो शकुतला आदि के घर मे रहने के कारण महिपाल का अदर जाने का हियाव नही पड रहा था। पत्रिका नई थी। बडी सजधज के साथ निकली थी। पत्रो मे दोनो लिफाफे थे। एक आल इडिया रेडियो की मोहर लगा हुआ, दूसरा कोई और। महिपाल पत्रिका मे अपना मन रमाने लगा। तस्वीरे-ही-तस्वीरे थी—पढने लायक मैटर बहुत ही थोडा था। महिपाल ने काफी समय उसी मे गुजार कर फिर रेडियो का लिफाफा खोला, एक टॉक का काट्रैक्ट था। टॉक एक सीरीज मे आयोजित की गई थी। सीरीज का नाम था 'चौथा महायुद्ध' और उसके अतर्गत महिपाल के लिए प्रस्तावित वार्ता थी—स्त्री-पुरुष मे। महिपाल हँस पडा। चौथा महायुद्ध होगा—मुख्यत स्त्री-पुरुष मे ही होगा, क्योकि दुनिया से आर्थिक असमानता हट जाने पर मनुष्य के सामने फिर स्त्री-पुरुष की समस्या ही सब से अधिक महत्त्वपूर्ण समस्या बनकर आयेगी। टॉक मजेदार रहेगी, महिपाल ने सोचा। दूसरे पत्र का लिफाफा इसी सोच मे खुल गया। "अखड सौभाग्यवती छोटी को भैया का आशीर्वाद—" कल्याणी का पत्र था, धोखे से खुल गया। महिपाल आम तौर पर अपने घरवालो के पत्र खोल कर नही पढता, परन्तु इस समय न जाने कैसी रौ आ गई और वह पत्र पढ गया। उसका खून खौल उठा। कल्याणी ने अपने भाई से कुछ रुपये उधार मँगवाये थे जिसके उत्तर में उन्होने लिखा था कि इस समय हाथ तग है, इसलिए मदद करने से लाचार है। बाकी पत्र में अपना रोना रोया गया था। महिपाल के बडे साले ने अपनी बहिन को लिखा था कि पिता के किसी असम्मानजनक व्यवहार के कारण वह अपने छोटे भाई की बारात मे लखनऊ नही गया। बारात का हाल-चाल बहिन से लिख भेजने का आग्रह किया था। अन्त में एक वाक्य था—"और हमारे लेखक महाशय का क्या हाल-चाल है ? आजकल आर्टिस्टी का धन्धा कुछ नरम पड गया है क्या ?"

पढना था कि महिपाल क्रोध से दीवाना हो गया। उसका रोम-रोम क्रोध से खडा हो उठा था। ये ऐसा आवेश था जिसमें अप्रत्यक्ष तौर पर मन में प्रतिहिंसा की भावना पूर्व निश्चित और सुशान्त भाव से क्रोध की लगाम साधे, इसान के होश को बिल्कुल ही दूसरे व्यक्तित्व में बदल देता है, उसके चेहरे की चेष्टा भी बदल जाती है। महिपाल बैठक खुली छोड, दहलीज, दालान, आँगन, लाँघ, जीने चढ कर बडे कमरे मे गया।

वहाँ तप्पू बैठा अपनी फटी पतग को जोड रहा था। बाप के रूप को देख कर सकबका गया। महिपाल उसे सामने होते हुए भी नही दिखाई दिया। छज्जा पार कर चौके वाले कमरे मे जाने से पहले ही चहल-पहल सुनाई पडने लगी। कल्याणी कह रही थी—दरवाजे के पाछे रह्यो। जैसने हम पान—मुँह की बात मुँह मे ही रह गई शकुन्तला मामी के सामने पीछे पीढे पर बैठी हुई आन वाले मेहमान के लिये अनार के दाने निकाल रही थी। रज्जो खुले सिर माँ के सामने बैठी हुई कपडे से चाय का सैट पोछ रही थी। कल्याणी मिठाई का दोना खोल कर अलग-अलग मिठाइयो के टुकडे चाँदी की छोटी-छोटी नक्काशीदार तस्तरियो मे सजा कर रखते हुए लडकी भाजी को आदेश दे रही थी, साल भर का बच्चा पास ही मे बैठा कटोरी में लोटे को रखने का भरसक प्रयत्न कर रहा था। महिपाल के दरवाजे पर आते ही सब के लिये मानो काल आ गया। महिपाल को कल्याणी के अलावा इस समय और कोई दिखलाई नही दे रहा था। उसके हाथ मे खुली चिट्ठी थी, चेहरा, आवाज कसी हुई कर्कश। उसने कल्याणी से कहा—"मेरे साथ आओ।" कहकर महिपाल लौट गया। —कल्याणी पति की सूरत देखते ही काठ हो गई। तुरन्त हाथ धोकर पति के पीछे-पीछे भागी। उसका कलेजा धडक रहा था।

तिखडे पर एक बडी सी कोठरी थी। भीड-भाड से बचने के लिए महिपाल यही बैठ कर काम करता है। कल्याणी के आते ही महिपाल ने कोठरी बन्द कर ली। फिर उसके सामन आकर, उसकी सकपकाई आँखो मे अपनी खूनी आँखे सीधी गडाकर पूछा—"तुमने अपने भाई से रुपए माँगे थे ?"

कल्याणी प्रश्न सुनते ही इतनी सहम गई कि हाँ-ना कुछ कहते न बना। महिपाल ने फिर पूछा—"बोलो, रुपए क्यो मँगाए थे ?"

"पिछले महीना मा तुम कह्यो रहै अकि किताबन की राइल्टी देर मा अइहै। छटकऊ की बरात सहरै माँ आ—"

"छुटकऊ की बरात शहर में आती या जगल में जाती, मगर तुमने रुपए क्यो मँगाये। तुम बाहर वालो के सामने मेरी बदनामी कराती हो ?"

"ददुआ ते माँगे में—"

"ददुआ हो या कोई साला हो, तुमने बगैर मुझसे पूछे किसी से रुपए माँगे ही क्यो ? तुमने मुझसे क्यो नहीं कहा ? तुमने मुझे बाहर वालो की नजरो में जलील क्यो किया ? बोलो !"

"गल्ती भई। ददुआ—"

"ददुआ की सगी !" तड से पूरे हाथ का तमाचा कल्याणी के गाल पर पडा। छ. बच्चो की माँ, अडतीस वर्ष की प्रौढा गृहिणी शारीरिक और उससे अधिक मानसिक चोट खाकर हक्का-बक्का हो गई। "हरामजादी, तूने मेरी इज्जत खाक में मिला दी। हरामजादी तू सती बनती है ! तू—तू—तू—"

राज्यश्री दरवाजे के बाहर कान लगाए खडी थी। पिता का खूख्वार चेहरा देख कर उसे तथा शकुतला दोनो को ही लडाई का शक तो हो ही गया था। वे तथा सब समझदार बच्चे इसका कारण—डा० शीला से अपने पिता का प्रेम नाता—भी जान ही चुके

थे, इसलिए रज्जो अपना कौतूहल न दबा पाने के कारण कान लगाकर सुनने के लिए ऊपर भाग आई थी। माँ की चीख, पिता का धुडक कर कहना, "चुप ! खबरदार जो बाहर आवाज गई तो।" फिर माँ का रुदन-क्रदन भरा अस्पष्ट स्वर, फिर दबी चीखे, साँसे घसीट-घसीट कर रोना, पिता की अस्पष्ट गालियाँ, घुडकियाँ, धक्का-मुक्की, पटकनो, घूसो के धमाके—राज्यश्री आतक से पत्थर हुई, फिर तडपी, फिर आँसुओ से उत्तेजित होकर जोर-जोर से दरवाजे पीटते हुए चीख उठी—"पिताजी ! पिताजी ! खोलिये ! खोलिये ! माताजी को मत मारिये ! पिताजी शकू जीजीऽऽ "

आँसुओ से घुटा हुआ हिस्टीरिया की चीख-सा मर्मान्तिक स्वर गूँज उठा।

दरवाजा तुरन्त खुल गया। कल्याणी ने ही द्वार खोला था। राज्यश्री माँ से इस तरह कसकर चिपट गई। कल्याणी जो दरवाजा खोलने से पहले ही अपने आपको काफी कठोरता से सयत बनाने का प्रयत्न कर रही थी, बेटी के यो चिपट जाने से अपने आप को सम्हाल सकने में विवश हो गई। महिपाल मुँह फेर कर खडा हुआ था, उसकी हिसा और उसकी लज्जा आपस में गुँथ गई थी और बेटी के सामने लज्जा शक्तिशालिनी हो गई थी।

इतने में शकुतला भी अनामिका को गोद में लिए हुए आ गई।

आँसू पोछ कर गला साफ करते हुए कल्याणी ने लडकियो से कहा—"चलो, हम आय रहे हन।"

लेकिन लडकियाँ वहाँ से न हटी। महिपाल अचानक दरवाजे की ओर बढा। रज्जो और कल्याणी छत पर आ गयी। महिपाल ने आगे बढकर कल्याणी के पैर छुए—"मुझे क्षमा कर दो।" उसने लडकियो से भी यही कहा, और नीचे चला गया। घर से बाहर चलता चला गया। हलचल भरी सडके, कचहरी कम्पाउड, शाही फाटक, सब पीछे छूटते चले गये। आगे पुरातत्व-सग्रहालय था। महिपाल म्यूजियम के सूने पोर्टिको के एक जीने पर इस तरह से जाकर बैठ गया मानो विगत वैभव के सग्रहालय मे उसके खडित व्यक्तित्व को भी शरण मिल गई हो।

एक घुटी हुई लबी साँस दो टूक होकर कलेजे से निकल गई। उसका मन रात के सूने चौराहे-सा साँय-साँय करने लगा। पाप-पुण्य ! धर्म-अधर्म !—उसको कही भी गति नही। उसका मन अवरुद्ध है। —वह दयालु है, विचार विवेकशील है, सिद्धान्तवादी है, वह क्रूर है, अविचारी अविवेकी है, सिद्धान्तहीन है। वह सत्-असत् की दुहरी चौहद्दियो से घिरा हुआ 'कुछ नही'—शून्य है। हाय रे अभागे ! तू कहाँ जायगा ? क्या करेगा ? तू कौरवराज दुर्योधन की तरह धर्म का जानता है पर उस ओर तेरी प्रवृत्ति नही, तू अधर्म को भी जानता है पर उससे तेरी निवृत्ति नही। "मेरे हृदय म बैठा हुआ कोई देवता जैसा मुझसे कराता ह वैसा ही मै करता हू।" पर वह देवता भी इस समय गूँगा हो गया है, कुछ नही बोलता, मुझसे कुछ भी नही कराता।

शकुतला का विवाह, बच्चो की पढाई, उनकी सुख-सुविधा, उनका भविष्य, पत्नीव्रत धर्म, प्रेमी का धर्म, साहित्यिक के नाते राष्ट्र के प्रति उसका धर्म, लेखक के रूप में उसकी अमर होने की महत्वाकाक्षा सुख-सौभाग्य से भरा-पूरा जीवन बिताने की लालसा, तपस्वियो की तरह आश्रमवासी होकर साहित्य साधना करने का स्वप्न—चारो और

असफलता, विरोधाभास कराती हुई महिपाल की एक इच्छा जीने की इच्छा, इस समय सर्वथा कुंठित हो रही थी। बहुत कुछ सोचकर भी उसने कुछ नही सोचा, बहुत चलकर भी वह कहा नही पहुँचा। टूटा मूर्तियो के पड़ोस म एक टूटा इसान बैठा रहा। हाय-हाय-हाय—महिपाल अपनी हर साँस मे केवल यही गूँज सुनता रहा। बस, यही 'हाय' इस समय उसकी अनन्त-सी लगने वाली गति थी।

२५

गिरि गोवर्द्धन के भरतपुर भाग की ढाल सतह पर एक पुराने और विशाल कुड के पास तीन बड़े छायादार वृक्षो के झुरमुट मे सज्जन और कन्या लच खाकर अलसाये मस्ती भरे मूड मे बैठे है। मोरो के शोर से गोवर्द्धन गूँज रहा है। एक के बोलने ही चारो ओर से मोर शोर मचाने लगते है। इनका शोर थमता है तो छोटे-छोटे पछियो का मधुर कलरव उसी तरह सुनाई पडता है जैसे जीवन के भम्भड से उबरकर मनुष्य को अपनी साँस सुनाई पडती है। कन्या टिफिनकैरियर के डिब्बे समेट कर बद कर रही है। कुछ दूर पर चार बदर कुछ और पाने की आशा लगाये बैठे इन्हे ताक रहे है। बदरो के कारण इन दोनो का लच सघर्ष के भय से भरा मजेदार रहा। डिब्बो के ऊपर कन्या का शाल ढँक, उसमें हाथ डाल-डाल कर इन्होने सैण्डविचेंज, खुरचन और पेडो का आनन्द लिया था। छडी के भय से बदर अपनी कहावत प्रसिद्ध भभकियाँ दिखाकर भी दूर रहे, समझोते के रूप में इन्होने भी कृष्ण कन्हैया के इन पूँछधारी मित्रो को फल और अपनी भोजन सामग्री का कुछ अश दिया। सज्जन ने कहा—"कामरेड, कुछ पेडे इन्हे और डाल दो।"

"अब नही। नीचे हमारा टैक्सी ड्राइवर भी है।"

"क्यो, वह अपने खाने का इतजाम करके आया होगा।"

"फिर भी—बेचारा नित्यप्रति तो फल मिठाई पाता नही होगा।"

"और ये बदर कब रोज-रोज—"

"मेरे लिए पशुओ से अधिक मनुष्यो का महत्व है।"

"कामरेड, गिरिराज पर आकर तो अपने इस प्रॉग्रेसिविज्म को भूल जाओ न। जीव सब मे एक समान ही है।—

सब है समान
सब में एक प्रान
तज के अभिमान हरिगान—सिगरेट की तलब लगी है कामरेड।"

"तो पियो।"

"नही जी। गोपाल की इस पवित्र भूमि पर—"

"सबै भूमि गोपाल की या मै अटक कहा।—"

"जाके मन मे अटक है सोई—ह ह ह। कन्याबीबी, तुमसे मै हार गया।"

टिफिन-कैरियर बद करने से पहले कन्या ने चार-पाँच पेडे बदरो की तरफ फक दिये फिर ढक्कन बद कर हँसती हुई बोली—"हाथ जोडती हूँ महाराज, मेरे साथ हारजीत का व्यौहार न रक्खो।"

"क्यो ?"

"आज हारोगे तो कल मुझे जीतने के लिए भी उकसोगे। अपने इन आर्टिस्टिक मूडो से मेरी रक्षा कीजिये, दयानिधान !"

जमीन पर रक्खे कोट की जेब से सिगरेट-केस निकाल सज्जन ने लहक मे आते हुए कहा—"आर्टिस्ट की जीवन-सगिनी बनोगी और फिर आर्टिस्ट के मूड से बचकर भी रहोगी—"

"हाँ भाई। आर्टिस्ट के मूडो की रखवाली केवल चतुर वेश्या ही कर सकती है, गृहिणी नही—वह चाहे कितनी ही चतुर और कुशल क्यो न हो।" कन्या ने गभीर मुख बनाकर कहा।

सज्जन की बिफरती हुई मस्ती फिर सयम के दायरे मे सिमट आई, सिगरेट होठो मे दबा अपने मन का भाव दबाते हुए उसने कहा—"तुमने तो तमाम आर्टिस्टो पर जबर्दस्त ल्जाम लगा दिया। मेरे खयाल मे आर्टिस्ट एसेशियली मन का बडा ही पवित्र होता है। भले ही जाहिरा जीवन मे—"

"बात जाहिरा जीवन की ही है। यानी कि सिर्फ तुम्हारी ही बात नही, मेरी ऐसी धारणा है कि कलाकार आमतौर पर अपने किसी जबर्दस्त अभाव या हीनता की वजह से ही बहुत दुख उठाकर सवेदनशीलता पाता है। ठहरो, मुझे कह लेने दो। . यह सही है कि पाई हुई इस अनमोल वस्तु की सराहना केवल दार्शनिक या कलाकार ही कर पाते है। परन्तु अतिसवेदनशील होते हुए भी कलाकार अपने अभाव का दुख सहते-सहते बेहद कठोर हो जाता है। एक जगह उसका मन जड हो जाता है। वह नही जानता कि उसके कारण दूसरे को कितना दुख सहना पडता है।"

"कह चुकी ?"

"हाँ !" कन्या सज्जन के पूछने के ढग पर मुस्कुरा पडी।

सिगरेट का एक लम्बा कश खीच, धुआँ छोडकर, सामने एक प्राचीन गौडीय मठ की खण्डहर दीवाल की ओर दृष्टि साधकर बडे शात और तटस्थ भाव से उसने कहना शुरू किया—"देखो डार्लिंग !—एलाउ मी टु एड्रेस यू लाइक ैट एट दिस मोमेंट।—मैं इस वक्त ऐसे ही मूड में हूँ। देखो, कलाकार कहकर तुम मुझे या किसी को भी मामूली इसान से, या जहाँ तक भावना से सम्बन्ध है, किसी भी जीव से अलग करके मत देखो। मैं कलाकार होकर भी वही हूँ जो कि तुम हो, जो तुम्हारी अभागी भावज थी, तुम्हारे पिता हैं, या कोई भी है, ये बदर भी हैं, ये चहचहाते हुए परिन्दे भी हैं—जैसे सब है, वैसा ही मैं भी हूँ। भूख और सेक्स मेरी भी उतनी ही बुनियादी जरूरतें हैं जैसी कि हर एक की। और सवेदनशीलता भी मुझमे बुनियादी तौर पर उतनी ही है जितनी कि हर आमोखास में।—"

"सक्षेप मे कहो।"

"सक्षेप मे जिदगी एक अनुभव है। टा म की—टाइम के लिए हिन्दी का शब्द —क—"

"काल—"

"काल की एक अटूट धारा है। काल को सिर्फ जीव ही भोगता है, जीव ही पहचानता है। इसान चूंकि न सब जीवो में आला दिमाग रखता है इसलिए अपने काल के अनुभव को हजार तरीके से व्यक्त करना भी जानता है। अनुभव से ही उसकी रचनात्मक शक्तियो का विकास होता है। जीवन का अनुभव ही मनुष्य का इतिहास है—वह मनुष्य चाहे कलाकार हो या कोई भी हो।"

"लेकिन अनुभव तो गूंगे की बात के समान होता है। खुद अपने ही मन के अनुभव को सान स्पष्ट रूप से बयान नही कर पाता। क्या तुम कह सकते हो कि मेरे सबध मे तुम्हारा अनुभव क्या है? मैं क्या तुम्हारे लिए महज एक रूप और आकार ही हूँ? मेरा रूप-रग ही क्या मेरा सौन्दर्य है?"

"नही। मेरी निगाह मे देह का सौंदर्य ही जीवन का सारा अनुभव नही है, कन्या। यह नहीं कि तुम्हे देखकर मेरे मन मे जिस्मानी तौर पर तुम्हे पाने की ख्वाहिश नही होती। मेरे उस दिन के जोरो-जब्र मे भी, मौके का बहाना चाहे कुछ भी रहा हो, मेरी इच्छा तुम्हे जिस्मानी तौर पर पाने की ही थी।—'

"मौके का बहाना क्या अपने आप म अनुभव नही होता सज्जन?"

"होता है। उसकी बात फिर करूँगा। मै यह कह रहा था कि उस दिन तुम्हे इतना बुरा अनुभव देकर भी—"

"मान लो कि मुझे बुरा अनुभव नही मिला, तब?"

"खैर, न सही, मैंने अपनी तरफ से तुम्हे बुरा अनुभव ही दिया।"

"बुरा होता तो तुम उस अनुभव को व्यक्त न करते।"

"तुम निहायत ही ऊपरी सतह पर टहल रही हो, कन्या। मै अनुभव की बात कर रहा हूँ—न वो अच्छा है, न बुरा है।"

"खुद तुमने ही अभी अच्छाई-बुराई की बात छेडी।" कहकर कन्या मुस्कुराई।

उसकी मुस्कुराहट की इस अदा पर सज्जन की कामेच्छा रीझ उठी। इस रीझने को उसकी अतर्दृष्टि ने खूब तपे लोहे के वर्ण-सा अनुभव किया, उसके स्पर्श से क्रूर आघात और वेदना की तिलमिलाहट अनुभव की, और साथ ही साथ सब विचार, आकार-विकार अस्त-व्यस्त हो जाने पर भी कन्या की मुस्कान उसके अतर में—कही और गहरे में—महावेगवान् झरने की सहज गति-सी उसकी नस-नस मे प्रवाहित हो रही थी। रूप, रस, गध, गुजन और स्पर्श—कन्या की मुस्कान मे उसे सब कुछ एक साथ प्राप्त हुआ। पूर्णता और आनन्द की चेतना से उसका बाहरी जगत्, उसकी क्रियाशीलता अलसा गई। उस क्षण में उसे ऐसा लगा, मानो कई स्तरो पर उसकी अनुभव शक्तियाँ एक साथ दौड रही हैं, हर स्तर एक मे एक मिलते चले जाते हैं। तीन-चार फुट की दूरी पर बैठी हुई कन्या उससे जरा भी दूर नही है। वह उसे अपने अतर में प्राप्त है। यह प्राप्ति उसे सपूर्णता का अनुभव करा रही है। इस समय उसके सब अभाव भर गये है, सारे विकार शात हो गये हैं। गिरि

गोवर्द्धन, कुण्ड, पेडों का झुरमुट, पशुपक्षी, गौडीय मठ, धूप से चमकता हुआ आसमान, वह स्वर्ग और देहधारिणी कन्या जिसे टकटकी बाँध कर देखते हुए वह ये सब देख रहा है

इन सब के विभिन्न रूपाकारो मे कोई विरोधाभास नही। इन सब में—जर्रे-जर्रे में वह और कन्या एकाकार होकर रम रहे हैं।

विचित्र क्षण था, विचित्र अनुभव था। उस अनुभव की शक्ति इतनी प्रखर और तीव्र होते हुए भी एकदम सहज थी। यह सहजता ही सुन्दरता है। सज्जन उस सौंदर्य से पूर्ण है। यह पूर्णता उसे कन्या के कारण ही प्राप्त है।

सज्जन की खोई आँखो और आनन्दमय मुखमण्डल से कन्या अछूती न बच सकी। ये भोला सुन्दर मुखडा उसके 'प्रियतम' का है, उसका अपना है। कन्या सज्जन को लेकर भावुक नही हुई, बल्कि भर गई। जी चाहा कि इस भोले से प्यारे-प्यारे मुख को अपने दोनो हाथो से दबाकर चूम ले! हाय! वह क्या सोच गई? बरसो की दबी अभिलाषा इस समय खुल्लमखुल्ला उसके मन में बोल गई। उसे बडी लाज लगी। चेहरा गुलाबी होकर नजरो समेत जरा नीचे झुक गया, फिर अपने आप में ही अचकचा कर खयाल आया कि सज्जन कही भाँप न ले इसलिए मन की लाज को ऊपरी शोखी से ढँकती हुई बोली—"क्या कोई अनुभव पा रहे हैं कलाकार महाशय?"

सज्जन होश में आया, झेंप गया, हँसकर बोला—"तुमसे मैं हार गया, गोकि इस हार में भी मेरी जीत है।"

"फिर वही हार-जीत। तुम कुछ भी कहो, मैंने तय कर लिया है, तुम्हारे इन आर्टिस्टिक मूडों का अब हरगिज तरह न दूँगी।"

"पै मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।"

"चलो उठो।"

"ठहरो जी। मुझे वो याद कर लेने दो। वो रसखान का कवित्त—"

"कवित्त नहीं, सवैया है।"

"अमाँ कुछ भी सही। क्या है वो ... ऊँह ... क्या है कन्या?"

"है तो कुछ अवश्य, पर क्या है ये याद नही। मेरा दिमाग विशुद्ध प्रोजवादी है, पोयट्री नहीं याद रहती। अब चलो भई।"

" ... तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी ... अहा! याद आया—
मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गले पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वालिनि संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरो रसखान सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
वा मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥ ... आहा!
भावता है तू मेरो रसखान ... ए कन्या, जस्ट फार ए सेकंड ... खडी हो जाओ।"

सज्जन ने अपनी स्कैच बुक और पेंसिल उठाई। कन्या ने अनखना कर कहा—"तुम—"

"बोलो मत। खडी हो जाओ।"

स्कैच बनने लगा। कन्या—श्री राधा—कृष्ण के वेश मे, मोर मुकुट, गुंजमाल,

पीताम्बर बाएँ हाथ मे लकुटिया। चित्र में दाहिनी ओर दो हाथ—श्रीकृष्ण के हाथ—बाँसुरी अर्पित कर रहे हैं। श्रीराधा—कन्या—की आँखो में लाज, होठो पर दबी मुस्कान, त्यारियो मे रोष, शरीर की त्रिभंगी मुद्रा और दाहिने हाथ की मना करती हुई उँगलियो म योवन की चपलता है।

कन्या को यह 'खिलवाड' अच्छा लग रहा था। 'वह कलाकार को प्रेरणा देने वाली महाशक्ति का काम कर रही है'—यह सब 'कल्चरल' खुराफात उसके मिजाज को नापसन्द है। वह सज्जन—एक पुरुष—के प्रति अपने आपको समर्पित कर रही है, बस, इतना ही वह जानती है। सज्जन कलाकार है, रईस है यह सब बातें उसके मन मे अवश्य आती हैं। वह धनी और महत्वपूर्ण व्यक्ति की भावी पत्नी और प्रियतमा है, यह बात उसके मन मे दूसरे महत्व की है। पहले महत्व की बात साफ तौर पर यही है कि सज्जन—एक पुरुष—को वह अपना कह सकती है। परसो रात जब सज्जन घर न आया तब उसके विरह मे कन्या ने पहली बार साफ-साफ यह बात अपने आप मे अनुभव की थी कि सज्जन के सामने उसकी हस्ती खो जाती है—भले ही वह अपने इस एहसास को दबाने के लिए ऊपरी रौब का ढोंग करती हो। उसने यह साफ-साफ देख लिया कि जिस दिन से सज्जन की आँखो मे पहली बार प्रेम की चमक आई उस दिन से ही वह अपने आपको सज्जन की प्रेमेच्छा मे लय होने से रोक नही सकी। अपने को रोकने के हर प्रयत्न में वह असफल रही है। सज्जन के हठ के आगे वह बिछ जाती है। स्त्रियो के अधिकार, पुरुषो के अत्याचार, पुरुषो के प्रति उसकी एक प्रकार की घृणा, अपने आप को पहला महत्व देने की आदत, पठन-पाठन, चिंतन दर्शन आदि उसकी सारी विशेषतायें सज्जन के आग्रह के सामने निस्तेज हो जाती हैं। सज्जन उसकी अपनी इच्छा का ही पुरुष रूप है। जिस स्त्री ने अब तक किसी पुरुष का रंगीन नजरो से अपनी ओर देखना बर्दाश्त नही किया, जिसने इससे पहले अपने तीन प्रेम याचको को दुत्कार दिया था, वह सज्जन के आगे सब तरह से परास्त है। अपनी यह पराजय परसो रात भर आँसुओं में नहाने के बाद से तो अब उसे बिल्कुल अपमानजनक नही लगती। कल दोपहर तक वृन्दावन मे चारो ओर भटकते-भटकते देह और मन से चूर-चूर होकर जब वह मुजस्सिम आँसू की बूँद बन चुकी थी, और उसे अपना भविष्य अँधेरी, अनन्त और भयावनी गुफा के समान नजर आ रहा था, जब वह लौट कर मथुरा, लखनऊ या कही भी लौट कर न जाने, किसी भी परिचित, मित्र और संबंधी को अपना मुख न दिखलाने का हठ भरा निश्चय कर चुकी थी, तब अचानक सेवाकुंज के पास की एक गली में सज्जन ने उसे नाम लेकर पुकारा था। वह स्वर सुनकर वो कितनी बौरा गई थी। सज्जन को एक घर के दरवाजे पर खडा देख वो किस तरह टूट गई थी—खुले मुँह मे गहरी साँस बाहर निकली, उसने दोनो हाथो से अपने कलेजे को थाम लिया, दस कदम की दूरी पर खडे सज्जन तक पहुँचने मे मानो वह एकदम अशक्त हो गई थी, उसे चक्कर आ गया, पैर लडखडा गये थे। यदि सज्जन ने तेजी से आगे बढकर उसकी बाँह न पकड ली होती तो वह गली में ही गश खाकर गिर जाती। उसकी दशा देखकर सज्जन का वैराग्य गल गया, उसकी कठोरता स्वय उसके कलेजे पर टूटे शिलाखण्डो-सी बार-बार गिरने लगी। सज्जन उस समय एक अधेड बंगालिन वैष्णवी के घर मे श्री राधामाधव की

छवि आँक, उस विधवा से पाँच रुपए मे झौआ भर आशीर्वाद खरीद कर उसके द्वार की चौखट लाँघ रहा था। कन्या को वह उसी घर मे ले आया। चतुर वैष्णवी ने साक्षात् राधामाधव से वरदानस्वरूप और रुपए पाने की आशा से बडी सेवा की। दालान मे पडी चारपाई पर झट से अपनी कथरी-गुदडी बिछा दी, कुएँ से ताजा पानी लाकर पिलाया, सज्जन से दाम पाकर दूध-चाय आदि लाकर चाय बनाई, फिर लूची (पूरी) पायश (खीर), दाल भात, शाक-तरकारी आदि सुन्दर व्यजन बना यशोदा माता के समान अपने राधामाधव को ठाकुरजी का भोग जिमाया, अनेक मीठी बाते की, उठते-बैठते आशीर्वाद दिये, 'बहूजी' की माँग मे सिन्दूर न लगाने के कारण मीठी भर्त्सना की, विदा करते समय श्री राधाजी के गले की माला सज्जन को तथा श्रीमाधव की माला कन्या को पहना कर अनेक आशीर्वाद दिये, बलाये लीं। सज्जन ने अपना पर्स कन्या के हाथ मे देकर उससे वैष्णवी को दक्षिणा देने के लिए कहा। वैष्णवी के सूने घर मे उन्होंने लगभग चार घण्टे बिताये, परन्तु आपस मे अधिक बाते न हुई। "कैसी तबियत है?—ठीक हू। कब आई? —सबेरे। लो, पानी पीलो, चाय और लोगी?—कन्या मुझ माफ कर दो।" —आदि गिनी-चुनी दो-चार बातो से अधिक की गुजाइश ही न थी, दोनो मौन-सवेदना से अभिभूत थे। शाम को मथुरा लौटने पर, घर जाने से पहले, सज्जन ने बाजार से कन्या के लिए साढे आठ सौ रुपए की चार साडियाँ खरीदी, एक कीमती साडी अपनी मेजबान के लिए भी खरीदी, कन्या के पैरो मे पुराने सैण्डिल देखकर आग्रहपूर्वक नये सैंडिल खरीदे, उम्दा वैनिटी केस खरीदा, कीमती शॉल खरीदा। कन्या ने दबे स्वर मे एक-दो बार मना भी किया, पर सज्जन के आग्रह को वह कही भी टाल न सकी। डेढ़-दो घण्टे मे लगभग बारह सौ रुपयो का सामान खरीद कर सज्जन-कन्या घर लौटे। घर मे सज्जन और कन्या दोनो ने ही अपने मेजबानो के सामने अपने लैला-मजनूवत् अनन्य प्रदर्शन कर उनके दिलो में शक-शुबहे की खाइयो को पाट दिया। कन्या की मुँह बोली भावज को 'कन्या की ओर से सम्हल नही पाई थी, फिर भी सुखी थी। रात को सज्जन की इच्छानुसार ही नये परिधानो से सज कर वह उसके साथ पिक्चर देखने को भी गयी थी।'''और आज दोनो जने गोवर्धन आये है।

सज्जन ने अपनी राधा को रसखान के सवैया के भाव के अनुसार चित्रित कर डाला। रफ स्कैच मे भी मोरमुकुट, गुजमाल, पीताम्बर धारिणी बडी मनोमोहक लग रही थी। पुरुष वेश मे मुरली के लिए मना करती हुई कन्या, राधा का स्त्री भाव ऐसा मार्मिक आँका था कि सज्जन स्वय अपनी कला पर मुग्ध हो गया। वह एकटक अपने स्कैच को देखता रहा, फिर रीझी हुई, गहरी प्यास भरी दृष्टि से कन्या की ओर देखा।

कन्या की ब्रह्मचारिणी देह, इतना शृगार सह न पाई। उसका मन हाथ से बेहाथ होने लगा। बडी बेबस नजरो से उसने देखा। सज्जन का पौरुष निहाल हुआ, उल्लसित हुआ, बेहोश हो गया। पाँच-छ दिन पहले लखनऊ में अपने घर मे वह कन्या को देखकर बेहोश हुआ था, लेकिन उस और इस बेहोशी में अतर था। कन्या की आँखो में अपनी आँखो की प्यास उँडेलता हुआ वह उठा, टिफिन कैरियर से टकराते हुए आगे बढकर कन्या के गले मे बाँह डाल कर उसे अपनी ओर खीच लिया। देहो ने आपस मे मिल कर बिजली

स्पर्श की। कन्या की आँखें प्रिय की आँखो की मोहिनी से बँधी हुई उसके मुख के भावो से काफी हद तक अलग, अनबुझी स्वेच्छा के वश में होकर निश्चल हो गई थी। चेहरे पर लाज की लाली और घबराहट की सफेदी उसके सहज गोर वर्ण से चकरघिन्नी का खेल खेलती रही थी। उसका दाहिना अग पुरुष की बाईं बाँह से बँधा, पुरुष के दिल की धडकनो से मिल रहा था। दुहरे वस्त्रो के रहते हुए भी नारीदेह को पुरुष देह की नैसर्गिक गर्मी खामोश मस्ती दे रही थी। गालो पर एक दूसरे की साँसे टकराई—

"देखौ सारेन कौ, बिलाइनी मछरीन के डिब्बान के डिब्बान चबाय कै गिरराजपे चूमा-चाटी कौ ब्यौपार फैलाय रए है।"

मठ की खडहर दीवार पर एक गोसाईं जी का हँसी भरा पोपला मुँह ऐसा लग रहा था मानो पास-पास, ऊपर तले और क्रमश बडे-छोटे दो कठफोडवा के फूल खिले हुए हो। सुनते ही कन्या का चेहरा लाल हो गया, लाज से वह पानी पानी हो गई ओर सिर झुकाये ढाल की तरफ भागी। सज्जन भी कट गया, उसने खण्डहर की ओर देखे बिना ही झुककर स्कैचबुक, पेंसिल, कैनवैस के झोले मे रक्खी, कैमरा, थरमस और कोट कन्धे पर डाला, स्टिक और टिफिन कैरियर उठाकर चला। कन्या के नगे पैर ककड-काँटो से उलझने के कारण अधिक दौड न पाये। पेडो का झुरमुट पारकर ढाल की तरफ बढते हुए सज्जन ने अपनी दोनो की शर्म पर मजाक का पर्दा डालते हुए जोर से कहा—"अमाँ उस्ताद, ठैरियो। आरिया ऊँ मै भी!"

कन्या खडी हो गई, मगर इधर देखा नही। उसके पास पहुँच सज्जन ने कहा—"चोरी बिलायती नारी, तू मछलीन के डब्बान चबाकर कहाँ भागी जा रही है?"

कन्या को झेंप भरी बनावटी तुनुकमिजाजी साधते हुए भी हँसी आ गई, बोली—"हटो भी, तुम बडे खराब आदमी हो!"

"मुकदमा चलवा दूँगा तुम पर, मानहानि का। मैने कोई खराब काम नही किया और तुम मुझे खराब कहती हो? —यू बिलायती मछली—आ'एम साॅरी—नाॅ डब्बान के डब्बान चबाय कर मेरे पवित्र काम को खराब बतलाती है!"

सज्जन के विनोदी अभिनय ने कन्या की हिजाबभरी खिझलाहट दूर कर दी। वह उसे देखकर हँस पडी। बोली—"तुम बडे दुष्ट हो।"

"थैंक्यू फार दि कौम्प्लीमैन्ट!"

"मजाक नही, मेरा दिल अभी तक धडक रहा है।"

"दिल की धडकने जीवन की निशानी हैं। तुम जरा भी स्पोर्टिंग नही हो।"

"न सही—" कहते-कहते कन्या गभीर हो गई, बोली—"अब से मेरे मन को सम्हाले रखना। तुम्हारे सामने मैं बेबस हो जाती हूँ।" आँखो ने इस तरह देखा मानो कहती हो, तुम इसे क्यो नही समझते।

"तुम तो बात का बतगड बना रही हो।" कन्या की गभीरता सज्जन को बेमौका लगी, वह झुझला उठा—"अरे, उस खबीस ने देख लिया तो क्या हुआ। एक-एक-एक मजेदार चुहल रही।"

"जो चीज तुम्हारे लिये चुहल है, वह मेरे जीवन का अति पवित्र अनुभव है।"

"पागल हो तुम ! स्त्री-पुरुष का मिलन पवित्रता-अपवित्रता के कोड से यो नही बाँधा जा सकता । तुम—तुम अस्ल मे अपने घर की गदगी से इस कदर चौकी हुई हो कि —वरना इसमे अपवित्रता की बात ही कहाँ आती है ? मुझे अपनी भावी पत्नी की पवित्रता का एहसास है । मै यह भी जानता हू कि उसे धोखा नही—हरगिज नही दूँगा ।"

कन्या सिर झुकाये सुनती रही । जब वह कह चुका तब नजरे तिरछी घुमा कर उसे देखते हुए फीकी मुस्कान के साथ धीरे से कहा—"दुष्यन्त की तरह भूल जाओ तो ?"

"क्या ?"

गला खखारकर कन्या ने फिर मुस्कुराते हुए ही कहा—"किसी का शाप लग जाय ?"

"शाप ?—इस युगमे !"

"दृष्टि का शाप इस युग मे भी लगता है ।"

सज्जन सुनकर चुप हो रहा । मिनट-दो-मिनट तक दोनो चुपचाप चलते रहे । फिर सज्जन ने कन्या की तरफ देखकर पूछा—"तुम्हारे मन से मेरा विश्वास उठ गया है—है न ?"

"विश्वास जीवन का आधार है ।" कन्या ने बडी सादगी से जवाब दिया ।

सज्जन को अपनी बात का उत्तर तो मिला, पर उससे उसे सतोष न मिल सका । बात साधारण से विशिष्ट और आदर्श के स्तर तक उठ गई थी । सज्जन को झुझलाहट हुई, मानसिक परिस्थितियो के कारण वह झुझलाहट अपने ऊपर ही आई । उसने कहा—"यह सच है कि मेरा चरित्र सधा हुआ नहीं रहा । रईस का इकलौता बेटा, जिसके सिर से बडे बुजुर्गो का साया नई उम्र मे ही उठ गया, आमतौर पर बहक जाता है । अपनी कमजोरियो से मैने तुम्हारे विश्वास को गहरी ठेस दी है। पर मै हरगिज बुरा नही हूँ ।"

"डर बुरो से नही लगता क्योकि वह आसानी से नजरो के सामने आ जाते है । उनसे लडना या अलग रहना आसान है । डर बुराइयो से ही लगता है । जो अच्छे अच्छो के दिलो मे भी हजार तहो के अदर छिपी रहती है और अचानक प्रकट होकर दूसरो को अपनी गिरफ्त मे ले लेती है ।"

सज्जन को कन्या का यह प्रवचन खल गया । इस समय उसका मन मस्ताना हो रहा था । राधाकृष्ण के प्रेम और भक्ति की रसमयी बाते उसकी मस्ती का शृगार बन सकती थी, पर यह प्रवचन तो ऐसा मालूम हुआ मानो शराब पीते समय 'किसी' ने उसके जाम मे गगाजल ढालना शुरू कर दिया है । उसका दिल विद्रोह करने लगा—"शराब क्यो बुरी है और गगा जल क्यो अच्छा है ? मान लो अच्छा-बुराई है भी तो ये चुम्बन बुरा क्यो हुआ ? स्त्री पुरुष का एक दूसरे के लिए सहज आकर्षण, देह मिलन बुरा क्यो है ? ये कन्या मुझे जबर्दस्ती एक ऐसी बुराई के लिए क्यो चेता रही है जो अपने आप मे हरगिज-हरगिज बुरी नही ? —सज्जन ने अपनी विद्रोही भावना से बल पाकर कन्या से कहा—"तुम मेरे स्टेटमेट को जबर्दस्ती गलत रग दे रही हो कन्या । मुझमे ऐसी कोई बुराई नही जो तहो मे पल्ती हो । और—ठहरो-ठहरो, पहले मेरी बात सुन लो—तुम जिस चीज को बुराई कहती हो वह बेवकूफ सुधारको की खामखयाली है । ये मॉरल और पाप, बुराई, वगैरा शब्दो ने इसान के कुदरती विकास मे जिस कदर ज्यादा रोडे अटकाये है उतना ज्यादा शायद किसी और वस्तु ने नही । और अगर तुम्हारे ही तरीके से सोचा जाय तो औरत से बढकर बुरी

रहते। मुंडेरे-मुंडेरे चढकर सारे मुहल्ले का चक्कर लगाया करते है। ताई के लिए मुसीबत हो गई है। जब तक तीनो बच्चो को कुछ नही पिला लेती, वे स्वय भोजन नही करती। इस समय भी किस्ना के उपस्थित न होने के कारण उनका भोजन न हो सका। वे कुडकुडाती रही, बडबडाती रही, इन बच्चो की माँ को जो अपना पाप इनके घर मे पटक गई, और अपनी सौत बनाकर गालियाँ देती रही।

ताई इस समय बेहद उखडी हुई थीं। किस्ना ने दूध नही पिया, कन्नोमल के पोते का इतना नुकसान हो गया, कल उनकी सौत के पोते का टीका आएगा, दावत होगी, नदो निगोडी ने लौटकर बताया भी नही कि दोनो जतर वह ठीक तरह से मसान में गाड आई या नही—यह सब चिताएँ ताई को घेर कर उसी तरह परेशान कर रही थी जिस तरह मुहल्ले के लोग उन्हे परेशान करते हैं। सज्जन की कोठरी पर हमला करने वालो की भीड इस समय भी ताई के दिल मे किलबिला रही थी। रह-रहकर उनकी हिंसावृत्ति उभर उठती थी वे अब भी अपनी कल्पना मे भीड पर जादू का सिंदूर फेक फेक कर सबका सर्वनाश कर रही थी।

कोतवाली मे एक का टकोरा बजा। ललिता-बिसाखा ने घर के किसी कोने में शिकार दबोच लिया था। चूहा अन्तकाल की चूं-चूं कर मर गया। ताई का मन गालियो से भर गया। बिल्ली के बच्चे बडे होकर अब बडे शिकारी भी हो गए है। ताई के वैष्णव सस्कार ललिता-बिसाखा और किस्ना की शिकारी प्रवृत्ति से घोर घृणा करते है, परन्तु इन बच्चो पर उनका कुछ बस नही चलता।

ताई के कानो मे घुर्र-घुर्र की आवाज पडने लगी। ललिता-बिसाखा में से कोई एक बडी जोर से घुर्रा रही थी क्योकि उसके पजे के नीचे शिकार दबा हुआ था, और दूसरी उस शिकार को हथियाने के लिए तरकीबे लडा रही थी। थोडी देर में ललिता बिसाखा 'खाऊँ-खाऊँ-खाँ' करती हुई एक-दूसरे पर टूट पडी। सारा घर कुरुक्षेत्र बन गया। ललिता बिसाखा घर भर मे दौडती हुई जगह-जगह डट कर मोर्चा लेती हुई आपस में जोर-जोर से घुर्रा रही थी।

"मरो, भाड मे जाओ, मरो सब के सब! रात में भी दो घडी का चैन नही निगोडा! उँह!"—ताई ने कई बार इच्छा की कि उठकर, ललिता-बिसाखा की लडाई में बाधा डाले, पर इस समय वे बिल्कुल चूर-चूर हो रही थी। उनके जोड-जोड में दर्द हो रहा था। भीड़ से ताई जैसी आज घिरी वैसी कभी नही घिरी थी। भीड की दबसट में कभी धक्के खाकर आगे बढ जाती थी तो कभी पीछे। उनके जादुई सिन्दूर के भय से जनता में ऐसी खलबली पडी थी कि लोग हँसते-नाराज होते और डरते हुए सिंदूर से बचने के लिए भाग रहे थे। ताई के प्रति लोगो की घृणा ने ताई को आज बहुत ढकेला, बहुत गिराया-पडाया। कई बार तो लोगो के जूते चप्पल उनके पैरो को रूँदते हुए निकल गए। यद्यपि अन्त में जीत ताई ही की हुई, परन्तु उनकी दशा-कुदशा भी बहुत हो गई थी।

तभी कही से उनके कानो मे किसी स्त्री के जोर-जोर से कराहने की आवाजें आने लगी। ताई के कान चौकन्ने होते ही उनकी बक-झक बन्द हो गई, अपने मुँह से रजाई हटा ली। बिल्कुल ही पडोस मे कोई स्त्री प्रसव पीडा से कराह रही थी। कौन है,

किसके यहाँ है—यह कौतूहल ताई को चैन से लेटने न दे सका। ताई उठकर बैठ गई। ताई को बैठा देख कर किसुन जो अपनी दोनो बहनो ललिता और बिसाखा से कमजोर था उछलकर ताई की गोद मे आ बैठा। लेकिन ताई का ध्यान उस समय कही और था, पडोस मे किसी के दर्द उठ रहे थे। अनुमान करने मे ताई की बुद्धि ठीक-ठिकाने पहुँच गई उनकी किराएदारिन तारा कराह रही थी।

ताई के अन्दर का रोष उमड-घुमड कर ऐन उनके कलेजे मे सुदर्शन चक्र-सा घूमने लगा—"राँड, मर जाय तो अच्छा हो! लडका जनेगी खसोटी, दरद तलाबेली से उठ रहे हैं।"

तारा की प्रसव-पीडा की गुहार ताई का मन दूर-दूर तक दौडाने लगी। पहला ध्यान अपनी सौत, और उसके पोते के टीके मे गया। सौत के पौते का तिलक चढेगा, नाच-रग होग, अगन होगे। कल ताई की सौत शहर भर की स्त्रियो मे रानी-सी बैठी होगी। उसकी पतोहू के मिजाज भी आसमान पर चढे होगे। चार दिन मे ब्याह होगा फिर पोते के आगे बच्चे होगे, उनकी सौत—'रॉड पडदादी बनेगी, सरग की सीढी चढेगी।'——अपने पति राजा साहब का ध्यान आया। ताई रोष और घृणा से भर उठी। क्रूर आवेश ने उन्हे बैठने न दिया। किसन गोदी मे सो गया था। ताई ने लिहाफ को झटका दिया, किसन जी गोदी से लुढक कर जाग गए। परन्तु ताई उठी नही, न उनका ध्यान ही बच्चे की तरफ गया। तारा की जल्दी-जल्दी उठने वाली प्रसव-पीड़ा भी पार्श्व-सगीत से अधिक इस समय ताई के चिन्तन मे न समा सकी। वो नदो का ध्यान कर रही थी। नदो उसकी सौत की कोठी और मसान मे जतर गाड तो आई ही होगी। 'सतनरायन स्वामी करें कल सझा को जिस दम तिलक चढ रहा होय, निगोडा (सौत का पोता) कटे पेड-सा गिर पडे!'—रग मे भग होगा, हाहाकार मच जायगा, उसकी सौत कलेजा फाड कर डकरा उठेगी, छातियाँ कूटने लगेगी, उसके पति सिर पकड कर बैठ जायँगे, कैसा हाहाकार मचेगा! ताई यह सब सोच-सोचकर हिंसक आह्लाद मे भर उठी। नीद गायब हो गई, पान की तलब लगी। ताई उठी, सिरहाने रक्खी लालटेन की बत्ती ऊँची की। लालटेन पूजावाले दालान मे रख आँगन में हाथ धोने के लिए आई। तारा की प्रसव वेदना उन्हे निकट से सुनाई पड रही थी। जहाँ पानी रक्खा था, उसके बिल्कुल पास ही एक बद दरवाजा था। यह दरवाजा तारा के घर की तरफ जाता था। ताई हाथ धोकर दरवाजे से कान लगा कर खडी हो गई। उस दरवाजे के बाद तारा के घर की तरफ एक सँकडा गलिहारा है जो तारा की रसोई वाले दालान में निकलता है। उसके बाद आँगन फिर दालान और वो कमरा—यानी कान लगा कर खडी हुई ताई अपनी कल्पना मे अपनी किराएदारिन तारा के पास तक पहुँच गई, उसके पीडा-ग्रस्त चेहरे को देखने लगी, हँसने लगी, हजार कोसने सुनाने लगी। नित्य-उर्वरा कल्पना से तारा के अन्त की बात सोचते-सोचते ताई पूजा-घर के दालान म आ गई जहाँ उनका पानदान रक्खा था। किसन, ललिता, बिसाखा तीनो उनके पानदान के पास लालटेन को घेर कर बैठ गए। तीनो बच्चे लड्डू ऐसा मुँह लिए टुकुर-टुकुर ताई के पान लगाने को देख रहे थे। सफेद चमडी पर पीले काले धब्बो वाले तीन बिल्ली के बच्चे बडे सुन्दर लग रहे थे—घृणा के तीव्र प्रवाहित नाले में बही जाती हुई ताई को इन बच्चो की एक झलक बडी भायी। उन्हे कही नही अभिमान हुआ

जो उनकी सौत को अपने पोती-पोतो को देख कर होना है—'कैसे भोले बन के देख रहे है निगोडे ! जब हत्या करे हैं तब ये भोलापन नासपीटा दिखाई भी नही पडे है !"

ताई पान धोने के लिए कटोरी मे पानी लाई थी, बिसाखा ने उसमे मुँह डाल दिया। ताई फिर चिढ की अटारी पर चढ गई। जब से बिल्ली के बच्चे आए है ताई का सारा धरम-करम दिन मे सौ बार भ्रष्ट होता रहता है। बिल्ली के बच्चे घर मे गदगी फैलाते है। ताई गालियाँ देती हुई उस गदगी को सौ बार साफ करती है। बिल्ली के बच्चे उनके रसोई-घर मे, पूजा-घर मे, कहाँ नही जाते ? चूहे खाकर पजे से मुँह पोछते हुए मस्ती के साथ वह ताई की गोदी मे आकर बैठते है, वैष्णवी ताई उस समय इन अखाद्य खाने वाले ललिता-बिसाखा और किसन के प्रति घृणा से भरी हुई बार-बार उन्हे अपने पास से दूर झटकारती है। बच्चे बार-बार पास आने का हठ करते है। हठ करके लाड लेना बिल्ली का विशेष गुण है। ताई उनसे हार जाती है। उन्हे हार कर बच्चो को अपनी गोदी मे बिठलाना ही पडता है। अखाद्य खाने वाले घृणित बिल्ली के बच्चे ताई के किसन और ललिता-बिसाखा बनकर उनके हाथ मे पडी हुई झुर्रियो को चाटते है, अक्सर ताई का मुँह भी अपनी खुरदरी जीभ से चाटते है। उनके किसन और ललिता-बिसाखा खेल-कूद मे दौडते हुए कभी-कभी ठाकुरजी के सिहासन पर भी छलाँग मार जाते है। पीतल-ताबे और पत्थर से निर्मित ताई का ठाकुर परिवार तितर-बितर हो जाता है। ताई यह सब सहन करती है। बडबडाते हुए दूसरी कटोरी मे ताजा पानी लेने के लिए ताई फिर उठी। तारा की करुण कराहे ताई के मन मे पैंतालीस साल पहले की अपनी प्रथम और अतिम प्रसव पीडा की याद दिला गईं। ताई पान लगाती रही, सुनती रही। पान लगाया, चुटकी बजा कर कृष्णार्पण करते हुए मुँह मे रक्खा, तमाखू की चुटकी ली, 'जैसिरी किस्न' कहकर मुँह मे रक्खी, हाथ धोए, शान्तिपूर्वक उठी लालटेन ली, ठाकुरजी वाली कुठरिया मे गई और भडार घर से चाभी का गुच्छा निकाला।

बरसो बाद ताई की तरफ से आज हवेली के उस भाग का दरवाजा खुल रहा था जो इस समय तारा के अधिकार मे था।

दर्द बढते गए। वर्मा कुछ भी इतजाम न कर पाए। वे इस समय अपनी परिस्थिति पर झुंझला रहे थे। इसी शहर ही मे वर्मा के माता-पिता रहते है, तारा के माता-पिता भी रहते है परन्तु वह किसी का भी सहयोग नही पा सकते। यह मुहल्ला भी अधिकतर उनके प्रेम-विवाह को घृणा की दृष्टि से देखता है। इस समय अपने प्रेम सबध के प्रति समाज की घृणा से उनके मन मे जो उत्तेजना हो रही थी, वह अपने प्रेम प्रतीक, अपने होने वाले बच्चे की मा तारा के कष्ट को देखकर और भी अधिक बढ रही थी। तारा की प्राण रक्षा के लिए वह बावले हो उठे थे। तारा उन्हे अपने पास से हटने नही देना चाहती थीं, परन्तु वर्मा हठपूर्वक दाई को कही से ढूढ कर लाने के लिए कपडे पहन कर कमरे से बाहर निकले। दालान मे आए ही थे कि सामने, आँगन के उस पार रसोई वाले दालान मे वह गलियारा जिसके अगले हिस्से मे जलाने की लकडिया रक्खी रहती है इस समय एक मद प्रकाश से आलोकित हो रहा था। एक आकृति क्रमश इस ओर बढती चली आ रही थी। आकृति रसोई वाले दालान मे आ गई। आकृति स्त्री जैसी है—सफेद कपडे पहने—चुडैल जैसी !

इस घर में भूतों का बासा माना भी जाता है। दिन भर का डर, इस समय का डर जुड़ कर आती हुई ताई को केवल प्रेत के रूप में ही देख सका। वर्मा के हाथ पैर फूल गए। घिग्घी बंधने लगी—और वह घिग्घी मुक्त कंठ की चीख बन गई। वर्मा दालान में कटे पेड़ की तरह गिर कर बेहोश हो गए।

पति की चीख ने कमरे के अंदर दर्द से विवश तारा को भय के कुएं में ढकेल दिया। पति की चीख का कारण जानने का हौसला, उसके बिस्तर से न उठ पाने के कारण इस समय न जाग सका, पति की चीख उसके अंदर भय को उभार गई। उसका कलेजा उछला, गर्भ के जीव में भी उथल-पुथल हुई—और उसका दिल डूबने लगा। तारा बिना कुछ कहे सोचे या प्रयत्न किए अपने आपको यमराज के हाथों में विवश-सी समर्पित करने लगी। उसका दिल डूबा, वह बेहोश हो गई।

ताई जल्दी-जल्दी आंगन पार कर उस दालान में आई, वहाँ सोफे के पास वर्मा बेहोश पड़े थे। क्षण भर उन्हें देखने के लिए ठिठकी, फिर कमरे के अन्दर चली गई। तारा की दशा देख कर उनके शरीर में बिजली दौड़ गई। उनका दिमाग बड़े सधाव के साथ परिस्थिति से जूझने के लिए आगे बढ़ा। अकेले-दम, कमजोर शरीर होने पर भी ताई अपने साहस से जग जीत गई।

वर्मा जब होश में आए, उठकर कमरे में आए। ताई तारा को प्रजनन करा रही थी। उन्होंने वर्मा को बड़ी जोर से डाट कर भगा दिया। वर्मा को ताई का दैवी सहायता के रूप में यहाँ आना अब भी अकल्पनीय-सा ही लग रहा था। फिर भी वे अब अपने अंदर बल पा रहे थे। ताई ने उन्हें अन्दर से ही पानी गर्म करने की आज्ञा दी, चाकू लाने को कहा, वर्मा चुपचाप उनकी आज्ञा का पालन करते रहे। रसोई-घर वाले दालान में स्टोव जलाने का उपक्रम करते हुए उन्होंने अपने घर में नवागंतुक की अचानक अजीब-सी लगने वाली पहली 'कुवाँ-कुवाँ' सुनी—उनका मन सिहरन से भर उठा। साथ ही उनके मन में तारा के जीवन की ओर से भय का संचार हुआ। स्टोव जलाना भूल वर्मा दौड़े हुए कमरे के दरवाजे तक आए, ताई के भय से ठिठक गए। पहले हिम्मत न पड़ी, फिर वहीं से खड़े-खड़े पूछा—
"ताई जी, क्या हुआ ?"

ताई बड़ी जोर से झुंझला पड़ी—"अरे पानी गरम किया है कि नहीं! बाप बना है निगोड़ा!"

वर्मा जी कुछ कहने की हिम्मत न कर सके। हड़बड़ा कर रसोई की तरफ भागे।

आज उन्होंने ताई के अकल्पनीय रूप के दर्शन किये थे मानो उन्हें अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि उनके ऊपर तरह-तरह के टोने-टोटके करने वाली, उनसे शत्रुता रखने वाली घृणामयी ताई ही आकर उन्हें इस संकट से उबारने आई है—यह निष्काम सेवा, पराये के लिए यह प्रेम-भाव, ताई में सहसा कहां से उत्पन्न हो गया, यह बात उनके लिए एक रहस्य ही बनी रही। घृणामयी ताई उनकी दृष्टि में इस समय देवी थी—रहस्यमयी देवी थी!

कन्या और सज्जन आज सुबह ही मथुरा से लौटे हैं। स्टेशन पर सज्जन ने कन्या से बड़ा आग्रह किया कि वह उसके साथ उसकी कोठी पर चले परन्तु कन्या न मानी। कर्नल भाई साहब बुरा मान जाएँगे, यह उसकी दलील थी। सज्जन ने भी अपने आग्रह को अधिक दूर तक बढ़ाना उचित न समझा। चार दिनों तक प्राय चौबीसो घंटे कन्या के साथ रह कर नये तौर पर सज्जन इतना तो अच्छी तरह समझ ही गया है कि कन्या को उसकी इच्छा के विरुद्ध वश में करना आसान काम नहीं। कन्या अन्य आधुनिकाओं से न्यारी है। वह प्राय वैसी ही हठीली है जैसी कि सज्जन की मां थी। सज्जन इन पिछले चार दिनों में कन्या को पाने के लिए बहुत मचला, उससे दूर भागने के लिए भी बहुत तड़पा —परन्तु उसका हठ दोनों छोरों पर कन्या के हठ के आगे बार-बार परास्त हुआ है। यह पराजय उसे जय पाने के लिए बहुत उत्तेजित कर रही है—सज्जन अपनी इसी उत्तेजना को मन में दबा-दबा कर कन्या के सामने सभ्य और सुसंस्कृत बने रहने के लिए इस समय अत्यधिक प्रयत्नशील है। वह अपनी उस बर्बरता का कलंक मिटाना चाहता है जिसका परिचय कन्या पा चुकी है। वह कन्या का हृदय जीतना ही चाहता है—उसकी देह जीतने के लिए ही हृदय जीतना चाहता है। आर कल ही की बात है सुन्दरता का नाश करने वाले बबर पर जब सज्जन ने रिमार्क कसा था तो कन्या गहरी अर्थभरी दृष्टि से उसे देख कर बोली थी—अपनी इस बात को कभी भूल न जाना! सज्जन अपने ही से पराजित, इस बात को न भूलने के लिए तब से ही प्रयत्नशील है! उसने उसके बाद कन्या को छेड़ना तो दूर किसी प्रकार का साधारण मजाक भी नहीं किया। ट्रेन में भी वह कन्या को अजन्ता, आबू, एलोरा, खजुराहो या चिदम्बरम्, मदुरा आदि की सुन्दर शिल्प-कला का बखान सुनाता रहा, संयोगवश दो बर्थों का अकेला कम्पार्टमेन्ट पाने पर भी सज्जन ने बड़े जब्त के साथ वह सौन्दर्य चर्चा की। उसने कन्या के सामने अपना इतना सुन्दर प्रदर्शन किया कि जब वह ऊपर की बर्थ पर सोने गया तो उसका मन बुरी तरह थक चुका था।

आज सुबह स्टेशन पर कन्या ने जब उसके साथ उसकी कोठी पर चलने के लिये नाही कर दी तब वह मन ही मन क्षुब्ध हो कर भी जाहिरा तौर पर 'ऐज यू लाइक' (जैसा तुम चाहो) वाली सभ्य मुद्रा में कलाकारोचित मस्ती का ढोंग करता रहा।

मथुरा से तार दे दिया गया था, इसलिए स्टेशन पर उसका ड्राइवर कार लेकर आ गया था। कन्या को पहुँचाने के लिए सज्जन कर्नल के दवाखाने पर गया। संयोगवश कर्नल महाशय उस समय लाला जानकीसरन के साथ अपनी दूकान के पीछे वाले कमरे में बैठे हुए थे। सज्जन की कोठरी पर पिछले रात के हमले की खबर ने कर्नल को इस समय अत्यधिक तपा दिया था। लूट की खबर के साथ ही साथ लाला जानकीसरन मुहल्ले में होने वाली चित्रकला प्रदर्शनी के आयोजन की चर्चा चलाने भी उसके पास आए थे। कर्नल ने पूरी दुनियादारी के साथ लाला जानकीसरन को उचित उत्तर दे दिया था। लाला जानकीसरन जा ही रहे थे—उस समय सज्जन और कन्या वहां पहुँचे।

दोनो को देखकर कर्नल का चेहरा खिल उठा। लाला जानकीसरन की नजरो मे इस जुगल जोडी को देखकर अर्थ भरी, छिछोरपन भरी चमक आई।

कर्नल न अपने नौकर को आवाज लगाई—"भोले, गाडी से बिन्नो का सामान उठाकर ऊपर पहुँचाओ।" लाला जानकीसरन ने सज्जन से कहा—"अमाँ, कहाँ गायब हो गये थे छैल-बिहारी ? मालूम है, दो दिन रह गए है नुमाइस के। और हमने ऐसी इस्तहारबाजी की है कि चारो अलँग धूम मच गई है तुम्हारी।"

सज्जन को बडा बुरा लगा। अपने को रोकने का प्रयत्न करते हुए भी उससे न रहा गया, बोला—"जी हाँ, कल मथुरा मे, और तमाम रास्ते भर लोग मुझसे यही कहते आए है कि लाला जी ने आपकी बडी धूम मचाई है!"

लाला जानकीसरन कट गए। बोले—'अच्छा भाई, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने, हम लोगो से जो सेवा बन पडी, कर दी। कल रात सालिगराम बेचारे गली म गिर पडे सो उनके पैर की हड्डी टूट गई ह—"

सज्जन न तुरत 'च्-च्' कर कहा—"अरे कैसे गिर गए ?" लाला जानकीसरन मुस्कुराए, बोले—"सुना तो यह है भाई कि तुम्हारी मकान-मालकिन ने उन पर कोई जादू-टोना किया था।'

सज्जन हँस पडा, बोला—"क्यो, क्यो ? उन्हे सालिगराम से—"

"अब तुम आए हो, जरा सुस्ता-उस्ता लो तो कर्नल बतलाएँगे सब तुम्हे हाल! अच्छा भाई, चले! राजा साहब के यहाँ जाना है—"

"क्यो, सब खैर तो ह ?"

"अरे, आज टीके की दावत है भाई—"

"हाँ, हाँ, मै तो भूल ही गया था।" —सज्जन ने कहा।

"आजकल तुम जान कौन मे खियालातो मे रहते हो कि अपने को बिल्कुल ही भूल जाते हो। अच्छा भई, चले कर्नल! जैराम जी की!" बाहर जाते हुए लाला जानकीसरन से सज्जन ने कहा—"राजा साहब से कह दीजिएगा कि मै अभी हाजिर होता हूँ!"

लाला जानकीसरन के जाने के बाद इधर-उधर की बाते होने लगी। कर्नल ने कन्या से कहा—"तुम्हारे मथुरा जाने से बडा काम बन गया बिन्नो, अब आज ही तुम्हारे बाप को गिरफ्तार कराता हू औ सालिगराम की वो नकनकी बजवा दूँगा कि याद करेगे बेटा, कर्नल से पाला पडा था।"

सालिगराम का प्रसग छिड जाने पर उनकी टाँग टूटने और ताई के टोटके के सबध मे भी बात चली। कर्नल एकदम से गभीर हो गया। उसे सज्जन को पिछले दिन का सारा हाल और पिछली रात की लूट का सारा ब्योरा देना ही पडा। सुनकर सज्जन और कन्या दोनो के ही चेहरे तमतमा उठे। सज्जन ने निश्चय किया कि घर जाने से पहले वह एक बार अपनी कोठरी की दशा देखने जायगा।

•

अपनी 'प्रयोग-चित्रशाला' का यह ध्वस्त रूप देख कर सज्जन अपना आपा खो

बैठा। वह कोठरी ऐसी लगती थी माना कत्ल की हुई लाश पडी हो। तस्वीरो के कुछ फटे हुए टुकडे इधर-उधर बिखरे पडे थे। एक कोने मे अधजली छोटी मेज अपनी दो साबुत टाँगो पर कगारू की तरह खडी हुई थी। सुराही के टुकडे, तस्वीरो मे लगे टूटे काँच के टुकडे जो ताई बटोर कर एक कोने मे लगा गई थी उसे अपने रोम-रोम मे चुभते हुए महसूस हुए। गद्दे की रूई आतो की तरह बाहर निकल पडी थी—एक चीज भी तो साबुत न बची थी! सज्जन कन्या और कर्नल तीनो बडी देर तक चुपचाप खडे रहे। सज्जन की आँखे यो निकली पड रही थी मानो दो पिस्तौले हो जिनसे गोलियाँ छूटने ही वाली है।

कन्या को सज्जन का मौन उग्र रूप डराने लगा। सज्जन को अपने ही क्रोध की जलन मे बचाने के लिए, कुछ कहने के लिए वह वाक्य और शब्द खोज रही थी, परन्तु उसने अपने को असमर्थ-सा पाया। यह छोटा-सा कमरा उसके नूतन ससार का प्रवेश-कक्ष था। यहाँ पहली बार वह सज्जन के निकट आई थी। उसे वह दिन याद आ रहा था जब दैनिक 'नवजीवन' मे नौकरी पा लेने के बाद महावीर जी का प्रसाद लेकर वह यहाँ आई थी, उसने सज्जन को महावीर जी का टीका लगाया था, पहली बार 'तुम' कहा था और झिझक की झिरियो मे झाँकना छोड अपने मन के कपाट खोल वह सज्जन के अति निकट आई थी। उसे ध्यान आया—उस दिन सामने ही ईजल पर सत्यनारायण की कथा का चित्र रक्खा हुआ था, बाहर छत पर महाकवि वीर बैठे थे,-डॉक्टर शीला स्विग आई थी, चाय बनी कैसा अच्छा था वह दिन? कितना सुन्दर लग रहा था य कमरा? उस सुन्दरता को आज इस प्रकार ध्वस्त देखकर उसे सचमुच ही बडी कसमसाहट हो रही थी। पिछले दिन की बाते याद आ गई। उसने कहा—"तुम्हारी बात सच है—"

सज्जन ने धीरे से उसकी ओर गर्दन घुमाई, कर्नल भी देखने लगे, कन्या बोली —"दुनिया सदा ऐसे आदमियो से भरी रही है जो सुन्दरता से सही तौर पर प्रभावित होकर, उसके प्रति श्रद्धालु होने के बजाय उसका नाश करने मे भी आनद का अनुभव करते है। मथुरा नष्ट करने वाले ऐतिहासिक लुटेरो से वे लोग किसी तरह भी कम बर्बर नही जिन्होने तुम्हारी सुन्दर तस्वीरो का नाश किया है।"

कर्नल बोला—"अजी, मै तो पहले ही कहता था गली-मुहल्ले अब शरीफों के रहने के काबिल नही रह गए। इनमे जाहिलो की बस्ती बसी है। सज्जन इनके मन की सुन्दरता देखने आया था—देख ली सुन्दरता।"

सज्जन तप्त हुए स्वर मे बोला—"यहाँ के लोग अगर समझते हो कि मै इससे डरकर यह कमरा छोड दूँगा तो गलत है। मै यही रहूँगा। मै इन मूर्खों की बर्बरता मे लोहा लूँगा। हुश कही के! य—य—य— अजता-एलोरा के देश के रहने वाले है? जी चाहता है इन असभ्यो के मुँह पर तेजाब छिडक कर इन्हे जला दूँ!"

"बच्चो जैसी बाते करते हो, जला सकोगे? इतने सगदिल बन सकोगे?"—कन्या की बात सुनकर सज्जन ने एक ठडी साँस छोडी।

कर्नल ने कहा—"मेरी राय में अब तुम अपनी एक्जीबीशन कैन्सल कर दो सज्जन, यहाँ वाले तुमसे खार खाए बैठे हैं। उस दिन अगर कोई दुर्घटना हो गई तो ठीक न होगा।

'हर एक्सीलेंसी' आ रही है—बडे-बडे लोग आ रहे हैं, उनके सामने तुम्हारी किरकिरी हो जायगी ।"

कन्या बोली—"नही भाई साहब, नुमाइश अवश्य हो ! यह मनुष्य का दोष नही उसकी सीमाओ का परिचायक है। प्रदर्शनी यहाँ वालो के लिए शिक्षा प्रसार का माध्यम हो, तभी सज्जन के यहाँ आने का उद्देश्य पूरा हागा ।"

सज्जन तमतमाकर बोला—"मै यही रहूँगा ! मै इन कमबख्तो की छाती पर मूँग दलूँगा ! इस रीऐक्शनरी एलीमेंट से डरकर भागना सज्जन ने नही जाना !"

छत पर ताई एक पोटली लिए आती दिखलाई दी, कन्या ने उन्हे देख कर हाथ जोडे। ताई ने जवाब न दिया, केवल उसकी ओर घूर कर देखने लगी। उन्होंने सज्जन को पोटली देते हुए कहा—"कन्नोमल के पोते, ये तुम्हारी तस्वीरे हैंगी। लेई बना दूँगी आज, सो सब जोड लेना ।"

क्रोध का प्रबल ज्वार मन के सागर-तट मे तुरत पीछे हट गया । ताई की यह बात उसके मन मे हास्य उमगाते हुए उसे स्पर्श कर गई। ताई की ममता महाप्रलय मनु की नाव की तरह रक्षा करने आई थी। सज्जन ने पोटली ले ली। ताई हमलावरो को कोसती हुई कहने लगी—"जिन्ने-जिन्ने तेरा नुक्सान किया हैगा, वे सब के सब आठ रोज के अदर निर्बन्स हो जामेगे निगोडे ! औ तू अब इस कमरे मे अपना समान न रखना। मेरी मर्दानी कोठी मे बैठा कर !" कहते-कहते एकाएक उन्होंने कर्नल और कन्या को घूर-घूर कर देखा और उनसे बोली—"तुम लोग बाहर जाओ ! जाओ!"

कन्या फौरन ही बाहर चली गई। कर्नल को बडा बुरा लगा। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि सज्जन ने उसका हाथ दबा दिया—कर्नल भी बाहर चला गया। ताई सज्जन के बिल्कुल नजदीक आकर धीरे से बोली—"देख कन्नोमल के पोते, तू व्याह कर ले अब। तेरी बऊ को सौ तोला सोना चढाऊँगी। कौन है ये रॉड ? बेसरम कहो की ! मर्दों के साथ मूँड खोले घूमे है !"

सज्जन को इस समय ताई के सामने उस तरह कन्या के लिए झूठ बालने की इच्छा न हुई जैसे पिछली बार उसने कहा था। उस मजाक को आगे न बढा कर सज्जन ने साफ-साफ कहा—"ताई जी, ये बहुत अच्छी स्त्री है। अगर आप मुझे हवेली में रक्खेगी तो ये भी आएगी।" ताई ने फिर कुछ न कहा। एक क्षण आँखो मे आखे डालकर वे देखती रहीं—"कलजुग आ गया है मरा ! ये भी आवैगी—आवे निगोडी, आवे अपने खसम के साथ रहे मुझे क्या करना ! अपनी तरफ के दरवज्जे बंद रखूगी !' ताई फिर कमरे में न रुकी जैसे मुट्ठमार आई थी वैसे चली भी गई।

३०

राजा साहब के यहाँ पोते के टीके की दावत बडी शानदार हुई। दो प्रदेशा के गवर्नर, तीन केन्द्रीय मत्री, सारे प्रादेशिक मत्री, उपमन्त्री, अनेक पुराने ताल्लुकेदार, कानपुर, कलकत्ते के दो चार करोडपति तक मौजूद थे। बडा शाही मजमा था। महिपाल ने दावत के समय अपने व्यगो से किसी हद तक बदमजगी पैदा कर दी। खाने के बाद लान मे आने पर सज्जन ने कहा "महिपाल, तुम्हारा मन इधर बेहद थक गया है। कुछ दिनो के लिये कही बाहर जाकर आराम कर आओ।" महिपाल भी अपने मन मे कहा पर यह बात अनुभव कर रहा था। मित्र की सहानुभूति इस समय अनुकूल पडी, बोला "हाँ यार, मेरी मानसिक थकन से उत्पन्न चिडचिडाहट कभी कभी खुद मुझे भी बुरी लगती है। तुम्हारा नुस्खा ठीक है। इधर सयोग से मेरे ममेरे भाई का पत्र भी आया है। सोचता हूँ, इस बार कुछ दिनो के लिये ससारी चिताओ से हठपूर्वक छुट्टी लेकर उनके गाँव चला ही जाऊँ। अब चला ही जाऊँगा।"

अपने निश्चय पर झूम कर महिपाल ने उससे बिदा भी ले ली। सज्जन अकेलापन महसूस करता हुआ स्वय भी घर जाने के लिये निकला तो एक पुरानी परिचित, सज्जन की चिलचिलाती धूप जैसी कुआँरी जिंदगी मे अक्सर छाँव बनकर काम आने वाली मिसेज चित्रा राजदान मिल गई। वह घर लौटने के लिये किसी कार वाले को टटोल रही थी। चित्रा किसी की व्याहता नहीं, बहुतो की रखैल रही। उम्र से जल्दी ढल जाने वाला उसका रूप-सौंदर्य अब भी आकर्षक था। इधर कन्या के चार दिन के इकार भरे सहवास ने सज्जन की आभिजात्य और कलाकार वाली हठ-प्रवृत्ति और भोगेच्छा को मन ही मन जगा रखा था, एक और एक दो मिल गये।

उस रात शराब की झोक मे मन ही मन मे अपने को इस अपराध मे ढकेलने वाली स्वाभिमानिनी कन्या को दड देने के लिये यह भी तय कर डाला कि अब वह चित्रा राजदान ही से ब्याह कर के पतितोद्धार का आदर्श उपस्थित करेगा।

दूसरे दिन बडे सवेरे ही राजा साहब का बडा बेटा खुद आकर उसे बुला ले गया। राजा साहब लाला, जानकी सरन और सालिगराम भी अपनी चुटीली टाँग पर पलस्तर चढाय बैठे थे। राजा साहब के प्रभाव मे और इन दोनो के घेराव मे, तकल्लुफ मे बँधकर, सज्जन ने यह वचन दे दिया कि वह कन्या के पिता वाले केस मे कोई सहायता नहीं देगा। दो दिनो तक वह कन्या और कर्नल से कतराता रहा। चित्रा घर ही मे रही। उधर कर्नल और कन्या ने केस की कार्रवाई आगे बढाई तो अखबार मे पढकर सज्जन और ताव खा गया। पूरे तीन दिन आवारगी मे बिताकर चौथे दिन दीवान जी को कुछ फर्नीचर, सजावट और उपयोग का सामान ताई की हवेली मे पहुँचाने की आज्ञा दी। दोपहर मे वह स्वय ताई के यहाँ पहुँच गया।

ललिता-विमाता और किसुन तीनों एक साथ बँधे-बँधे भाग रहे थे। ताई ने सज्जन को उन्हें पकड़ लाने के लिये कहा। सज्जन ने तीनों को खभे से बाँध दिया।

"ताई, मेरा सामान आ गया ?"

"हाँ रे, मैंने सब समान ठीको-ठीक लगवा दिया है। तेरा बैठका ससुर जी के बैठके में ही बनाया है मैंने। आर क्यो रे कन्नोमल के पोते, विद्दिन किसोरी के लडके की जाफत में गया था तू ?"

"हाँ, ताई।"

"कैसी रही जाफत ? सुना भौत आदमी आए थे ?"

सज्जन जान-बूझ कर झूठ बोला—"नही ताई, ज्यादा नही, छ-सात सौ आदमी थ।"

"कै तरह की मिठाइयाँ थी ?"

सज्जन को याद नही रहा था। इसके अलावा भी वह इस समय फिजूल के सवाल-जवाबो से बचना चाहता था, बोला—"गिनती मे टुकडे कुछ ज्यादा थे ताई, मगर कुछ था नही।"

कुछ देर चुप रह कर ताई बोली—"कन्नोमल के पोते, तू ब्याह कर ले। ऐसी बडी जाफन करूँगी कि राँड के कलेजे मे आग लग जायगी। बोल, पक्की करूँ ? लडकी तुझे दिखा दूँगी, बडी सुसील है।"

सज्जन इस समस्या से बचना चाहता था, बोला—"ताई जी, मेरी जनम-पत्री मे लिखा है कि अगर दो साल के अन्दर ब्याह कर लगा तो मेरी मौत हो जायगी।"

ताई सुनकर स्तभित रह गई, फिर कहा—"जनमकुडली अच्छी तरह मिलवा-ऊँगी जिसकी पत्तरी मे पूरा सुहाग होगा उसी को—" फिर धीरे से बोली, मानो रहस्य की बात कह रही हो—"कन्नोमल के पोते, किसी का कारज करने की मेरे मन मे बडी साध है। वो राँड सोचती होगी कि उनके तो लडके, पोते है। मल्हर-मल्हर सबको मल्हरावे है। अरे, मै भी अभी इस लडके की छटी करूँगी, फिर तेरा—"

इसी समय ताई अपने घर की कुडी खटकती सुनकर उधर चली गई। सज्जन ड्योढी के बाहर गली की तरफ आ गया। लाला जानकीसरन अपने बरामदे मे बैठे हुए फलवाले से सौदा चुका रहे थे। उसे देखते ही बोले—"ताई की गोद बैठ गए भाई ?"

सज्जन इस समय मजाक का जवाब देने के मूड मे न था। लाला जानकीसरन को देखकर वह सकुचित हो उठा। लाला जी बोले—"आओ, आओ, बैठो, दो मिनट ! अरे, आओ भी !"

सज्जन को इनके चबूतरे पर जाना पडा। लाला जानकीसरन बोले—"लडके भले ही बुजुर्गों को भूल जायँ मगर बुजुर्ग लोग बुजुर्ग ही रहेगे। हाँ, राजा साहब को जरूर आज का इखबार पढके तकलीफ हुई। दिन मे उनका टेलीफून भी आया था।"

सज्जन लाला जानकीसरन के और कुछ कहने से पहले ही बोल उठा—"इसमें मेरा कोई हाथ नही, लाला जी। मै इस मामले से अलग हूँ।"

"मगर कर्नल—"

"कर्नल ने इस मामले मे मुझसे कोई राय नहीं ली।"

"ह-ह-ह ! तो ये मामले है !"

सज्जन को लाला जानकीसरन की यह हँसी और बात बुरी जरूर मालूम हुई मगर इस समय वह स्वय ही अपराधी-सा अनुभव कर रहा था, कुछ न बोला। लाला जानकी-सरन ने बात आगे बढाई, कहने लगे—"भइया, पैंसठवाँ साल चल रहा है मेरा। सम्मत चवालिस का जनम है मेरा। तुम्हारे बाप मुझसे काफी छोटे थे। अब हम तुमसे क्या कहे ? तुम तो भगवान की दया से इत्ते नामी-गिरामी हो, हर तरो से समझदार हौ, बस इमारे मे ही तुमसे बात कहने का धरम है मेरा—सौक सब करो, बाकी अपने आप को सँभाले रक्खो। नगीन चन्द को भी हमारी तरफ से यही नसीहत देना। जो लडकी अपने सगे बाप की नही वो और किसकी हो सकती है भइया !"

सज्जन खामोश रहा। कन्या के प्रति जो धारणाएँ लाला जी बाँध रहे थे वे उसकी दृष्टि मे असत्य होते हुए भी इस समय उसे विद्रोह करने को प्रेरित नही कर रही थी। नुमाइश के सबध मे बाते हुई। लाला जानकीसरन ने अपने दोनो बडे कमरे उसे दिख-लाए, कमरे चित्रो की प्रदर्शिनी के योग्य न थे, उनमे पर्याप्त उजाला नही था। सज्जन ने बिजली वाले को बुलवा देने के लिए लाला जी से कहा। दूसरे दिन सुबह आठ बजे के लिए यहाँ आने का निश्चय कर सज्जन फिर ताई के हवेली मे लौट आया। कमरे मे कन्या बैठी हुई थी, उसे देखते ही सज्जन कस गया। उससे कुछ न कहते हुए वह एक आराम-कुर्सी पर लेट गया। मुँह दूसरी ओर घुमा लिया।

कन्या ने पूछा—"नाराज हो ?"

" "

"नाराज होने की बात तो नही—"

"मेरी क्या मजाल कि मै आपसे नाराज होऊँ ?"

"मुझे स्वप्न में भी आशा न थी कि तुम अन्याय का पक्ष लोगे।"

सज्जन चिढ उठा, बोला—"मै न्याय का पक्ष लेने के लिए ही बदनाम हूँ।"

"तब फिर—"

"मै अब इसमे तुम्हारा अन्याय देख रहा हूँ !"

"क्या ?"

क्या का उत्तर सज्जन को ढूँढे न मिला। कन्या बोली—"मै अपने पिता के साथ अन्याय कर रही हूँ ? क्या तुम अब यह उचित समझते हो कि नारी को सर्वदा दलित रहना चाहिए ?"

सज्जन अपना आपा खोने लगा। चिढ कर बोला—"जी नही, नारी को अब कौन दलित कर सकता है भला, दले जायँगे पुरुष—"

"सज्जन, तर्क से बात करो, क्रोध तुम्हे किस कारण से आ रहा है ? क्या मैंने तुम्हे किसी प्रकार का धोखा दिया ? क्या यह बात उसी दिन साफ नही हो गई थी जिस दिन मैं पहली बार तुम्हारे यहाँ आई थी ?"

"मुझे इसकी शिकायत नही। मेरी शिकायत तो यह है कि जब मैंने तुम से मना कर दिया तब चार दिन क्या ठहर नही सकती थी ?"

सज्जन तुम्हारे पास बडे-बडे लोगो की सिफारिशे पहुँची, मेरे पिता को बचाने के लिए नही बल्कि सालिगराम की मान-रक्षा के लिए ! मैं क्यो मानूँ ? सालिगराम की किरकिरी हुई, या कांग्रेस वाले बदनाम हुए इसका दोष मेरे ऊपर क्यो आए ?"

"मिस वनकन्या, मैं आपकी पोलिटिकल चाल को खूब समझ गया हूँ अब तक—"

सज्जन तुम यह अच्छी तरह जानते हो कि सच क्या है। बहरहाल मुझे बहस नही करनी।'

और मैं भी बहस नही करना चाहता।" कह कर सज्जन ने फिर मुह फेर लिया। कन्या तखत से उठकर सज्जन के पास आई, आराम-कुर्सी के पास आकर खडे होते ही सज्जन के सिर पर हाथ रख कर उसने कहा—'अब नही बोलोगे ?'

"नही।"

"कब तक ?"

'हमेशा के लिए !'

"न बोलना मैं तो बोलूगी !"

सज्जन को वनकन्या के हाथ का स्पर्श उत्तेजित कर रहा था। यह उत्तेजना ही इस समय सज्जन के लिए और भी अधिक चिडचिडाने वाली बन गई। वनकन्या का स्पश सुखद और शीतल था—कम से कम उसे ऐसा महसूस हो रहा था। वह स्पश कन्या के अन्तर की सारी 'पवित्रता' मानो उसे सौप रहा था। सज्जन के अन्तर की 'अपवित्रता चिट उठी। पवित्र-अपवित्र की भावना सज्जन के मन मे साफ-साफ उभरी हुई थी। इसके साथ ही साथ वह अपनी अपवित्रता को ही पवित्र मानकर वनकन्या की पवित्रता को अपवित्र करार देने का हठ कर रहा था। सज्जन एकाएक उठ बैठा बोला—"यह तुम मुझसे नही बोल रही मेरे पैसे से, मेरी इज्जत और शोहरत से—"

"दूसरी बार सुन रही हू !"

"तुम सदा ही इसे बेशरम होकर सुनती रहोगी !"

वनकन्या के चेहरे पर एक बार तमक आई, फिर सयत स्वर से कहा—'जिस दिन यह विश्वास हो जायगा कि तुम सचमुच यही समझते हो उस दिन मै अपना मुह नही दिखलाऊँगी !' कहकर कन्या हट गई।

"कन्नोमल के पोते !"

"हाँ, ताई जी !"

"सुन, ये जो तेरी है न, इससे कह दे तारा क लडके की बुआ बन के छटी पूज देगी। जैसे निगोडे वे बेधरम वैसेई ये ! और उसके लिए बुआ कहाँ से लाऊगी मैं !"

सज्जन ने तुरन्त ही साधिकार कन्या की तरफ देखते हुए कहा— 'हाँ-हाँ, ताई जी!"

कन्या भी तुरन्त बोली—"जरूर बन जाऊँगी ताई जी, लेकिन मैं अधर्मी नही हूँ ताई जी !" कन्या ने मजाक करने का प्रयत्न किया।

गली का एक कुत्ता अदर घुस आया। कमरे के दरवाजे पर खडी हुई ताई की नजर पडी, "हट !" करती वे उसके पीछे दौडी। कुत्ता घबराकर फाटक की तरफ जाने के बजाय दालान की ओर दौडा। ताई डकराने लगी—"अरे, तेरा सत्यानास जाय नास-

पीटे ! अरे पकडियो—मेरे घर मे न घुस जाय—मेरे ललिता-विमाग्वा—"

सज्जन इसके पहले ही दालान मे दौड गया और कुत्ते को उधर से खेद कर भगाया। कुत्ता आँगन पार करता हुआ सीधा फाटक की ओर भागा। सज्जन फाटक बद करने चला गया। मोटे नक्काशीदार दरवाजे बन्द करते हुए अचानक उसकी नजर गली से गुजरते हुए बाबा रामजी पर पडी।

"कहो राम भगनवा" —बाबाजी अपने दतविहीन पोपले मुँह मे मुस्कुराए। उनकी छोटी-छोटी आँखे स्नेह की चमक से भर गईं। सज्जन उन्हे देख कर ऐसे घबरा गया मानो चोरी करते हुए पकडा गया हो। बाबा जी फाटक की ओर बढे, उनके पीछे उनका मोटा लट्ठ और तुमडी लिए हुए एक घुटमुण्ड लँगोटीधारी चेला भी था। सज्जन ने उनके आने के बाद दरवाजे उटकाए और उनके पीछे-पीछे चला। दालान मे खडी ताई ने एक साधु-वेशधारी को देखकर तुरन्त उनके पैरो मे अपना सिर नवा दिया।

"सुखी हो, सुमति हो, सान्ती हो !"

"महराज कहाँ से पधारे?"

"राम जी के घर से आया हूँ राम भक्तिनियाँ, जहाँ से तू आई है !"

"अरे, ये तो सभी जाने हैं महराज, मै पूछूँ थी कि—"

"आप तो शायद पागलो का इलाज करते है ?"

"हाँ बेटी, मै पागलो का इलाज करता हूँ। जहाँ पागल होते है वहाँ मै उनकी सेवा करने पहुँच जाता हूँ। क्यो न राम जी !"

सज्जन को लगा कि यह बात उसके ऊपर ही कही गई है। वह सिर झुकाए चुप रहा।

"अच्छा-अच्छा, आपी है, मै गोकलद्वारे मे सुन चुकी हूँ ! तो यो कहो कि कन्नोमल का पोता तुमे पैलेई से जाने था।"

"अरे, य राम जी है, ये किसे नही जानते, क्या नही जानते ? इनसे बढकर सत्त को जानने वाला है कौन ?"

सज्जन उसी तरह सिर झुकाए बैठा रहा, बाबा जी ने एक बार कन्या की तरफ नजर डाल, फिर ताई से पूछा—"तेरी लडकी है राम भक्तिनियाँ ?"

"मेरी काए को होने लगी रॉड !"

"अरे, तुम्हारी ही तो है राम भक्तिनियाँ ! तुम इसका सौ तोला सोना लिए बैठी हो, इसीलिए गाली देती हो !"

"मै किसी की धेला भर चीज भी नही लूँ हूँ। हाँ, सौ तोला सोना मै इसे (सज्जन की ओर देख कर)—इसकी बऊ को दुँगी जो ये मेरे कहे से ब्या कर ले।"

"अरे, बिना ब्याह किए ही दे-दे राम भक्तिनियाँ।"

"नही बाबाजी !"

"परोपकार होगा री। औ जो चोरी चला जाता तो क्या कर लेती ?"

"मेरे घर चोरी होने की खबर तुम्हे भी मिल गई थी बाबाजी ?"

"तेरे घर सचमुच चोरी हो गई री राम भक्तिनियाँ ? अरे, मै तो यो ही कह रहा था—उदाहरन दै रहा था।" कहकर बाबाजी मुँह भर कर हँस पडे। फिर कहा—"अच्छा !

तो चोरी भई तबही से राम भक्तिन के मन मे बिचार आया कि सौ तोला सोना किसी को दै डारें।"

"हाँ बाबाजी, बात तो जेइ है,' कहकर ताई का मनहूस चेहरा, चमकती हुई आँखें और काले-काले डठल जैसे दाँत खिल उठे। फिर बोली—"मेरे कौन बैठा है ? और न मुझे मरने के बाद नाग औ नागन का जोडा बन केई बैठना है। नाग और नागन तो वोई बनेंगे रॉड के। (बाएँ हाथ की हथली पर दाहिने हाथ का चटाका दे पजा हवा मे बढा दिया) मे तो जब मरूगी महाराज तो बैकुठ से बिमान आएगा ओर मुझे ले जायगा, देख लीजियो!"

"अरे, राम भक्तिन तू जरूर जायगी! तेरे लिए तो श्री कृस्न भगवान बैकुण्ठ से इसपिस्सल बिमान भेजेंगे! वे तुझसे परमप्रिसन्न हैं! सोचते है, राम भक्तिनियाँ कब आवै बैकुण्ठ मे और कब उसकी लठिया लैके हम भागें!" बाबाजी फिर खिलखिलाकर हँस पडे। इस बात पर सबको ही हँसी आ गई। ताई ने भी बुरा न माना, वे चुप हो गईं।

बाबाजी घूम कर सज्जन को देखने लगे। सज्जन निस्तेज होकर बैठा था। बाबा जी के सामने उसकी नजर नही ठहर पाती थी। बाबाजी बोले—"अपनी विजय के दिन बडा मौन धारन किया है राम जी ?"

"बाबाजी, सुनौ," ताई बाबाजी को इशारे से बुलाकर अलग ले गईं और धीरे से पूछा—"जतर-मनर भी सिद्ध है बाबाजी ?"

"हाँ राम भक्तिनियाँ, अखिनी, सखिनी, डखिनी जिसको कहो उसको तारें!"

"बाबाजी, मेरी सौत के पोते को ऐन उसकी लगन की बखत मार डालौ!"

"उससे क्या होगा राम भक्तिनियाँ ?"

"मेरे कलेजे मे एक ही आग है, सौत रॉड का बस चलेगा। मेरी बेटी भी न रही, नईं तो उसी का बस चलता। (धीरे से) भगवान का दिया मेरे पास बहुत है बाबाजी, जो ऐसा कर दो, ठाकुरजी के चरनो की सौ, मै अपना सब कुछ तुम्हे दे जाऊँगी।—बस, सौ तोले सोने मैंने कन्नोमल के पोते—"

"मै बताऊँ राम भक्तिनियाँ ? तू अब कोई बडा भारी उत्सव कर डाल! बस, इन्ही राम जी को, औ ये ठडी हैं मीताजी—"

"ये सब झूटी लल्लो-चप्पो नईं करूँगी महराज! तुम्हे सच्ची करूं, मुझे फूटी आँखो अच्छा नईं लगे हैं इन दाना का साथ, न जात न धरम! अभी मेरे घर में एक रॉडकी ऐसी ही घुस आई। गैर जात से अँगरेजी ब्या करके बच्चा जनने आई निगोडी, मेरी हवेली में। बस, अँगरेजी पढ ली, न तमीज न सऊर, भोगना मुझे पडे है। मै न होती तो बच्चे की कोई छटी भी न पूजता।"

ताई जोर-जोर से अपना यह भाषण कर रही थी। कन्या और सज्जन कमरे में खडे थे। बाबाजी का चेला तुमडी और डडा लिए बुत बना उकडूँ बैठा लार टपका रहा था। ताई जोश मे थी, कहती चली गई—"मुझे किसी का डर नईं है। ये कन्नोमल के पोते ने मेरे साथ एक उपकार किया तो मैं भी उसको मानती हूँ। इसके बाबा को, दादी को, मइया को मैंने देखा है। ससुर के जमाने से हमारा इनका घरोवा है। इसी से कहूँ हूँ कि तू ये सब दद-फद छोड, मेरी मर्जी का ब्या कर ले, सारा खर्चा मैं उठाऊँगी। मेरे मन में बडी साध रह गई, मेरे भी दोहते होते, किसी का मूँडन करती, किसी का जनेऊ करती, मेरे घर टीका

आता ''

बरसो बाद—न जाने कितने बरसो बाद ताई की आँखो मे पानी का झलझला आया। बाबा राम जी की कसरती देह तनकर खडी हुई, उनका वृद्ध मुख क्षण भर के लिए गभीर हुआ, छोटी-छोटी आँखे सधी और वे बोले—''राम भक्तिन, तू सीताराम जी का ब्याह कर डाल! मेरे रामजी, तुम्हारी सीताजी! खूब बाजे-गाजे धूम-धडाके से बरात निकालेगे! दिल के अरमान निकाल लो राम भक्तिनियाँ, सीताजी से बढ के कन्या और कौन मिलेगी?'

ताई गभीर होकर सुन रही थी, उनके चेहरे से लगता था कि बात का प्रभाव पडा है, परन्तु फिर चौक कर बोली—'जो तुम इस लडकी को सीता कह के मेरी बटी बनाना चाहोगे तो—''

''अरे नही रामभक्तिनिया, बढिया मूर्तियाँ लावेगे और प्रतिस्ठा करेगे। फिर हम अपने बेटे को ले जायँगे, तुम अपनी बिटिया की सगाई हमारे बेटे के लिए मागना!''

''मै सीताराम का ब्याह नही करूँगी।''

''क्यो भाई राम भक्तिनियाँ?''

''नई महराज इसमे इस्ट की बात होवे है। मै राधाकिसुन का ब्याह करूँगी।'

''अरे, पर राधा तो चिरकुमारी सुहागिन है रामभक्तिनियाँ!''

''तब मै उसका ब्या इस बार करी डालूँगी। चलो, ये भी भौत अच्छा हुआ कि जो तुम आ गए।''

''हाँ, पर ये न समझना कि हम फोकट मे आ गए रामभक्तिनियाँ! हमारे रामजी दहेज मे तुमसे बहुत कुछ माँगेगे! एक तो तुम्हे कन्या-पाठसाला खोलनी होगी और दूसरे हमारे पागलो के आसरम मे एक कमरा बनवाना होगा!''

''अच्छी बात है, मजूर रही। दूगी!'' कहकर ताई ने बाबा के चरण छुए—''अच्छा चलूँ, मेरे गोकलद्वारे जाने की बेला हो गई है—'' फिर कन्या की ओर मुडकर, ''अच्छा तो सुन री, लडके की छटी के दिन तू आ जइयो। बुआ का सारा नेग दूँगी। तुम भी आना महराज, उस दिन बरम्भोज करूँगी। किसी का भी हो मरा—मेरी ससुराल की हवेली मे न जाने कित्ते बरसो बाद किसी बच्चे की नाल गडी है।''

ताई तेज चाल दालान से गुजरती हुई अपने निवास की ओर चली गई। ताई के जाने के बाद बाबा राम जी ने सज्जन, कन्या और अपने रोगी पागल की ओर देखा। वह जड-भरत एक हाथ मे तुमडी और दूसरे हाथ मे मोटा सोटा लिए बैठा लार टपका रहा था। बाबाजी तुरन्त रोगी की ओर बढे—''क्यो राम भगत?'' पागल ने अपनी फीकी सरल मुस्कान के साथ लार टपकाते हुए धीमे स्वर मे कहा—'हाँ, बाबाजी!''

कन्या की ओर देखकर बाबा जी ने कहा—''बेटी, थोडा-सा जल ले आओ।' कन्या कमरे मे दृष्टि दौडाने लगी। सज्जन भी हिला पर केवल हिल कर ही रह गया। कमरे के दूसरे सिरे पर कन्या को घडौची पर रक्खा हुआ घडा दिखलाई पडा। वह उधर गई। बाबाजी ने सज्जन से कहा—''रामजी हमने तो समझा था आप राम जी है! ह-ह आप सज्जन ह!''

सज्जन पर घडो ठडा पानी पड रहा था

३१

रात मे साढे आठ के लगभग दूकान से घर जाने से पहले कर्नल कन्या से मिलने गया। कमरे के दरवाजे बन्द थे, प्रकाश दरवाजे की झिरियो से छनकर बाहर आ रहा था। कर्नल ने दरवाजे पर दस्तक दी।

"कौन ?" कन्या की आवाज से अधिक उसके आँसू ही उभरकर सामने आए। कर्नल के सामने सारी परिस्थिति आ गई। वह पहले से भी अधिक गभीर हो गया। उत्तर मे उसने कहा—"बिन्नो !"

अन्दर कुर्सी खिसकी, एक क्षण का मौन हुआ, पैरो की आहट पास आई, कुडी खुली। कन्या का चेहरा, प्रकाश पीछे होने के कारण धूमिल दिखलाई दिया। कन्या का धूमिल मानस ही इस समय उसके मुख-मडल की आभा बनकर प्रकट हो रहा था। कुडी खोलकर कन्या लौट कर कुर्सी के पास खडी हो गई। सामने वाली कुर्सी पर कर्नल बैठ गया। कर्नल की नजरे नीची थी, चेहरा विचार-मग्न, कन्या सामने वाली कुर्सी के पास चुपचाप खडी थी।

कर्नल ने मौन भग किया—"बैठो बिन्नो !"

कन्या बैठ गई।

कर्नल ने फिर पूछा—"सज्जन से भेट हुई थी ?"

"हाँ !"

"ताई की हवेली मे उसका सामान आ गया था—"

"आ गया।"

फिर मौन।

कर्नल ने भूमिका-वार्ता के बाद असली बात पूछी—"बहुत नाराज होगा ?"

कन्या चुप रही, आँसुओ पर जब्त कर सिर झुकाए बैठा रहा।

कर्नल ने अपने मित्र की ओर से जैसे सफाई देते हुए कहा—"असल मे राजा साहब ने कहा था, इसीलिए उसे बुरा लगा लेकिन हर जगह मुरौवत नही चलती, इसान के लिए बात की भी कोई कीमत होती है खैर जी, तुम फिकर मत करो बिन्नो, दो दिन बाद मूड ठडा हो जाने पर वो आप ही कहेगा कि कर्नल ये तुमने अच्छा काम किया। मै उसे जानता हूँ न !" कर्नल ने हँस कर बात की गभीरता को हल्के से हल्का करने का प्रयत्न किया, फिर भी वातावरण भारी रहा।

इसके बाद फिर कमरे मे मौन आया, अपेक्षाकृत लम्बा मौन आया। कर्नल ने कमरे मे एक नजर डालकर फिर कहा—"आज तुमने खाना नही बनाया, बिन्नो ?"

कन्या चुप रही।

"तुम्हारी तबियत न चलती हो तो मै अभी बनवा के भेजे देता हूँ।"

"नही, भाईसाहब !"

"चिन्ता न करो बिन्नो, मै तुम्हे यकीन दिलाता हूँ सब ठीक है—और ये खट्टे-मीठे

रहते। मुंडेरे-मुंडेरे चढकर सारे मुहल्ले का चक्कर लगाया करते है। ताई के लिए मुसीबत हो गई है। जब तक तीनो बच्चो को कुछ नही पिला लेती, वे स्वय भोजन नही करती। इस समय भी किस्ना के उपस्थित न होने के कारण उनका भोजन न हो सका। वे कुडकुडाती रही, बडबड़ाती रही, इन बच्चो की माँ को जो अपना पाप इनके घर मे पटक गई, और अपनी सौत बनाकर गालियाँ देती रही।

ताई इस समय बेहद उखडी हुई थीं। किस्ना ने दूध नही पिया, कन्नोमल के पोते का इतना नुकसान हो गया, कल उनकी सौत के पोते का टीका आएगा, दावत होगी, नदो निगोडी ने लौटकर बताया भी नही कि दोनो जतर वह ठीक तरह से मसान मे गाड आई या नही—यह सब चिताएँ ताई को घेर कर उसी तरह परेशान कर रही थी जिस तरह मुहल्ले के लोग उन्हे परेशान करते हैं। सज्जन की कोठरी पर हमला करने वालो की भीड इस समय भी ताई के दिल में किलबिला रही थी। रह-रहकर उनकी हिसावृत्ति उभर उठती थी वे अब भी अपनी कल्पना मे भीड पर जादू का सिदूर फेंक फेंक कर सबका सर्व-नाश कर रही थी।

कोतवाली मे एक का टकोरा बजा। ललिता-बिसाखा ने घर के किसी कोने में शिकार दबोच लिया था। चूहा अन्तकाल की चूँ-चूँ कर मर गया। ताई का मन गालियो से भर गया। बिल्ली के बच्चे बडे होकर अब बडे शिकारी भी हो गए है। ताई के वैष्णव सस्कार ललिता-बिसाखा और किस्ना की शिकारी प्रवृत्ति से घोर घृणा करते है, परन्तु इन बच्चो पर उनका कुछ बस नही चलता।

ताई के कानो में घुर्र-घुर्र की आवाज पडने लगी। ललिता-बिसाखा में से कोई एक बडी जोर से घुर्रा रही थी क्योकि उसके पजे के नीचे शिकार दबा हुआ था, और दूसरी उस शिकार को हथियाने के लिए तरकीबे लडा रही थी। थोडी देर में ललिता बिसाखा 'खाऊँ-खाऊँ-खाँ' करती हुई एक-दूसरे पर टूट पडी। सारा घर कुरुक्षेत्र बन गया। ललिता बिसाखा घर भर मे दौडती हुई जगह-जगह डट कर मोर्चा लेती हुई आपस मे जोर-जोर से घुर्रा रही थी।

"मरो, भाड मे जाओ, मरो सब के सब! रात में भी दो घडी का चैन नही निगोडा! उँह!"—ताई ने कई बार इच्छा की कि उठकर, ललिता-बिसाखा की लडाई में बाधा डाले, पर इस समय वे बिल्कुल चूर-चूर हो रही थी। उनके जोड-जोड में दर्द हो रहा था। भीड़ से ताई जैसी आज घिरी वैसी कभी नही घिरी थी। भीड की दबसट मे कभी धक्के खाकर आगे बढ जाती थी तो कभी पीछे। उनके जादुई सिन्दूर के भय से जनता में ऐसी खलबली पडी थी कि लोग हँसते-नाराज होते और डरते हुए सिदूर से बचने के लिए भाग रहे थे। ताई के प्रति लोगो की घृणा ने ताई को आज बहुत ढकेला, बहुत गिराया-पडाया। कई बार तो लोगो के जूते चप्पल उनके पैरो को खूँदते हुए निकल गए। यद्यपि अन्त में जीत ताई ही की हुई, परन्तु उनकी दशा-कुदशा भी बहुत हो गई थी।

तभी कही से उनके कानो मे किसी स्त्री के जोर-जोर से कराहने की आवाजें आने लगी। ताई के कान चौकन्ने होते ही उनकी बक-झक बन्द हो गई, अपने मुँह से रजाई हटा ली। बिल्कुल ही पडोस मे कोई स्त्री प्रसव पीडा से कराह रही थी। कौन है,

किसके यहाँ है—यह कौतूहल ताई को चैन से लेटने न दे सका। ताई उठकर बैठ गई। ताई को बैठा देख कर किसुन जो अपनी दोनो बहनो ललिता और बिसाखा से कमजोर था उछलकर ताई की गोद मे आ बैठा। लेकिन ताई का ध्यान उस समय कही और था, पडोस में किसी के दर्द उठ रहे थे। अनुमान करने मे ताई की बुद्धि ठीक-ठिकाने पहुँच गई उनकी किराएदारिन तारा कराह रही थी।

ताई के अन्दर का रोष उमड-घुमड कर ऐन उनके कलेजे मे सुदर्शन चक्र-सा घूमने लगा—"राँड, मर जाय तो अच्छा हो! लडका जनेगी खसोटी, दरद तलाबेली से उठ रहे हैं।"

तारा की प्रसव-पीडा की गुहार ताई का मन दूर-दूर तक दौडाने लगी। पहला ध्यान अपनी सौत, और उसके पोते के टीके मे गया। सौत के पौते का तिलक चढेगा, नाच-रग होग, जशन होगे। कल ताई की सौत शहर भर की स्त्रियो मे रानी-सी बैठी होगी। उसकी पतोहू के मिजाज भी आसमान पर चढे होगे। चार दिन मे ब्याह होगा फिर पोते के आगे बच्चे होगे, उनकी सौत—'राँड पडदादी बनेगी, सरग की सीढी चढेगी।'——अपने पति राजा साहब का ध्यान आया। ताई रोष और घृणा से भर उठी। क्रूर आवेश ने उन्हे बैठने न दिया। किसन गोदी मे सो गया था। ताई ने लिहाफ को झटका दिया, किसन जी गोदी से लुढक कर जाग गए। परन्तु ताई उठी नही, न उनका ध्यान ही बच्चे की तरफ गया। तारा की जल्दी-जल्दी उठने वाली प्रसव-पीड़ा भी पार्श्व-सगीत से अधिक इस समय ताई के चिन्तन मे न समा सकी। वो नदो का ध्यान कर रही थी। नदो उसकी सौत की कोठी और मसान मे जतर गाड तो आई ही होगी। 'सतनरायन स्वामी करे कल सझा को जिस दम तिलक चढ रहा होय, निगोडा (सौत का पोता) कटे पेड-सा गिर पडे!'—रग मे भग होगा, हाहाकार मच जायगा, उसकी सौत कलेजा फाड कर डकरा उठेगी, छातियाँ कूटने लगेगी, उसके पति सिर पकड कर बैठ जायँगे, कैसा हाहाकार मचेगा! ताई यह सब सोच-सोचकर हिंसक आह्लाद मे भर उठी। नीद गायब हो गई, पान की तलब लगी। ताई उठी, सिरहाने रक्खी लालटेन की बत्ती ऊँची की। लालटेन पूजावाले दालान मे रख आँगन मे हाथ धोने के लिए आई। तारा की प्रसव वेदना उन्हे निकट से सुनाई पड रही थी। जहाँ पानी रक्खा था, उसके बिल्कुल पास ही एक बद दरवाजा था। यह दरवाजा तारा के घर की तरफ जाता था। ताई हाथ धोकर दरवाजे से कान लगा कर खडी हो गई। उस दरवाजे के बाद तारा के घर की तरफ एक सँकडा गलिहारा है जो तारा की रसोई वाले दालान में निकलता है। उसके बाद आँगन फिर दालान और वो कमरा—यानी कान लगा कर खडी हुई ताई अपनी कल्पना में अपनी किराएदारिन तारा के पास तक पहुच गई, उसके पीडा-ग्रस्त चेहरे को देखने लगी, हँसने लगी, हजार कोसने सुनाने लगी। नित्य-उर्वरा कल्पना से तारा के अन्त की बात सोचते-सोचते ताई पूजा-घर के दालान म आ गई जहाँ उनका पानदान रक्खा था। किसन, ललिता, बिसाखा तीनो उनके पानदान के पास लालटेन को घेर कर बैठ गए। तीनो बच्चे लड्डू ऐसा मुँह लिए टुकुर-टुकुर ताई के पान लगाने को देख रहे थे। सफेद चमडी पर पीले काले धब्बो वाले तीन बिल्ली के बच्चे बडे सुन्दर लग रहे थे—घृणा के तीव्र प्रवाहित नाले में बही जाती हुई ताई को इन बच्चो की एक झलक बडी भायी। उन्हे कही वही अभिमान हुआ

जो उनकी सौत को अपने पोती-पोतो को देख कर होता है—'कैसे भोले बन के देख रहे है निगोडे ! जब हत्या करे हं तब ये भोलापन नासपीटा दिखाई भी नही पडे है ।"

ताई पान धोते के लिए कटोरी में पानी लाई थी, बिसाखा ने उसमें मुँह डाल दिया। ताई फिर चिढ की अटारी पर चढ गई। जब से बिल्ली के बच्चे आए हैं ताई का सारा धरम-करम दिन में सौ बार भ्रष्ट होता रहता है। बिल्ली के बच्चे घर में गदगी फलाते हैं। ताई गालियाँ देती हुई उस गदगी को सौ बार साफ करती हैं। बिल्ली के बच्चे उनके रसोई-घर म, पूजा-घर में, कहाँ नही जाते ? चूहे खाकर पज से मुँह पोछते हुए मस्ती के साथ वह ताई की गोदी मे आकर बैठते हैं, वैष्णवी ताई उस समय इन अखाद्य खाने वाले ललिता-बिसाखा और किसन के प्रति घृणा से भरी हुई बार-बार उन्हे अपने पास से दूर झटकारती हैं। बच्चे बार-बार पास आने का हठ करते हैं। हठ करके लाड लेना बिल्ली का विशेष गुण है। ताई उनसे हार जाती हैं। उन्हे हार कर बच्चो को अपनी गोदी मे बिठलाना ही पडता है। अखाद्य खाने वाले घृणित बिल्ली के बच्चे ताई के किसन और ललिता-बिसाखा बनकर उनके हाथ मे पडी हुई झुरियो को चाटते हैं, अक्सर ताई का मुँह भी अपनी खुरदरी जीभ से चाटते हैं। उनके किसन और ललिता-बिसाखा खेल-कूद मे दौडते हुए कभी-कभी ठाकुरजी के सिंहासन पर भी छलाँग मार जाते हैं। पीतल-ताबे और पत्थर से निर्मित ताई का ठाकुर परिवार तितर-बितर हो जाता है। ताई यह सब सहन करती है। बडबडाते हुए दूसरी कटोरी मे ताजा पानी लेने के लिए ताई फिर उठी। तारा की करुण कराहे ताई के मन मे पैंतालीस साल पहले की अपनी प्रथम और अतिम प्रसव पीडा की याद दिला गईं। ताई पान लगाती रहीं, सुनती रही। पान लगाया, चुटकी बजा कर कृष्णार्पण करते हुए मुँह म रक्खा, तमाखू की चुटकी ली, 'जैसिरी किम्' कहकर मुँह मे रक्खी, हाथ धोए, शान्तिपूवक उठी लालटेन ली, ठाकुरजी वाली कुठरिया मे गई और भडार घर से चाभी का गुच्छा निकाला।

बरसो बाद ताई की तरफ से आज हवेली के उस भाग का दरवाजा खुल रहा था जो इस समय तारा के अधिकार मे था।

दर्द बढते गए। वर्मा कुछ भी इतजाम न कर पाए। वे इस समय अपनी परिस्थिति पर झुंझला रह थे। इसी शहर ही म वर्मा के माता-पिता रहते हैं, तारा के माता-पिता भी रहते हैं परन्तु वह किसी का भी सहयोग नही पा सकते। यह मुहल्ला भी अधिकतर उनके प्रेम-विवाह को घृणा की दृष्टि से देखता है। इस समय अपने प्रेम सबध के प्रति समाज की घृणा से उनके मन में जो उत्तेजना हो रही थी, वह अपने प्रेम प्रतीक अपने होने वाले बच्चे की माँ तारा के कष्ट को देखकर और भी अधिक बढ रही थी। तारा की प्राण रक्षा के लिए वह बावले हो उठे थे। तारा उन्हे अपने पास से हटने नही देना चाहती थी, परन्तु वर्मा हठपूर्वक दाई को कही से ढूढ कर लाने के लिए कपडे पहन कर कमरे से बाहर निकले। दालान मे आए ही थे कि सामने, आँगन के उस पार रसोई वाले दालान मे वह गलिहारा जिसके अगले हिस्से में जलाने की लकडिया रक्खी रहती है इस समय एक मद प्रकाश से आलोकित हो रहा था। एक आकृति क्रमश इस ओर बढती चला आ रही थी। आकृति रसोई वाले दालान मे आ गई। आकृति स्त्री जसी है—सफेद कपडे पहने—चुडैल जैसी !

इस घर में भूतों का बासा माना भी जाता है। दिन भर का डर, इस समय का डर जुड़ कर आती हुई ताई को केवल प्रेत के रूप में ही देख सका। वर्मा के हाथ पैर फूल गए। घिग्घी बँधने लगी—और वह घिग्घी मुक्त कंठ की चीख बन गई। वर्मा दालान में कटे पेड़ की तरह गिर कर बेहोश हो गए।

पति की चीख ने कमरे के अंदर दर्द से विवश तारा को भय के कुएं में ढकेल दिया। पति की चीख का कारण जानने का हौसला, उसके बिस्तर से न उठ पाने के कारण इस समय न जाग सका, पति की चीख उसके अंदर भय को उभार गई। उसका कलेजा उछला, गर्भ के जीव में भी उथल-पुथल हुई—और उसका दिल डूबने लगा। तारा बिना कुछ कहे सोचे या प्रयत्न किए अपने आपको यमराज के हाथों में विवश-सी समर्पित करने लगी। उसका दिल डूबा, वह बेहोश हो गई।

ताई जल्दी-जल्दी आंगन पार कर उस दालान में आईं, वहाँ सोफे के पास वर्मा बेहोश पड़े थे। क्षण भर उन्हें देखने के लिए ठिठकी, फिर कमरे के अन्दर चली गईं। तारा की दशा देख कर उनके शरीर में बिजली दौड़ गई। उनका दिमाग बड़े सधाव के साथ परिस्थिति से जूझने के लिए आगे बढ़ा। अकेल-दम, कमजोर शरीर होने पर भी ताई अपने साहस से जग जीत गई।

वर्मा जब होश में आए, उठकर कमरे में आए। ताई तारा को प्रजनन करा रही थीं। उन्होंने वर्मा को बड़ी जोर से डांट कर भगा दिया। वर्मा को ताई का दैवी सहायता के रूप में यहाँ आना अब भी अकल्पनीय-सा ही लग रहा था। फिर भी वे अब अपने अंदर बल पा रहे थे। ताई ने उन्हें अन्दर से ही पानी गर्म करने की आज्ञा दी, चाकू लाने को कहा, वर्मा चुपचाप उनकी आज्ञा का पालन करते रहे। रसोई-घर वाले दालान में स्टोव जलाने का उपक्रम करते हुए उन्होंने अपने घर में नवागंतुक की अचानक अजीब-सी लगने वाली पहली 'कुवाँ-कुवाँ' सुनी—उनका मन सिहरन से भर उठा। साथ ही उनके मन में तारा के जीवन की ओर से भय का संचार हुआ। स्टोव जलाना भूल वर्मा दौड़े हुए कमरे के दरवाजे तक आए, ताई के भय से ठिठक गए। पहले हिम्मत न पड़ी, फिर वहीं से खड़े-खड़े पूछा—"ताई जी, क्या हुआ?"

ताई बड़ी जोर से झुंझला पड़ीं—"अरे पानी गरम किया है कि नहीं! बाप बना है निगोड़ा!"

वर्मा जी कुछ कहने की हिम्मत न कर सके। हड़बड़ा कर रसोई की तरफ भागे।

आज उन्होंने ताई के अकल्पनीय रूप के दर्शन किये थे मानो उन्हें अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि उनके ऊपर तरह-तरह के टोने-टोटके करने वाली, उनसे शत्रुता रखने वाली घृणामयी ताई ही आकर उन्हें इस संकट से उबारने आई है—यह निष्काम सेवा, पराये के लिए यह प्रेम-भाव, ताई में सहसा कहां से उत्पन्न हो गया, यह बात उनके लिए एक रहस्य ही बनी रही। घृणामयी ताई उनकी दृष्टि में इस समय देवी थी—रहस्यमयी देवी थी।

कन्या और सज्जन आज सुबह ही मथुरा से लौटे हैं। स्टेशन पर सज्जन ने कन्या से बड़ा आग्रह किया कि वह उसके साथ उसकी कोठी पर चले परन्तु कन्या न मानी। कर्नल भाई साहब बुरा मान जाएँगे, यह उसकी दलील थी। सज्जन ने भी अपने आग्रह को अधिक दूर तक बढ़ाना उचित न समझा। चार दिनों तक प्रायः चौबीसों घंटे कन्या के साथ रह कर नये तौर पर सज्जन इतना तो अच्छी तरह समझ ही गया है कि कन्या को उसकी इच्छा के विरुद्ध वश में करना आसान काम नहीं। कन्या अन्य आधुनिकाओं से न्यारा है। वह प्रायः वैसी ही हठीली है जैसी कि सज्जन की माँ थी। सज्जन इन पिछले चार दिनों में कन्या को पाने के लिए बहुत मचला, उससे दूर भागने के लिए भी बहुत तड़पा—परन्तु उसका हठ दोनों छोरों पर कन्या के हठ के आगे बार-बार परास्त हुआ है। यह पराजय उसे जय पाने के लिए बहुत उत्तेजित कर रही है—सज्जन अपनी इसी उत्तेजना को मन में दबा-दबा कर कन्या के सामने सभ्य और सुसंस्कृत बने रहने के लिए इस समय अत्यधिक प्रयत्नशील है। वह अपनी उस बर्बरता का कलंक मिटाना चाहता है जिसका परिचय कन्या पा चुकी है। वह कन्या का हृदय जीतना ही चाहता है—उसकी देह जीतने के लिए ही हृदय जीतना चाहता है। आर कल ही की बात है सुन्दरता का नाश करने वाले बर्बरों पर जब सज्जन ने रिमार्क कसा था तो कन्या गहरी अर्थभरी दृष्टि से उसे देख कर बोली थी—अपनी इस बात को कभी भूल न जाना! सज्जन अपने ही से पराजित, इस बात को न भूलने के लिए तब से ही प्रयत्नशील है! उसने उसके बाद कन्या को छेड़ना तो दूर किसी प्रकार का साधारण मजाक भी नहीं किया। ट्रेन में भी वह कन्या को अजन्ता, आबू, एलोरा, खजुराहो या चिदम्बरम्, मदुरा आदि की सुन्दर शिल्प-कला का बखान सुनाता रहा, संयोगवश दो बर्थों का अकेला कम्पार्टमेन्ट पाने पर भी सज्जन ने बड़े जब्त के साथ वह सौन्दर्य चर्चा की। उसने कन्या के सामने अपना इतना सुन्दर प्रदर्शन किया कि जब वह ऊपर की बर्थ पर सोने गया तो उसका मन बुरी तरह थक चुका था।

आज सुबह स्टेशन पर कन्या ने जब उसके साथ उसकी कोठी पर चलने के लिये नाहीं कर दी तब वह मन ही मन क्षुब्ध हो कर भी जाहिरा तौर पर 'ऐज यू लाइक' (जैसा तुम चाहो) वाली सभ्य मुद्रा में कलाकारोचित मस्ती का ढोंग करता रहा।

मथुरा से तार दे दिया गया था, इसलिए स्टेशन पर उसका ड्राइवर कार लेकर आ गया था। कन्या को पहुँचाने के लिए सज्जन कर्नल के दवाखाने पर गया। संयोगवश कर्नल महाशय उस समय लाला जानकीसरन के साथ अपनी दूकान के पीछे वाले कमरे में बैठे हुए थे। सज्जन की कोठरी पर पिछले रात के हमले की खबर ने कर्नल को इस समय अत्यधिक तपा दिया था। लूट की खबर के साथ ही साथ लाला जानकीसरन मुहल्ले में होने वाली चित्रकला प्रदर्शनी के आयोजन की चर्चा चलाने भी उसके पास आए थे। कर्नल ने पूरी दुनियादारी के साथ लाला जानकीसरन को उचित उत्तर दे दिया था। लाला जानकीसरन जा ही रहे थे—उस समय सज्जन और कन्या वहाँ पहुँचे।

दोनो को देखकर कर्नल का चेहरा खिल उठा। लाला जानकीसरन की नजरो मे इस जुगल जोडी को देखकर अर्थ भरी, छिछोरपन भरी चमक आई।

कर्नल ने अपने नौकर को आवाज लगाई—"भोले, गाडी से बिन्नो का सामान उठाकर ऊपर पहुँचाओ।" लाला जानकीसरन ने सज्जन से कहा—"अमाँ, कहाँ गायब हो गये थे छैल-बिहारी? मालूम है, दो दिन रह गए है नुमाइस के। और हमने ऐसी इस्तहारबाजी की है कि चारो अलँग धूम मच गई है तुम्हारी।"

सज्जन को बडा बुरा लगा। अपने को रोकने का प्रयत्न करते हुए भी उससे न रहा गया, बोला—"जी हाँ, कल मथुरा मे, और तमाम रास्ते भर लोग मुझसे यही कहते आए हैं कि लाला जी ने आपकी बडी धूम मचाई है!"

लाला जानकीसरन कट गए। बोले—"अच्छा भाई, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने, हम लोगो से जो सेवा बन पडी, कर दी। कल रात सालिगराम बेचारे गली मे गिर पडे सो उनके पैर की हड्डी टूट गई है—"

सज्जन ने तुरत 'च्-च्' कर कहा—"अरे कैसे गिर गए?" लाला जानकीसरन मुस्कुराए, बोले—"सुना तो यह है भाई कि तुम्हारी मकान-मालकिन ने उन पर कोई जादू-टोना किया था।"

सज्जन हँस पडा, बोला—"क्यो, क्यो? उन्हे सालिगराम से—"

"अब तुम आए हो, जरा सुस्ता-उस्ता लो तो कर्नल बतलाएँगे सब तुम्हे हाल! अच्छा भाई, चले! राजा साहब के यहाँ जाना है—"

"क्यो, सब खैर तो है?"

"अरे, आज टीके की दावत है भाई—"

"हाँ, हाँ, मै तो भूल ही गया था।"—सज्जन ने कहा।

"आजकल तुम जान कौन से खियालातो मे रहते हो कि अपने को बिल्कुल ही भूल जाते हो। अच्छा भई, चले कर्नल! जैराम जी की!" बाहर जाते हुए लाला जानकीसरन से सज्जन ने कहा—"राजा साहब से कह दीजिएगा कि मै अभी हाजिर होता हूँ!"

लाला जानकीसरन के जाने के बाद इधर-उधर की बाते होने लगी। कर्नल ने कन्या से कहा—"तुम्हारे मथुरा जाने से बडा काम बन गया बिन्नो, अब आज ही तुम्हारे बाप को गिरफ्तार कराता हू औ सालिगराम की वो नकनकी बजवा दूँगा कि याद करेगे बेटा, कर्नल से पाला पडा था।"

सालिगराम का प्रसग छिड जाने पर उनकी टाँग टूटने और ताई के टोटके के सबध मे भी बात चली। कर्नल एकदम से गभीर हो गया। उसे सज्जन को पिछले दिन का सारा हाल और पिछली रात की लूट का सारा ब्योरा देना ही पडा। सुनकर सज्जन और कन्या दोनो के ही चेहरे तमतमा उठे। सज्जन ने निश्चय किया कि घर जाने से पहले वह एक बार अपनी कोठरी की दशा देखने जायगा।

* * *

अपनी 'प्रयोग-चित्रशाला' का यह ध्वस्त रूप देख कर सज्जन अपना आपा खो

बैठा। वह कोठरी एमी लगती थी मानो कत्ल की हुई लाश पडी हो। तस्वीरो के कुछ फटे हुए टुकडे इधर-उधर बिखरे पडे थ। एक कोने मे अधजली छोटी मेज अपनी दो साबुत टाँगो पर कगारू की तरह खडी हुई थी। मुराही के टुकडे, तस्वीरो मे लगे टूटे काँच के टुकडे जो ताई बटोर कर एक कोने मे लगा गई थी उमे अपने रोम-रोम मे चुभते हुए महसूस हुए। गद्दे की रूई आतो की तरह बाहर निकल पडी थी—एक चीज भी तो साबुत न बची थी! सज्जन कन्या और कनल तीनो बडी देर तक चुपचाप खडे रहे। सज्जन की आँखे यो निकली पड रही थी मानो दो पिस्तौले हो जिनसे गोलियाँ छूटने ही वाली है।

कन्या को सज्जन का मौन उग्र रूप डराने लगा। सज्जन को अपने ही क्रोध की जलन मे बचाने के लिए, कुछ कहने के लिए वह वाक्य और शब्द खोज रही थी, परन्तु उसने अपने को असमर्थ-सा पाया। यह छोटा-सा कमरा उसके नूतन ससार का प्रवेश-कक्ष था। यहाँ पहली बार वह सज्जन के निकट आई थी। उसे वह दिन याद आ रहा था जब दैनिक 'नवजीवन' मे नौकरी पा लेने के बाद महावीर जी का प्रसाद लेकर वह यहाँ आई थी, उसने सज्जन को महावीर जी का टीका लगाया था, पहली बार 'तुम' कहा था और झिझक की झिरियो मे झाँकना छोड अपन मन के कपाट खोल वह सज्जन के अति निकट आई थी। उसे ध्यान आया—उस दिन सामने ही ईजल पर सत्यनारायण की कथा का चित्र रक्खा हुआ था, बाहर छत पर महाकवि वोर बैठे थे,-डॉक्टर शीला स्विग आई थी, चाय बनी कैसा अच्छा था वह दिन? कितना सुन्दर लग रहा था ये कमरा? उस सुन्दरता को आज इस प्रकार ध्वस्त देखकर उसे सचमुच ही बडी कसमसाहट हो रही थी। पिछले दिन की बाते याद आ गई। उसने कहा—"तुम्हारी बात सच है—"

सज्जन ने धीरे से उसकी ओर गर्दन घुमाई, कर्नल भी देखने लगे, कन्या बोली—"दुनिया सदा ऐसे आदमियो से भरी रही है जो सुन्दरता से सही तौर पर प्रभावित होकर, उसके प्रति श्रद्धालु होने के बजाय उसका नाश करने मे भी आनद का अनुभव करते है। मथुरा नष्ट करने वाले ऐतिहासिक लुटेरो से वे लोग किसी तरह भी कम बर्बर नही जिन्होन तुम्हारी सुन्दर तस्वीरो का नाश किया है।"

कनल बोला—"अजी, मै तो पहले ही कहता था गली-मुहल्ले अब शरीफो के रहने के काबिल नही रह गए। इनम जाहिलो की बस्ती बसी है। सज्जन इनके मन की सुन्दरता देखने आया था—देख ली सुन्दरता?"

सज्जन तप हुए स्वर म बोला—"यहाँ के लोग अगर समझते हो कि मै इससे डरकर यह कमरा छोड दूँगा तो गलत है। मै यही रहूगा। मै इन मूर्खों की बर्बरता से लोहा लूँगा। हूश कही के! य—य—य— अजता-एलोरा के देश के रहने वाले है? जी चाहता है इन असभ्यो के मुँह पर तेजाब छिडक कर इन्हे जला दूं।"

"बच्चो जैसी बात करते हो, जला सकोगे? इतने सगदिल बन सकोगे?"—कन्या की बात सुनकर सज्जन ने एक ठडी साँस छोडी।

कर्नल ने कहा—"मेरी राय में अब तुम अपनी एक्जीबीशन कैन्सल कर दो सज्जन, यहाँ वाले तुमसे खार खाए बैठे है। उस दिन अगर कोई दुर्घटना हो गई तो ठीक न होगा।

'हर एक्सीलेंसी' आ रही है—बड़े-बड़े लोग आ रहे है, उनके सामने तुम्हारी किरकिरी हो जायगी ।"

कन्या बोली—'नही भाई साहब, नुमाइश अवश्य हो ! यह मनुष्य का दोष नही उसकी सीमाओ का परिचायक है । प्रदर्शनी यहाँ वालो के लिए शिक्षा प्रसार का माध्यम हो, तभी सज्जन के यहाँ आने का उद्देश्य पूरा होगा ।"

सज्जन तमतमाकर बोला—"मै यही रहूँगा ! मै इन कमबख्तो की छाती पर मूँग दलूँगा ! इस रीऐक्शनरी एलीमेट से डरकर भागना सज्जन ने नही जाना !"

छत पर ताई एक पोटली लिए आती दिखलाई दी, कन्या ने उन्हे देख कर हाथ जोडे। ताई ने जवाब न दिया, केवल उसकी ओर घूर कर देखने लगी । उन्होने सज्जन को पोटली देते हुए कहा—"कन्नोमल के पोते, ये तुम्हारी तस्वीरे हैगी । लेई बना दूगी आज, सो सब जोड लेना ।"

क्रोध का प्रबल ज्वार मन के सागर-तट से तुरत पीछे हट गया । ताई की यह बात उसके मन मे हास्य उमगाते हुए उसे स्पर्श कर गई । ताई की ममता महाप्रलय मे मनु की नाव की तरह रक्षा करने आई थी । सज्जन ने पोटली ले ली । ताई हमलावरो को कोसती हुई कहने लगी—"जिन्ने-जिन्ने तेरा नुस्कान किया हैगा, वे सब के सब आठ रोज के अदर निर्बन्स हो जामेगे निगोडे ! औ तू अब इस कमरे मे अपना समान न रखना । मेरी मर्दानी कोठी मे बैठा कर !' कहते-कहते एकाएक उन्होने कर्नल और कन्या को घूर-घूर कर देखा और उनसे बोली—"तुम लोग बाहर जाओ ! जाओ !"

कन्या फौरन ही बाहर चली गई । कर्नल को बडा बुरा लगा । वह कुछ कहने ही जा रहा था कि सज्जन ने उसका हाथ दबा दिया—कर्नल भी बाहर चला गया । ताई सज्जन के बिल्कुल नजदीक आकर धीरे से बोली—"देख कन्नोमल के पोते, तू ब्याह कर ले अब । तेरी बऊ को सौ तोला सोना चढाऊँगी । कौन है ये रॉड ? बेसरम कही की ! मर्दो के साथ मूँड खोले घूमे है !"

सज्जन को इस समय ताई के सामने उस तरह कन्या के लिए झूठ बोलने की इच्छा न हुई जैसे पिछली बार उसने कहा था । उस मजाक को आगे न बढा कर सज्जन ने साफ-साफ कहा—"ताई जी, ये बहुत अच्छी स्त्री है । अगर आप मुझे हवेली में रक्खेगी तो ये भी आएगी ।" ताई ने फिर कुछ न कहा । एक क्षण आँखो मे आँखे डालकर वे देखती रही—"कलजुग आ गया है मरा ! ये भी आवेगी—आवे निगोडी, आवे अपने खसम के साथ रहे मुझे क्या करना ! अपनी तरफ के दरवज्जे बद रखूँगी !" ताई फिर कमरे मे न रुकी जैसे सुट्टमार आई थी वैसे चली भी गई ।

राजा साहब के यहाँ पोते के टीके की दावत बडी शानदार हुई। दो प्रदेशो के गवर्नर, तीन केन्द्रीय मत्री, सारे प्रादेशिक मत्री, उपमन्त्री, अनेक पुराने ताल्लुकेदार, कानपुर, कलकत्ते के दो चार करोडपति तक मौजूद थे। बडा शाही मजमा था। महिपाल ने दावत के समय अपने व्यगो से किसी हद तक बदमजाकी पैदा कर दी। खाने के बाद लान मे आने पर सज्जन ने कहा "महिपाल, तुम्हारा मन इधर बेहद थक गया है। कुछ दिनो के लिये कही बाहर जाकर आराम कर आओ।" महिपाल भी अपने मन मे कही पर यह बात अनुभव कर रहा था। मित्र की सहानुभूति इस समय अनुकूल पडी, बोला "हाँ यार, मेरी मानसिक थकन से उत्पन्न चिडचिडाहट कभी कभी खुद मुझे भी बुरी लगती है। तुम्हारा नुस्खा ठीक है। इधर सयोग से मेरे ममेरे भाई का पत्र भी आया है। सोचता हूँ, इस बार कुछ दिनो के लिये ससारी चिताओ से हठपूर्वक छुट्टी लेकर उनके गाँव चला ही जाऊँ। अब चला ही जाऊँगा।"

अपने निश्चय पर झूम कर महिपाल ने उससे बिदा भी ले ली। सज्जन अकेलापन महसूस करता हुआ स्वय भी घर जाने के लिये निकला तो एक पुरानी परिचित, सज्जन की चिलचिलाती धूप जैसी कुआँरी जिंदगी मे अक्सर छाँव बनकर काम आने वाली मिसेज़ चित्रा राजदान मिल गई। वह घर लौटने के लिये किसी कार वाले को टटोल रही थी। चित्रा किसी की व्याहता नही, बहुतो की रखैल रही। उम्र से जल्दी ढल जाने वाला उसका रूप-सौंदर्य अब भी आकर्षक था। इधर कन्या के चार दिन के इकार भरे सहवास ने सज्जन की आभिजात्य और कलाकार वाली हठ-प्रवृत्ति और भोगेच्छा को मन ही मन जगा रखा था, एक और एक दो मिल गये।

उस रात शराब की झोक मे मन ही मन मे अपने को इस अपराध मे ढकेलने वाली स्वाभिमानिनी कन्या को दड देने के लिये यह भी तय कर डाला कि अब वह चित्रा राजदान ही से व्याह कर के पतितोद्धार का आदर्श उपस्थित करेगा।

दूसरे दिन बडे सवेरे ही राजा साहब का बडा बेटा खुद आकर उसे बुला ले गया। राजा साहब लाला, जानकी सरन और सालिगराम भी अपनी चुटीली टाँग पर पलस्तर चढाये बैठे थे। राजा साहब के प्रभाव मे और इन दोनो के घेराव मे, तकल्लुफ मे बँधकर, सज्जन ने यह वचन दे दिया कि वह कन्या के पिता वाले केस मे कोई सहायता नही देगा। दो दिनो तक वह कन्या और कर्नल से कतराता रहा। चित्रा घर ही मे रही। उधर कर्नल और कन्या ने केस की कार्रवाई आगे बढाई तो अखबारो मे पढकर सज्जन और ताव खा गया। पूरे तीन दिन आवारगी मे बिताकर चौथे दिन दीवान जी को कुछ फर्नीचर, सजावट और उपयोग का सामान ताई की हवेली मे पहुँचाने की आज्ञा दी। दोपहर मे वह स्वय ताई के यहाँ पहुँच गया।

ललिता-विमाग्वा और किसुन तीनों एक साथ बंधे-बँधे भाग रहे थे। ताई ने सज्जन को उन्हें पकड लाने के लिए कहा। सज्जन ने तीनों को खभे से बाँध दिया।

"ताई, मेरा सामान आ गया ?"

"हाँ रे, मैंने सब समान ठीको-ठीक लगवा दिया है। तेरा बठका ससुर जी के बैठके में ही बनाया है मैंने। आर क्यों रे कन्नोमल के पोते, बिट्टिन किसोरी के लडके की जाफत मे गया था तू ?"

"हाँ, ताई।"

"कैसी रही जाफत ? सुना भौत आदमी आए थे ?"

सज्जन जान-बूझ कर झूठ बोला—"नही ताई, ज्यादा नही, छ-सात सौ आदमी थ।"

"कै तरह की मिठाइयाँ थी ?"

सज्जन को याद नही रहा था। इसके अलावा भी वह इस समय फिजूल के सवाल-जवाबो से बचना चाहता था, बोला— 'गिनती मे टुकडे कुछ ज्यादा थे ताई, मगर कुछ था नही।"

कुछ देर चुप रह कर ताई बोली—"कन्नोमल के पोते, तू ब्याह कर ले। ऐसी बडी जाफत करूँगी कि राँड के कलेजे मे आग लग जायगी। बोल, पक्की करूँ ? लडकी तुझे दिखा दूँगी, बडी सुसील है।"

सज्जन इस समस्या से बचना चाहता था, बोला—"ताई जी, मेरी जनम-पत्री में लिखा है कि अगर दो साल के अन्दर ब्याह कर लूगा तो मेरी मौत हो जायगी।"

ताई सुनकर स्तभित रह गई, फिर कहा—"जनमकुडली अच्छी तरह मिलवा-ऊँगी जिसकी पत्तरी मे पूरा सुहाग होगा उसी को—" फिर धीरे से बोली, मानो रहस्य की बात कह रही हो—"कन्नोमल के पोते, किसी का कारज करने की मेरे मन मे बडी साध है। वो राँड सोचती होगी कि उसके तो लडके, पोते है। मल्हर-मल्हर सबको मल्हरावे है। अरे, मैं भी अभी इस लडके की छटी करूँगी, फिर तेरा—"

इसी समय ताई अपने घर की कुडी खटकती सुनकर उधर चली गई। सज्जन ड्योढी के बाहर गली की तरफ आ गया। लाला जानकीसरन अपने बरामदे मे बैठे हुए फलवाले से सौदा चुका रहे थे। उसे देखते ही बोले—"ताई की गोद बैठ गए, भाई ?"

सज्जन इस समय मजाक का जवाब देने के मूड मे न था। लाला जानकीसरन को देखकर वह सकुचित हो उठा। लाला जी बोले—"आओ, आओ, बैठो, दो मिनट ! अरे, आओ भी !"

सज्जन को इनके चबूतरे पर जाना पडा। लाला जानकीसरन बोले—"लडके भले ही बुजुर्गों को भूल जायँ मगर बुजुर्ग लोग बुजुर्ग ही रहेगे। हाँ, राजा साहब को जरूर आज का इखबार पढके तकलीफ हुई। दिन मे उनका टेलीफून भी आया था।"

सज्जन लाला जानकीसरन के और कुछ कहने से पहले ही बोल उठा—"इसमें मेरा कोई हाथ नही, लाला जी। मै इस मामले से अलग हूँ।"

"मगर कर्नल—"

"कर्नल ने इस मामले मे मुझसे कोई राय नही ली।"

"ह-ह-ह ! तो ये मामले हैं !"

सज्जन को लाला जानकीसरन की यह हँसी और बात बुरी जरूर मालूम हुई मगर इस समय वह स्वय ही अपराधी-सा अनुभव कर रहा था, कुछ न बोला। लाला जानकी-सरन ने बात आगे बढाई, कहने लगे—"भइया, पैंमठवाँ साल चल रहा है मेरा। सम्मत चवालिस का जनम है मेरा। तुम्हारे बाप मुझसे काफी छोटे थे। अब हम तुमसे क्या कहे ? तुम तो भगवान की दया से इत्ते नामी-गिरामी हौ, हर तरो से समझदार हौ, बस इमारे मे ही तुमसे बात कहने का धरम है मेरा—सौक सब करो, बाकी अपने आप को सँभाले रक्खो। नगीन चन्द को भी हमारी तरफ से यही नसीहत देना। जो लडकी अपने सगे बाप की नही वो और किसकी हो सकती है भइया !"

सज्जन खामोश रहा। कन्या के प्रति जो धारणाएँ लाला जी बाँध रहे थे वे उसकी दृष्टि मे असत्य होते हुए भी इस समय उसे विद्रोह करने को प्रेरित नही कर रही थी। नुमाइश के सबध मे बाते हुईं। लाला जानकीसरन ने अपने दोनो बडे कमरे उसे दिख-लाए, कमरे चित्रो की प्रदर्शिनी के योग्य न थे, उनमे पर्याप्त उजाला नही था। सज्जन ने बिजली वाले को बुलवा देने के लिए लाला जी से कहा। दूसरे दिन सुबह आठ बजे के लिए यहाँ आने का निश्चय कर सज्जन फिर ताई के हवेली मे लौट आया। कमरे मे कन्या बैठी हुई थी, उसे देखते ही सज्जन कस गया। उससे कुछ न कहते हुए वह एक आराम-कुर्सी पर लेट गया। मुँह दूसरी ओर घुमा लिया।

कन्या ने पूछा—"नाराज हो ?"

"   "

"नाराज होने की बात तो नही—"

"मेरी क्या मजाल कि मै आपसे नाराज होऊँ ?"

"मुझे स्वप्न में भी आशा न थी कि तुम अन्याय का पक्ष लोगे।"

सज्जन चिढ उठा, बोला—"मै न्याय का पक्ष लेने के लिए ही बदनाम हूँ।"

"तब फिर—"

"मै अब इसमे तुम्हारा अन्याय देख रहा हूँ !"

"क्या ?"

क्या का उत्तर सज्जन को ढूँढे न मिला। कन्या बोली—"मै अपने पिता के साथ अन्याय कर रही हूँ ? क्या तुम अब यह उचित समझते हो कि नारी को सर्वदा दलित रहना चाहिए ?"

सज्जन अपना आपा खोने लगा। चिढ कर बोला—"जी नही, नारी को अब कौन दलित कर सकता है भला, दले जायँगे पुरुष—"

"सज्जन, तर्क से बात करो, क्रोध तुम्हे किस कारण से आ रहा है ? क्या मैने तुम्हे किसी प्रकार का धोखा दिया ? क्या यह बात उसी दिन साफ नही हो गई थी जिस दिन मै पहली बार तुम्हारे यहाँ आई थी ?"

"मुझे इसकी शिकायत नही। मेरी शिकायत तो यह है कि जब मैने तुम से मना कर दिया तब चार दिन क्या ठहर नही सकती थी ?"

सज्जन तुम्हारे पास बडे-बडे लोगो की सिफारिशे पहुँची, मेरे पिता को बचाने के लिए नही बल्कि सालिगराम की मान-रक्षा के लिए ! मै क्यो मानूँ ? सालिगराम की किरकिरी हुई, या काग्रेस वाले बदनाम हुए इसका दोष मेरे ऊपर क्यो आए ?"

"मिस वनकन्या, मै आपकी पोलिटिकल चाल को खूब समझ गया हूँ अब तक—"

सज्जन तुम यह अच्छी तरह जानते हो कि सच क्या है। बहरहाल मुझे बहस नही करनी।'

और मै भी बहस नही करना चाहता।" कह कर सज्जन ने फिर मुह फेर लिया। कन्या तखत से उठकर सज्जन के पास आई, आराम-कुर्सी के पास आकर खडे होते ही सज्जन के सिर पर हाथ रख कर उसने कहा—'अब नही बोलोगे ?'

"नही।"

"कब तक ?"

'हमेशा के लिए !'

"न बोलना मै तो बोलूँगी !"

सज्जन को वनकन्या के हाथ का स्पर्श उत्तेजित कर रहा था। यह उत्तेजना ही इस समय सज्जन के लिए और भी अधिक चिडचिडाने वाली बन गई। वनकन्या का स्पर्श सुखद और शीतल था—कम से कम उसे ऐसा महसूस हो रहा था। वह स्पर्श कन्या के अन्तर की सारी पवित्रता' मानो उसे सौप रहा था। सज्जन के अन्तर की 'अपवित्रता' चिढ उठी। पवित्र-अपवित्र की भावना सज्जन के मन मे साफ-साफ उभरी हुई थी। इसके साथ ही साथ वह अपनी अपवित्रता को ही पवित्र मानकर वनकन्या की पवित्रता को अपवित्र करार देने का हठ कर रहा था। सज्जन एकाएक उठ बैठा बोला—"यह तुम मुझसे नही बोल रही मेरे पैसे स मेरी इज्जत और शोहरत से—"

"दूसरी बार सुन रही हू !"

"तुम सदा ही इसे बेशर्म होकर सुनती रहोगी !"

वनकन्या के चेहरे पर एक बार तमक आई, फिर सयत स्वर से कहा—'जिस दिन यह विश्वास हो जायगा कि तुम सचमुच यही समझते हो उस दिन से अपना मुह नही दिखलाऊँगी !' कहकर कन्या हट गई।

"कन्नोमल के पोते !"

"हाँ, ताई जी !"

"सुन, ये जो तेरी है न, इससे कह दे ताराा क लडके की बुआ बन के छटी पूज देगी। जैसे निगोडे वे बेधरम वैसेई ये ! और उसके लिए बुआ कहाँ से लाऊँगी मै !"

सज्जन ने तुरन्त ही साधिकार कन्या की तरफ देखते हुए कहा—"हाँ-हाँ, ताई जी!"

कन्या भी तुरत बोली—"जरूर बन जाऊँगी ताई जी, लेकिन मै अधर्मी नही हूँ ताई जी !" कन्या ने मजाक करने का प्रयत्न किया।

गली का एक कुत्ता अदर घुस आया। कमरे के दरवाजे पर खडी हुई ताई की नजर पडी, "हट !" करती वे उसके पीछे दौडी। कुत्ता घबराकर फाटक की तरफ जाने के बजाय दालान की ओर दौडा। ताई डकराने लगी—"अरे, तेरा सत्यानास जाय नास-

पीटे ! अरे पकडियो—मेरे घर में न घुस जाय—मेरे ललिता-बिमाग्वा—"

सज्जन इसके पहले ही दालान मे दौड गया और कुत्ते को उधर से खेद कर भगाया। कुत्ता आँगन पार करता हुआ सीधा फाटक की ओर भागा। सज्जन फाटक बद करने चला गया। मोटे नक्काशीदार दरवाजे बन्द करते हुए अचानक उसकी नजर गली से गुजरते हुए बाबा रामजी पर पडी।

"कहो राम भगनवा" —बाबाजी अपने दतविहीन पोपले मुँह मे मुस्कुराए। उनकी छोटी-छोटी आँखें स्नेह की चमक से भर गईं। सज्जन उन्हे देख कर ऐसे घबरा गया मानो चोरी करते हुए पकडा गया हो। बाबा जी फाटक की ओर बढे, उनके पीछे उनका मोटा लट्ठ और तुमडी लिए हुए एक घुटमुण्ड लँगोटीधारी चेला भी था। सज्जन ने उनके आने के बाद दरवाजे उटकाए और उनके पीछे-पीछे चला। दालान मे खडी ताई ने एक साधु-वेशधारी को देखकर तुरन्त उनके पैरो मे अपना सिर नवा दिया।

"सुखी हो, सुमति हो, सान्ती हो !"

"महराज कहाँ से पधारे?"

"राम जी के घर से आया हूँ राम भक्तिनियाँ, जहाँ से तू आई है !"

"अरे, ये तो सभी जाने है महराज, मै पूछूँ थी कि—"

"आप तो शायद पागलो का इलाज करते है ?"

"हाँ बेटी, मै पागलो का इलाज करता हूँ। जहाँ पागल होते है वहाँ मै उनकी सेवा करने पहुँच जाता हूँ। क्यो न राम जी !"

सज्जन को लगा कि यह बात उसके ऊपर ही कही गई है। वह सिर झुकाए चुप रहा।

"अच्छा-अच्छा, आपी है, मै गोकलद्वारे में सुन चुकी हूँ ! तो यो कहो कि कन्नोमल का पोता तुमे पैलेई से जाने था।"

"अरे, य राम जी है, ये किसे नही जानते, क्या नही जानते ? इनसे बढकर सत्त को जानने वाला है कौन ?"

सज्जन उसी तरह सिर झुकाए बैठा रहा, बाबा जी ने एक बार कन्या की तरफ नजर डाल, फिर ताई से पूछा—"तेरी लडकी है राम भक्तिनियाँ ?"

"मेरी काए को होने लगी राँड !"

"अरे, तुम्हारी ही तो है राम भक्तिनियाँ ! तुम इसका सौ तोला सोना लिए बैठी हो, इसीलिए गाली देती हो !"

"मै किसी की धेला भर चीज भी नही लूँ हूँ। हाँ, सौ तोला सोना मैं इसे (सज्जन की ओर देख कर)—इसकी बऊ को दुंगी जो ये मेरे कहे से ब्या कर ले।"

"अरे, बिना ब्याह किए ही दे-दे राम भक्तिनियाँ।"

"नही बाबाजी !"

"परोपकार होगा री। औ जो चोरी चला जाता तो क्या कर लेती ?"

"मेरे घर चोरी होने की खबर तुम्हे भी मिल गई थी बाबाजी ?"

"तेरे घर सचमुच चोरी हो गई री राम भक्तिनियाँ ? अरे, मै तो यो ही कह रहा था—उदाहरन दै रहा था।" कहकर बाबाजो मुँह भर कर हँस पडे। फिर कहा—"अच्छा !

तो चोरी भई तबही से राम भक्तिन के मन मे बिचार आया कि सौ तोला सोना किसी को दै डारें !"

"हाँ बाबाजी, बात तो जेइ हे," कहकर ताई का मनहूस चेहरा, चमकती हुई आँखे और काले-काले डठल जैसे दाँत खिल उठे। फिर बोली—"मेरे कौन बैठा है ? और न मुझे मरने के बाद नाग औ नागन का जोडा बन केई बैठना है। नाग और नागन तो वोई बनेंगे राँड के। (बाएँ हाथ की हथली पर दाहिने हाथ का चटाका दे पजा हवा मे बढा दिया) मे तो जब मरूँगी महाराज तो बैकुठ से बिमान आएगा ओर मुझे ले जायगा, देख लीजियो।"

"अरे, राम भक्तिन तू जरूर जायगी ! तेरे लिए तो श्री क्रुस्न भगवान बैकुण्ठ से इसपिसल बिमान भेजेगे ! वे तुझसे परमप्रिसन्न है ! सोचत है, राम भक्तिनियाँ कब आवै बैकुण्ठ मे ओर कब उसकी लठिया लेके हम भागें !" बाबाजी फिर खिलखिलाकर हँस पडे। इस बात पर सबको ही हँसी आ गई। ताई ने भी बुरा न माना, वे चुप हो गईं।

बाबाजी घूम कर सज्जन को देखने लगे। सज्जन निस्तेज होकर बैठा था। बाबा जी के सामने उसकी नजर नही ठहर पाती थी। बाबाजी बोले—"अपनी विजय के दिन बडा मौन धारन किया है राम जी ?"

"बाबाजी, सुनौ," ताई बाबाजी को इशारे से बुलाकर अलग ले गई और धीरे से पूछा—"जनर-मनर भी सिद्ध है बाबाजी ?"

"हाँ राम भक्तिनियाँ, अखिनी, सखिनी, डखिनी जिसको कहो उसको तारें !"

"बाबाजी, मेरी सौत के पोते को ऐन उसकी लगन की बखत मार डालौ !"

"उससे क्या होगा राम भक्तिनियाँ ?"

"मेरे कलेजे मे एक ही आग है, सौत राँड का बस चलेगा। मेरी बेटी भी न रही, नई तो उसी का बस चलता। (धीरे से) भगवान का दिया मेरे पास बहुत है बाबाजी, जो ऐसा कर दो, ठाकुरजी के चरनो की सौ, मै अपना सब कुछ तुम्हे दे जाऊँगी।—बस, सौ तोले सोने मैने कन्नोमल के पोते—"

"मै बनाऊँ राम भक्तिनियाँ ? तू अब कोई बडा भारी उत्सव कर डाल ! बस, इन्ही राम जी को, औ ये ठडी है मीनाजी—"

"ये सब झूटी लल्लो-चप्पो नई करूँगी महराज ! तुम्हे सच्ची कऊ, मुझे फूटी आँखो अच्छा नई लगे है इन दाना का साथ, न जात न धर्म ! अभी मेरे घर मे एक राँडकी ऐसी ही घुस आई। गैर जात मे अँगरेजी ब्या करके बच्चा जनने आई निगोडी, मेरी हवेली में। बस, अँगरेजी पढ ली, न तमीज न सऊर, भोगना मुझे पडे है। मै न होती तो बच्चे की कोई छटी भी न पूजता।"

ताई जोर-जोर से अपना यह भाषण कर रही थी। कन्या और सज्जन कमरे में खडे थे। बाबाजी का चेला तुमटी और डडा लिए बुत बना उकडूँ बैठा लार टपका रहा था। ताई जोश मे थी, कहती चली गई—"मुझे किसी का डर नई है। ये कन्नोमल के पोते ने मेरे साथ एक उपकार किया तो मै भी उसको मानती हूँ। इसके बाबा को, दादी को, मइया को मैने देखा है। ससुर के जमाने से हमारा इनका घरोवा है। इसी से कहूँ हूँ कि तू ये सब दद-फद छोड, मेरी मर्जी का ब्या कर ले, सारा खर्चा मै उठाऊगी। मेरे मन मे बडी साध रह गई, मेरे भी दोहते होते, किसी का मूडन करती, किसी का जनेऊ करती, मेरे घर टीका

आता ''

बरसो बाद—न जाने कितने बरसो बाद ताई की आँखो मे पानी का झलझला आया। बाबा राम जी की कसरती देह तनकर खडी हुई, उनका वृद्ध मुख क्षण भर के लिए गभीर हुआ, छोटी-छोटी आँखे सधी और वे बोले—"राम भक्तिन, तू सीताराम जी का ब्याह कर डाल ! मेरे रामजी, तुम्हारी सीताजी ! खूब बाजे-गाजे धूम-धड़ाके से बरात निकालेगे ! दिल के अरमान निकाल लो राम भक्तिनियाँ, सीताजी से बढ के कन्या और कौन मिलेगी ?"

ताई गभीर होकर सुन रही थीं, उनके चेहरे से लगता था कि बात का प्रभाव पडा है, परन्तु फिर चौक कर बोली—"जो तुम इस लडकी को सीता कह के मेरी बटी बनाना चाहोगे तो—"

"अरे नही रामभक्तिनियाँ, बढिया मूर्तियाँ लावेगे और प्रतिस्ठा करगे। फिर हम अपने बेटे को ले जायँगे, तुम अपनी बिटिया की सगाई हमारे बेटे के लिए माँगना !"

"मै सीताराम का ब्याह नही करूँगी।"

"क्यो भाई राम भक्तिनियाँ ?"

"नई महराज, इसमे इस्ट की बात होवे है। मै राधाकिसुन का ब्याह करूँगी।

"अरे, पर राधा तो चिरकुमारी सुहागिन है रामभक्तिनियाँ !"

"तब मै उसका ब्या इस बार करी डालूँगी। चलो, ये भी भौत अच्छा हुआ कि जो तुम आ गए।"

"हाँ, पर ये न समझना कि हम फोकट मे आ गए रामभक्तिनियाँ ! हमारे रामजी दहेज मे तुमसे बहुत कुछ माँगेगे ! एक तो तुम्हे कन्या-पाठसाला खोलनी होगी और दूसरे हमारे पागलो के आसरम मे एक कमरा बनवाना होगा !"

"अच्छी बात है, मजूर रही। दूगी !" कहकर ताई ने बाबा के चरण छुए—'अच्छा चलूँ, मेरे गोकलद्वारे जाने की बेला हो गई है—" फिर कन्या की ओर मुडकर, "अच्छा तो सुन री, लडके की छटी के दिन तू आ जइयो। बुआ का सारा नेग दूगी। तुम भी आना महराज, उस दिन बरम्भोज करूँगी। किसी का भी हो मरा—मेरी ससुराल की हवेली मे न जाने कित्ते बरसो बाद किसी बच्चे की नाल गडी है।"

ताई तेज चाल दालान से गुजरती हुई अपने निवास की ओर चली गई। ताई के जाने के बाद बाबा राम जी ने सज्जन कन्या और अपने रोगी पागल की ओर देखा। वह जड-भरत एक हाथ मे तुमडी और दूसरे हाथ मे मोटा सोटा लिए बैठा लार टपका रहा था। बाबाजी तुरन्त रोगी की ओर बढे—"क्यो राम भगत ?" पागल ने अपनी फीकी सरल मुस्कान के साथ लार टपकाते हुए धीमे स्वर मे कहा—'हाँ, बाबाजी !"

कन्या की ओर देखकर बाबा जी ने कहा—"बेटी, थोडा-सा जल ले आओ।' कन्या कमरे मे दृष्टि दौडाने लगी। सज्जन भी हिला पर केवल हिल कर ही रह गया। कमरे के दूसरे सिरे पर कन्या को घडौची पर रक्खा हुआ घडा दिखलाई पडा। वह उधर गई। बाबाजी ने सज्जन से कहा—"रामजी हमने तो समझा था आप राम जी है ! ह-ह आप सज्जन है !"

सज्जन पर घडो ठडा पानी पड रहा था

३१

रात में साढे आठ के लगभग दूकान से घर जाने से पहले कर्नल कन्या से मिलने गया। कमरे के दरवाजे बन्द थे, प्रकाश दरवाजे की झिरियो से छनकर बाहर आ रहा था। कर्नल ने दरवाजे पर दस्तक दी।

"कौन ?" कन्या की आवाज से अधिक उसके आँसू ही उभरकर सामने आए। कर्नल के सामने सारी परिस्थिति आ गई। वह पहले से भी अधिक गभीर हो गया। उत्तर में उसने कहा—"बिन्नो !"

अन्दर कुर्सी खिसकी, एक क्षण का मौन हुआ, पैरो की आहट पास आई, कुडी खुली। कन्या का चेहरा, प्रकाश पीछे होने के कारण धूमिल दिखलाई दिया। कन्या का धूमिल मानस ही इस समय उसके मुख-मडल की आभा बनकर प्रकट हो रहा था। कुडी खोलकर कन्या लौट कर कुर्सी के पास खडी हो गई। सामने वाली कुर्सी पर कर्नल बैठ गया। कर्नल की नजरे नीची थी, चेहरा विचार-मग्न, कन्या सामने वाली कुर्सी के पास चुपचाप खडी थी।

कर्नल ने मौन भग किया—"बैठो बिन्नो !"

कन्या बैठ गई।

कर्नल ने फिर पूछा—"सज्जन से भेट हुई थी ?"

"हाँ !"

"ताई की हवेली मे उसका सामान आ गया था—"

"आ गया।"

फिर मौन।

कर्नल ने भूमिका-वार्ता के बाद असली बात पूछी—"बहुत नाराज होगा ?"

कन्या चुप रही, आँसुओ पर जब्त कर सिर झुकाए बैठा रहा।

कर्नल ने अपने मित्र की ओर से जैसे सफाई देते हुए कहा—"असल मे राजा साहब ने कहा था, इसीलिए उसे बुरा लगा लेकिन हर जगह मुरौवत नही चलती, इसान के लिए बात की भी कोई कीमत होती है खैर जी, तुम फिकर मत करो बिन्नो, दो दिन बाद मूड ठडा हो जाने पर वो आप ही कहेगा कि कर्नल ये तुमने अच्छा काम किया। मै उसे जानता हूँ न !" कर्नल ने हँस कर बात की गभीरता को हल्के से हल्का करने का प्रयत्न किया, फिर भी वातावरण भारी रहा।

इसके बाद फिर कमरे मे मौन आया, अपेक्षाकृत लम्बा मौन आया। कर्नल ने कमरे मे एक नजर डालकर फिर कहा—"आज तुमने खाना नही बनाया, बिन्नो ?"

कन्या चुप रही।

"तुम्हारी तबियत न चलती हो तो मै अभी बनवा के भेजे देता हूँ।"

"नही, भाईसाहब !"

"चिन्ता न करो बिन्नो, मै तुम्हे यकीन दिलाता हूँ सब ठीक है—और ये खट्टे-मीठे

अनूबी तो हुआ ही करते हैं बहना मेरी !" बात फिर मौन पर रुकी। कर्नल ने फिर बात उठाते हुए कहा—"एक बात पूछूँ ?"

"जी।"

"तुम लोगो का आपस में कुछ तै हो गया है ?"

" . "

"देखो बिन्नो, दुनिया बडी कठिन है और मैं साफ-साफ कहता हूँ, औरत का मामला बडा ही नाजुक हो जाता है। तुम चाहे कितनी भी आजाद हो मगर तुम सज्जन से शादी करना चाहती हो ? मुझसे साफ-साफ कह दो।"

कन्या सिर झुकाए दाहिने पैर के अँगूठे को फर्श पर चलाती रही। कर्नल ने फिर पूछा—"तुम लोगों की आपस में कोई ऐसी बातचीत हुई है ? बोलो ?"

"हाँ।"

"शादी की बात हुई है ?"

"हूँ।"

"कब, अभी हाल में ही ?"

कन्या ने गर्दन हिलाकर स्वीकार किया।

"तुमसे क्या कहा था उसने ?—इस वक्त मुझसे मत झिझकना। कब करेगी शादी कुछ बतलाया था ?"

"मथुरा में तै हुआ था कि यहाँ आने पर जल्द ही आयोजन होगा।"

"तो फिर करूँ आयोजन ? बात ये है बिन्नो कि अब मैं इस मसले को दूर तक नही ले जाना चाहता। सज्जन एक बार पकड में आ जायगा तो फिर सब कुछ ठीक हो जायगा।"

"मैं किसी पर भार नहीं होना चाहती भाई साहब !"

"इसमें भार होने का कोई सवाल ही नही ! इतना तो शायद तुम्हे भी अन्दाज लग गया होगा कि सज्जन दूध का धोया न होने पर भी बुरा आदमी नही है।"

कर्नल चला गया। उसके जाने के बाद कन्या ने दरवाजे की कुंडी लगाई और निढाल होकर पलँग पर पड गई। इस समय ठगी-सी अनुभव कर रही थी, थकान अनुभव कर रही थी, हार अनुभव कर रही थी। दूसरे दिन तडके ही कर्नल सज्जन के यहाँ पहुँच गया। कमरे मे चित्रा को देखकर उसके मन को धक्का लगा, पर गंभीर रहा। सज्जन भी रँगे हाथों पकडे जाने वाले चोर जैसा हो गया। वे लोग ड्राइंग-रूम मे चले आये। दोनो चुप बैठे रहे। थोडी देर मे चाय आई। कर्नल अब बोला—"सुनो जी, बेवकूफियाँ करने की भी एक उम्र होती है ! मैं आपकी यह आरटिस्ट-गीरी अब हरगिज बरदाश्त नहीं कर सकता !"

सज्जन को भी ताव आने लगा। उसे डाँट खाना कतई अच्छा नही लग रहा था, बोला—"मैं अब बच्चा नही रहा—"

"तुम, बच्चे से भी गए बीते हो—तुम जानवर हो जानवर ! साले आरटिस्ट बनते हो,—इन्टिलिक्चुअल बनते हो ?"

"कर्नल, मैं इस वक्त बहुत सीरियस मूड मे हूँ !"

"मैं भी बहुत सीरियस मूड में हूँ सज्जन ! तुम एक तरफ तो अखबारों में बहुत "

बनते हो औ दूसरी तरफ तुम्हे अपने ऊपर जरा भी काबू नही ?"

सज्जन चुप रहा। उसकी त्योरियो मे बल पडे ही रहे। सुकरू एक प्लेट मे दूधिया लाकर मेज पर रखने लगा। कर्नल झिडक कर बोला—"ले जाओ, कुछ नही चाहिए मुझे इस वक्त!" सुकरू फौरन ही प्लेट उठा कर चला गया। कर्नल बोला—"एक ओर किसी शरीफ लडकी से प्रेम का ढोंग करते हो, शादी करने का वादा करते हो, इन्स्टिरी अधिकारो के लिए मुझसे सिफारिश करने आते हो औ दूसरी ओर घर मे साली—साली रंडी को छुपा रक्खा है!"

सज्जन ने एक बार नजर उठा कर कर्नल को देखा, दोनो की नजरे मिली। सज्जन की नजरे झुकने-झुकने को हुई पर वह हठपूर्वक उन्हे साधे रहा। कर्नल बोला—"अभी कही बिन्नो की नजर उस पर पड जाती तो उस बिचारी का क्या हाल होता?"

'मै दुनिया से छिपाकर कोई काम नही करता!"

"बडे पाक-साफ बनते हो! पाक-साफ के माने क्या होते है जानते हो? जानो कैसे? दुनिया के सामने महानता का नाटक करोगे और घर मे—"

"कर्नल, मै चित्रा से शादी करूँगा!"

कर्नल मानो पहाड की चोटी से गिर पडा। एक सेकेण्ड तक उसे देखते रहने के बाद उसने कहा—"तुमने बिन्नो से वादा किया है!"

"मैने अपना विचार बदल दिया है!"

"क्यो?"

"क्यो का सवाल नही।"

"सवाल कैसे नही जी? आप एक भली लडकी को वचन हार चुके है!"

"वचन जरूर दिया था लेकिन मैने उसके साथ कोई बुराई नही की!"

"बु—राई नही की! जैसे ये आपके बस की ही बात रही हो न! ससुरी रंडिया, जिनकी देह ही गदगी का टोकरा होती है, अब तक तुम्हारी जिन्दगी मे आती रही! एक भली लडकी के साथ उसकी मर्जी के खिलाफ तुम बुराई कर ही कैसे सकते थे? कान खोल कर सुन लो सज्जन, बिन्नो के साथ तुम्हारा एक रिश्ता नही टूटेगा, दो टूटेगे! तुम दिया हुआ वचन लौटा सकते हो लेकिन मै शरीफ हूँ, जिससे एक बार रिश्ता बाँध लिया उससे फिर हरगिज बिमुख नही हो सकता! मै तुम्हारी सूरत नही देखूगा फिर!" कह कर कर्नल कुर्सी से उठ खडा हुआ—"सुकरू!—क्या नाम है के, सज्जन जरा घटी बजाओ!"

घटी के साथ ही दो दरवाजो से दो नौकर दौडते हुए आए। कर्नल बोला—"सुकरू, टेलीफोन यहाँ ले आओ और वो हलुआ-सोहन भी ले आओ और चार टोस्ट भी सिकवा लो।"

आदेश देकर कर्नल बैठ गया। नौकर चले गए तब सज्जन से बोला—"मै आज उसे घर से बाहर निकाल कर ही जाऊँगा!"

"कर्नल, ये मेरा निजी मामला है!"

"सज्जन, ये मेरा भी निजी मामला है!"

"तुम मुझे सोचने की मुहलत दो।"

"मेरे पास अब टाइम नही!"

"उस दिन तुमने राजा साहब के यहाँ जानकीसरन और सालिगराम के सामने—"

"मैने यह वचन तो नहीं दिया था कि बिन्नो को जबरदस्ती राजी कर लूगा। उस वक्त राजा साहब का लिहाज था।"

"तो राजा साहब का लिहाज क्या अब नही है? मेरे लिए राजा साहब कन्या से कही ज्यादा इम्पार्टेन्ट है। लो चाय पियो। ठडी हो गई है टहरो और मँगाता हूँ।" मेज के नीचे लगी हुई घटी का स्विच फिर दबाया।

कर्नल बोला—"राजा साहब को मालूम है कि वो लडकी कैसी है? फिर क्या वो अन्याय-पच्छ पर है? सालिगराम राजा साहब की आड लेकर मेरे ऊपर वार कर जाय ये मै बर्दाश्त नही करूँगा। बिन्नो से तुम्हारा ब्याह होगा और जल्दी ही, समझे?"

नौकर आया, चाय लाने का आदेश हुआ। नौकर केतली उठाकर चला गया। दूसरा नौकर आया, तश्तरी मे दूधिया हलवा-सोहन रख गया। सज्जन को उत्तर सोचने के लिए इतना समय मिला, बोला—"शादी जिदगी भर का सवाल है!"

"तब तुम्हे पहले ही सोच-समझकर रिश्ता बढाना चाहिए था। और सज्जन मैने भी दुनिया देखी है, अच्छी बुरी नजरे पहचानता हूँ। तुम्हारे साथ दस बरस मे मैने जितनी तितलियाँ देखी है उनमे से एक के लिए भी नगीनचद कर्नल के मन मे ये भाव उत्पन्न नही हुआ जनाब कि वो किसी को अपनी बहन कहता। इस लडकी को मै पहली नजर मे पहचान गया था और अब तो खैर वह हरदम मेरी नजर के सामने रहती है।"

टोस्ट सिक कर आ गए, चाय की केटली आ गई। सज्जन ने एक टोस्ट उठा लिया और सुकरू से चाय बनाने को कहा। वह कर्नल की बातो से बचने के लिए एक आड चाहता था। सच तो यह है कि वह खुद अपन से बचने के लिए ही एक आड चाहता था। वह विचारो से बचना चाहता था। वह अपने आप को समझ नही पा रहा था। बाबा रामजी, कर्नल और वह स्वय और वनकन्या का निर्मल व्यक्तित्व भी उसके इस अकारण हठ के विरुद्ध था। राजा साहब की महफिल मे चित्रा का मिल जाना, अचानक उसकी उस सुप्त वासना को जगा गया जो मथुरा-व्रज मे चार दिन तक लगातार कन्या के साथ रहते हुए उसे बारम्बार तडपाती रही थी। कन्या के खिलाफ उसके मन मे यदि कोई बात थी तो वह यही कि वह उसकी इच्छा के आगे नही झुकी।

चाय की दोनो प्यालियाँ दोनो साहबो के आगे रखकर सुकरू हाथ बाँधे अलग खडा हो गया, कर्नल ने उसे चले जाने का आदेश दिया। सुकरू के चले जाने के बाद कर्नल ने कहा—"बोलो, तुमने उसमें ऐसी कौन-सी खोट देखी जो तुम्हारा मन डिग गया।"

"वह हठीली है!"

"और तुम रँगीले हो!"

सज्जन चुप रहा। कर्नल बोला—"दूसरे पर उँगली उठाने के पहले अपने ऊपर भी एक नजर डाल लिया करो!"

खामोशी छा गई। दोनो चाय पीते रहे। नाश्ता हुआ, चाय हुई। नौकर आया, बर्तन उठा ले गया। घडी मे साढे सात बज गए। कर्नल बोला—"अब चलो उठो, कपड़े बदल आओ। या ऐसे ही चलोगे?"

"ऐसे ही चलेंगे।" सज्जन उठ खड़ा हुआ।

कर्नल बैठे-ही-बैठे बोला—"देखो, अब ये बात तो श्योर है कि ये लोग हमें बदनाम करने के लिए कोई न कोई तिकड़म तो करेंगे ही। तुम उखड़ना मत सज्जन, कहे देता हूँ। मैं जान-बूझ कर आज बिन्नो को भी इन्तिजाम मे रखूँगा। मर्द की तरह से काम लेना, उसके ऊपर कोई आँच न आने पाए।"

"कर्नल मुझे मुहलत दो।"

"काहे की मुहलत चाहते हो भइया? या तो ओखली मे सिर न डालते और अब जो मूसलो की चोट से डरोगे तो—मैं कहता हूँ कि—क्या कहूँ! सज्जन, मुँहदेखी नही कह रहा, एक जगह महिपाल से जादा मुझे तुम्हारी इमानदारी पर बिसवास रहा है।"

सज्जन सिर झुकाए चुपचाप खड़ा रहा।

कर्नल ने उठ कर घंटी का स्विच दबाया, सुकरू आया—"सुकरू, वो मेम साहब जब उठे तो उन्हे चाय पिला कर कह देना कि आज साहब से मुलाकात नही होगी। खाना साहब मेरे साथ ही खायेंगे। और देखो, ध्यान रहे कि वो औरत घर की कोई चीज इधर-उधर न करने पाए।"

"जोजेफ से गाडी निकालने को कहो सुकरू।" कर्नल का फर्मान खत्म हो जाने के बाद सज्जन ने धीमे स्वर मे आदेश दिया। उसका हठ इस समय टूट रहा था। सज्जन अपने आप से हार चुका था। इस समय कर्नल के पीछे वह इस तरह सिर झुकाए कमरे से बाहर निकला जैसे कोई प्रबल विद्रोही निरस्त्र होकर पुलिस की हथकड़ियो के कब्जे मे आ गया हो।

३२

आज सज्जन का बड़ा खराब दिन था, सालिगराम चाल चल गए। अखबारो मे यह छपा था कि प्रदर्शनी वार्ड कमेटी की ओर से हो रही है, 'हूर एक्सीलेंसी' उसका उद्घाटन करेंगी तथा इस प्रदर्शनी को राजधानी के सभी प्रमुख कलाकारो एव शिल्पियो का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। नगर के रईस, लाला जानकीसरन की कोठी मे यह प्रदर्शनी होगी। मध्यवर्गीय जन-जीवन को सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत करने के लिए यह आयोजन किया गया है। मुहल्लों में इस प्रकार का आयोजन करने का यह पहला मौका नगर के सुप्रसिद्ध नेता श्री सालिगराम आयसवाल की अपूर्व सूझ-बूझ का ही परिणाम है। सज्जन मन ही मन जल-भुन रहा था। सुबह कर्नल ने उसे निस्तेज किया और अब इस तरह मन फीका हुआ।

बारह बजे तक वह सब के चित्र लेकर लाला जानकीसरन की हवेली में पहुँच गया।

कर्नल और कन्या वहाँ मौजूद नही थे। लाला जानकीसरन बडी आतुरता से मिले, बोले —"भइया हम बडी देर से तुम्हारी बाट देख रहे हैं।"

सज्जन कुछ न बोला। मजदूरो के सिरो पर लदे हुए चित्रो को उतारने के लिए लाला जानकीसरेन को बडी उतावली पडी। उन्होने अपने नौकर को तुरन्त आज्ञा दी। तस्वीरे उतारे जाते समय अनभिज्ञ दास कुछ लापरवाही कर गया। सज्जन ने फौरन ही बोझ को सँभाला और दूसरे मजदूरो के बोझ को वह स्वय ही उतारने लगा। चीजे सावधानी से रक्खी जाने के बाद, मजदूर जब चले गए तब लाला जानकीसरन अपने नकली दाँतो की बत्तीसी दिखाकर बोले—"बहुत थक गए होगे भइया, बडी मेहनत पडी होगी। इस सालिगराम ससरे ने ऐसा कमीनापन किया है कि हम तुमसे क्या बताएँ ?"

लाला जानकीसरन मुँह लटका कर बैठ गए। सज्जन को लाला जी का सालिगराम के खिलाफ शिकायत करना कुछ अजीब सा लगा। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि लाला जी फिर बोल उठे—"हमने भइया राजा साहब को भी फून करके इस मामले मे सलाह ले ली। वैसे तो—वह इस वक्त जरा तुमसे—हाँ, यो ही से मतलब ये है कि तुम तो जानते ही हो! फिर भी उनका नाराज होना बिल्कुल वैसा ही है जैसे कि आज कन्नोमल होते और वो तुम पर बिगडते। राजा साहब टैलीफून पर बहुत बिगड रहे थे सालिगराम से। हमसे कहा कि उसने बडी नालायकी का काम किया हैगा। मगर सज्जन से कहना कि इस बखत जरा तस्कीन से काम ले, नुमाइस कर ही डाले। 'हर एक्सीलेन्सी' का मामला हैगा पर आगे मै इससे समझ लूँगा। "

सज्जन तमतमा कर बोला—"मै अभी ये सब तस्वीरे उठाकर ले जाऊँ तो बाबू सालिगराम को आटे-दाल का भाव मालूम हो जाय। कौन चित्रकार इन्हे अपनी तस्वीरें देता—"

"हाँ-हाँ भइया, सो तो ठीक ही है—"

"खैर, मुझे पब्लिसिटी की चाह नही। भगवान की दया से मेरा नाम बहुत काफी है। सालिगराम को सिर्फ एक ही शहर मे लोग जानते है, सज्जन वर्मा की तारीफ हिन्दुस्तान में ही नही विलायतो तक के अखबारो में होती है।"

"अरे बेटा, मै सब जानता हूँ, तुम तो हमारे बबुआ के बराबर हो, कही कोई तुम्हारी तारीफ कर देता है तो मेरी छाती गज भर की हो जाती हैगी। क्या बतावें, तुम्हारे घर में तो कोई आँखो का सुख लेने वाला भी न रहा बेटा! (धोती के छोर से लाला जानकीसरन ने आँखे पोछी फिर ठडी साँस लेकर) हर इच्छा! चिरजीव रहो भइया, भगवान तुम्हें और रुतबा बकसे, तुम्हारी बदौलत आज मेरे दरवाजे भी हर एक्सीलेन्सी और बडे-बडे लोगो के चरन पड जायँगे! जब तलक जिऊँगा जस गाऊँगा तुम्हारा!"

इसके बाद एक क्षण तक मौन रह कर लाला जानकीसरन ने बडी हडबडाहट के साथ पूछा—"रोटी तो अभी तुमने खाई नही होगी भइया? चलो आओ, हमारे यहाँ तय्यार है।"

"जी नही, मुझे आज कर्नल के घर खाना है, अभी तक आया नही?"

"नही, आए तो थे, चले गए। कर्नल, बेटा हम पर बहुत बिगडे हुए है। उनके साथ

वो लडकी भी आई थी जिसकी वजह से क्या नाम के, राजा साहब को तुम्हारी तरफ से रजिस भई। नगीनचन्द बत्तमीजी की हद पर उतर आया। बुरा न मानना बेटा, तुम्हारा दोस्त है तो मेरा भी मुलाकाती है। अरे भई, उसके बाप लाला मोतीचन्द जी के साथ हमारा ब्योहार था, मगर यह हम तुम्हारे आगे गगाजली उठाय के कह सकते है कि जो सील और खान्दानी सुभाव, मुरव्वत-मुलाहजा तुममे है वह न नगीनचन्द मे है और न, तुम्हारा क्या नाम के, महिपाल जी मे। उनको भी मै तब से ही जानता हूँ जब कि उन्होने मेरे बहनोई रूपरतन के साथ अखबार निकाला था। असल बात ये है भइया, कि खान्दानी रहीम कुछ औरी होता है। अरे, नगीनचन्द के बाप ने पैदा किया। कोई राजा साहब या हमारी तुम्हारी तरह पुस्त-दर-पुस्त से तो लछमी की ये महर्मा है नही उनके यहाँ। खैर, तुम रोटी खा लो।"

"जी नही मै एक बार कर्नल से मिलूंगा। कहाँ गया है, कुछ आपसे कह गया है ?"

लाला जानकीसरन गभीर मुँह लटकाकर एक क्षण मौन रहे फिर कहा—"नगीनचन्द हमसे कह गए है कि नुमाइस मेरे यहाँ नही होगी। वो—वो क्या नाम के, ताई की हवेली मे इन्तिजाम कर रहे है।"

सज्जन सुनकर स्तभित रह गया। कर्नल ने जो निश्चित कदम उठाया था उससे मन मे कही ठडक महसूस करते हुए भी वह स्तभित रह गया, फिर फौरन झटके से खडा हुआ, बोला—"मै अभी हाजिर होता हूँ।"

"सुनो तो बेटा!"

"जी, मै अभी हाजिर हुआ।" सज्जन रुका नही फौरन ताई की हवेली मे चला आया।

कन्या, कर्नल के तीन नौकर, बाबा राम जी और उनके चार स्वस्थ हो जाने वाले पागल आँगन में बैठे झडियाँ चिपका रहे थे। ताई और नन्दो पास ही खडी देख रही थी। ताई और बाबा राम जी बातें कर रहे थे। जिस समय सज्जन पहुँचा उस समय कोई हँसी की बात हुई थी जिसके कारण सबके चेहरे खिले हुए थे।

"आओ रामजी, देखो यहाँ कैसा मगल हो रहा है!"

सज्जन के आते ही कन्या का चेहरा गभीर हो गया। वह सिर झुका कर झडियाँ काटने लगी। ताई बोली—"कन्नोमल के पोते, उदास न होना। जानकीसरन निगोडे का तो मै बस नास कर दूँगी!"

"अरे जाओ तइया, बातें बनउती हौ, तुमरे किए होत-जात कुछ भी नही!"

"रॉड! तू क्या समझे? तेरे हाथ से तौ जो भी काम कराया सो ही औंधा हुआ। पाप की पुटलिया निगोडी!"

"औ ताई तुम—" नदो ताई के गाली देने से अप्रतिभ हो गई बार के सामने अपना तेहा दिखा कर नदो बीच मैदान में जमना चाहती थी सो ताई का मेजा गर्मा गया। वे बोलीं—"अरे, मुझे क्या कहे है! सदा एक आँच की तपी, मेरे ऊपर कोई उँगली भी नही उठा सके है। तू निगोडी आप गदी, सारे जमाने को गदा—"

"राम भगतिनियाँ, जाने दे सुभ कार्ज में इस समय मार को रहने ही दे। (सज्जन से) क्यों राम जी, जिस कार्ज के लिए गए थे वो सफल हुआ ?"

"जी हाँ! तस्वीरें ले आया।"

"सुना ये लोग तुम्हारे साथ नीचता कर गए ? कोई चिन्ता की बात नही राम जी थे तो बिस्व है—" ताई और नदो मे अचानक फिर चखचख चल पडी। नदो धीरे-धीरे कुछ बडबडा रही थी जिस पर ताई अचानक गर्म हो उठी। "निगोडी मीत बढ बढ के मत बोल, कए दूं हूँ। मुझसे अटकेगी तो ऐसी गत कर दूंगी चार दिन मे कि गली-गली कीचड लपेटती घूमेगी। ये बाबा जी भी तुझे ठीक नही कर पाएँगे!"

"धत्तेरे की राम भक्तिनियाँ!" बाबाराम जी नदो पर आँखे निकाल कर गर्जे—"जगत ताई से अटकती है!"

सज्जन इस कलह का आनन्द लेने के मूड मे न था। वह जानना चाहता था कि कर्नल कहाँ है। मगर किससे पूछे ? यो तो वहाँ कर्नल के नौकर ही बैठे थे पर वे इस समय उसे दिखाई ही नही दे रहे थे। वह कन्या से पूछना चाहता था—बाबाराम जी के सामने अपने को पाक-साफ साबित करने की नियत से वह कन्या के प्रति अपना अनुराग झलकाना चाहता था परन्तु कैसे वह अनुराग झलकाए ? कैसे पूछे ? इसलिए उसके होश मे यह सवाल आ रहा था कि वह किससे पूछे। फिर अन्तर की इच्छा ने जोर मारा, वह अपनी झिझक का तोड कर बेसाख्ता पूछ ही बैठा—"कन्या, कर्नल कहाँ है ?"

"खाने का इन्तजाम कर रहे है।"

"किसके खाने का इन्तजाम करने गया है ?"

"इनके, मेरे सभी के लिए।" कन्या ने कहा।

"तूने खाया नही है कफ्रोमल के पोतें ? अरे, तो मुझसे कहा क्यो नही तूने! चार पूडियाँ उतार देती, कितनी देर लगे है ?"

"नही ताई जी, खाना अभी आता ही होगा।"

कर्नल के आने पर सज्जन और कर्नल दोनो ही ने अपने-अपने अनुभव एक दूसरे को बतलाए। कर्नल से जानकीसरन की करारी झडप हो गई थी। उसने कहा—"मै साफ कह आया हूँ, राजा साहब हो या लाट साहब हो, अब किसी की सिफारिश से भी नुमाइस उनके घर मे हरगिज नही होगी। अगर वो चाल चल गए है तो हम भी उसका जवाब देगे। मैने कुछ गलत तो नही कहा ?"

"नही, ठीक है!"

"तुम इसी दम जाओ और सारी तस्वीरे उठवा लाओ। य जगे उससे भी फसक्लास है।"

सज्जन जब लाला जी के यहाँ से तस्वीरे लाने के लिए गया तो उन्होने अपनी पहले वाली मिठास और मुरौवत को भुला कर आँखो में ठीकरी रख ली। चित्रो के जवाब मे ठेगा पाकर सज्जन बहुत उत्तेजित हुआ। लाला जी ने साफ कह दिया कि 'हुर-एक्सीलेन्सी' के द्वारा उद्घाटन हो जाने के बाद ही कुछ सोचा जायगा।

खान्दानी शील और सस्कार वाले लाला जानकीसरन को खान्दानी शील और सस्कार वाले सज्जन वर्मा से दो-चार ऐसी बाते सुननी पडी जिसमे कि लाला जानकीसरन को बुरा लगा। सज्जन सचमुच बहुत ही अधिक त्रस्त और उत्तेजित हो उठा था। कर्नल ने उसे सान्त्वना दी, कहा—"अभी न सही। शाम के साढे चार बजने मे कौन बडी देर

है। इनके उद्घाटन के वक्त ही, हर इक्सीलेन्सी के सामने मैं जानकीसरन और सालिगराम वगैरा की हुलिया न बिगाड़ूँ तो मेरा नाम नहीं। तुम चुपचाप बैठे रहो।"

कर्नल ने ताई की हवेली के आगे झंडियाँ लगाईं, सजावट की।

लाला जानकीसरन ने अपनी कोठी के हर खभे को गेंदे की लडो से सजाया था। चौराहे पर नल के पास एक फाटक, कोठी के सामने एक फाटक और बिजली के रगीन बल्बो की बन्दनवार, उनके घर से लेकर चौक की बडी सडक तक दो फर्लांग के रास्ते मे झडियाँ लगवाई गई थी।

सज्जन क्रोध से भस्म हुआ जा रहा था। कर्नल आराम-कुर्सी पर ऊँघ गया था। बाबा राम जी अपने पागलो को लेकर आ चुके थे। कर्नल के नौकर आँगन मे बैठे थे। कन्या ताई के साथ तारा के घर चली गई थी।

साढे तीन-पौने चार के करीब लाला जानकीसरन का नौकर आया, कहा—"राजा साहब तशरीफ लाए हैं, बुला रहे है।"

"नही, कोई जरूरत नही जाने की!" बगैर आँखें खोले ही कर्नल ने अपने जागने का प्रमाण दे दिया। सज्जन कुछ भी न कह सका। नौकर एक क्षण ठिठका फिर सज्जन की ओर देख कर बोला—"तो हुजूर—"

"हाँ-हाँ जी, कह तो दिया मैंने तुमसे! जाओ यहाँ से!"

नौकर जाने लगा, सज्जन ने कर्नल से कहा—"हो आऊँ कर्नल, राजा साहब—"

"राजा साहब हो या कोई साहब हों। मैं कोई जरूरत नहीं समझता तुम्हारे जाने की। बड़े हैं तो बड़ों के तरीके से पेश आएँ!"

"मैं एक बार हो ही आता हूँ कर्नल।" सज्जन कुर्सी से उठा।

"मैं कहता हूँ कि तुम नही जाने पाओगे सज्जन!"

सज्जन बैठ गया।

पाँच मिनट बाद ही राजा साहब के मँझले साहबजादे तशरीफ लाए—"बाबू जी बुला रहे हैं।"

सज्जन धर्म-सकट में पडा। कनखियो से कर्नल को ताकने लगा। कर्नल अजीब मखमसे में पड़ा, उसके सामने ही त्रिभुवनदास खडे थे, इशारा भी नही दे सकता था। लेकिन उससे बगैर कहे रहा नही गया—"देखिए तिरभोवन जी, वन साइडेड पक्ष लेना गैर-वाजबी बात हो जायगी। सालिगराम साला तो मेरी नजरो के आगे कभी कुछ रहा ही नही मगर हमारी सब की आपुसदारी में लाला जानकीसरन—"

"अरे कर्नल, अब इस वक्त उनकी इज्जत का मामला है—"

"तो हमारी भी इज्जत का ही मामला है!"

"सज्जन तुम आओ।" त्रिभुवनदास सज्जन की बाँह पकड़ कर उठाने लगे। सज्जन से न कहते न बना, कर्नल रोक न सका, सज्जन चला गया।

जिस समय हर एक्सीलेन्सी की गाडी सडक पर रुकी उस समय राजा साहब के नेतृत्व में अनेक पैसे वाले स्वय-प्रतिष्ठित, अपने को बडा आदमी समझने वाले दस-बारह चुगद खीसे निपोरते खडे हुए थे। सज्जन इन बेवकूफों की मजलिस में शहीद बना खडा

था। गली में जानकीसरन की कोठी तक दो फर्लांग के रास्ते मे लाटनी के लिए लाल टूल की पट्टी बिछाई गई थी। हर घर पर पहले ही से फूलो की टोकरियाँ रखवा दी गई थी। हर एक्सीलेंसी पर रास्ते भर पुष्प वर्षा होती रही। चौराहे के फाटक के बाद गली में घुसते ही अगल-बगल डोरी बाँध कर दो आपस में जुडी हुई डलियाँ लटकाई गई थी, हर एक्सीलेंसी के प्रवेश करते ही दोनो सिरो से डोरी खीच ली गई। डलिया से फूलों का बडा गजरा लाटनी के गले में गिर पडा। जानकीसरन की कोठी के आगे मजमा लगा हुआ था, बडे-बडे लोग नजर आ रहे थे—डॉक्टर, वकील, पैसे वाले, सरकारी अफसर, मुहल्ले के लोग और नगर के प्रमुख कलाकार उस गली की शोभा बढा रहे थे। पुरानी और नई पीढी के सभी जाने-माने चित्रकार और शिल्पी लाटनी और रईसो की भीड से अलग, जुगनुओ मे नक्षत्रो की तरह चमक रहे थे। धरा उनसे धन्य थी, वह गली उनके पदार्पण से पवित्र हुई थी। पुलिस का बडा इन्तजाम किया गया था। बाबू सालिगराम और लाला जानकीसरन दोनो को ही इस बात का अदेशा था कि कर्नल और कन्या मिलकर किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित कर सकते हैं।

उद्घाटन हुआ। राजा साहब ने हर एक्सीलेंसी की प्रशसा मे पुल बाँध दिए, तथा इस बात का आश्वासन दिलाया कि यहाँ के गण्यमान्य सज्जन सदा से बडे ही राज-भक्त और देशभक्त रहे हैं। उन्होने सालिगराम की नेतागिरी की भी बडी प्रशसा की और सज्जन के लिए भी दो मीठे वचन बोल दिए।

लाला सालिगराम पैर मे पलस्तर चढा होने के कारण खडे नही हो पाते थे। कॉख-कूँख कर उन्होने भी माइक्रोफोन नीचा करवा कर अपनी नेतागिरी झाडी। उन्होने अपने भाषण में सज्जन का जिक्र न किया बल्कि सब कलाकारो को देश की राष्ट्रीय सस्था के साथ सहयोग करने के लिए 'धन्यवाद' दिया। हर एक्सीलेन्सी ने कला की महिमा बखानते हुए अपने पास खडे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त लखनऊ निवासी देशपूज्य वयोवृद्ध कलाकारो का बडे आदर के साथ अपने भाषण मे उल्लेख किया। राजा साहब को इस आयोजन के लिए बधाई दी और लाला जानकीसरन की कोठी के बडे हाल के दरवाजे पर लगी फूलो की लड को कैंची से काट दिया। तालियाँ पिटी, भीड अदर दाखिल हुई। सज्जन को कमरे में प्रवेश करते ही मानो काठ मार-गया। शहर के अनेक प्रमुख व्यक्ति, अपने गुरुजनो और साथी कलाकारो के सामने वह सिर उठाने लायक नही रह गया था। पचास तस्वीरें एक ही दीवार के पक्खे पर ऊपर से नीचे तक टाँग दी गई थी। मूर्तियो का महत्व लाला लोगो की समझ मे अधिक नही आया था, फिर भी एक मेज पर उन्हे भी रख दिया गया था। कमरे मे सबसे अधिक ध्यान आकृष्ट करने वाली केवल एक ही चीज थी—राजा साहब की महफिल मे फाटक पर बिजली के बल्बो की भारत-माता, जिनके हाथ के तिरगे झडे मे घूमता हुआ चक्र चल रहा था। कलाकार अपनी कलाकृतियो की यह दुर्दशा देखकर भौचक्के रह गए। सज्जन वहाँ से मुंह छिपा कर भाग गया। राजा साहब, जानकीसरन आदि किसी को भी इस समय हर एक्सीलेन्सी और दो-चार बडे अफसरों को छोडकर किसी की भी फिक्र न थी। कर्नल और कन्या कमरे के एक कोने मे खडे हुए थे। हर एक्सीलेन्सी ने जितनी तस्वीरो पर नजर जा सकती थी, देख ली।

हर एक्सीलेन्सी, राजा साहब, दो चार तोंदियल ढपलू रईस और अफसर लोग एक नजर डाल कर कमरे से चलने लगे। बुजुर्ग चित्रकारो ने अपनी कृतियो का इस प्रकार दुरुपयोग होने पर भी जाहिरा तौर पर कुछ न कहा। हाँ वे लोग वहाँ से चले गए।

सज्जन के साथी सुख्यात युवक कलाकार आपस मे इस नुमाइश की चर्चा कर रहे थे। ऐसा लगता था मानो बिजली का तिरगा झडा दिखलाने के लिए ही इतनी कलाकृतियो को गुलाम बना कर उस कमरे मे कैद किया गया है। तिरगे झडे की गुलामी करने से किसी कलाकार को तनिक भी आपत्ति नही हो सकती थी, बात तो यह थी कि भारतमाता और तिरगे का उपयोग इस समय शिखडी के रूप मे हो रहा था। इसकी आड मे चार धनी-धोरी कला को अपना गुलाम—गुलाम दर गुलाम बना रहे थे। सज्जन उसके लिए इन रईसो का, जो लाट साहब की लिस्ट मे प्रतिष्ठित नागरिक कहलाते है, एजेन्ट बन कर अपने कलाकार बन्धुओ का गला कटवा रहा है, इस प्रकार का रिमार्क भी कसा गया।

कन्या पास ही खडी थी, यह सुनकर क्षुब्ध हुई। कर्नल इस समय वहाँ नही था। मुहल्ले की जनता तस्वीरो वाले पक्खे के सामने खडी होकर तस्वीरो को अपनी नजरो से सूंघने की कोशिश कर रही थी। ये सारे चित्र दर्शको के लिए अर्थहीन हो गए थे। कला अर्थहीन हो गई थी।

एक नवयुवक चित्रकार भाषण करने के मूड मे आ गए! हाल मे घूमती हुई जनता को सुनाकर उन्होने इस प्रदर्शिनी के प्रति अपना तीव्र असतोष जाहिर किया।

दूसरे बोले—"क्यो अपने को बेकार थका रहे हो यार। तुम प्रतिष्ठित नागरिक भी नही हो जो तुम्हे दम ताजा करने के लिए इसके बाद चाय और नाश्ता मिलेगा।"

तीसरे ने तप कर कहा—"हम—हम अगर प्रतिष्ठित नही तो ये साले लाला लूली लोग फिर कहाँ से प्रतिष्ठित हो गए?"

दूसरे ने कहा—"इनको सरकार ने प्रतिष्ठित बनाया है। सरकारी और गवर्नरी लिस्ट मे आप को शहर के इन तमाम चमड-चिचडओ के नाम मिलेगे। हमारी आपकी वहाँ कोई पूछ नही।"

"अगर उन्हे हमारी कदर नही तो हम इन सब सालो को अपनी फटी चप्पल की नोक पर मारते है। कहाँ है सज्जन?"

कन्या इस उत्तेजना का उत्तर देने के लिए बरबस आगे बढ आई। उसने कहा—"इन लोगो ने सज्जन जी को ठगा है। चित्र मँगवा लेने के बाद इन्होने उन्हे इस हॉल मे झाँकने तक न दिया। इनके लिए ये कला-कृतियाँ महज बहाना थी। इस बहाने बडे-बडे लोगो को अपने यहाँ बुलाना अपनी पब्लिसिटी कराना ही इनका उद्देश्य था।"

सनक भरी हँसी हँस कर एक बोले—"अजी, पब्लिसिटी तो इन नेताओ की मोनोपैली हो गई है। बडे-बडे साहित्यिको, कलाकारो और वैज्ञानिको की कान्फ्रेंसे बुलाते है, कान्फ्रेन्सो में उपस्थित नेताओ के नाम और उनके भाषणो का विवरण तो अखबारों में पूरे डिटेल्स के साथ दिया जाता है मगर साहित्यिको-कलाकारो के नामो तक का उल्लेख नहीं होता।"

"आप इनके साथ सहयोग करते ही क्यो है ? ठेगा दिखाइए सालो को ! ये लोग जो अपने को बडे आदमी समझते है, इन को चाहे वे नेता हो, पनेता हो, कोई हो—इन सालो को आजकल के जमाने का अछूत करार दिया जाय। जो इसान इसान की तरह से न रह सके, वह कोई भी हो उसका बहिष्कार कीजिए !"

"सज्जन ने तो हमे यह बतलाया था कि मुहल्ले के लोगो को कला की विशेषताओ से परिचित कराने के लिए यह प्रदर्शिनी की जा रही है। एक-एक चित्र के साथ मे चित्र का भाव समझाते हुए कार्डस् टाँगे जायँगे—"

"जी हाँ, विचार यही था। मगर हमें कुछ करने का मौका ही नही दिया गया। जब तक चित्र नही आए तब तक तो खुशामद करते रहे, उसके बाद इस तरह—"

एक महाशय समझाने आए—"साहेब आप लोग यहाँ पर ऐसी बाते न करे। बगल वाले कमरे मे ही सब बडे-बडे लोग—"

"ऐसी-तैसी तुम्हारे बडे-बडे लोगो की ! कहाँ है सज्जन ? बुलाओ उनको ! इन साले बडे आदमियो के लिए हमारी कला का अपमान किया गया है !"

कन्या बोली—"हमने प्रदर्शिनी के लिए दूसरी जगह चुन रक्खी है। बिल्कुल इस मकान के पास ही। वहाँ हमारा सारा प्रबध है। इन लोगो ने अगर तस्वीरें इस तरह दबा न ली होती तो इस प्रदर्शिनी का उद्घाटन यहाँ न होकर वहाँ होता। हर एक्सीलेन्सी के द्वारा न होकर किसी चिकन बनाने वाली कुशल कलाकार के हाथो होता। अगर आप सब कलाकार राजी हो तो इसी समय इन चित्रो को उतार कर—"

चारो ओर से एक ही स्वर उठा—"तस्वीरे उतारो !" कलाकार स्वय इतने उत्तेजित थे कि चित्र उतारने लगे। जनता के कुछ लोगो ने भी उनका हाथ बटाना शुरू किया।

इसी समय लाला जानकीसरन के साहबजादे दो पुलिसमैनो के साथ हाल में धँसे और धँसते ही गर्जे—"खबरदार, कोई तस्वीरो पर हाथ न लगाए !"

जानकीसरन के बेटे ने एक नही अनेक सिंहो के वन मे यह गीदड-गरज की थी। उसका परिणाम भी वैसा ही निकला। कलाकार बेहद गर्म हो उठे। उनके साथ ही साथ अनेक युवक भी उत्तेजित हो उठे। हाल से सार्वजनिक क्रोध की हुकार उठी।

बगल वाले हाल मे चाय प्रकरण समाप्त ही हो रहा था कि अचानक यह शोर उठा। राजा साहब की त्योरियाँ चढ गईं। सालिगराम, जानकीसरन, सभी के चेहरे बिगड गए। आमन्त्रित अतिथियो में खुसफुस होने लगी।

कन्या प्रदर्शिनी वाले कमरे मे जनता की वाणी बन कर बोल रही थी। वहाँ का वातावरण सूली पर चढा-सा मालूम पडता था। सभी कलाकार वनकन्या की बातो का समर्थन कर रहे थे। यह घोषणा की जा रही थी कि अगर उन्हे स्वय उनकी ही कलाकृतियो को वहाँ से उतारने न दिया गया तो कल सबेरे सारे कलाकार सगठित होकर इन बडे आदमियो के अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज उठाएँगे। अखबारो मे, पर्चेबाजी के जरिए हर तरह से इनके दम्भ और ढोंग के मुँह पर थूका जायगा।

"बुलाओ, पुलिस को बुलाओ, किसी को बुलाओ ! ये तस्वीरे यहाँ से हटकर

रहेगी। हम यहाँ से चित्र लेकर ही जायेंगे वर्ना हमारी लाशें ही निकलेंगी।"

कन्या के इस उत्तेजित उत्तर के साथ ही साथ लाला कर्नल दो नौकरो के कधे पर एक बडी सी सीढी लदवाए मुस्कुराते हुए दाखिल हुए। हर एक्सीलेन्सी उस समय विदा होने के लिए बाहर निकली थी। उनके साथ 'प्रतिष्ठितो' का मजमा चल रहा था। लाला कर्नल उन्हे देख कर हाल मे घुसने से पहले हर एक्सीलेन्सी के साथ आते हुए लाला जानकी-सरन को पुकार कर बोले—"लालाजी, तस्वीरे ले जाने दीजिए, इन पुलिसवालो को निकलवा लीजिए बाहर, नही तो हँसी मे खँसी हो जायगी! एलेक्सन धरा रह जायगा।"

राजा सर द्वारकादास, लाला जानकीसरन जहर-भरी आँखो से देखते निकल गए। कर्नल उनके घर का विभीषण था जो राम की सेना मे मिल गया था। कन्या सारे हुल्लड को, सारे असतोष को नियत्रित कर उसे एक रचनात्मक रूप देने के लिए अद्भुत आयोजन कर रही थी। उतरने वाली एक भी तस्वीर इस भीड भरे हाल मे गायब न हो, खराब न हो, इसकी ओर उसका ध्यान था।

सारे चित्र उतर गए। पुलिस या जानकीसरन के आदमियो ने फिर कोई हस्तक्षेप न किया। स्वय कलाकार ही इस समय मजदूर बन कर तस्वीरो को बाहर ढोने लगे। जानकीसरन के हाल से निकलते हुए कर्नल ने ये ऐलान किया—"भाइयो, कल शाम को ताई की हवेली मेँ उद्घाटन होएगा!"

प्रदर्शनी की असफलता के लज्जा-भार से दबी-कुचली अहता को लेकर सज्जन वहाँ से भाग निकला।

३३

कर्नल के घर पर तीन बजे रात तक प्रदर्शिनी को सफल बनाने के लिए आयोजन होता रहा। कन्या भी वही थी। प्रदर्शिनी का फिर से उद्घाटन कराया जाय, यह तय हुआ। किसी चिकन का काम काढनेवाली गरीब विधवा द्वारा इस कला प्रदर्शिनी का उद्घाटन हो, यह निश्चय तो शाम को चित्रकारो के बीच में ही हो चुका था। चित्रकार मदन ही ने यह सुझाव दिया। उन्होने कहा था कि मैने अपने चित्रो की प्रदर्शिनी का उद्घाटन पिछले साल किसी लाट, गवर्नर और मिनिस्टर से न करा के लखनऊ के एक खिलौना बनाने वाले श्री रेवती राम से करवाया था। डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी ने उद्घाटन-भाषण दिया था। इस प्रदर्शिनी के लिए भी ऐसे ही उद्घाटन का आयोजन क्यो न किया जाय? सब को, खासकर कर्नल और कन्या को यह सलाह बहुत जँची। इसी के अनुरूप उद्घाटन समारोह का प्लॉन बना। यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, साहित्यिक, पत्रकार आदि लोगो को आग्रहपूर्वक लाने के लिए निश्चय किया गया क्योकि कर्नल जानता था कि जानकीसरन, सालिगराम आदि आज का बदला कल अवश्य लेगे।

रात मे कर्नल और कन्या बैठे हुए यही सब बाते कर रहे थे। कन्या दुचित्ती हो रही थी। सज्जन के प्रति उसका ध्यान खिच-खिच जाता था। कर्नल ने बातो-बातो मे दो-एक बार इस पर गौर किया था, परन्तु इस समय सालिगराम आदि से अपनी लडाई का नक्शा तय्यार करने मे वह इस समय इतना उलझा हुआ था कि उसे कन्या की इस अनमनी दशा पर ध्यान देने की फुरसत ही न मिली। एक के बाद एक स्कीमे बन रही थी— लाउड-स्पीकर लगाए जायँगे, एक हवेली के अन्दर, दूसरा उसके फाटक पर उसमे सब बडे-बडे आदमी, प्रौफेसर, साहित्यिक, बडे-बडे वकील, बैरिस्टर, जज और डॉक्टरो के भाषण करवाए जायँगे। वे लोग सब इस नुमाइश के बारे मे अपनी राय देगे जिससे कि जनता पर अच्छा प्रभाव पडेगा। बीच-बीच मे भजनो के रेकार्ड भी बजाये जायँगे —अचानक कर्नल को एक नई सूझ आई, बोला—"बिन्नो, एक लाख रुपए का आइडिया आया है इस वक्त! कल, परसो और नरसो तीन दिन नुमाइश रहेगी। मैं तीनो दिन बच्चो को मिठाई बाँटूँगा। अरे, ज्यादा से ज्यादा हजार दोने रोज बटेगे, पाँच-छ सौ का खर्च होगा तो होने दो। अरे चार बडे आदमियो को मिठाई खिलाई तो किसने देखा? लडके लोग मिठाई खायँगे तो गली-गली जस गाते फिरेगे। अपने राम के पास तो ऐसी ही इस्कीमें है। तुम क्या सोच रही हो बिन्नो?"

"जी, कुछ नही। मै तो आपकी बाते सुन रही थी। हाँ ठीक है, पाँच-छ हजार लडको को मिठाई बाँटिएगा मगर इतना खर्चा —"

"सुनो बिन्नो, सज्जन की तरफ से चिन्ता करने की कोई जरूरत नही। होती तो क्या मै यो चुपचाप बैठा रहता? मैं तुमको उसकी पूरी सीनरी बता सकता हूँ—नुमाइश से मुँह छिपा के भागे, अन्दर ही अन्दर रईसजादे बडे कुडमुडाए होगे। थोडी देर बख्शी के ताल वाली सडक पर रैश-ड्राइविंग की होगी, फिर घर जाकर एक सिरे से घर के नौकरो को किसी न किसी बहाने डाँटा होगा, खूब पी होगी हाँ, पीता तो है लेकिन कभी-कभी, ये उसमें खराब बात है। बात असिल में ये है बिन्नो कि मै बडी उमर तक क्वारे रहने के बिल्कुल खिलाफ हूँ। इससे बडी-बडी खराबियाँ पैदा हो जाती है, सज्जन मे भी कुछ ऐब आ जरूर गए है। ऐब किसमें नही होते बिन्नो। इसकी वजह से तुमको कोई रंजिश नहीं होनी चाहिए।"

"जी नही, मुझे कोई शिकायत नही। हाँ, तो आप पाँच-छ हजार लडको की मिठाई बाँटने की—"

कर्नल हँस पडा, बोला—"पाँच-छ हजार लडको को मिठाई बाँटूँगा मगर अभी नही, तुम्हारे ब्याह के दिन। अभी तो सिरफ हजार दोने तक बाँटने की इस्कीम है।"

बाते चल रही थी कि अचानक टेलीफोन की घटी बजने लगी। जगतचद, हरखचद जौहरी के यहाँ से फोन आया था। उससे मालूम हुआ—"राजा साहब, कर्नल और सज्जन से बेहद नाराज हैं। अभी थोडी देर पहले उनके यहाँ कुछ चुने हुए लोगो की बैठक हुई। सालिगराम और जानकीसरन भी मौजूद थे। तुम लोगो के खिलाफ ये इल्जाम लगाया गया है कि चाल-चलन ठीक नही और किसी कम्युनिस्ट लडकी को तुम लोगो ने रख छोडा है। तुम लोग कम्युनिस्ट पार्टी से मिल गए हो। इसलिए कल जिस वक्त तुम्हारी

नुमाइश होगी उसी वखत लाला जानकीसरन के चबूतरे पर लाउडस्पीकर लगा कर, बाकायदा चार जाने-माने लोगो की बैठक करके तुम लोगो की बदचलनी का पब्लिक मे एलान किया जायगा।" कर्नल को यह भी बतलाया गया कि कुछ दिन पहले ही सज्जन की कोठरी से मुहल्ले मे होने वाली प्रेम घटना के सबध मे भी सफाई माँगी जायगी। राजा साहब चूँकि ऐलानिया तौर पर इस प्रस्ताव के साथ है, लिहाजा लोगो पर उसका बडा असर पड रहा है। राजा साहब खुद तो कल की मीटिंग मे नही आएँगे मगर उन्होने खुद कई जौहरियो को और बडे लोगो को फोन किया है।

कर्नल बडी गम्भीरता से शान्तिपूर्वक सारी बाते सुनता रहा। अन्त मे उसने कहा—"देखिए जगतचदऔ हमारे मन का क्या भाओ है सो भगवान जी जानते है। मेरे मन मे उस लडकी को लेकर अगर कोई भी पाप होगा तो मुझे दादा गुरुजी के चरन भेटना नसीब न होगे। मै बदी से डरता हूँ बदनामी से नही डरता।"

परिस्थिति गभीर हो गई। कन्या को कर्नल ने यद्यपि सारी बाते न बतलाई फिर भी उसके सामने परिस्थिति साफ हो गई। कन्या का चेहरा क्रोध और लज्जा से लाल हो रहा था। कर्नल हँसकर बोला—"भगवान जो करते है सब अच्छे के लिए करते है। अब की ऐसा मालूम होता है, राजा साहब की जनमपत्री मे भी अपनी नाक कटवाने का जोग लिखा है। अब तक तो सालिगराम की नेतागिरी से ही मोर्चा लेने की ठानी थी, अब राजा साहब की करोडी हैसियत पर भी चूना लगाऊँगा। अपने सीधे आदमी, सीधी चाल चलते है बिन्नो, यही हमारी जीत है। ये लोग जहाँ सुई नही समाती वहाँ फावडा चलाने की कोशिश करते है। मै कभी आज तक इस बेवकूफी मे पडा ही नही। आदमी को जाँच के उसके हिसाब मे चाल सोचता हूँ, जैसे डॉक्टर मर्ज को पहचान कर प्रिस्क्रिप्शन लिखता है। जानती हो इसके जवाब मे मै क्या करने वाला हूँ? कल सबेरे तुमको और तुम्हारी भाभी को सब बडे-बडो के यहाँ नुमाइश का न्योता देने भेजूँगा। क्या बताऊँ ये सज्जन ससरा इस वक्त ऐसा लेडी निकला कि—मै महिपाल को सबेरे ही तार देकर बुलाता हूँ। बिन्नो, मेरे नाम से एक लेख तय्यार करके छपा दो, मै तुमको अपने मन के सब भाओ बता दूँगा। "

कन्या अपने ध्यान मे डूबी हुई थी। उसका जीवन फिर चट्टानो से टकराने के लिए मजबूर किया गया है। उसका मन कह रहा है, वह सज्जन को इस समय खो चुकी है, सज्जन का आना उसके जीवन का अभिशाप सिद्ध हुआ। निराधार के आधार पर वह अब तक गर्व करती रही है—उसने कितना गहरा धोखा खाया है।

× × ×

नुमाइश के साथ ही साथ औरतो के मेले की सफलता ने राजा साहब, बाबू सालिगराम और लाला जानकीसरन की बडी लूलू बुलवा दी। जनसघ, प्रजासोशलिस्ट, कम्युनिस्ट आदि सभी विरोधी दल के लाउडस्पीकरो को काग्रेस के खिलाफ प्रोपेगडा करने के लिए एक नया और दमदार बहाना मिल गया। वनकन्या के पिता की गिरफ्तारी, वनकन्या और सज्जन के मथुरा जाकर प्रमाण सग्रह करने की अद्भुत, रोचक और रोमाचकारी कथा—जो स्वय सज्जन और कन्या को भी नही मालूम थी—विपक्षियो की ओर से सुनाई जाने लगी। अफवाहो की दुनिया मे, चुनाव की आबहवा मे सज्जन और वनकन्या, सन

बावन के लैला-मजनूँ हो गए। कर्नल का लाउडस्पीकर भी सडको पर राजनीति से अपनी तटस्थता घोषित करता फिर रहा था—"हम केवल नारी जाति पर होने वाले अत्याचारो के खिलाफ आवाज उठा रहे है। हम इस चुनाव के हुल्लड मे होश कायम रखना चाहते हैं। इस चुनाव का जो उद्देश्य है उसे हम जनता से अमल मे लाने की भीख मागते है।"

तीसरे दिन सालिगरामी-प्रचार का रुख भी बदल गया। वार्ड मे प्रचार कार्य के लिए आए हुए दो मिनिस्टरो की कार को घेर कर लोग उन्हे गालियाँ देने लगे। वातावरण उग्र होने लगा।

सेठ रूपरतन और एक मिनिस्टर महोदय ने कर्नल सज्जन, बाबू सालिगराम और लाला जानकीसरन को समझौता कराने के लिए चाय पर आमत्रित किया। सज्जन बहुत उखडा हुआ था। चित्र प्रदर्शिनी जब से औरतो का मेला बन गई तब से उसे वहाँ भी नही जाना पडता। वह मुक्त है। चित्रा रूपी अस्त्र को लेकर उसने अपने सत्य पर इतने प्रहार किए कि अब इस समय तक उसकी चेतना को लकवा मार चुका था। आन्तरिक ग्लानि से अभिभूत होकर वह जड हो गया था। इन दिनो कन्या ने कठोर व्यगवाणो से उसके दिल पर जो करारे वार किए थे उनसे वह पत्थर हो गया था। दो दिन से पुराने और मुँहलगे नौकर तक उसके कमरे मे जाने से डरते थे, क्योकि इस बार उनका मालिक किसी पर नाराज नही हो रहा था। किसी चीज की फरमाइश नही कर रहा था, शराब की भी नही, सिगरेट की भी नही, चाय-कॉफी भी बहुत कम। मालिक का अधिक समय पत्थर की तरह बैठे ही बीत जाता था। कभी-कभी होठ चल जाते थे। बडे दीवानजी ने कर्नल की दूकान पर आकर सारा ब्योरा कह सुनाया। कर्नल इधर मेले मे व्यस्त होने के कारण सज्जन से मिल नही पाया था। कर्नल ने उन्हे आश्वासन दिया और कहा कि मै फुरसत से आऊँगा, घबराने की कोई बात नही।

दीवान जी बोले—"और तो कोई अदेशा नही, मगर उनकी मेज में—"

"आप कमरे की निगरानी बराबर रखिए—"

"सो तो है, फिर भी—"

"आप जाइए, बेफिक्र हो जाइए। वैसे होनी की कोई नही जानता पर इतना मैं जानता हूँ कि सज्जन अपने आप को कभी मार नही सकता।"

कर्नल की गाडी ने कन्या को दिन मे दस बजे सज्जन की कोठी पर पहुँचा दिया।

कन्या कमरे मे पहुँची, सज्जन सामने ही सोफा पर बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। दरवाजा खुलते ही उसने कन्या को देखा और चौंक गया। सहसा सर्चलाइट पर पड जाने से चोर ज्यो रँगे हाथो पकडाई मे आ जाता है—सज्जन का चौकना उसी प्रकार का था। घबराहट मे वह अपनी सिगरेट मुट्ठी में छिपाने लगा, मानो वह गुनाह हो। उसकी हथेली जल गई। उसे होश आया। कन्या बडे सहज भाव से मुस्कराती हुई आ रही थी। पास आकर अपना कोट उसकी गोद में फेंकते हुए कहा—"ये आजकल किस आर्टिस्टिक मूड का ज्वार उठा है"— उसने अपनी पाँचो उँगलियो से सज्जन के रूखे बाल जकड लिए और आँखो मे आँखें डाल त्योरी चढा कर बोली—"देखो जी, तुम्हारे इन आर्टिस्टिक स्टटों को अब मै हरगिज नही चलने दूँगी। अब कुछ तुम मेरे लिए छोडो कुछ मैं तुम्हारे

लिए छोड़ूँगी। तभी तो निभेगी। बोलो, करते हो कान्ट्रैक्ट ?"

सज्जन की आँखे जब पहले मिलने को मजबूर हुई तो बहुत सकपकाई हुई थी। दोनो आँखो के थर्मामीटर मे अपनी गर्मी नाप रहे थे। सज्जन का डावाँडोल हृदय कन्या की आँखो मे अपनी स्थिरता को जाँच रहा था। कन्या की आँखे भी सज्जन की भयभीत, सरल और हठीली पुतलियो मे अपना जमाव देख रही थी। कन्या उससे अलग होकर बोली—"इन तीन-चार दिनो मे, सच कहती हूँ, तुम्हे एक सेकेण्ड के लिए न भूलकर भी आल दि ह्वाइल काम की वजह से तुम्हे भूली रही हूँ। तुम्हारे मूड ने पहले तो मुझे धक्का पहुँचाया था पर इस मेले ने और सामाजिक प्रतिद्वन्द्विता ने मुझमे नई जान डाली है। हमने एक उद्देश्य के लिए करारे सघर्ष का सामना किया है।"

वनकन्या ने सज्जन के आत्मग्लानि भरे जड क्षणो मे सहसा हलचल भर दी। कन्या स्फूर्ति से भरी हुई है। उसकी एक-एक बात उसके दो दिन के घुटने और गर्मी भरे दिल मे ताजा गुलाबो की महक भरी ठढी हवा के झोके-सी लग रही है। वह जिस प्रसग का वर्णन कर रही है उसके नायको मे उसका भी श्रेय है। यह सज्जन के निकम्मे मन मे सतोष भरने लगा। कन्या दूरी के नाते का एक और पर्दा उठाकर निकट आ गई।

कन्या बोली—"सज्जन, आज मै दो घटे की छुट्टी बिताने के मूड मे आई हूँ। पहले तो कुछ नाश्ते की चीज तय्यार करवा ले, फिर घटे-डेढ घटे बाद खाकर मै चली जाऊँगी।"

"तो मँगवा लो।"

"न-अ, मैंने उस दिन से तुम्हारे नौकरो को आदेश देने की कस्म खाई है।"

सज्जन तेजी से उठा, मेज के नीचे लटकती घटी उठाई, स्विच दबाया और कन्या की ओर देखते हुए बोला—"मै उसके लिए—"

दरवाजा खुला, सचितसिह तौलिया कधे पर सँभालता हुआ दरवाजा खोल कर अदर आ गया।

"ठाकुर, आज से ये घर इनका है, मेरा नही —और किसी का भी नही। समझे ?" सज्जन के चेहरे के मसल्स, उसका सारा स्नायुमडल, यह कहते हुए फडकनो से भर गया। गहरे शराबी की तरह उसका तमाम जिस्म हिल रहा था। सज्जन ने बडी दृढता से आपको सँभाले रक्खा, गो चूक में घटी का स्विच उसकी मुट्ठी में रह गया था सो बाहर देर तक बजता रहा। ठाकुर यह अनुभव करते हुए भी कुछ नही कर सकता था। मगर उसकी भाव-भंगिमा से कन्या का ध्यान घटी की आवाज की तरफ गया और उसने सज्जन से हँसते हुए कहा—"घटी पर अब रहम कीजिए जनाब।"

इतनी ही देर में साहब की लबी घटी सुनकर छ नौकर और आ गए। सज्जन को अपने खोएपन पर हँसी आ गई। नौकरो की स्थिति अजीब हो गई। बहरहाल, इतना सतोष तो सबको था ही कि उनके साहब अब फिर से आदमी हो गए हैं और इस घर में एक असली घरवाली भी आ गई है। सज्जन ने नौकरों से हँसते हुए कहा—"खैर अब आ ही गए हो तो तुम लोगों को बख्शीश मिलेगी। इस महीने में सब को दुगनी तनख्वा मिलेगी बख्शीश के तौर पर। अब से इनका हुक्म मानना।"

कन्या के कामरेडी मन को यह तमाशा अच्छा न लगा। सज्जन इतने में कन्या की

ओर देखते हुए मुस्कुरा कर बोला—"अब हुक्म दीजिए।"

वनकन्या को जीवन के नये वातावरण में नया काम करते हुए बड़ी लाज आई। उसके गाल लाल हो उठे। उसने सज्जन से कहा—"क्या तमाशा करते हो, कह दो।"

सज्जन सबके सामने हठपूर्वक सिर हिला कर बोला—"नहीं, तुम्हीं कहो।"

बड़ी कठिनाई के साथ कन्या ने नौकरों की ओर देखते न देखते कहा—"अरे कुछ, यों ही कुछ नाश्ते के लिए ले आइए और खाना एक घंटे-डेढ़ घंटे के बाद।"

"जी हुजूर।"

कन्या संकट में पड़ गई—"आज आप लोग अपनी तबियत का खाना तैयार करें। मैं डेढ़ बजे यहाँ से जाऊँगी, बस, इस बात का ध्यान रखिएगा।"

नौकरों से कमरा खाली हुआ, दोनों ने दोनों को नई दृष्टि से देखा। सज्जन अब भी अपने आप को पूरी तौर पर सँभाल नहीं पाया था, फिर भी उसे यह अनुभव होने लगा था कि कन्या के साथ अपना संबंध घोषित करते हुए, नए जीवन में प्रवेश करते हुए उसे कहीं फिर से जमाव मिल रहा है। चित्रा के साथ अपने विपरीत हठ की प्रतिक्रिया से उसके अंदर की चेतना पर जड़ता का जो मोटा आवरण पड़ गया था, वह अब हट रहा था। सज्जन मन से संतुष्ट था, सावधान हो रहा था, क्रमशः स्वस्थ हो रहा था।

उसी दिन रात को सेठ रूपरतन ने सालिगराम और जानकीसरन से समझौता कराने के लिए सज्जन और कर्नल को बुलाया था। एक मिनिस्टर महोदय की भी वहाँ उपस्थिति होने की संभावना थी। कर्नल ने कहा कि इस मीटिंग में वनकन्या की उपस्थिति और उसकी राय सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। सेठ रूपरतन को कर्नल की यह शर्त माननी ही पड़ी।

सज्जन का दिन बहुत अच्छा बीता था। कन्या ने अपने पिछले चार-पाँच दिनों के अनुभव सुनाए—कैसे-कैसे घरों में वह नुमाइश के लिए निमंत्रण देने गई, उसने इतने घरों की झलक में क्या-क्या पाया। मेले में आने वाली स्त्रियों की बातें और उनके व्यवहार से कन्या को कैसे-कैसे अनुभव हो रहे हैं यह सब सुनते-सुनते ऐसी तन्मयता छाई कि सज्जन को अपने 'पाप' पर पश्चात्ताप करने का मौका ही न मिला। कन्या कितनी उत्साह भरी थी, सुनाते हुए कैसी खो जाती थी। वह जैसे एक सपने को साकार कर रही थी—सज्जन पर उसकी जबरदस्त छाप पड़ी। चलते समय कन्या के बाएँ हाथ की तीसरी उँगली में एक हीरे की अँगूठी चमक रही थी। दिन में कन्या के चले जाने पर सज्जन बड़ी देर तक खोया-सा बैठा रहा। उसे बाबा रामजी की याद आई, जी हिचका फिर हठकर उसने जाने का निश्चय ही किया।

तीसरे पहर की धूप गोमती के तट पर फैल रही थी। बाबाजी के पागल लँगोटा बाँधे रेस कर रहे थे। बाबाजी घाट के दो सायबानों के बीच के खुले आसमान और खुली धरती में खड़े रेस देख रहे थे।

घाट पर पहुँच कर, बाबाजी का सामना करने में सज्जन को बड़ी कठिनाई हुई, फिर वह आगे बढ़ता हुआ चला गया। बाबा रामजी ने उसे देखा। पोपले मुँह से खिलखिलाते हुए दोनों बाँहें पसार दीं। उसके पैर छूने से पहले ही उठा कर उसे अपनी बाँहों में भर

लिया ! "हमें इस समय करोडो रुपया मिल गया रामजी । आपने हमसे बडी प्रतीछा करवाई ।"

पागलो की व्यायाम, प्रार्थना और उन्हे सर्पगन्धा जडी पिलाने का काम पूरा करने के बाद बाबाजी ने निश्चिंत होकर सज्जन से बाते की । बडी देर तक बाते हुई । कहा—"रामजी, पछतावे से बढकर, निकम्मा नसा कोई नही । यह क्यो नही सोचते कि तुम्हे एक प्रकार का अनुभव हाथ लगा । अब उस अनुभव से लाभ उठाओ । दुःख किस बात का करते हो ! बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेयि ।"

चलते हुए बाबाजी ने उससे कहा था—"रामजी, कोई कुछ कहे, पर मैं इस जगत् को माया-मिथ्या कुछ भी नही मानता । अगर भगवान सत्य है तो भगवान की बनाई सृष्टि भी सत्य है । और जब सत्य है तो उसको खुलकर भोगो । जहाँ असत्य मिले उससे जमकर जुद्ध करो ।"

"ऐसा ही होगा !" सज्जन ने बाबाजी के चरण छूकर निश्चय किया । उसका मन बिल्कुल हल्का हो चुका था, वह अपने मन का सारा विकार कहकर धो चुका था । उसे राह मिल गई थी । चित्रा के बारे में बाबाजी ने सलाह दी थी—"उसका या तो कही अच्छी जगह बिबाह करा दो अथवा जदि कोई काम करै तो उससे वो काम कराओ और भरन-पोसन का खर्चा दो । काम न करै तो कुछ भी मत दो । निकम्मे के प्रिति दया करना अमानुसिकता है रामजी !"

सज्जन शाम को ताई की हवेली पर गया । हवेली के अदर औरतो का प्रबध होने के कारण कर्नल वर्मा के घर की दहलीज मे कुर्सी डाल कर बैठा रहता था । सज्जन भी वही बैठा रहा । गली से स्त्रियो और लडके-लडकियो के झुड शोर मचाते आ-जा रहे थे । कर्नल ने सज्जन को बतलाया कि मेला बडी शान से चल रहा है । कन्या बडी खूबी से सारे कार्य-क्रम को चला रही है । नुमाइश मे बहुत-सी कढी हुई चादरे और तकिया, गिलाफ और रूमाल आदि बिके भी है । औरतो ने चाय, पान, चाट और मूँगफली की दूकाने भी लगा रक्खी है । कन्या कई युवतियो की हीरोइन बन गई है । दस लडकियाँ बराबर जूठे पत्ते वगैरह फेकने का काम सँभालती है । एक बन्द जगह मे इतनी भीड—अनियमित भीड के रहते हुए भी हवेली मे गदगी का नाम नही रहने पाता है । लडकियो के नृत्य-गीत और छोटे-छोटे नाटको के आयोजन खूब जम रहे थे । नुमाइश की बिक्री से भी बहुतो को प्रोत्साहन मिला था । कर्नल ने उत्साह के साथ बतलाया कि बहुत जल्द ही एक ऐसा ही आयोजन वह अमीनाबाद मे भी करेगा । जो औरते बेचारी घुट-घुट कर जीवन बसर करने के लिए मजबूर हैं उन्हे इस प्रकार के आयोजनो से बडा सतोष मिलता है । उनमे एक नई उमग पैदा होती है । सज्जन बडे सतोष के साथ यह सब कुछ सुन रहा था ।

उसने कन्या से विवाह करने के सबध मे भी बाते की । कर्नल ने पडित शिवनाथ शास्त्री से मुहूर्त पूछ कर इसी सहालग मे ब्याह करा देने की बात कही ।

आठ बजे जब कर्नल और सज्जन हवेली मे गए, उन्हे कन्या मिली—सब का जीवन बदल चुका था । रात को सेठ रूपरतन के घर पर कर्नल, सज्जन, बाबू सालिगराम और एक मिनिस्टर उपस्थित थे । सेठ रूपरतन इस बार चुनाव के लिए खडे नही हुए । वे

अपना बिजनेस बढाने के लिए इस साल अमरीका जाकर कुछ नई मशीनो की एजेंसी लाना चाहते है। इसलिए वे भी इस समय अपने आपको तटस्थ पार्टी घोषित कर रहे थे।

मिनिस्टर साहब बोले—"कर्नल साहब, आप लोगो से ऐसी आशा नही थी।'

रूपरतन बोले—"अरे, चुनाव तो चार दिन की बात है, आपसदारी का लिहाज तो रखते कम से कम—"

"हमने अपनी तरफ से कोई पहल नहीं की। लेकिन हाँ, जब कोई हमसे खामखाँ की छेड लेगा तो फिर—"

"छेड तो आप ही लोगो ने शुरू की। हवाई जहाज उडा दिया"—बाबू सालिगराम ने कहा।

"हमने एक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई थी।"

रूपरतन बोले—"अरे तो भाई हम लोग मौजूद थे, तुम, सज्जन या महिपाल कोई भी आकर मुझसे कहता तो मै सब ठीक करा देता।"

"अजी, सब कहने की बाते है! मै तो ऐलानिया कहता हूँ कि सालिगराम ने अपनी इलक्शनी चाल के लिए एक औरत की जान ले ली।"

"अमाँ, अब ये भी कहोगे कर्नल साहब!" बाबू सालिगराम अपनी पलस्तर चढी टाँग पर हाथ फेरते हुए बोले—"मुझसे तो कोई मतलब ही नही था। पुलिस ने—"

"खैर, ये उल्टी रामायण तो मुझे न पढाइए नेताजी, आप ही लोगो की सोहबत मे मैने भी ये सब सीखा है।

"अच्छा खैर, हटाओ इन सब बातो को! बात आई गई करो!" मिनिस्टर साहब काजू टूगते हुए बोले। "इस बात का खयाल आप लोगो को जरूर रखना चाहिए, काग्रेस चाहे अच्छी हो या बुरी, देश को सँभालने वाली एकमात्र राष्ट्रीय सस्था यही है। इस समय काग्रेस को नुकसान पहुँचाना देश के साथ गद्दारी करना है।"

"जी, इसी तरह मै भी कहती हूँ, स्त्रियो के साथ अन्याय करना मानवता के प्रति घोर गद्दारी है।"

"तो आप शायद कम्युनिस्ट पार्टी—"

"आप पार्टियो की दृष्टि से क्यो देखते है, मेरी भाभी किसी पार्टी की नही थी और मेरे पिताजी कभी काग्रेस के समर्थक नही रहे। उन्हे अपराध मे फँसने से बचाने मे आपको कभी दिलचस्पी न होती अगर मेरे यहाँ इप्टा के रिहर्सल न चल रहे होते—"

"अच्छा—आ! खैर, अब बीती बातो से कोई मतलब नही।"

"मतलब कैसे नही? सारी बात वहीं से शुरू भई हैगी—"

"तुम भी अब पक्के कम्युनिस्ट हो गए हो, कर्नल!"

"यार, तुम तो इस तरह कह रहे हो मानो यह शब्द कोई गाली हो।" सज्जन ने सेठ रूपरतन की बात काटी।

"खैर, बोले तो—"मिनिस्टर साहब ने हँसते हुए कहा—"हम तो समझे कि हमारे सज्जन साहब तस्वीरे बनाते-बनाते खुद भी किसी की बनाई तस्वीर ही हो गए है।" मिनिस्टर साहब के इस मजाक पर रूपरतन, सालिगराम आदि हँस पडे। मिनिस्टर

साहब ने इस हँसी में ही आगे अपनी बात जोडते हुए कन्या से कहा—"वनकन्याजी, मैं आपको और आपकी पार्टी को बधाई देता हूँ जो हमारे इन पुराने दोस्तो को हमसे इतनी जल्दी छीन ले गई।"

कन्या चट से बोली—"बधाई आपको है जो लोगो को इस तरह अपने से छीने जाने का मौका दे रहे हैं। वैसे सूचना के तौर पर कह दूँ कि मै कम्युनिस्ट पार्टी की न तो सदस्य हूँ और न मुझे उन लोगो ने माताहारी बनाकर इन लोगो को छीनने के लिए ही नियुक्त किया था।" कहते-कहते कन्या के चेहरे पर तमक आ गई।

मिनिस्टर साहब जरा गभीर हो गए, दूसरे लोग सहम कर उनका मुँह देखने लगे। कर्नल ने हँसकर कहा—"और कुछ सुनिएगा ?"

"नही, मैंने किसी को सुनाने या नीचा दिखाने की दृष्टि से यह बात नही कही।" कन्या बोली—"हाँ मुझे बुरा जरूर लगा था।"

सज्जन ने कन्या की बात मे बात जोडते हुए कन्या की ओर देख कर कहा—"इन्हे कस-कस कर सुनाओ! मिनिस्टर हो गए है तो क्या हुआ, पुराने दोस्त है।"

"हा-हा-हा!" मिनिस्टर साहब गलगला कर सज्जन की बात का समर्थन करने के लिए हुमसे।

सेठ रूपरतन को भी यह मौका हाथ से न जाने देने के लिए उत्साह आया, हिनहिनाने के दौरे में उनके मुँह से भी प्रेम के बुलबुले फूटने लगे, बोले—"अजी साहब, मुद्दतें हो गई हमारी इनकी जान-पहिचान को! याराना तब से हुआ जब से हमारा और महिपाल का साथ हुआ।"

मिनिस्टर साहब के यार को अपना बेटा बनाने से लाला जानकीसरन भी न चूके, बाबू सालिगराम ने भी पार्टी का पूरा परिचय देकर खुशामद के फन को चार चाँद लगा दिए। मिनिस्टर साहब हँसते हुए उठ खडे हुए। सब लोगो ने अपनी-अपनी कुर्सियाँ छोड दी। बाबू सालिगराम ने भी कुर्सी के हत्थो पर हाथ टेक कर उठने का सकेताभिनय किया, मिनिस्टर साहब उनकी तरफ देख कर बोले—"सालिगराम अब सब ठीक हो गया समझो! कर्नल, तुम्हारे मीना-बाजार मे काग्रेस की कुछ पब्लिसिटी होनी चाहिए, आज शाम को ही कुछ पोस्टर वगैरह भिजवा दिए जायँगे।"

"देखिए, मै एक सिद्धात की बात कहती हूँ, उसे पार्टिजन स्पिरिट में न लीजिएगा—"

"हाँ, मै तुम्हारी इस बात से सहमत हूँ कन्या। इस सास्कृतिक मेले को पॉलिटिक्स के लिए नही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।"

मिनिस्टर साहब सज्जन और कन्या दोनो की ओर देखकर सज्जन से बोले—"आप दोनो तो एक दूसरे के पूरक हो गए हैं ऐसा लगता है! शादी कब कर रहे हैं?"

लाला जानकीसरन और बाद में रूपरतन भी एकाएक हँस पडे गोया मिनिस्टर साहब ने यह मजाक किया हो। इस हँसी से मिनिस्टर साहब भी अपनी बात के मजाक का मूल्य समझे और मुस्कुरा उठे। कर्नल ने कहा—"बस, अब उसमें भी देर नही है, किसी दिन जल्दी ही आप लोगो की सेवा में नगीनचद की ओर से इनविटेशन कार्ड मिलेगा।"

"अच्छा ! बड़ी खुशी की बात है, मैं तुम दोनो को बहुत बहुत बधाई देता हूँ!" मिनिस्टर साहब ने हंस कर सज्जन से हाथ मिलाते हुए कहा फिर चले गये। कई दिनो का तनाव-भरा वातावरण यो हल्का हुआ।

३४

वर्मा के घर की दहलीज मे एक लबी बेंच और दो कुर्सियो पर, वर्मा, शकरलाल, सज्जन, कर्नल और महिपाल बैठे हुए थे। महिपाल आज सुबह ही अपनी ननिहाल से लौटा था। वर्मा के लडके की छठी के उपलक्ष मे ताई की ओर से होने वाली दावत मे सज्जन के मित्र होने के नाते कर्नल का निमत्रण पाकर यहाँ आया था। भोजन के बाद सब लोग बैठे थे। ब्रह्मभोज हो चुका था, अब औरतो का खाना-पीना चल रहा था। अन्दर मे ढोलक के गीत सुनाई पड रहे थे—

जिया जल भुन जाय,
राजा चले चाकरिया।
साम को लाए लोटा, नँनदी को लाए लुटिया,
हाय जिया जलभुन जाय,
हमको लाए मटुकिया।

तकिए के सहारे अधलेटे हुए महिपाल घुटनो पर रक्खे अजता रेडियो इजीनियरिंग वर्क्स के लैटरपैड पर देर से इन गीतो को लिख रहा था। कर्नल हँसकर बोला—"अब बेटा तुम साहित्त लिखना छोडकर ढोलक के गीत लिखा करो।" महिपाल ने कोई जवाब न दिया। सज्जन मजा लेते हुए बोला—"देखा कर्नल, जवाब तक नही दे रहा तुम्हारी बात का।"

"अजी जवाब क्या देगा ? साले की आदत है। उस दिन हमने डेढ रुपए इसको तार भेजने मे खर्च किए। हम इस अपोजीशन की वजह से घबरा गए थे। हमने सोचा कि शायद पचबाजी करनी पडे तो महिपाल के आ जाने से सुभीता रहेगा, मगर शिरीमान जी ने जवाब तक नही दिया!"

"अजी महाशय, ननिहाल के पकवानो को छोडकर मैं भला आपकी पर्चेबाजी करने क्यो आता ?"

"तो आज क्यो आए ?"

"ताई के यहाँ दावत खाने!"

"ताई ने तुम्हे न्योता तो दिया नही था। मैंने झूठी मुछुलाई कर दी तो खाने के लिए झटपट दौडे आ गए!"

"अबे ब्राह्मण कहीं न्योते की परवाह करते हैं   अहा, क्या गीत है ! मजा आ गया !"

मब लोगो का ध्यान अन्दर से उठने वाले नए गीत की ओर चला गया—

महिपाल ने लिखते हुए इस पक्ति की ऐसी दाद दी कि लोग हँम पडे। कर्नल हँसते हुए, साथ ही बनावटी तौर पर नाराज होकर बोला—"अच्छा-अच्छा, अब अपनी ये चिग्घीबाजी छोडो तो ! बेकार का धधा लेकर बैठ गए।" कर्नल महिपाल के हाथ से कागज घसीटने लगा। महिपाल घबराकर बोला—"ऐ-ऐ ! क्या करते हो ! मेरे काम का कागज है।"

तभी सज्जन बोला—"कुछ भी कह लो भाई, पर ताई हमारी बडी बेढब कैरेक्टर है !"

"अजी साहब, पूछिए मत ! जब से ये बच्चा हुआ है उन्होने हमारी आफत कर रक्खी है। ताई का एहसान न तो हमसे निगलते बनता है न उगलते बनता है !"

"क्यो क्यो, क्या हुआ ?" कर्नल ने मजा लेते हुए पूछा। वर्मा ने भी हँसते हुए ही बतलाया—"अजी, आए दिन मुझे और मेरी वाइफ को विधर्मी और म्लेच्छ न जाने क्या-क्या कहा करती हे ! हम लोगो को तो उन्होने एकदम तुच्छ बना दिया है। और बच्चे के पीछे जान दिए देती है। उसकी सारी देखभाल, जच्चा की पूरी जिम्मेदारी ताई ने अपने ऊपर ले रक्खी है। तरह-तरह के पाक, बादाम, घी की उन्होने भरमार कर रक्खी है। मेरी वाइफ को सुना-सुना कर कहती है कि यह सब तुम्हे इसलिए खिला रही हूँ कि मेरे बच्चे को खूब दूध मिले।"

सब लोग हँसने लगे। अन्दर ढोलक पर गाया जा रहा था—"जच्चा मेरी झींगुर से डर गई रे।'

ताई की पूरी हवेली में आज चारो ओर भब्भड ही भब्भड फैला था। तारा के रसोई-घर वाले दालान में भट्ठी खुदी थी, हलवाई काम कर रहे थे। दूसरे दालान मे ढोलक ठनक रही थी। ताई के घर में औरतो की भीडभाड थी। गोकुलद्वारे के मुखिया जी, भितरिया जी आदि भी वहीं बैठे बाते मठोर रहे थे। स्त्रियाँ थालो मे खाने का सामान लेकर मर्दानी हवेली के ऊपर वाले कमरे में आती-जाती व्यस्त थी। ब्रह्मभोज और सज्जन मडली की दावत इस समय तक निबट चुकी थी। ताई ने एक सौ एक ब्राह्मणो का भोज किया था। अपने नाते-गोते, मेल-पडोस मे, सब के घर न्योता भेजा था। अपनी सौत के घर भी न्योता भेजा था। इस समय स्त्रियो की पगत जीम रही थी। चारो ओर ताई के इस छठी भोज को लेकर चर्चा चल रही थी। चारो ओर इस बात पर अचरज किया जा रहा था। नदो बेहद कुढी हुई थी, फिर भी वह आई, कोने मे बैठी धीरे-धीरे ताई की निन्दा दूसरी स्त्रियो से कर रही थी।

छोटी और कन्या तारा के कमरे मे थी। कन्या को आज पहली ही बार तारा से इतनी देर तक बैठ कर बातें करने का अवसर मिला था। छोटी से तो आज पहली बार ही उसकी भेंट हुई थी। उस समय बडी का प्रसग छिडा हुआ था। छोटी और तारा बडी को याद कर बहुत रोई थी। यदि आज वह यहाँ होती तो कैसा आनन्द आता ! कन्या को

बडी की पूरी कथा आज मालूम हुई। छोटी ने बतलाया कि शकरलाल विरहेश के यहाँ बडी से मिलने गए थे। बडी उन्हे बेहद उदास लगी। विरहेश ने उन्हेदो मिनट बाते करने का मौका भी न दिया। कहाँ तो पहले दोस्ती का दम भरते थे, और कहाँ इतनी बेरुखी बरती कि सीधे मुँह बात तक न की और भविष्य मे बडी से उनके मिलने पर भी प्रतिबध लगा दिया। शकरलाल बतलाते थे कि विरहेश के घर का वातावरण बेहद खराब है। उसके पास एक ही तो कमरा है। बडा जरूर है मगर खँडहर हो रहा है। उसी कमरे के आधे हिस्से मे डोरी मे पर्दा डाल दिया गया है, और पर्दा भी पूरा-सा नही है। जब शकरलाल पहुँचे तो विरहेश एक-दो टुटपुँजिए लफगो के साथ बैठा शराब पीते हुए गदे और खुले मजाक कर रहा था। कन्या यह सब कथा सुनकर बेहद क्षुब्ध हुई थी। नारी होना आज की सामाजिक स्थिति मे अभिशाप है। उसे बडी का अन्त स्पष्ट दिखलाई पड रहा था—एक दिन घुलते-घुलते मर जायगी। वह अपनी स्वर्गीया भाभी की याद कर बडी के दु ख से अभिभूत हो गई। स्त्री और पुरुष आमतौर पर एक दूसरे की इज्जत नही करते है। स्त्री आमतौर पर आर्थिक दृष्टि से पुरुष की आश्रिता है, उसका व्यक्तित्व स्वतत्र नही। इस देश की स्त्रियाँ सदा से यह दु ख भार उठाती आई है। सीता को भी सहना पडा था, द्रौपदी को भी।

तीन-चार स्त्रियाँ ढोलक पर तन्मय होकर गा रही थी। सबके गले उत्तर-दक्खिन भाग रहे थे। सामने वाले ऊपर-नीचे के चार टूटे हुए, दाँतो के बाद कत्थे से चीकट काले घिसे दाँतो और दाढो की कतार के बीच से तुरही सी धूतू-धूतू आवाज निकालने वाली पचपन वर्षीया सुर्मीली, रँगीली, कल्लो-कुट्ट 'सुन्दर' के कण्ठ से तानो पर ताने पलट-पलट कर निकाल रही थी। अपनी मस्ती मे वह अपनी जवान जोडीदार शरबती से भी चार चाशनी ज्यादा बोल रही थी। यो इस वक्त जमाना शरबती का ही है। शरबती एक पैसे वाले काने भडभूजे की सातवी ओढरी बीबी है। पति को सदा ठेगे पर मारती है। घर मे खुले खजाने यार आते है। बदन जेवरो से लदा है। गाने-बजाने का बडा शौक है। इसलिए बडे-बडे घरो मे आती-जाती है। पिछले जमाने की सरनाम सुन्दर उससे जलती है। मँजीरे बजाने वाली किसनसिह की बौटी (बहू) के गूलर ऐसे गाल पानो से और भी लटक रहे थे। वह चबूतरे जैसी बैठी सुन्दर और शरबती की होड पर मद-मद मुस्का रही थी। किसनसिह की बौटी अपनी जान-पहचान भर मे नारदमुनी के नाम से विख्यात है। वे लडवाती है मगर किसी मे मनमुटाव नही डालती। किसनसिह की बौटी तीस-चालीस साल से यहाँ रह रही है और साल-दो साल कम करके लगभग इतने ही समय से विधवा भी है। दबे मुँह की अफवाह है कि उनका एक बडे प्रतिष्ठित पडित जी के साथ पुराना सबध है। पछाही खत्रियो और अगरवालो के रीत-रिवाज तो उन्हे रटे पडे है। झाड-फूँक, दवाएँ, टोटके उन्हे बहुत आते है। सब जगह आदर पाती है। सलाह देने मे बडी सच्ची, बडी मिठबोली और अच्छे-अच्छो से मजाक करने मे बडी तेज। गोकुलद्वारे के भितरिया जी भी बैठे थे, अपनी दाढी और गुमटीदार तोद लिए, हाथ बढा-बढाकर दोनो गाने वालियो को सुना रहे थे—"मरो राँड की, तुम्हे गानाईं नईं आवे है। मै अपने लडकपन मे गाया करूँ थी, रहस मडली मे सिरी जी का रूप भरा करूँ थी।"—

"तो रॉड, अब ये रूप क्यो धरा हैगा ? निगोडी, दस हाथ की दाढी लेके मेरे गाने मे नुकुस निकालती है।" शरबती ने तुनुक कर अपनी पतली मगर तेज आवाज में कहा।

भितरिया जी सुन्दर की तरह शरबती की सोने-चाँदी से पोढी जवानी से दबने वाले नही थे, हाथ बढाकर बोले—"नुकस नही निकालूगी रॉड की ! तेरी अवाज है कि रेल की सीटी।"

आसपास की औरते हँस पडी। शरबती का पारा चढ गया। किसनसिंह की बौटी बोली—"ऐसा जुलुम न करो भितरिया जी ! इसके चहेतो मे पुकार पड जायगी !"—

"अरे, न मै इससे डरूँ, न इसके चहेतो से डरूँ। इसे न तो अच्छे-अच्छे गीत ही आवे और न गाने का ढग ही आवे है।"

"लेओ, दुनिया भर मे शरबती गाने मे मरनाम है और भितरिया जी कहने है कि गाना ही नही आता !" किसनसिह की बौटी बोली।

शरबती की निदा से सुन्दर को इस समय पारलौकिक सतोष प्राप्त हो रहा था। भितरिया जी को बढावा देते हुए कहने लगी—"अरे, ये भितरिया भाभी बडी पक्की है ! हमने तो गोकुलद्वारे मे इनका गाना सुना हैगा !"

"अरे, वहाँ तो कोरे भजन ही गाऊँ हूँ—चल ला, ढोलक मुझे दे—" कह कर अपनी ढोलकनुमा तोद लिए भितरिया जी तेजी से उठे। शरबती के हाथ से ढोलक लेकर आँखे मटकाते हुए बोले—"अरे'ज्जा ! देख, ऐसे बजे है ढोलक और ऐसे गाया जावे है गीत। चल सुन्दर, सुरू कर वो—दुनिया मे पैदा हुए हैं—"

भितरिया जी का हाथ सचमुच बडा मीठा था। ढोलक बजी। सुन्दर के फटे-बेसुरे गले ने पहल की, भितरियाजी को गायन का करतब किसी कदर मालूम था, कुछ ख्वाहमख्वाह के तान-पलटे भी सभा को नखरो से रिझाने के लिए लेने लगे—

"(अरे) दुनिया में पैदा हुए दुख-सुख उठाने के लिए।
मेरे दिल मे ऐसी आवे सैल बागो की करूँ,
ले चलो जालिम मुझे सैके कराने के लिए।
मेरे दिल में ऐसी आवे सैल तालो की करूँ,
ले चलो जालिम मुझे कपडे धुलाने के लिए।"

बाहर बैठा महिपाल बेसाख्ता ठहाका मार कर हँस पडा। कमरे मे बैठे तमाम लोग चौंक पडे। उस समय मकरलाल और वर्मा के आग्रह से सज्जन अपनी ब्रजयात्रा के हाल सुना रहा था। इस सांस्कृतिक बातचीत के ऊपर महिपाल की हँसी बडी अचानक-सी, बेमानी-सी मानी गई।

"अब क्या इन्टैलैक्चुअलता आई ?" कर्नल ने जरा रूखी आवाज मे सवाल किया। उसे भी सज्जन की बातो मे बड़ा रस आ रहा था। महिपाल तलवे पर हाथ फेरता हुआ बोला—"ये गीत जरूर किसी घरेलू औरत ने जोडा होगा। बेचारी अँधेरे घरो में घुटने वाली काम-काज से भरी नीरस नौजवान नायिका कल्पना में सनम के साथ ताल की सैर को गई। हनीमून में भी और कुछ न सूझा तो कपडे धोने का ही काम-काज बटोर ले गई। ह-ह-ह ! यहाँ बसता है हमारे समाज का नारी मन !"

"सुनो।" वनकन्या दरवाजे के पास खडी थी। आवाज के साथ सबका ध्यान उधर गया। सज्जन के चेहरे पर नई आब आ गई। वह फौरन उठा।

"कहो विन्नो, क्या नेग मिला ताई से ?" कर्नल ने पूछा।

"अभी कहाँ भाई साहब, शाम को पुजेगी छठी।" फिर सज्जन से बहुत धीमे स्वर मे कहा—"इनके बच्चे को कुछ प्रेजेण्ट करना होगा। बुआ बनी हूँ।"

"आज ही प्रेजेण्ट करना है ?"

"चाहिये तो आज ही। तारा ने चरवा बधाई के नेग मे अपनी तरफ से देने के लिए एक कीमती बनारसी साडी खरीदी है।"

"क्यो कर्नल, शादी से पहले मियाँ-बीवी को इस तरह गुप-चुप बाते करना चाहिये या नही ?" महिपाल के इस प्रश्न पर सभी हँस पडे। कन्या के मुख पर लाज की ललाई आ गई, सज्जन ने हँस कर जवाब दिया—"अमाँ, जब मियाँ-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी।'

दुबारा हसी हुई, खुशी की बेहोशी मे कन्या ने अपने होने वाले पति को बरबस बडी मादक और गर्वभरी दृष्टि से देखा। सज्जन का ध्यान उधर नही था, पर और सब ने देखा। कर्नल ने मुस्कराते हुए नजरे हटा ली, महिपाल के कलेजे मे ईर्ष्या-भरी, लालसा भरी चुभन हुई।

सज्जन ने फिर धीमे स्वर मे कन्या से पूछा—"जो कहो सो ला दूं।" इस समय उसका मन गर्व और खुशी से ऊँचा उठा हुआ था। पति का पार्ट अदा करते हुए वह अपनी पत्नी से व्यवहार-दुनियादारी की सलाह कर रहा था। यह नया अनुभव इस क्षण उसे स्फूर्ति से भर रहा था। भोलेपन मे यही तो खूबसूरती होती है।

पति से फरमाइश करने के लिए आकर भी कन्या का सकोच पूरी तौर पर दूर नही हुआ था। शकरलाल की पत्नी सरूप बच्चे के लिए तोला भर सोने का झुनझुना और जजीर लाई थी। सरूप और तारा की बातो से 'हमारे वो हमारे उन्होने ' के वातावरण से उमगी हुई वनकन्या अपने सज्जन के पास फरमाइश लेकर आ तो गई थी, पर यह कहने मे उसे सकोच हो रहा था कि इन लोगो की कीमती चीजो मे चढकर कोई चीज लाना। कन्या अब एक लखपती की वाग्दत्ता पत्नी है। सज्जन अब इस बात को जग-जाहिर कर चुका था। कन्या भी अब इस बात का दृढ निश्चय कर चुकी थी कि सज्जन को अब वह बाँध कर रखेगी। साधारण मध्यवर्ग की अभावो मे पली हुई प्रगतिशील विचारो वाली वनकन्या नये उल्लास मे हैसियत की होड लेने के जोम मे आ गई थी। मन की बात मन मे भी नही रख पाती थी और कह भी नही पाती थी। सज्जन के पूछने पर अटकती हुई बोली—"क्या बतलाऊँ। इन्होने कीमती साडी मेरे लिए ली है। सरूप बच्चे के लिए सोने का झुनझुना लाई है समझ लो। न हो तो भाई साहब से सलाह कर लो।"

कहकर कन्या फौरन चली गई। घर के अदर ढोलक ठनक रही थी। कन्या का सज्जन इस समय दुनियादारी के उल्लास में था। जिस समय वे दोनो बाते कर रहे थे, वर्मा ने महिपाल से यह प्रश्न पूछ लिया था कि छठी क्यो होती है। उसकी बात का उत्तर देते हुए महिपाल बतला रहा था—"मैंने इस पर कभी बहुत अधिक ध्यान तो नही दिया।

बच्चे के जन्म का छठा और बारहवाँ दिन महत्वपूर्ण होता है। मेरी धारणा है कि तान्त्रिको के प्रभाव मे ये रस्मे फैली है। हिन्दुओ की मान्यता के अनुसार इसे षष्ठी देवी की पूजा का दिन माना जाता है। हमारे यहा सोलह मातृकाये मानी गई है, षष्ठी उन्ही में से एक यानी छठी है।"

सज्जन सोच रहा था, क्या लाऊँ ? परिस्थितियो ने उसे वर्मा जैसे साधारण मध्यवर्गीय मनुष्य से रीति-व्यवहार करने पर मजबूर कर दिया है। उसे दिल से यह अच्छा नही लग रहा। मीठे मुँह की साहब-सलामत और बात है, पर इस तरह रिश्ता बाँधना अच्छा नही होता। इन्होने कन्या को बड़े आदमी की पत्नी जानकर कीमती साडी दी है। कन्या की ओर से प्रेजेण्ट हो वह मेरी हैसियत के मुताबिक हो। बहुत ज्यादा भी न हो, वरना ये (छोटे-) लोग आगे भी मुँह बगायेंगे।

महिपाल बतला रहा था—"छठी के दिन ही से हमारे यहाँ भाग्यवाद का जन्म भी जुडा है। आज ही के दिन विधाता किसी को राजा किसी को रक बना देती है। कोई बेईमान बनता है, कोई परम सात्विक। कोई सात्विक सस्कारो का होकर भी भाग्य-चक्र से दब कर बुरा, बहुत बुरा—बहुत-बहुत बुरा आदमी बन जाता है।"

"और ?"

"सच है, भाग के लिखे को कोई नही मेट सकता।" कर्नल ने कहा।

"तुम भाग्य को मानते हो महिपाल ?"

"न मानकर भी मानता हूँ।"

"अगर भाग्य को मानते हो तो अमीरी-गरीबी, शिक्षा-अशिक्षा वगैरा भेद—"

"इनका जिम्मेदार सामती पूजीपति वर्ग को क्यो ठहराता हूँ, यही न ?"

"हाँ।"

"सज्जन, नई चेतना अनुभव से आती है। अनुभव सिद्ध करने के लिए व्यक्ति या पूरे समाज को जो करना और सहना पडता है, वह उसका भाग्य है—उसके भाग का सामाजिक दायित्व है—" कहते-कहते महिपाल का स्वर गभीर हो गया—"उस जन्म मे जो किया उसका नतीजा इस जन्म मे भोग रहा हूँ। इस जन्म मे जो कर रहा हूँ, जो कुछ किया उसका नतीजा मुझे इस जन्म मे या अगले जन्म मे भोगना पडेगा। मैं बच नही सकता, हरगिज नही बच सकता।" गहरी आवाज मे महिपाल रुक-रुक कर इस तरह बेलौस होकर बोल गया मानो उस जगह और कोई नही, वह अकेला है—दिमाग-देह की सगत तक बिसार कर अपने आप बोल रहा था।

पिछले दो दिनो के अपने गहरे अवसाद के ताजा अनुभव के सहारे सज्जन को यह लगा कि महिपाल को अपनी किसी करनी का बेहद पछतावा है। कारण जानने की इच्छा जागी, फिर दो बाहर वालो—शकरलाल और वर्मा—का ध्यान आया। इस होश के बावजूद सज्जन के मन मे यह इच्छा हुई कि सबके सामने महिपाल को टोक कर उसके पछतावे का कारण पूछे। महिपाल के चेहरे पर गहरी भूल की एक झलक ने इस क्षण जैसे उसकी बची-खुची पिछली टीस भी गायब कर दी थी, इससे उसे आल्हाद हुआ। प्रतिद्वन्द्वी कलाकार मित्र के प्रति उसके मन की गुप्त हिंसा भी इस आल्हाद मे घुली-मिली हुई थी।

सज्जन ने उसे टोक कर हँसते हुए पूछा—"किस गहरे पाप की याद सता गई इस वक्त ?"

महिपाल चौका, जैसे अचानक गिरफ्तार कर लिया गया हो, फिर तुरन्त सम्हल कर, खिसियाई हुई हँसी हँस कर, अपनी नार्मल आवाज मे बोलने का काफी हद तक सफल प्रयत्न कर, आध्यात्मिक हवा मे उडते हुए कहा—"मो सम कौन कुटिल खल कामी। कौन-सा पाप बतलाऊँ ?"

बात सज्जन के ठीक-ठिकाने लगी। वह पूछ कर फिर पछताया। वह क्या कम पापी है ? अगर उसमे ही कोई इस तरह मजाक के ढग से यह पूछ बैठता ?—ईमान के आवेश मे आकर सज्जन ने कहा—"मै भी बहुत पापी हूँ दोस्त ! तुम्हारे सिद्वान्त से अगले जन्म म मुझे भी न जाने क्या-क्या भोगना पडेगा ?"

"अजी, सभी पापी है। सभी अपने-अपने करमो को भोगते है।" कर्नल ने बात का साधारणीकरण कर वातावरण से अवसाद का बोझ हल्का किया।

"हल्लो !" चहकती हुई डॉ० शीला स्विग ने कन्या के साथ दहलीज मे कदम रक्खा। महिपाल को देखकर उनका चहकना थमा, महिपाल का चेहरा सकपका कर फिर पत्थर हो गया। उसे छोडकर बाकी सब लोग खड हो गये, बाद मे वह भी खडा हो गया।

कन्या सज्जन की ओर देख कर आँखे तरेरती हुई बोली—"अभी तक गए नही तुम ?"

"बस, जा ही रहा हू" सज्जन ने हडबडा कर कहा।

पैनी कनखी से महिपाल के चेहरे को देख फिर चहकते हुए शीला कन्या से बोली—"बिलकुल ठीक ! इस दुर्जन से बराबर इसी तरह पेश आना ! यह इसी काबिल है !"

"अजी, जूते लगवाइये सरकार ! जमाना आप ही लोगो का है !" सज्जन ने हँस कर कहा।

"हमे और तो कोई एतराज नही, डर यही है कि हमारे जूते भी हयादार है, टूट जायेगे ! हमारा नुकसान होगा, और मर्दो की बेशर्म खोपडी फिर भी न टूटेगी !"

इस पर फर्मायिशी ठहाका पडा।

मि० वर्मा अपनी कुर्सी से अलग हट कर खडे होते हुए डा० शीला से बोले—"आइये, डाक्साहब, तशरीफ रखिये।"

दहलीज मे दो कुर्सी और एक लबी बेच पर चारो जने बैठे थे, दो महिलाओ के आ जाने से जगह की कमी पड गई। उसकी सफाई-सी देते हुए मि० वर्मा बोले—"क्या बतलाऊँ, घर मे तो इस वक्त औरतो का ही राज है—"

"मै जा रहा हूँ।" महिपाल नीची नजरे किए हुए उठा।

"क्यो ? बैठो न।" डा० शीला के स्वर मे आग्रह था, आँखे भीख-सी माँग रही थी। जिस दिन कर्नल महिपाल को शीला के घर से ले आया था, उसके बाद आज दोनो की पहली मुलाकात हो रही थी।

महिपाल की नजरे उठी। बडी दीन और असहाय दृष्टि से उसने शीला को देखा,

फिर बात बनाते हुए बोला—"नही, मुझे तो अब जाना ही था—"

"ठहरो, मै भी चलता हूँ। कर्नल, एक बात सुनना।" सज्जन ने कहा।

"मेरे आते ही सब लोग चल दिये ?" शीला ने हँसते हुए किंतु, किंचित्दुःख-भरे स्वर मे कहा।

"नही, कर्नल को तुम्हारी अर्दली मे छोडे जाते हैं, और फिर मै तो अभी ही लौट आऊँगा। अब तो आजाद से गुलाम हो गया हूँ न !" सज्जन ने आँखो मे प्यार लाकर कन्या को देखा।

"मर्दों को या तो औरतो का मालिक बनने की हविस होती है, या गुलाम बनने की ! आपसी बराबरी का महत्व तो पहचानते ही नही ये लोग !" कहते हुए कन्या की आँखो मे मीठी शिकायत थी, शिकायत कम, मिठास ज्यादा थी।

सज्जन को इस समय अचानक यह पुराना अनुभव ताजा होकर लगा कि कन्या का प्रेम अति निर्मल, अति निश्छल है। वह इच्छा करने से भी वैसी शुद्धता अपने आप मे क्यो नही महसूस कर पाता ? वह अपने आपको सबसे अलग कर के क्यो रखता है, क्यो देखता है ? कन्या की प्रेम-गगा मे उसके कलुषित प्यार का सगम होता है। क्या वह कभी निर्मल न हो सकेगा ?

• •• •

साथ-साथ गलियाँ पार कर जाते हुए सज्जन और महिपाल खामोश थे। दोनो के ही मन बुरी तरह से मथे जा रहे थे।

"मै बेहद नीच हूँ ! कन्या जैसी सच्चरित्र लडकी के योग्य नही ! मगर मै अपने आप से लडूंगा ! मै निर्मल बनूंगा !" सज्जन कन्या की निर्मलता का ध्यान कर स्वय भी निर्मलता के भाव से भर गया।

"मै बेहद तुच्छ हूँ। मेरे जीवन को धिक्कार है। धिक्कार है। हे भोले !"

शिव भोले को याद कर महिपाल ओर भी अधिक तुच्छता और आत्मधिक्कार से भर गया।

गलियाँ चुनाव चर्चा की गूँज से भरी हुई थी। कोई कहता काग्रेस बॉमो आगे जा रही है, कोई कहता जनसघ जोरो पर है। दोपहर बाद की अफवाहो मे किसान-मजदूर प्रजापार्टी के कैंडिडेट का रग तो बिलकुल फीका पड गया था। घुडसवार, उगता सूरज, नाव, फूल, इजन, हँसिया आदि निशानो का चर्चा भी नही हो रहा था।

३५

गलियो से निकल कर दोनो चौक के चौराहे पर आ गए। गोल दरवाजे का चौराहा आते-जाते और ठहरे हुए मजमे से घिरा हुआ था। लाउडस्पीकरो की टकराती हुई आवाजे हवा की तरह मानो प्रकृति का अग हो गई थी। विक्टोरिया पार्क के दोनो और चाय-पान की दूकानो पर सारी कुर्सियाँ आदमियो से भरी हुई थी। विक्टोरिया-पार्क मे पोलिग हो रही थी। पुलिस, फाइले दबाये सरकारी अफसर, कारे, डोलियाँ, पालकियाँ—जन-भीड मे विशेषता बनकर सामने आ रही थी।

सज्जन आज ड्राइवर को साथ लेकर आया था, इसलिये कि भीड-भब्भड और जोश के दिन कोई वारदात न हो जाय और सडक पर खडी उसकी मोटर अरक्षित रहने के कारण कही बेगुनाह तोड-फोड का शिकार न बन जाय। परन्तु चुनाव का वातावरण केवल जनता की बातो की गूज ही मे भरा था, यो पूर्ण शाति थी। प्रबध भी अच्छा ही दिख रहा था। सज्जन और महिपाल जब कार के पास आये तो ड्राइवर नदारद था। सज्जन को गुस्सा आ गया। महिपाल बोला—"जाने दो। मेले का दिन है, कब तक कार मे बैठा रहता ? यही कही होगा। आओ, तब तक पान खाये, बडी देर से अच्छे पान खाने को नही मिले।"

सज्जन का ध्यान इस समय अपने ड्राइवर मे था। कन्या उसकी प्रतीक्षा करेगी, चार बजे से ताई की हवेली मे औरतो का मेला शुरू हो जायगा, फिर उमे बुलवाना भी दूभर हो जायगा। कल से कन्या पर उसे बेहद लाड और आदर उमग रहा है। रात मे रूपरतन के यहाँ चित्रा को देख कर उसके मन मे हौलदिली पैदा हुई थी। यद्यपि वह चित्रा से बेहद प्रसन्न और प्रभावित था, उसने कल सज्जन की बडी लाज रक्खी, फिर भी चित्रा कन्या नही हो सकती। चित्रा उसकी रक्षिता हो सकती थी, पत्नी नही। उसे पत्नी चाहिये। वह अब निश्चय ही अपने अनियमित जीवन से ऊब उठा है। अब तक पत्नी की जिम्मेदारी से विहीन जीवन बिता कर वह उससे बचने के लिए भाग रहा था—जाल मे फँस जाने वाले जगली हाथी की तरह बधन से विद्रोह कर रहा था। ब्रजभूमि मे कन्या के साथ घूमते हुए, अपने प्रेमपाश से जकडी हुई कन्या की मजबूरी का लाभ उठा कर, उसका उपभोग कर अपने मन मे उसका दरजा ओछा कर देने के लिए सज्जन का उपचेतन मन जो षड्यत्र खेल रहा था उसमे उसे विफलता मिली। उस विफलता की खीझ, ब्रजभूमि मे उभरी मगर दबाई हुई उसकी काम पिपासा ही राजा साहब की महफिल मे चित्रा को देखकर फिर उभर पडी थी। चित्रा के कारण ऐसा हुआ हो सो बात नही, कोई अन्य ऐसी ही परिचिता मिल जाती तो वह उसके साथ ही फिसल पडता। लेकिन इस बार ऐसी स्त्री का सहवास—चित्रा का सहवास—उसे नैतिक दृष्टि से असह्य हो गया। उसे अपने मन का गहरा पाताल दिखलाई दिया। उसे अपने से बेहद घृणा हुई। कन्या ऐसे समय मे ही उसके समस्त सुसस्कारो का प्रतीक बनकर कल आई थी और उसे अपना अहकार रहित

स्नेह देकर उबार लिया था—दिन में भी, रात को रूपरतन के घर से लौटते हुए भी। कल से सम्पूर्ण (विकार रहित) मन से कन्या उसकी स्वामिनी, उसकी गृह स्वामिनी है। उसकी स्मृति, उसका दर्शन, उसका स्पर्श सज्जन के रहे-सहे विकारो को भी दूर भगा देता है। उसे ऊँचा उठने की प्रेरणा देता है। ड्राइवर का न होना बेहद उसे खला। कार की चाभी भी उसके पास नही वरना वह इतना परेशान न होता। लेकिन इस समय उसे ड्राइवर पर पूरी तरह से क्रोध भी नही आ रहा। महिपाल ठीक कहता है, मेले का दिन है कब तक बेचारा कार में बैठा रहता। वह भी इसान है।

इसानियत और कन्या के आदेश-पालन की उजलत मे सज्जन थम गया था। महिपाल उसकी बॉह पकड कर खीचता हुआ बोला—"आओ भी! अभी से जोरू के गुलाम मत बनो हालाँकि अच्छी औरत का गुलाम बनने मे ही हमारे जैसो का कल्याण है।"

जमना तमोली की दूकान पर पान की प्रतीक्षा में खडे होकर वे लोग पास ही लगी हुई लाल महाराज की चाय-ठण्डाई की दूकान पर बैठे हुए लोगो की बाते सुनने लगे। एलेक्शन की खबरे सुनने को मिल रही थी। सज्जन और महिपाल को भी यह सुनकर मजा आ गया। पान खाये, सज्जन बोला—"आओ, चले।"

महिपाल एक सेकड पशोपेश मे खडा रहा, सज्जन के दुबारा कहने पर बोला—"अब तुम ही आओ। मैं जरा यही घूमूँगा। अच्छा लग रहा है।"

"तुम तो किसी काम के कारण उठे थे न वहाँ से।"

"ना—ही। ऐसे ही—अच्छा, तो फिर तुम जाओ। लेकिन जाओगे कैसे? तुम्हारा ड्राइवर—"

सज्जन उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए, उस पर मानो कुछ पढते हुए बोला—"नही आया होगा तो बस पर चला जाऊँगा।"

सज्जन चला गया। महिपाल पार्क की तरफ बढा। भीड रग-बिरगी और जोरदार थी। चुनाव चर्चा के सिवा कानो मे और कोई बात ही नही पड रही थी। बूढे, बीमार, अपाहिज तक वोट डालने आ रहे थे। स्त्रियो मे तो अपार जोश था। गणतत्र परम्परा को बडे पुराने जमाने से मानने वाले भारत देश की नारियो को इतिहास मे पहली बार वोट डालने का अधिकार मिला था। अधिकाश स्त्रियाँ अपने पुरुषो की इच्छा के अनुसार वोट डाल आई थी, कुछ ने अपने अधिकार का स्वतत्र उपयोग भी किया। एक महाशय बार-बार अपनी पत्नी को जनसघी दीपक की जोत जगाने का आदेश दे रहे थे, और उनकी पत्नी कांगरेस के बैलो के आगे चारा डालना चाहती थी। दोनो मे झाँय-झाँय हो गई। जोश में पत्नी देवी पार्क को ही अपना घर समझकर पतिदेव पर गर्म हो गई, बोली—"देखौ, आज हम जिदगी मे पहली बार ओट डालन आये हैंगे। जिसे हमरा मन आयेगा उसे देंगे। औ' तुम्हे अब कसम है, हमरा मरा मुँ देखौ जो अब की टोका-टाकी करौ।"

पति-पत्नी का यह वृषभ-दीपक सवाद चल ही रहा था कि पास से गुजरते हुए एक पुलिसमैन ने पतिदेव की बॉह थाम ली। पोलिग क्षेत्र मे कनवेसिग करना अपराध था।

चौक की कुछ तवायफो ने स्वतत्रता का भजन करने वाली सभ्य दुनिया को आज

बडा सीधा, सच्चा और करारा जवाब दिया। उनसे पूछा गया—"बाप का नाम ?" जवाब मिला—"रुपया !"

फिर पूछा गया—"पति का नाम ?"

जवाब मिला—"रुपया !" उनमे से बाईस-तेईस बरस की एक नथुनीदार शोख बोली—"नही, शोहर ये हजरत हैं जो हमे घेर कर यहाँ वोट दिलाने की खातिर लाये है।"

चुनाव की तस्वीरो मे महिपाल का मन रम गया। यह चुनाव उसको अपने आप मे एक बहुत बडा व्यग्य नजर आ रहा था। एक तरफ तो भारत के इस अपूर्व जनतान्त्रिक चुनाव ने बालिग मताधिकार को मानकर पूरे समाज को अपनी मनचाही सरकार बनाने की स्वतन्त्रता दे दी। प्राचीन भारत के सामती गणतन्त्र मे किसी स्त्री, कारीगर, व्यापारी और दास को अपनी सरकार बनाने का अधिकार न था। जनता पर शासन करने का अधिकार केवल क्षत्रिय सामतो को ही था। इस तरह एक ओर बडी प्रगति करते हुए भी आज के प्रजातन्त्र का चुनाव अर्थहीन है—नितान्त अर्थहीन। हुल्लड मचा कर अर्थ सिद्ध किया जाता है। सहसा महिपाल का ध्यान कलकत्ते के शेयर मार्केट के अदर मचने वाले वज्र घोर कोलाहल मे गया। सट्टा बाजार का हगामा और जनतान्त्रिक सार्वभौम चुनाव लडने की हुल्लडवादी टेक्नीक बिलकुल एक जैसी लगी। लक्ष्मी और सत्ता को सिद्ध करने के लिए यह विशुद्ध पागलपन भरा विधान देखकर महिपाल को अजब हैरानी हुई। ईसाई सभ्यता की साढे उन्नीस सदियो और भारतीय सभ्यता की उससे भी तीन-चार हजार वर्ष पुरानी उच्च नैतिकता का गुमान करने वाले आज के सभ्य जन विचारक, समाज-सेवक क्योकर न्याय के नाम पर होने वाली इस बेहूदगी को बर्दाश्त कर पाते है ? हुल्लड वाली ट्रिकैं विकसित बुद्धि की उपज तो हो ही नही सकती। यह सकीर्ण स्वार्थ, घोर अनैतिकता भरी क्रूर चतुराई जो मानव बुद्धि को भ्रम मे डालने का षड्यन्त्र रचती है—

महिपाल के मन मे खट्-से वैसे ही लगा जैसे कभी बोलते-बोलते औचक मे जीभ कट जाती है। मन बँट गया, एक मन के आगे दूसरे मन का सिर शर्म से झुक गया। सभ्यता, सस्कृति, आदर्श, न्याय, सौदर्य, सत्य, मानवता आदि बडे-बडे शब्दो को बार-बार विचार कर नित नये अर्थो से निखरने वाला कलाकार-साहित्यिक स्वय अपने ही अपराध मे जड है। यह जडता महिपाल की विचार चतुराई को हर ले गई। अनेकानेक कारणो मे आने वाले ऐसे मानसिक-मौको पर वह एकदम खोखला हो जाता है।

महिपाल इस समय अपना यह मानसिक खोखलापन सहन न कर सका। उसने पूरे हठ के साथ अपनी ईमानदारी को दबाया—"नही। मुझे अपनी स्थिति सुधारनी ही है। शकुतला का विवाह करना है। दहेज और दुनियादारी की बहुत-सी फिजूलखर्ची की रकमो को अनैतिक और असामाजिक कार्य मानते हुए भी मुझे यह सब करना ही पडेगा। अकेला चना भाड नही फोड सकता, दुनिया जब तक इस तरह की भद्दी मान्यताओ को मानकर चलती रहेगी तब तक एक महिपाल शुक्ल ही बेचारा क्या कर सकता है। कल्याणी बेचारी के मन को वह कहाँ तक दबाये ? शकुतला का विवाह वह शानदार ढग से करना

चाहती है। यह उसके हृदय की विशालता का परिचय देता है। आजकल कौन स्त्री अपनी ननद की लडकी के लिए इतनी चिंता करेगी ? बस अब, महीने भर मे शकू के योग्य उत्तम कुल का वर ढूँढ ही लूंगा। चट मँगनी पट ब्याह करके और फिर मेरे आगे भी गृहस्थी है। अपने बच्चे किसे प्यारे नही होते। भाई-बहनो के लिए जब मैंने इतनी जान खपाई तो क्या अपने बच्चो की उन्नति की कामना न करूँ ? हाँ, पर चोर, स्वार्थी, कुलागार "

महिपाल का दूसरा मन उसकी इन तमाम बातो की छत फोड कर उसके स्वर्गीय पिता के स्वर मे धिक्कारने के लिए होश की ऊपरी सतह पर आ गया। बिना जोर से सोचे हुए भी वह अपनी कमज़ोरियो के बारे मे सोच रहा था, सामाजिक कमजोरियो की निस्वत सोच रहा था। व्यक्ति और समाज दोनो ही दोषपूर्ण हैं। जब तक समाज नही बदलता तब तक व्यक्ति बेचारा क्या करेगा ? चरित्र का चरित्र पर प्रभाव पडता है। जब तक समाज का निर्माण होता है, और समाज द्वारा व्यक्ति का पोषण। व्यक्ति और समाज के समन्वय का यही मूलभूत आधार है। इसी से कुटुम्ब की रचना होती है। आज का व्यक्ति और समाज दोनो ही इस आपाधापी की हुल्लडशाही मे पल रहे हैं। आज का व्यक्ति इतना मजबूर है कि नीति की ऊँची-ऊँची मान्यताओ को अगर औचक मे चूर-चूर कर भी दे, तब भी उसे क्षमा कर देना चाहिए।

दूसरा मन—इस बार पिता के स्वर मे नही—फिर धिक्कारने को प्रस्तुत हुआ। महिपाल अनायास ही कराह उठा। विकसित चेतना का आलोक महिपाल को अपनी अर्न्तदृष्टि फोडने से रोकता था। स्वय अपना ही होश उसे इस समय बडा महँगा पड रहा था। घिरा-घबराया-सा महिपाल आँखे फाड-फाड कर अपने चारो ओर देखने लगा। बीच सडक पर आकर खडा हो गया। कार के पास आने पर हाथ उठा कर रोका। कार रुकी।

"अरे गुरू, तुम यहाँ ?" रूपरतन ने पूछा—"आओगे ? मुझे तुमसे काम है।"

"आओ चलो, ! इलेक्शन मे मेरा कोई खास इटरेस्ट नही। मैं तो ऐसे ही चला आया घूमघाम देखने।"

रास्ते मे महिपाल ने पूछा—"इस बार तुम क्यो नही खडे हुए रूपरतन।"

"सच बतायें गुरू, बनिये का बेटा पहले अपना धधा देखता है, बाद मे कुछ और।"

महिपाल मन ही मन मे सोचने लगा कि यह वही रूपरतन है जो कभी समाजवादी बाते बघारा करता था, जिसने जनहित की बडी-बडी बाते कर उसे ठगा था। एकाएक रूपरतन उसके कधे पर हाथ रखकर बोले—"महिपाल, मेरे लिए मिनिस्टरी का चांस तो है नही। मुझसे भी बडे-बडे धाकड लोग उम्मीदवार हैं। इस बार डिप्टी मिनिस्टर शिप भी बँट रही है, मगर वो सब मुझे पसन्द नही। दूसरी बात कि अब अपना ज्यादा टाइम मैं अगर बिजनेस मे नही लगाता हूँ तो तुम जानते ही हो जमाना कैसा बेढब जा रहा है !"

"अरे, तुम्हारे जैसे महा लखपती भी जमाने को रोते हैं। ह-ह-ह-ह !"

"हृ-हृ-हृ ! जिससे जमाना चलता है वे लोग भी उस चक्र के नीचे आ जाते हैं। हरदम सावधान रहना पडता है।" रूपरतन ने गम्भीर होकर कहा।

"तुमने पॉलिटिक्स का चक्कर छोड दिया, ये अच्छा ही किया।"

"नही, छोडा तो ऐसा कुछ नही—खैर हटाओ ! एक प्रोपोजल देता हूँ। अपनी सब नई किताबे मुझे दे दो, मैं तुम्हारी पुरानी किताबो का कॉपीराइट तुम्हे लौटा दूगा, और रायल्टी बेसिस पर ले लूगा। बीस पर्सेन्ट रायल्टी। बोलो मजूर ?"

महिपाल सोचने लगा, अब इसे फिर से अपनी नई पोजीशन बनानी है, इसलिए मुझे फिर लुभा रहा है। मगर इससे काम निकालना है। जाहिरा तौर पर कहा—"मेरा सब तरह से लाभ है। आगे सतर्क—"

रूपरतन बोले—"पुरानी बातो को भूल जाओ गुरू ! असल मे तुम सिद्धान्तो के स्वप्न को साकार करने के उत्साह मे थे उस समय—वरना—दिल की बात करता हूँ तुम्हे लेकर मेरा मन कभी मैला नही हुआ। वही प्रेमभाव, वही इज्जत—"

"कहने की जरूरत नही। मै व्यवहार से पहचानता हूँ। अच्छा खैर, मेरी किताबों के लिए एडवास क्या दोगे ?"

"कितनी किताबे है ?"

"मेरी तीन किताबो के नये एडिशन नही निकले। प्रकाशक टटपुँजिये थे। खैर। एक नई कथा उठाई है आजकल—"

"खैर, तीन-चार हजार जो माँगोगे, दे दूंगा—"

"और मेरी पुरानी किताबो पर ?"

"देखता हूँ गुरू, पहले से चतुर हो गए हो।"

"अनुभवो ने सिखाया है।"

"ठीक ही है। अब हमारी-तुम्हारी और अच्छी निभेगी। खैर जो चाहे सो ले लेना।"

"क्या फिर कोई साप्ताहिक निकालने का विचार है ?"

"हाँ ! निकाल भी सकता हूँ। वैसे तुम्हे देखकर ही इन बातो के लिए इस्पिरेशन मिल रहा है। सोचता हूँ, प्रकाशन के काम पर ही पहली एटेन्शन पे करूँ इस बार। मैं कुछ नये ढग से एक्सपैरिमेन्ट करना चाहता हूँ इस बार। पेग्विन सीरीज की तरह भारतीय भाषाओ के श्रेष्ठ उपन्यासो की एक सीरीज चलाऊँगा। पब्लिसिटी अमेरिकन स्टाइल पर। हिन्दुस्तान के हर बडे शहर मे महिपाल शुक्ल के उपन्यासो पर—आई मीन वे सभी ऑथर्स जिनकी किताबे मैं पब्लिश करूँगा उन पर साहित्यिक गोष्ठियो मे पेपर्स पढे जायेगे, हर स्कूल, कालेज, यूनीवर्सिटीज, बडे रेस्ट्राँ, स्टेशन प्लैटफॉर्म, अखबार—हर जगह तुम्हारी पब्लिसिटी। मेरा पक्का विश्वास है कि अभी तक किसी प्रकाशक ने हिन्दुस्तान मे हिन्दी किताबो का बाजार बनाने के बारे मे सोचा ही नही।"

कार सेठ जी की कोठी पर पहुँच गई महिपाल का मन फूलने लगा। थोडी देर पहले का अवसाद मिट गया। वह अनुभव करने लगा कि उसके अच्छे दिन फिर से आ गये।

रूपरतन के घर, उनकी लाइब्रेरी मे दो घण्टे स्कीम बनाते हुए बीत गये। महिपाल बोला—"मेरा एक काम कर दोगे ?"

"बोलो ।"

"मुझे एक हार बेचना है ।"

"सोने का ?"

"नही, नवरत्न का ।"

"कहाँ से पा गये ?"

"मा का हार है—भारी है ।"

"क्यो बेच रहे हो ?"

"भाजी का विवाह करना है ।"

"कितना लगेगा ?"

"पद्रह हजार ।"

"बहुत ज्यादा है महिपाल । फिर तुम्हारे आगे भी बडी जिम्मेदारी है। क्या ननिहाल से अब भी मदद—"

"जब से मै गट्टू और वाइफ को लेकर वहाँ से आया हूँ, तब से एक पैसा नही लिया। और अब तो बेचारे आप ही परेशानी मे आ गये। ताल्लुकेदारी खत्म हो ही गई। परसो बेचारो के यहाँ बडा जबर्दस्त डाका पडा—"

"अच्छा ?"

"हाँ। मै वही था। मेरे हाथो एक डाकू की मौत हुई।"

"अच्छा !"

"कुछ पूछो मत ! डाके सुने थे, उस दिन प्रत्यक्ष अनुभव हुआ ।"

"तुम्हारे किसी ननिहाली को तो—"

"हाँ। एक नौकर तो उसी समय मर गया। एक की हालत बेहद नाजुक थी, शायद अब तक खत्म भी हो गया होगा। दो को मामूली जख्म आये।"

"माल क्या गया ?"

"डेढ़ लाख रुपये की ज्वेलरी गई। बडा नुकसान हुआ।"

"हाँ वो तो हुआ ही ।"

"मै इसीलिए और चिंतित हूँ ।"

"किस बात के लिए ?"

"अरे, वही हार !"

"हाँ-हाँ। लेते आना। देख लूंगा। ..ये डाकुओ का इस्टीट्यूशन भी पुराने जमाने का कम्यूनिज्म है। अमीरो को लूटना, गरीबो को दौलत बाँटना—"

"मै तो इसे सामतवाद की नीव मानता हूँ। डाकू ही अधिक शक्तिशाली होकर राजा बन जाते थे। महाजनो की दासता से जनजीवन को मुक्त करा कर—"

"क्या ? मै समझा नही।"

"मोहनजोदरो और हरप्पा जैसे नगर राज्यो को नष्ट कर ये सामत लोग नारा लगाते थे कि धरती पर फैल जाओ, धरती उसकी है जो उसे जोतता बोता है। सामत रक्षक और व्यवस्थापक होने के नाते किसान से उपज का छठा भाग कर के रूप में

लेता है—बाकी मुनाफा किसान का। इसलिए पहले जो किसान महाजन का मजदूर मात्र था, अब स्वतत्र होकर धनी बनता है। ये उस जमाने की एक महत्वपूर्ण प्रगति थी।"

"तुम मेरे खयाल मे हिस्ट्री को अपने ढग से तोड-मरोड़ रहे हो!"

"नही। ऐसी बात नही है, बल्कि सच ये है कि भारतीय इतिहास की एक सही-सही रूप-रेखा बन रही है। मोहनजोदारो और हरप्पा की खोज केवल कौतूहल की चीज नही है। वह हमारी अनेक वैदिक और पौराणिक कहानियो को निरर्थक से सार्थक करती है और हमे अपने विकास के क्रम को समझने मे मदद देती है। उदाहरण के लिए 'पुरदर' शब्द को ही लो। 'नगरो को जलाने वाला' इद्र निश्चित् रूप से सामतो का प्रतीक था। नगर राज्य के शासक सामतो के शत्रु थे, क्योकि ये व्यापारी थे। खेती इनका प्रमुख धधा न था। खेती ये उतनी ही करवाते थे जितनी कि खाने की जरूरत थी। आर्य सामतो ने जन के उत्पादन की व्यवस्था को बदल दिया। लोगो की खेती की तरफ रुझान बढी। जो काम-काजी कारीगर आदि अपना पेट भरने के लिए बडे व्यापारियो महाजनो के आश्रित थे वे खेती के द्वारा स्वतत्र हो गए। 'उत्तम खेती मध्यम बान' का नारा फैल गया। इसके प्रभाव से सामाजिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन हुआ।"

"इट्'ज रियली इटरस्टिंग! तुम—तुम कुछ पियोगे?" रूपरतन ने पूछा।

"नही, मुझे घर जाना है।"

"बीबी के सामने पीकर जाने में डर लगता है। ह-ह। तो यही रह जाना। पुरानी आदत है, तुम्हारी श्रीमती जी जानती भी हैं। मै कहलाये देता हूँ।"

"एक बार घर अवश्य जाऊँगा। वो हार भी लेता आऊँ। कीमती चीज अरक्षित—"

"अरक्षित क्यो! तुम्हारी वाइफ के पास होगा हार!"

"हाँ—आँ! उन्ही के पास है—उन्ही के पास है। फिर भी जब से डाका पडा है—"

"तुम भी यार पोगा बाह्मन ही रहे! डाकू कोई तुम्हारे यहाँ तो आ नही जायेंगे।"

महिपाल झेप भरी हँसी हँसा, बोला—"न-ही। एक बार जाऊँगा। अच्छा, आज तुम्हारे यहाँ ही रह जाऊँगा, घर मे कहता भी आऊँगा।"

रूपरतन का हाथ घटी के स्विच पर पडा। अर्दली आ गया।

"गाडी निकालने को कहो। पडित जी के साथ जायगी।"

२६

होली के एक दिन पहले, शाम की बात है। सज्जन दिन भर एक चित्र पर काम कर, पीछे वाले बरामदे मे चाय पी रहा था कि अचानक पुराने दरबान ने आकर कहा—"हुजूर की सास साहबा तशरीफ लाई है, साथ मे हुजूर के साले साहब और एक मुसम्मात भी हैं।" नये रिश्तो के नाम से सज्जन चौंक उठा। यह नही कि इन रिश्तो की उसे सूचना नही थी, जब शादी की है तो ससुराल के रिश्ते भी होगे। मगर यो अचानक ?

स्व० रायबहादुर लाला कन्नोमल के आर्टिस्ट पोते और अपने दामाद के ड्राइग-रूम मे चारो ओर आँखे फाड-फाड कर देखती हुई मास्टर जगदम्बासहाय की पत्नी अपनी बेटी के सौभाग्य पर ईर्ष्या कर रही थी। उनके पास ही उनके लडके की दईमारी बहू बैठी थी, दूसरे सोफा पर सज्जन के साले साहब पालथी मारे, कपाल और कनपटियो पर सिन्दूर की बडी-बडी बिदियाँ लगाये आँखे बद किये ध्यानमग्न मुद्रा मे बैठे थे।

सज्जन ने तनिक नाज के साथ हॉल मे प्रवेश किया। सास को देखा, लबी, दोहरे बदन की थी। जवानी मे सुन्दर रही होगी, पानो की घडी से होठ काले पडे हुए थे, आँखो मे कीचड भरी थी। देखने से अन्दाज लगता था कि कई रोज से नहाई भी न होगी। दूसरी युवती गो पर्दादार न थी मगर दबी-ढँकी थी। उसके साँवले-सलोने चेहरे पर पीलापन और उदासी झलक रही थी। साले साहब पहली झलक मे ही बडे अजीब लगे। मन ही मन बडी हँसी आई। सज्जन को देखते ही सज्जन की सास और सहलज खडी हो गईं। साले महोदय ने भी नेत्र खोल, गर्दन घुमा कर अपने बहनोई को इस तरह देखा मानो शिवजी कामदेव को भस्म कर रहे हो, 'बजरग-बजरग' आवाज लगाई और फिर गर्दन नीची कर घुटने हिलाते हुए बैठे रहे। सज्जन ने हाथ जोडे, सास ने बडी दुआये दी।

"हमाई नन्ही ने पिछले जनम मे बडे पुन्न किये जो ऐसा घर-शौहर मिला। हम तो बेटा सच मानना, तुम्हाए नौकरो तक से रिश्ता बाँधने के लायक नही। तुम्हाए ऐसा दामाद पाकर हम अपनी किस्मत को सराहते है।" कहकर सास साहबा ने अपनी कमर मे खुसा हुआ एक रूमाल खोलना शुरू किया, अँगूठी निकाली और सज्जन की तरफ बढती हुई बोली—

"ये—"

"ये क्या ?"

"ये तो लेनी ही पडती है। कायदे से शादी होती तो सब-कुछ होता, आपसे करार होता—नजर-नियाज मे फलदान, तिलक, दरवाजाचार, बिदाई मे न जाने कितना देना-लेना पडता है। तुमने तो हमाई एक छिदाम भी नई खर्च करवाई।" सज्जन की सास ने अपनी चेपीभरी आँखो मे वात्सल्य रस को मद बनाकर अपने दामाद पर

उँडेलते हुए बडे अदाज से उसका दाहिना हाथ उठाकर पन्ने की बडी चौकी वाली अँगूठी के पडोस में सोने की ढीली-सी अँगूठी पहना दी, फिर बलाये लेती दुआयें देने लगीं। सज्जन को अपनी सास के व्यवहार मे स्नेह होते हुए भी बनावट और सस्तापन ज्यादा लगा।

"हरी ओम ! बजरग !" साले साहब अपनी समाधि से फिर चौके, एक नि श्वास छोडी और फटी-फटी आँखो से टकटकी बाँध कर अपने बहनोई को देखने लगे। सज्जन का उनकी तरफ से खामोश डर-सा लगा। दुबली, पीली देहवाली दुखियारी-सी सलहज सिकुडी-सिकुडाई बैठी थी।

"नन्हा, अपने बहनोई का मुँह मीठा करो बेटा, ऐसे क्या देखते हो ? (सज्जन से) इसे अपनी बहन बहुत प्यारी है—शुरू से ही। नन्ही को भी अपने दद्दा से बडी मुहब्बत है। क्या कहूँ, तकदीर की हेठी हू बेटा—"

बाहर पोर्टिको मे कार रुकी, कार का दरवाजा खुलने-बद होने की आवाज आई। सज्जन के दिल को ठडी हवा का झोका-सा लगा, चेहरा खिल गया, आँखे दरवाजे की ओर उठ गई। सज्जन इन रिश्तेदारो के साथ कुछ अजब-अजब-सा अनुभव कर रहा था। सज्जन ने हाल मे आते ही देखा, कन्या चिकन की साडी, हल्के पिस्तई रग का सादा ऊनी ब्लाउज, और हल्के चाकलेट रग का शाल और बारीक पट्टियो की सफेद चप्पल पहने हुए थी—बडी अच्छी लग रही थी।

मास्टर जगदम्बासहाय की धर्म-पत्नी ने महीनो बाद अपनी बेटी को देखा था। नन्ही औरत हो गई थी। चेहरे पर भारीपन आ गया था। चाल-ढाल, तौर-तरीके मे भी पहले से फर्क था, मगर माँ-भाई आदि को देखकर कन्या जिस खुशी से खिल उठी उसमे माँ को बेटी की पुरानी झलक मिली। नन्ही माँ की लाख दुराशाओ के बावजूद अब भी वही नन्ही थी। कन्या के पति को चित्रित करने के लिए मिलन का एक विषय मिला। माँ, माँ से भी अधिक कन्या की भावज का पीला चेहरा और थकी-बुझी आँखे कन्या को देखकर जिस तरह खिल उठी वह दृश्य सज्जन के मानस-पटल पर बडी मार्मिकता के साथ अकित हुआ था। नाते की गाँठ कैसी कठिन, और कितनी सहज है—जितनी ही खिचती है उतनी ही मधुर और मजबूत होती है। कन्या के बडे भाई साहब सोफा पर यथावत पालथी मारे बैठे रहे। एक बार नेत्र खोलकर नन्ही-अम्मा मिलन के दृश्य को देखा, फिर उसे माया समझ कर अपनी समाधि मे लीन हो गए।

कन्या अपनी भावज से लिपट गई। माँ से हँसकर अलग से बाते की। दद्दा के पैर छुए परन्तु उनकी समाधि भग न हुई। समाधि-मुद्रा मे उनका मुख तेवर चढे शून्य अर्थात् सिफर की ऐसी तस्वीर-सा लगता था जो किसी कार्टूनिस्ट की करामात हो।—"ये साला तो वाकई गाली ब्रॉड साला है।" सज्जन ने कुछ मजाक और कुछ खिझलाहट के मूड मे सोचा।

सज्जन की सासुजी अपनी बेटी के गले मे मटरमाला पहना रही थी—दृश्य मे कोई हार्दिकता पवित्रता न थी।

"हरिओम ! बजरग ! बजरग !" साले साहब ने समाधि भग की। सभो को

चौंधियाती-आँखो मे देखा। अम्मा बोली—"अरे नन्हा, कैसा है तू, बहन के घर मिलने आया और—"

"क्यो जी मिस्टर सज्जन वर्मा, मैं आपके महल में बैठ कर अपनी बीडी पी सकता हूँ ?"

"दद्दा कैसी बात करते हैं आप। पीना है तो पीते क्यो नही ?" कन्या ने भाई को झिडक कर सचेत करना चाहा।

सज्जन ने अपने गाउन से सिगरेट-केस और लाइटर निकाल कर साले की तरफ बढाया। सालारजग बोले—"मैं आपके यहाँ की कोई चीज कबूल नही कर सकता।"

सज्जन ने अपना सिगरेट-केस वापस जेब मे रख लिया। कन्या से बोला—"मै चलता हूँ डार्लिंग। मुझे जरा काम है। तुम माताजी वगैरा की—

"भैया, तुमसे एक काम है।" सासजी अपने दामाद से बोली। सज्जन रुक गया। वनकन्या अपने पति का चेहरा पढने लगी—मूड बुरा नही लगा। गम्भीरता के मोटे पर्दे के नीचे होठो पर हँसी दबी-दबी सी खेल रही थी। सासुजी ने अपने दामाद से पास बैठने का बडा आग्रह किया, परन्तु सज्जन—"मेरी ऐसी ही आदत है" कहकर खडा ही रहा। मास्टर जगदम्बासहाय की पत्नी कुछ कहने ही जा रही थी कि नन्हा बोल उठे—"नन्ही ?"

"जी ?"

"तुम जानती हो आज मैं यहाँ क्यो आया। कल रात मेरी शकरजी से इस पर बडी बहस हुई। उन्होने कहा कि बेटा तुझे नन्ही के घर जाना चाहिये। मैंने कहा मैं हरगिज नही जाऊँगा। इस पर शकरजी भी अड गये और मैं भी अड गया। फिर मेरे अलीगज वाले* ने बीच-बचाव कराया।"

सब लोग नन्हा बाबू की तरफ देखते हुए खामोश थे। कन्या की माँ सज्जन से अपनी बात कहने को आतुर थी, मगर नन्हा बाबू की बातो का सिलसिला जारी था। बोले—"नन्ही, अब मेरी सिद्धी पहले से बौहत बढ गई है, समझो। चाहूँ तो तेरे घर का सब साज सामान एक सैकिन्ड भर मे अपने घर पहुँचा द। मगर नही। मै माया-मोह मे नहीं पडता। जब मेरे पास सिद्धी आई तो मुझसे बोली कि अगर तुम चाहोगे तो अपने तकिये के नीचे एक लाख के नोट हर रोज पाओगे। मेरी जगह पर अम्मा होती तो माया-मोह के चक्कर मे फँस जाती। मगर मुझसे तो मेरे गुरु बजरगबली धीरे से आकर कान मे कह गये थे कि बिश्नूसहाय, माया ठगनी के चक्कर म न आना। मैं तुम्हे भगवान के दर्शन करा दूँगा—"

"नन्हे, ये क्या ऊल-जलूल बाते बक रहा है। जरा कुछ तो लिहाज कर,"—कन्या की माँ बोली।

"तुम इसे बेहूदा बाते कहती हो ? क्या तुम्हे मेरी सिद्धी पर विश्वास नही है।" सज्जन का साला अपनी माँ पर गरजा। नन्हा की बहू का चेहरा डर से पीला पड गया। बहू धीरे से अपनी सास से बोली—"अम्मा कह दो विश्वास है।"

*अलीगज मे लखनऊ का प्राचीन हनुमान मदिर है।

नन्हे महाशय बडी जोर से दाँत पीस कर लाल आँखो से घूरते हुए अपनी माँ की तरफ बढ रहे थे । सज्जन ने साले की बाँह पकड कर जोर से झकोला दिया, कहा—"खामोश बैठिये उधर ।"

साले महाशय सकपका गये, बडबडाने लगे—"मुझे बीडी नही पीने दते । मै शकरजी से कहूँगा । माई गुरू विल सी यू ।" गुस्से से भरी आँखे निकाल कर दाँत भीचते हुए साले साहब ने कहा और फिर रुक कर एक गर्म साँस छोडी ।

मास्टर जगदम्बासहाय की धर्मपत्नी ने अपनी लडकी से कहा—"उस दिन के बाद से ये हालत हो गई है इसकी । हम लोग पल-पल की खैर मना कर दिन गुजार रहे है । घर मे क्या हाल है, क्या बतलाऊँ ? (सज्जन से) भैया, घर-घर जाँच करके देखो किसकी आबरू मे दो-चार पैबन्द नही टँके हुए है । फिर हमाए घर ने ऐसा कौन-सा बडा कसूर किया है ? तुम्ही इन्साफ करके देखो ।"

"उन सब बातो को इस समय रहने दो अम्मा ।" कन्या ने माँ की तरफ न देखते हुए मन की बढती हुई परेशानी को चेहरे पर कस कर कहा ।

नन्हा बाबू उर्फ विश्नूसहाय जी एकाएक उठकर गोल टेबल पर रक्खी हुई मिठाई की हडिया मे हाथ डालने लगे, उनकी माँ अपनी बेटी की बात का उत्तर देने जाते रुक कर उनसे डाँटकर कहने लगी—"नन्हा, कहाँ मत मारी गई है तेरी । छोटी बहन के घर का—"

"सब माया है, मिथ्या है । बोलो मत ।" कहकर नन्हा बाबू ने मिठाई के कई टुकडे एक साथ निकाल कर अपने मुँह मे भर लिए ।

मास्टर साहब की धर्मपत्नी ने अपनी लडकी-दामाद की ओर दयनीय दृष्टि से ताकते हुए धीरे-धीरे कहा—"ये हाल है । इसके मारे तो घर मे अब कोई सो नही सकता, कोई काम-काज नही कर सकता । रसुँइयाँ मे घुस कर सब पकाया हुआ खाना कभी फेंक देता है, कभी बाहर जानवरो को खिला देता है । क्या कहूँ, इसके हाथो पिटते-पिटते हम लोगो की बस जान निकलनी बाकी रह गई है । तूने अपने बाप को कैद करा ही दिया, अब इसको भी पागलखाने भिजवा दे नन्ही, और हम लोगो के वास्ते एक-एक जहर की पुडिया—" उनकी आँखे और गला भर आया । आँखे पोछने के बहाने एक अच्छाई यह हुई कि उनकी आँखो की चेपी पुछ गई ।

एकाएक सज्जन ने कन्या के कधे पर धीरे से हाथ रख कर कहा—"इन्हे बाबाजी के यहाँ पहुँचा दूँ ?"

कन्या ने अपने मन की व्यथा और अनिश्चय को पति की नजरो मे उँडेल दिया, बोली—"अम्मा से पूछ लो ।"

अम्मा ने सुन लिया, बोली—"सनक गया है । घर मे कोई मर्द नही इस वजह से और शेर हो गया है—" फिर एकाएक दामाद के पैरो पड गई । सज्जन को बडी उलझन मालूम हुई, सास की दोनो बाँहे पकड कर उठाते हुए बोला—"ये क्या—ये क्या ? उठिये ।"

"बेटा, मेरा सुहाग मुझको वापस लौटा दो । ईशुर तुम्हे सब कुछ दे । वे जैसे भी

है, मेरी जिदगी का सहारा है। उनकी खातिर जाने क्या-क्या बर्दाश्त किया—"

"बाबू कानून के हाथ मे है। हम लोग कुछ नही कर सकते।"

"मै तुमसे कुछ नही कहती नन्ही। जिसके बल पर तूने अपने बाप को कैदखाने मे डलवाया वो उस वक्त मेरा कोई नही था, मगर अब वो मेरा बेटा है। मेरा भी हक है।"

कन्या का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। अपनी सास की अधिकार पद्धति को देख सज्जन स्वय मन ही मन घबरा गया था, किन्तु कन्या के क्रोध को देखकर उसने अपने को साध लिया, मीठी जबान से काम लेते हुए सास से कहा—"हक आपका पूरी तौर से है। मुझे इससे इन्कार नही। पर इस सबध मे आप मुझसे कुछ न कहे तो बेहतर होगा। मेरे हाथ मे वाकई कुछ नही। सरकार की ओर से उन पर मुकद्दमा चल रहा है।"

"सब लोग कहते है कि जो तुम जमानत कर लो बेटा तो वो आ सकते है। तुम्हारी हर जगह पहुँच है।—"

पति के चेहरे पर एक शीघ्र दृष्टि डाल कर वनकन्या माँ से बोली—"अम्मा, तुम्हारे हाथ जोडती हूँ, और जो कहो तुम्हारी सेवा करे, पर इनसे कोई गलत काम करने के लिए—"

"गलती किससे नही हो जाती—"

"बाबू ने गलती नही अपराध किया है।—'

"अपराध नही तो वो किया है।" मास्टर साहब की धर्मपत्नी का स्वर तीखा और तेज हो गया, जोश मे आकर एक साँस मे बोलती और आवाज चढाती गईं—"ये सब काँटे तेरी चाची ने बोये है, उसको क्यो नही पकडवाती। उस रडी ने जैसा-जैसा मेरा कलेजा जलाया है—(फुक्का फाडकर रोने बकने लगी) मेरी किस्मत मे आग लगाई है, वैसा उसके आगे आया, और भी आगे आयेगा। रोये-रोये मे नासूर होगा—"

"पानी!" मिठाई गले मे फँस गई थी। सज्जन ने देखा, सालारजग एक हाथ मे हँडिया मे और दूसरे से अपना गला सहलाते हुए कारुणिक मुद्रा मे बैठे थे। सज्जन ने आगे बढकर घटी का स्विच दबाया। एक नौकर फौरन ही हाजिर हुआ। 'पानी लाओ' कहते हुए सज्जन का ध्यान अचानक इस बात पर गया कि नौकर लोग परदे के बाहर आसपास खडे यह सब तमाशा देख रहे होगे। फिर आपस में बाते करेगे, मजाक उडायेगे। सज्जन के सामने नये सिरे से अपना यह विचित्र साला और यह तमाशा दिखाने वाली गदी-मैली सास फिर गई। यह उसके रिश्तेदार है, उसकी पत्नी के सगे भाई और माँ है। उन्हे अपना रिश्तेदार कहना पडेगा। कैसी बेइज्जती है। कन्या ने इस घर मे आकर इज्जत कमाई। उसके किसी व्यवहार से कभी बेहूदगी और फूहडपन नही जाहिर हुआ, वरना रईसो के नौकर तो रईसो से भी ज्यादा नुक्स निकालने मे माहिर होते है। यह सब मेरे साले और सास मिल कर आज कन्या की कुलीनता के बारे मे बडा गलत इम्प्रेशन डाल जायँगे।

पानी आ गया। नन्हा बाबू का हाथ अब भी हँडिया के अदर ही था, दूसरे हाथ से गिलास ले वे गटक गटक पी गये। छक कर उन्होने 'हरि ओम, बजरग-बजरग' की हाँक लगाई, फिर पास ही खडे हुए अपने बहनोई को देख कर बोले—"क्यो जी, मि० सज्जन वर्मा, कुछ साधना करते हो कि नही।"

सज्जन इस प्रश्न से अचकचा गया। नौकर खड़ा था, इसलिए कुछ कहते न बना। वह कन्या के पास आया, उसे अलग ले जाकर धीरे से बोला—"कन्या, लिल्लाह के लिए इनसे पीछा छुडाओ। सौ-पचास की मदद मागे तो दे दो—"

बाहर पोर्टिको मे किसी कार के आकर खडी होने की आवाज आई। सज्जन कॉप गया। कोई बाहरवाला होगा तो इस साले को देखकर मन मे क्या सोचेगा। दूसरा नौकर कमरे मे दाखिल हुआ, बोला—"डाक्टर साहबा आई है, हुजूर।' सज्जन न कन्या की तरफ देखा, बोला—"शीला आई है। तुम उसे—"

"तुम उन्हे रिसीव कर लो, मैं अभी इन्हे विदा कर आती हूँ।'

सज्जन बरामदे मे आ गया। "हलो", डा० शीला की आवाज और मुस्कान मे आज सज्जन को थकान नजर आई। "हलो—शीला! इस वक्त मरीजो को छोडकर कैसे आ गई।"

"जापलिग रोड मे एक मरीजा को देखने जा रही थी। इधर एक मिनट के लिए तुमसे मिल्ने आ गई।"

"आओ, ऊपर चलकर बैठे।"

"नही, बाहर आओ। तुमसे एक बात कहनी है।"

पोर्टिको के बाहर क्यारियो के किनारे-किनारे दोनो चलते रहे, दोनो चुप थे।

लान मे प्रवेश करने के लिए बेल से छाए हुए बॉस के फाटक के पास तक आकर डा० शीला स्विग खडी हो गई। बोली—"दुर्जन—" कहते-कहते शीला रुक गई, बडी करुण दृष्टि से सज्जन को ताकते हुए दर्द-भरी आवाज मे पूछा—"क्या तुम्हारे दोस्त अब मुझसे कभी न मिलेगे ?"

सज्जन के दिल मे बात ने टीस पैदा की। बोला—"मुझे पता नही था कि वह तुम से नही मिल रहा है आजकल।"

"कई महीने हो गए। बस, वही मिले थे चौक मे दावत के दिन। इट वाज इन जनवरी—शायद २५ तारीख थी।"

"कोई खास बात हुई थी ?"

"क्या बतलाऊँ आई हैव नो ग्रज अगेन्स्ट हिज वाइफ, मगर यह सच है कि वह महिपाल ऐसे जीनियस को समझ नही पाती। इधर दुबले कितने हो गये है। मैंने कल उन्हे अमीनाबाद मे सडक पार करते हुए देखा था—"आई कान्ट बियर दिस एनी मोर।" करते-करते डॉ० शीला का गला भर आया। उन्होने अपना वैनिटी बैग खोलकर रूमाल निकाला।

शीला के कधे पर हाथ रख कर उन्हे सात्वना देते हुए सज्जन ने कहा—"डोन्ट बी फुलिश शीला, मै जानता हूँ, महिपाल तुम्हारे लिए कैसा भाव रखता है। वह तुमसे जुदा नही रह सकेगा।"

"मै मिसेज शुक्ला से उनके पति को छीनूंगी नही। लेकिन मै फील करती हूँ कि महिपाल पर मेरा भी हक है।"

सज्जन गहरे विचार मे पड गया। एक परिणीता और दूसरी प्रणयिनी। किसका

हक माने, किसका न माने। प्रेम क्या किसी शास्त्र से बँध कर चल सकता है। किसी पर किसी का दिल आ जाय तो उसे कौन रोक लेगा ? तुरत ही, थोडी देर पहले का प्रसग उसके ध्यान मे आया, जब उसकी सास अपने पति और जिठानी के प्रेमकाड को कोस रही थी—"लेकिन यह बात कुछ ओर है।"

शीला बोली—"तुम उनसे कह जरूर देना।"

"मै उसे तुम्हारे पास जरूर भेज दूगा। मैं कल सबेरे ही उसके पास जाऊँगा।"

"तुम इस बात का किसी से जिक्र न करना। नाट ईविन टू योर वाइफ।"

"नही-नही। खातिरजमा रक्खो। और तुम किसी तरह परेशान मत हो।"

"अच्छा, तो ठीक है। एन्ड हाउ इज योर वाइफ ?"

सज्जन धर्म-सकट मे पडा। कन्या अन्दर है, कहने पर शायद डा० शीला उससे मिलने के लिए वहाँ पहुँच जायँ। वहाँ उसके अजीबो-गरीब साले साहब हैं, सास हैं।

सज्जन इस प्रकार हाँ-ना कुछ न कह कर बात को टालते हुए बोला—"तुम्हें परेशान होने की कोई जरूरत नही, शीला। तुम जानती हो कि महिपाल बहुत बडा और आर्टिस्ट स्कालर होते हुए भी बेहद अस्थिर बुद्धि का है। एनी वे, आइ प्रामिस—मैं उसको तुम्हारे पास तक ले आऊँगा।"

"उनके साले की शादी मे शायद किसी ने हम लोगो के खिलाफ कुछ कहा था। उस वक्त उनकी वाइफ ने भी शायद इसको लेकर काफी कलह की थी। महिपाल दो दिन मेरे यहाँ रहे थे।"

"अच्छा, मुझे यह सब कुछ भी नही मालूम।"

"तुम मथुरा गये थे। ये सब बाते मैंने तुम्हे इशारतन इसलिए कह दी जिससे कि तुम उन्हे समझदारी से हैन्डिल कर सको अच्छा तो चलती हूँ।" शीला दो कदम चली, फिर रुकी, नजर झुकाए हुए कहा—"भोलापन महिपाल के कैरेक्टर की सबसे बडी खूबी रहा है। इस बार वे अपने उसी भोलेपन को मार कर एक नई जहनियत अपने ऊपर जबर्दस्ती लाद रहे है। मै उन्हे बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। वे बहुत दिनो तक अपने ऊपर यह टार्चर बर्दाश्त नही कर पायेंगे—डरती हूँ कि उन्हे कुछ हो न जाय।"

सज्जन पोर्टिको की तरफ बढते हुए दिलासा देता हुआ बोला—"शीला, खातिर जमा रक्खो, महिपाल अब भी उतना ही भोला है। कल—हाँ, कल ही तो—वह यहाँ सुबह ही आ गया था—एन्ड विल यू बिलीव, हम लोग रात के १०॥ बजे तक बाते करते रहे—स्त्री-पुरुषो के रिश्तो की, जातियो की, आर्य-अनार्य कल्चर की, मै तुमसे सच कहता हूँ कि अगर उसका भोलापन खो गया होता तो उसमें यह सब जानकारी हासिल करने के लिए उत्साह न होता। तुम यकीन मानो, ज्यादातर बोलने का काम वही करता रहा, न थका, न उकताया।"

"लिख रहे हैं ?"

सज्जन रुक गया। "नही। मेरे खयाल मे उसको शायद टाइम नही मिला। मैं तुम्हारा मतलब खूब समझ रहा हूँ, शीला। मगर मेरा खयाल है कि उसमें लिखने की शक्ति खूब बाकी है। यो तो अक्सर मैं ही महीनों एक भी तसवीर नही बना पाता।"

"हाँ, आँ   अच्छा चलती हूँ।"

सज्जन ने रुकने पर जोर न दिया। ड्राइंग-रूम मे जब पहुँचा तो देखा कि मिठाई की हँडिया कालीन पर फूटी पडी थी, कन्या की कनपटी से खून बह रहा था। शायद कुछ ही क्षण पहले यह वारदात हुई थी। सज्जन की सलहज कन्या का गाल अपने पल्ले से पोछ रही थी, अम्मा खडी देख रही थी और साले साहब फिर समाधि मुद्रा मे बैठे हुए थे।

कन्या को चोट लगी देखकर सज्जन को गर्मी चढ आई। उसे देखकर वनकन्या की माँ अपना मूक व्यवहार छोड बेटी के जख्म के लिए विचलित हो उठी। सज्जन से कहा—"देखो तो भैया मेरी तकदीर कैसी है। तुम इसे पागलखाने भिजवा ही दो। जहाँ एक अहसान किया है, वहाँ दूसरा भी कर दो।"

सज्जन का जी चाहता था कि अपने साले को बुरी तरह पीटे। ईरानी कालीन पर मिट्टी की हँडिया के टुकडे बडे मनहूस मालूम पड रहे थे। न जाने कहाँ से फूटे मिट्टी के बर्तन के साथ मृत्यु का सम्बन्ध उनके मन मे इस समय समा गया था और यह चीज उसे बेहद खौला रही थी। सास को जवाब न देकर उसने अपनी पत्नी से कहा—"कन्या, माँ से मिल चुकी, भीतर जाओ।"

"तो बेटा फिर तुम्हारे दरबार मे हमाई सुनवाई नहीं हुई?" सास बोली।

"जी नही। मैं गलत काम में कभी किसी की मदद नही किया करता। कन्या जाओ।"

"भाभी को मैं अपने पास रखे लेती हूँ अम्मा। फिर पहुँचा दूंगी।"

"नही। हमारा पापियो के घर का कोई आदमी तुमाए याँ रहेगा तो छूत नही लग जायेगी—। नन्हे, उठ। चले अब। जब अपने ही गैर हो गये तो गैरो को क्या कहे। अरे, जिसने अपने बाप को सारे आलम मे ढिंढोरा पीट कर गिरफ्तार कराया उस लडकी से कोई उम्मीद रखना ही मेरी सख्त भूल थी। मगर इतना कहे जाती हूँ कि इसान को अपना वक्त अच्छा देखकर घमड से फूल नही जाना चाहिये। अगर कल को यही तेरे शौहर ऐसी कोई गलती कर बैठें—"

अब तक सयत रहनेवाली कन्या अब अपने को सम्हाल न सकी। उसका चेहरा और आवाज, दोनो ही तमतमा उठे। बोली—"इनके ऐसे आदमियो से गलती भी होती है तो उससे भी किसी इसान की भलाई ही हो जाती। इनसे किसी की बुराई नही हो सकती। इनके ऐसे आदमी है कितने दुनिया मे—"

"बस—बस बहुत हो चुका। अब तुम जाती क्यो नही कन्या।" सज्जन ने अपनी पत्नी को झिडका और घटी का स्विच दबाया। नौकर हाजिर हुआ—"रामगुलाम, माताजी के वास्ते एक ताँगा ले आओ। और यह कूडा साफ करवाओ।"

सज्जन के मिजाज का पारा चढ चुका था। इस समय जन-साधारण के प्रति अपनी करुणा को भूल, वह विशुद्ध एरिस्टोक्रटिक मूड में आ गया था। कन्या का हाथ घसीट कर बोला—"चलो।" और उसने उसे रुकने न दिया। रामगुलाम को चलते-चलते आदेश दिया कि वह फिलहाल यहीं रहे।

बाहर गैलरी से एक नौकर को ड्राइग हाल म यह हिदायत देकर भेज दिया कि

उस पागल पर पूरी नजर रखी जाय ताकि वह किसी चीज को खराब न कर सके ।

इस घटना के बाद कन्या बेहद थक गई थी । सज्जन ने उसके उपचार मे रियासती चोचले करने चाहे, पर कन्या ने उसे बरज दिया । सोहाग-सुख से सतुष्ट वनकन्या ने अपने पति का ध्यान दूसरी तरफ करने का यथासाध्य प्रयत्न किया, परन्तु सफल न हो सकी। अपने स्कूल की बाते की, कई घरो की स्त्रियाँ सिलाई-बुनाई के काम के सिलसिले में उससे मिलने आई थी, उसके सम्बन्ध मे कुछ उखडी-उखडी सी चर्चा की, परन्तु हर बात जो शुरू होती उसका लगाव कही-न-कही आज शाम की घटना से निकल ही आता था, और शाम की घटना पर, कन्या के मैके वालो के सम्बन्ध मे दोनो एक शब्द भी मुँह से नही निकाल रहे थे ।

प्रकट रूप से और-और बाते करते हुए भी कन्या का मन अपनी बात में फँसा था। उसने अपने पिता को दड दिला कर न्याय किया या अन्याय, पाप किया या पुण्य—यह सवाल उसे अक्सर सताया करता था । अनेक स्त्रियाँ जो उसके सामाजिक कार्य मे सहयोगी या विरोधी बनकर आती है, वे सब दबे-ढँके या खुले आम यही कहती है कि कन्या ने पिता के विरुद्ध उठ कर बहुत बडा अन्याय किया हे, बडा अभारतीय, असास्कृतिक कार्य किया है। आज उसकी माँ भी उसके मुँह पर कह गई। सज्जन जब शीला से मिलने के लिए बाहर गया था, तब कन्या की माँ ने उसे यह भय दिलाने का प्रयास भी किया था कि बडे आदमियो का कौन ठिकाना, आज ब्याह किया, कल जब मन भर जायगा तो निकाल बाहर करेगे। जब जात-बिरादरी मे ढग समेत होने वाली शादियाँ तक टूट जाती है तब इस तरह की नकली शादी का कोई भरोसा ही नही। कन्या उस समय बुरा लगने पर भी बात को टाल गई, किन्तु बाद को जब अम्मा ने फिर उसके पति को आड बना कर ऐसी बात की तब तब उसके इत्ते-पित्ते जल उठे । 'अम्मा को मेरे पति से ईर्ष्या है। अम्मा को मेरे सौभाग्य से ईर्ष्या है।' —यह विचार उसके मन मे जम कर बैठ गया, और उसे अपनी माँ पर बेहद क्रोध आ गया। इसके पहले नन्हा बाबू ने मिठाई की खाली हँडिया उस समय अपनी बहन पर खीच मारी थी, जब उसने बाबू को छुडाने मे मदद करने से अम्मा को साफ 'ना' कही। मौके की बात थी कि हँडिया का पूरा जोर कन्या के मुँह पर न पडा, बाई कनपटी के पास गाल की हड्डी पर टक्कर मारती हुई हँडिया कन्या के कधे से पीछे गिर कर फूट गई। गाल मे तेज खरोच लगी, खून झलझलाने लगा, बहने लगा। कन्या ने भाई के हाथ की मार होश मे पहली बार खाई थी, मा बाप और चाची के हाथ की मार तो बहुत खाई । विधवा चाची तो अपने जार के सुहाग की ठसक मे पिछले साल तक उस पर हाथ उठा चुकी हे, जिस पर घर मे भयकर महनामथ मचा था और पिता ने उसका पक्ष लेकर बोलने वाली अम्मा तक को लकडियो-लकडियो पीटा था। स्त्रियो की पिटाई उसके घर का आम रिवाज रहा है—जब अम्मा के ग्रह-नक्षत्र अनुकूल रहते तब चाची की छडी-पूजा होती, और जब चाची के ग्रह प्रबल होते तब अम्मा का यही हाल होता। नन्हा की अभागी बहू ने केवल अपने पति के हाथ की मार ही खाई, और कन्या की स्वर्गीया चचेरी भावज ने मरने के एक साल पहले से—जब से वह कन्या की माँ से षड्यत्र द्वारा अपने नृशस घृणित चचिया ससुर की पशुवृत्ति का शिकार बनी तब से—सास, चचिया सास और कन्या के

राक्षस पिता के हाथो आये दिन बहाने-बहाने से मार खाई। विवाहिता श्रीमती वनकन्या वर्मा को भाई के हाथ की मार तो न लगी (क्योकि भाई के प्रति उसका ममत्व अखड था) परन्तु अपने मायके के जीवन की सारी कलह और मार-पीट उसके होश मे आ गई।

इस समय चीनी नक्काशी के बेशकीमत पलँग पर रबड के मुलायम गद्दे पर बाँह के सहारे सिर उठाये लेटी हुई, बडे घर, अनेक नौकर-चाकरो की स्वामिनी, पिया की प्यारी सुहागिन अपने पिछले जीवन का ध्यान कर मन ही मन छटपटा रही थी। कैसे वह सारा कलुष उसके जीवन से धुल जाय, एक बात जो उसके पति के मन मे चल रही थी वही उसके मन को भी अपने ढग से मथे डाल रही थी—अपने पीहरवालो को अपना मानने मे उसे बडी शर्म आ रही थी। यह शर्म उसे शर्मनाक लगती थी, अपने अपने ही रहेगे, नाते का बधन अटूट है।

शाम की घटना पर बात करने की इच्छा बडी देर से घुटते-घुटते अब फूट पडी। कन्या बोली—"नाता भी क्या अजीब चीज है, केवल जुडना जानता है, टूटना नही।"

"सिर्फ भावुको और ईमानदारो के लिए—" कहते हुए पलँग के पास ही चीनी नक्काशी की कुर्सी पर सज्जन थोडा और पसर गया और पैर पलँग के सहारे रख लिए।

"हाँ   आँ-ऍ, लेकिन नाता तो कोई भी, किसी हालत मे भी नही तोड सकता। मान लो कि कल को तुम्हारी तबीयत मुझसे भर जाय और तुम उसी तरह किसी और पर रीझ जाओ जैसे मुझ पर रीझे थे—"

"कहती जाओ, कहती जाओ! तुम्हारे इस मजाक के नश्तर को मै बडे धीरज के साथ बर्दाश्त कर रहा हूँ।"

कन्या हँसी, बोली—"मै तो सिर्फ एक मिसाल दे रही हूँ। ऐसा होता नही है क्या? आज मिले, कल शादी हुई, परसो डाइवोर्स—नरसो से फिर नया मिलन, नई शादी, नया डाइवोर्स। पर मैं पूछती हूँ, तलाक दे देने के बाद भी कभी मिलने पर वे भूतपूर्व पति-पत्नी क्या अपना पुराना नाता भूल सकते है?"

"मेरे खयाल मे, नही। महाकवि बायरन और उसकी पत्नी का प्रेम तलाक के बाद गहरा हुआ। —पर इसमें मेरी मिसाल कहाँ से आ गई थी?"

"अरे, तुम तो मजाक मे लापरवाही से कही हुई बात को भी गभीर बना रहे हो। इसके माने है कि तुम्हारे मन मे कही चोट-कचोट है।"

"हातिमताई ने कहा कि ऐ नेकबख्त यही सवाल मैं तेरे लिए भी दुहरा सकता हूँ।" सज्जन ने अभिनय के अन्दाज मे कहा।

कन्या मुस्कुराई, कहा—"मेरे इस लापरवाह मजाक और मेरे सब-कान्शस मे कोई चोर बोल रहा है—यही न?"

"यस मँदेमज़ेल, इफ यू दोन्त माइन्द।"

"अजी जाइय भी, मेरे मन में चिडियाखाना नही बसा आपकी तरह। इस मजाक का एसोसियेशन बतलाऊँ आपको?"

"इरशाद—"

"जब तुम डॉक्टर शीला स्विंग के साथ थे, उस समय अम्मा ने मुझे ये डर दिलाया था। मेरी हँसी रोके न रुकी उस वक्त भी।" कह कर कन्या के गले से जबर्दस्ती की खिलखिलाहट गूँज उठी।

सज्जन एक नजर मे ताड गया। हँसी और बौद्धिकता के इस आडम्बर की आड मे अगरबत्ती के धुंयें की बारीक लकीर जैसे लहराते हुए कन्या के भय पर सज्जन की सहानुभूति उमडी। अपनी सरल, सुन्दर और कुशल पत्नी के भोले चेहरे पर प्यार लहराया, सज्जन ने गभीर और शान्त-मधुर स्वर मे कहा—"कन्या, एक बात जिंदगी भर बार-बार, और किसी भी समय आजमाना, तुम्हारे इस जीवन-साथी मे लाख बुराइयाँ क्यो न हो—और हैं भी—मगर उसमे एक अच्छाई भी है। मै जब तक ठानता नही तब तक की बात और है, लेकिन मेरा मन जब किसी की बात पर जम जाता है तो वह बात पत्थर—नही—बल्कि पहाड बन जाती है। तुम कभी भी आजमा देखना।"

विश्वास से स्थिर और प्रिय की प्रशसा से चमकती हुई पुतलियाँ सज्जन के बोलते चेहरे मे रम गई थी।

२७

होली के दूसरे दिन सज्जन के घर बाबा राम जी और उनके उन सब पागल रोगियो का निमत्रण था जो किसी हद तक मानसिक स्वास्थ्य-लाभ कर चुके थे। सज्जन ने एक बस चार घटे के वास्ते किराए पर ले ली थी, उसी पर बाबा जी अपनी मडली के साथ पधारे थे। सज्जन की आलीशान कोठी मे अपने गणों के साथ प्रवेश करते हुए बाबा राम जी सज्जन को साक्षात् शिव के समान लगे। माँ के ठाकुरद्वारे मे ही सबको बैठाया। कन्या रसोईघर मे थी। सज्जन आज विशेष उत्साह मे था। माँ की मृत्यु के बाद आज पहली बार उसके घर मे त्योहार सुचारू रूप से मनाया जा रहा है—इस समय बाबा राम जी की मडली का निमन्त्रण है, शाम को कर्नल और महिपाल सपरिवार आयेगे। सब नौकरो को होली के पकवान और एक-एक रुपया 'त्योहारी' दी जाएगी, साथ मे एक-एक कुरता धोती और बसती साफा भी।

आज सबेरे से ही कन्या बेहद व्यस्त है, नौकरो को भी दम मारने की फुर्सत नही। कन्या ने सब को आश्वस्त कर दिया है कि कल दिन भर सबको पूरी-पूरी छुट्टी मिलेगी।

सज्जन ने मदिर को फूलो से खूब सजाया है, ठाकुरजी को रग छिडके हुए कपडे पहनाये है। चाँदी के बडे कटोरे में रग भर कर सोने की दो छोटी-छोटी पिचकारियाँ ठाकुर जी के सामने रक्खी है। माँ के चित्र पर बडे-बडे गुलाबो का हार पहनाया है। बाबा जी सज्जन की प्रसन्न मुद्रा देख कर बोले—"क्यो राम जी, ऐसा सुख पहले भी कभी मिला था?"

"नही बाबा जी ।"

"गृहस्थ आस्रम से बढकर और कोई आस्रम नही ।"

"यह कैसे बाबा जी ? मैं तो समझता हूँ कि सन्यासियो से बढ़कर और कोई सुखी नही है ।"

"जोगी सन्यासी का सुख अद्भुत हे इसमे कोई सदेह नही। पर देस काल के उपजुक्त हमारा सिद्धान्त तो ये है कि परम ज्ञान का मजा अकेले में लिया तो क्या लिया राम जी ? —सच्चा आनन्द तो कर्मजोग मे है और कर्मजोग की कसौटी है गृहस्थ आश्रम ।"

"लेकिन सारा दुख तो गृहस्थ आश्रम के कारण ही है। गृहस्थी के लिए ही मनुष्य एक दूसरे पर अत्याचार करता है, तरह तरह के पाप करता है—"

"और गृहस्थी मे रह कर मनुस्य पुन्य भी बहुत करता है, कर सकता है। गृहस्थी न होवैं तो दुनिया का रूप कैसा हो राम जी ? हमारी तरह सब लँगोटी धारी हुइ जावैं तौ यह सृस्टी कैसे चलैगी ?"

"न भी चले तो कोई हर्ज नही बाबा जी। चलकर ही क्या कर रही है ? अभी एटम बम बना है, सुना है कि हाइड्रोजन बम भी बनकर तैयार हो गया है। और भी न जाने क्या-क्या सघारक शक्तियाँ बनेगी—फिर ऐसी सृष्टि से लाभ क्या ?"

बाबा राम जी हँसे, कहा—"भगवान को मानते हो ?"

सज्जन इस प्रश्न से अचकचा उठा, फिर सँभल कर कहा—"समझ मे नही आता महाराज कि मानता हूँ या नही। अभी जब मथुरा गया था तो कृष्ण भगवान की जन्मभूमि देखकर यह सोचा कि भगवान शायद मनुष्य ही है। हमारे यहाँ राम-कृष्ण आदि सब अवतार आखिर जन्मे तो मनुष्य के ही रूप मे ही है ।"

"जथार्थ है राम जी, मै भी यही मानता हूँ। भगवान केवल मनुस्य रूप ही मे नही परतु जीवमात्र मे है। हाँ, यह भले कहिए कि इसकी चेतना मनुस्य मे ही सबसे अधिक होती है, इसीलिए भगवान व्यासदेव कह गए है कि मनुस्य से बडा और कोई नही। तब फिर क्या इतनी महान् जाति आत्मघात करके मरेगी ? यह बात सोचना भी विचित्र मालूम पडता है। राम घट-घट व्यापी है। उन पर विश्वास रक्खो ।"

सज्जन के मन मे एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई, परन्तु प्रश्न करने मे हिचक हुई, बात मुँह तक आते-आते रुक गई। बाबा राम जी अपनी छोटी-छोटी चमकती आँखो से उसे देखकर मुस्कराए, फिर बोले—"यो तो अभ्यासबस सब मे ही भगवान् को देखता हूँ, पर परम रूप का दर्सन तो अभी हमैं भी नही मिला राम जी। जिन्होने देखा है, बे कहते है कि अनुभव से राम ज़ी भी परम सिद्ध के रूप मे जीव को मिलते है। हमैं उनकी बात पर स्रद्धा है। बाकी सत्य तौ अनुभव-गम्य है। इसलिए प्रयत्न करते है। होगा तो मिलैगा, नही मिलैगा तो खड्डे मे जाय। हमैं अपनी निस्काम सेवा ही मे परम सुख मिल रहा है। हम तो इसी धरती मे भगवान् को बिचरते हुए देखकर परम सन्तुस्ट है ।"

"और बाबा जी, यह जो आप बैठे-बैठे ही दूसरो के मन की बात जान लेते है, भविष्य वर्णन करते है—"

बाबा जी खिलखिलाकर हँस पडे बोले—"इसमे रहस्य कुछ नही है राम जी।

अनुभव से सब कुछ सिद्ध है। और अनुभव साधना से सिद्ध है। सकल पदारथ या जग माही, कर्महीन नर पावत नाही।"

सज्जन विचार मे पड गया। एक दुनिया जो उसे अब तक रहस्यलोक की नजर आ रही थी—जिसके कारण भारतवर्ष ससार मे 'रहस्यमय भारत' के नाम से प्रसिद्ध है—वह बाबा जी के कथनानुसार अति सरल है, साधना द्वारा सुलभ है। कैसी है वो साधना ? क्या वह नही कर सकता ?

"क्यो नही कर सकते राम जी ? मनुस्य के लिए असम्भव कुछ नही, उसके इच्छा करने मात्र की देर है।"

"इच्छामात्र करने की देर है! इच्छामात्र करने की देर है!!"—सज्जन को लगा कि मानो क्षण भर मे उडकर उसने सब कुछ सिद्ध कर लिया। इस भावावेग से उसमे स्फूर्ति, आनन्दभरी तन्मयता भर गई।

"हॉ, सिद्ध कर लेने पर सब कुछ क्षण भर मे ही प्राप्त होना है। पर सिद्ध करते समय लगता हे, सक्ति लगती है। जिस मनुस्य मे सजम और धैर्य्य नही, वह साधक नही हो सकता।"

"परन्तु मेरा विश्वास है, मैं कर सकता हूँ।"

"तब ठीक है। अपने बिस्वास को कर्म की कसौटी पर अजमाइये।"

"मुझे क्या करना होगा ?"

"सेवा।"

"किसकी ?"

"राम की। राम जो घट-घट मे रम रहा है। तुम्है अपने स्वामी की—"

"बाबा जी, क्षमा कीजियेगा, बात काटता हूँ, मैं भगवान् का दास क्यो बनूँ ?"

"मत बनो। वात्सल्य भाव से पूजो, सखा भाव से भजो, आत्म भाव से भजो। किसी भाव से भजो, सेवक तुम्है हर हालत मे बनना ही पडेगा। माता अपने बच्चे की सेवा करती है, मित्र मित्र की सेवा करता है, मनुस्य स्वय सेवा भी करता है। सेवा क्या छोटी वस्तु है राम जी ? याद है, एक बार पहले भी आप ये प्रिस्न कर चुके हे।"

सज्जन लज्जित हो गया, बोला—"जी हॉ बाबा जी ये बडप्पन की दुर्भावना मेरी तर्कबुद्धि को बहका देती है।"

"बडप्पन की भावना बुरी नही, क्योकि ये बडप्पन तो राम का है। राम घट-घट ब्यापी हैं, अतएव उस बडप्पन के प्रिति भाव रक्खो। हम तो राम जी, न पढे न लिखे—हॉ अनुभव से जो बिचार उत्पन्न होते है, उन्हे गुनते, धुनते और बुनते रहते है। तुम तौ बहुत घूमे हौ, पढा है, सुना है, विद्वानो का सत्सग किया है—कैसे-कैसे बिसाल मदिर, भवन, मूर्तियाँ, बिज्ञान के करिस्मे राम जी की सक्ति ने इस पृथ्वी मडल पर दरसाये हैं! उसी सक्ति को भजो—उसी मे लीन हो जाओ।"

"बडा कठिन है . ।"

"हॉ, कठिन हमको भी लगता है। —और आप तौ राम जी, ऐसे-ऐसे भव्य चित्र आँक लेते हौ। हम नही ऑक पातें। हमै बडा कठिन लगता है। आप इतना कठिन काम

कैसे कर लेते हौ राम जी ?"

सज्जन श्रद्धा के आवेश में बाबा जी के चरणो में झुक गया। बाबा जी ने बड़े स्नेह से उसे उठाया और कहा—"गीता मे भगवान ने कहा है कि अभ्यास से जोग होता है। और अभ्यास किस बात का होय कि 'जोग कर्मसु कौसलग' —अर्थात कर्म की कुसलता ही जोग है। जितना मन-बचन-कर्म से काम मे लीन रहौगे उतनी ही कुसलता प्राप्त होयगी।"

"बडा कठिन होता है महाराज। माया-मोह विकार बाँध लेते हैं—ससार मे रह कर गृहस्थी के बधन मे रह कर—"

"राम जी ये अज्ञानी का मत है, बिज्ञानी का नही। हमै बताओ कि ये आटमबम बनाने वाले लोग कौन जगलो मे, गुफाओ मे रहते है ? साधना ही से तौ सिद्ध किया है न उन्होने।"

"परन्तु नाश को सिद्ध किया है उन्होने !"

"ठीक है, तुम निर्माण को सिद्ध करौ। जिसकी चेतना बिराट होयगी उसकी बिजय होयगी। द्वन्द्व न होय तो चेतना का रहस्य कैसे समझ मे आवै—बिकास कैसे होवै ? हम तौ कहते है राम जी, जोग का मार्ग गृहस्थास्रम वालौ के लिए ही है।"

कन्या आई। बाबा जी बोले—"क्यौ राम-भगतनियाँ, लक्छमी का आनन्द अनुभव किया ?"

कन्या झेप गई, नजरे नीची किये मुस्कुरा कर कहा—'जी हाँ, बाबा जी, लेकिन उतना ही जितना कि मुझसे साध्य है।"

"क्यौ ? यह देखौ, कैसा आलीसान महल है तुम्हारा। इत्ते नौकर-चाकर है। क्या नही है तुम्हारे पास ? मजे से पलँग पै पौढ के हुकुम चलाया करौ ?"

बाबाजी के कहने के ढग और आँखो की विनोद-भरी चमक ने पति-पत्नी को रुला दिया। सज्जन बाबा जी की ओर हाथ बढा कर बोला—"सच्ची लक्ष्मी तो इस देहरूपी महल मे बिराजती है, महाराज ! हम उसका सुख भला क्या जाने।"

"सुख-दुख तो भाव मे है, राम जी। जिसमे सुख मानो वही लक्छमी है। श्री और कुछ नही है राम जी—जैसे प्रात काल सूर्ज नारायण जब अन्तरिक्छ के गर्भ मे रहते हैं और आकास पर उसी का चमत्कार फैलता है—वैसे ही यह तेज भी अतर के भाव का प्रिकास है।"

सज्जन लक्ष्मी की यह नई परिभाषा सुन कर चमत्कृत हो उठा।

बाबा जी कहते गये—"बगाल मे, राम जी, रामक्रस्न परमहस महराज रहे, तौन एक हाथ मे सोना और दूसरे हाथ मे ककड लै के दोनो को अपने मन मे समभाव पर स्थित कर देते थे। किस कारन से ? इसलिए कि वह अनत स्री से बिभूसित थे। राजा जनक रहे, उनको नौकर-चाकर, फौज-फाटा, महल-दुमहले कौन चीज की कमी रही ? भगवान के ससुर, जगदम्बा के पिता, गृहस्थ आस्रमी, राजा। फिर भी उन्है अपने इस सुख से कोई मोह नही, क्यो ? इसलिए कि वह अनत स्री से बिभूसित थे।"

"सुनने मे तो बात अच्छी लगती है, बाबाजी, पर समझ मे नही आती।" कन्या न

कहा। "हम जिस वातावरण मे रहते है क्या उसका प्रभाव नही पडता। मै अपने जी को जानती हूँ। इतने वर्षों तक लक्ष्मीपतियो के सुख-चोचले के प्रति घृणा रखते हुए भी आज जब उसी वातावरण मे आई हूँ तो एकाएक इस बात से भी इनकार नही कर पाती कि इस वैभव-विलास का अपना एक आनद है जो धीर-से-धीर और सयमी से सयमी मनुष्य को भी—मग्न कर देता है। मेरे नेतिक सामाजिक विचार भले ही मुझे सम्हाले रहे—"

"हाँ, बेटी, यही नियम-सजम, आचार-विचार ही तौ बास्तविक श्री है। अभी तुम्हारे पास थोडी पूजी है, इसलिए बाहर की बडी पूँजी से तुम प्रिभावित हुई जाती हौ—जैसे दरिद्री लखपती से प्रिभावित होता है, लखपती करोडपति से प्रिभावित होता है। तुमको एक दृस्टात देवै। राजा जनक बिदेही कहलातै रहे। तौन सब रिसि-मुनियो को यह भया कि हम तौ ससुर कदमूल खाये, तपिस्या करै और यह राजा हुइ के भी हमारी पदवी पाय जायँ।—एक महात्मा रहे। वे बहुत लाल-पीले हुइकै जनकजी के दरबार मे आये और कहने लगे कि हमारी समझ मे यह नही आता कि तुम इतना राजसुख भोग कर भी कैसे बिदेही हो सकते हौ। भगवान के चरनो मे तुम्हारा मन कैसे बैठ सकता है। महात्मा बोले, बताओ तो बताओ, नही तो हम आज तुम्हारा सब ढकोसला भडाफोड कर देगे। राजा जनक बोले, महाराज, आप सुस्ताय लो, भोजन आदि कर लो, तब बैठि के विचारि करेगे। सो महात्मा की राजा के यहाँ बडी खातिरदारी भई। जब वह अस्नान-ध्यान, पूजा-पाठ से निपट गये तौ राजा उन्हे रसुइयाँ मे लै गये। सोने की चौकी, सोने का थाल, और छप्पन पकवान रामजी—बडे-बडे इतिजाम रहै। बाकी राजा जनक ने एक टिरिक यह की रही कि जिस आसन पर वह महात्मा बैठ कर भोजन करने वाले रहै उसके ऊपर एक नगी तलवार कच्चे धागे मे बँधवाय दी रही। महात्मा बडे सकपकाये। भोजन करने बैठे तौ, पर उनका सारा चित्त अपनी खोपडी पर लटकती भई तलवार ही मे जमा रहा। राजा पूछै, महाराज कढी कैसी बनी है और महाराज लड्डू कैसा है तो महात्मा हूँ-हाँ करके टाल देवै। जब महात्माजी भोजन कर चुके तब फिर जनकजी ने उनसे अपना सवाल दोहराया। महात्मा बोले, सच्ची बात तो यह है महाराज कि हमारा सारा ध्यान अपनी खोपडी पर लटकती भई तलवार मे रहा। राजा बोले, बस यही तौ रहस्य है। ध्यान जहाँ रक्खै तहाँ रहता है।"

सज्जन दो चुम्बको के आकर्षण मे समभाव से बँधा हुआ स्तब्ध था, परन्तु यह स्तब्धता उसे जड नही बना रही थी। विचार-चुम्बको के विद्युत-आकर्षण की सनसनी-सी उसकी नसो मे समा रही थी। कन्या बाबाजी को भोजन कराने ले गई। सज्जन ने केवल चुपचाप अनुगमन किया।

बाबाजी के आदेशानुसार उनका भोजन भी वही बना था जो उनके पागलो के लिए था। होली का त्योहार होने के कारण उन्होने मिर्च-मसाला-विहीन शाक-सब्जी के साथ आज सब को खीर ग्रहण करने की अनुमति भी दे दी थी। हाँ, कन्या ने फलो की भरमार सी कर दी थी। आसन पर बैठते हुए बाबाजी ने पति-पत्नी की ओर देख कर कहा—

"बाह्मन-साधू को जेवाते है तौ दच्छिना का करार पहले से हो जाता है। बोलो

बेटी, राम जी, हमें क्या दच्छिना देओगे तो तुम लोग !"

भावोत्साह की एक लहर सज्जन के मन में आई, किंतु उस पर नियन्त्रण करते हुए सधे शब्दो मे उसने कहा—"आज्ञा कीजिये।"

"यह अपना समस्त वैभव हमे दच्छिना मे देओगे, रामजी ?"

कन्या सज्जन का मुँह देखने लगी। सज्जन सिर झुकाये गभीर मुद्रा मे, झिझका खडा सोच रहा था। बाबाजी बोले—"इससे कम में हमें सतोष नही होयेगा रामजी।"

सज्जन बोला—"भाव तो है, बाबाजी, पर कह नही सकता कि इस पर सदा स्थिर रह सकूँगा। कुछ दिन विचार करने का समय दीजिये।"

"तौ तब तक हम यो ही थाली के आगे बैठे रहेगे, रामजी ?"

कन्या अपने पति की ओर देखती रही। सज्जन के चेहरे पर उसके अतर का भीषण द्वन्द्व प्रकट हो रहा था।

बाबाजी ने फिर कहा—"रामजी, या तौ जो कुछ तुम मानते हो उस पर डटौ। नही तौ उसे भूलकर उसी चक्र में घूमो जिसमे जगत घूमता है। सोच-विचार आखिर कहाँ तक करते रहौगे ? कोरा सोच-विचार तो त्रिसकु अवस्था है।"

"आप सब से यही दक्षिणा माँगते है, बाबाजी ?" सज्जन ने पूछा।

"यह पूछ कर ही तुम्हें क्या लाभ होगा ? समझ लो कि आज पहली बार यह तुम्हारी माया देख कर हमें भी लच्छमी की लालच लगी है।"

सज्जन ने कन्या की ओर देखा। कन्या उसका भाव समझ कर बोली—"मै सदा से अभावो मे पली हूँ। मुझे धन का अभाव नही खलेगा।"

"तब मुझे भी नही खलेगा। बाबाजी, आपकी आज्ञा स्वीकार है। बहुत भोग लिया इसका सुख। अब अतर की श्री चाहता हूँ। आप भोजन करे। मै परसो कचेहरी खुलते ही आपके नाम लिखा-पढी करा दूगा।"

"कौन-सी कचेहरी मे ?" बाबाजी खिलखिलाकर हँसे। हमारी तो इसी छण लिखा-पढी हो गई रामजी। अब यह धन तुम्हारा नही रहा। तुम केवल हमारे खजाची हौ। तुम केवल वेतन पाओगे।"

"ठीक है, ऐसा ही होगा, इस धन पर से आज मेरा स्वामित्व गया।"

"हाँ रामजी, इस लगर के सहारे तुम्हे स्थिर होना पडेगा। एक-एक पल का चिन्तन-साधन तुम्है अपना स्वामी बनायगा। तुम स्वामी बनना चाहते हो न ? —बनो !"

रगभरी, सुख-मस्ती भरी, ताजे सिगार भरी होली विचारमग्न हो गई। सज्जन उमडते विचारो के सागर में बहता चला। उस समय प्रत्येक विचार का समझ में आना असम्भव था और आवश्यक भी नही था, वह एक भाव रत्नाकर में तल पर बैठ गया था, उसके आसपास और ऊपर उसी जल के जीव-जन्तु—सुदर-असुदर, तीव्रगतिमान और शनैश्चर—विचार उसे घेरे हुए थे।

३८

बाबा जी को जीमकर गए लगभग दो घटे हो चुके थे। पोर्टिको के बाहर खडी हुई बस तक बाबाजी को पहुँचा कर पति-पत्नी जब लौटे तो नीचे की गैलरी तक साथ रहे। सज्जन ऊपर चला गया, कन्या नौकरो को खिलाने-पिलाने और भडार-घर बद करने के लिये नीचे ही रही।

कन्या तब से किसी न किसी काम मे लगी रही। नौकरो को खिला-पिला और बख्शीश वगैरा देकर दो घटे की छुट्टी दी। ठाकुरद्वारे मे पूजा के बर्तन मॉजे, कुछ देर तक अपनी सास के चित्र के आगे टकटकी बाँधे देखती रही, ठाकुर जी के सामने रक्खे दिए मे घी पूरा, बत्ती सुधारी, कुछ देर झाड-फानूसो को देखती रही। कमरे की छत और दीवारो पर पुरानी चित्रकारी हो रही थी, उसे खोई नजरो से निहारती रही। फिर ठाकुरद्वारे के दरवाजे बद किए।

बाहर चबूतरे पर आई। लान पार कर दूसरी ओर रसोई वाले बरामदे से सुस्त चाल, खोई सी गुजरती हुई इस ओर से ऊपर जाने वाले जीने पर चढ गई।

इस कोठी के बडे-बडे कमरे कीमती सामान से गँजे हुए है। स्टूडियो वाले कमरे को छोडकर, जहाँ सज्जन बैठा हुआ था, कन्या बडी देर तक इधर-उधर घूमती रही। कभी यहाँ खडी होती, कभी छिन भर के लिए वहाँ बैठती, कभी किसी पुरानी मूर्ति या फर्नीचर पर जमी हुई धूल साफ करती—ऐसे ही बहाने से अपना मन टटोल रही थी। यह घर, इस घर की हर चीज उसकी है। वह गृह स्वामिनी है। पॉच-छै महीने पहले कन्या स्वप्न मे भी इस बात की कल्पना नही कर सकती थी। अपने पीहर के घर के वातावरण से असतुष्ट पैसे के अभाव मे पली, बाहर से सयत किन्तु अतर से खीझ भरी, अपनी न समझी हुई महत्वाकाक्षाओ को लेकर कभी साहित्याराधन, कभी अभिनय कला और कभी राजनीति के क्षेत्र की ओर बढने वाली इस युवती ने रियासती वैभव के सबध मे पढा-सुना तो अवश्य था, परन्तु जी भर कर देखने का अवसर भी पहले कभी नही मिला था। वह रियासत से घृणा करती थी, रईसो पर व्यगबाण बरसाती थी। परन्तु जब सज्जन उसके प्रणय का याचक बना और वह मन से उसके प्रति झुक गई तब से सज्जन के साथ-साथ उसके इस वैभव के प्रति भी उसका लोभ अनजाने मे ही बढ गया था। विवाह के उपरान्त सज्जन ने अपना सारा राजपाट उसे सौप दिया। एक दिन जब अपने शौक के लिए उसने अपनी मा-दादी और पडदादी के पुराने जडाऊ गहने पहना कर 'बहूरानी' के रूप मे उसका पोर्ट्रेट बनाया था तब लाख-अस्सी हजार की सम्पत्ति अपने शरीर पर लाद कर उसे बडा 'अजीब-अजीब-सा' लगा था। अब तो वह क्रमश अपने वैभव की अभ्यस्त हो चली थी। अब उसे 'अजीब-अजीब-सा' नही लगता था। इस सहज भाव मे आज त्याग की छुरी ने फाँक कर दी। बौद्धिक रूप से कन्या इस त्याग का विरोध नही कर सकती, फिर भी त्याग करते हुए उसका मन उदास है, रह-रह कर कचोट रहा है। यद्यपि यह समस्त सम्पदा

बाबा राम जी अपने साथ उठा नही ले गए, फिर भी उसे लगता है कि यह अब उसकी नही रही।

यह उदासी उसके नवजीवनोल्लास के वर्तमान क्षणो अखरी, अध्यात्मिक यथार्थ की दृष्टि से यह त्याग की वत्ति ठीक हे, इसे पालन करने वाला गृहस्थ सुखो रहता ह। पर इसके यह अर्थ तो नही हुए कि हम गृहस्थ नही रहे। यह मेरी गृहस्थी ह। मैं सुखी हूँ। मौभाग्यवती हूँ। अपनी गृहस्थी और सुख-सौभाग्य को चैन से भोगूंगी भी।

मन का अवसाद किसी हद तक हल्का हुआ, प्रिय की याद आई। कन्या उठी, अपने शयनागार मे गई। सज्जन वहाँ न था। कन्या ने शीशे मे अपना चेहरा देखा—उतरा-उतरा सा लगा। कन्या अपने प्रियतम के सामने फीका उदास चेहरा लेकर नही जाना चाहती, उन्हे कही इस बात का शक भी नही पडना चाहिए। साबुन से मुँह धोया, क्रीम लगाई, बिदी लगाई, बालो को हल्का-सा सँवार लिया, फिर एकाएक कुछ जी मे समाई, पास वाले कमरे मे जाकर वार्डरोब खोला, नीले रग की रेशमी बगलौरी साडी निकाली, फिर हीरे का सॅट निकाल कर पहना। कानो मे तकियाँ, नाक मे कील, गले मे हार, दाहिने हाथ मे चार चूडियाँ, बाये मे हीरो जडी घडी। वनकन्या ने सज्जन द्वारा खरीदा गया हीरो का यह नया सॅट आज पहली ही बार पहना था। देह पर चढे हीरो की दमक कन्या के मन चढ गई। उसे दर्पण मे अपना रूप-सिगार मादक लगा।

सज्जन अपने स्टूडियो मे तस्वीर बना रहा था। कन्या को देखते ही उसका चेहरा और आँखे अचरज और खुशी से चमक उठी—"हल्लो!" उसने सिर से पैर तक कन्या की तरफ देखा।

"नजर लगाओगे क्या ?"

"नजर लग चुकी जब लगनी थी। अब तो तुम्हे देख के नजरे भरता हूँ अपनी।"

"मैंने सोचा तुम शिकायत करोगे। इतनी मूल्यवान चीजे तुमने इतने शौक से खरीदी—" कन्या ने कहा, फिर रुकी और गभीर हुई, बोली—"त्याग से पहले एक बार ग्रहण करने को जी चाहा।"

सज्जन ने प्यार से उसके गाल को थपथपा दिया, बोला—"मै इतनी देर से गहरा विचार कर रहा था और निश्चय पर भी पहुँच गया था।"

कन्या आँखो मे सवालिया निशान लेकर उसे देखने लगी।

सज्जन बोला—"देखो कन्या, अभाव या तो बल देता है, वर्ना मार डालता है। हम दोनो के बीच मे, मै समझता हूँ कि अभाव से बल पाने की आशा ही ज्यादा की जा सकती है। परन्तु, इसके साथ ही साथ एक और बात भी है। मेरे मन मे कुछ अतृप्तियाँ भी है। मसलन, और कुछ नही, चूकि मेरा वैवाहिक जीवन अभी हाल ही मे शुरू हुआ है, तुम्हे साथ ले कर घूमूँ, खूब दूर-दूर तक हम लोग साथ-साथ दुनिया देखे, यह मेरी बडी इच्छा है। मैंने देखा कि अपनी इस इच्छा को मै दबाना चाहूँ तो दबा जरूर लूँगा, मगर उससे मुझे चैन नही मिलेगा।"

कहते-कहते सज्जन रुका, सोचने लगा। कन्या उसके पास ही कुर्सी खीच कर बैठ गई थी, वह उसे उस दृष्टि से बराबर देख रही थी जो केवल सुहाग-भरी एकनिष्ठ प्रेम

वाली स्त्री को ही प्राप्त होती है, इस दृष्टि मे रस था, मादकता भी थी, परन्तु वह लू की तरह तपाती न थी, बल्कि सबेरे के समीर के समान देखने को सहज ही तृप्ति से भर देती थी ।

कन्या बोली—"घूमने की इच्छा तो मेरी भी होती है ।"

"हाँ कन्या ! मै अब से यह जरूर करूँगा कि अपने लिए अधिक सुख-साधनो को न बटोरूँ, कम से कम मे काम चलाऊँगा । पर कुछ चीजे ऐसी भी है जिन्हे मै सहसा त्यागना नही चाहता । यह बात नही कि अपने को धोखा दे रहा हूँ । पर मै अपनी सीमाओ को धीरे-धीरे बढाना चाहता हूँ । हाँ, जो चीज मार्के की हे, और जो मुझे उचित लगती है, वह यह कि भविष्य मे होने वाले अपने बच्चो के मोह का बहाना कर मै अपनी यह पुरखो की जायदाद हडप नही कर जाऊँगा । मेरे पास, मोटे अदाज से इस वक्त लगभग आठ लाख की पूँजी है । डैडी ने बहुत रकम, करीब इतनी ही रकम ऐयाशी मे फूँकी, लगभग चार-पाँच लाख कोर्ट आफ वार्ड्स के जमाने में लुट गये—खैर, जो कुछ भी हो, मैं अपनी आधी रकम का ट्रस्ट तुरत कर दूगा । हम लोग इससे समाजोपयोगी काम करेगे ।"

कन्या उत्साहित हो उठी । बोली—"तुमने ठीक मेरे मन की बात कह दी । देखो सज्जन, तुम्हारे सामने अपने जी की बात मै खोल कर कह दूँ, सच मानना जब हमारा मन मिला तब मेरे मन मे यह बात नही थी कि तुम बडे पैसे वाले हो । तुम विश्वास मानो । हाँ, जब मैं कल्पना करती थी कि तुम्हारे साथ मेरी शादी होगी—तो उसके साथ ही साथ—इस घर की स्वामिनी बनने की बात मन मे पैदा ही न होती हो, यह दावा करना तो गलत होगा इस घर मे आकर जरूर मुझे सारे वैभव का मोह हुआ । तुम्हारे व्यवहार ही ने मुझसे यह मोह कराया मै अपनी बात तुमसे ठीक-ठीक नही व्यक्त कर पा रही, पर तुम उसे ठीक-ठीक ही समझना ।"

सज्जन बोला—"मै उसे बिलकुल ठीक समझ रहा हूँ ।"

"आज बाबाजी ने जब कहा तो उस समय मै अधिक विचलित नही हुई, लगा कि मेरे लिए तो सहज है यह त्याग । पर अकेले मे इतनी देर से—" कहते-कहते कन्या रुक गई, चुप हो गई, सिर झुका लिया ।

सज्जन खिलखिलाकर हँस पडा । कन्या चौंक कर उसे देखने लगी, वह अपराधिनी-सी अनुभव करती हुई खिसिया गई । सज्जन ने दोनो बाहे उसके गले मे डाल कर उसके होठ अपने पास खींच लिए, रस भर दिया, बोला—"बडी भोली—बडी प्यारी हो तुम ।"

सज्जन खडा हो गया, एक अँगडाई ली, अपने अधूरे चित्र की ओर स कं दृष्टि डाल कर बोला—"सीधे-सच्चे आदमी के लिए ऐसी बाते जिंदगी और मौत का सवाल बन जाती है । किसी दुनियादार के सामने वे बाते, जो हम लोग कर रहे हैं, अगर कही जायें तो वह हमे पागल समझ कर हँस पडेगा । ह-ह-ह-! कहेगा, सतयुग मे होते होगे ऐसे दान, कलियुग में इसकी कल्पना भी पागलपन है ।—आओ चलें ।"

कन्या उठते हुए बोली—"आज मान गई पैसे के मोह को भी ।"

"तुमने कुछ भी नही माना । इसके मानने वाले मैंने ऐसे-ऐसे देखे हैं कि क्या बतलाऊँ ? जोड-जोड कर लाखो धर जाते हैं, जिंदगी-भर खाने-पहनने को तरसते हैं,

वीमार पडने पर अपना इलाज नही करा सकते । उनका धन न अपने काम आता है न औरो के—"

"ऐसे ही लोग तो सुना है मर कर साँप होते है ।" कन्या ने हँस कर कहा । दोनो अपने कमरे मे पहुँच गए । सज्जन पलँग पर तकिये के सहारे बैठ गया, बोला—"भई साँप की बात तो अजब तरह से मुझे भी सच मालूम होती है, हालाँकि अब भी इस पर विश्वास नही होता ।"

कन्या उसके सामने ही बैठी थी, उसका मुँह देखने लगी ।

सज्जन ने कहा—"हमारे अपने यहाँ ही साँपो का जोडा था ।"

"कहाँ ?"

"ठाकुरद्वारे मे ।"

"ठ—ठाकु—"

"हाँ । उसके नीचे एक तहखाना है—कभी चर्चा नही चली वरना अब तक तुम्हे उस जगह का निशान दिखला चुका होता, डैडी के मरने के बाद वह जगह ऊपर से चुनवा दी गई है । मै खुद भी उसके अदर कभी नही गया । हाँ, बचपन मे एक बार उसे खुलते हुए जरूर देखा था ।"

"तो उसमे साँप थे ?"

"हाँ । डैडी ने उन्हे मरवा डाला । उसके बाद ही कुछ महीनो के अदर वे भी मर गए । हमारे यहाँ सब लोगो का यही विश्वास था कि उनकी मौत इसी वजह से हुई थी । मा सुनाया करती थी कि मेरे पडबाबा ने जब यह कोठी बनवाई तब हमारे पुरान घर से उस जोडे को सोने की बटलोही मे यहाँ लाया गया था । मेरे पडबाबा यो तो बडे विद्रोही किस्म के थे । उस जमाने मे इगलैंड गए, वापिस आने पर प्रायश्चित भी न किया, पर कहते है कि उन्हे भी इस जोडे पर विश्वास था । कहते है यह जोडा हमारे पुरखे रघूमलजी और उनकी पत्नी का था । वही नवाब सआदतअलीखाँ के साथ दिल्ली से लखनऊ आये थे ।"

"फिर क्या हुआ ?"

"उनका बजाजे का काम था । वे बडे ही चतुर और प्रभावशाली थे, नवाब को अपनी मुट्ठी मे किए हुए थे । यहाँ आकर उन्होने लाखो कमाया और मरने के बाद कहते है, कि उन्होने अपनी पत्नी को सपना दिया और कहा कि अशर्फियो के जिस हडे पर मै बैठा हूँ उसके आसपास के चार हडो मे से कोई कुछ न निकाले । जब परिवार पर कोई सकट आयेगा तब जरूरत के समय एक कटोरा अशर्फी मै लेने दिया करूँगा, और एक कटोरा दूध मेरे लिए रख दिया जाया करे ।"

"फिर ?"

"फिर क्या, उनकी मर्जी के अनुसार सब किया गया ।"

"तो क्या सपने के बाद वाकई साँप—"

"हाँ । कुछ अरसे के बाद उनकी पत्नी भी मर गई । तब लोगो ने वहाँ जोडा देखा ।"

"और उस धन को किसी ने नही लिया ?"

"नही। शायद जरूरत भी नही थी। रघुमल्लजी के बाद पाँच पीढियो तक हमारे यहाँ की दौलत बढती ही गई। हमारे पुरखे बडे चतुर और दुनियादार थे। दरबार मे उनकी बडी इज्जत थी। जैसी हवा बहती वैसा ही रुख देते थे। व्यापारी से साहूकार बने, साहूकार से ताल्लुकदार। खैर तो हमारे पडबाबा, जिन्होने यह कोठी बनवाई, उन्होने परीक्षा के लिए एक हडे से कुछ अशर्फियाँ निकाल कर उस समय अलग कर ली जब हमारा खजाना यहाँ लाया जा रहा था। उन्हे रात मे सपना हुआ कि अगर वो अशर्फियाँ वापिस नही रख दोगे तो तुम्हारा लडका-बहू जाते रहेगे। उन्होने दूसरे ही दिन वो अशर्फियाँ हडे मे डाल दी। मेरे बाबा ने उसे कभी न छुआ। वे बेचारे तो भरी जवानी मे ही चल बसे। इलाका कोर्ट ऑफ वार्ड्स मे चला गया। काफी रुपया उस जमाने मे लूटा-खसोटा गया। उसके बाद डैडी बालिग हुए। विलायत गए। लौट कर आये तो एकदम बदल चुके थे। उन्होने बहुत रुपया बरबाद किया। साँपो का जोडा भी अपनी नशे की सनक मे आकर उन्होने ही मरवा डाला। कुछ अरसे बाद ही आप भी मर गये। मा कहा करती थी कि उन साँप पुरखो के अभिशाप से ही यह ट्रेजेडी हुई।"

"और वो अशर्फियाँ ?"

"डैडी ने गलवा डाली थी।"

"उस तहखाने मे अब क्या है ?"

"मालूम नही।"

एक निःश्वास छोड कर कन्या बोली—"साँपो द्वारा धन की रखवाली के किस्से मैने भी बहुत सुने है, पर कभी विश्वास न कर सकी।"

"विश्वास मै भी न कर पाता। पर मा ने उन्हे देखा था। उस जोडे के साथ हमारे घर का इतिहास जुडा है। अजब उलझन मालूम पडती है, ऐसी बातो का विश्वास करे या न करे ?"

"सच बात है, यह देश विचित्रताओ से भरा पडा है। बडा जबर्दस्त विरोधाभास है हमारे यहाँ। एक तरफ तर्क, ज्ञान, दर्शन, गणतंत्र आदि की इतनी जबर्दस्त परम्पराये और दूसरी ओर ये साँप, चामत्कारिक योगी, ताई के जादू-टोने वगैरा। अगर इन पर विश्वास करे तो अंध-विश्वास के सिवा—"

"लेकिन कन्या, कैसे विश्वास न किया जाय ? अपने बाबा जी को ही देखो। इनकी आत्मिक शक्ति पर भला तुम क्योकर अविश्वास कर सकती हो ? बताओ।"

कन्या कोहनी के सहारे सिर टेक कर लेट गई, सज्जन के चेहरे की तरफ विचार-पूर्वक देखती रही।

सज्जन बोला—"मोह और त्याग—"

"साँप और योगी—दोनो—"

"अति सीमा पर। और दोनो की परम्पराये अति प्राचीन भी है। हिदुस्तानी मोहनजोदरो और हरप्पा के जमाने से खूब धन कमाना, उसका खूब उपभोग भी करना जानता है, और उसकी प्रतिक्रिया के रूप मे सब भोग त्याग कर योग साधना भी उसी समय से प्रचलित है।"

"मेम साहब !" बाहर से नौकर की आवाज आई।

"आ जाओ शीतल !" कन्या उठ कर बैठ गई।

"चाय ले आऊँ हुजूर ?"

"ले आओ।" सज्जन ने कहा। नौकर चला गया।

कमरे मे सन्नाटा छा गया। थोडी देर मे चाय-नाश्ता आया। सज्जन और वन-कन्या जैसे खुद ही अपने अदर के सच और झूठ दोनो ही से डर कर मौन हो गये थे। सज्जन चुपचाप चाय पीने लगा कन्या के हाथ मे प्याला ठडा होता रहा। अन्त मे वह बोली—"सज्जन हम अगर आज डिग गए तो इससे बढ कर शर्म की बात हमारे लिए और कोई भी नही। खाओ, पिओ और मौज करो का सिद्धात पूँजी के काले नाग का जहर है। अगर हम इसे न उतार सके—"

"सोच लो कन्या। बाबा राम जी हमे एक ऐसी मानसिक परेशानी मे डाल गए है जिससे उबरने के लिए हमे किसी न किसी दिशा की ओर निश्चित कदम उठाना ही होगा। हम योगी और भोगी साथ-साथ नही हो सकते। हमे अपने लिये एक रास्ता चुनना ही होगा।"

"चुन लिया, हम गृहस्थ है। हमारा भोग और त्याग दोनो ही सतुलित ढग मे होना चाहिए।"

३९

"हो-हो होली !"

काले लाल जगाली नीले पीले टेसुये मुँह-हाथ-पैरो वाले, रग और ठप्पो से चित्र-विचित्र फटे-चीथडे पहने, एक जोकर को गधे पर नौशा बनाये, कनस्टर पीटते, सडे टमाटर उछालते, लोगो के मुह पर कालिख लगाते, कीचड मे सडाये हुए टाट लिए बरातियो का जुलूस महिपाल के घर के सामने से गुजर रहा था। होली के हुडदग से उस पतली-सी सडक का दिग्दिगन्त गूँज उठा। सामने शिवाले वाले चबूतरे का घुमाव लेते हुए सज्जन का एक नौकर साइकिल पर आ रहा था। जुलूस को अपनी तरफ आते देख वह साइकिल से उतर पडा और चबूतरे से सट कर खडा हो गया। शेरो के सामने बैल का शिकार था। वे होलियाते हुए सज्जन के अनुचर पर झपटे। छिद्दू होशियार था और मजबूत भी, साइकिल को दोनो हाथो मे उठा ढाल-सी बनाते हुए गरजा—"खबरदार। सैकिल समेत टूटूगा, बताये देता हूँ। दो-तीन को तो दबा ही डालूगा, फिर चाहे तुम सब जने मिल कर मुझे मार ही क्यो न डालो।"

होलीनन्दनो ने अपनी पशुवृत्ति से सूघ लिया कि शिकार बैल नही बल्कि दूसरा शेर

है। छिद्दू आँखे निकाले चबूतरे की दीवाल से तनिक तिरछा होकर साइकिल उठाये मोर्चा साधे खड़ा हुआ था। लौंडों ने हुर्रो उड़ाई, लूलू बोली, चोंचे दिखाई, सब किस्म की गालियाँ दी, पिचकारी और फुहारो से छीप दिया, टाट उछालने के पतरे दिखाये, छिद्दू ने भी आगे बढ़ते हुए उनके सिरो पर साइकिल झोंकने का पैतरा दिखाया। रंग की बौछारों से अपनी आँखो को बचाते हुए अपने को बचाने मे छिद्दू को छठी का दूध याद आ गया। जुलूस आगे निकल गया। छिद्दू के हाथ बोझ के साथ पत्थर की तरह टूट कर नीचे आये, कुछ सहसा स्तब्ध हो जाने वाली उत्तेजना के कारण और कुछ साइकिल की सुरक्षा के भाव से उसके हाथ जहाँ के तहाँ जड़ हो गये थे, वह एक क्षण के लिए गली मे बैठ गया।

महिपाल अपने छज्जे से यह दृश्य देख रहा था। चार-पाँच रोज से, खास तौर पर आज सबेरे से वह इस प्रकार के अनेक दृश्य देख चुका है और देख रहा है। चबूतरे पर गोल बाँध कर हुड़दंग मचाने वाले लड़को को तो अति तक पहुँचने पर वरज देता है, परन्तु बाहर वालो पर उसका वश नही चलता। दूसरे, इस हुड़दंग मे उसका प्रौढ शरीर भले ही क्रियात्मक रूप से भाग न ले सके परन्तु नवयुवक मन बड़ा रस पाता है। होली मे यह रंग युद्ध, यह अलमस्ती, बदमस्ती, गाली-गलौज सब कुछ उसे एक तरह से बड़ा ही प्राकृतिक और अच्छा लगता है। होली के यही पाँच दिन तो समाज का अनियन्त्रण कर देते है—छोटे-बड़े सब एक रंग मे रँग जाते है। बड़े-बड़े रईस और प्रतिष्ठितो के युवक भी फटे हाल रंग-बिरंगे मुँह बनाये सड़को पर दिखलाई पड़ जाते है। अनेक रंगो से खिलवाड़ करता हुआ भी समाज एक रंग मे रंग जाता है। गलियाँ, दीवारे, दरवाजे, कुत्ते, गाय, बैल, गधे, बकरियाँ सब रंगीन दिखलाई पड़ते है। गलियो के फर्श, दीवारो और लोगो की जबानो पर मदन-रति का जोड़ा गाली बनकर अपने ब्रह्मानंद सहोदर रूप को सस्ता बना देता है—होली के हुड़दंग मे बस यही एक चीज महिपाल को अखरती है। पृथ्वी का सर्वोत्तम सुख इस प्रकार गाली क्यो बन जाय ? क्यो पुरुष अपने आप को और स्त्री को इस तरह अपमानित करता है ? इसमे उसे कौन-सा रस मिलता है ? होली रस और शृगार का त्योहार है। वह गाली क्यो बना ?

सज्जन का नौकर अपने मालिक की ओर से यह प्रस्ताव लेकर आया था कि वे लोग निश्चित समय—शाम के छ बजे के बजाय चार बजे ही आ जायँ जिससे कि सब लोग नाव की सैर के लिए चल सके।

महिपाल ने हँसकर कहा—"अपने साहब से कहना कि हम लोग शाहनजफ रोड में नही बल्कि गली-मुहल्ले मे रहते है। अपने साहब को अपनी सूरत दिखा देना और कहना कि क्या यही हाल हम लोगो का भी कराना चाहते हो ?"

नौकर झेंप कर हँसने लगा। महिपाल ने उसे कर्नल के यहाँ जाने से रोक दिया। शकुन्तला को बुलाकर आदेश दिया कि छिद्दू का पकवानो से सत्कार किया जाय, उसके कपड़े बेहद गीले हो गये है लिहाजा उसे महिपाल की एक पुरानी कमीज और धोती भी दी जाय। इतना ही नही बल्कि महिपाल ने छिद्दू की बहादुरी पर प्रसन्न होकर उसे दो

रुपए सिनेमा देखने के लिए इनाम मे दिए। छिद्दू के चेहरे पर प्रसन्नता खिल उठी। महिपाल फिर ऊपर चला गया।

महिपाल के घर मे इस समय अनेक परिवर्तन हो चुके है। यत्र-तत्र वैभव का चमत्कार फैल रहा है। महिपाल की छोटी-सी बैठक से लिखने-पढने का सामान, मेज, कुर्सी स्टूल, फाइले वगैरह गायव हो चुकी थी। आर्ट स्कूल से आए साँची शिल्प की डिजाइन वाले सोफा-सैट, तखत पर वही की छपी हुई चादर, वही के पर्दे, ऐश-ट्रे, टेबुल-लैप, तश्तरी, बुद्ध आदि ने मिलकर महिपाल की साहित्यिक बैठक को न जाने कहाँ बिलमा दिया था। लिखने-पढने का हिसाव-किताब अब दहलीज के बाद वाले छोटे से दालान मे लकडी का पार्टीशन लगाकर बनाए जाने वाले एक छोटे से कमरे मे बैठाया जा रहा था। कमरा अभी पूरी तौर पर वन नही पाया था, इसलिए बढई के औजारो का थैला और लकडी के तराफे एक ओर रक्खे हुए थे। ऊपर घर मे कुछ खास परिवर्तन तो नही हुआ फिर भी चमत्कार हर ओर फैला है। होली के अवसर के वास्ते लिए गए सारे परिवार के कीमती शू, लोफर शू और आला डिजाइनो की जनानी सैडिलो, चप्पलो से लेकर घर भर के चेहरो की चमचमाहट साफ बतला रही थी कि घर की जन्म-कुण्डली बदल गई है। महिपाल बैठक मे छिद्दू को बच्चो के हवाले छोड थोडी देर ऊपर वाले छज्जे मे खडे होकर सूनी-सूनी मगर होली भरी गली को देखता रहा और रसोईघर मे चला गया।

कल्याणी आज बेहद व्यस्त थी। उसे पकवानो से फुरसत नही। कल समधी के यहाँ पकवान जायँगे। कल्याणी और महिपाल ने पहला सबध किया है, सो भी भाजी का। कल्याणी सारे आलम यानी सारी बिरादरी, कम से कम मेल भाई-चारे और नातेदारो को यह दिखला देना चाहती है कि वह भी बडी आदमी है। उसका पति इतना बडा लेखक है कि उसको बीस हजार रुपयो की आमदनी एक मुश्त—बैंक की एक चैक से होती है। कल्याणी के चेहरे पर सुहाग का नूर बरस रहा है। नाक में हीरे की कील, कानो में मोती की तरकियाँ, गले मे सोने का कॉलर, कमर मे सोने की करधनी, हाथो मे कॉच की चूडियों के साथ सोने की डाइमण्डकट बँगडियाँ, पैरो के बिछुए भी नए और इस बार सुहाग-देवता के आग्रह से, घुँघरूदार। कल्याणी ने लखनऊ के वाजपेइयो से सबध किया है। दामाद सेक्रेटेरियट मे दो सौ चालीस रुपये का नौकर है। बडे भाई जगल का ठेका करते हैं। दामाद से छोटा एम० ए० में पढ रहा है, ननँद-सास नही है सो बडा सुख है। दामाद देव सयुक्त परिवार मे रहते हुए भी घर से स्वतन्त्र है। एक घर मे रहते अवश्य हैं, एक ही चौके में खाते भी है पर भावज को खाने की माहवारी रकम देकर। घर का हिसाब-किताब भाइयो मे साफ है और आपस मे बन-बनाव भी खूब है। शकुतला भगवान की दया से बडे सुख मे चली गई। दुनिया कहेगी कि देखो बडे मामी-मामा ने ऐसा भारी ब्याह किया। दामाद वडा लायक है। केवल दस हजार ही मे मान गया। फिर भी दस हजार का दहेज देने वाले की हैसियत भी कुछ होती है। महिपाल पीढे पर बैठ गया और पकवानो के नए बर्तनो से भरी-भरी रसोइयाँ मे अपनी हीरे-मोती जडी घरनी को बडे सतोष के साथ देखा। महिपाल की दृष्टि मे कर्ता—पितृ—का सतोष-दर्प दमक रहा था। राज्यश्री माँ का हाथ बँटा रही थी। कल्याणी ने आँच में तपे, तमतमाए चेहरे को कडाह मे तलते गूँझो की तरफ

से घुमा कर पति को देखा—"को आवा रहै ?"

"शाहनजफ रोड वाले रईसे आजम मुसव्विरे आलम जनाव सज्जन साहव बहादुर की कोठी ते चपरासी आवा रहै।" महिपाल ने कुछ इस ढग से कहा कि उससे माँ-बेटी का अह् भी तृप्त हो गया। वे खिलखिला कर हँस पडी।

कल्याणी ने पूछा—"का हुकुम आवा है ? का न्योता कैन्सिल हुइगा ?"

महिपाल हँसा, बोला—"नाही, डवल हुइगा। चार वजे हम लोग नाव की सर करेंगे। चाट-नाश्ते का प्रोग्राम रहेगा। और रात मे खाना, खाने के बाद एल्फिन्टन मे 'ससार' का दर्शन पूर्व निश्चय के अनुसार कीजिये।"

" 'ससार' भी पिक्चर मे पिक्चर है !" राज्यश्री मुह विचकाकर बोली—"बोर हो जायँगे पिताजी हम लोग। पापुलर अपील है वस। इतने बडे आर्टिस्ट की पत्नी, इतनी प्रगतिशील होकर भी चाची जी—"

"चाची जी इसके लिए कतई दोषी नही, तुम्हारी माता जी और तुम्हारी कर्नल चाची जी दोनो की ही राय पडी।"

'इससे तो अच्छा था हम लोग 'बहार' देखते।"

"जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ, 'बहार' मे कौन सा प्रॉग्रेसिविज्म है ?" महिपाल ने लडकी को तनिक मीठी फटकार के साथ कहा—"अननेचुरल, बेहूदा पिक्चरे आ रही है। ऐसी बहारो से ससार लाख दर्जे बेहतर होगा।"

राज्यश्री चुप रही। थाल के गूझे कनस्तर मे भरते हुए उसके जरा से अनमनेपन के कारण हाथ बिचक जाने से दो-तीन गूझे जमीन पर गिर गए। तले हुए गूझे झारे से उठा कर दूसरे चूल्हे पर चढे हुए चाशनी वाले कडाह मे डालते समय कल्याणी की कर्ममलग्न दृष्टि अपनी बेटी की लापरवाही पर गई। वह झल्ला उठी, बोली—"हम कहित है सलेमा की बाते का पाछे नही हुइ सकत है रज्जो, कामे मा दीदा नाही लागत है।"

"गिर गया माता जी।" रज्जो ने कुछ भुनभुना कर कहा और जमीन के गूझे उठा कर कनस्तर मे रखने लगी।

"ई दाखौ, ई दाखौ, हम कहिति है अकि अक्किल कहा चली गई है तुम्हार, यू जमीन माँ पडे भए—"

"तो उससे क्या हो गया माता जी ? धुली हुई जमीन है।"

"रज्जो, तुम जाओ हियाँ ते। हमका नही नीक लागत है तुम्हार काम।" कल्याणी की बात पूरी होने के पहले ही राज्यश्री झम्म से थाल जमीन पर पटक कमरे से एकदम एक-दो-तीन हो गई। महिपाल माँ-बेटी के युद्ध मे कुछ न बोला। रज्जो जब चली गई तो पत्नी से कहा—"तुम्हार धर्म बहुत सतजुगी आय, कल्याणी। ई जमाना माँ न चली।"

"चाहे कौनौ से चलै चाहे न जलै, हम आपन मर्जाद न छोडब।"

"न छोड मेरे यार !" अपनी गहरी ठडी सास को मजाक का जामा पहनाते हुए महिपाल बोला—"तेरे इस धरम ने मेरा धरम ले लिया उस्ताद—क्या कहू !" कहते-कहते महिपाल का मजाक सहसा गभीरता के हिमालय मे गल गया। किसी गहरी वेदना

की टीस उसके चेहरे पर उभर आई। उसकी आँखे बद हो गई। क्षण भर के लिए वातावरण मे कट कर वह अपने आप मे तन्मय हो गया।

"बडा तुम्हार धरम ! तुम्हारी आदतै लरिकन-बिटियन माँ भी आई हैं। हम कहिति है कि सकुन्तला हमार बहुत समझदार है। जइसा आचार-बिचार सिखाओ—"

"ह-ह-ह, तुम्हारे सामने शकुतला पक्की ब्राह्मणी बन जाती है। उसके ससुराल मे भी मेरे धर्म का जोर ज्यादा है। है वाजपेई मगर बिरहमन नही है। ह-ह-ह !"

"न सही, हमका का करैका है। अरे सास्तरन माँ लिखा है कि कलजुग माँ यहै सब भिस्टाचार हुइ जाई तौन झूठ थ्वारौ है। उमाशकर का सब कुछ खात-पियत है तुम्हरी तरह, अयँ ?"

महिपाल गम्भीर हो गया, बोला—"नही उमाशकर बडा सच्चरित्र लडका है। मैने हर एक से उसकी तारीफ सुनी है। यो होटल-बैरा सब चलता है भाई को।"

"तउ का शिवशकर की घर वाली—"

"हाँ, तुम्हारी तरह तो नही वाकी ब्राह्मणी जरूर है। ह-ह, मैने शिवशकर से सब कुछ पूछा, जैसा कि एक समझदार लडकी वाले को देखना-समझना चाहिए। मै अपने किसी बच्चे का रिश्ता ऐसे परिवारो मे हरगिज न करूगा जहाँ तुम्हारे जैसे कट्टरो का राज हो।"

"न कर्‌यो। बस, हमका तो दुई चीज चाही, सबध खटकुलन म होय, मनई नीक होय। अरे, तुमते का बताई, बस हमका यहै लगी है, हमरे बडकउ और रज्जो क्यार सबध जल्दी ते हुइ जाँय, हमहू दिखाई कि अकेले गट्टू वडे आदमी नाहीं है। तुमने साँची कहित है अकि ई बखत बीस हजार रुपय्या भेजि के भगवान ऐसि लाज राखिन है कि का कही ! दस हजार का दहेज कौनौ छोट बात नाही आय। नरौ जैकिसोर के घरै हमका मुल्लर की महतारी मिली रही—"

महिपाल बडे रस से पत्नी की बाते सुन रहा था। कल्याणी कितने दर्प भरे स्वर मे आज बोल रही है ! मुल्लर की महतारी ने एक वार ताना कसा था कि महिपाल बडा आदमी जरूर है मगर पैसे से वडा नही है। उससे कौन भले घर वाला रिश्ता करेगा ! कल्याणी, फिर उससे सुनकर महिपाल को तीव्र वेदना हुई थी। वही मुल्लर की महतारी अब फिर चर्चा मे आई। महिपाल की उत्सुकता बहुत तेज हुई। कल्याणी से बोला—"का कहिन मुल्लर की महतारी ?"

"उइ का कहती, उनका बखतै हम अदबदाय के बान चलावा और कहा कि औरेन का बडप्पन तो बेइमानी अउर लूट बिद्या पै टिकत है—हम कहा अकि हमरे घरै क्यार बडप्पन धरम औ तपस्या पै टिका है। हमरे बक मै हाँ लाख दुइ लाख भले न परे होय पर जब जेतना चाहिति हइ ततना धन हमरे घरै माँ आय जात है। दस हजार सकुन्तला का दिहा—" कहते-कहते कल्याणी का दम मारे जोश के फूल गया। एक क्षण रुकी, सारे गूझे तले जा चुके थे, पास ही रक्खे हुए अगौछे से पकड कर कडाही जमीन पर उतार कर रक्खी और आधे मिनट पीढे पर बैठ कर मुँह पोछते हुए मुस्काने लगी। महिपाल की

उत्सुकता बढी हुई थी। उसका चेहरा प्रकाश और छाया की तेज दौड से थका हुआ दिखलाई पड रहा था। आत्म-प्रशसा से सबधित उत्सुकता से अपने आपको बहाल बनाए रखते हुए पूछा—"तो फिर का कहिन मुल्लर की महतारी ? अउर कउन-कउन रहा हुआँ ?"

"सबै रहे।" तले हुए गूँझो का थाल अपनी ओर सरका कर उन्हे चाशनी मे पागने की तय्यारी करते हुए कल्याणी बोली—"जैकिसोर की अम्मा रही, उनकी भौजाई, जैकिसौर की घर वाली—पर हम का कौनौ ते दबित है। अरे, हम कहिति है कि जइस मरजाद हमका मिली है वइस इन लोगन का नसीब नाही। हम औरो कहा, हमतौ तुम जानौ अकि भरे बैठि रहन यतने दिनन ते, मौका पाइके हमहूँ अपने जिउ केर सब कुछ कहि सुनावा। हम कहा कि अउरन के महल-दुमहले, ठाठ-बाट, बडे नाम तौ कुछ बरसन माँ बिलाय जैहें पर हमार घर कै मरजाद जेतना-जेतना आगे का जमाना बढिहै वतनै-वतनै बढिहै। हम कहा कि सहर माँ, बिरादरी माँ, बडे-बडे धनी-धोरी डाक्टर-वकील आयँ उनका वाहेर को चीन्हत है ? हम कहा हमार घरे के लोगन का तो देस-परदेस तक माँ नाम है। ऊँचे-ऊँचे अफसर औ आदमी हमरे घरे के लोगन का जानत हैं—हमरे घरै के लोगन की किताबैं पढत हैं। हमरे घरै के लोगन की दुसरेन से कौन बराबरी है ?" झारा भर गूँझे उठा कर चाशनी में डाले।

महिपाल बहुत प्रसन्न हो रहा था, कहना चाहिए कि कल्याणी की बातो से प्रसन्नता की शराब पी रहा था। उसने कहा—"तुमको ऐसी बाते खुद अपने मुँह से नही कहनी चाहिए पगली।"

"काहे न कही ?" कल्याणी के हिलने से उसके गहने झलझला उठे—"अरे भगवान्-हमार सुनिले तुम्हार ऐसेनै आमदनी होय और जो तुम हमका लरिकन का दहेज लेय देओ, तउ दुइ बरस माँ मोटर-बँगला सब कुछ बनाय के दिखाय सकिति हयि हम।"

महिपाल रस मे डोल गया। पति को छूने से बरजते हुए धीरे से रस-रोष भरे स्वर में कल्याणी ने कहा—"छुवौ ना हमका अरे-अरे कउनौ आय जाई।"

सचमुच ही शकुन्तला आ गई। महिपाल खडा हो ही चुका था, भांजी को देखकर अँगडाई लेने का बहाना करने लगा, फिर शकुतला के सिर को दोनो हाथो से दाब कर प्यार से बोला—"क्योरी तू नही बना रही ससुराल के लिए पकवान ?" शकुन्तला शरमा गई। महिपाल ने दरवाजे की ओर बढते हुए उससे पूछा—"सज्जन का नौकर गया ?"

"जी, बडी देर हुई।"

दरवाजे पर पहुँच कर उसने फिर कल्याणी से कहा—"जल्दी ही छुट्टी कर देना काम से, समझी, होली का दिन है।" महिपाल छज्जे में आ गया। शिवाले के चबूतरे पर कुएँ के सायबान के नीचे रगो से शराबोर पाँच-सात लडके बैठे हुए हँसी-मजाक कर रहे थे। दरवाजे तक मुडते हुए महिपाल रुक गया। एक लडका जोर-जोर से हँस-हँस कर सुना रहा था कि किस तरह उसने अपने दो-तीन साथियो के साथ गली मे एक मालिन को घेर लिया, कैसे वह सत्रस्त हुई, कैसा मजा आया, फिर कैसे उन लोगो ने उस मालिन को भी खुश किया वगैरह बाते वो और बीच-बीच में उसका एक साथी भी सब को सुना रहा था।

सब लोगो को मजा आ रहा था। मजा महिपाल को भी आ रहा था, मगर बात भद्दी लग रही थी होली दरअसल है ही मदन पर्व। फागुन का माहात्म्य ही काम का माहात्म्य है। अपने धुर ऊपर वाले कमरे मे, जहाँ आजकल उसका अस्थाई लेखन-कक्ष है, तकिए के सहारे पडा हुआ महिपाल विचारो की धुन मे मग्न था।

अचानक शीला मन की खिडकी मे झाँक गई। महिपाल को लगा जैसे कही से इत्र की खुशबू उसके वातावरण मे आकर बस गई। महिपाल के शात, व्यवस्थित मन मे अचानक भूकप आ गया। होली का दिन है और शीला उसके पास नही। शीला उससे छिन गई। महिपाल को शीला की तेज याद आई। लोकाचार और नैतिकता की ऊँची चहारदीवारी के अदर शीला बरबस प्रवेश कर रही थी, मन मे 'हाँ-न' टकरा रही थी। 'ना-ना' करते भी शीला मन मे समाई ही हुई है। शीला कितनी उदास होगी। पिछले वर्ष आज होली के दिन वे दोनो साथ थे। शीला के साथ बीते हुए बरस, दिन, घण्टे सहसा क्षणो मे फैल कर उसे वही शाति देने लगे जो असख्य तारो भरे आकाश को देखकर होती है। शीला डाक्टर शीला स्विग है—नगर की एक प्रख्यात प्रतिष्ठित महिला। देश के एक प्रख्यात प्रतिष्ठित साहित्यिक महिपाल शुक्ल को अपने प्रदेश के सरकारी उत्सवो का निमत्रण नही मिलता, परन्तु डा० शीला स्विग शहर के बडे-से-बडे समाज मे आदर पाती है। शीला के पास लाख-डेढ-लाख रुपया है। चमत्कारपूर्ण, स्वतत्र व्यक्तित्व रहते हुए भी शीला उसके प्रति हृदय से विनयशील है। शीला उसका आदर करती है। शीला उसे अपनी बातो और व्यवहार से स्फूर्ति प्रदान करती है। साइन्स के आदमी अधिकतर साहित्य और कलाओ के प्रति रसहीन होते है, परन्तु शीला रसवन्ती है। विरोध के क्षण भी आए हैं, परन्तु शीला ने कभी विरोध को बढने नही दिया। उसी शीला से आज वह विरोध कर रहा है।

महिपाल का अच्छा-भला घर-गिरस्तीदार, सुख-समृद्धि से भरा-पूरा मन शीला के ध्यान से विकल हो उठा। एक बार शीला के घर जाकर अपनी होली को रसमयी बनाने के लिए उसका मन विकल होने लगा। वह जायगा, समाज का भय आखिर किन-किन बातो मे माना जाय? समाज की नजरे चुरा कर भी यह सबध स्थायी रक्खा जा सकता है। अब तक वह सतर्क नही रहा, बस, इसीलिए दुनिया मे उसकी बदनामी फैल गई, वरना चोरी तो इच्छामत जीवन भर छिपाकर रक्खी जा सकती है। महिपाल शीला से मिलने की तडप लिए ऊँच-नीच सोच कर कमरे से बाहर निकला। छत के नीचे दुमजिले मे बच्चे खेलते नजर आ रहे थे। कल्याणी भी पल्ले मे हाथ पोछते हुई रसोईघर के बरामदे से निकल-कर अपने कमरे मे जाती हुई नजर आई। उसे देख कर महिपाल की सारी स्कीम लडखडा गई। 'नही, अब शकुतला की शादी करनी है, बहुएँ भी आएँगी। मै अब अकेला नही—स्वाधीन नही। मुझे अपनी इच्छाओ, अपनी प्रेरणाओ का त्याग करना ही होगा।'

स्वय आरोपित प्रतिबंध के विरुद्ध उसका मन शीला के लिए तडप-तडप कर खोखला हो रहा था और उसे (चोरी से) यह भी महसूस हो रहा था कि उसका यह खोखलापन

वाकई खोखला है, उसमे कोई भाव नही है—न अपना, न शीला का, न कल्याणी और न बच्चो का। उसके अनुभूति स्रोत पर जैसे कोई बहुत बडा पत्थर ढका हुआ है। वह सारे विचार केवल कल्पना द्वारा अनुभव किए जा रहे है, वह खोखला है, खोखला है, खोखला है।

४०

डा० शीला स्विग वाल्जक की जीवनी पढ रही थी, कार्ड का निशान लगा कर किताब बन्द की। अब्दुल पलँग से लगा कर चाय की टेबुल रख चुका था और खडा था। शीला का चेहरा फीका और उदास था, उठकर चाय पीना भी उन्हे भारी मालूम पड रहा था फिर भी वह उठी, बैठे ही बैठे हल्की सी जमुहाई और अँगडाई ली। जोजेफ ने चाय की केतली मे टी-कोजी उतार कर रख दी। प्याली सीधी की, चाय बनाने लगा।

"जाओ, मै बना लूगी।"

अब्दुल हाथ खीच कर खडा हो गया—"शाम को खाना क्या बनेगा, मेम सा'ब? कोई आने वाला है?"

"नही", —शीला ने दुबारा जमुहाई ली और खुले मुँह के सामने हाथ लगाते हुए बोली—"जो चाहो सो बना लो।"

अब्दुल चला गया, शीला के मुर्दा हाथ जैसे-तैसे चाय बनाते रहे। होली के दिन उन्हे भी महिपाल की याद आ रही है। महिपाल के अभाव मे अन्तीम तरम की शीला सहसा अपने आप को बूढी अनुभव करने लगी। उनके जीवन का रस स्रोत सूख गया है। इतनी धन, सपत्ति, मान, सम्मान अर्जित करने वाली स्वतत्र नारी निस्सहाय अनुभव कर रही है। शीला जीवन भर अपने अभावो और असहायावस्था से लड कर ही अब इस हैसियत पर पहुँची। वह बल अब महिपाल के अभाव मे टूट रहा है। शीला का तमाम आमोद-प्रमोद महिपाल से वियोग होने के बाद प्राय खत्म हो गया है। बहुत ऊबने पर दो बार पिक्चर देखने अवश्य गई थी, वरना इधर अरसे से मरीजो को देखने के अलावा वे न तो कही आती-जाती है और न किसी से मिलती ही है। सज्जन, वनकन्या कभी-कभी चक्कर मार जाते है, अन्यथा अधिकतर तो वह है, किताबे या रडियो है और गोशए-तनहाई है।

शीला का बचपन अभावो मे गुजरा। उत्तर प्रदेश के ईसाई प्राय निन्यानबे प्रतिशत गरीब है। उनके बचपन मे ईसाइयो की नौकरियाँ प्राय विलायती मिशनरियो के अधीन थी। शीला के पिता पश्चिमी यू० पी० मे एक छोटे से कस्बे मे मिशन स्कूल के हेडमास्टर थे। माँ भी पढाती थी। छ भाई-बहनो के परिवार मे शीला अपने माता-पिता की तीसरी सतान थीं। बडी गरीबी मे दिन गुजरा करते थे। शीला गरीबी से विद्रोह करती। वे हठ-

पूर्वक फिज़ूल-खर्च थी, आरभ मे ही विद्रोहिणी थी। पढने और डिबेट मे तेज होने के कारण उनका बच्चो मे महत्वपूर्ण स्थान था, इसीलिए वे शुरू से अभिमानिनी भी रही। स्कूलो की प्रान्तीय डिबेट में वे इलाहाबाद से दो बार प्रथम पुरस्कार भी जीत चुकी थी। घर मे असम्मान ओर कलह तथा बाहर सम्मान पाकर डॉक्टर शीला के मानस का द्वन्द्व फूटा। उनके बचपन मे होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलनो का प्रभाव भी उनके मानस पर खूब पडा। ईसाई समाज—घोर काला, खालिस भारतीय ईसाई समाज—उस जमाने मे अपने को अँगरेज जाति का खास मौसेरा भाई समझता था। यह समझ, यह अकड उस हालत मे थी जब कि अँ.रेज, अँगरेज ही क्या मामूली किरटे भी इन्हे मुँह नही लगाते थे। राष्ट्रीय आन्दोलनो ने बीसवी सदी के आरभ से ही इस भारतवासी ईसाई समाज के अदर भी राष्ट्रीयता की लहर दौडा दी थी।

पेट के लिए विलायती सस्थाओ के अधीन ओर अपने देश के समाज से सर्वथा कट कर रहने के कारण राष्ट्रीय चेतना की जलवायु मे भारतीय ईसाई अजीब घुटन भरी जिंदगी बिताने लगा। उनकी अपनी सामाजिक विश्रृखलताएँ भी बेहद बढ गई थी। ईसाइयो मे हिदू धर्म की छोटी से छोटी और बडी से बडी जातियो के लोग अपना धर्म परिवर्तन कर शामिल हुए थे। मुसलमानो मे भी हर वर्ग के लोग ईसाई बने थे। इन्होंने धर्म तो बदला पर पुराने धर्मों के सस्कार न बदल सके। हिदू ईसाई अधिकतर हिदू ईसाइयो ही मे शादी-ब्याह करना पसद करते थे। उच्चता-नीचता का भेद भी किसी हद तक बना ही रहता था। मुसलमान ईसाई भी इसी तरह अपने परिवर्तित दायरे मे बद थे। अधविश्वास और अदबकायदे भी विशुद्ध भारतीय ढब-ढाँचे के थे। अमुक दिन अमुक दिशा मे यात्रा न करनी चाहिए—लडकी के घर का पानी भी न पीना चाहिए आदि बाते ईसाई समाज मे प्रचलित थी। रसोईघर मे बाहरी आदमी का प्रवेश-निषेध, नए आदमी के सामने भोजन न करना आदि ठेठ हिदुआनी बाते उनके समाज में घर किए हुए थी। नामो मे भी हिन्दुस्तानीपन की झलक रहती थी—सिह मिस्टर स्विग हो गए, रामबली मिस्टर रैम्बल्स हो गए, बनर्जी महाशय को मिस्टर बोनार्जी कहलाना मन भाया। अनेक परिवारो मे नामो को लेकर क्रातियाँ भी हुई। खास शीला के घर मे ही दो भाइयो के नाम विसेट राम और सैमुअल राम, पिता मैंसी स्विग, और तीसरा भाई पूर्ण विदेशी नाम धारण कर स्मिथ ब्राइट कहलाते हैं।

शीला स्विग के बचपन में, पहली लडाई के बाद राष्ट्रीय चेतना की लहर मे सारा देश बहा था, यहाँ का ईसाई समाज भी अपनी भारतीयता के प्रति पहली बार सचेत हुआ था। ईसाई धर्म का भारतीयकरण हुआ। पियानो की जगह तबला, हारमोनियम आया। विलायती भजनो की जगह हलके शास्त्रीय ढग के भजन और धार्मिक गजले गाई जाने लगी। सलीब के सामने भजन के समय आरती घुमाना, आमीन-आमीन या पीस-पीस की जगह शाति शाति कहने की प्रथा चली। इस भारतीयकरण का विरोध भी हुआ। ईसाई विद्यार्थी सघ मे दो पार्टियाँ हो गई।

शीला इस प्रकार के सामाजिक आन्दोलनो मे सदा आगे बढ कर भाग लिया करती थी। वे आरभ ही से निर्भीक और विद्रोहिणी थी। इसी विद्रोही प्रकृति के कारण उन्होने

आरभ से ही विलायती मिशन की नौकरी न करने का निश्चय किया, विद्रोहिणी होने के कारण ही उनके वजीफे भी बद हुए। घर का वातावरण उनके लिए अत्यधिक कटु हुआ, —यह सब होते हुए भी अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के कारण वे पढ-लिख कर ड क्टर बनी। घर से शीघ्र ही स्वतत्र होने के लिए वे सरकारी मेडिकल सर्विस मे दाखिल हुई। अडचने रहते भी उन्हे नौकरी मिल गई। भाग्य साथ दे रहा था। शीला मे श्रम और लगन भरपूर थी, वे क्रमश उन्नति करती गई। सन् उन्नीस सौ सैंतीस मे उन्हे लखनऊ के किग जार्ज अस्पताल मे जगह मिल गई। यहाँ आते ही उनका भाग्य-चक्र बिजली की गति से दौड चला। इन पिछले चौदह-पन्द्रह वर्षो मे डॉ० शीला स्विग पूरी तरह स्वतत्र और समृद्ध होकर अपनी प्रैक्टिस जमाने में समर्थ हुई। नौजवानी मे अपने समाज के एक नवयुवक से उनका प्रेम हुआ था। पॉल भी भारतीय सस्कृति का बडा ही हामी था। प.ल और शीला साथ ही भारतीय दर्शन, साहित्य और इतिहास आदि पढा करते थे। भारतीयता के जोश मे ये दानो अपनी समझ और उम्र मे भी ऊँची किताबे एकाग्र होकर पढा करते और उन पर गभीर बहस-मुबाहसा भी किया करते। पॉल हैजे का शिकार होकर चार दिन मे चटपट हो गया। शीला के जीवन मे सदा के लिए एक गहरा अभाव हो गया। इसके बाद भी उनके जीवन मे दो युवक आए मगर वे केवल मित्र ही बन सके। महिपाल उनके सूने जीवन का साथी बन कर आया था। सुन्दर, बलिष्ठ, सहृदय कलाकार, विद्याव्यसनी, स्वाभिमानी और विद्रोही व्यक्तित्व वाला महिपाल शीला के सौभाग्य की मुकुट-मणि बन गया। अब उन्हे किसी प्रकार का भी अभाव नही सताता था। महिपाल के प्रति वे अपना तन-मन विशुद्ध भारतीय भावना से समर्पित करती थी। उस पर अपना धन भी लुटाने मे, सोचती हैं, कि वे सन्तुष्ट रहती परन्तु उनकी यह सीमा ही महिपाल के व्यक्तित्व की विजय है, उसका पौरुष है, जिसके आगे वे नत हैं। अकेले चाय पीते हुए उनका मन महिपाल के घर की ओर ही दौड रहा था। कल्याणी और उसके बच्चे ध्यान मे आ रहे थे। महिपाल के वच्चो से शीला का कोई मानसिक लगाव नही। भूले-भटके या किसी बच्चे के सामने पडने पर यदि उन्हे किसी प्रकार का लगाव होता भी है तो शुभ कामना भरा, क्योंकि वे उसके महिपाल के बच्चे है। कल्याणी के प्रति वे सदा से उदासीन रही हैं। कल्याणी जैसी निरीह, सीधी-सादी, मूर्ख स्त्री कभी उनकी आड में नही आ सकती इसका उन्हे विश्वास था। महिपाल अक्सर कल्याणी की हठधर्मी और पुराने जाहिल सस्कारो से चिड-चिडाया रहता था। शीला सदा उसे सतोष प्रदान किया करती थी, उन्हे इसी में अपना स्वार्थ लगता था कि महिपाल, शीला और अपने कुटुब के प्रति बँधा है। उन्हे कल्याणी से कभी अधिकार छीनने की भावना भी न आती थी, परन्तु जब मे कल्याणी के भाई की शादी मे उनके और महिपाल के सबध को लेकर छीटाकशी हुई और कल्याणी ने महिपाल के जीवन में शीला के अस्तित्व का प्रबल विरोध किया, जब से उनका महिपाल उनसे छिन गया तब से वे कल्याणी और उसके बच्चो या कहना चाहिये कि परिवार की भावना के प्रति ही बेहद चिडचिडा उठी है। इस समय सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाल्जक की जीवनी पढते हुए उन्हे महिपाल के प्रति भी मान का अभाव सता रहा है। मैडम डी बर्नी ओर बाल्जक के प्रेम का वर्णन करते हुए स्तीफान ज्विग ने कितनी तडप के साथ लिखा है

कि 'शिकवे-शिकायत, गृह्-कलह, गाँव मे चलने वाले गुप्त इशारे और चच,—कोई भी अपनी प्रियतमा के प्रति उसके स्वतन्त्र और तीव्र समर्पण के भाव को न तोड सके।' यह वाक्य रह-रह कर शीला के मन मे सूनेपन के पैने तीर चुभा रहा था। आज होली का दिन है, शीला अकेली हैं—शीला अब सदा के लिए अकेली ही रहेगी। शीला औरत नही डॉक्टर हैं, उनकी प्रतिष्ठा है—उनके पास मोटर, बँगला, बैक एकाउण्ट है। पर क्या यही सब कुछ है ? नर-नारी के जीवन में क्या इसी 'सब कुछ' से सतोष आ जाता है ? शीला अदर ही अदर उबल रही थी। उनका हठ जाग रहा था—वह हठ जो इधर वर्षों से समृद्धि की सेज पर सोते-सोते जागना ही भूल गया था। वे जानती थी कि उनके थोडा दृढ होते ही महिपाल अपने सारे बधन तोड कर उनके हो जायँगे। शीला का मन बार-बार ऐसा करने के लिए हठ पकड रहा था। उनकी टकटकी बँधी, मधी आँखो मे महिपाल की मूर्ति स्पष्ट थी—पीठ पीछे दोनो हाथ बाँधे, चौडी और बलिष्ठ छाती वाले, लापरवाही, भोलापन और दृढता लिए हुए महिपाल का खिलखिलाता हुआ चेहरा जाने किस रीझ भरे 'एक' क्षण की स्मृति-सा इस समय उनके सामने आ खडा हुआ था। सुधि अपनी पूरी शक्ति लगा कर मासल हो उठी थी।

"कहिए अकेले-अकेले चाय पी जा रही है !" वनकन्या की आवाज ने शीला को चौंकाया। वनकन्या और सज्जन वर्मा कमरे के दरवाजे पर खडे थे। हटाया हुआ दरवाजे का पर्दा अभी तक सज्जन के हाथ मे ही था। वनकन्या आज कीमती जेवर और साडी पहने हुए थी। शीला के ध्यान मे यह परिवर्तन अटका। पहने-ओढे वनकन्या बहू-सी लग रही थी। न जाने किन अर्थों मे डॉक्टर शीला स्विग को वनकन्या भारतीय सुहाग की मूर्तिमती कल्पना सी लगी। महिपाल—पुरुष के ध्यान से बँधी टकटकी बिखरते-बिखरते सुहागिन के सौन्दर्य से बँध गई। एक क्षण के लिए शीला के मन मे आया कि वह भी कन्या की तरह सुहागिन होती। तभी सज्जन ने कन्या की बात से बात जोडते हुए कहा—"इन्हे अब अकेलेपन से प्रेम हो गया है जैसा कि अक्सर बडे आदमियो को हो जाया करता है।"

'सोशल' होने के लिए चटपट बुरा मानने का अभिनय करते हुए डॉ० शीला ने सज्जन की ओर बरजने वाला हाथ उठा कर कहा—"दु-र्जन ! हाउ ब्रूट यू आर ! कन्या तुम अपने मियाँ की बातो पर विश्वास न करना। आजकल इतने केसेज आते है कि कभी-कभी तो—"

"ये क्यो नही कहती कि डॉक्टर भी पेशेंट बन गई है।" सज्जन ने शीला की बात काट कर कहा। शीला निरुत्तर रही, असलियत इस तरह बदहवास हो बाहर निकली जैसे घर मे आग लग जाने पर कोई निकलता है।

चाय आ गई। बाते चलती रही। बडी का जिक्र आया। शीला ने उसके हाल-चाल पूछे। कन्या बोली—"उसकी अब कोई खबर नही मिलती।"

"मैंने कुछ दिन हुए हजरतगज मे बोर के साथ देखा था। कोई और भी लाला किस्म का जवान उनके साथ था, अपने ओवर मेकप मे भी वह औरत बडी ट्रैजिक मालूम पड रही थी।" सज्जन ने बतलाया।

इसके बाद कुछ देर तक खामोशी रही, शीला बोली—"क्या ही अच्छा होता अगर आदमियो का समाज इसानो का समाज न बना होता। कभी-कभी सोचा करती हूँ कि

आखिर यह सभ्यता, सस्कृति, यह सब सायस और एजूकेशन और बडी-बडी बातें जो इसान आज कर रहा है—यह तमाम बोझ लादने की इसान को जरूरत ही क्या है ? इनके बगैर भी आदमी सुखी रह सकता था, बल्कि मेरे खयाल में ज्यादा सुखी रह सकता था। गहनो के लालच मे बोझ लाद कर इसान की कुदरती खूबसूरती भी छिपी जा रही है, और बोझ से वह थका जा रहा है, वो अलग ।"

सज्जन खामोश बैठा शीला को देखता रहा। कन्या भी चुपचाप बैठी थी। शीला के अन्तर्द्वन्द्व से सज्जन को पूरी सहानुभूति है। वह जानता है कि शीला की ये उखडी हुई बाते गहरे दर्द से बँधी हैं। त्याग सचमुच बडा ही कठिन होता है। सज्जन सोचने लगा, क्या वह बाबा राम जी की इच्छानुसार सपत्ति-त्याग कर सकेगा ? नही, यह नामुमकिन है। वह अपने ऐश्वर्य का कुछ भाग औरो को देता रहे यह सभव है, परन्तु पूरी तौर पर अपने आप को लुटाना—यह उससे न हो सकेगा। सज्जन को लगा कि उसे शीला और महिपाल के कष्ट को मिटाना ही पडेगा। एकाएक उठते हुए उसने कहा—"डॉक्टर, जरा एक बात सुनो, कन्या मैं अभी आया।" अलग ले जाकर उसने शीला से कहा—"आज शाम को मेरे यहाँ छोटी सी पार्टी है, तुमसे आने के लिए कहता जरूर मगर कर्नल और महिपाल की बीबियाँ भी आ रही हैं उन्हे बुलाना ही था, कन्या की पहली होली इस घर में पडी है सुनो महिपाल से मिलना चाहोगी ?"

शीला चुपचाप खडी रही। सज्जन ने फिर पूछा—"बोलो !"

"वे क्या चाहते हैं ?" सवाल करते हुए भी शीला की पुतलियाँ सूनी ही रही।

"मैंने उससे कुछ पूछा तो नही पर इसमें पूछने की कोई बात नही। महिपाल क्या तुमसे मिलने को उत्सुक न होगा ? क्या तुम ऐसा विश्वास भी कर सकती हो शीला ?"

शीला खामोश खडी रही, उनकी आँखो से आँसू झरने लग थे।

शीला के कधे पर हाथ रख कर सज्जन बोला—"तुम साढे सात बजे मेरे घर आ जाओगी शीला। तुम्हारे आने की खबर किसी को नही लगेगी। महिपाल तुम्हे मेरी ओर से होली की सौगात की तरह मिलेगा। लो, अब तो खुश हो जाओ। तुमको यो देख कर मुझे अच्छा नही लगता।"

शीला सुन कर उस बच्चे की तरह खामोश थी जिसे बहुत रोने के बाद मनचाही मिठाई मिली हो। कितने दिनो बाद वे आज अपने महिपाल को देखेगी !

४१

कन्या, कल्याणी और कर्नल की पत्नी बैठी बाते कर रही थी। कल्याणी इनके यहाँ भोजन नही करेगी, वे केवल मिठाई ही खा सकती हैं। कन्या बोली—"इतना छूत-अछूत अब कैसे निभेगा जीजी ! अब तो आपको यह सब ढकोसला छोड़ देना चाहिए।"

"अरे, अब इतनी निभ गई हमारी तो ! धरम-करम, नम भला कही छूटता है ?" कल्याणी बडप्पन का भाव दरसाती हुई बोली ।

"पर ब्राह्मण ने बनाया है खाना । मैंने तो आप ही का खयाल करके आज रसोईघर में कदम भी नही रक्खा । भाभी को देखिए, ये भी तो बडा धरम विचार करती हैं ! लेकिन आज—"

"मेरा धरम-करम तो सब लडको ने छुटा दिया । पहले मै सूरज डूबने के पहले ही खा लेती थी । हमारे जैनियो के यहाँ ऐसा ही धरम है । पर क्या करूँ, इनके और लडको के मारे कुछ निभ ही नही पाता । जब तक ये लोग न खा ले मै कैसे खाऊँ ? " कर्नल की पत्नी बोली ।

"औरत अपने धरम पर टिकी रहै तो मर्दों को मानना ही पडता है, हमारे घर मे क्या कुछ कम है ? पर हमने घर मे कभी कोई मलेच्छी नही होने दी । हम लोग सबसे ऊँचे ब्राह्मन है ।" कल्याणी की उच्चता ने कर्नल की पत्नी को उत्तेजित कर दिया । वे बोली— "सभी अपनी-अपनी जात-बिरादरी में ऊँचे है, हमारा जैन धरम तो बहुत ऊँचा है । हमारे यहाँ कथा मे आता है कि न जाने कितने ब्राह्मन-पडितो ने अपना धरम छोडकर महावीर भगवान की सरन ली । क्योंकि उनका धरम ब्राह्मणो से भी ऊँचा था ।"

कन्या ने देखा कि जैन और ब्राह्मण धर्मों की उच्चता आज की सुखद सध्या को अवश्य ही थोडी देर मे ले डूबेगी । वह बोली—"अरे भाभी, कहाँ की बाते ले बैठी तुम भी । ये ऊँच-नीच, जात-पाँत, सब ढकोसला है । क्यो राज्यश्री, क्या खयाल है तुम्हारा— शकुतला ? '

शकुतला और राज्यश्री, दोनो ही खामोश बैठी थी, सुनकर शकुतला चुप रही, केवल मुस्करा भर दिया । परतु राज्यश्री बोली—"हमारे बाबू जी नही मानते, हम भी नही मानते चाची जी । यह तो सब पुराने जमाने की बाते है ।"

कन्या बडी जोर से हँस पडी । कल्याणी की ओर देख कर बोली—"सुन लिया जीजी ।"

कल्याणी नाक चढा कर बोली—"अरे रोजै सुनते है इन लोगन की बातैं । कोई तत्त रक्खा है भला ! भगवान की बनाई ऊँच-नीच, भगवान की बनाई जात-धरम, इनके बिना कही गुजारा है ?"

राज्यश्री अपनी प्रगतिशील चाची के सामने अपनी माँ को परास्त कर यश लूटने के लिए उत्साह मे आ गई । हँसकर बोली—"भगवान ने सिर्फ हिन्दुस्तान ही बनाया होगा अम्मा ! और भी दूसरे देश हैं—"

"अच्छा, चुपाय रहौ रज्जो, बहुत चबड-चबड बोलना हमें नही अच्छा लगता ।" कल्याणी फिर कर्नल की पत्नी की ओर देख कर बोली—"कुछ भी कह लेओ बहन जी, अपना धरम-करम छोडना अच्छा नही होता ।"

"हाँ बहन जी, अच्छा तो नही होता । पर मर्दों की जैसी मर्जी हो वैसा चलना मैं तो औरत का सबसे बडा धरम मानती हूँ । अब घर-घर में तो नया जमाना आ गया है, भला बतलाओ, कोई कहाँ तक इन सब बातों से अलग रह सकता है ? और अपने आदमी

को दुख देकर धरम निभाया तो मै धरम नही मानती भाई, सच्ची बात कहती हूँ ।"

नौकर ने आकर कन्या के हाथ में एक पर्ची दी । पढकर उठते हुए उसने कहा—"अभी आई ।"

रज्जो बोली—"चाची जी, हमारी चाची हैं न सगी वाली, उनको देखिए तो—"

"मैंने देखा है, अच्छी तरह से जानती हूँ ।"

"वो इस तरह से नही करती । उनके घर मे ऐसा कोई परहेज नही है जैसा हमारे यहाँ होता है । मैं अम्मा से कहती हूँ चाची जी, कि जब हम लोग कोठी ले लेगे तब भी क्या ऐसे ही रहोगी ?"

कर्नल की पत्नी यह सुनकर कल्याणी से मुस्कुराते हुए पूछने लगी—"कोठी ले रही हो बहनजी ?"

कल्याणी, जो लडकी की बातो से मन ही मन उबल रही थी, सहसा कोठी की चर्चा से सतुष्ट होकर बोली—"अरे कहाँ बहनजी, कोठी-वोठी तो क्या, हाँ, शकुन्तला का बिहाव कर दे तो ई जरूर सोचते है कि एक बैठने लायक छोटी-सी झोपडिया डाल ले ।"

"सुना है कि सकुन्तला की सादी भी बहुत भारी कर रही हो ?"

"भारी-वारी तो क्या, बहनजी, हाँ, हैसियत के मुताबिक तो करनी ही पडेगी । जात-बिरादरी मे बाहर जैसा हमारे यहाँ का बडा नाम है वैसा कुछ तो करना ही होगा । पन्दरा-बीस हजार तो लगेगें ही । हमारे यहाँ बहन जी, दहेज बहुत लगता है ।"

"पर बहनजी, कहाँ से इतना खर्चा होगा ? शुक्ला जी बिचारे—"

कल्याणी को बुरा लगा, हाथ में पडा मोती का कगन घुमाती हुई बोली—"भगवान सबको देता है, हमारे घर में बक नही है तो क्या भया ? कलम की ऐसी ताकत है कि छिन भरे में एक चिक से हजारो आते हैं ।" दोनो बहनजीओ मे हैसियत की, चढा-ओढ की चर्चा होती रही । रज्जो इन बातो से ऊब गई थी । शकुन्तला को इशारे से बुला कर बाहर जाने लगी । कल्याणी बोली—"कहाँ जा रही हो रज्जो ?"

"कुछ नही, यही बाहर जा रही हूँ बगीचे में ।"

"बाहेर जाय रही हौ तौ अपने पिताजी से कहि देओ अ'कि जल्दी चलें, न होय तौ हमका घरै पहुँचाय दे ।"

"अरे, ऐसी जल्दी क्या है जाने की ? आज तो सनीमा चलेंगे ।"

"नाही, अनीमा-सनीमा तौ हम न जायँगे । कल सबेरे से समधी के हिया त्योहार के पकवान-उकवान पठाने का इतजाम सब करना है—अब हम चलेगे थोडी देर मे ।"

कल्याणी और कर्नल की पत्नी को बाते करती छोडकर राज्यश्री और शकुन्तला सज्जन का महल ऐसा घर घूमने निकली । राज्यश्री की दृष्टि में वहाँ की हर वस्तु स्वर्गीय थी । राज्यश्री बडे बाप की बेटी तो थी ही, सहसा घर मे पैसा आ जाने से बडप्पन का गुब्बारा, जो धन रूपी हवा के बिना मुरझाया रहता था, अब फूल गया था । उम्र नये सपने बटोरने वाली थी । शकुतला की सगाई ने उसमें सहसा एक गहरा अभाव जगा दिया था । उसके मानस में जागती-जोत सी बैठी हीरोइन अपने लिए एक हीरो चाहने लगी थी । कन्या चाची और सज्जन चाचा के इस वैभवशाली—उसके लिए अपार वैभवशाली—

साम्राज्य मे विचरते हुए वह अपने आपको सुनहले सपनो से जकडा हुआ महसूस कर रही थी। उन दोनो के व्यक्तित्व से उसकी अपनी कल्पनाओ की तृप्ति हो रही थी। वह मुग्ध भाव से बोली—"चाचीजी की तकदीर बडी ज़बर्दस्त है। यह घर क्या है, राजा का महल है।"

"तू भी ऐसा ही कोई घरवाला ढूँढ ले अपने लिए।" शकुन्तला बोली।

"बस चलेगा तो जरूर ढूँढूँगी। तुम मुझे समझती क्या हो ?" रज्जो ने भवे चढा कर गुमान से आँखे तरेरते हुए कहा—"मै तुम्हारी तरह माताजी को खुश करने के लिए गूँगी बनकर अपना जीवन नष्ट नही करूँगी।" राज्यश्री ने जीने के पास लगे नक्काशीदार कद्दे-आदम शीशे मे अपने गुमान को बडे शौक से निहारा। शीशे मे शकुन्तला से आँखे चार हुई।

शकुतला उसकी ओर देखकर यो मुस्कुराई जैसे बच्चो की बातो पर मुस्कुराया जाता है। राज्यश्री शकुतला के इस ढग से जल-भुन गई। शकुतला यद्यपि उससे तीन बरस बडी है फिर भी बर्ताव मे प्राय बराबरी का ही नाता है। गालीचे बिछे जीनो पर उतरते हुए शकुन्तला को हल्का-सा धक्का देकर आँखें तरेरती बोली—"हँसती क्यो हो ?"

शकुन्तला बोली—"अखबारो के 'वान्टेड' कालम मे छपा दो कि एक लखपती पति की जरूरत है।"

"मुझे तो बिना छपाए ही मिलेगा, तुम्हे गरज हो तो छपाओ।"

"मुझे भय्या लखपती की जरूरत ही नही।" शकुन्तला बोली।

जीने के नीचे बाएँ हाथ पर बनी छोटी कोठरी से वनकन्या बाहर निकल रही थी। इन दोनो को चोर की तरह सकपकाई हुई नजर से देख कर बोली—"कहाँ जाती हो ?"

"जी कुछ नही, ऐसे ही बागीचे मे—" राज्यश्री ने विनीत स्वर मे कहा। वनकन्या उनके साथ ही साथ बढी।

नीचे ड्रॉइग रूम मे सज्जन, कर्नल और महिपाल बैठे हुए थे। महिपाल आज पूर्ण रियासती भाव मे था—बढिया चप्पल, उम्दा चुन्नटदार धोती, रेशमी कुर्ता, रेशमी जवाहर जैकेट, फावरेल्यूबा की घडी, शेफर्स की सुनहली कलम, हाथ मे पुखराज की अँगूठी। वह कर्नल और सज्जन को बडे गर्व के साथ अपनी आमदनी के सबध मे बतला रहा था।

कर्नल बोला—"अब की तो बेटा तुम्हारी तकदीर चेत गई। मगर अब की एकाएक इतनी रायल्टी कैसे आ गई ? कहाँ तो साल मे साढे तीन हजार रुपए भी कभी-कभी पूरे नही पडते थे।"

"मेरी एक किताब पजाब-यूनिवर्सिटी के कोर्स मे लग गई है।" महिपाल ने बडप्पन से आँखे मिचमिचा कर लापरवाही से सिगरेट का कश खीचा।

सज्जन बोला—"तब तो इस खुशी मे एक दावत ड्यू हो गई।"

"जब चाहो ! अच्छा कल शाम कपूर मे—"

महिपाल की बात काट कर कर्नल ने कहा—"कपूर मे क्यो ? घर पर क्यो नही ?"

"घर मे ये शीला को नही बुला पायगा।" सज्जन ने कहा।

"शीला को मै यो भी नही बुला रहा। मै तो वहाँ ह्विस्की के लिए चल रहा हूँ।" महिपाल ने एक बात बेहद गभीर होकर और दूसरी बात उस गभीरता को लापरवाही से झिटक देने का अभिनय करते हुए कही।

सज्जन उसके रुख को देख रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि शीला के प्रति महिपाल की यह कठोरता निहायत अन्यायपूर्ण और गलत है। भले ही वह शीला का त्याग करना चाहे तो करे, पर उसके प्रति इतना कठोर क्यो बने ? इसी से स्पष्ट है कि यह कठोरता शीला के प्रभाव को अपने मन से न हटा पाने के कारण है। यह हठ की कठोरता बडी घातक चीज होती है। मनुष्य इसके कारण कभी परिस्थितिवश अत्यन्त निर्मम हो सकता है। सज्जन यह अपने अनुभव से जानता है। पर महिपाल शीला के प्रति इतना कठोर और निर्मम क्यो है ? माना कि उसका सबध अनैतिक है, मगर शीला बुरी नही है। शीला बहुत अच्छी औरत है। वह बेचारी कितनी दुखी है ! सज्जन को शीला के प्रति दया आ रही थी। उसने कहा—"क्यो, शीला को क्यो नही बुलाना चाहते ?"

महिपाल चुप रहा।

कर्नल गभीर होकर बोला—"देखो सज्जन, इसमे बडा पेच आ गया है। तुम जानते नही। तुम मथुरा गए हुए थे।"

"मुझे सब कुछ मालूम है।" सज्जन ने कहा।

कर्नल और महिपाल दोनो उसकी ओर चौक कर देखने लगे। दोनो भाँप गए कि शीला से सज्जन की भेट हुई है।

"—अब एक न एक को तो गम खाना ही पडता है।" कर्नल ने अपने ढग से सफाई दी।

"वह बात दूसरी है, मगर शीला से दोस्ती का, इसानियत का नाता तो रख ही सकता है ये।"

"मै अपनी सती पत्नी को किसी प्रकार का भी क्लेश नही पहुँचाना चाहता।"

सज्जन को बहुत बुरा लगा। बोला—"तुम इन सच्चे लफ्जो की आड मे शीला को बेइज्जत करने की बत्तमीजी क्यो करते हो ?"

बात सुनकर महिपाल के तेवर भी चढ गए। सज्जन उसकी नजरो से नजरे मिला कर उसी तेहे से बोला—"मै एक पत्नी-व्रत का हामी हूँ। मै आगे के जीवन को खूब बचाकर रक्खूंगा। मगर मेरी पिछली जिन्दगी की जिम्मेदारियाँ तो बराबर रहेगी ही। उनसे मै कैसे बच सकता हूँ ?"

महिपाल बोला—"तो तुम जिम्मेदारी के नाम पर अपनी तमाम माशूकाओ से इश्क लडाओगे, और एक पत्नीव्रत का झडा भी गाडोगे ? हुँह कोई प्रोफेसर घोस-बोस-बनर्जी-चटर्जी तुम्हारे यहाँ दावत खाकर एक जोरदार लेख भी लिख देगा कि तुम शादी के बाद कैसे आदर्श सद्गृहस्थ हो गए हो ! जस्ट लाइक यू !"

कन्या दरवाजे पर खडी हुई यह बाते सुन रही थी। उसका मन हवाओ से घिरा हुआ था। शीला और महिपाल के सबध को वह मन ही मन पसद नही करती थी, उसके अन्दर बैठी हुई पत्नी इस नाते को सहन नही कर पाती थी। इसके साथ ही साथ शीला

के व्यक्तित्व से प्रभावित होने के कारण कल्याणी-महिपाल के बेमेल जोडे को देखते हुए, साथ ही सज्जन के आग्रह को देखते हुए वह इस अनैतिक नाते को मौन भाव से स्वीकार भी करती थी। दिन के बुलावे के अनुसार शीला आ गई थी, उन्हीं की चिट पाकर कन्या जनानखाने से उठी थी, शीला को 'दादा जी वाले सीक्रेट-रूम' में बिठा कर वह सज्जन को सूचना देने आई थी।

राज्यश्री और शकुन्तला बाहर चली गई, कन्या दरवाजे पर खडी सुनती रही। महिपाल की बातो का उसके पत्नीपन पर प्रभाव पड रहा था। अपने और सज्जन के बीच मे वह किसी अन्य स्त्री को नही सह सकती। इस कचोट को स्वय अपने ही से छिपाते हुए वह सोच रही थी कि महिपाल जी जो ऐसी विरोधी बाते कर रहे है, क्या शीला से मिलना पसद करेगे ? शीला की ओर से उसके दिल मे धडकन उठने लगी। स्वामी दयाल—एक नौकर बाहर के दरवाजे से अदर आया। कन्या उसे देख कर अपने खामोश खडे रहने की चोरी छिपाते हुए तेजी से कमरे के अदर चली गई। कन्या को देखकर मर्दाने बैठक की बाते रुक गईं। कर्नल बोला—"बिन्नो तुम भली आई!—"

"क्यो भाई साब ?"

"अरे कुछ मिठाई-विठाई भिजवाओ। बिना तरी के शुक्ला जी महराज की भग गरमाई जा रही है।"

कन्या मुस्कुराई, फिर सभ्यतावश महिपाल का पक्ष-सा लेती हुए बोली—"आज तो आप सभी होली मना रहे है, अकेले शुक्ल जी बेचारो को ही क्यो बदनाम करते है ?"

सज्जन अपनी गुलाबी डोरो वाली मदमाती आँखो को कन्या की ओर घुमाकर बोला—"मै तो तुम्हारे डर से नही पी रहा था, ये जबरदस्ती महिपाल ने पिलाई है।"

"अच्छा सुनो। बाहर आओ, एक काम है।"

शीला का आना सुनकर सज्जन गभीर हो गया। कन्या बोली—"आज के दिन तुम्हे डॉक्टर को नही बुलाना चाहिए था। बाज दफा बिना सोचे तुम—"

"मै महिपाल को अभी लाता हूँ। उसको जानता हूँ, शीला के सामने जाते ही वह सारा विरोध भूल जायगा।" कहता हुआ सज्जन फिर कमरे के अदर चला गया। कन्या लौट गई। महिपाल के सामने सज्जन के साथ-साथ शीला की दूती बनकर चलना उसे स्वीकार न था।

सज्जन महिपाल को लेकर जीने वाली कोठरी मे आया। कोठरी के अदर एक बडी अल्मारी-नुमा दरवाजे से वह उसे 'दादाजी वाले सीक्रेट-रूम' मे ले गया। शीला कुर्सी पर खामोश बैठी थी। महिपाल को दरवाजे तक छोड कर सज्जन बाहर चला आया।

महिपाल को सामने देख कर शीला चेहरे पर फीकी मुस्कान लिए खडी हो गई। महिपाल के चेहरे पर सफेदी छा गई।

"होली मुबारक।" शीला ने कहा।

महिपाल की कठोरता परास्त हो रही थी। बात कहने के लिए उसे कुछ न सूझा, सनकभरी हँसी हँस कर बोला—"आज—आज हम यहा मिल रहे है!"

शीला ने मुस्कुरा कर नजरें नीची कर ली। महिपाल सहसा झटके के साथ बोला

—"इस तहखाने से नीचे भी कोई तहखाना नही हो सकता क्या ?"

बात शीला की समझ में न आई। वह सकपका गई। महिपाल ने आगे कहा—"चोरी करने के लिए हमें और पाताल मे जाना चाहिए, यहाँ भी कोई देख सकता है।"

शीला बोली—"तुमसे इतने दिनो तक अलग रहना—"

सहसा महिपाल का स्वर कठोर हो गया। बोला—"मैं चोरी नही पसद करता शीला! मिल सकूँगा तो कभी तुमसे तुम्हारे घर पर ही मिलूँगा जैसे मिलता था।"

"मैंने तो कभी मना नही किया!"

"ठीक है पर मेरी दुनिया बदल गई है। अच्छा, मैं जाता हूँ।"

"सुनो, तुमने समाज के भय से मुझे छोडा है या खुद भी छोड रहे हो ?"

महिपाल ठिठक गया, उसका सिर झुका हुआ था। एक सेकेंड रुक कर कठोर स्वर में बोला—"अब मैं इन सब बातो को नही सोचता।"

"वह तरकीब मुझे भी बतला दो जिससे कि मैं भी तुम्हे भूल सकूँ।"

महिपाल जाने लगा। शीला उसके कधे पर हाथ रखकर बोली—"तुम जिन घरेलू जिम्मेदारियो की वजह से इतना बडा त्याग कर रहे हो मैं उनकी कद्र करती हूँ। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कल्याणी की भी कद्र करती हूँ। तुम्हारी गृहस्थी का सुख उजाडने मे या तुम्हे बदनाम कराने में मुझे सुख नही मिलेगा।—"

महिपाल नर्म पडा, फिर भी उसकी ओर न देखता हुआ बोला—"सब कुछ समझ कर भी आज क्यो आई ?"

"तुम्हें देखने की लालच लगी। एक सेकेंड बैठो—बैठो भी।"

महिपाल उसकी बाँह के सहारे खिचा चला आया। दोनो आमने-सामने कुर्सियो पर बैठ गए। गोल मेहराबो और खभो वाला चौकोर कमरा अँधेरे और अकेलेपन का वातावरण प्रस्तुत कर रहा था। दीवार पर बने दो छोटे रोशनदानो के सिवा यह कमरा बाहरी दुनिया से एक दम कटा हुआ था। इस कमरे में किसी हद तक सीलन भी है, खभो और दीवारों पर चढे हुए सीपिया रग के रोगन मे धब्बे पड रहे थे। जहाँ यह दोनो बैठे थे उसके बाईं ओर लोहे की मोटी छडो का बना हुआ कटघरा था, जिसमें लोहे के दो पुराने बड़े-बडे सदूक और दो गोदरेज की अलमारियाँ रखी हुई थी। कटघरे के दरवाजे पर पुराना विलायती ताला बद था। महिपाल शीला से नजरें बचा कर इधर-उधर देख रहा था। जिस सुखजनक परिस्थिति में रहते हुए उसने बरसो बिताए थे वह परिस्थिति अब उसके मन में उलझन और घुटन पैदा कर रही थी। शीला उसके जीवन की एक चोरी थी, जिससे कि वह अब इनकार करना चाहता था।

शीला बोली—"अब हम लोगो की उम्र पकने लगी है महिपाल, मैं अडतीस बरस की हो गई। जून में उन्तालीसवाँ लगेगा।"

महिपाल ने न तो उसकी ओर देखा, न बात का जवाब दिया। शीला ने फिर कहा—"जिदगी अब उस इमारत की तरह है जो कि बन चुकी है, आबाद भी हो चुकी है। इसे तो महसूस करो। ईंट से ईंट, पत्थर से पत्थर जुड चुका है। अब नही डार्लिंग! जो चीज चीज आबाद हो चुकी है उसे उजाडो मत।"

महिपाल का सर झुक गया। शीला फिर बोली—"पाप तो है, पर अब इतने बरसो के साथ से क्या यह पाप हमारे जीवन का पुण्य नही बन गया। बोलो, तुम तो बोलते नही हो!"

महिपाल उसी तरह बैठा रहा। उसके चेहरे पर कोई भाव नही था, केवल शून्य था। एक क्षण रुक कर शीला उसे देखती रही। वे महिपाल से बातो की लडी मे जुडी रहना चाहती थी परन्तु इस मानसिक स्थिति मे उनके पास भी बातो का अभाव था, भाव गूँगे हो रहे थे। उनके गूगे भाव अपने प्रियकर की वाक्शक्ति चाहते थे जो उन्हे नही मिल रही थी। शीला की आँखे दरिद्र के घर के दिए की तरह टिमटिमा रही थी। महिपाल उसी तरह बैठा रहा।

एक दबी हुई आह के साथ शीला ने फिर कहना शुरू किया—होठो पर जबरन मुस्कान की रेखा खीच कर कहना शुरू किया—"ऐसी-ऐसी चोरियाँ दुनिया के हर बडे लेखक के साथ अमर हुई है। एक अकेले तुम्ही नही हो जो इतिहास मे बदनाम होगे।"

महिपाल उठा और चला आया। शीला फिर उसे पुकार न सकी।

महिपाल जब बाहर आया तो उसने देखा कि कल्याणी, कन्या और कर्नल की पत्नी कोठी के अन्दर बने हुए ठाकुरद्वारे की ओर जा रही थी। महिपाल तुरत लौट कर शीला के पास आया—"तुम अभी बाहर न निकलना।"

शीला खोई हुई बैठी थी। वे सहसा महिपाल की बात समझ न सकी। महिपाल चौखट पर खडा था, एक पाँव बाहर एक पाँव अन्दर। शीला उसकी आवाज सुनते ही उठ खडी हुई थी, उसे देखते हुए वे आगे बढी। अपने शकालुचित्त के कारण दरवाजे की ओर बढती हुई शीला को देखकर महिपाल इस समय शीला की आँखो से आँखे मिलाने के लिए मजबूर था। नजरो से नजरे मिल रही थी, शीला की पुतलियो का खिचाव नन्न करती हुई महिपाल की नजरो को अपने मे बाँध ही रहा था। शीला पास आती ग , वे उसके बिल्कुल नजदीक आ गई। शीला टकटकी बाँध कर उसे देख रही थी। ऐसा लगता था कि आँखे एक भाव शक्ति से परिचालित होकर उसी से अपने सारे वातावरण को परिचालित कर रही थी। आँखो के रामझरोखे मे बैठ कर शीला के अन्तर का भाव-सत्य सम्राट् की तरह एकछत्र सत्ताधिकारी हो चुका था जिसके आगे महिपाल गूगा था, विवश था। जिन प्यास भरी, प्यार भरी नजरो से शीला तन्मय होकर उसकी नजरो को देख रही थी, वह प्यास अमर थ —वह प्यार महिपाल को आत्म-विश्वास-सा लगा जिसे वह अपने से दूर करने का हठ कर रहा था। शीला पास आ गईं, महिपाल का हठ अपनी विवशता के चरम बिन्दु पर आ गया। शीला आपे मे न थी, महिपाल बेबस हुआ जा रहा था।

महिपाल के सौन्दर्यप्रिय लेखक ने आज इस क्षण से पहले तन्मयता के इस परम सुन्दर रूप के दर्शन नहीं किए थे। शीला की पुतलियो मे योगासन साधकर बैठा हुआ उसका प्रेम उसे बार-बार चुनौती दे रहा था—इस विवशता के महासागर को लाँघ सकते हो? तुम इसमे डूबने के लिए बाध्य हो!

शीला महिपाल के सामने, उससे सट कर खडी हुई थी। सन्नाटा साँसो की गज मे सिमट आया था। महिपाल को इन गर्म साँसो मे लडाई के बाजे बजते हुए से लगे। शीला

की बाँहे वरमाला की तरह उसके गले मे पड रही थी धीरे-धीरे जकड रही थी। चौखट के बाहर रक्खा हुआ पैर अन्दर आ गया, स्प्रिंगदार दरवाजा खटके के साथ बन्द हो गया।

महिपाल का सपना टूट गया। उसे होश आ गया, दरवाजे के खटके के साथ कर्नल की पत्नी और कन्या के साथ ठाकुरद्वारे की ओर जाती हुई कल्याणी का उसे होश आ गया। समाज, शकुन्तला का विवाह, सगे-सबधी, पद-मर्यादा, यहाँ तक कि अपनी चोरी—यह चोरी का प्रेम—सब कुछ ध्यान मे आ गया। महिपाल चौकन्ना हुआ, सयाना हुआ। मुँह फेरकर शीला की बाँहो को हटाते हुए उसने कहा—"बीते कल को भूल जाओ शीला, सख्ती से भूल जाओ। हम इतने निकट न होते तो दोस्त रह सकते थे, मगर अब दोस्त भी नही रह सकते।"

शीला थकी-सी अनुभव कर रही थी, महिपाल की बातो से कुछ अलग-सी भी थी, महिपाल के बाहे हटा देने के बावजूद उसने स्पर्श नही छोडा था। चोरी से उसकी ओर देखने के लिए महिपाल मुडा—शीला का सिर उसकी छाती से लगा हुआ था, माँग के किनारे के दो-तीन सफेद बाल चमक रहे थे और उनके ऊपर ही रेशमी वास्कट की ऊपर वाली जेब में उसकी शेफर्स कलम की सुनहरी टोपी भी चमक रही थी। शीला की माँग के ऊपर शेफर्स की चमक ने महिपाल के मन को अजीब ढग से गुदगुदा दिया। यह दोनो चमक उसकी अपनी थी, यह क्षण किसी भी व्यक्ति के अहता के लिए कितना सुखदायी था। हजारो ऐसे भी है जो किसी स्त्री का प्रेम पाने के लिए आठो पह सपनो में उतावले रहते है और एक वह है जिसके आगे एक सुप्रतिष्ठित नारी अपने इतने सच्चे प्रेम के साथ समर्पित हो रही है। महिपाल कितने अपार वैभव का धनी है! उसके पास इस समय बैंक एकाउंट भी है, रेशमी कुर्ता, रेशमी जैकेट और शेफर्स फाउन्टेनपेन भी है। यह वैभव चोरी का है। यदि चोरी खुल जायगी तो सुप्रतिष्ठित, साहित्यिक महिपाल कहीं मुंह दिखलाने लायक भी नही रह जायगा। शीला के साथ उसका चोरी का सबध जग जाहिर हो चुका है। शीला धनी है, कहो उसका धन-वैभव शीला का दान न मान लिया जाय? कहीं वह बदनाम न हो जाय? यह चिन्ता सहसा सिमट कर उसके दिल मे बैठी हुई गुदगुदाहट को अपने भार से दबाने लगी। महिपाल निष्क्रिय, नपुसक की तरह अपनी कुठा से पीडित होने के लिए मजबूरी अनुभव करने लगा। अगति की पीडा ने उसे गति दी, वह कठोर हो गया। बोला—"आयदा मुझ से मिलने की कोशिश न करना!" महिपाल उससे अलग हुआ, चलते हुए कहा—"बाहर—बाहर कल्याणी वगैरह है, देख कर आना।" महिपाल ने आदेश के स्वर मे कहा और चला आया।

कर्नल और सज्जन किसी प्रसग मे हँस रहे थे, महिपाल के आने से सहसा स्तब्धता छा गई।

आया जानकी ने कन्या को शीला का सदेश दिया, ठाकुरद्वारा, पुराना जनानखाना देखकर तीनो मित्रो की पत्नियाँ लौट रही थी। कल्याणी यहाँ से घर जाने वाली थी, कन्या की गोद मे कल्याणी की छोटी बच्ची सो रही थी, उसने जानकी से अलग ले जाकर कहा—"हम लोग जब बाहर चले जायँ तो डॉक्टर को ऊपर मेरे कमरे मे बैठा देना। मै मिसेज शुक्ला को गाडी मे बिठा कर आती हूँ।"

कल्याणी, कर्नल की पत्नी से कन्या वाले तुरत के प्रस्ताव पर विचार कर रही थी। कन्या ने प्रस्तावित किया था कि शकुतला का विवाह इसी घर से हो। घर की जगह होते हुए बाहर क्यो तलाश की जाय ? कल्याणी को यह प्रस्ताव अच्छा लगा था। उनका घर छोटा था, उन्हे कही बाहर से विवाह करना ही था। उसकी और महिपाल की सलाह के अनुसार कर्नल के घर से विवाह करना एक प्रकार से तै हो चुका था, परन्तु बँगले मे ब्याह करने का प्रस्ताव कल्याणी को बहुत रुचिकर प्रतीत हुआ। बँगलेवाली देवरानी पर भी खासा रोब रहेगा, बिरादरीवालियाँ यहाँ आएँगी, यह सब बाते कल्याणी के जी को घुमा रही थी। वह कर्नल की पत्नी से कह रही थी "एक न एक आदमी तो घर पर सोता ही, यहाँ ब्याह करने से जरा ये रहेगा कि उस घर का सहारा बिल्कुल भी नही रह जायगा। देखो, उनसे सलाह कर ले तो बतावै।"

कन्या बोली—"हाँ-हाँ, बात कर लीजिए, बाकी मै भी उनसे कहूँगी। शकुतला पर केवल आपका ही नही हम सभी लोगो का हक है, बहन जी !"

कल्याणी बहुत प्रसन्न हुई, गद्गद् होकर बोली—"हाँ-हाँ, बहन जी, पहले आपकी, पीछे हमारी। दोस्तन मे कोई भेद होता है ? हमारे वो तो कभी-कभी कहा करते है कि सगा भाई अपना नही रहा मगर कर्नल और सज्जन सगे भाई से भी बढकर है।"

शानदार पोर्टिको मे श्रीमती कल्याणी महिपाल शुक्ल के लिए गाडी इतजार कर रही थी।

४२

डाक्टर शीला ऊपर न गईं। वे कल्याणी के जाने की प्रतीक्षा में लॉबी में ही रुकी रही। कर्नल की पत्नी के साथ कन्या अन्दर लौटी, उसने सामने एक कोने में रक्खी मूर्ति की ओर मुँह किए खडी हुई शीला को देखा। कल्याणी और शीला के बीच में महिपाल के सबध की चेतना से कन्या इस समय मन ही मन बेहद उलझी हुई थी। वह अपने आप में गहरा झूठ महसूस कर रही थी। कल्याणी के सामने शीला को चोरी से धन की तरह छिपाए रखने मे उसका मन कट रहा था। उसे इस काम मे घोर अनैतिकता प्रतीत हो रही थी, और यह अनीति बरतने के लिए वह शीला के प्रति अपने प्रेम से मजबूर भी थी। कन्या ने अपने मैके मे अनैतिक सबध देखे थे। उनकी क्षुद्रता से वह घृणा करती थी। परन्तु यहाँ वह घृणा नही कर सकती थी। क्यो ? —यही उसके मन में अभी स्पष्ट न था और उसी को लेकर अपनी अन्य चिन्ताओ के साथ वह मन-ही-मन उलझ रही थी।

"हलो, डॉक्टर !"

शीला ने मुँह घुमाकर देखा। कर्नल की पत्नी उन्हे देखते ही चौंक कर बोली—"अरे डॉक्टर साहब, आप कब आईं ?"

"अभी थोडी देर पहले।" शीला के कान्तिहीन चिन्ता सागर मे डूबे हुए चेहरे पर मजबूरी की मुस्कान झलकी।

"आपको देख कर मेरी तबियत खुश हो जाती है!" फिर कन्या की ओर देखते हुए कर्नल की पत्नी ने कहा—"इनका ऐसा सुभाव मैंने बहुत कम लोगो का देखा है बीबी जी! आप तो बहुत दिनो से हमारे यहाँ आई नही ड क्टर साहब! ड क्टर साहब को हमारे यहाँ का टिकडा माँडिया बहुत पसद आता है बीबी जी!"

डॉक्टर शीला के चेहरे को देखकर कन्या महसूस कर रही थी कि बात कुछ बिगड गई है। भेद जानने की उत्सुकता क लिए अपनी भाभी की बात का 'झूठा' उत्तर देते हुए कहा—"तो एक दिन दावत कर दीजिए भाभी, डॉक्टर साहब के बहाने मै भी दावत खा लूंगी।"

कर्नल की पत्नी ने विनोदपूर्वक आँखे नचाते हुए कहा—"देखा डॉक्टर साहब, ये ननदे ऐसी होती है कि हर चीज मे अपना हिस्सा जरूर पक्का कर लेती है।"

साथ देने के ि ए डॉक्टर शीला मशीन की तरह हँसी। उन्हे देख कर कन्या को तहजीब का नाटक खत्म कर देने की इच्छा हुई। उसने कर्नल की पत्नी से कहा—"आइए, भाभी, ऊपर चले।"

कर्नल की पत्नी की स्मृति और सहज बुद्धि सचेत हो गई। उन्होने अर्थभरी दृष्टि से एक झलक शीला को देखा और तुरत बोली—"बीबी, मै रसोईघर मे जाती हूँ। पौने आठ हो रहा है अब जल्दी से थालियाँ लगवाने का इन्तजाम करूँ।"

"हाँ भाभी, यह अच्छा होगा।" कन्या ने अपने मन मे भार हल्का महसूस किया, भाभी की समझदारी पर श्रद्धा भी हुई। उनके जाने के बाद कन्या ने पूछा—"ड्राइग रूम मे चलोगी डॉक्टर? कोई एतराज तो नही?"

"अब जाऊँगी।"

"ठहरो, मै सज्जन को बुला लाऊँ। तुम आफिस के कमरे मे बैठो यहाँ।"

शीला से मिलकर लौटने के बाद महिपाल अस्त-व्यस्त हो गया था। उसकी सहजता नष्ट हो गई थी। जिस समय महिपाल शीला से मिलने गया था उस समय कर्नल और सज्जन मे इन्ही दोनो के प्रसग को लेकर, एक हल्की सी झडप भी हो चुकी थी। सज्जन अनैतिकता का प्रश्न उठाए जाने के बावजूद इस बात पर दृढ था कि शीला के प्रति महिपाल को उदार होना चाहिए। कर्नल ने बहस मे सज्जन से विशेष हठ न बाँधा, इसलिए बात तब रुक गई थी, परतु महिपाल के कमरे मे लौट कर आने के बाद सज्जन ने उससे अदबदा कर शीला के सबध मे प्रश्न किया और महिपाल गर्म हो उठा—"मै दो नावो पर पैर रख कर चलने का आदी नही हूँ। बहुत दिन अज्ञानवश द्वन्द्व का जीवन बिता चुका।"

झडप मे भी महिपाल यह अस्वीकार न कर सका कि शीला के प्रति उसे प्रेम है। परतु उस प्रेम का वह त्याग कर रहा है—एक बडे सिद्धात के लिए। कुटुम्ब व्यक्तिगत प्रेम से बडी वस्तु है। वैवाहिक कुटुम्ब समाज को सुसबद्ध बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली परपरा है, व्यक्तिगत प्रेम से समाज के बधन ढीले पड जायँगे। कुटुब की

भावना नष्ट हो जायगी—यह महिपाल के जोरदार तर्क थे जिनके बल पर वह सज्जन को निरुत्तर कर चुका था।

सज्जन महिपाल के तर्कों का सागर पार न कर पाने के कारण मौन अवश्य हो गया परन्तु महिपाल के प्रति उसका क्रोध और असतोष बढ गया था। वह मन ही मन महिपाल के खिलाफ शिकायते बटोर रहा था।

महिपाल सदा से उसके अहकार के लिए चुनौती रहा है। वह अपने ज्ञान और तर्कों से सज्जन को बार-बार छोटा बनाने का प्रयत्न करता रहा। सज्जन उसकी बातो के आगे अक्सर झुकता रहा है परन्तु उसके साथ ही साथ उसके मन मे सदा यह विचार भी आता रहा है कि महिपाल के मुख से निकली हुई बडी-बडी बाते केवल बहस के लिए होती है, महिपाल उन बातो के सहारे केवल अपने अभावो को ढँकता है, वह कभी उन पर अमल नही करता है।

महिपाल को भी सज्जन से यही शिकायत है। बातो की गर्मी के बाद का मौन भीषण हो उठा था। होली की शाम तीन मित्रो के परिवारो का रग भरा मिलन कराने के जिस उद्देश्य से सज्जन के घर सँजोई गई थी वह उद्देश्य शीला का प्रसग आ जाने के कारण पूरा न हो सका। कर्नल बात को बदलने के लिए कोई और बात उठाने की सोच ही रहा था कि कन्या आ गई। कर्नल बोला—"कहो बिन्नो, खाना-वाना कब खिलवाओगी भाई ?"

"बस, तैयार है भाईसाहब! भाभी थालियाँ लगवा रही है।" फिर उसने सज्जन की ओर देख कर कहा—"एक सेकेड के लिए इधर आना।"

सज्जन और कन्या शीला को कार तक पहुँचाने के लिए बाहर आए। सज्जन ने कहा—"तुम्हे आज बुलाकर मैंने बहुत गलती की! मुझे महिपाल से ऐसी उम्मीद न थी!"

शीला मूक थी। उसका निर्विकार चेहरा पत्थर-सा लग रहा था। कन्या सज्जन से बोली—"मै गुलमुहम्मद को बुलाती हूँ, वह इन्हे छोड आएगा।"

"मै चली जाऊँगी, मेरे लिए फिक्र मत करो।" शीला की इस बात पर सज्जन ने जोर देकर कहा—"नही। कन्या, तुम गुलमुहम्मद को आवाज दो। डॉक्टर को पहुँचा कर वह घर चला जायगा।"

कन्या बरामदे की तरफ बढी। कार के पास सज्जन और शीला खडे थे। पूनो की चाँदनी में बागीचे के पेड, कुज, हरे-हरे लॉन स्याही का जामा ओढे मौन के प्रतीक बने, आकर्षक लग रहे थे। चाँदनी के भय से रात मानो सिमट कर इस हरियाली मे बसेरा लेने के लिए उतर आई थी। दाहिनी ओर लॉन के कोने पर चमेली का कुज चाँदनी से सिंगार पा रहा था। सज्जन की खामोश नजर बात के अभाव मे चारो ओर घूमती हुई फिर शीला के दर्द और विचारो की बेहोशी में खोए हुए चेहरे पर आ ठहरी। देखकर उसके मन में गहरी टीस उठी। शीला के सर पर स्नेह से हाथ फेरते हुए वह बोला—"बी ब्रेव, चाइल्ड!" हाथ थम गया, सज्जन का स्वर गहरा विचारबद्ध हो गया, वह बोला—"सत्य कभी-कभी दुधारू तलवार की तरह वार करता है। महिपाल आर्टिस्ट होकर भी दर्द को नही पहिचानता, केवल न्याय की दुहाई दे रहा है। क्या कहूँ—कुछ समझ मे नही आता।"

"पुरुष औरत के दिल को पत्थर मानता है। फिर उसमे प्यार की बातो से अजता और एलोरा जैसी खूबसूरती काटता, तराशता है। और फिर उसे बाघ-बघेरो की बस्ती के लिए छोड कर चल देता है। औरत पत्थर ही सही, पर उस पत्थर में बनाई हुई अपनी ही खूबसूरती को आदमी क्योकर भुला देता है ? मै यह कभी न समझ सकी—कभी न समझ पाऊँगी।" शीला के चेहरे की विवश करुण विचारो से सहारा पाकर चेहरे की सौम्यता बन गई। सामने की ओर देखती हुई विचार से सधी पुतलियाँ बढते अँधेरे मे भी दिए की तरह चमक रही थी।

शीला को विदा कर लौटते समय सज्जन का मन उत्तेजित था। डॉक्टर शीला स्विग से उसकी घनिष्ठता महिपाल के कारण ही बढी थी। शीला में पश्चिमी और भारतीय नारी का अपूर्व समन्वय था, वह झरने की तरह ही मुक्त, प्रवहमान और झरने के समान ही अपने स्रोत से बँधी हुई नारी थी। शीला का व्यक्तित्व दूसरो के मन मे अपने लिए सदा आदर जगाता है।

कार के फाटक से बाहर चले जाने के बाद सज्जन लौटने लगा। कन्या उसके साथ ही साथ चल रही थी। पोर्टिको तक आते हुए सहसा बडी बेकली और गर्मजोशी के साथ सज्जन ने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया। उँगलियो से उँगलियाँ जकड कर वह आगे बढा।

ड्राइँगरूम के दरवाजे तक दोनो यो ही चले आय। कन्या के हाथ को अपने दिल पर रख दूसरे हाथ मे उसे बडी मुलामियत के साथ दबाकर अनखनाये स्वर मे सज्जन बोला—"दूसरो की चिन्ता मे हमने अपनी शाम बेकार ही खराब की। सबको न बुलाते तो अच्छा था।"

कन्या के चेहरे पर सुहाग की सतोषभरी लाली दौड गई, वह कुछ न बोली।

उँगलियाँ ढीली होने लगी पर वे अलग नही होना चाहती थी, नजरें भी मानो चार से दो नही होना चाहती थी।

"जाती हूँ।" कन्या ने आँखे नीची की और चलने को उद्यत हुई। उसकी उँगलियो को अपने पजे मे दबाकर भरे-स्वर मे सज्जन बोला—"तुम्हे मेरे बारे में कोई शका तो नही है ?"

कन्या इस प्रश्न से सिहर-सी उठी, शीला, कल्यानी की और महिपाल की चिता की आड में छिपा हुआ उसका भय दिल की धडकनो मे प्रवेश कर उजागर हो गया।

सज्जन उसी तरह उसका हाथ दबाये रहा, बोला—"काफी हद तक जिम्मेदार आदमी होते हुए भी मै एक जगह बिगडे बच्चे की तरह बेकाब् हूँ। मुझे एक जगह अपने ऊपर विश्वास नही। मै तुम्हारी शक्ति पर विश्वास करना चाहता हूँ, कन्या। मुझे अपना विश्वास दो। मैं कभी महिपाल न बनूँ—हरगिज न बनूँ।" सज्जन की सचाई कन्या के मन को छू गई, उमे सतोष भी मिला। मीठे स्वर मे मुस्कुरा कर बोली—"तुम्हारे बिगडे बच्चे वाले रूप को भी यहाँ और गोवर्द्धन मे देख चुकी हूँ। घबराओ मत, कभी गाफिल नही रहूँगी।"

नजरें फिर मिली। कन्या मुस्करा रही थी, सज्जन के चेहरे पर इस समय अत्यधिक

भोलापन बरस रहा था, अपन मन के सतोष को लेकर कन्या उस पर रीझी जा रही थी। उसकी आँखो मे फूल चमक रहे थे। सज्जन का मन नहा गया, स्वच्छ हो गया, उसने अपने आप मे एक नया आश्वासन पाया।

जाते-जाते कन्या ने कहा—"मै थालियाँ लगवाती हूँ, तुम लोग ऊपर ही आ जाओ।"

४३

रात देर तक जगने के कारण सज्जन घूमने भी न जा सका और सुबह की चाय मे भी एक घटे की देर हुई। सज्जन को होली मिलने के लिए कई जगह जाना है। पति-पत्नी द्वारा निश्चित हुए प्रोग्राम के अनुसार वह बारह बजे तक 'शर्तिया' लौट आएगा। पति-पत्नी आजाद परिन्दो की तरह ड्राइव करते हुए कानपुर जाएँगे, लच वही होगा। सज्जन रोजवुड की खूबसूरत डाइनिंग-टेबुल पर उँगलियो से तबला-सा बजाता हुआ कन्या के आने का इन्तजार कर रहा था। कन्या रसोईघर में नाश्ते की चीजे तैय्यार करवा रही थी। शीला, महिपाल के प्रसग को लेकर पति-पत्नी कल रात नए सिरे से अपने सबध की अटूटता को गर्मजोशी के साथ अनुभव कर रहे थे।

इतजार के मिनट-दो-मिनट गुजरे, सज्जन तबला बजाना छोड दुवारा अखबार खीच कर खबरे उलटने लगा। तभी नौकर ने बाबा जी के आने की सूचना दी। सज्जन के रोमान्टिक मूड को इस समय बाबा जी के आने की सूचना से प्रसन्नता न हुई। फिर भी उसने तुरत ही उन्हे ऊपर लाने की आज्ञा दी। बाबा जी की अलौकिक शक्ति से सज्जन अत्यन्त प्रभावित है। मन से मन की बात जान लेना कैसे सभव है, सज्जन बार-बार इस समस्या पर विचार कर हार चुका है और जितनी ही उसके मन मे पराजय की भावना आती है उतनी ही उसकी श्रद्धा भी बढती जाती है। कल दोपहर से, जब से बाबा जी ने सज्जन और कन्या को बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय अपना सर्वस्व निछावर कर देने के लिए कहा है तब से, सज्जन के मन में सकोच भी भर गया है। लोकहित के लिए अपने आपको समर्पित कर देने की बात यद्यपि उसे भी बहुत सुहाती है परन्तु इतना बडा त्याग करने के लिये उसके मन में पलती हुई अनेक इच्छाएँ सकोच उत्पन्न करती है। बाबा जी के आगमन का समाचार सुनकर सज्जन इसीलिए कुछ सहम-सा उठा।

ऊपर के अतिथि-कक्ष मे बाबा जी को बैठाया गया। सज्जन ने विनयपूर्वक बात छेडी—"हम लोग चाय पीने जा रहे थे। आपके लिए दूध मँगवाऊँ?"

"नही राम जी। आप लोग चाह पी आइए बल्कि कहिए तो हम भी वही चलकर बैठें। समय क्यो नस्ट किया जाय?"

"पधारिए, बस यही है कि—"

"क्या राम जी ?"

"हम लोग अडा, ऑमलेट—"

बाबा जी हँसे, बोले—"खाइए, आपका अडा, ऑमलेट कोई मेरे मुँह मे तो चला नही जायगा !"

कन्या के आ जाने पर बाबा जी न अपनी बात शुरू की। उन्होने सज्जन से कहा —"राम जी, एक स्त्री के प्रति न्याय माँगने के लिए तो आप लोगो ने बडा आन्दोलन खडा किया था, हवाई जहाज तक उडाय डाला था, अब अनेक स्त्रियो के उद्धार के लिए आप क्या हमारी सहायता कर सकेगे ?"

कन्या बोली—"आज्ञा कीजिए, क्या बात है ?"

"कल दोपहर हमारे आसरम मे एक विचित्र पगली दाखिल हुई राम जी। उसन लोगो के सामने बडा उग्र रूप दिखाया, परन्तु एकान्त मे जब मैने उससे बाते की तो पता चला कि वह एकदम पगली नही है।"

"फिर ?" सज्जन और कन्या दोनो का कौतूहल बढा।

"वो अत्याचार-पीडिता है राम जी। मण्डल मे अनेक अत्याचार सहने के कारण उसका चित्त विक्छिप्त तो कुछ अवस्य हो गया है, पर इतना नही, जितना कि वह जाहिर करती है। मण्डल वाले उसे मेरे पास छोड गए। वो क्या छोड गए, उनका पाप छोड गया। वहाँ अनेक स्त्रियाँ अत्याचार सहन कर रही है।"

कन्या का गोरा मुख उत्तेजना से रक्तपूर्ण हो गया। सज्जन के चेहरे पर उत्तेजना से अधिक उत्सुकता थी।

बाबा जी ने सारी कथा सुनाई। वह तथा-कथित पगली एक रसोईदारिन की लडकी है। एक धनी व्यक्ति के घर वह काम करती थी। यह लडकी भी अपनी मा के साथ वहाँ जाया करती थी। लडकी पढने-लिखने मे तेज थी, इसलिए उन धनी महानुभाव न दयालु होकर उसकी सहायता की। उन्ही के लडके से इस लडकी का प्रेम हो गया। इसी बीच मे रसोईदारिन का देहान्त हो गया। धनी व्यक्ति के कुलदीपक ने अपनी मातृविहीना निर्धन नायिका के अँधेरे भविष्य को सुहाग का उजाला दिया, परन्तु स्नेह कम था, इसलिए दीप टिमटिमा कर बुझ गया। लडके के माता-पिता ने उसे मजबूर कर यह सबध-विच्छेद करा दिया तथा लडकी के पालन-पोषण की व्यवस्था महिला-सेवा-मण्डल मे कर दी। उक्त सेवा-मण्डल प्रेमचद तथा भारत की अन्य भाषाओ के महान साहित्यकारो द्वारा अनेक बार वर्णन किये गये महिलाश्रमो के समान ही व्यभिचार और बुर्दाफरोशी का अड्डा है। एक महाशय लगभग बीस-बाईस वर्षों से उसके अवैतनिक मत्री औह सर्वेसर्वा हैं। कार्यकारिणी समिति मे नगर के कुछ धनी और प्रभावशाली व्यक्ति हैं, जिनके कारण यह सस्था सरकार द्वारा मान्य है। प्रति वर्ष महिला-सेवा-मण्डल की रिपोर्ट प्रकाशित होती है जिसमे कम से कम आठ-दस विधवा अथवा परित्यक्ता दुखी स्त्रियो के पुनर्विवाह का उल्लेख बडे आडम्बर के साथ किया जाता है। पत्नी पाने का इच्छुक पुरुष मडल की 'सहायतार्थ' पाँच-सात सौ रुपया देता है, जिसकी उसे बाकायदा रसीद मिलती है। विवाहेच्छुक स्त्री-पुरुष मैजिस्ट्रेट के सामने विवाह के फॉर्म पर हस्ताक्षर करते हैं।

इतनी बाकायदा कार्रवाई के बाद किसी को महिला-सेवा-मण्डल पर किसी प्रकार की शका करने का अधिकार ही नही रह जाता। इस प्रकार प्रतिष्ठा की चहारदीवारी खीच कर महिला-सेवा-मडल के भवन के अदर मत्री, कार्यकारिणी के सदस्यो, उनके मित्रो और पुलिसवालो के मनोरजन के लिए व्यभिचार का अड्डा चलता है। मण्डल के एजेण्ट रेलवे-स्टेशनो और मेलो मे भटकी हुई स्त्रियो को बहका-फुसला मण्डल मे ले आते है। साम्प्रदायिक हलचल के दिनो मे मुसलमान स्त्रियो को उडा कर उन्हे शुद्ध करने का परम पवित्र कार्य भी यहाँ खूब होता था। मण्डल में पहले तो अधिकतर देहाती अथवा निचले सामाजिक वर्ग की महिलाये ही आती थी, परन्तु देश-विभाजन के पश्चात् जब से कुछ अपहृत महिलाओ की रक्षा का भार भी मण्डल पर आ गया तब से मध्य वर्ग की दुखी विधवायें भी खोज-खोज कर भरती की जाती है। मडल की ओर से एक अलग भवन मे सिलाई, बुनाई, दस्तकारी के काम सिखलाने के लिए कक्षा भी चलने लगी है जिसके सहारे बाहरी-स्त्रियो का आना-जाना वहाँ सुलभ हो गया है। उन्हे मजदूरी भी दी जाती है। शिक्षालय के सहारे वहाँ दिन मे सार्वजनिक पापाचार चलता है।

यह लडकी जो इस समय पगली बनकर बाबा जी के आश्रम मे आई है, कक्षा मे पहले रक्खी गई, वहाँ मुहल्ले की तथा मडल की कुछ स्त्रियो की प्रलोभन भरी बातो के सहारे तथा मडल के मत्री महोदय के मीठे व्यवहार से भुलावे मे आकर वह बडी आश्वस्त हुई। कुछ दिनो के बाद ही रहस्य प्रकट होने लगा। लगभग दो वर्ष के कठोर सघर्ष के बाद अपने को पूर्ण पागल सिद्ध कर वह लडकी बाहर निकल पाई है। वह पुरुषमात्र से त्रस्त है, पुरुष मात्र से घृणा करती है। उसने पिछले दो वर्षों मे पुरुषो के द्वारा जितने मानसिक आघात पाए और सहे वे उसे घृणामयी बनने को बाध्य करते है। उसका पवित्र निष्कपट मानस पुरुष के कपट-जाल में फँस कर तरह-तरह के अपमान और बलात्कार सहकर अस्त-व्यस्त हो चला है।

सारी बात सुनकर कन्या अत्यधिक उत्तेजित हो गई। सज्जन पर भी इसका गहरा प्रभाव पडा।

कन्या तमक कर बोली—"इस दुराचार का अत करना ही होगा। इसी समय पुलिस में रिपोर्ट कर इस अड्डे को पकडना चाहिए।" उसने सज्जन से कहा—"तुम अभी जाओ! कुछ भी करो—इस पाप का अत करो।"

बाबा जी बोले—"पहले इसके लिए प्रिमाण सग्रह करना आवश्यक है। वह लडकी मानसिक रूप से इस समय सतुलित नही है। हो सकता है इसमे बहुत कुछ असत्य भी हो।"

सज्जन बोला—"शहर में ऐसे कुछ अड्डे चलते तो है। इस सबध मे मै सुन चुका हूँ।"

"चलते तो हैं राम जी परन्तु सत्य को लौकिक रूप से प्रिकट करने के लिए प्रिमाण भी चाहिए और यह लडकी अपनी बिक्छिप्तावस्था के कारण सत्य का उद्घाटन करने के लिए प्रिमाण नही बन सकती।"

अचानक सज्जन ने पूछा—"आप तो इतने शक्तिशाली है कि दूसरो के मन की बात जान लेते हैं। आपका क्या ख्याल है?"

"राम जी हमारे खियाल से अपना खियाल मत बाँधो। तुम आप सत्य को पहचानो। जथार्थ को अनुभव करो।"

"परन्तु इस दशा मे यथार्थ को पहचानने का हमारे पास उपाय ही क्या है ? इस केस मे यथार्थ का अनुभव किया ही किस प्रकार जा सकता है ?"

"उद्यम से, विचार से।"

"ऐसे अड्डे होते है, मैने बहुत सुन रक्खा है, पढा भी है। मै पुलिस के बडे अफसरो से मिलकर इसकी तहकीकात करवाऊँगा। मै अभी कर्नल को फोन करता हूँ।"

कन्या बोली—"मै भाई साहब को फोन करके बुलाती हूँ।"

वह उठी और जाने लगी। बाबा जी बोले—"ठहरो बेटी, पहले विचार कर लो। राम जी ने अभी एक बात उठाई कि पुलिस के बडे अधिकारियो से तहकीकात कराएँगे। उचित है, परन्तु छोटे अफसर जो इन लोगो से पैसा खाते-पीते है, वहाँ भोग-विलास करने जाते है, जदि बडे अफसरो के पहुँचने के पहले वहाँ से उस पाप-दृस्य को गायब करा दें तो हम तुम क्या कर लेगे राम जी ?"

सज्जन स्तब्ध हो गया। वनकन्या पिंजरे मे बद किए गए पक्षी की तरह विकल हो उठी, बोली—"स्त्रियो पर यह अत्याचार होते है, स्त्रियाँ इसके लिए विवश हैं, जग जानता है फिर कुछ भी हो मै इसके लिए प्रमाण एकत्र करूँगी। मै कुछ भी करूँगी, इस अन्याय का प्रतिकार करूँगी।"

बाबा जी हँसे, बोले—"कैसे करोगी बेटी, यही तो प्रिस्न है ?"

"मैं वहाँ जाऊँगी। वहाँ की स्त्रियो से बात करूँगी।"

"मडल के ब्यिवस्थापक तुमको बाते न करने दें तो ?"

"सार्वजनिक सस्था है बाबा जी, मैं जा सकती हूँ, देख सकती हूँ।"

बाबा जी फिर हँसे, बोले—"चोर उजागर मे चोरी नही करता बेटी । उस भेद कैसे जानोगी ?"

कन्या लडखडाई तुरन्त सँभल कर कहा—"अच्छा, मान लीजिए, मैं सामाजि कार्यकर्त्री के रूप मे वहाँ जाती हूँ, कुछ दिनो तक बाकायदा वहाँ के वातावरण मे घुल मिलती हूँ और उसके बाद उन स्त्रियो से मुझे सब कुछ पता चल जायगा।"

बाबा जी बोले—"उपाय तो अच्छा है, पर एक बात और भी विचार करने की बेटी। एक बार हवाई जहाज से स्त्री आन्दोलन उठायकर तुम इस नगर में अपरिचि नही रही हो। मडल के सचालक लोग तुम्हे मान लो कि घुलने-मिलने का मौका दे दे और उसके साथ ही साथ अपने यहाँ की स्त्रियो को भी सतर्क कर दें। ऐसी अवस में महीनो वहाँ जाकर भी तुम कुछ भेद नही पा सकती।"

सज्जन बोला—"एक बात और भी है, सत्य को जानने के लिए झूठा ढोंग कर क्या उचित होगा ?"

"अनुचित क्यो होगा राम जी ?"

"अनुचित तो होगा ही। झूठ की राह पर चलकर हमे सच कैसे मिल सकता है ?

बाबा जी बोले—"ठीक है, परन्तु यह भी तो बिचार करो कि यह झूठ कित

अस तक झूठ है ? तुम एक बात का भद लेने के लिए कही गए, उस भेद से बहुजन का हित होगा। अपने भेद की बात तुम कुछ दिनो तक छिपाए रखते हो, तो इसमें झूठ क्या भया?"

"झूठ तो हुआ ही बाबा जी—"

"अच्छा हमारी एक सका का समाधान करो राम जी। मान लेओ एक चोर चोरी करके भागा जा रहा है, तुमने उसे देखा, पीछे पुलिस वाला भी आता देखा। पुलिस वाले ने पूछा कि तुमने चोर देखा है ? तो तुम क्या कहोगे ?"

"मैं कहूँगा कि हाँ देखा है।"

"ठीक है, अब मान लेओ कि उस चोर के घर में बच्चा बीमार है, दवा-दारू के लिए उसे पैसे नही मिलते, बच्चे को बचाने के लिए उसके मन मे प्रिबल मोह है। तुम उस चोर की इस इस्थिति को जानते हो। तुमने उसे चोरी के धन के साथ अपने घर मे घुसते देखा है और फिर पुलिस वाले ने तुमसे पूछा कि चोर देखा ? तो तुम क्या उत्तर दोगे राम जी ?"

सज्जन दो क्षण चुप रहा फिर गहरा विचार करते हुए बोला—"चोर तो मैंने देखा ही इसमे कैसे इनकार कर सकता हूँ ? पर उस व्यक्ति की स्थिति भी विचारने योग्य है। . .मै यह कर सकता हूँ कि चोर को दण्ड दिलाऊँ और बच्चे को बचाने के लिए आर्थिक रूप से उसकी सहायता करूँ।"

"और मान लो कि तुम्हारे पास सहायता करने का कोई साधन नही, तुम आप बडे गरीब हो। किसी से सहायता दिला सकने की भी तुम्हारी हैसियत नही, तब ?

"मै झूठ बोलूँगी। ऐसे चोर को पुलिस से बचाना मेरी दृष्टि मे पुण्य है, पाप नही।"

"मैं—मै इन विरोधी बातो को इतनी आसानी से मिला नही पाता। चोरी बुरी चीज है यह सच है, अपने परिवार में या किसी की भी जान बचाने के लिए उपाय करना भी ठीक है, सच है। ये दोनो सच आपस मे इतने विरोधी है कि—"

सज्जन गहरे विचार मे उलझा हुआ था, वह निर्णय-शून्य था।

कन्या कुछ उत्तेजित स्वर मे बोली—"तुम क्या फिजूल-सी बहस उठा रहे हो ? यह समय काम करने का है।"

"मेरी बहस फिजूल नही कन्या। बाबा जी मन का हाल जानते है, वह गवाही दे सकते है।" सज्जन ने सयत स्वर मे उत्तर दिया।

बाबा जी बोले—"तुम्हारे बिचारो के पीछे खरा हृदय-मथन है राम जी, यह बात तो इस्पस्ट है। परन्तु एक और बात भी तौल कर अपने मन मे देख लेओ—किस परिस्थिति के कारण तुम्हारे मन में यह सत्य मथन आरम्भ हुआ है ?"

"मै समझा नही।"

"तुम्हारी पत्नी ऐसे पापालय में प्रिवेस करै, यह बात तुम्हे रुचिकर प्रतीत नही होती। मेरी बात का खडन करते हो या समर्थन, बोलो।"

"जी, आपकी बात सही है।"

"मान लो, तुम्हारी पत्नी नही बरन् कोई अन्य स्त्री इस प्रकार का साहस भरा कार्ज करे तो तुम उसकी प्रिससा करोगे या नही ?"

"प्रशसा मै इनकी भी करूँगा, पर भय लगता है कि गुडो के बीच में ये इस तरह "

"और जो इतनी अबलाये गुण्डो के बीच मे घिरी हुई तडप रही है वे ? उनमे क्या मेरी तरह जान नही ? मै अवश्य इसका पता लगाऊँगी, मैने अपने घर मे जिस अत्याचार को देखा है, वह अनुभव, उसकी पीडा मुझे इस अन्याय का अन्त करने की चुनौती देती है। ऐसे समय मे तुम्हारा यह दार्शनिक बातो का विवेचन करना बहुत खल रहा है सज्जन। तुम्हारी वो स्पिरिट कहाँ गई जो मेरी सहायता करने उस समय जागी थी जब मै तुम्हारी पत्नी नही थी ?"

कन्या बेहद उत्तेजित हो रही थी। नाश्ता-चाय की ओर से सब का ध्यान बिखर गया था। बाबा जी शान्त स्वर मे बोले—"कोरी उत्तेजना निरर्थक है बेटी। काम के समय भी विचार दर्सन के लिए दिमाग मे प्रति छण फुरसत रहनी ही चाहिये। इसके बिना कार्ज सिद्ध नही हो सकता। तुम्हारे पति की सका भी सही है। मैने उन्हे परिस्थिति के प्रिति केवल इसलिए सचेत कर दिया जिससे कि उनकी दृस्टि गलत न उलझै।

हॉ राम जी, अब मै आपकी बात का उत्तर दूँ, झूठ अब लक्छ नही, नीतिमात्र हो, जब उसका सवध एक ब्यापक सत्य से हो तब हम उसे अपनायेगे। जहाँ तनिक-सा झूठ बोल कर परोपकार करना सभव हो वहाँ पर वह सत्य सगत है, पुण्य है। ब्यास महाराज का यह उपदेस कि परोपकार पुण्य और परपीडन पाप है हमें उचित जान पडता है।"

"तब तो हिसा भी कही परम पुण्य है ?" सज्जन ने कहा।

"गीता के इस आदेस को भी मै उचित मानता हूँ। उद्देस्य महान् हो तो त्याग की कसौटी पर कही हिसा भी पुण्य है।"

"गाधी जी इसका विरोध करते थे।"

"नही तौ। कायर की अहिसा से उन्होने भी हिसा को स्रेष्ठ माना। जीव की रक्छा करना महान् उद्देस्य है। जब तुम्हे मारने के लिए कोई हठ ही ठान ले तब उससे लडना ही चाहिये। इन औरतो के ब्यापारियो से डट कर लडो राम जी।"

"ये सेवा-मण्डल है कहाँ पर ? मै आज ही जाऊँगी।"

"हॉ, आज तौ तुम दोनो जने आओ। हमारा हवाला दै देना। तुम दोनो के वहाँ जाने का कारण इस्पस्ट हुइ जायगा। सौ-दो-सौ सहायता के नाम पर फेंक देना। फिर आगे जैसी परिस्थिति समझी जायगी वैसा उपाय किया जायगा।"

कन्या के सामने अपनी भाभी का चित्र था—आग से जले हुए, भुने हुए लोथडे, लटकती हुई देह, अग्नि मे विकृत होठ-नाक-आँखो के कोटर, सिर के केश .।
कन्या उस स्मृति से जड हो गई थी। उसके सामने औरतो की दुनिया जली हुई पडी थी। आँसू आँखो मे होश बन कर आये। कन्या काँपी, फिर दृढ हो गई।

आज नये सिरे से वह अपने उद्देश्य से बँधी।

४४

"प्रिय महोदय,

श्रीमान् बाबा राम जी के आश्रम मे पागलो के निरीक्षण और सेवा-सहायतार्थ मै और मेरे पति अक्सर जाया करते है। आपके महिला सेवा-मडल के सबध में हमे वही सूचना प्राप्त हुई। मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आप नारी-जाति की सेवा कर रहे है। ऐसे कार्यो मे मेरी बहुत दिलचस्पी है। मडल की सहायतार्थ पत्र-पुष्प के रूप मे यह सौ रुपये का चॅक भेज रही हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करेगे तो मुझे और मेरे पति को बडी प्रसन्नता होगी।

भवदीया,

वनकन्या वर्मा"

पत्र और चॅक पाकर महिला सेवा-मडल के अवैतनिक मत्री महोदय बडे ही प्रसन्न हुए। धन्यवाद देने के लिए वे स्वय पधारे। श्रीमती और श्रीमान् सज्जन ने नारी जाति की जो अपूर्व सेवा की उसका उन्होने अनगिनत शब्दो मे बखान किया। वनकन्या ने आश्रम देखने की इच्छा प्रकट की जिसे मत्री जी ने मडल का परम सौभाग्य माना। दूसरे दिन दो बजे मत्री महोदय स्वय आकर दोनो को ले जायेगे, यह निश्चित हुआ।

अनाज से गॅजा, जनरव से गूँजता हुआ सॅकडा बाजार, पीठ पर वजनी बोरे लादे सडक के दोनो ओर आते-जाते मजदूर, मनो बोझा खीचते ठेले मे बधे मरघिल्ले भैसे और बोरे लादे ऊँट, सारी भीड मे अपना अलग ही अस्तित्व रखते थे। कुर्ता, जाकट, दुपल्ली या गाँधी टोपी पहने, कधे पर अगोछा डाले, फतुही, मुडासा और घुटनो तक ऊँची धोती, चमरौधा पहनने वाले लोग ही इस बाजार में अधिक दिखाई पड रहे थे। अनाज की गध से बाजार महक रहा था। ठेलो, ट्रको, साइकिल, इक्को, रिक्शो, गायो, साँडो और व्यापार-व्यस्त इसानो के हुजूम से, सडक के गड्ढे-खाँचो से बमुश्किल तमाम गुजरते हुए सज्जन की कार आगे बढ रही थी। मत्री महोदय ने उँगली उठा बायी ओर दूर पर एक छत की ओर इशारा किया जिस पर मडल का बडा भारी साइनबोर्ड लगा हुआ था। मत्री जी बोले—"मैने तीनो ओर मुँडेरो पर इतने बडे-बडे साइनबोर्ड इसलिए लगवाये है कि एक तो जनता का ध्यान आकर्षित हो और दूसरे, छत पर सब तरफ से पर्दा हो जाय। मै पर्दे आदि का बडा ध्यान रखता हूँ, देवी जी। हमारे मडल मे चरित्र पर बडा ध्यान रखा जाता है। बाईस वर्ष हो गए मुझ को यह सेवा-कार्य करते हुए मै आपसे कहता हूँ, चद्रमा मे कलक है परन्तु हमारी चन्द्रमुखिया निष्कलक है।"

अनाज मडी से गुजरकर कार बायी ओर की सडक पर आई, सामने एक सेकेंड-रन सिनेमा हाल, जनरल मर्चेन्टो का छोटा बाजार आया, दुकानोवाले बरामदे के साथ बायी ओर कार फिर गली मे मुडी, एक मकान पर "श्रीमती सुन्दर बीबी दातव्य औषधालय" का साइन बोर्ड, उससे लगे हुए मकान पर "फ्रेड्स ट्रेडिग कारपोरेशन" का साइनबोर्ड, फिर एक दर्जी की दुकान, और फिर "महिला सेवा मडल" की पीली

पुती हुई इमारत, जो साइनबोर्डों से पटी हुई थी। फाटक के ऊपर मडल का नाम, दाहिनी ओर लम्बे साइनबोर्ड पर मत्री महोदय और सरक्षक रईसो की नामावली, बायी ओर के साइनबोर्ड पर मडल की महती उद्देश्यावली टँगी थी, खाली दीवाल पर मोटे-मोटे अक्षरों में "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता" लिखा था।

अन्दर दफ्तर था। एक महिला वहाँ बूढे दफ्तर-मुन्शी के पास ही बैठी थी। रग गेहुआँ, भूरे तिलो से भरे हाथ और चेहरा, नीली छोटी काजल लगी सुनहरा चश्मा चढी आँखे जिनकी पलको के पपोटे और नीचे की चमडी गहरी साँवली थी, भूरे बाल, कत्थे रगे छोटे-छोटे दाँतो वाली यह श्वेत खादी-मडित महिला उठ खडी हुई, दाँत दिखाकर हाथ जोडे। सज्जन को उनकी दृष्टि और मुस्कान बडी घुटी हुई मालूम हुई। माथे की बिन्दी और माँग का सिन्दूर देवी जी के सुहाग का परिचय दे रहा था। बाकी परिचय देते हुए मत्री जी ने बतलाया "आप श्रीमती धनवती देवी शास्त्रिणी, प्रभाकर, राजवैद्या है। हमारे पडोस मे ही सुन्दर बीबी दातव्य औषधालय है, उसकी आप प्रधान है। हमारे मडल की तो मानो आप प्राण हैं। आप ही की सलाह और सहयोग से हमन स्त्रियो को आयुर्वेद पढाने का भी प्रबध कर रखा है।"

मण्डल मे स्थायी रूप से रहने वाली आठ स्त्रियाँ मान्य अतिथियो के सामने सफेद उजली पोशाक मे पेश की गयी। उनकी उम्र अठारह से पैतीस के अन्दर थी। रग आमतौर पर साँवला, किसी का गहरा, किसी का खुलता हुआ। नाक-नक्शा प्राय सबका ही ठीक-ठीक था। उनमे एक भी ऐसी न थी जिसे सचमुच सुन्दरी कहा जा सके। महिलाओ ने मत्री जी की आज्ञा से कुछ श्लोक और भजन सुनाये। इसके बाद उन्हे सिलाई कक्षा, कसीदा काम और बुनाई की कक्षा, सगीत कक्षा, नृत्य कक्षा, आयुर्वेद कक्षा और धर्म कक्षा दिखलाई गयी। इनमे लगभग पचास-पचपन नवयुवतियाँ, युवतियाँ और कुछ प्रौढायें भी थी। यह सब घर-गृहस्थी की महिलाये थी जो दिन मे यहाँ काम सीखने आती थी, उनके काम की मजदूरी भी दी जाती थी। केवल सगीत और नृत्य सीखने वालियो की मजदूरी नही मिल सकती। यही हाल धर्म-कक्षा का भी था। आयुर्वेद और धर्म की कक्षाएँ मडल में स्थानाभाव के कारण सुन्दर बीबी के औषधालय वाले मकान में चलती थी जिसके लिए श्रीमती धनवती देवी शास्त्रिणी, प्रभाकर, राजवैद्या की उदारता-रामायण का मत्री महोदय द्वारा पुन पाठ हुआ।

मडल का कार्य-सचालन देखकर सज्जन और कन्या दोनो पर ही बडा अच्छा प्रभाव पडा। इस सुव्यवस्थित साफ-सुथरे वातावरण में कही भी उस गदगी का परिचय न मिलता था जिसकी खोज मे वे आये थे। कन्या अनेक प्रकार से मडल की सहायता करने का वचन दे आई। लौटते समय उसने स्वगत स्वर मे कहा था—"या तो वह पगली झूठी है या यह ऐसा सगठन है जिसकी थाह आसानी से नही लगेगी। कैसी कठिन दुनिया है। इससे जूझने के लिए कठिन साहसी चाहिए।"

इसके बाद उसने सज्जन से मडल के सबध में कभी गभीर चर्चा न की। मत्री महोदय वनकन्या के पास अक्सर आया करते थे, फिर सज्जन के पास आने लगे। धनवती देवी शास्त्रिणी, प्रभाकर, वैद्या के साथ भी वे सज्जन के पास आये-गये।

सज्जन ने बाबा जी से मडल के विषय में सब कुछ बतलाया और कहा—"आपकी पगली ने जिन बातो का सकेत किया उनकी तो वहाँ कही झलक भी नही मिलती !"

बाबा जी बोले—"राम जी हमारा मन कहता है कि वहाँ निश्चित रूप से बडा भारी जाल-बट्टा फैला है। उस पगली की अनेक बाते ऐसी है जिनमे मिथ्या कल्पना का तनिक भी अस नही लगता।"

बाबा जी ने अनाज के एक बडे व्यापारी का नाम बतलाया जो अपनी भतीजी को जबरदस्ती अपने वश में किये हुए है। मडल मे उसे सिलाई का काम सीखने के लिए आना पडता है और अनिच्छापूर्वक सारी मानसिक यत्रणाएँ सहनी पडती है। उस तथाकथित पगली के सबध मे भी सज्जन को और कुछ मालूम हुआ। पगली बतलाती थी कि पहले उसे मडल के धार्मिक वातावरण से पूरी तरह प्रभावित कर क्रमश यह समझाया जाता था कि गृहस्थ बनना ही स्त्री का सबसे बडा धर्म है, साथ ही स्त्री को पुरुष की तरह बार-बार विवाह और त्याग का अधिकार भी है। और यह बतलाया जाता कि मडल विशुद्ध आर्य-परपरा के अनुसार स्त्री-पुरुष मे प्रेम-सबध स्थापित कर स्वयवर रचाने का पूरा-पूरा अवसर देता है। यह बातें धीरे-धीरे उसके मन मे बैठाई जाती रही। पगली सब प्रकार से अरक्षिता होने के कारण मडल के प्रभाव मे आती गई। एक दिन उसे मडल के बगल वाले कमरे में ले जाया गया जहाँ एक युवक से उसका परिचय कराया गया। उस कमरे में साधारण सुरुचिपूर्ण सजावट के अलावा एक राधाकृष्ण का चित्र भी टगा था। उस चित्र के सामने पगली तथा उस व्यक्ति से प्रतिज्ञा कराई गई कि दे दोनो का भेद किसी तीसरे से न कहेगे। पगली ने प्राय. स्वेच्छापूर्वक उस व्यक्ति के प्रति अपने को समर्पित किया। अपने पिछले कटु अनुभव की कथा भी नये प्रेमी को सुनाई। पगली का नया प्रेमी आठ-दस दिन लगातार आया। फिर सहसा उसका आना रुक गया। फिर एक दिन जब वह उस कमरे मे जाने के लिए बुलाई गई तो उसने वह। जाकर देखा कि एक नया व्यक्ति वह। उपस्थित था। उस व्यक्ति के सम्मुख फिर सब पुरानी बातो का नाटक दुहराया गया, राधाकृष्ण के चित्र के सामने पुरानी प्रतिज्ञा नए सिरे से दुहराने का तमाशा आरभ हुआ, पगली ने उसका विरोध किया। उसने अपने-आप को वेश्या बनाने से इनकार किया जिसका नतीजा यह हुआ कि मजबूर किए जाने पर वह चीख पडी। महिला-सेवा-मडल की यह चीख बाहर तक पहुँची थी और कुछ दिनो व्यर्थ चर्चा का विषय भी रही थी। पगली उसी दिन से मडल के नीचे वाले हिस्से मे कैद हो गई जहाँ उसे अनेक बलात्कार सहना पडा। बलात्कार करने वालो मे पगली के कथनानुसार अक्सर पुलिस के लोग भी आते थे। उसे वही गुप्त बीमारी भी हुई। पगली ने यह भी बतलाया कि मडल के नीचे वाले हिस्से मे दो ऐसी बडी-बडी कोठरियाँ भी हैं जहाँ इनकार करनेवाली स्त्रियो को कैद किया जाता है, बार-बार मारपीट और बलात्कार सहने को मजबूर कर जहा उनकी आत्मा तोडी जाती है। जो स्त्रिया मडल की सुहागिन बन जाती हैं वे इनकार करने वालियो पर राज करती है। स्त्रियो की आपसी जलन, लालच और अत्याचारो से विवश होकर स्त्रियाँ मडल वालो की इच्छानुसार कार्य करने लगती है, ऐसी पकी स्त्रियाँ ही मजिस्ट्रेट के सामने शादी के ढोग के साथ कानून की नजर में धूल

झोक कर बची जाती है। धनवती देवी वैद्या और एक अन्य स्त्री, जिसका नाम पगली ने कित्तो की बुआ बतलाया, मडल की स्त्रियो के दण्ड-पुरस्कार आदि का विधान रचती है। धनवती वैद्या के सबध मे सज्जन ने सुना कि वे मत्री महोदय से भी कही अधिक विकट अत्याचारिणी है। मत्री और वैद्या ही इस शैतान के साम्राज्य के राजा और रानी है। वैद्या का बूढा पति रोटी-टुकडा खाकर नौकरो की तरह पडा रहता है।

सज्जन यह सब सुनकर बडा ही विचलित हुआ। किसी न किसी प्रकार इस रहस्य का उद्‌घाटन करने की उसकी इच्छा होने लगी। कर्नल से भी उसने इस सबध मे चर्चा की। उसने मडल के सबध मे अक्सर अफवाहे सुनी थी। मत्री महोदय को तो कर्नल ने पूरा चार सौ बीस बतलाया, परन्तु इसके साथ ही साथ सज्जन को इस बात का कडा आदेश दिया कि वह भविष्य मे इस गदगी मे हाथ डालने का प्रयास न करे।

परन्तु सज्जन के मन मे एक आग जाग चुकी थी। वह इस रहस्य का उद्‌घाटन करने पर तुला था। उसने अपनी इच्छा दूसरो से गुप्त रखी। सज्जन न वनकन्या के नाम से दो बार और भी पच्चीस-पचास रुपये भिजवाए। मत्री महोदय को इस नए दानी परिवार के प्रति सहज ही आकर्षण हो गया। वे अक्सर आने लगे। एक बार कन्या को अपने मडल मे व्याख्यान कराने भी ले गये। एक दिन पहले से समय निश्चित कर—कन्या जब ताई के घर अपने स्कूल चली जाती थी उस समय—सज्जन ने उसके नाम से मत्री को घर पर बुलवाया। वे आये। सज्जन उस समय शराब का सारा आयोजन सजोये बैठा था। उसने मत्री को वही बुलवाया, पूछा—"कहिए कैसे आना हुआ?"

मत्री बोले—"कल दोपहर को मुझे देवी जी का सदेश मिला था, उन्होने ही मुझे आज इस समय यहाँ बुलाया था।"

"वो तो है नही, शायद किसी जरूरी काम से चली गई है, बैठिए आती होगी। लीजिए शौक कीजिए।"

"हे-हे-हे-हे! मै तो पान-तमाखू को छोडकर और कोई नशा नही करता।"

"अमाँ जाओ भी! बहिश्त मे रहते हो और आबे कौसर-आबे जमजम से परहेज रखते हो।" थोडी ही सी देर में सज्जन ने मन्त्रिवर को अपनी बातो में लपेट लिया। इसमे उसकी वाक्‌चातुरी से अधिक उसके वैभवपूर्ण वातावरण का सहयोग रहा। उन्हे यह विश्वास दिला दिया कि वनकन्या और सज्जन के पथ अलग-अलग है। यह सारा सामाजिक कार्य का नाटक तो वह वनकन्या के कारण ही करता है। सज्जन ने अपने सबध मे अनेक सच्ची-झूठी रोमाटिक कहानियाँ गढकर सुनाई, यह बतलाया कि मुहल्ले मे स्टूडियो खोलने के पीछे उसका आशय यही था और उसने वहाँ अनेक आनद भी प्राप्त किये। सज्जन ने यह भी सकेत किया कि वह गुप्त आनन्द प्राप्त करने के लिए सैकडो रुपये खर्च कर देता है।

मन्त्रिवर फिसल पडे। धनवती जी भी उसका घर झाँक ही गई थी, वनकन्या से अधिक वे सज्जन से अपना सबध स्थापित करने लगे।

एक दिन धनवती जी ने सज्जन को अपने यहाँ दिन मे भोजन पर बुलवाया। सज्जन ठिठका, उसने सोचा, फिर चला गया। उस दिन सारा तत्र समझ में आ गया। श्रीमती

सुन्दर बीबी दातव्य औषधालय और महिला-सेवा-मडल के बीच में फ्रेंड्स ट्रेडिंग कार्पो-रेशन वाली इमारत दर-असल पुरुषो के आवागमन के लिए सुविधाजनक मार्ग है। फ्रेंड्स ट्रेडिंग कारपोरेशन शेयर मार्केट से सबध रखनेवाली सस्था है। मडल के एक धनी सरक्षक के कुछ कर्मचारी वहाँ काम करते हैं, शेयर का धधा नाम-मात्र को वहाँ होता है, उस बहाने दिन भर लोगो की आवा-जाही के लिए वह दफ्तर सुगम मार्ग बनाता है। सज्जन इसी राह से अन्दर गया। नीचे का आँगन प्राय खाली था, ऊपर कटहरे के आगे खुली छत थी। सामने तीन दर वाला एक कमरा, जो अदर से तीन छोटी कोठरियो के रूप में एक-ईंटिया दीवाल द्वारा विभाजित किया हुआ था। सुन्दर बीबी दातव्य औषधालय, फ्रेंड्स ट्रेडिग कार्पोरेशन और महिला-सेवा-मडल ऊपर से दोनो ओर दरवाजे फोड-कर एक इमारत के रूप में बाँध दिये गये थे। श्रीमती धनवती देवी वैद्या, शास्त्रिणी सज्जन को मडल की इमारत में एक ऐसी कोठरी में ले गयी जहाँ से वह निश्चित होकर सिलाई, बुनाई आदि की कक्षाओ में काम करने वाली स्त्रियो को देख सकता था। थोडी ही देर में धनवती देवी शास्त्रिणी फिर पधारी। उसे एक झरोखे से हटा कर दूसरी दीवार में बने हुए झरोखे के पास ले गयी, दूसरी ओर के कमरे में आठ-दस स्त्रियाँ जमा हो गई थी, यह समय कुटन-पथिनी स्त्रियो की चाय का था। गाहको को इसी समय झरोखे से चुपचाप माल दिखाया जाता था। गाहक जिसे पसद कर ले उसे उसकी सेवा में पहुँचाया जाता था। सज्जन उनकी बातें खडा सुनता रहा। बातें घर-गृहस्थी, पतियों, रिश्तेदारो के सबध में थी, उनके द्वारा घर पर बनाये जाने वाले बहानो पर थी, गोपनीय मजाक थे। धनवती देवी वैद्या सज्जन के साथ अधिक से अधिक सट कर खड़ी होने का प्रयत्न करती, बहुत रस से उन स्त्रियो के सबध में बता रही थी। दो-तीन के सबध में तो उन्होने यह बतलाया कि उनके पति बूढे हैं, एक की गरीबी का चित्रण करते हुए कहने लगी—"कई बेचारियो की तो रोटी यहाँ से चलती है। हम लोग बाइज्जत तन-मन-धन की भूख मिटाते हैं, मैं तो कहती हूँ ये बडा पुन्न का काम है।"

सज्जन को धनवती देवी से घबराहट लग रही थी। उसने उस दिन किसी 'अप्सरा' को अपनी सेवा में नही बुलाया।

सज्जन लगातार तीन-चार दिन वहाँ जाता रहा। उसने धनवती देवी के अपनी ओर बढते हुए आकर्षण-कष्ट को भी सहन किया। उन्हे रिझाने के लिए उनकी फर्माइश के अनुसार ढाई सौ रुपये की एक घडी भी प्रेजेंट की।

सज्जन को इन तीन-चार दिनो में अद्भुत रूप से निजी और सामाजिक अनुभव प्राप्त हुए। अपने बारे में जो नया अनुभव हुआ उससे उसे स्वय ही आश्चर्य होता था। कुछ महीनो पहले तक यही सज्जन ऊपरी बुद्धि से ऐसे जघन्य कृत्यो की निन्दा करता हुआ भी मन-ही-मन उनके आकर्षण से बँधता था। कुछ महीने पहले सज्जन इस अड्डे में आकर अपने को खो चुका होता। परन्तु आज उसे यही दृश्य आठो पहर तिलमिलाते रहते थे। कन्या के साथ विवाह से पहले जो मन-मथन और अब विवाह के बाद जो आत्मविश्वास प्राप्त हुआ, जो विचार पके, वे उसके मानस को नये सिरे से ढाल चुके हैं—यह उसने मडल में लगातार आने के दौर में ही महसूस किया। स्त्री के स्वाभिमान,

सच्चरित्रता और समर्पण का जो नया मानदड वनकन्या के रूप मे उसके जीवन में स्थापित हुआ है, वह उसे ऊँचा उठा ले गया है। अपनी माँ को छोडकर सज्जन अन्य किसी नारी को जो आदर न दे सका था वह उसकी पत्नी ने अपने आचरण द्वारा उससे सहज ही मे प्राप्त कर लिया। और वनकन्या का आदर करना ही उसके जीवन की बहुत बडी क्राति थी। जवान सुन्दर स्त्री मात्र को लेकर उसकी दृष्टि ही बदल गयी थी। मडल मे इन चार दिनो तक आते-जाते सज्जन ने अपने सबध मे जो सबसे बडा ज्ञान पाया वह यही था। अपने पूर्व अनुभवो के साथ मडल के ये दृश्य जोडते हुए उसने उन कारणो को भी महसूस किया जिनसे स्त्रियाँ इस रास्ते पर आती है। शौकीन पैसेवालियाँ शौक से आती है, उनके पति उन्हे धोखा देते है और वे अपने पतियो को। मजबूरी का जीवन बिताने वाली विधवाएँ क्रमश प्रलोभनो मे पडकर यहाँ आती है। हमारे सामाजिक सगठन मे विधवा की स्थिति प्राय ऐसी होती है कि वह धन और जन दोनो ही से वचित कर दी जाती है। विधवाएँ धर्म-चर्चा के बहाने, सिलाई सीखने और मजदूरी करने के बहाने यहाँ आती है। कम आमदनीवाले मध्य वर्ग की वे युवतियाँ आती है जिनकी चाहत के सपने जमाने के प्रभाव से रियासत भरे होते है। मैके मे सोचती है कि पति के पैसे से ऐश करेगी, मगर आमतौर पर यह नसीब सब को नही मिलता। अधिकतर युवतियाँ अपने पतियो की आर्थिक सीमाओ से बँधकर त्रस्त रहा करती है। दिन-रात घर मे कलह करती हुई वे अतृप्तियो से भरी रहती है। सिनेमा के आधुनिक दौर से गुजरते हुए आज के कमजोर दिमाग की तरह उनके मन मे नए हीरो की तलाश रहती है—ऐसा हीरो की जो उनके पतियो के विपरीत उनके सौदर्य और गुणो पर रीझ कर उन्हे सुख-सुविधाओ के हिंडोले मे झुलाए। सज्जन ने देखा कि सगीत-नृत्य सीखने के बहाने इस मडल मे ऐसी नई उम्र की लडकियाँ भी फँसाकर लाई जाती है जिनके मन में अनुभव न किए हुए सेक्स का प्रचण्ड कौतूहल होता है। वे बडी उम्र की युवतियाँ भी आती हैं जिनका पैसे की कमी के कारण विवाह नही हो पाता। एक बार बुरे जीवन मे फँस जाने के कारण नारी का चरित्र क्रातिकारी रूप से बदल जाता है। षड्यन्त्र और भेद का वातावरण होने के कारण बहुत-सी स्त्रियो मे सघबद्धता वाली डिसिप्लिन अपने आप फूट पडती है। अपने सघ मे अधिक से अधिक स्त्रियाँ सम्मिलित हो, इसके लिए भी वे प्राय आप ही प्रयत्नशील होती है। अनेक ऐसी भी होती है जो स्वभाव से सरल किन्तु कमजोर मन की होने के कारण एक बार फँसकर फिर जीवन भर इस नरक से उबरने की राह नही पाती, दिन-रात गुप्त मानसिक ज्वाला मे धधका करती है।

इन चार दिनो मे सज्जन अपने मन के कोने-कोने से अटका-अटका फिरा है। सामाजिकता, आबरूदारी, सच्चरित्रता, कुलीनता यह सब सोने ऐसी ठोस चमकती हुई मान्यताएँ उसे गँदली कीचड भरी नालियो की तरह नजर आने लगी। इन मान्यताओं का समाज में वही मूल्य है जो महिला सेवा-मडल की छत और फाटक पर साइनबोर्डों का है। चित्रा राजदान से लेकर धनवती देवी वैद्या शास्त्रिणी तक, मडल में आने वाली अनेक आबरूदार घरो की स्त्रियो तक—सर्वत्र उसे नारी के रूप में वेश्या के दर्शन हुए। छज्जो से सजे हुए बाजारो में जो वेश्या प्रकट है, जो युगो तक भरी सभा मे द्रौपदी बनाकर

रखी गई है उस बेचारी ने ही फिर ऐसा कौन-सा अपराध किया है जिससे मात्र उसे ही अस्पृश्य समझा जाय ? ऊपर से धर्म, पवित्रता, सदाचार का इतना बडा आडबर सजाकर छिपे-छिपे चलने वाली इस आबरूदार वेश्या को क्यो न जग-जाहिर किया जाय ? आबरूदार समाज खुद ही अपनी आबरू लूटने के लिए ये अड्डे बनाता है। ऐसी झूठी आबरू का भडाफोड क्यो न किया जाय ?—उसके मन मे निरतर घुटन मचती रही। समाज की गदगी को सामने लाना क्या समाज के लिए कल्याणकारी होगा ? ऐसा करने से बेशर्मी तो नही फैल जायगी ? ऊँची मान्यताओ के भय से जो दुनिया अभी तक दबे-छिपे यह कार्य कर रही है, फिर बेशर्म बनकर खुलकर खेलेगी। वह दुनिया बडी भयकर होगी।

कर्नल ने सज्जन को इस गदगी मे हाथ न डालने का आदेश दिया था, परन्तु जब सज्जन मडल के अनुभव लेकर बाबा जी की प्रेरणा और पुलिस की सहायता से इस व्यभिचार और बुर्दाफरोशी के अड्डे को मिटाने का निश्चय कर चुका तब उसने उसे सारा हाल सुनाया। पराया कष्ट सुनकर कर्नल तनिक मे ही पिघल जाने वाला प्राणी है, फौरन ही दौड-धूप के लिए तैयार हो गया। सज्जन अधिकारी वर्ग मे अनेक लोगो को जानता है परन्तु उसका परिचय इन लोगो से कर्नल के समान घनिष्ट नही। कर्नल सबको डालियाँ भेजता रहता है, मिलता-जुलता रहता है। सज्जन ने कर्नल से कहा—"सुपरिटेंडेंट पुलिस से इस सबध मे मिलो, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा।"

कर्नल बोला—"मै समझता हूँ कि तुम डाइरेक्ट मिनिस्टर से मिलो। तुम्हे मालूम नही बाज-बाज केसो मे सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस तक ऐसी कान्सपिरेसियो मे शामिल रहते है। मै तुम्हे वाकया बतलाऊँ। अलीगढ मे इसी तरह औरते बेचने का सेंटर था। उस साजिश मे पाँच डिप्टी सुपरिंटेडेन्ट पुलिस और एक एस० पी० शामिल थे। यू० पी० की सी० आई० डी० ने यह केस पकडा था।"

सज्जन सुनकर स्तभित रह गया। बोला—"सरकार ने इस पर क्या किया ?"

"सबके सब नौकरी से बर्खास्त हुए, और क्या ? खाली सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस को उन्होने बर्खास्त नही किया, उसका इस्तीफा ले लिया। इसीलिए कहता हूँ कि—"

सज्जन बात काट कर बोला—"देखो यार, मेरा अपना मत तो यह है कि अगर हम बजाय मिनिस्टर के इन्ही लोगो से काम निकाले तो ज्यादा अच्छा होगा। इनमे सब ऐसे ही हो यह मानने के लिए मै तैयार नही। यह सच है कि पुलिस मे गैर जिम्मेदार तबका बहुत ही ज्यादा है, पर सब ऐसे ही नही हो सकते। आखिर कही उन्हे अपनी प्रेस्टिज का भी तो ख्याल रहता है।"

"हाँ, खैर ये तो है। बडे अच्छे-अच्छे लोग भी होते है, मगर बहुत कम। पुलिस का महकमा ही ऐसा होता है जो आज की फिजाँ में अपने उद्देश्य से ठीक विपरित जाकर इसान को हैवान बना देता है।"

"फिर भी मैं समझता हूँ कि सीधे एस० पी० के पास ही चलो। हर काम में ऊपर से सहारा लेकर चलनेवाली नीती गलत है—खास तौर पर ऐसे कामो में। हमें व्यक्ति की सद्भावना का सहारा लेना ही चाहिए!"

कन्या को इस प्रसग मे अभी कोई जानकारी न थी।

आज धनवती देवी वैद्या शास्त्रिणी, प्रभाकर महान् कलाकार के लिए एक ऐसी 'प्रेरणा सामग्री' प्रस्तुत करने का वचन दे चुकी थी जो साधारणतया सबको सुलभ नही होती। साथ ही धनवती ने यह भी वचन दिया था कि वे उसे आज मडल मे अन्य स्त्री पुरुषो के जोडे भी दिखलाएँगी। धनवती देवी वैद्या सज्जन से अत्यधिक प्रभावित थी। इस सस्था मे रईस अनेक आते है, पढे-लिखे, कुछ वकील, बिजनेसमैन भी आते हैं। पर सज्जन ऐसा नामी-गिरामी, रईस पढा-लिखा, हसीन, चित्रकार इस मडल मे, धनवती के सपर्क मे कभी नही आया था। बातो मे तेज, औरत को अपने से डेढ हाथ दूर रखकर भी रिझाने-खिलाने का आदि, पुराना पापी सज्जन धनवती के मन मे सपने जगा-जगाकर ललचा रहा था। धनवती देवी वैद्या एक दिन मत्री महोदय के साथ सज्जन की महल-ऐसी कोठी देख भी गई थी। लालाशाही ढग के रईसो की हवेलियाँ तो धनवती ने अनेक बार देखी थी परन्तु यह ठाट-बाट, सुन्दर मूर्तियाँ, कीमती कालीने, उम्दा नक्काशी का सामान, भव्य चित्र, देश-विदेश की पुरानी कीमती क्यूरिओ की चीजे उसे किसी और रईस के यहाँ देखने को नही मिली थी। धनवती इन सबसे प्रभावित हो अनजाने ही सज्जन के षड्यन्त्र की सबसे बडी सहायिका बन गई थी।

सज्जन रोज के समय से कुछ पहले ही पहुँच गया था। धनवती ने उसके बैठने का प्रबध आज अपने निजी कमरे मे ही किया था। वह उसे बैठाकर चली गई।

सज्जन अकेले कमरे मे बैठा हुआ अनेक अच्छी-बुरी चिन्ताओ से उलझ रहा था। आज की परिस्थिति कुछ और थी। इच-इच पर गुप्त पुलिस का जाल फैला हुआ था। निश्चित समय पर सज्जन का सकेत पाकर पुलिस आज इस नरक का रहस्योद्घाटन करेगी। मत्री और धनवती वैद्या, जो सज्जन को अपना मित्र मानकर उसके सामने अपना असली रूप प्रकट कर चुके थे, वे आज सज्जन का असली रूप देखेगे। वह सीधी तौर पर धनवती से आज नजरे भी नही मिला पा रहा था। उसके अदर एक सकोच था।

सामने वाले कमरे में चलती हुई धर्म कक्षा का प्रवचन सज्जन के कानो मे पड रहा था। मत्री महोदय स्वय भागवत का पाठ सुनाते हुए कह रहे थे—"भागवत मे श्रीकृष्ण भगवान की चीरहरण लीला का बडा सुन्दर दृष्टान्त लिखा हुआ है। भगवान मुरली बजाते हुए सब गोपियो के कपडे उठाकर कदम्ब के वृक्ष पर चढ गए। गोपियाँ जल में नग्न खडी नहा रही थी "

धनवती वैद्या सज्जन का मन बहलाने के हेतु दो-तीन छोटी-छोटी पुस्तके दे गईं, साथ ही यह वचन भी कि वे थोडी देर बाद ही सज्जन को 'स्वर्गीय-दृश्य' दिखलायेंगी। पुस्तके बम की तरह विस्फोटक थी। काम-क्रीडा के ऐसे खुले वर्णनो वाली पुस्तके सज्जन पहले भी देख चुका था। अपने यात्राओ के भरे जीवन मे कई होटलो मे उसे ऐसा साहित्य पढने को मिला था। पर उसने अब तक केवल अँग्रेजी मे ही ऐसी किताबे देखी थी। आज हिंदी मे ऐसी पुस्तके देख कर उसे सहसा धक्का-सा लगा। हिंदी मे ऐसी किताबे देखकर उसे चोट क्यो लगी, यह बात उसकी समझ मे नही आई, फिर भी उसे बेहद अखरा। एक किताब के दो पृष्ठ पढते ही उसके खून में आग लग गई। उसने किताब बद कर दी।

धर्मकक्षा से मत्री महोदय का स्वर सुनाई पड रहा था। वे बडे प्रेम से भगवान श्रीकृष्ण चद्र का चीरहरण-वाला किस्सा सुना रहे थे। सज्जन का क्रोध उबल पडा। क्या भागवत में व्यास जी ने यह चीरहरण लीला इसी उद्देश्य से लिखी होगी, जिस उद्देश्य से मत्रिवर यहाँ सुना रहे हैं? कृष्ण जैसे विलासी आमतौर पर चित्रित किए जाते हैं यदि वे वैसे ही होते तो क्या सैकडो सदियो के बाद आज भी पूजे जाते? कृष्ण, राधा, गोपियो और समस्त ब्रज से सज्जन का एक निजी लगाव भी है। जबसे वह मथुरा-वृन्दावन-गोवर्धन आदि हो आया है तब से वह इन पौराणिक पात्रो से अपनापन-सा अनुभव करने लगा है। कृष्ण उसकी दृष्टि मे बहुत ऊचे उठ गये। वह सोचने लगा कि व्यास, जयदेव और दूसरे कवियो ने आखिर किस नीयत से आत्मा और परमात्मा का इस प्रकार गोपनीय काम-सबध चित्रित किया है? जगन्नाथपुरी और खजुराहो कडरिया महादेव के मदिर में सार्वजनिक पूज्य स्थानो मे काम-शास्त्र के आसनो के आधार पर बनाई गई नर-नारियों की मूर्तियाँ आखिर क्यो स्थापित की गई? ये गोपनीय अश्लील किताबें किस कारण से गैर-कानूनी मानी जाती है? उसी कारण से पुरी, खजुराहो आदि की मूर्तियाँ गैर-कानूनी मानी जाकर नष्ट क्यो नही की गईं? हजार-बारह सौ साल के अदर किसी को भी वे दृश्य इतने बुरे क्यो नही मालूम हुए कि वह इन मदिरो को ढा देता, मूर्तियो को नष्ट-भ्रष्ट कर देता? सज्जन ने जब पुरी अथवा खजुराहो की ये मूर्तियाँ देखी थी तब उनमे अकित विषय के प्रति एक गुदगुदी-सी महसूस करता हुआ भी वह उनके कलापक्ष से ही अधिक प्रभावित हुआ था। मूर्तियाँ इतनी सुन्दर और सजीव बनी हुई हैं कि उन्हे देखते ही बनता है। सज्जन ने सोचा, "खैर, मेरा तो इन्टरेस्ट दूसरा था, मगर औसत नजर वाले आदमी पर कला की वह सजीवता कैसा प्रभाव डालती होगी? माँ-बाप, बेटे-बेटी, बडे ही पवित्र और सदाचरणी जीव एक साथ वहाँ जाते हैं, यह चीरहरण, राधा-कृष्ण, गोपी-कृष्ण के विलासपूर्ण चित्र सब के सामने बडे प्रेम से गा-बजाकर प्रस्तुत किये जाते हैं—इसका आखिर कारण क्या है? महिपाल ने उसे अक्सर बतलाया है, और उसने भी कही-कही पढा है कि प्राचीन सस्कृत-साहित्य में, वालमीकीय रामायण आदि मे भी, काम सबधी वर्णन बडे खुले शब्दो मे किया गया है। इसका आखिर कारण क्या है? एक ओर तो हमारी नैतिक बुद्धि को काम-सबधी चर्चा से इतना सख्त परहेज है और दूसरी ओर इतना अधिक लगाव भी है। सच क्या है? स्त्री-पुरुष का शारीरिक सबध सच है, मगर समाज के इस अति श्रेष्ठ सबध को लेकर हर व्यक्ति की बुद्धि में एक जबरदस्त झकोला क्यो पडता है? एक ही जबान से हम इसे अच्छा और बुरा साथ-साथ कहते हैं। केवल भारत में ही नही सारी दुनिया में ये मजाक हर शख्स की जहनियत के साथ सदियो से अब तक होता चला आ रहा है—आखिर इसके अर्थ क्या हैं—क्या यह समस्या आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं से कम महत्वपूर्ण है? स्त्री-पुरुष के काम-सबधो की समस्या क्या अनेक राजनैतिक, आर्थिक समस्याओं की पृष्ठभूमि बन कर सामने नही आती?

बगाल के अकाल के दिनो में सज्जन कलकत्ते गया था। वहाँ अपने शौक के अड्डो के बारे में जानकारी बटोरते हुए उसे यह भी पता चला था कि अकाल क्षेत्र से खरीदी जाकर अनेक स्त्रियाँ बाबुओ का मनोरजन करने के लिए कलकत्ते लाई जाती थी। अनेक

रिक्शा वाले अँगूठे मे अटका अपना घुंघरू बजाकर 'ठुनठुन बाबू, ठुनठुन बाबू' की गुहार लगाते थे। जग-जाहिर वेश्याओ को छोडकर ये आबरूदार पेशेवरो के अड्डे क्या दुनिया में कम हैं ?—और क्या इनके पीछे आर्थिक समस्या नही है ? इतिहास में एक नही अनेक घटनाएँ ऐसी है जहाँ स्त्री-पुरुष का काम सबध राष्ट्रीय उलट-फेर करने के लिए बहाना बना है। भारत मे राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियो को फँसाने के लिए खूबसूरत लडकियो को उनके ठेठ बचपन से ही क्रमश: जहर चटा-चटा कर विष-कन्या बनाया जाता था। इन विष-कन्याओ को नाचने-गाने, पुरुषो को कलात्मक रीति से रिझाने की उत्तम से उत्तम शिक्षा दी जाती थी। इन विषकन्याओ का मुख-चुम्बन करने वाला, भोग करने वाला पुरुष इनकी देह के स्पर्श मात्र से ही मर जाता था। चाणक्य अपने अर्थशास्त्र मे ऐसी विष कन्याओ को तैयार करने की सलाह देता है। स्त्री-पुरुष का काम सबध क्या राजनीति में एक्सप्लायट नही किया गया ? सारी राजनीति, सारी अर्थनीति क्या भूख और काम-सबध से बँधी हुई नही ? फिर इस समस्या के सबध म बडा आन्दोलन क्यों नही मचाया जाता ? जिस तरह सन् तेतालिस में भुखमरी फैलने पर, बगालीजन खुलेआम सडको, मैदानो में आबरूदारी के पर्दे में छिप कर आए दिन भूखो मरने वाले करोडो-अरबो लोगो के प्रतीक बनकर जग जाहिर हो गये थे—भूख से सूख-सूख कर, तडप-तडप कर, पैर रगड-रगड कर मरने वाले वे शहीद उस तमाम राजनीतिक और अर्थनीति का भडाफोड कर रहे थे जो ऊँचे-ऊँचे आदर्शों का ढोल पीटकर पश्चिमी दुनिया के मैदानो मे बमो और टैंको से लड रही थी।

उसी तरह क्या विश्व की आधुनिक अर्थनीति स्त्रियो की अस्मत का खुला तमाशा दिखलाने के लिए सभ्यता और सस्कृति का प्रलयकर दुर्भिक्ष प्रस्तुत करेगी ? दुनिया में जिस दिन ऐसा दृश्य कही भी प्रस्तुत हुआ, उसी दिन सारी दुनिया ही मिट जायगी।

विचारो में केन्द्रीभूत सज्जन का मन पके फोडे की तरह चुभती टीस मारने लगा। धनवती वैद्या की हँसी उसे होश में लाई। अपनी छोटी कजी आँखो में गहरी कामुकता भरी छेड लिए धनवती ने कहा—"किसके ध्यान में डूबे थे विश्वामित्र जी ? आपकी मेनका आ गई।

सज्जन ने उत्सुक प्रेमी का अभिनय किया, परन्तु सहसा अपनी विचार-गम्भीरता के प्रभाव से छूट न सका।

सामने वाले कमरे में मत्री महोदय का गोपीकृष्ण सबधी प्रवचन चल रहा था। धनवती ने कमरे का बाहरवाला दरवाजा बद किया और सामने के एक दरवाजे पर धीमी दस्तक दी। सज्जन को अचानक 'चद्रकाता सतति' की तिलस्मी फिजा याद आ गई। हँसी आई, पर साथ ही इमारत को घेरे खडी हुई पुलिस का भी ध्यान आया। धनवती की उपस्थिति में पुलिस के ध्यान से उसका मन सकोच से भर गया। वह अपने को अपराधी अनुभव करने लगा।

दरवाजा अन्दर से खुल गया था। धनवती ने फिर उसे वैसी ही गहरी कामुक दृष्टि और मुस्कुराहट के साथ आमत्रित किया। सज्जन अपने उद्देश्य की गम्भीरता को इस समय अपने ही अदर उभरती हुई अपराध भावना के सकुचित दायरे में कसी-कसी-

सी अनुभव कर कुंठित हो रहा था ! और यह कुण्ठा चूँकि बेमौके की थी इसलिए उसे सनक से टाल रहा था। धनवती की कामभेद-भरी दृष्टि और मुस्कान मे उसे सनक भरी हँसी-गुदगुदी के साथ सडी ताडी की महक मिल रही थी, स्कॉच या शेम्पेन की नही।

अदर की सँकडी कोठरी मे अँधेरा था। जिस दरवाजे से सज्जन ने अदर प्रवेश किया था उसके ठीक सामने ही एक दूसरा बद दरवाजा था। सडक की तरफ वाली दीवाल मे ऊँचे पर बने रोशनदान से कोठरी मे हलका उजाला हो रहा था। बक्सो, कनस्टरो और मर्तबानो से लदी हुई टाँडो की पृष्ठभूमि मे एक दूधिया बिस्तर से सजी चारपाई बिछी थी, और चारपाई के किनारे एक छरहरे बदन की सुन्दरी खडी थी। सज्जन की सकुचाई, सहमी, सनक भरी दृष्टि जान-बूझ कर—हठपूर्वक—पल-दो-पल रुक कर ही उस पर पडी।

धनवती ने बिजली का स्विच दबाया। सज्जन के एक सकपकाए मन मे काम सौंदर्य का उजाला फैल गया। दो अपरिचित बडी मीनाकार, प्यासी, शरमाई आँखे आधी पलके उठाये उसे ताक रही थी। चिकन की सार्डी-ब्लाउज पहने, छरहरे सुडौल बदन, लम्बी पतली नाक, कत्थे की लकीर लिए पतले होठ, नोकीली ठोडी और मझोली पेशानी वाली गोरी की उम्र तीस-बत्तीस के लगभग होगी। उसकी नाक, बाईं ओर के पल्ले से निकलते हुए कान और गले के तनिक से खुले हुए भाग में मोती झलक रहे थे। दोनो हाथ पल्ले मे किए अपने आपको किसी हद तक समेटे बायें पैर का अँगूठा दबाये वह इस अदा से खडी थी कि सज्जन का कलाकार रीझ गया। क्या् अदा, क्या लोच, क्या नजाकत है ! युवती वाकई खूबसूरत थी, साथ ही एक नजर में यह भी साफ झलक रहा था कि वह किसी ऊँचे परिवार की थी और उसका पालन-पोषण अधिकतर पर्दे मे हुआ था उसके चेहरे पर एरिस्टोक्रेटिक अदा थी, वह 'महिला' लगती थी।

युवती के चेहरे पर टकटकी लगाये सज्जन के हाथ आप ही आप नमस्कार के लिए जुड गये। उधर से भी नाजुक, पतली, लम्बी, रँगे नाखूनो वाली उँगलियाँ पल्ले से बाहर निकल कर जुड गई, होठो पर मुस्कुराहट की लकीर खिच गई जो बडी सजीव, बडी आकर्षक थी।

धनवती (सज्जन की जहनियत मे इस समय 'ताडी की महक') ने दोनो पर नशीली दृष्टि फेक मुस्कराकर शेर का एक मिसरा कहा—"उल्फत का जब मजा है कि दोनो हो बेकरार। ह-ह, आइये-आइये कलाकार जी, जरा इनकी कला के जौहर भी देखिए।"

धनवती ने सज्जन का हाथ पकडकर उसे चारपाई की तरफ बढाया। 'ताडी की महक' का बुखार-सा गर्म स्पर्श, उसकी भद्दी बात सज्जन को अखरी। वह तुरत होश मे आ गया। बाहर पुलिस की गारद उसके इशारे के इतजार मे खडी थी।

समय की गति उस समय सज्जन को कमान से छूटे हुए तीर की तरह सनसनाती हुई लग रही थी। एक घृणित षड्यत्र का भडाफोड करने के लिए स्वय षड्यत्रकारी बना प्रेमी का ढोग किये, एक कुलीन गुप्त व्यभिचारिणी सुदरी के साथ, धनवती के जाने के बाद अकेले मे बैठा हुआ सज्जन अपने अन्तर्द्वन्द्व से अत्यधिक पीडा पा रहा था—'ये मैंने कौन-सा पाप मोल ले लिया ? छिनभर मे कितनी ही भद्र महिलाओ की इज्जत धूल मे मिल

जायगी। अपने घर के पुरुषो के सामने इन महिलाओ की क्या दशा होगी ? इनका सारा जीवन नष्ट हो जायगा। ये मैने क्या किया ? मैने बहुत बुरा किया।' अपने को बार-बार बुरा कहकर पीडित करते हुए वह अपनी पूर्व चेतना से भी साथ ही साथ परिचालित हो रहा था। वह एक सामाजिक गदगी का उद्‌घाटन कर रहा है, यह कोई बुरी बात नही। यदि ऐसा न होगा तो समाज बदलेगा कैसे ? सिद्धात के लिए निर्मोही भी होना पडता है।

सामने बैठी युवती अपनी बातो से उसे दूसरी दिशा मे भगाए लिए जाती थी। मन के भयकर ऊहापोह के साथ-साथ सज्जन को उससे सरस बाते करने को भी बाध्य होना पड रहा था, जिसके कारण वह बीच-बीच मे लडखडा भी जाता था। बीच मे एक बार धनवती मिठाई और चाय रखने के लिए आई थी। वह महिला एक बडे ठेकेदार महाजन और लोहे की फर्म के मालिक की पत्नी थी। उसने अपने पति का नाम, अपने घर का पता आदि कुछ न बतलाया। सज्जन के पूछने पर बडी चतुराई के साथ उसने इस प्रश्न को टाल दिया। हस कर कहा—"तोता मैना का किस्सा आपने सुना है न ? एक कही से उडकर आया, एक कही से। दोनो एक डाल पर बैठे थे और दोनो मे दोस्ती हो गई। यही बहुत काफी है।"

बातो के प्रसग में पूछे जाने पर उस महिला ने इतना जरूर बतलाया कि एक जगह उसका और उसके पति का मन नही मिलता। पत्नी अपने ढग से शृगारप्रिय है, रोमान्टिक है और कविता शेर-शायरी आदि से दिलचस्पी रखने वाली है। यद्यपि ऊँचे साहित्य से उसको विशेष लगाव नही, फिर भी वह रसिक है और उसका पति विशुद्ध व्यापारी, जिसके लिए स्त्री पुरुष का नाता देह भोग मात्र है। वह युवती कामेच्छा से अधिक पीडित रहने वाली न थी, उसे एक ऐसे साथी की भूख थी जो उसे बातो से, अपने हाव-भावों से, अपनी सरसता से उसे रिझा सके।

सज्जन ने उसकी बातो से यह अनुमान भी किया कि अपने पति के प्रति तीव्र घृणा होने के कारण ही वह अनजाने पुरुषो को अपनी देह समर्पित कर, मानो पति से गुप्त बदला लेती है। सज्जन ने सहसा एक बडा अटपटा सवाल उससे किया कि क्या वह विवाह के पहले ही इस प्रकार किसी अन्य पुरुष से खुल चुकी थी; और उसका जवाब उसे 'हाँ' में मिला। धनवती एक बार उसका इलाज करने के लिये बुलाई गई थी, तभी से दोनों का परिचय है। धनवती कुछ ही दिनो में उसकी परम सहेली बन गई। उसके अकेलेपन का भाव बहुत कुछ दूर हो गया। उससे सज्जन द्वारा पूछे जाने पर यह भी बतलाया कि अन्य पुरुषो के साथ इस तरह मिलने मे उसे कोई सकोच नही होता। अगर पुरुष ऐसे मिल सकते है तो स्त्रिया भी क्यो न मिले ? अपने ऐसे सबधो को, समाज में स्त्रियों का स्थान अरक्षित होने के कारण ही वह गुप्त रखना चाहती है—बस और कोई बात नही।

स्त्री आकर्षक होने पर भी दुराचारिणी है, अपनी बातो से मोहने वाली होकर भी कुटिल है और फिर भी अपने स्वभाव की मस्ती के कारण एक जगह वह सरल भी है। सज्जन उसका कुछ बुरा नही करना चाहता, यह उसने निश्चय कर लिया। उसने

अपना रहस्य युवती पर प्रकट कर दिया । युवती चौक उठी । परन्तु सज्जन ने उसे आश्वासन दिया कि वह किसी भी प्रकार उसका अपकार नही करेगा, यदि वह उसकी सलाह के अनुसार काम करे । सज्जन ने युवती को यह स्पष्ट ताकीद दी कि वह धनबती को यह रहस्य बतलाए बिना चुपचाप चली जाय ।

युवती के जाने के पन्द्रह मिनट बाद ही आसपास के बाजार, घरो और राह चलत आदमियो के लिए एक सनसनीखेज तहलका मच गया । दूसरे दिन अखबारो मे महिला-सेवा-मडल का भडाफोड पहले पृष्ठ का समाचार बनकर शहर के हर शख्स की जबान पर चर्चा का विषय बन गया । सज्जन वर्मा का नाम कला के क्षेत्र में इतने चामत्कारिक रूप से कभी प्रसिद्ध नही हुआ था जितना उस दिन इस घटना के कारण शहर में मशहूर हुआ ।

सज्जन के उदाहरण ने कुछ दिनो तक शहर म तरह-तरह के सामाजिक भडाफोडों की लहर दौडाई, अनेक युवक इस प्रकार हीरो बनकर यश लूटने के लिए काम करने लगे । न जाने कितनी तरह से समाज को ठगने वाली सस्थाओ के प्रति लोगो का ध्यान नये सिरे से जागा । गौओ के नाम पर, रामलीला, कीर्तन मडलो के नाम पर, अनेक सामाजिक ट्रस्टों के नाम पर लोग किस प्रकार धधा करते है, समाज में प्राय सबके द्वारा आए दिन की जानी-पहचानी यह बात सामूहिक रूप से एक नई चिंता का प्रश्न बनकर विचारशील लोगों के सामने आने लगी । मस्जिदो, शिवालो के कँगूरो से घिरी हुई, कीर्तनो, सत्यनारायण की कथाओ, मिलादशरीफ, भजनो, नातो से गूँजती हुई सभ्य आबरूदारो की आबादी अपनी तह मे कितनी बेबुनियाद और गदी है, यह भाव कइयो के मन में एक विचित्र प्रकार की अनास्था भरी सनक उत्पन्न करने लगा । जिन आस्थाओ को लेकर हम जीने-मरने का ढोंग करते हैं, वे आस्थाएँ कितनी अशक्त है, यह बात अनेक विचारशील व्यक्तियो के मन म चुभने लगी ।

४५

हनुमान जी के मदिर से अलग हटकर लाला मुकुदीमल चबूतरे पर बैठे हुक्का गुडगुडाते हुए तरकारी वाले से उलझ रहे थे । मदिर के पास एक बडी-बडी खिचडी मूँछो और कसरती देह वाले ब्राह्मण पालथी मारे रामचरित मानस का पाठ कर रहे थे—

नायि चरन सिरु कह कर जोरी ।
नाथ मोहि कछु नाहिं न खोरी ।।
अतिसय प्रबल देव तव माया ।
छूटइ राम करहु जो दाया ।।

"अबे, मुहल्ले में घुसना बद कर दूँगा। साले मुझसे हुज्जत करता है!!" लाला मुकुदीमल तरकारी वाले पर बडी जोर से भभक पडे।

"चार डबल सेर मेरी खरीद नही है लाला, मै कैसे दे दूं? बडे-बूढे होकर आप तो खामोखाँ मे उलझ रहे है!"

"देखो ससरे को, हमसे उलझ रहा हैगा। टके की जात ससुर। मुकरू! अरे हरिया! उठाओ इसका झौवा, नाली मे फेक देओ।"

"बिषय बस्य सुन नर मुनि स्वामो।
मै पामर पसु कपि अति कामी॥
नारि-नयन-सर जाहि न लागा।
घोर-क्रोध-तम निसि जो जागा॥
लोभ पास जेहि गर न बँधाया।
सो नर तुम समान रघुराया॥"

रामायणी जी, लाला मुकुदीमल और तरकारी वाले के बीच मे होते हुए लकाकाण्ड से तनिक भी प्रभावित न हो तन्मय स्वर में झूम-झूम कर रामायण का पाठ कर रहे थे। दो स्त्रियाँ आईं हनुमान जी पर फूल और शिव जी पर पानी और फूल चढाकर स्तुति और श्लोको के स्थान पर आपस मे किसी की मेहरिया और महतारी पर किसी के द्वारा होने वाले अत्याचारो की चर्चा करती हुई चली गईं। बाबू राधेश्याम तीसरी उँगली मे सिगरेट दबाए मुट्ठी मार कर कश खीचते हुए अखबार समेत दाखिल हुए। लाला जानकीसरन के मुनीम कुजीलाल बगल मे खाता दबाए कही जा रहे थे सो लाला मुकुदीमल की चिलम उठाकर दो फूंक मारने की लालच में खडे हो गए। जोर-जोर से चीखने के कारण लाला की खाँसी उभर आई थी। वे खाँसते हुए कुजीलाल से शिकायत कर रहे थे—"टके सेर ससुर बाजार मे मारे-मारे फिर रहे हैगे, हमने इकन्नी कही तो क्या बेजा कही? मुहल्ले में अब एका नही है कुजीलाल, नही तो साले को कभी यहाँ घुसने भी न दूं।"

सज्जन ने गली मे प्रवेश किया। बाबू राधेश्याम उसे देखते ही उत्साह भरे स्वर में बोले—"आइए, आइए, आजकल तो आपने खूब नाम पैदा किया है बाबू साहब! ह-ह-ह, ऐसा अच्छा भडाफोड किया महिला-मडल का, कि तबियत खुस हो गई। बैठिए-बैठिए!"

"अरे भई, कन्नोमल के पोते आए है?"

"जी हाँ, लाला जी प्रणाम करता हूँ!" सज्जन ने चबूतरे पर बैठने से पहले लाला मुकुदीमल को हाथ जोडे।

"खुस रहो भइया, तुमने तो बडे झडे गाड दिए।"

सज्जन अपनी प्रशसा से सकुचाया।

कुजीलाल मुनीम ने बर्छी की नोक सरीखी नजर साध कर एक बार सज्जन को देखा, फिर लाला जी से बोले—"उसमें हमारे एक जान-पहचानी लडका भी फँसा है। आबरूदार आदमी, बिचारे ने हजारो रुपय्या पुलिस को चटाया मगर—"

"कौन, कौन? किसका लडका फँसा?"

"अरे मँगतू अढतिया है। जित्ती बखत पुलिस आई रही उत्ती बखत उनका लडका भी वही रहा।"

"अच्छा है, जो जैसा करेगा वो वैसा पाएगा।" कहकर बाबू राधेश्याम ने तीसरी उँगली मे दबी सिगरेट का कश मारा।

"कहना आसान है बाबू जी, बाकी जिसकी इज्जत जाती हैगी उसके कलेजे से पूछिए! क्यो लाला, कुछ झूठ कहता हूँगा?" कुजीलाल मुनीम ने लाला मुकुदीमल से अपनी बात का समर्थन चाहा।

"हाँ, भइया, अपनी इज्जत बचाने के लिए तो आदमी सब कुछ करता हैगा। इज्जत गई तो लाख का घर खाक का! अरे सुकरुआ बे, पान दै जाना चार ठो!"

चबूतरे के सामने टीले के दाहिनी ओर अपने घर की तरफ आवाज फेककर लाला मुकुदीमल ने फिर हुक्के का नैचा सँभाला।

सज्जन बोला—"इज्जत की तो बात ही थी लाला जी, वहाँ एक की नही पूरे समाज की इज्जत जा रही थी।"

"आप सच कहते है बाबू साहब!" बाबू राधेश्याम ने कहा—"जो लोग समाज की इज्जत के साथ इस तरह खेलते है—"

"अरे, सब समाज की इज्जत ही है! तुम कल के लडके हो राधे स्याम, हमारा तो ये देखते-देखते जमाना गुजर गया।" कुजीलाल मुनीम बोले—"कहो तो तुम्हारे ही मुहल्ले-के अच्छे-अच्छे घरो की इज्जत का भडा फोड कर दूँ। बाकी नही, हम तो ये सोचते है कि जैसी अपनी इज्जत वैसी सबकी। अपनी धोती तले सभी नगे है। किसकी कहने जाऊँ?"

"इज्जत अब रही ही कहाँ भैया कुजीलाल, अब तो जमाना बेशरम हो गया है। यही पन्द्रह-बीस बरस पहले की सोचो, गरीब से गरीब होता था, वो चाहे घर मे भूखा सोय रहै पर अपने सगे-से-सगे के सामने भी दुखडा नही रोता था। कहो सच्ची बात है कि नही?"

"सच्ची है लाला!"

"और अब देख लेओ। चाहे लखपती होयँ चाहे गरीब होयँ, सब सबके सामने आज यही रोना रोते है कि आमदनी नही, खर्चा नही चलता। इसी से समझ लेओ कि जमाने मे अब इज्जत-आबरू रही नही गई। अपनी इज्जत अपने हाथ से उघाडना अब जमाने का फैशन है भैया, कोई क्या करे?" इतना मुकुदीमल बोले उसके बाद उनका हुक्का बोलने लगा।

कुजीलाल मुनीम कही जाने का विचार स्थगित कर चबूतरे पर बैठ गए। बोले—"पहले बडा सस्ता रहा लाला। तब लोग किसी हद तक गरीबी को बरदास कर लेते थे, इज्जत का डर बना रहता था, अरे हमारे बचपन मे पन्द्रा सेर का गेहूँ था, अठारह-बीस-पचीस सेर तक की दाले, डेढ सेर का घी, सोला सेर का दूध—भला बताओ तब सरग था कि नही? और अब तो वो इखबार में ठीकै छपा रहा कि जितनी औरते वहाँ पकडी गईं वो गरीबी के मारे बुरा काम करती थी। भला बताओ गरीबी बडी कि इज्जत बडी।"

कुजीलाल मुनीम की बात पर बात चढाकर बाबू राधेश्याम बोले—"आप कहना क्या चाहते है मुनीम जी ? कभी इज्जत को बखानते है कभी गरीबी को।"

"मै तो यह सब कुछ नही कहता, इज्जत की बात चली तो मैने कहा। जो बिचारी गरीबी की मारी किसी तरह लुक-छिपकर दो पैसे कमा लेती थी उन सबको जग जाहिर कर देना क्या इज्जत का काम है ?" कुजीलाल की लुढकती हुई बातो की चट्टान इस बार अनायास ही सज्जन पर ढह पडी। सज्जन ने नजर उठाकर मुनीम जी की ओर देखा।

बाबू राधेश्याम भी उसी तैश से बोले—"जी हाँ, समाज मे ऐसे-ऐसे पापो का भडा-फोड जरूर होना चाहिए। ये सब पैसे वालो की काली करतूते है। आपको जनाब बुरा यो लगा कि आपके किसी लखपती अढतिया का लडका पकडा गया और उनकी इज्जत चली गई। अजी, मै कहता हूँ ये पूँजीपत लोग अपने सुख-स्वारथ के लिए हर गदा से गदा काम करते है। नारी जाति को न छोडे, गऊ सेवा के नाम पर गऊ हत्या को न छोडे, रामलीला को न छोडे—ससुरो ने मुर्दो के कफन तक से तो कमाया है। इस समाज की इज्जत लूटने वाले राक्षस तो पूँजीपत लोग ही है जिनकी चाकरी करके कुजीलाल मुनीम ऐसे लोग—टुकडगधे ससरे बहकी-बहकी बाते करते है।" बाबू राधेश्याम का पारा हस्बमामूल पूँजीपति-आलोचना की कमद के सहारे जोशीले व्याख्यान के किले पर चढ गया। इतनी देर मे उनकी सिगरेट पर लम्बी राख जम गई थी, टुन्ना बच रहा था। बाबू राधेश्याम ने मुट्ठी झटक कर राख झाडी और उँगली-अँगूठे मे सिगरेट दबा आखिरी दो कश खीच कर फेक दिया।

सज्जन ने गली के सिरे पर महिपाल को आते हुए देखा। कुजीलाल मुनीम बाबू राधेश्याम की बात से ताव खाकर बगल मे अपना खाता दबा उठ खडे हुए और कुछ कहने ही वाले थे कि मुकुदीमल ने उनकी बाँह पकड कर उन्हे अपनी ओर झुकाते हुए धीरे से कहा—"किसके मुँह लगते होगे कुजीलाल, आजकल कमनिस्टी जमाना हैगा, लो ठहरो, पान खाते जाओ। अबे सुकरुआ बे ! पान नही लाया ससरे ! औ चिलम भी लै आना।"

बातो पर बाते, पुरानी स्मृतियो पर ठहाके, फलाने के बेटे और फलाने के भाई, दस-पचीस गए-गुजरे या आजकल के बूढो की जवानी और बचपन के जिक्रेखैर के बहाने पिछले सत्तर-अस्सी वर्ष के सामाजिक विकास की तस्वीरे बेतरतीबी से बखानी जाकर भी अपने लच्छेदार बहाव में क्रम से सज्जन और महिपाल की कल्पना मे आ रही थी। पुरानी बातो को कहने और सुनने का एक अजब नशा होता है। रामायणी भक्त न जाने कब चले गए, कितने राह चलते भक्त-भक्तिन आये-गये। कितनो से जैराम-जैहिन्द, अच्छे हो ? —हाँ, सब भगवान की दया है—आदि टुकडेबाजियाँ हुई, कुछ उस बैठक मे शामिल भी हो गए। नीम की दातुन से ब्रुश टुथ-पाउडर और पेस्ट तक, सुबह के नाश्ते में जलेबी-कचौडी से लेकर मक्खन-टोस्ट तक, पहनावे मे पगडी, अचकन, दुपट्टा, दुपल्ली चौगोशिया से लेकर अपटुडेट अँगरेजी फैशन तक अनेक और अनेक प्रकार की बाते हुई। सूरज देवता चबूतरा छोड दीवाल पर जा बिराजे। साढे तीन घटे मे मजलिस बर्खास्त हुई। महिपाल चबूतरे से उठ बजरगबली के सामने हाथ जोड, 'श्रीगुरु चरन सरोज रज', आदि

का पाठ कर, 'भोले मृत्युञ्जय हर-हर' उच्चार कर सज्जन की तरफ मुडा । सज्जन विचारमग्न था, उसने महिपाल को खोई नजरो से देखा । महिपाल उस दृष्टि का उत्तर न दे पाया, अभाव में मुस्कुरा दिया ।

सज्जन एकाएक घडी की ओर देख कर बोला—"बारह चालीस हो गये । मै इधर ताई से मिलने आया था, मगर ऐसी मजेदार बातो का समा बँधा कि कुछ भी ध्यान न रहा । फिर भी बहुत अच्छा वक्त गुजरा ।"

"हाँ, बहुत अच्छा गुजरा । बहुत दिनो बाद ऐसा आनन्द आया ।"

फिर पल भर का मौन आया । एक गाय गुजर रही थी जिसकी देह पर होली के रगीन निशान झलक रहे थे । दोनो की दृष्टि उस पर गई । फिर सज्जन ने पूछा—"इधर कैसे आये ?"

"यो ही । तुमसे मिलने की तबीयत हो आई ।"

"मै ताई के घर जा रहा हूँ । अगर किसी जल्दी में न हो तो साथ चलो ।"

महिपाल कुछ अनखनाया, बोला—"अब तुम जाओ । मैं चलता हूँ फिर ?"

सज्जन ने उसे गौर से देखा, फिर जोर देकर कहा—"अगर कोई काम न हो तो आओ । ताई ने बुलाया है, मिलकर फिर जहाँ कहोगे, चलेगे ।"

महिपाल राजी हो गया । दोनो 'गौशाला' की फटकिया की ओर चले । सज्जन को हवेली के इस भाग मे गुजारे हुए दिन याद आने लगे । शरणार्थी का षड्यत्र, ताई के जादू के पुतले, चोरो द्वारा की गई ताई की दुर्गत, कन्या का आना जाना, बडी-बोर का रोमास अचानक सज्जन पूछ बैठा—"क्यो जी, महाकवि बोर कहाँ हे ? बहुत दिनो से दिखलाई नही पडा ।"

महिपाल बोला—"मैने भी इधर देखा नही उसे । बडा घृणित व्यक्ति है ।"

"न जाने कितने होगे । कमजोरियो के लिए अब मुझे व्यक्तियो पर कम गुस्सा आता है । कमजोरियाँ समाज-व्यापी होती है ।"

"कमजोरियाँ ही क्यो, शक्ति भी समाजव्यापी होती है—"

सज्जन ने ताई के घर का कुण्डा खटखटाया । महिपाल बात अधूरी ही छोड कर रुक गया । अदर से ताई की आवाज आई—"अरे, कौन है निगोडा ।"

"गाली बिना तो किसी से बात ही नही करती ।" महिपाल से मुस्कुराते हुए कहा । सज्जन ने दरवाजे की ओर मुख कर जोर से उत्तर दिया—"मैं हूँ ताई जी, सज्जन ।"

"दुर्जन क्यो नही कहता बे ।"

'वह सिर्फ शील। कहती है ।"

महिपाल शीला का नाम सुनकर गभीर हो गया । उसी समय अदर से कुडी खटकी, दरवाजा खुला । कन्या खडी थी । उसने प्रसन्न दृष्टि से अपने पति को देखा, महिपाल को हाथ जोडे ।

"कहाँ रह गये थे इतनी देर ?" कन्या ने पति से पूछा ।

"यही चबूतरे पर था ।"

"जुआ खेल रहा था कन्या जी । पकडकर लाया हूँ ।" महिपाल ने कहा ।

कन्या हंसी, बोली—"तो आप भी वहाँ दावँ लगाने के लिए ही पहुँचे होगे ।"

"वो खाली गया, तभी तो शिकायत कर रहा है ।" सज्जन बरौठा पार करते हुए बोला ।

"बाबा जी आए है ।" कन्या ने कहा ।

"कहाँ है ?"

"ऊपर ।" कन्या ऊपर के जीने की ओर बढती हुई बोली ।

ऊपर चैत की धूप तमक रही थी । ताई सूरज की ओर पीठ किए बैठी थी और कृष्ण वर्ण, पुष्ट देह और लँगोटीधारी बाबा राम जी पालथी मारे उनके सामने विराजमान थे । दोनो को देख कर बाबा जी ने बडी ललक के साथ स्वागत किया । सज्जन के पैर छूते समय ताई उससे बोली—"क्यो रे, कहाँ रहा इत्ते दिनो ?"

"ताई जी—अ—काम कर रहा था ।"

"अरे, तो ऐसा भी कौन सा काम है निगोडा कि यहाँ आने की फुरसत ही नही ! बऊ के कारन, इसके हाल-चाल मिल जायँ थे बाबा जी, तो मन को सतोष रहे था । नईं तो—"

बाबा जी बोले—"नही रामभगतिन, इसकी तो हम भी गवाही देंगे, अगर तुम्हारी बहू यहाँ काम कर रही थी तो तुम्हारा बेटा भी बहुत बडा काम कर हा था ।"

"मेरी काए की बऊ ।"

"अरे, पर जब बेटा तुम्हारा है तो बहू तुम्हारी हुई कि नही ?"

"मैने तो इस कन्नोमल के पोते को सौ तोले के जेवर देने की कही थी, अपनी बिरादरी की अच्छी-अच्छी लडकियाँ भी बताईं—"

"पर रामभगतिन कुछ भी कह लो, अगर ये बेटा तुम्हारा है तो बहू भी तुम्हारी है । और गोरी-चिट्टी कितनी सुन्दर—और देखो कितना अच्छा सुभाव है इसका—घर में पती की सेवा करती है, यहाँ तुम्हारी सेवा करने आती है, इसकूल चलाती है, बुरी क्या है रामभगतिन ? तुम इससे क्यो अप्रसन्न हो ?"

ताई ने एक बार बनकन्या की ओर नजर उठाकर देखा, बोली—"हूँ, अच्छी तो है, पर इन्ने सुरू मे झूठ क्यो बोली मुझसे कि अपनी बिरादरी की ही है—"

सज्जन ने हँसकर कहा—"ताई जी जसोदा जी के डर से कृष्ण जी भी झूठ बोला करते थे तुम्हारे ।"

बनकन्या तथा बाबा जी खिलखिलाकर हँस पडे । महिपाल भी मुस्कुराया, और ताई के काले-काले डठल जैसे दाँत भी चमक उठे । बाबा जी ने कहा—"अब तो भाई रामभगतिनियाँ, तुम इसको कुछ नही कह सकती । तुम जसोदा माता हो और ये तुम्हारे कृस्न कन्हैया है । सो अब तो तुमको बहू को भी माफ करना पडेगा ।"

"अरे, माफ तो कर दिया । मै तो लाख इस कलमुंही को अपने चित्त से हटाने की कोसस करूँ हूँ पर ये सेवा ऐसी करे है कि क्या कहूँ ?"

"तो रामभगतिन तुम अपना सौ तोला सोना इसको दे डालो ।"

ताई ने इसका कोई उत्तर न दिया । महिपाल की ओर घूम कर देखा, सज्जन से पूछा—"ये कौन है ?"

"ये बडे भारी पडित है ताई जी ?" सज्जन ने चट से उत्तर दिया।

बाबा जी भी बोले—"बडे नामी विद्वान है रामभक्तिनिया।"

ताई ने चट महिपाल के आगे जमीन पर मत्था टेक कर प्रणाम किया फिर बोली—"धन्न भाग जो हमारे घर पधारे। तो क्या ये यही रहे है या बाहर से आए है ?"

"यही के है ताई जी, इन्होने बहुत सी किताबे लिखी है।" कन्या ने उत्साह भरे स्वर मे महिपाल का विशेष परिचय दिया।

"तो ये पडताई भी करते होगे ?"

"हाँ, ताई जी घर मे पूजा-पाठ तो करते ही है।" सज्जन ने कहा—"बाकी ये शादी-ब्याह नही करा पाते।"

"मै तो भैया ऐसा पडत चाहूँ हूँ जो बडी अच्छी तरह से ब्याह कराए भगवान जी का, क्यो बाबा जी ? न हो तो बनारस से किसी को बुलवा लेना। जो खर्चा लगेगा दूगी।"

"अच्छी बात है, इसका पृबध कर दूँगा रामभक्तिनिया।"

"हाँ, ब्याह तो बहुत अच्छा होना चाहिए, बाबा जी। जब मेरी सौत के पोते निगोडे के ब्याह मे इत्ती धूमधाम हुई तो भगवान जी के ब्याह मे बडी सोभा आनी चाहिए। और ये मरा कन्नोमल का पोता कान मे तेल डाले बैठा है। अब रही कित्ते दिन गए है, कल से बैसाख लगा मरा, पूनो को तो ब्याहई है। महीना भर रहा। न कोई चीज न तैयारी।"

"अरे रामभक्तिनिया, चीज-बस्त की फिकर मत करो। हमको तो बस एक आसरम बनवाय देना दहेज मे।" बाबा जी ने कहा।

"और ताई जी टीके मे क्या देगी ?" कन्या ने पूछा।

महिपाल बोला—"आजकल तो बडा-बडा सामान दिया जाता है, रेडियो, सोफासेट, घडी—"

"रामभक्तिनियाँ ये सब कुछ तुम देओगी हमको ? तो क्या क्रिस्न परमात्मा का ब्याह कराके तुम हमे कोट-पतलून पहनाओगी ?" बाबा जी की बात सुनकर सब लोग हँस पडे।

ताई बोली—"इसीलिए तो बुलाया है आज। टोक में देखो बाबा मेवे-मिठाई-फल तो आएँगे ही, पचास थालियाँ मैं तय कर चुकी हूँ।"

"अच्छा, खैर, वो तो हम घाट पर बाँट देगे, बाकी रुपया तुम नकद दै देओ। उससे हम आसरम के लिए जमीन खरीदेगे। तिलक मे जमीन और बिवाह मे आसरम बनवाने का खरचा।"

विवाह का समस्त प्रबध निश्चित किया गया। महिपाल की जल्दी के कारण सज्जन भी उठा। कन्याँ हवेली की ओर चली गई। उसकी पाठशाला अभी चल ही रही थी। अब कन्या की सहायता के लिए दो स्त्रियाँ और आ गई थी जो सिलाई-बुनाई, कसीदे और जरी का काम सिखलाती थी। कन्या की पाठशाला मे अब स्त्रिया भी काँफी आने लगी थी। ताई की हवेली मे सज्जन का स्टूडियो वाला कमरा अब उसके एक बुझे शौक का परिचायक मात्र ही रह गया था। इधर अरसे से सज्जन ने कोई खास चित्र नही बनाया और जो थोडा बहुत काम किया भी सो अपनी कोठी मे ही। आज सज्जन की कुछ तबीयत आई, परन्तु महिपाल बोला—"यहाँ स्त्रियो का हुल्लड रहेगा।"

"आओ राम जी, हमारे यहाँ चलो।" बाबा जी कन्या की पाठशाला मे घूम कर उसी समय वहाँ पहुँचे थे और उनकी बात सज्जन-महिपाल की बातो के क्रम मे एक निर्णयात्मक प्रस्ताव सी बैठ गई, यद्यपि महिपाल की इच्छा नही थी। बाबा जी बोले—"चलो न राम जी, दिव्य भाँग छनावैगे।"

सज्जन ने हँसकर कहा—"पर अभी तो मेरा भोजन भी नही हुआ बाबा जी, और मै समझता हूँ कि महिपाल भी—"

"हाँ, मै भी बस घर से नाश्ता करके ही चला था—"

"तब फिर आज फलाहार ही करौ। रस्ते मे कही से सब सामान लेते है और फल भी लिए लेते है, ढाई-तीन बजे के लगभग हमारे यहाँ घाट पर पडाइन दूध काढती है सो आज का दूध उससे सब लै लेगे। क्यो राम जी, क्या बिचार है?" बाबा जी ने महिपाल की पीठ पर हाथ रख कर पूछा और आगे बोले—"मतलब ये है कि हमारा बिचार था, आप दोनो महानुभाव मिल गए है तो कुछ उचित सलाह-मसौरा हुइ जाय। इतना रुपया मिलैगा तो उसका उपजोग कैसे होय? यही सब बिचार लें।"

महिपाल फिर निरुत्तर हो गया।

४६

बाबा जी के आश्रम से यह लोग जल्द ही लौट आए, महिपाल की ऐसी ही इच्छा थी। महिपाल ने आग्रह किया कि कपूर होटल में चलकर पान किया जाय। सज्जन मदिरा से अपना मन हटा चुका था। फिर भी वह महिपाल के साथ चलने को राजी हो गया।

महिपाल बोला—"मेरी समझ मे नही आता कि लोग एकाएक कैसे किसी चीज को छोड देते है।"

"क्यो? तुम तो आदर्शवादी लेखक को, अनेक बार अनेक चीजो के छोडने और अपनाने का उपदेश अपने साहित्य मे दे चुके हो।"

महिपाल को सज्जन का यह व्यग्य चुभा परन्तु वह कुछ देर तक मौन रहा, फिर कहा—"सोच लेना आसान है, करना बहुत कठिन है। क्या तुम अपने बारे मे खुद ऐसा नही कह सकते?"

सज्जन गभीर हो गया,, बोला—"हाँ और नही भी।"

"कैसे?"

"मेरा ख्याल है, मेरी निश्चयात्मक बुद्धि तुमसे अधिक है। आमतौर पर मन में एक निश्चय पर पहुँच जाने के बाद मै उसे अपनी लाइफ मे अपना लेता हूँ।"

"यह बात बताओ, तुमने जिस तडप और जिस उद्देश्य के साथ यह अपना मुहल्ला प्रयोग शुरू किया था उसे तुम्हारी निश्चयात्मक बुद्धि कहाँ तक बढा सकी?"

सज्जन चुप रहा, सोचता रहा, गाडी चलाता रहा। महिपाल ने उसे फिर उकेरा।

सज्जन बोला—"रोमास में खो गया दोस्त वरना शायद मैं अब तक बहुत कुछ कर पाता।"

"रोमास मे क्यो खोए ?"

"मेरे जीवन में अभाव था।"

"मेरे जीवन में भी बहुत से अभाव हैं। उनके कारण ही मैं भी हार-हार जाता हूँ।" महिपाल ने एक गहरी ठडी साँस खीच कर कहा।

फिर बहुत देर तक आपस मे बाते न हुई, दोनो ही अपने-अपने विचारो को लेकर मौन रहे। कपूर होटल में मैनेजर से कहकर उन्होने ऊपर के एक खाली कमरे मे बैठने का इतजाम किया। महिपाल बोला—"आज सुबह से मेरा मन बडा उद्विग्न है।"

"क्यो ?"

"लगता है मेरा अन्त काल निकट आ गया है।"

"पागल हो। कोई सपना देखा था क्या ?"

"हाँ।"

"उसी की वजह से बेकली है ?"

"हाँ।"

"सपने खाली दिमाग की उपज होते है।"

"हर वार ऐसा नही होता। और सपना तो एक सकेत है, मुझे लगता है कि मेरे अभाव मुझे ले डूबेंगे। अब उनसे लड नही पाता।"

"क्या सपना देखा था ?"

"सपना—यह देखा कि मै एक बहुत घिनौनी, फटे-चीथडे, टूटे मिट्टी के बर्तन, मवाद से सने हुए रूई के फाहे और पट्टियो से भरी एक तग गली से गुजर रहा हूँ।"

"और कोई भी दिखाई दिया ?"

"कोई नही अकेला मै ही।"

'फिर ?"

"चलते-चलते थक गया। इच्छा होने लगी इससे बाहर निकलूँ। लेकिन निकल न सका। सपने मे मेरी जो बेकली बढी उसका वर्णन मैं तुमसे कैसे करूँ सज्जन ? वह एक अनुभव था।"

"फिर ?"

"फिर मै एक नदी के किनारे पहुँच गया, एक नाव जा रही थी, आदमियो से भरी हुई। वे सब मुझे बुलाने लगे। नाव को किनारे लाए, मैं उस पर बैठ गया। बहुत से परिचित भी थे।"

"कौन-कौन ?"

"शीला, कल्याणी, कर्नल, मेरा एक ममेरा भाई, और भी न जाने कितने।"

"फिर ?"

"फिर बीच धार मे जाकर नाव उलट गई। सब लोग तैरने लगे, हरे-हरे पानी की तह मे बहुत से कगूरे, मीनारे ओर खँडहर चमक रहे थे। वे खँडहर मुझे खीचने लगे।"

"फिर ?"

"मैं अपने साथ बहुतो को खीच ले गया, लेकिन थोडी देर बाद और सब तो मेरी दृष्टि से ओझल हो गए, मैंने अपने को नदी के नीचे खँडहरो मे एक जजीर मे जकडा हुआ पाया। बहुत घुटा, बहुत तडपा मगर छूट न सका।"

"तुम्हारा किसी प्रकार का फ्रस्ट्रेशन है महिपाल, ये गदगी और खँडहर सब फ्रस्ट्रेशन के ही तो प्रतीक होते हैं। इन्हे एनालाइज कर लो। मौत का सवाल ही कहाँ उठता है ?"

महिपाल चुप रहा। सज्जन ने अपनी कॉफी खत्म कर सिगरेट सुलगाई, और महिपाल के सामने सिगरेट-केस रख दिया। नशे के सरूर मे कुछ देर तक टकटकी बाँधे सोचते रहने के बाद महिपाल बोला—"तुम से जी की एक बात कह दूँ, हलका हो जाऊँ मै तुमसे ईर्षा करता हूँ।"

सज्जन सुनकर मुस्कुराया, खामोश रहा।

"एक बात और कहूँ ? मै तुम्हे प्यार भी करता हूँ।"

"और कर्नल को ?"

"कर्नल देवता है। हम दोनो ही उसका मुकाबिला नही कर सकते। उसकी चेतना भले ही विकसित न हो पर वह दूसरे पर जान देना जानता है। एक बात और कह दूँ सज्जन ? जीवन मे कभी हारना मत।"

"हार-जीत अपने बस मे थोडे ही होती है महिपाल, परिस्थितियो के बस मे होती है।"

"वह कुछ भी हो। थक कर बैठ जाना ही सच्ची हार है। मै उसी की बात कहता हूँ। तुम जिस मिशन को लेकर चले हो उसे पूरा करना।"

महिपाल का यह मैत्रीपूर्ण आदेश सज्जन को बहुत छू गया। वह भावुक होकर बोला—"तुम साथ रहोगे तो हम हर मजिल को तय करेगे।"

"मैं अब अपने से बाहर नही निकल सकता। और अपने आपको समझ भी नही सकता, थक गया। आज से दस-पन्द्रह बरस पहले सोचता था, मै बहुत कुछ कर जाऊँगा, मै दुनिया को पलट दूँगा। ईश्वर ने मेरे सामने ही परीक्षा लाकर खडी कर दी। मैं अपने को ही न बदल पाया, दुनिया को क्या बदल पाऊँगा ?"

"हटाओ इस सब किस्से को।" सज्जन ने ऊब कर कहा, बोला—"आज सुबह तुम किसलिए आए थे ?"

"यो ही ! कहा न, मन अकेला हो गया था, साथ की जरूरत थी। सोचा कर्नल के पास जाऊँ, पर वह इन सब बातो को नही समझता। फिर सोचा . ." महिपाल कहते-कहते चुप हो गया और एक हल्की सी निसाँस छोड दी।

सज्जन ने उसे देखा, कहा—"तुम अपने और शीला के साथ ज्यादती कर रहे हो महिपाल। यह तुम्हारा सारा फ्रस्ट्रेशन उसी दिन से शुरू हुआ है जिस दिन से तुमने शीला के साथ अपना नाता तोडने की जिद की है।"

"उस बात को छोडो सज्जन। अच्छा हटाओ, इन बातो को।" महिपाल तन कर बैठ गया। गिलास हाथ मे ले स्कॉच के सुनहरे रग को गौर से देखता रहा।

सज्जन ने पूछा—"तुम्हारी भाँजी की शादी कब है ?"

"आषाढ मे, अमावस्या बाद नवमी को ।"

"कन्या और भाभी मे एक बात तय हुई है, शादी मेरे घर से होगी ।"

"हू ।"

"मैं बडा खुश हू इस निर्णय पर । कल रात हम लोग बातचीत कर रहे थे । जनवासे के लिए राजा साहब की छोटी कोठी खाली करवा लूँगा । मैंने सुना तुम्हारे यहाँ लडके वाले बेहद उजड्डपने के नखरे दिखाते है ।"

"दिखलाने दो सालो को !" महिपाल ने एक साथ दो घूंट चढाए ।

"अजी, मैं दिखलाने ही नही दूंगा । खातिरदारी से फ्लैट कर दूंगा तुम्हारे समधियो को । लेकिन लडका तो मैने सुना, बडा एडवान्स्ड है ।"

"हूँ ।"

"फिर भी यह सब जहालत होगी ।"

"कह नही सकता ।"

"अच्छा महिपाल, एक मजे की बात देखो, आज सुबह हम लोग कितनी बाते सुनते रहे, यह बाते साबित क्या करती हैं ?—सुधारक समाज आगे बढा, ये रिएक्शनरीज पीछे हटे, मगर इतना सब होने पर भी इन रिएक्शनरियो का—कूढमग्जो का आज तक बोल बाला है । ये क्या बात है ? '

महिपाल कुछ देर मौन रहा । सज्जन उत्तर की प्रतीक्षा मे उसकी ओर टकटकी लगाए देखता रहा, फिर आस लगाए हुए, निराश भिखारी की तरह उसने उस ओर से नजर घुमा ली और खिडकी की तरफ बाहर देखने लगा । महिपाल ने सिगरेट की राख ऐश-ट्रे में झाडी और बोला—"तुम्हारी बात का उत्तर मेरे पास है तो सज्जन मगर ईमानदारी की बात यह है कि मै अपने आपको कहने का अधिकारी नही मानता ।"

"क्यो ?"

"इसलिए कि मैंने उस पर अमल नही किया ।"

"फिर भी, तुम सोचते क्या हो ?"

"कहना व्यर्थ है । जीवन के अतिम दिनो मे अब झूठ नही बोलूंगा । और जितना झूठ मेरी चेतना म समाया है जब तक उसे प्रकट कर देने की सामर्थ्य अपने आप मे नही पाता तब तक सत्य का वर्णन करना मेरे लिए कोरा दम्भ ही होगा ।"

सज्जन झुंझला उठा, बोला—"महिपाल तुम्हारा यह पागलपन अब बोरियत फैला रहा है! एक सपना तुम्हारा दिमाग खराब कर दे इससे बढ कर शर्म की बात किसी भी पढे-लिखे आदमी के लिए नही हो सकती । मान लो तुम एक सत्य का पालन नही कर पाए मगर उसे प्रकट कर तुम किसी दूसरे को शक्ति तो दे सकते हो !"

"मेरे पास शक्ति ही नही, दगा कहाँ से ? तुमने मुहम्मद और गुड खाने वाले बच्चे की कहानी सुनी है न ? जब तक मुहम्मद गुड खाता है तब तक वह गुडखाने वाले बच्चे को न खाने के लिए उपदेश नही दे सकता । मगर खैर, यहाँ परिस्थिति दूसरी है, तुम पहले से ही गुड न खाने वाले मे से हो ।"

"रहस्यवादी मत बनो महिपाल !"

"रहस्य का प्रश्न नही । बात सीधी ही है, लेकिन कई हजार बरसो मे होने वाले अथक परिश्रम के बाद भी हिन्दुस्तान से उस बुराई की जडे नही उखाडी जा सकी । अब काफी हद तक छिटपुट प्रयोग तो होने लगे है मगर सामाजिक तौर पर उसका असर कतई नही हो सका । सुधार खुद तुमने भी किया है मगर सिर्फ तुमने ही किया है ।"

सज्जन एक प्रकार से हताश हो गया । महिपाल नशे मे है, अवसाद मे डूबा है । वह अपनी ही रौ मे बहेगा यह सोच कर वह उदासीन हो गया । तभी महिपाल ने अपनी बात की पहेली सुलझाई—"मेरा मतलब जाति भेद से है । जब तक हिदुस्तान मे यह जटिल जाति भेद रहेगा हम लाख सुधार करने पर भी समाज को 'मानव-समाज' के रूप में प्रतिष्ठित करने मे असमर्थ रहेगे ।"

"लेकिन अब तो जाति भेद काफी टूटने लगा है ।"

"सिविल लाइनो मे सज्जन, गली-मुहल्लो मे नही । सौ मे दो चार ऐसे केसेज हो गए तो उससे सामाजिक परिवर्तन नही आत ।"

"मगर अब पहले जैसा तीखा विरोध तो है नही ।" सज्जन ने कहा—"यानी हद हो गई जब मैने ताई जी को वर्मा और उसकी बीवी के लिए सदय पाया । कन्या के लिए भी उनके मन से विरोध निकल गया है । यह बात दूसरी है कि वे उसे अपना पानी का घडा न छूने दे ।"

"वर्मा या तुम्हारी पत्नी के लिए ताई का विरोध और जाति की रक्षा के लिए उनके द्वारा अपना खान-पान अलग रखने मे ही समाज की नब्ज बोलती है । कल्पना करो कि ताई तुम, वर्मा और तुम्हारी पत्नियाँ आज से पचास साल पहले पैदा हुए होते तब तुम लोग मर भी जाते तो ताई तुम्हारे प्रति सदय न होती । उस समय जाति से बाहर विवाह करना एक अकल्पनीय सी बात थी । और इसीलिए सामाजिक निष्ठा भी उसके लिए उतनी ही कठोर थी । अरे, पहले ताई ही तुम लोगो के लिए जादू के पुतले चलती रही । यह उसी पुरानी सामाजिक कठोरता का ही परिणाम था । आज चूँकि बढते हुए सुधार-आन्दोलन ने रूढिवादियो के किले काफी हद तक ढा दिए है इसलिए जमाना खामोशी के साथ तुम्हे स्वीकार तो कर लेता है मगर तुम्हारे सिद्धान्त को अब भी स्वीकार नही करता ।"

"यही तो । सवाल यह आता है कि नया जमाना नए सिद्धात को सार्वजनिक रूप से कैसे अपनाएगा ?"

"किसी प्रबल शक्तिशाली आन्दोलन से ! ऐसा आन्दोलन जो व्यापक रूप से जाति की कडियो को तोड सके !" महिपाल एक-एक शब्द सोच-सोचकर बोल रहा था—"और यह भी ध्यान रक्खो कि आन्दोलनकारियो को भारतवर्ष में कई बार होने वाले जाति विरोध की हिस्ट्री अपने ध्यान में रखनी होगी । यह जातिवाद किसी समय भारत की शक्ति और उसके बाद हमारे निरतर पतन का कारण रही है । आमतौर पर तुम किसी से जाति छोडने की बाबत कह देखो वह यही समझेगा, तुम उससे उसका हिंदू धर्म छुडा रहे हो ।'

बात खत्म हो गई, सज्जन गभीर होकर सोचने लगा। महिपाल भी अपने गिलास का पेय और प्लेट मे रक्खा कबाब खत्म करने की क्रिया मे मौन रहा। कुछ देर बाद दोनो ओर से सहसा एक साथ बोलने की इच्छा जागी। महिपाल अपनी बात कहते-कहते रुक गया, सज्जन से बोला—"कहो-कहो।"

"मै अपना जीवन इस समाज को बदलने मे लगा दूँगा। मै इसे बदल कर ही रहूँगा।" सज्जन के चेहरे पर दृढता थी, महिपाल उसे देखता रहा। एकाएक सज्जन को ध्यान आया कि महिपाल भी कुछ कहने जा रहा था। उसने महिपाल से कहा—"हाँ, कुछ कह रहे थे महिपाल ?"

"अँ ? ओह !" महिपाल हँसा—"मै कह रहा था कि रूपरतन ने मुझे कार देने का वादा किया है। सोचता हूँ शकुन्तला की शादी के बाद लूँगा वरना लडके वाले कही मोटर देख कर और दहेज न माँग बैठे !"

• •

थोडी देर बाद ही महिपाल और सज्जन अपने-अपनी राह चले गए। सज्जन ने बहुत चाहा कि वह महिपाल को उसके घर या जहाँ वह चाहे कार पर पहुँचा दे, पर महिपाल ने अपने अकेले डोलने के निश्चित् मूड मे साफ इनकार कर दिया। होटल के बरामदे के नीचे सडक पर सज्जन की छोटी फोर्ड कार खडी थी। जब सज्जन ने सहज भाव से उसे 'अपनी' कार मे छोड आने को कहा तो महिपाल 'अपनी' की ठसक मे चढ गया। उसे रूपरतन की छोटी 'फिएट' कार कल्पना मे 'अपनी' के रूप मे दिखलाई पडने लगी। रूपरतन ने उससे कहा था—'गुरू, तुम महान् लेखक हो इसलिए तुम्हारे पास गाडी होनी ही चाहिए।' महिपाल ने इस विचार को पसन्द किया पर आठ-दस हजार की गाडी खरीदना उसके लिए सभव न था, बेबहाने दान लेकर रूपरतन के प्रति कृतज्ञ अनुभव करना भी उसकी हेकडी को न सुहाया। रूपरतन ने ढाई-तीन हजार तक में अपनी छोटी गाडी बेचने का प्रस्ताव किया। महिपाल का मनुआ डोल गया। घर आकर उसने कल्याणी से उसकी चर्चा की थी। कार का नाम सुनते ही बडकऊ, छुटकऊ, रज्जो, तप्पू और उनकी मा आदि सभी का जी ललचने लगा। महिपाल ने यह डीग भी हाँकी कि रूपरतन उसे अगली किताबो की एडवान्स रायल्टी के रूप मे कार दे रहा है। इसके बाद तो कार का शीघ्र से शीघ्र घर आना घरवालो को परमावश्यक लगने लगा। बडकऊ ड्राइविंग सीखने की योजना बनाने लगे, कल्याणी कार के मासिक खर्च का हिसाब जोडने लगी। महिपाल ने कहा कि वह रूपरतन के प्रकाशन विभाग का काम घटा दो घटा नित्य देखने की एवज मे उससे गाडी का भत्ता ले लिया करेगा। इसके बाद तो कुछ सोचने की गुजाइश ही न रही। लडके मचलने लगे, परन्तु कल्याणी को शकुतला की शादी से पहले गाडी को घर लाने मे व्यावहारिक आपत्ति हुई। उसे भय था कि कार का वैभव देख कर लडके वाले किसी बहाने कुछ और रकम न माँग बैठें। महिपाल भी इस पर ठडा हो गया था। इस समय सज्जन की 'अपनी' पर महिपाल को 'अपनी' की धुन फिर चढ आई। उसके बार-बार इसरार करने पर भी महिपाल ने अकेले ही रिक्शे पर जाना तै किया। नशे के ज्वार मे उसे शाम के गुलजार हजरतगज का वैभव अपना-सा लगा। प्लाजा सिनेमा और उसके लम्बे छत्ते के उस पार

झाँकने वाले प्रिस सिनेमा तक नर-नारियो की चहल-पहल, सजी-बजी दूकानो के बरामदो में टहलती हुई सजी-बजी खुश्नुमा भीड, बसो, कारो, साइकिलो और रिक्शो की आवा-जाही से चारो ओर बिखरी हुई रौनक महिपाल के नशे की लाली को दुबाला कर रही थी। उसने एक तम्बोली के यहाँ पुराने बगला पान जमाये, सिगरेट का पैकेट और माचिस खरीद कर जेब मे डाली, दुकान के दर्पण मे अपने रौबीले नशीले नूर को निरखा और महाबीर जी के मदिर के सामने बीच सडक मे गुजरते हुए एक खाली रिक्शे को आवाज दी। रिक्शेवाला महिपाल की तरफ एक बार नजर डाल कर आगे बढ गया। महिपाल का रौब तिलमिला उठा। उसकी इच्छा हुई कि रिक्शेवाले को पकडकर उसे हटरो-हटर पीटे। नशे मे पैदल चलना उसे अटपटा और अखरने वाला महसूस हुआ, कार का मूड और एक अदना रिक्शेवाले का इस तरह लापरवाही दिखला कर चला जाना उसके रोब को उत्तेजना की खराद पर चढाने लगा। इच्छा हुई इसी समय जाकर वह रूपरतन से कार का सौदा कर ले। फलवालो की दुकानो के निकट पहुँचते-पहुँचते उसे एक और खाली रिक्शा दिखलाई दिया—'खाली है ?—नही बाबू जी।'—महिपाल का अपनी सवारी का हठ और तीव्र हुआ। रिक्शेवाले को तमाचा मारने और गाली देने की तडप भी तेज हुई मगर इतना होश उसे था कि वह ऐसा कुछ न कर गुजारे। सडक पार कर नरही के चौराहे पर पहुँच कर भी, रिक्शावालो के पुकारते रहने के बावजूद, बदला लेने की भावना से उसन ताँगा लिया। अब इधर-उधर डोलने की इच्छा विलीन हो गई थी, उसके सामने एक निश्चित् उद्देश्य था, उसे रूपरतन के यहाँ कार का सौदा करने जाना था।

ताँगे पर शान से अधलेटा हुआ महिपाल अपने आसपास जाती हुई कारो को देख कर इस समय क्षुब्ध नहीं हो रहा था। उसे इस समय तमाम कारवाले अपन मगोती लग रहे थे। इन्ही सडको पर एक दिन महिपाल की गाडी भी कही आगे-पीछे गुजरती हुई दिखलाई पडा करेगी और यह सामने से आती हुई छोटी गाडी मे जिस तरह आगे की सीट पर एक स्त्री-पुरुष बैठे है, जो सभवत पति-पत्नी ही होगे किसी दिन मैं भी कल्याणी के साथ इसी तरह विचार आते ही महिपाल को यह भी लगा कि कल्याणी के साथ सैर पर निकलते हुए उसे वाकई कोई मजा नही मिल सकता। कल्याणी दकियानूस है। अनेक बार वह और शीला कार पर बैठ कर गुजरे है। महिपाल को शीला की याद आने लगी। शीला ने उसका कोई अपराध नही किया। उस दिन सज्जन की कोठी पर शीला ने उसकी कितनी चिरौरी की थी। उसे यह भी लगा कि शीला के साथ सबध-विच्छेद कर वह बडा भारी अन्याय कर रहा है और इस विचार के साथ ही साथ उसे यह आशका भी हुई कि शीला के साथ सबध स्थापित होने पर समाज वाले यही समझेंगे कि यह सारा वैभव शीला का है। महिपाल बस इसी से विचलित हो उठता है। रूपरतन के साथ रहकर पैसा कमाने हुए यदि कोई उसे टोकता है तो इतना कुछ हर्ज नही है। अनेक लोग अनेक के साथ इस प्रकार का आर्थिक व्यावहारिक गठबधन करते है, परन्तु स्त्री के साथ रह कर उससे धन कमाने का कलक महिपाल को कभी अच्छा नही लग सकता। वह शीला से इसीलिए दुबारा सबध स्थापित नही करना चाहता।

ताँगा शान्त सडक पर दौड रहा था। महिपाल का मन शीला के प्रसग को लेकर विचलित हो रहा था। उसे लग रहा था कि मनुष्य के प्रेम से बढकर, वह जो इस प्रकार लौकिक वैभव को मान रहा है, वह अन्याय है। कार-बँगले, नोकर-चाकर और नाना प्रकार के आर्थिक वैभव मे सुख और शान भले ही हो परतु महत् भावनाओ और विचारो के आगे उनका कोई मूल्य नही। अपनी नौजवानी मे महिपाल ने न जाने कितनी बार सिद्धातो के लिए आर्थिक वैभव को ठुकराया है। उसने सिद्धातो के लिए ही अपनी ननिहाल का वैभव छोडा। रूपरतन से भी नाता तोडा, भाई के विवाह मे दहेज न लिया, भाई की उन्नति के लिए अपनी पत्नी के गहने तक बेच डालने में उसे कभी कोई मोह नही हुआ। वही महिपाल आज आर्थिक वैभव के लिए कौन-कौन महत् सिद्धातो का त्याग नही कर रहा? वह कितना पतित हो गया है! महीनो हो गए उसने एक अक्षर नही लिखा, केवल अपने घर में, अपने चारो ओर, हर तरफ लक्ष्मी का आडबर सजाने मे ही उसके दिन अधिकतर चले जाते है। उसका उपन्यास, जिसे आरभ करते हुए उसने सोचा था कि यह उसकी अनुपम रचना होगी, आज तक अधूरा ही पडा है। कई बार उसकी इच्छा भी हुई कि वह उसे लिखने बैठे, परतु अब उसकी कल्पना-शक्ति मानो रुई के रेशो की तरह बिखर गई है। और सज्जन क्रमश प्रसिद्धि के क्षेत्र मे आगे बढ रहा है। सज्जन ने हाल ही मे इतनी तेजी से ख्याति प्राप्त की है कि महिपाल उसका मुकाबिला नही कर पाता। महिपाल को इससे ईर्ष्या होती है परन्तु वह ईर्ष्या निकम्मी है। बढता हुआ समाज लोगो के ईर्ष्याग्रस्त विरोधो को कभी विशेष महत्व नहीं दिया करता। उसने कल जो लेख सज्जन के सामाजिक आन्दोलन का विरोध करते हुए लिखा था वह जाहिरा तौर पर बडा ही तर्क पूर्ण होने पर भी पूर्णतया अनुचित है। महिपाल ने लिखा था कि इस प्रकार सामाजिक गदगियो का उद्घाटन होते रहने से समाज मे केवल गदगी ही गदगी उभर आएगी। यह बात उसे इस समय भी बिलकुल सही जँचती है मगर इसके साथ ही साथ महिपाल यह भी जानता है कि सज्जन केवल गदगी का उद्घाटन करने की दृष्टि से ही काम नही कर रहा। वह इस समय बाबा राम जी की रचनात्मक वृत्ति मे प्रेरणा पा रहा है। कन्या का सहयोग भी उसके लिए विनाशक नही वरन् रचनात्मक ही है। और आज की बातो मे सज्जन का बोलता हुआ निश्चय, उसकी निष्कपट सिद्धातवादिता का परिचय उसे स्पष्ट रूप से मिला है। जहाँ सिद्धात निष्कपट रूप से आचरण मे लाया जाता है वहाँ विनाशात्मक बुद्धि काम नही करती। महिपाल अपने मन मे इस समय जितना ही अधिक स्पष्ट हुआ उतनी ही उसकी आत्मग्लानि भी बढी। वह कहाँ जा रहा है? किस दिशा की ओर जाते-जाते किधर मुड आया है? यह सब क्या हो रहा है, हे भगवान! बदलते हुए देश, काल और समाज में इस समय मोटर वाले महिपाल की आवश्यकता है या कलमधारी लेखक की? गोस्वामी तुलसीदास यदि आर्थिक वभव के चक्कर मे पडकर ही रह जाते तो आज उन्हे कौन याद करता? अकबर की मसबदारी पाकर तुलसी कभी 'तीन गाँठ कौपीन मैं बिन भाजी बिन लौन' न कह पाते! महिपाल ने न जाने दुख के कितने विषम क्षणो मे इस दोहे से सतोष-बल—आत्म-बल पाया है।—

तीन गाँठ कौपीन में बिन भाजी बिन लौन ।
तुलसी मन सतोष जो इन्द्र बापुरो कौन ॥

दीर्घ निश्वास छोडकर सज्जन स्फुट स्वर में बडबडाया । इस समय तुलसी का यह दोहा एक विगत उत्साह का शोक प्रस्ताव मात्र-सा उच्चरित हुआ । महिपाल अपने मन ही मन मे थका हुआ अनुभव कर रहा था । इस थकान में उसे बैंक में जमा अपने अडतीस हजार रुपए याद आए । वह रूपरतन के घर कार का सौदा करने जा रहा है "डैम समाज, डैम सिद्धात ! ऋण लेकर घी पियो ! सिद्धातो मे चार्वाक् का यह सिद्धात ही सर्वश्रेष्ठ है ।"

जैसे अपाहिज का मन चलता है उस प्रकार उसने अपने थके मन को चलाना चाहा पर वह चल न सका । वह चल नही सकता, फिलहाल उसे एक कार चाहिए, छोटा-सा बगला भी चाहिए । उसे वैभवपूर्ण आदान-प्रदान करने वाली दुनियादारी चाहिए । उसे तीन गाँठ कौपीन वाली अमरता न—ही चाहिए । सिद्धातवादी लेखक महिपाल शुक्ल उसकी चेतना मे इस समय स्पष्ट रूप से मृत दिखलाई पड रहा था । महिपाल मर गया, यह सोचकर उसका मन रोने लगा ।

ढाल पर दाहिने हाथ मुड कर ताँगे ने रूपरतन की कोठी मे प्रवेश किया ।

४७

ताई के यहाँ राधा जी के ब्याह की तैयारियाँ बडी धूमधाम से हो रही हैं । बाबा रामजी के कृष्ण भगवान ब्याहने आएँगे । दूर-दूर तक गलियो-मुहल्लो में राधाकृष्ण के विवाह की चर्चा से दैनिक जीवन मे मनोरजकता और नई स्फूर्ति आ गई है । हँस-हँस कर बडे उत्साह से लोग-बाग ताई के इस उत्सव-आयोजन की चर्चा करते हैं । यहाँ तक अफवाह फैली है कि इस विवाह में ताई का पचास हजार रुपया खर्च होगा । मैले-कुचैले कपडे पहने, सदा मनहूस-सी लगने वाली ताई, जिनके चारो ओर गालियो, कोसनो और जादू-टोनो का मायाजाल फैला रहता है, जिन्हे सुबह-शाम छेडकर बच्चे-बूढे-जवान सभी सुख पाते है, वह ताई पचास हजार की सम्पत्ति लुटा कर उत्सव मना रही है, यह समाचार बहुतो को ललचा भी रहा है । किस तरह, किस इतचाम के बहाने सौ-पचास रुपए हाथ लग जायँ, इसकी स्कीमे भी बनने लगी । मगर वहाँ किसी की दाल नही गल पाती थी । रुपए-पैसे का सारा प्रबध सज्जन के हाथ में था । अदर का काम-काज ताई की हम उम्र दो-तीन बुढियाँ सँभालती, कन्या, तारा और छोटी को रसोई या भडारघर का कोई काम नही मिला क्योंकि उनका धरम भ्रष्ट हो चुका है । फिर भी ताई ने कन्या को हिसाब-किताब , चीजो की देखभाल का भरपूर काम सौंप रक्खा है ।

पूरी हवेली ब्याह के काम-काज से जगर-मगर हो रही है । भट्ठियो पर हलवाई

मनो मिठाइयाँ तैयार कर रहे है। बरातियो को एक-एक धोती बिदाई मे मिलेगी, धोतियो के गट्ठर पर गट्ठर लदे चले आ रहे हैं। उन्हे भडारघर मे रखवाकर वहाँ की ताली ताई को सुपुर्द करने का काम वनकन्या को मिला है। ताई ने अपने समस्त रिश्तेदारो को आमन्त्रित किया है। अपनी सौत के घर भी उन्होंने बुलौवा भिजवाया था। राजा साहब को भी खास सज्जन की मार्फत कन्यादान करने का प्रस्ताव ताई ने भिजवाया था, परन्तु राजा साहब ने यह कहला कर अस्वीकार कर दिया कि अब वे माया-मोह त्याग चुके हैं, किसी लौकिक काम-काज मे शरीक नही हो सकते। ताई राधा जी का कन्यादान देना चाहती है, यह उनकी बडी साध है। यदि उनकी लडकी जीवित होती तो राजा साहब के साथ उन्होंने कन्यादान दिया होता। पर लडकी न सही राधा जी ही लडकी के समान है। भुवन-मोहिनी महामाया का कन्यादान करने से बडा पुण्य और क्या हो सकता है ? पर राजा साहब ने ताई का प्रस्ताव ठुकरा दिया। पति के बिना पत्नी कन्यादान कैसे दे पाएगी, यह विवशता ताई को व्यथित करने लगी—"न आवे निगोडा, मेरे किसी काम काज मे थोडे आवेगा। मेरे ही भाग से आज करोडपती हुआ है और रॉड निपूती मौत के कहे मे आकर मुझे ऐसे-ऐसे सतावे है। मेरी जैसी सती के सराप से " ताई कोई भयकर शाप देते-देते न जाने मन की किस अटक से बँध गईं। उनकी आँखो से क्रोध की ज्वाला के बजाय करुणा चू पडी, ताई आँखे पोछते हुए और कामो मे लग गईं।

राजा साहव इन दिनो अपनी एक सगमरमर की मूर्ति बनवा रहे है। सगमरमर खरीद कर रक्खा है, बागीचे मे ठीक बीचो-बीच वना फव्वारा तुडवा कर ऊँचा और बहुत बडा चबूतरा बनवा रहे है जिसके चारो कोनो पर सगमरमर की बुर्जियाँ बनेगी। राजा साहब की इच्छा है कि इस चबूतरे पर ही उनका अन्त्येष्ठि सस्कार हो। उसके उपरान्त उस जगह पर सगमर्मर का बडा भारी मडप बनेगा जिसमे राजा साहब की मूर्ति प्रतिष्ठित की जायगी। मडप का नक्शा बन चुका है, राजा साहब की वसीयत मे उसका खर्च भी जुड चुका है। मरने के बाद भी राजा साहब की महिमा फैली रहे यह उनकी हार्दिक इच्छा है। मरने के बाद भी उनकी देह ऐसी जगह न जलाई जाय जहा पर आमो-खास का शव-दाह होता है, इसी वास्ते उन्होंने अपने अन्त्येष्ठि सस्कार के लिए अपने बाग को चुना है और मायामोह से रहित होकर वे अपने मरणोत्तर वैभव की तैयारियो मे लगे रहते है।

तिलक की रस्म के दिन बडी भीड-भाड हुई। लाला मुकुदीमल के मकान के पास टीले पर महफिल का आयोजन हुआ। ताई की साध थी कि जैसे उनकी सौत के पोते के टीके पर बडी सजावट वाली महफिल हुई थी वैसी ही, बल्कि उससे भी ज्यादा शानदार महफिल उनके यहाँ हो। सज्जन की निगरानी मे बहुत ही सुन्दर मडप सजाया गया था। टीले के चारो ओर ताड की चटाई की चहारदीवारी और दक्षिणी मदिरो के गोपुरम् वाले तीन फाटक बनाए गए। अदर भगवान् का मडप क्या बना था, ऐसा लगता था मानो सपूर्ण ब्रजमडल उठाकर यहाँ ले आया गया है। एक ओर वृन्दावन के घाटो और मदिरो का मॉडल, उसके पास ही प्राचीन मथुरा का मॉडल था। दूसरी ओर गोकुल, नदगाँव

और बरसाना बनाया गया था। इनके पीछे गोवर्धन पर्वत, जिस पर कही मानसी गगा, कही राधा कुड, कृष्ण कुड, कही कुसुम-सरोवर आदि बने थे। बीच मे, गोवर्धन के ऊपर, बहुत सुन्दर मडप बनाकर उसमे श्रीकृष्ण भगवान् प्रतिष्ठित किए गए थे। सज्जन से इस विवाह के लिए आचार्य श्रीधर महापात्र ने राधा और कृष्ण की स्वर्ण-प्रतिमाये प्रस्तुत की थी। कृष्ण जी यहाँ विराजमान् थे, राधा ताई के घर मे थी। बिजली से नाचते हुए मोर, हिरन, बन्दर, मैदानो मे चरते हुए गायो के झुड, मथुरा-वृन्दावन आदि के निकट से होकर बहती हुई यमुना, पहाडी से बहते हुए झरने के दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम पड रहे थे।

झाँकी देखने के लिए हजारो की भीड टूट पडी। तिलक समारोह के बाद इस मडप मे अखड कीर्तन आरभ हुआ। नगर की सारी कीर्तन-मडलियाँ जुटी हुई थी। भीड इतनी बढी कि मडप और चहारदीवारी की रक्षा करने के लिए पुलिस बुलानी पडी।

बाबा जी समधी बने बैठे थे, उनके साथ घाट पर रहने वाले पडे, गोमती तट पर बैठने वाले अनेक अधे, लूले, फकीर, बैरागी, सन्यासी मगन मन बैठे पान चबाते हुए अपने आपको एक दिन के राजा के समान अनुभव कर रहे थे। सबके माथे पर केसरिया चदन लगा हुआ था, गले मे फूल-मालाएँ पडी हुई थी। ताई के घर से टीके का सामान आया—तीस थाल मिठाई, दस थाल मेवा, दस थाल फलो के, वर के लिए जडाऊ हार और अँगूठी, कपडे तथा एक हजार ग्यारह रुपये नकद। भगवान का टीका चढा।

फिर तो ब्याह की धूमधाम तेजी से बढने लगी। लडकी के यहाँ से मौली मे बँधी 'लगन' आई। पान, मिठाई, फल, नकद रुपया आया। फिर लडके लडकी का 'हलदात्' हुआ, 'तेल' चढा। बारात के दिन तो ऐसी भीड हुई कि दूर-दूर तक गलियाँ भर गईं। ताई की हवेली मे घुसने को भी जगह नही मिलती थी। शहनाई, पुलिस बैंड, मिलिटरी बैंड, हाहाकार बैन्ड, झाँकियो से सजे हुए तखत, किसी पर गगा जी, किसी पर यशोदा के द्वारे कृष्ण भगवान के दर्शनो की लालसा मे खडे हुए, शिवजी किसी पर माखन-चोरी लीला। झाँकियाँ बहुत ही सुन्दर सजाई गई थी। इन्हे सजाने के लिए मथुरा से एक कारीगर आया था। हस-विमान के रूप मे सजी हुई बिजलियो से जगमगाती मोटर पर वर श्रीकृष्ण की सवारी निकली। लोगो ने जगह-जगह आरतियाँ उतारी और ताई का यश बखाना। बारात के गलियो मे आने पर भगवान् मोटर से उतर कर गगा-जमुनी ताम-जाम पर बिराजे। अनेक घरो से भगवान के ऊपर पुष्प वर्षा की गई। बरसो से ऐसी बारात देखने मे नही आई थी।

ताई के घर इतना कोलाहल है कि किसी को किसी की बात नही सुनाई पडती। स्त्रियाँ इधर से उधर सामान लिए दौड रही है, स्त्रियो मे गोकुलद्वारे के दाढी वाले भितरिया जी भी मटकते हुए बार-बार दिखलाई पड जाते हैं। कन्या, तारा, छोटी भी व्यस्त दिखलाई पड रही हैं और ताई तो मानो बिजली की हो गई हैं। उनकी सूखी देह में जाने कहाँ से इतना बल आ गया है कि बडी-बडी परातें उठाकर दौड पडती हैं। ताई पूजाघर की टाँड पर रक्खी दो डलियाँ उतारने गई थी। दूसरी टाँड से बिल्ली कूदी। ताई अचक रह गईं—"मरे, तू यहाँ कब से बन्द था ?"

ताई के किसुनचद जाने कब से पूजाघर की कोठरी मे बद हो गए थे। ताई के पैरो मे अपदा सिर रगड कर मद खुशामदी म्याऊ करता हुआ ताई का पोष्य-पुत्र किसुन उनकी सारी हडबडाहट और तेजी को बॉधने लगा। उनका एक डग हटना उसने भारू कर दिया। जिधर जाय उधर ताई के पैरो से अटके। डलियॉ निकाल कर ताई बाहर आईं। किसुन उनके साथ ही साथ म्याऊ-म्याऊँ करता हु›ा आया। सामने भितरिया जी दिखलाई पडे। ताई ने उनसे कहा—"ए भितरिया जी, किसी से दूध तो मॉग लाओ तनक-सा। ये किसुन मेरा पीछा नही छोडेगा रॅड का! काम-काज का बखत सत्यानासिया कही का! अरे निगोडी लाई नही अभी तलक?"

तभी कीर्तनिया जी ताई की दी हुई उजली धोती और बगल बदी पहने कही से उधर आए। अपनी बडी-बडी रसलीन अखो से ताई और बिल्ली के बच्चे को देखते हुए बोले —"ताई, तिहारे किसुन कन्हाई सॉचे हैं। बडे भाग जो आज जसोदा और भगवान् के साथ-साथ दरसन पाए।" भक्ति के आवेश मे कीर्तनिया जी ताई के चरणो मे लोट गए। ताई अपनी धुन मे थी। अचानक कीर्तनिया जी के इस प्रकार लेट कर प्रणाम करने से वे चिहुँक उठी—"आ मर निगोडा, कौन कीर्तनिया जी! तुम्हे भी इसी बखत भगती-भाव सूझा था मरा? लडकी का ब्या, हजारो झझट मरे! हटो यहॉ से! लो, इसे लिए बैठे रहो। भितरिया दूध लेके आवे है, पिला दीजो।"

विवाह-मडप में मुहल्ले के और अन्य प्रतिष्ठित सज्जन बैठे थे—पण्डित शिवनाथ शास्त्री, लाला मुकुदीमल, बाबू गुलाबचद, लाले दलाल, भभूती सुनार, वर्मा, राधे श्याम, लाला जानकीसरन, महिपाल, कर्नल, सेठ रूपरतन, ताई की सौत के बडे बेटे गिरधर दास आदि। गिरधर दास बार-बार बाबा राम जी को देख रहे थे। उन्होने सुना था कि साधू ने दहेज के तौर पर ताई से बीस हजार रुपए पाए हैं। इसीलिए उन्हे साधु से नफरत हो रही थी। पास बैठे जानकीसरन से पूछा—"कौन है यह बाबा?"

"पागलो-वागलो का इलाज करते हैं।"

"ये बीस हजार रुपयो का क्या करेगा?"

लाला जानकीसरन मुस्कुराए, बोले—"बुढापे मे बाबा जी की किस्मत खुली है, अब लँगोटी छोडकर रेशमी गेरुआ पहनेगे, मठ बनाएँगे, मजे से मालपुए चाभेंगे—क्यो? तुम्हे बुरा लग रहा है क्या?"

लाला गिरधरदास झेप गए। कुछ क्षण रुक कर बोले—"कितनी बार बाबू जी से कहा कि बडी अम्मा का खर्च कम कर दीजिये। तीस रुपए से ज्यादा उनको जरूरत नही—"

"अरे, उतना तो इनके यहॉ किराए से ही निकल आता है।" लाला जानकीसरन बोले।

"बाबू जी सुनते ही नही मै क्या करूँ? अब देखिए न, यह पानी की तरह से पैसा बहाया जा रहा है हमारा। बन्दा जोडे पली पली, मेहमान उडावे कुप्पा! और यह सज्जन की कारसाजी है! न जाने कैसे इसने बडी अम्मा को अपने बस में कर लिया

है ।" लाला गिरधरदास ने ठडी सास छोडकर तमाम चहल-पहल भरे मजमे पर एक खाली-सी नजर डाली ।

जानकीसरन बोले—"जब मुहल्ले वालो ने इसकी कोठरी पर हमला किया था तब देखते ताई का रूप! जलती लकडी लेकर सब पर टूटी थी । सब पर ही जादू-टोना भी फेंका था । यह सज्जन तुम्हारी कोठी ताई से हथिया लेगा भैया ।"

"हुँ, इनकी हस्ती ही क्या है । और अब इनके पास धरा ही क्या होगा, ज्यादा से ज्यादा छह-सात लाख की हैसियत होगी । जमीदारी चली ही गई, बिजनेस यह कर ही नही सकते, आर्टिस्ट आदमी है । तीन-साढे तीन लाख की जायदाद है, उसी का किराया खाते है । इसके अलावा कुछ नकद, कुछ जवाहरात, कुछ क्यूरियो का सामान । हवेली पर नजर डालेगे तो पच्चीस मुकदमो मे फसा दूँगा । दस बरस में बेटा नखास के फुटपाथ पर अपना क्यूरियो का सामान ही बेचते नजर आएँगे ।" गिरधरदास की आँखो मे तनाव आ गया ।

जानकीसरन बोले—"नही भैया, इसकी नौबत नही आयगी । वैसे बडा घाघ है ये लडका । आजकल नेता बन रहा है, चार दिनो मे पावरफुल हो जायगा । तुम्हारी हवेली पर उसकी नीयत कभी नही डोल सकती ।"

"अजी और क्या डोलेगी? उसकी बीबी ने यहाँ स्कूल खोल ही रक्खा है । आप सब की बेइज्जती करवा के उसने यहा नुमाइश भी की । अब यह बाबा का फँसाव फाँसा है । देख लीजिएगा यह मिठबोला बनकर यही बैठे-बैठे जिसकी इज्जत चाहेगा धूल मे मिला देगा ।"

महिपाल और कर्नल जरा दूर बैठे हुए बातो मे मशगूल थे । महिपाल रूपरतन से छोटी मोटर खरीद चुका है । आज पहली बार वह अपनी ही गाडी पर यहा आया है । महिपाल और कर्नल उसी को लेकर चर्चा कर रहे है । सज्जन काम-काज मे फँसा हुआ चारो ओर दौड रहा था ।

बेटी की बिदा का क्षण आया । गठजोडे से वर-वधू बिदा होगे । औरते गीत गाने लगी । भारी धूमधाम वाले ब्याह का अति व्यस्त क्षण ताई के लिए स्तब्ध हो गया । राधा जी की मूर्ति उठाकर उन्होने अपने हाथ मे ली । बेटी—जो बिदा हो रही है—नन्ही-सी है । ताई की बेटी—जो उनकी स्मृति मे है—नन्ही सी ही थी । ताई की बेटी—राधा जी बेटी—बेटी बिदा हो रही है ताई ने बेटी को कलेजे से लगा लिया । उन्हे मूर्च्छा आ गई । कोलाहल मच गया, पानी-पखे के उपचार हुए । बाबा जी, सज्जन, कन्या ताई की सेवा करने लगे । ताई होश मे आई, चारो ओर देख सूखी हड्डियो का बल एक बार फिर सतेज कर उठ बैठी । फिर से बिदाई की चहल-पहल आरम्भ हुई । बाहर खासतौर पर इस अवसर के लिए बनवाये गये, रथ पर वर-वधू का सिहासन रक्खा गया । शख-घटे, घडियाल बजे, राधाकृष्ण की जय से गली गूँज गई । बिदा होती हुई बहन से ताई ने भाइयो को टीके लगाये । सबसे पहले ताई ने पडित से सज्जन को टीका लगवाया, फिर अपने कुछ अन्य सबधियो को । रथ चला । स्त्रियो के गीत चलते रहे । ताई बिदा होते हुए रथ को एक पलक देखती रही, आँखो मे आँसू छलके, फिर फूट पडी । उन्हें फिर दुबारा गश आ गया ।

गलियो मे सफेद घोडा जुते सुन्दर सजे हुए रथ मे वर-वधू की सवारी जनता मे अपार उत्साह, कौतूहल और श्रद्धा की लहरे उठारही थी।

ताई के घर ब्याह की चहल-पहल बीती कहानी बन गई। बाबा जी को ताई से लगभग बीस-पचीस हजार का सामान मिला था जो कर्नल के पास जमा किया गया था। एक दिन ताई की हवेली मे बैठ कर बाबा राम जी, सज्जन, कर्नल और कन्या इसी रुपए का उपयोग करने के लिए विचार-विमर्श कर रहे थे। विवाह के पहले यह तय हुआ था कि ताई से जो रकम मिलेगी उससे बाबा जी के पागलखाने को पक्की इमारते दे दी जायँगी और जो स्त्रियाँ पापाचार से बचाई गई है उनकी सुचारु रूप से रक्षा का प्रबध किया जायगा। परतु अब बाबा जी का विचार बदल गया था। वे बोले—"अब हम नगर मे नही रहना चाहते राम जी, हमारा विचार है ग वो मे जाकर दीन-दुखियो की सेवा करे। हमे किसी ऐसे गॉव मे अस्थान चाहिए जहाँ सवारी आदि का समुचित प्रिबध, न हो पाने के कारण किसी प्रिकार की सहायता नही पहुँच सकती। हम वहाँ रोगियो, पागलो की सेवा भी करेगे और एक ऐसा अस्कूल भी खोलेगे जिसमे ग वो की कन्याओ को समुचित सिच्छा मिल सके।"

सज्जन बोला—"तो क्या यहॅ की सारी स्कीम फेल कर रहे है आप ?"

"हम काहे फेल या पास करेगे राम जी, यहाँ धन की कमी नही है। स्वय आप बिना किसी से माँगे यहाँ का कारोबार चलाय सकते है।"

सज्जन एक क्षण के लिए गभीर हुआ, फिर कहा—"पैसे के मोह से अब मै निस्सदेह उबर चुका हूँ बाबा जी, फिर भी सहसा सारी सम्पत्तिदान करने लायक बल अभी नही पा सका।"

"आप कितनी रकम प्रिसन्नतापूर्वक दान कर सकते है ?"

"तीन लाख।" कर्नल और कन्या सज्जन के मुँह की तरफ देखने लगे।

बाबा जी बोले—"बहुत है ! इतने धन से जदि आप लोग उचित प्रिबध करे तो बहुत बडा आयोजन फैला सकते है।"

"परतु करे क्या ? दीन-दुखियो को बैठा कर खिलाने के लिए तीन लाख रुपया—"

"बैठा कर खिलाना हमारे सिद्धात के बिरुद्ध है राम जी। ड्यूटी करैं औ पेट भर भोजन पावै, इसके लिए उद्योग कीजिए।"

"ऐसा उद्योग बडा कठिन है बाबा जी, छिमा कीजिएगा।" कर्नल ने अदब से टोका।

"बेटा, आरभ में कोई काम सरल नही होता। अभ्यास करते-करते ही प्रत्येक कार्ज सरल हो जाता है।"

"सो तो ठीक है बाबा जी, पर अब जमाने का हाल भी तो देखिए, आसरम-फासरम में अब किसी का बिसवास नही रहा। लोग चाहते है कि वे अधिक से अधिक पैसा और सुख पा जायँ किसी तरह से।"—कर्नल ने उत्तर दिया।

"तब निकम्मे को तो पैसा मिल नही सकता राम जी। जो काम करेगा वो पैसा भी पाएगा। आप भी ऐसा ही आसरम खोलिए। इस सब्द से लोगो को चिढ हो तो कोपरेटिव,

सहकारी सघ, कपनी जो चाहे सो नाम दीजिए । हमें नाम से नहीं काम से मतलब है । देखिए इस लडकी ने धीरे-धीरे करके मुहल्ले की ये पाठसाला जमा ही ली है । आप अधिक-से-अधिक ऐसी पाठसालाएँ खोल लीजिए । लडकियो-स्त्रियो को दस हुनर के काम सिखाइए और उनके काम को बाजार मे बेचिए । हम तो ग वो मे भी यही करेंगे राम जी । निर्धन पबलिक को धन मिलना चाहिए । सहर और गाँव दोनो ही इस दृष्टि से भूखे है । इन दोनो को ही एक आर्थिक इस्तर पर क्रमश लै आइए ।"

"पर अभी तो यह असभव लगता है ।" कन्या बोली—"शहर के आकर्षण अधिक है, आवश्यकताएँ अधिक है, यहाँ पैसा भी अधिक चाहिए ।"

"आबस्यकताएं तो इतनी अधिक नही जितन आकर्पण अधिक है बेटी । खैर, हम इस पर बिबाद नही करते । हम तो आप ही ग व के लिए बीस-पच्चीस हजार रुपया और सहर के लिए तीन लाख रुपया दिए जा रहे है । इन तीन लाख मे आप जदि कुटीर उद्योग बढाय कर नगर के पुरुषो को महाजिन्दो की फॉसी और बेईमानियो से बचा सके, तथा स्त्रियो को अपनी आर्थिक आवस्यकता की पूर्ति के लिए महिलास्रम जैसी सस्थाओ से बचाने के साथ-साथ उनका नैतिक अस्तर ऊँचा कर सके तो बहुत बडा काम हो जायगा राम जी । और एक अन्तिम बात और निवेदन करता हूँ, यह कभी न भूलिएगा कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रग बदल देता है । एक बार सगठित होकर आप जैसी हवा बहाय देगे वैसा ही समाज पर प्रिभाव पडैगा ।"

एकान्त मे बाबा राम जी ने सज्जन से कहा—"आप से एक प्रार्थना है राम जी ।"

"आज्ञा बाबा जी, आप मेरे गुरू है ।"

"तब दक्छिणा माँगू ?"

सज्जन हिचक गया । बाबा जी स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेर कर मुस्कुराये, कहा—"इसीलिए प्रार्थना करता हूँ । पूर्ण ब्रह्मचर्ज जदि न भी पाल सकै तौ भी वहुत अधिक सजम से काम लीजियेगा । मनुस्य का बीर्ज दिमाग की भट्ठी का ईधन है, यह न भूलिये । जदि किसी काम मे लगन लगाई है तो उसे पूरा करने के लिए अपनी सक्तियाँ भी सचित कीजिये ।"

सज्जन सिर झुका कर बोला—"प्रयत्न करूँगा ।"

"राम जी खरा समाजबादी वही है जो दूसरो के लिए जियै—जियै और जीने देय ।"

"निश्चय ही मै समय के साथ चलूँगा । आपने मुझे सुगतिशीलता मे गहरी आस्था दी है ।" कह कर सज्जन ने बाबा जी के चरणो मे श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया ।

सज्जन क्रमश व्यस्त होता गया। उसने अपने तीन लाख रुपयो का ट्रस्ट कायम कर दिया। ट्रस्ट की रजिस्ट्री भी हो गई। कर्नल, वनकन्या, चीफ कोर्ट के एक रिटायर्ड जज, एक प्रमुख सरकारी अफसर और वह स्वय ट्रस्ट के मेम्बर बने। अपनी योजना मे सबसे पहले सज्जन ने एक सहकारी बैक की स्थापना की। उसकी यह निश्चित् धारणा थी कि नगर के प्रत्येक वार्ड का एक अपना बैक होना चाहिये जिसमे वहाँ की ही पूँजी लगे और उसके द्वारा उस क्षेत्र के सार्वजनिक हित के लिए उद्योग-धन्धे खोले जायँ। सज्जन के मुनीमजी तथा एक रिटायर्ड बैक मैनेजर उसकी योजना को कार्यान्वित करने के लिए नियुक्त किए गए।

जिस दिन इस बैक की स्थापना के लिए सज्जन ने वार्ड के धनी पुरुषो, प्रमुख डॉक्टरो, वकीलो, अध्यापको एव सामाजिक कार्यकर्ताओ की सभा बुलाई थी उसी दिन से लाला जानकीसरन सज्जन के खुले विरोधी हो गए थे। अन्य कई महाजन भी इसका विरोध कर रहे थे। यह सहकारी बैक मध्य वर्ग को ऋण-मुक्त करने का नारा लगा कर बढना चाहता था। आज का शहरो मे रहने वाला मध्य वर्ग प्राय ८५ प्रतिशत महाजनो के अधीन है। शादी-व्याह, जनेऊ, मुडन, रोग सभी तो जीवन को घेरे है, सबके लिए पैसा चाहिये। छोटी आमदनी वाले मध्य वर्ग को पैसे के लिए महाजन चाहिये और महाजन को जमानत के लिए सोना चाहिये। मध्य वर्ग के अधिकाश घरो का सोना खिच कर महाजनो की तिजोरी मे पहुच चुका है, जो वहाँ से उनका होकर कभी बाहर न निकलेगा। कर्ज के दलदल मे नाक तक डूबा हुआ मध्य वर्ग अपने महाजनो के कभी न चुकने वाले ऋण, कभी न खत्म होने वाले तकाजे और कभी न खत्म होने वाले जीवन के व्यापारो से ऊब कर वेशर्म, चिडचिडा, शिकायती और निकम्मा होता जा रहा है। सज्जन उन्हे मुक्त करना चाहता है। यह बात महाजनो को किसी प्रकार भी नही रुचती थी। वनकन्या ने सभा मे उनके विरोधो से उत्तेजित होकर बडी 'लाल' स्पीच दे डाली। लाला जानकीसरन और उनके साथ ही कई 'गण्यमान्य' महानुभाव उठ कर चले गये।

इस सभा ने सज्जन की योजना पर निश्चित प्रभाव डाला। सज्जन स्वय एक धनाढ्य कुल का वशधर तथा तीन लाख रुपया दान करने वाला होने के कारण, साथ ही वार्ड के महाजनो द्वारा तीव्र विरोध होने के कारण जनसाधारण मे अधिक प्रभावशाली हो उठा। पढे-लिखे वर्ग के अन्दर भी छोटी पूँजी के क्षेत्रीय सहकारी बैंको का विचार बहुत सराहा गया। सज्जन का कहना था कि यदि ऐसे क्षेत्रीय सहकारी बैंक खुलें जिनमे वहाँ की ही पूँजी से वहाँ के लोगो के लिए तरह-तरह के उद्योग-धन्धे फैलाए जाएँ तो हर क्षेत्र अपने आप को बढा सकता है। इन छोटी बैंको को आपस मे सहयोग सवध से वाँधा भी जा सकता है। जिस प्रकार प्रयोग के लिए यहाँ सज्जन की पूजी लग

रही है उस प्रकार यदि सरकार लगाये, प्राइवेट महाजनो को कानून द्वारा बन्द कर कुटीर उद्योग-धधो की स्कीम फैलाये तो दु ख और अपमान का जीवन बिताने वाला मध्य वर्ग अपनी खोखली हैसियत खोकर नये सिरे से आदमी बन सकता है ।

'चौक वार्ड सहकारी बैंक' एक आन्दोलन के रूप मे उठा । हर जरूरतमन्द को बैंक उधार देता था । उसकी एवज मे काम भी लेता था और इस तरह वह हर व्यक्ति को ईमानदारी के साथ ऋण-मुक्त होने का अवसर देता था—यह सिद्धान्त अनेक लोगो को पसन्द आया । इस बैंक के अन्तर्गत ही सज्जन ने हैन्डलूम का कारखाना, रबर के खिलौने और गुब्बारे बनाने का कारखाना, नए डिजाइनो के कपडो की छपाई, चिकन का काम आदि धन्धे भी शुरू किए, जिसमे इसी क्षेत्र के लोग काम पर नियुक्त हुए । स्त्रियो से भी घर-बैठे अथवा ताई की हवेली मे बुलाकर काम कराने की योजना शुरू हुई ।

हर बृहस्पतिवार को, बाजार की छुट्टी के दिन भारत के इतिहास और सस्कृति पर व्याख्यानो का प्रबन्ध किया गया । नाटको के द्वारा सामाजिक मनोरजन और शिक्षा के लिए भी आयोजन किया गया। दो महीने मे सज्जन ओर वनकन्या के लिए दम मारने की भी फुरसत न रही । वे दोनो सार्वजनिक रूप से विचित्र सघर्ष मे पड गये । समाज मे उनके कामो को लेकर अब करीब-करीब वैसी ही स्थिति हो गई जैसी कि आग पर चढी अधपकी दाल की होती है । उनको लेकर समाज मे अभी एकरसता नही आ पाई थी । राह चलते उन पर ख्वाहमख्वाह की छीटाकशी भी हो जाती और लोगो की आँखो मे उनके प्रति आदर और प्रेम भी झलकता था । भाव से भाव मिलता देखकर सज्जन के मन मे अब सबको अपने प्रति ममत्व रखते देखने की चाह उमड पडी थी । आए दिन अनेक लोग उसके पास अपनी तकलीफे लेकर आते । शुरू-शुरू मे सज्जन को लोगो की तकलीफे दूर करने मे एक प्रकार का आनन्द भरा उत्साह उमगता था । उसे लगता कि लोग उसके प्रति आभारी होकर उसे श्रद्धा दे रहे हैं । श्रद्धा का यह सौदा करने के लिए वह अधिक से अधिक अपने आपको परोपकारी सिद्ध करने का प्रयत्न करता । यह बात नहीं कि लोगो की तकलीफो से उसके मन मे करुणा न जागती थी, परन्तु करुणा अपना प्रतिदान माँगती थी । काम के बढने के साथ ही सज्जन का यह बचकाना जोश समाप्त होने लगा । इसके लिए उसके मन को कम से कम अवकाश मिलने लगा । उसका अधिक से अधिक समय चिन्तन और कर्म का हो गया ।

इधर ताई की माँदगी बढ गई थी । महिपाल के घर भाजी के विवाह के दिन भी उँगलियो पर आ गए थे । सज्जन और कन्या मे से एक के लिए ताई के पास बैठा रहना अनिवार्य हो गया । महिपाल सज्जन के कार्यव्यस्त हो जाने के बाद उससे यो भी खिचा-खिचा रहता था, अब बहाना लेकर और भी अधिक खिच गया । उसे यह शिकायत थी कि सज्जन कर्नल की तरह, मित्र की तरह, उसके काम मे सहायक बनकर जब अपना मित्र धर्म तक नही निभा पाता तो समाज कल्याण का धर्म कैसे निभाएगा ? कल्याणी और कन्या के बीच होने वाले निश्चय को अमान्य कर शकुन्तला का विवाह सज्जन की शाहनजफ वाली कोठी से करने के बजाय रूपरतन की कोठी से करने की व्यवस्था की ।

सेठ रूपरतन और लाला जानकीसरन के इशारे पर उसने सज्जन की नई योजनाओ के विरुद्ध एक छोटी-सी पुस्तिका लिखकर खूब जहर उगला। उसने लिखा कि 'सज्जन वर्मा मेरे अतरग मित्र है, परन्तु जहाँ मैत्री और सार्वजनिक हित मे टक्कर लडे, वहाँ मैत्री के प्रति पक्षपात न कर जनता को सचेत करना मेरा परम कर्तव्य है। यह मानवता की पुकार है।' इस दावे के साथ महिपाल ने सज्जन की सारी योजना को नई महाजनी चाल बतला कर यह सिद्ध किया कि सज्जन की यह सहकारी बैंक योजना जनहित के नाम पर जनता को सदा के लिए अपना गुलाम बनाने की गहरी चाल है। पुरानी परपरा का सूदखोर जहाँ समाज के केवल कुछ व्यक्तियो को ही नुकसान पहुँचाता है वहाँ यह सारे समाज को हडप जाने की स्कीम है। भारतीय सस्कृति के विषय मे सज्जन जानता ही क्या है। उसने जो कुछ सीखा है वह महिपाल से सीखा है। ऐसे अधकचरे ज्ञान वाला मनुष्य निस्सन्देह मनमाने सास्कृतिक सुधारो के नाम पर स्वस्थ भारतीय परपराओ का गला घोट देगा। सास्कृतिक आयोजन नाटक आदि खिलवाड के बहाने जनता को बरगला कर, कुटीर-उद्योगो के जरिये सबको अपने अधीन करने वाली यह चाल यदि अभी न काटी गई तो भविष्य मे शक्ति प्राप्त कर यह घातक हो उठेगी। सज्जन की यह योजना उस पूतना के समान है जो अपने स्तनो मे विष लगा कर वात्सल्य का ढोग करती हुई सुन्दर रूप धारण कर श्रीकृष्ण को दूध पिलाने आई थी।

इस पुस्तिका को बडे पैमाने पर बाँटा गया। लाला जानकीसरन ने अपने घर के पास वाले टीले पर जहाँ कुछ महीनो पहले ताई के कृष्ण भगवान की झाँकी सजी थी, एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया, जिसमे अन्य वक्ताओ के अलावा महिपाल ने भी भाषण दिया।

सज्जन को महिपाल के इस व्यवहार पर आश्चर्य तो तनिक भी न हुआ पर दुःख अवश्य हुआ। स्वय उसके मन मे आत्म-परीक्षक की वृत्ति भी तीक्ष्ण हुई। भले ही महिपाल ने तर्कों को झूठे तौर पर खडा किया हो फिर भी कही ऐसा तो नही कि उसकी इस योजना मे कोरी व्यक्तिगत महत्वाकाक्षा ही छिपी हो? यदि ऐसा होगा तो उसके द्वारा उठाया गया काम निस्सदेह बहुत आगे नही बढ पायगा। किसी भी सार्वजनिक कार्य मे शक्ति तभी आती है जब उसमे अनेक की आकाक्षाओ का समान योग हो। चलते-फिरते कामकाज में व्यस्त रहते हुए भी सचेत रूप से आत्म-परीक्षण करता रहा। स्वाभिमान उसमे यथेष्ट मात्रा मे है। वह ये हरगिज पसन्द नही कर सकता कि अपनी अक्षमता अथवा अविचार के कारण उस काम को, जिसे उसने स्वय उठाया है, ठेस पहुँचे। औरो से करते महिपाल की आलोचना से वह अत्यधिक तिलमिला उठा है। महिपाल की बात को बेअसर करने के लिए उसे अपनी व्यक्तिगत इच्छाओ से ऊपर उठ कर अपने कार्य की शक्ति दिखलानी होगी।

शंकरलाल, वर्मा आदि कई युवक सज्जन के साथ थे। आयोजनो को लेकर अनेक व्यक्ति उसके पास आने-जाने लगे थे। उसकी कारगुजारियाँ जनता के सामने पुष्ट होने के कारण लोगो की सहानुभूति भी क्रमश बढ रही थी। लाला जानकीसरन, महिपाल शुक्ल आदि के द्वारा सज्जन की सार्वजनिक निन्दा किये जाने से सज्जन के अनेक प्रशसको मे क्षोभ फैल गया था। जगह-जगह इसी को लेकर चर्चा होने लगी थी। अपनी-अपनी

समझ के अनुसार लोग सज्जन अथवा महिपाल, जानकीसरन आदि के पक्ष मे थे। सज्जन के प्रशसक सज्जन को तुरत एक मीटिंग कर विरोधी पार्टी को मुँह तोड जवाब देने के लिए अपनी गर्म बातो से वातावरण को उत्तेजित बना रहे थे।

सज्जन इस विषय पर विचार करता रहा। उसी दिन उसे एक मकान को देखने जाना था। मुहल्ले मे ही वह एक अस्पताल स्थापित करने की आयोजना कर रहा था। किसी ने उसे बनारस के एक ऐसे ही धर्मार्थ अस्पताल की बात सुनाई थी। वहाँ होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक विभाग हैं, जच्चाखाना हे । आसपास की जनता को उस अस्पताल से बडी सुविधा हे। सज्जन के मन मे यह विचार घर कर चुका था, परन्तु जगह की कमी के कारण वह उसे अमल मे नही ला पा रहा था। एक बडे मकान की बिक्री का समाचार सुन कर वह उसका सोदा करने के लिए लालायित हो उठा था।

पक्का सगीन नया मकान था। मकान-मालिक दूसरी लडाई के दोर मे लखपती बने थे। उन्होने अपनी शान दिखाने मे ही अपनी कमाई तमाम कर डाली। वार्ड के बडे-बडे रईसो के रहन-सहन और खर्च-खाते से होड लेने लगे। बडे-बडो मे अपना स्थान बनाया, प्रभाव जमाया। एक बार जीवन का ढर्रा बदल जाने पर फिर रहन-सहन का स्टैंडर्ड गिरा न सके। कर्ज का दौर शुरू हुआ और उसका बोझ बेहद हो जाने पर एक दिन भाँडा फूट गया। कर्ज की अदायगी के लिए ही, जेल और मुकदमो या कानूनी तौर पर दीवालिया करार दिये ज ने से बचने के लिए ही वे अपनी तमाम जायदाद खडे-खडे औने-पौने करने लगे। गहने, चाँदी-सोने के बर्तन, मोटर, बग्घी,—सब टीम-टाम निकाल कर रोकड करने लगे।

सज्जन के अनुभवी और पुराने दीवानजी मकान देख आये थे, उसकी कीमत भी आँक आये थे। देर करने से अच्छी जायदाद के हाथ से निकल जाने का भय था। वह महिपाल के आक्षेपो का जवाब देने के लिए भी मीटिंग करने के बजाय अस्पताल की इमारत खरीदने का उत्सुक था—"महिपाल के जहर का जवाब यह अमृत होगा—बहुत खामोश, बहुत बोलता हुआ जवाब।"

जवाबी मीटिंग का आग्रह करने वालो को यह जवाब देकर—बार-बार देते हुए—सज्जन को सहसा यह महसूस हुआ कि सचमुच ही क्या उसे अपने इन शब्दो मे आस्था भी है? अक्सर ऐसा होता है कि हम अपने बचाव के लिए एक सुन्दर-सी बात सोच लेते हैं। फिर आड लेते-लेते हमारी ऐसी ही आदत पड जाती है। हमारा भाव क्या है, इसकी हमें पहचान ही नही होती और यह पहचान का अभाव हमें अक्सर बेतुके झमेलो में फँसाता है। सज्जन क्या सचमुच शुद्ध जनकल्याण की भावना से कर रहा है? वह एवज में यश नही चाहता? सामाजिक कार्यों में चित्र-कला की साधना करने से अधिक चमत्कारी यश मिलेगा, क्या उसके अन्दर यह भावना काम नही कर रही?

प्रश्नो ने उसे घेर लिया। एक-एक बात मे मन की हाँ-ना चलने लगी। शुद्ध जन-कल्याण की भावना—नही। वह यश चाहता है, मगर यह सच नहीं कि वह चित्रकला को यश की लालच मे छोडकर अपनी पुरखालाई-लक्ष्मी के बल पर नेता बना है। यह सब कुछ उसके जीवन में अनायास आ गया। जिस प्रश्न को लेकर अपने भारतीय समाज

की अगति-गति को देखने के लिए वह इन मुहल्लो मे आया था वह प्रश्न झूठा नही था, उसके जी की लगन से निकला था। असाधारण समाज मे रह कर जिस प्रश्न का उत्तर उसे नही मिल सकता था उसे लेने के लिए वह जनसाधारण मे आया था। उसका जोश, उसकी घुमक्कडी प्रवृत्ति उसे यहाँ ले आई थी। यद्यपि अब भी वह जनसाधारण के निकटतम सम्पर्क मे नही आ पाया, फिर भी उनके लिए दिन प्रति दिन करुणा उमडती ही आती है। इसलिए उसका सामाजिक कार्य विशुद्ध जनकल्याण की भावना से शत-प्रतिशत प्रेरित न होने पर भी विशुद्ध यशोलिप्सा से भी नही है। ईमानदारी से उसके मन मे जन-कल्याण की भावना का प्रभाव यशोलिप्सा से कही अधिक है। बल्कि काम-काज मे अधिक रमते हुए अब कभी-कभी यश की भावना उसके मन से पूरी तौर पर गायब भी हो जाती है। तब फिर महिपाल के लिए उसके मन मे खीझ क्यो है? क्या यह भी सच नही कि जवाबी मीटिंग करने की बात उसे अब भी सुहाती है। यदि उसे मकान देखने न जाना होता, उसके मन मे तनिक भी फुरसत होती तो शायद वह उस पर और भी गौर करता।

सज्जन इस वास्तविकता से मुँह न मोड सका।

४९

मकान बीस हजार में खरीद लिया गया। जब तक इस छोटे से अस्पताल के लिए आवश्यक सामग्री न आये तब तक प्रतीक्षा मे बैठे रहना सज्जन ने उचित न समझा। एक डॉक्टर, लेडी डॉक्टर, वैद्य, हकीम और होम्योपैथी को नियुक्त करने के अलावा उसने शहर के एक प्रसिद्ध डॉक्टर तथा डॉ० शीला स्विंग से भी सप्ताह मे दो दिन सलाहकार डॉक्टर की हैसियत से आने के लिए प्रार्थना की। शीला ने इस प्रार्थना के उत्तर मे अपनी आधी प्राइवेट प्रैक्टिस का त्याग कर नित्यप्रति शाम को वहाँ आने का वचन दिया। सज्जन और कन्या बेहद खुश हुए। जच्चाखाने और दवाखाने के सारे सामान की खरीदारी कर्नल की मार्फत हो रही थी।

डॉ० शीला के त्याग की चारो ओर प्रशसा फैलाने में सज्जन ने बडे हौसले से काम लिया। शहर के अखबारो में भी यह खबर छपी। आलम भले ही यह समझे कि शीला के इस कीर्ति प्रचार में सज्जन का निजी स्वार्थ नही था, परन्तु ऐसा करते हुए भी सज्जन के मन में महिपाल के प्रति प्रतिहिंसा की भावना थी। वह उसे चिढाना चाहता था।

महिपाल सचमुच ही चिढ उठा। उसे लगा कि शीला को उसके विरोधी कैंप में लाकर सज्जन ने महिपाल की बदनामी की याद लोगो के मन मे ताजा करने का प्रयत्न किया है। सज्जन के प्रति उसे उत्कट घृणा हो गई। चाणक्य की तरह बार-बार उसके मन की शिखा खुलने लगी। ननिहाल का सामन्ती सस्कार महिपाल की रगो मे प्रलय की लहरो के समान उमडने लगा। वह सज्जन को कुचल डाले, उस पर कुत्ते छुडवा दे, जमीन

मे गडवा कर ठोकरे लगाये, पेड पर उल्टा टॉंग कर धूनी दे, उसके लाखो के वैभव मे आग लगा दे—घृणा रह-रह कर आवेश मे उसे झिझोड डालती थी। वह सज्जन का सत्यानाश कर डालना चाहता था। शीला के प्रति भी उसे तीव्र क्रोध था। वह क्यो गई सज्जन के साथ ? क्या इसी का नाम प्रेम है ?

घर मे विवाह की चहल-पहल आरभ हो चुकी थी। शकुतला के पितृकुल वाले, महिपाल की दूसरी बहन और उसके बच्चे भी विवाह मे सम्मिलित होने के लिए आ गये थे। सेठ रूपरतन ने उसे अपनी कोठी का एक भाग विवाह के लिए दे दिया था। विवाह का सारा सामान वही ढो-ढो कर ले जाया जा रहा था। घर मे चारो ओर विवाह को लेकर व्यस्तता थी, केवल महिपाल का मन प्रबल ईर्ष्या के कारण अस्त-व्यस्त हो रहा था। सज्जन को कोई 'बहुत-बहुत-बहुत' बडा नुकसान पहुँचाने के लिए तरकीब सोचने मे ही उसका प्रत्येक क्षण चला जा रहा था। कोई तरकीब न सूझती थी। वह हर समय चिडचिडाया करता था। सुबह से मोटर लेकर निकलना, कभी राजा साहब के यहाँ, कभी रूपरतन के यहाँ, कभी किसी मिनिस्टर-डिप्टी मिनिस्टर के यहाँ, हाकिम-अमला—जिससे भी उसकी थोडी-बहुत जान-पहचान थी उसी के यहाँ जाकर बातो-बातो मे वह सज्जन की निदा करता। कही कहता कि कम्यूनिस्ट पत्नी के कहे मे आकर वह इन तमाम कामो की आड मे जनता को कम्यूनिस्ट बना रहा है। रात मे उसके घर पर कम्यूनिस्ट नेताओ की बैठके होती हैं। कही यह अफवाह फैलाता कि पति-पत्नी दोनो ही अत्यन्त चरित्र-भ्रष्ट हैं, अपने पति के मनोरजन के लिए सुन्दर स्त्रियाँ प्रदान करना ही कन्या के स्कूल का 'महानतम' उद्देश्य है। प्रमाण के लिए बार-बार यह भी जोड देता कि यह मैंने स्वय देखा है, अथवा यह बात खुद सज्जन ने मुझसे कही थी। कही वह सज्जन की योजनाओ में बाबा राम जी को भी साँट कर एक विशाल षड्यत्र के प्रति सचेत रहने के लिए चेतावनी देता। भूख-प्यास भूल कर घरेलू जिम्मेदारियो को जनकल्याण के नाम पर बिसार कर वह सुबह से शाम तक केवल सज्जन के विरुद्ध प्रचार करने मे ही लगा रहता। उसने राजा साहब का जीवन चरित्र लिखकर उन्हे अमर करने की लालच भी दे डाली। दर्शन ज्ञान बघार कर अपने पाडित्य का सिक्का जमाकर भी पूरा प्रयत्न कियाँ। अपनी हवेली से कन्या की पाठशाला हटाकर वहाँ वेद, पुराण, गीता, भागवत आदि का अखण्ड पाठ करवाने का सत्परामर्श भी दिया जिससे कि भारतवासियो की धार्मिक निष्ठा जागे और उन पर सज्जन ऐसे विभीषण कम्यूनिस्टो का प्रभाव न पड सके। वह लाला जानकीसरन को जा-जाकर यह समझाता कि वे राजा साहब तथा अन्य बडे-बडे लोगो के सहयोग से एक ऐसी ही सस्था खोलने का आयोजन करें जिससे कि सज्जन का सारा षड्यत्र ध्वस्त हो जाय। उसने उन्हे यहाँ तक आतकित करने का प्रयत्न किया कि वार्ड के सभी प्रमुख लोगो, विशेष रूप से लाला जानकीसरन के आसपास, घरो में जासूस छोड दिए हैं। उसके इस जगह रहते किसी भी भले आदमी की इज्जत नही बचेगी।

हफ्ते भर की कठिन दौड-धूप का प्रभाव पडा। वह इस समय रूपरतन के घर में ही रह रहा था, इसलिए उसे जब-तब उकसाने के लिए मौके भी अक्सर मिलते रहते। वह सेठ रूपरतन की एक सोई महत्वाकाक्षा जगाने में सफल हो गया। एक महान् आन्दोलन को

चलाकर सेठ रूपरतन बहुत शीघ्र ही सरकारी मन्त्रिमडल मे आने के लिए अपनी राहे खोल देंगे—यह महामन्त्र अपना काम कर गया। रूपरतन ने उसे एक योजना बनाने की सलाह दी। दस बडे महाजन मिलकर ऐसी ही सहकारी योजना को जन्म देगे। उनके सहकारी बैको के द्वारा कुटीर उद्योगो का बहुत बडा कार्यक्रम चलेगा। वातावरण मे चारो ओर धार्मिक धूमधाम मचा दी जाएगी। कही कीर्तन, कही महात्माओ के प्रवचन, कही इतिहास-पुराण, —इस प्रकार चारो ओर भारतीयता का प्रसार कर दिया जाएगा। इस योजना के आरभ मे एक बहुत बडा विश्व-शान्ति यज्ञ भी किया जायगा जिससे कि जनता मे धार्मिक निष्ठा जागे। रातो-रात महिपाल ने एक लिखित आयोजना बना डाली जिसमे वह तमाम आदर्श प्रस्तुत किए गये थे जो कि राजा साहब और सेठ रूपरतन के श्रीमुखो के द्वारा उच्चरित हुए थे।

दो दिन के उपरान्त विक्टोरिया-पार्क, चौक मे एक बहुत बडी सार्वजनिक सभा का एलान हुआ। स्वय राजा साहब उसके सभापति होगे और जन कल्याण के लिए नगर के प्रतिष्ठित सज्जनो ने मिलकर जो महान योजना बनाई है उस पर प्रकाश डालेगे।

ताई उन दिनो बहुत बीमार थी। उन्हे अब अपने बचने की आशा नही रही थी। इस भय से कि उनके मरने के बाद पति और सौतेले बेटे उनका समुचित क्रिया-कर्म न करायें, वे अपने जीते-जी अपना क्रिया-कर्म करा रही थी। सज्जन और कन्या पर उनकी सारी जिम्मेदारियाँ आ पडी थी। कन्या और सज्जन उनके लडके-बहू के समान हो चुके थे।

यहाँ तक कि एक दिन ताई ने 'कन्नोमल के पोते की बहू' को सौ तोले सोने के गहने भी पहना दिये, बोली "निगोडी तू विधर्मी ही सही पर जब बऊ बन ही गई है तो ले। मेरी सेवा तो तू ही करे है, मेरे काम तो तू ही आई।" इतना सब होने पर भी ताई कन्या के हाथ का छुआ पानी पीने मे अभी तक आपत्ति करती थी। अँग्रेजी दवा खाने से भी उन्होने इन्कार कर दिया था। सज्जन के दो नौकर चौबीस घटे ताई की सेवा मे रहते। रात के समय सज्जन-कन्या मे से कोई एक ताई के यहाँ बराबर ही रहते। ताई जो दान-पुन्न करने की इच्छा करती उन सब का आयोजन होता।

जिस दिन शाम को चौक मे राजा साहब की मीटिंग थी उसी दिन ताई के घर उनकी तेरही का ब्रह्मभोज भी था। सज्जन और वनकन्या को अपनी पूर्वव्यस्तता मे इस व्यस्तता के जुड जाने से पल मारने को भी अवकाश नही था। कर्नल भी इनके साथ बराबर का हाथ बँटाने के लिए खडा हो गया। सज्जन और महिपाल मे विरोध उठ खडा होने से कर्नल यद्यपि अत्यन्त क्षुब्ध था फिर भी इस विषय को लेकर उसने बडे ही जबरदस्त सयम के साथ मौन साध कर दोनो ओर काम का मोर्चा साध रक्खा था। कल्याणी के घर बराबर आते-जाते रहकर आवश्यक वस्तुओ के सम्बन्ध मे पूछताँछ करना, जिस राह से खूबी के साथ दो पैसो की बचत हो वह राह सुझाना कर्नल का ही काम था। महिपाल से उसकी भेंट होती, सब बाते होती मगर सज्जन के सम्बन्ध मे एक अक्षर वह मुँह से न निकालता। सामना पडने पर महिपाल अक्सर छेड कर उससे सज्जन की बात चलाता। एक बार कर्नल ने कह दिया—"देखो भाई यह तुम लोगो की निरी आपुस की बात है, दो विद्वानो

के बीच की बात हैगी । हमसे इससे कोई मतलब नही । आइन्दा हम से इसकी चर्चा न करना ।" सज्जन ने स्वय ही इस सम्बन्ध मे कभी उससे चर्चा नही चलाई थी । महिपाल कर्नल का बहुत पुराना मित्र था । सज्जन और कर्नल की दोस्ती तो महिपाल के कारण हुई थी ।

उस दिन सायकाल विक्टोरिया पार्क की मीटिंग मे महिपाल अपनी सीमा से बाहर चला गया । सज्जन को उसने अपना बहुत पुराना मित्र बतलाकर यह सिद्ध करना शुरू किया कि वह "सदा से बेहद स्वार्थी और महत्त्वाकाक्षी रहा है । वह अपने पैसे के बल पर प्रतिष्ठित आलोचको को दावते खिला-खिला कर उनकी खुशामदे करके प्रसिद्ध हुआ है । वह कलाकार से अधिक कलाबाज है, उसे ऊँचा नाम कमाने की धुन है ।" इस प्रकार की अनेक ऐसी बाते जोश मे आकर बक डाली जिनसे कि उस पर कानून का जोर चल सकता था । अपनी स्पीच मे मोहनजोदरो, शिव और वेद, सारा इतिहास, समाजशास्त्र उसने मानो सज्जन की निन्दा करने के लिए ही एक घटे तक बखाना । उसने जनता को मत्रमुग्ध किया और बीच-बीच मे सज्जन के प्रति जहर उगला । आज की शाम, सभा का वह रगमच उसके जीवन की श्रेष्ठतम विजय मना रहे थे । उसने सज्जन के लाखो से लाखो की होड ली । यदि सज्जन अपनी लक्ष्मी के बल पर अपने को महापुरुष बना सकला है तो महिपाल भी परायी लक्ष्मी के साधन जुटा कर महापुरुष बन सकता है । वह महिपाल के 'महा-पुरुषत्व' का क्षण था जिसके नशे मे बहक कर वह सज्जन के खिलाफ गैर कानूनी बाते कह गया था ।

सज्जन के समर्थको मे आतक और उत्तेजना फैल गई । एक बडी पूंजी और सगठित शक्ति उस नन्हे से पौधे को नष्ट करन के लिए चली आ रही थी जो अभी ठीक तरह से पनप भी नही पाया । सज्जन और कन्या दोनो ही महिपाल के इस व्यवहार से अत्यन्त क्षुब्ध हुए । डॉक्टर स्विग रो पडी । सज्जन ने मामला वकील के हाथ में सौपने का निश्चय कर लिया । तीसरे दिन सज्जन के वकील का रजिस्टर्ड नोटिस महिपाल को मिल गया । कर्नल उस समय महिपाल के घर अर्थात् सेठ रूपरतन की कोठी मे मौजूद था । महिपाल बहुत उबला, 'देख लूँगा' और 'समझ लूँगा' कह-कह कर उसने बडे हाथ-पैर उछाले ।

कर्नल ने कहा—"देखो महिपाल मै पब्लिक नही हू जिसको लिक्चर देकर भरमा लोगे । ये तो बिटिया की शादी है, मै इस बीच अपने कलेजे पर ताले लगा कर खामोश हूँ, मगर मुझे फिर कहना पडता है कि उसका मुकद्मा चलाना एकदम उचित है । और तुम मुकदमा हारोगे । और तुम्हे जेल जाना पडेगा । तुम्हारे इन बडे-बडे लोगो मे से एक भी जो तुम्हारी मदद करने को आवे महिपाल, तो तुम मुझे बता देना, मै जो कहोगे सो हार जाऊँगा ।" कर्नल ने कल्याणी से भी सारी परिस्थिति साफ-साफ कह दी । महिपाल अपनी पत्नी और कर्नल के सामने न्याय-सत्य के बडे-बडे नारे लगाते रहे । सज्जन की दुश्चरित्र बखानने लगे । कर्नल को भी बेहद तैश आ गया । उसने कहा—"देखो महिपाल तुम दूध के धोये नही हो । दूसरे के मुंह पर कीचड उछालते हो, अपने दाँव पर चहकोगे । मैं एक बात तुमसे और साफ कहे देता हू कि सज्जन अगर अपनी तरफ से गवाहो मे मुझे बुलाएगा तो अवस्य जाऊँगा । जहाँ तक मैं जानता हूँ, डाक्टर साहब भी ऐसी हालत में तुम्हारे खिलाफ गवाही देने जाएगी, उन्हे जाना चाहिये ।"

'जाओ सब जाओ ।" महिपाल गरज उठा । उसने आवेश मे आकर कुर्सी उठा कर जोर से पटक दी । उसका एक हत्था बुरी तरह टूट गया । यह कुर्सी विक्टोरियाकालीन नक्काशीदार बनावट की थी । महिपाल को चटक ध्यान आया कि उसने मेठ रूपरतन का नुकसान किया । महिपाल का क्रोध उसके बाद फिर असीम न रह सका, सीमा मे आते-आते बडबडाहट तक पहुच गया ।

कर्नल के आगे कल्याणी बहुत अनुनय-विनय करने लगी—"इनकी तो मत खराब हो गई है । आप सज्जन भाई साहब को समझाइये इन बच्चो का मुँह देखे ।"

कर्नल, कन्या और सज्जन के बीच बाते हुई । सज्जन अपने निश्चय पर अडिग रहा, उसने कहा—"देखो कर्नल, यह मेरा मामला नही है । तमाम बाते मेरे ट्रस्ट के बहाने शुरू हुई । अगर इन बातो पर कुछ न कहूँ तो मेरे ट्रस्ट को नुकसान पहुँचता है । अपने सगठन की रक्षा के लिए महिपाल को दड दिलाकर ही रहूँगा । तुमको भी मेरी ओर से गवाही देनी होगी । हम दोनो के बीच जो कुछ भी कमजोरियाँ तुमने देखी है उनको ज्यो का त्यो बयान करना । मै तुमसे मुहब्बत नही चाहता, इन्साफ चाहता हू ।" सज्जन ने कहा और उठकर चल दिया ।

सभा की रिपोर्ट ताई की रोगशैय्या तक पहुँच गई । श्री राधेश्याम के ब्याह और अपनी किरिया के बहाने इतना दान-पुन्न करने वाली ताई की रोग-शैय्या के पास पूरा दरबार जुटने लगा था । गोकुलद्वारे के पुजारी, भितरिया, जलघडिया, कीर्तनिया, सरस्वती दादी, खन्ना बहुरिया, नन्दो, नन्दो की माँ, तारा, छोटी, मुहल्ले की और भी कुछ बुड्ढी-ठुड्डियाँ ताई के यहाँ दिन भर आती-जाती रहती । ताई का बुखार तेज था, बीच-बीच मे गफलत में भी पड जाती थी । होश मे आने पर हर तरफ नजर फेक कर लोगो को देख लिया करती । कभी उनकी बातो का हाँ-ना मे उत्तर भी दे देती । ताई के कान मे खबर पडी कि राजा साहब ने कम्पनी बाग मे मीटिंग कर उनके सज्जन को बडी-बडी गालियाँ सुनाई तथा वे और जानकीसरन मिलकर मर्दानी हवेली से सज्जन को निकाल कर अपनी पाठशाला चलायेगे । तेज बुखार और कमजोरी मे भी ताई यह सुन कर कडक उठी । उनकी जीवन भर की बिष बुझी जीभ जहर उगलने लगी, दोनो हाथो की मुट्ठियाँ भिच गईं । गले की नसे तन गई, चेहरा क्रोध से विकृत हो उठा । ताई ने अन्त करण से अपने पति को कोसा । उत्तेजना ने उनके स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डाला और वे बेहोश हो गईं ।

उस दिन शाम को ताई ने नन्दो को अपने पास रोक लिया । कन्या तीन घटे के लिए ताई के पास तारा की ड्यूटी लगाकर डॉक्टर शीला स्विग के साथ गली-टोलो के घरो-घरो मे स्त्रियो-बच्चो का स्वास्थ्य निरीक्षण करने गई थी । ताई ने तारा को दूर बैठने का आदेश दे नन्दो से धीरे-धीरे कुछ बाते की । नन्दो के चेहरे पर गभीर जिम्मेदारी और रहस्यमयता झलक पडी । दीया जलते ही ताई ने तारा को अपने बच्चे के साथ घर चले जाने को कहा । तारा ताई की सेवा की दृष्टि से वहाँ से जाने को तैयार न थी । ताई के चेहरे पर क्रोध की सिकुडने पडी, अधिक बकने-झकने की शक्ति उनमे न थी । नन्दो ने तारा से समझाकर कहा—"देखो, जो ये कह रही है वह मान लो । वैसे मै तो इनके पास हूँ ही ।" तारा समझ गई और बिना कुछ कहे ही अपने बच्चे को गोद में उठाकर चलने लगी । बच्चे को जाते

देख कर ताई ने अपना ढीला हाथ उठाकर उसे पास बुलाया। ताई के चेहरे पर वात्सल्य की शान्ति छा गई। तारा उसे लेकर ताई के पास झुक गई। बच्चे ने अपना खेलता हुआ हाथ बढाकर ताई की गर्म हथेली पर रख दिया। ताई ने एक बार बच्चे के चुन्ने-मुन्ने हाथ, गाल और सिर पर हल्का-सा हाथ फेरा। उनके फीके रुग्ण चेहरे पर हँसी बिखरी, फिर उन्होने इशारे से तारा को चले जाने के लिए कहा। तारा के चले जाने के बाद नन्दो ने तारा की तरफ वाले दरवाजे की कुडी चढा दी। ताई ने सिरहाने तकिए के नीचे रक्खी एक छोटी-सी पुटलिया निकालने का आदेश दिया। नन्दो ने पुटलिया खोल दस-दस के दो नोट निकाले, ताई को दिखाए और अपने पल्ले मे बॉध लिये। नन्दो ऊपर के जीने की ओर चढती हुई बोली—"हम चद्दर ओढ के अबही आउत है ताई। छोटी को हियन बैठाय जाएँगे। तुमरी बहूरानी आवैं तौ उन्है लौटाय देवैंगी। छोटी औं—बाकी तो फिर हम आउत है अबहाल।"

कन्या करीब आठ बजे ताई के घर पहुँची। छोटी वहाँ बैठी हुई थी। ताई को उस समय झपकी आ गई थी। उपन्यास पढना छोड छोटी ने कन्या को ताई का हाल सुनाया, साथ ही वह हुक्म जो कि नन्दो कन्या के बारे मे दे गई थी।

कन्या ने पूछा—"क्यो, क्या बात है?"

छोटी मुँह बिचका कर बोली—"नन्दो बीबी जी और ताई कोई मैजिक-वैजिक कर रही है किसी क ऊपर। इसलिए वह इकल्लापन चाहती है।"

"यह सब क्या मजाक है? मै ताई को इस समय किसी भी हालत मे, और किसी भी बहाने यो इस तरह अपने शरीर को कष्ट न देने दूंगी। मै नही जाऊँगी।"

थोडी देर दोनो म इधर-उधर की बाते होने लगी। ताई जागी। कन्या ने फौरन उठ कर ताई के सिर पर हाथ रक्खा, तबियत का हाल पूछा। ताई ने उसकी बाँह पर स्नेह से हाथ थपथपाते हुए कहा—"अच्छी हूँ। तुम जाओ बहू।"

"ताई, मै आपको छोड कर नही जाऊँगी, वो मुझ पर बेहद नाराज हो जायेगे।"

"तुम्हे मेरी कसम, जाओ।" अपने नौकरो को भी साथ ही ले जाने का आदेश दिया।

कन्या ने अपने आग्रह को ताई द्वारा दुबारा दृढता के साथ अस्वीकृत होते देखा। ऐसी हालत में उसके लिए ताई के पास से हट जाने के सिवा और कुछ चारा ही न था। ताई से बहस करना असभव था, ऐसी हालत मे तो और भी अधिक। कन्या छोटी को आवश्यक आदेश देकर अपने नौकरो के साथ अनिच्छापूर्वक चली गई।

रात के साढे ग्यारह-पौने बारह बजे के लगभग नन्दो ने आँगन में सारा सामान सँजोया—एक बोतल शराब, चार सूअर के बच्चे, मिट्टी की हँडिया, आटे का पुतला, आटे का चौमुखा दीपक, तमाखू का एक पत्ता, गाँजा आदि। ताई आज अपने पति पर मूँठ चलाने का आयोजन कर रही थी। प्रारम्भिक विधि हो जाने पर हँडिया को कॉस (मन्त्र) से बाँधने के लिए नन्दो ने ताई से कहा।

ताई फिर बुखार की गफलत में पड गई थी। नन्दो बात का उत्तर न पाकर पास आई। लालटेन उठाकर ताई को देखा और फिर कान के पास मुँह ले जाकर पुकारा—

"ताई ! ए तैया !"

ताई ने आँखे खोली। पथराई पुतलियो से नन्दो को देखा, गफलत भरी आवाज मे पूछा—"क्या है ?"

"सब सँजोय के धर दिया हैगा, तैया।"

"सँजो दिया ?" ताई की चेतना पूरी तरह लौट आई। बात ने उसके जर्जर शरीर में शक्ति का सचार किया। उठने का प्रयत्न करती हुई बोली—"मुझे ले तो चल वहाँ बेटा।"

"अरे, तुम हुँअन कैसे जइहौ तैया ? हमें मतर दैदेओ आज मूँठ का।" नन्दो ने आग्रह किया।

ताई को ज्वर से सूखे, तमतमाये, झुर्रीदार चेहरे पर हल्की हँसी बिखर गई। काले-काले डठल जैसे दाँत चमक उठे, बोली—"ऐसे दिया जाए है मतर ?" ताई का कमजोर स्वर नई साँस भरने के लिए थम गया, फिर कहा—"ममान पै दिया जाय हैगा मतर तेली की ल्हास पै, तू मुझे ले चल।" ताई के शरीर मे शक्ति उछलने लगी थी।

नन्दो उन्हे आँगन मे ले आई। ताई ने हाथ-पैर धोए। हँडिया मे सामान रखते हुए मन्त्र पढना आरम्भ किया। अपने पति को मारने के लिए मन्त्र मे उनका नाम लेना आवश्यक था। ताई एक क्षण सस्कारवश झिझकी और फिर जोर से राजा साहब का नाम लेकर पुतले पर चौमुखा दीपक रखते हुए कडक कर उन्हे मारने का आदेश दिया। क्षण भर के लिए जीवन ताई की पथराई आँखो मे चौमुखे दीये की तरह जगमगा उठा। नन्दो भय के मारे उठ खडी हुई। सूअर के बच्चे एक साथ आँगन मे बाँधे हुए चीत्कार मचा रहे थे। यह भी मूँठ के विधान मे बँधकर आते हैं, इसलिए कि यदि दूसरे पक्ष में भी कोई ओझा-सयाना हो और तगडा प्रतिकार कर मूँठ को लौटा दे, तो लौटी हुई मूँठ चलाने वाले का खून न ले बल्कि सुअर के बच्चो की ही बलि से सतुष्ट हो जाय।

नन्दो की आँखो मे वातावरण का चमत्कार भर गया। सहसा ताई जोर से चीख पडी—"नई-नई-नई !"

"क्या भया तैया ?" कहती हुई पास आकर ताई को सँभालने लगी।

"हट, चक्कू ला।" कह कर ताई ने उसे झटकार दिया और तेजी से मन्त्र बडबडाने लगी। डेढ महीने से ज्वर-जर्जर ताई की इच्छाशक्ति उस क्षण अपने रोग पर विजय पा गई। बडी तेजी और व्यग्रता से मन्त्र पढते हुए उन्होने चिल्लाना शुरू किया—"लौट आ, लौट आ, मेरे ऊपर लौट !" नन्दो चक्कू ले आई थी। ताई ने आवेश मे बडी जोर से उसे अपने बाँयी हथेली में भोक लिया। हँडिया पर ताई के हाथ से रक्त टपकने लगा।

ताई वायु की उत्तेजना में बडबडाती ही चली गई। स्वर की कडक फिर गायब हो गई, बडबडाते हुए फिर गफलत में झूम कर गिर पडी। उनके गिरने से हँडिया उलट गई। उसका तमाम सामान छितर गया। नन्दो डर कर ताई को वही उसी हालत मे छोडकर भाग गई।

दूसरे दिन से ही ताई को सन्निपात हो गया। बडबडाहट में दस अनर्गल-सी लगने

वाली बातो मे एक यह बात भी टूटे-फूटे शब्दो मे कई बार निकली कि 'मरन किनारे अब किसी का बुरा नही चेतुंगी ।' उस दिन ताई की हालत बिगड गई । उसी दिन सवेरे सज्जन बाबा जी से मिलने उनके गाँव गया हुआ था । ताई बडबडाहट में उसका भी नाम लेती थी ।

५०

सज्जन बाबा जी से मिलने के लिए गाँव जा रहा था । उसका मन परस्पर विरोधी विचारो मे घिरा हुआ था । कर्नल ने उसमे महिपाल पर मुकद्दमा न चलाने के लिए आग्रह किया और कर्नल की आशा के प्रतिकूल सज्जन ने उसके आग्रह को अस्वीकार कर दिया । सज्जन का कहना था कि यह सिद्धान्त की बात है, प्रश्न केवल एक व्यक्ति के अपमान का नही है वल्कि अनेक व्यक्तियो की आर्थिक और नैतिक हानि का है । सज्जन इस समय व्यक्ति नही सस्था है । उसके निरर्थक अपमान से एक ऐसी सस्था का नाश हो सकता है जो 'बहुजन हिताय' स्थापित की गई है । कर्नल ने कन्या को भी राजी कर लिया परन्तु सज्जन ने उसकी बात भी अस्वीकार कर दी, बोला—"यह मेरा निजी प्रश्न नही । मै सिद्धान्त के लिए लड रहा हूँ । मुझे जिस परिस्थिति मे यह कदम उठाना पड रहा है मै उसे ही महत्त्व दे रहा हूँ, अपने को नही ।"

कन्या बोली—"और क्या यह सभव नही कि परिस्थिति के अलावा तुम्हारे मन में महिपाल जी के लिए व्यक्तिगत रूप से क्रोध चढा हो । सामाजिक रूप से अपने व्यक्तित्व को देखते हुए क्या यह सभव नही कि तुम्हारी अत्यन्त निजी, अपने मित्र महिपाल जी के प्रति, कोई पुरानी ईर्ष्या की भावना—"

"सो तो तुम मुझसे पूछो । यह मामला आर्टिस्ट क्वालिटी का हैगा । दोनो मे जब से दोस्ती भई तभी से कीना भी है—मैं जानता हुँ ।" —हाथ उठाकर हवा को उँगली से तराशते हुए आँखो की पुतलियो और चेहरे पर तैश का तमतमा लिए कर्नल ने बेलौस बात कही । फिर दूसरे ही क्षण इस लिहाज से कि कही सज्जन का जी न दुख गया हो, चट से हँस कर उसकी ओर देखते हुए कहा—"देखो बुरा न मानना और बुरा मानना तो एक रोटी ज्यादा खाना । असल न्यायें की बात तो यही हैगी । मगर वाह भई बिन्नो, तुमको तो बैरिस्टर होना चाहिये था, बैरिस्टर । तुमने भी क्या पौइन्ट पकडा है कि बस, जीती रहो ! इन्साफ इसको कहते है ।"

सज्जन सिर झुकायें चुपचाप सुनता रहा । उसके चेहरे पर कोई भाव नही था, केवल मुद्रा गभीर थी । कर्नल की बात पूरी हो जाने के बाद उसने सिर उठाया, और कन्या पर एक सरसरी मगर आत्मीयता भरी नजर डालते हुए कर्नल को देख कर कहा—"मैं तुम्हारी बातो के साइकोलॉजिकल प्रभाव से दूर हूँ कर्नल, मुझ पर कोई असर नही हुआ और कन्या

की बात के जवाब में—मुझे इतना ही कहना है—कि महिपाल से कही मेरा मन चुभता जरूर रहा है। मै कर्नल से जितना आसान और सहज और साफ तरीके से पेश आता हूँ वैसा महिपाल के साथ व्यवहार मे मुझसे नही हो पाता। मै उसका बहुत आदर करता हूँ। कन्या, तुम्हे और कर्नल को छूकर मै यह बात कह सकता हूँ। वह इन्टेलेक्चुअल तो नही, मगर बडा भावनाशील प्राणी है। यो पढता भी खूब है, सोचता भी खूब है, महिपाल। —मगर यह सब होते हुए भी मेरा अनुभव यह कहता है कि उसमे जबरदस्त उथलापन भी है और उसमे दम्भ, मिथ्या अभिमान भी जरूरत से ज्यादा है।

कर्नल बोला—"यह बात तुम्हारी बिल्कुल ठीक हैगी। मै यह मानता हूँ जहाँ तक आदमियत का सवाल है, भलमनसाहत की बात है वहाँ तुम्हारा उसका कोई कम्पैराइजन* ही नही हैगा। महिपाल का जी बहुत ओछा—छिछोरा हैगा। मगर भाई देखो सज्जन, मेरा यह सिद्धान्त रहा हैगा कि मुसीबत मे पडे दुश्मन के लिए भी जान लडा देनी चाहिये, महिपाल तो अपना यार है इतना पुराना! पोगा बामन हैगा सुसरा अब उसका क्या करे। मै तुम से झूठ नही कहता बिन्नो, महिपाल आज बडा ग्रेट आदमी होता मगर सुभाव के छिछोरपन की वजा से उसका फ्यूचर सदा के लिए बिगडा हैगा। अभी कहाँ से राम जाने यह तकदीर का सिकन्दर चेत गया हैगा कि—"

"हाँ, इस समय तो महिपाल जी आर्थिक दृष्टि से सुखी दिखलाई देते है, चालीस-पचास हजार रायल्टी मिल गई है। यह तो खैर बहुत अच्छा हुआ, मगर इतने बडे लेखक होकर काम वह बहुत बेजा कर रहे है।" कन्या बोली।

"बेजा! अजी मै कहता हूँ महाबेजा! और यह तुमसे किसने कहा कि चालीस-पचास हजार रॉयल्टी मिल गई है? बीस हजार की रकम मिली हैगी जिसमे दस हजार का दहेज दिया जा चुका। लोकल बरात है, फिर जनवासे मे दो दिन की इस्टे हैगी। सब मिलाकर तीन-चार हजार रुपया ब्याह मे और खर्च होगा। तो चौदह हजार यो गये। बाकी ये जो घर भर के गहने, कपडे, जूते, मोजे, फर्नीचर वगैरा बदला सो इसमे भी ढाई-तीन का अन्दाज बैठा लो। कल्यानी जी दो-चार नये गहने पहने भये हैगी वो मजे के कीमती मालूम पडते है। और ये जो कार ली है सो मेरी जान मे रूपरतन से कुछ पावना होगा। यो जो रकम आई थी सो चली गई। जल्द ही उसे मोटर बेचने की नौबत आएगी। तभी तो कहता हूँ कि बडा छिछोरा है।"

सज्जन गभीर स्वर मे बोल पडा—"यहाँ, बहाँ मैं तुमसे मतभेद रखता हूँ कर्नल। यह काम महिपाल की छिछोर बुद्धि नही कर रही। यह काम उसका खूब सोचा हुआ, अर्थ भरा और स्पिरिटेड मूड का है। वह अपने पैसे के अभाव की वजह से मुझसे बेहद जलता रहा है। इस बार महाजनो से मेरे काम के विरोध होने पर उसे बडा सुनहला अवसर प्राप्त हुआ। वह इसका फायदा उठा रहा है। मै तुमसे सच कहता हूँ कर्नल, महिपाल का चरित्र अब पहले से बहुत गिर गया है। शीला के साथ सबध तोड कर अपनी पत्नी के लिए जो ये वफादार बना है तो उसमे भी कुछ गहरा ही विचार है इसका।"

---

*अंग्रेजी शब्द कपैरिजन—मुकाबिला।

कर्नल फौरन बोला—"नही, वह तो मेरी आँखो देखी बात हैगी सज्जन । इसके साले की बरात मे जब इसकी और शीला की बदनामी की बात उडी कि डाक्टर शीला का पैसा खाता है, तो उस पर घर मे लडाई भई । यह घर छोड कर शीला के यहाँ रहने को चले गए । फिर खैर कल्याणी जी आई, मै इसे शीला के यहाँ से मोटर पर अपने साथ लाया । मेरी नजरो से कुछ नही छिपा भया है ।—और उसके बाद ही सितारा चमक उठा—इनके पास बीस हजार रुपये की चिक आ गई । सेठ रूपरतन के प्रकाशन दफ्तर मे साहित्त के एडवाइजर भी हो गए ।—ये अब कीर्तनो के नेता तो बन ही गये । अब नेता भी हो जायेगे ।

"इसीलिए तो कहता हूँ कि—"

"महिपाल की मोटर कभी नही बिकेगी । बल्कि एक दिन वह इससे भी बडी मोटर, या शायद नई मोटर भी खरीद सकेगा, नैनीताल मे कोठी भी बनवा सकेगा ।"

—"तुम अद्वितीय बनना चाहते हो राम जी, यह यो ठीक नही ।"—अपनी बात कहते-कहते सहसा सज्जन को बाबा राम जी की यह बात सुनाई दी । सज्जन के लिए यह परिस्थिति बडी ही विचित्र हो उठी । बाबा जी उस कमरे मे नही थे और जो आवाज आई वह भी दूर की नही थी । सज्जन का मन किसी हद तक आतकित हो उठा । कर्नल को कन्या से बात करते टोक कर बेसाख्ता उसकी जबान से निकल गया—"तुम लोगो ने कोई—कोई आवाज सुनी ?"

"कैसी आवाज ?" कन्या ने पूछा ।

"मुझे भ्रम हो गया ।" सज्जन ने बात टाली ।

उसी दिन सज्जन ने गाँव जाकर बाबा जी से मिलने का निश्चय किया । महिपाल पर मानहानि का मुकद्दमा चलाने अथवा न चलाने का अन्तिम निर्णय भी वह वहाँ से लौटने पर ही करेगा ।

दूसरे दिन सुबह तडके ही सज्जन बाबा जी से मिलने के लिए अपने एक मित्र की जीप कार लेकर चला गया । उसके जाने के कुछ देर बाद ही वर्मा का फोन आया कि ताई की हालत बहुत खराब है । कन्या तुरन्त अपने ड्राइवर को सज्जन का पीछा करने भेज, वैद्य जी को लेती हुई जब ताई के घर पहुँची तो घुसते ही सुअर के बच्चो को देखकर ठिठक गई । ताई बिस्तर पर बेहोश पडी थी । बिस्तर पर सन्निपात मे उबल रही थीं । तारा, वर्मा और नन्दो की माँ ताई की देखभाल कर रही थी । ताई बीच-बीच में उठ कर भागती, तेज होती, आसपास वाले को मार भी बैठती । इन तीनो के लिए उन्हे सँभालना मुश्किल हो रहा था । वैद्य जी ने नाडी देखकर ताई को केवल दो-तीन घटे का मेहमान बतलाया । उन्होने मकरध्वज की मात्रा दी और हाथ-पैर के तलुओ में जायफल पीस कर मलने के लिए कहा । कन्या का दिमाग चारो ओर चल रहा था । आज ही महिपाल के घर शकुन्तला की बारात आने को थी । कर्नल उधर ही व्यस्त था । वनकन्या ने विचार कर कर्नल को इस समय यहाँ बुलाना उचित न समझा । उसने वर्मा को भेज-कर अपनी कोठी पर टेलीफोन करवा के दीवान जी को बुलवाया । इतने मे शकर और छोटी भी आ पहुँचे । नन्दो ने अपने किसी स्वार्थ के लिए जादू-टोना करवाया और ताई

को कष्ट दिया, इस बात की शिकायत स्वय नन्दो की माँ ने वनकन्या के सामने की और शकर लाल ने भी अपनी बहिन के कृत्य पर लज्जा और खेद प्रकट किया। कन्या ने राजा साहब के यहाँ भी सूचित कर देना बडा आवश्यक समझा।

गलियो मे दूर-दूर तक टोनही ताई के स्वर्गवास की चर्चा बिजली की तरह फैल गई। मुहल्ले वाले मृत्यु का समाचार सुनते ही ताई के दरवाजे पर जमा होने लगे। घर के अन्दर स्त्रियो की भीड क्रमश बढने लगी। कन्या ने जादू-टोना का सामान पहले ही साफ करवा दिया था। वह नही चाहती थी कि ताई के अन्त के साथ भी इस प्रकार का कोई प्रसग जुडे। कन्या सज्जन के बिना घबरा रही थी। लोगो ने कहा कि विमान बनेगा, ताई बाजे-गाजे से पैसे-मखाने लुटाती हुई गगा जायेगी। कन्या ने दीवान जी से आवश्यक खर्च के लिए कह दिया था। लाला जानकीसरन एक बार दर्वाजे पर आये, सज्जन के बारे मे पूछा, कर्नल के सम्बन्ध मे भी पूछा और दोनो को उपस्थित न पा लौट गए।

जनता की जबान पर ताई धन्य-धन्य हो रही थी। उनके इधर के कार्य समाज मे खूब ही सराहे गए थे। गगा दशहरे के दिन ताई का देहान्त हुआ यह बात उनके सीधे स्वर्ग जाने के सबूत मे पेश की जा रही थी।

सज्जन लौट आया। ताई की मृत्यु के समाचार ने उसे बडा दु ख पहुँचाया था। ताई उसके जीवन मे अत्यन्त निकट आ गई थी। आँगन मे नहलाई-धुलाई ताई की लाश चुनरी उढा कर रक्खी गई थी। सज्जन के लिए ताई का चेहरा खोलकर दिखलाया गया। ताई सुहाग लेकर मरी थी, इसलिए उनकी कघी-चोटी की गई थी, माँग मे सेन्दुर भरा हुआ था, माथे पर टिकुली, नाक मे नथ, कानो मे बाले,—सज्जन ने ताई को कभी इस रूप मे नही देखा था। उनके चेहरे पर शान्ति विराज रही थी। उनके जीवन भर का सघर्ष मृत् झुर्रियो मे शान्त हो गया था। ताई के माथे पर हाथ रखकर सज्जन बिलख-बिलख कर रो उठा। कन्या, तारा और वर्मा की आँखो मे आँसू अविराम बह रहे थे।

दोपहर ढल गई, तब कही जाकर फोन पर फोन और बुलावे पर बुलावो के बाद राजा साहब के बडे सुपुत्र पधारे। तब तक ताई के दरवाजे पर, फटकिया मे और बाहर गली तक लोगो की भीड भर गई थी। घटा-शख-घडियाल के साथ ताई का विमान उठा। बैड बाजा बजने लगा। मुहल्ले के दो नवयुवक विमान पर मोरछल डुलाने लगे। सज्जन के दीवान जी ने हाथ ऊँचा उठाकर पैसे उछाले, झोलियाँ फैलाए भिखमगो की टोली झोलियो और जमीन पर गिरे पैसो को बटोरने और छीना-झपटी करने मे फुर्ती दिखलाने लगी। लोगो के सिरो पर गुलाल मला हुआ था। ताई का विमान फूलो की तरह लोग उठाए लिए जा रहे थे। जीवन भर ताई को छेड कर उनकी गालियो से अपना मनोरजन करने वाले बच्चे, बूढे-जवान अन्तिम बार ताई के साथ चले जा रहे थे। आज ताई की लाठी का भय न था, ताई उनके कन्धो पर थी, दिलो पर थी, जबानो पर थी। गलियाँ पार कर चौडी सडक पर आते ही सज्जन के दीवान जी ने चाँदी-सोने के फूल लुटाए। राजा साहब के बडे मुनुआ ने भी लोक-लाज के लिए दस रुपए के पैसे मँगवा कर लुटा दिए।

शाम को कर्नल ने किसी से ताई के स्वर्गवास का समाचार सुना। उसने यह भी सुना कि लाश कानपुर—गगाजी गई है। कर्नल को बडा दु ख हुआ लेकिन उसने महिपाल से नही कहा। शाम को द्वाराचार के लिए महिपाल ने बहुत बडा आयोजन किया था। बडे निमत्रण पत्र बाँटे थे परन्तु सज्जन और वनकन्या को नही बुलाया था। कर्नल पर अपना अधिकार जताने के लिए महिपाल ने उसे सुबह से ही बुला लिया था। कर्नल को वहाँ कुछ काम तो था नही, खाली बैठे-बैठे वह ब्याह के घर की चहल-पहल और रीति-रसम देखता रहा। जनवासा कार्लटन होटल के पाँच कमरो मे दिया गया था। बारात आते ही मिर्चबान गया, यानी कालीमिर्च पडा हुआ एक घडा शर्बत जनवासे भेजा गया। फिर दिन भर नाश्ता-फल-मिठाइयाँ खाने-पीने का सामान, आदि जाता रहा। शाम को सात बजे न्यौतनी की रस्म हुई। नाऊ बारात को न्योता देने गया। महिपाल के घर आमत्रित लोगो की भीड जुडने लगी। सेठ रूपरतन के विशाल लॉन मे प्रीति-भोज का आयोजन किया गया था। प्रतिष्ठित नागरिको मे दो मत्री तक मौजूद थे। महिपाल इससे बेहद प्रसन्न था, लोगो मे कहता फिर रहा था कि अगर यह नैनीताल का सीजन न होता तो स्वय पन्त जी महाराज और गवर्नर मोदी तक उसके यहाँ अवश्य पधारे होते।

बारात घर के निकट पहुँचने का समाचार मिला। लोग अगवानी के लिए सडक पर खडे हो गए। फिर लखनऊ के बाजपेई और बाला के शुक्ल अपने-अपने बडप्पन को लेकर प्रथानुसार सडक पर अड गए। लडके वाले एक कदम आगे बढकर रुके, लडकी वाले भी रुक गए। लडके वाले के यहाँ भीड तो थी, बरातियो मे प्रतिष्ठित लोग भी थे, मगर लडकी वाले के यहाँ बडे-बडे धनी-मानी, अफसर, डॉक्टर, साहित्यिक, पत्रकार और मिनिस्टर तक उपस्थित थे। लडके वालो ने फिर भी अपने बडप्पन की आन निभाई और आगे न बढे। इस तरह कदम-ब-कदम तकल्लुफ होने के कुछ देर बाद महिपाल और डाक्टर जयपाल आगे बढकर समधियो के आगे झुक गए। फिर मिलनी हुई।

पार्टी के समय कर्नल ने अपने प्रबन्ध-कौशल का जबर्दस्त परिचय दिया। मेहमानो के बिदा होने के बाद कर्नल ने महिपाल से छुट्टी माँगी। महिपाल के बहुत आग्रह करने पर चलते समय उसने बर्फी से मुँह जुठला जरूर लिया पर उससे खाया न गया। महिपाल और सज्जन मे पडी फूट से कर्नल का मन अत्यन्त खिन्न था। महिपाल के व्यवहार ने उसे बेहद दुखी किया था। लौटते समय कर्नल ने सज्जन की कोठी पर जाकर पता लगाया। कन्या से भेंट हुई। कर्नल ने अपनी मजबूरी जाहिर की कि वह दिन मे नही आ सका। कन्या से ही उसे पता लगा कि दाग देने के लिए राजा साहब के सुपुत्र ने सज्जन को आदेश देकर पीछे हटा दिया था। यद्यपि सज्जन के मन मे ऐसी कोई बात तब तक उठी ही न थी फिर भी सज्जन को इससे बडी चोट पहुँची। इसके बाद तो वह लाश के साथ कानपुर भी नही जाना चाहता था, बाद में कन्या के आग्रह से गया।

सुनकर कर्नल हँसा, बोला—"यह दाग देने की बात भैया साहब का कानूनी टोटका है। दाग देने से सज्जन कही ताई की बची-खुची मिल्कियत का हकदार न बन जाए, इसलिए यह सफाई पहले से ही कर ली।"

"कैसे नीच होते हैं यह लोग जो हर अवसर पर पैसे ही को देखते हैं!"—कन्या ने कह कर एक ठडी साँस छोड़ दी।

५१

ताई के मरने के दूसरे ही दिन सज्जन को राजा साहब के वकील का नोटिस मिला। नोटिस द्वारा तुरन्त ही हवेली को खाली करने का आदेश दिया गया था।

सज्जन इसकी आशा भी करता था, परन्तु कन्या की जमी-जमाई पाठशाला को उठाकर वह कहाँ ले जाय ? यो तो अस्पताल के लिए खरीदे गए मकान मे भी वह ले जाता, परन्तु वहाँ प्रसूतिका-गृह के लिए स्थान मे कमी पड जाने की सभावना थी, साथ ही पाठशाला का शोर प्रसूतिका-गृह के लिए उचित न होता। सज्जन और कन्या दोनो ही इस विषय को लेकर बडी चिन्ता करने लगे। सज्जन ने प्रस्ताव किया कि एक बार वह स्वय राजा साहब के पास जाकर हवेली को किराये पर ले लेने की बात उठायेगा। कन्या बोली कि राजा साहब इसे स्वीकार नही करेगे। और हुआ भी यही। राजा साहब ने अत्यन्त आत्मीयता प्रकट करते हुए, सब कुशल-क्षेम पूछ कर कहा—"मै तो भैया अब सब माया-मोह छोड चुका हूँ। अन्तकाल मे हरिनाम ही बस मेरी पूँजी है। तुम राजा भैया से बात करो, वही सब देखते-सँभालते है।"

भैया साहब से मिलन पर सज्जन को दो कडवी बाते सुननी पडी। वे बोले—"हमारे पुरखो की हवेली हिन्दू धरम की कबर नही बनेगी लाला सज्जनमलजी। बडी अम्मा के रहते उनका अधकार था। बाकी अब तो बाबू जी उसमे हमारी दादी के नाम से वैदिक पाठशाला खोलने की बात तै कर चुके है।"

सज्जन चुप हो गया। उसने फिर दूसरी बात उठाई, कम से कम एक महीने की मोहलत माँगी। भैया साहब मीठे होकर बोले—"हमारी बात को गलत न समझना सज्जन मल। हमारी तरफ से महिना क्या दो महिने ले लो। हमारा-तुम्हारा कई पुश्तो का ब्यौहार है। पर बात यह है कि पबलिक वहाँ तुमसे और खासतौर पर तुम्हारी कायथ-बीबी से बहुत खिलाफ हो गई है। हम तो हवेली से उस दूसरे किरायेदार को भी निकालना चाहते है। उसकी भी तो कायथ-बीबी है न!"

सज्जन को बहुत बुरा लगा, फिर भी बडे सयम से काम लेते हुए उसने कहा—"पबलिक हम मे कितनी खिलाफ है इसकी चर्चा आप रहने दीजिए। और ये अन्तर्जातीय शादियाँ भी, बुरा न मानियें, अब तो और होगी, अधिक से अधिक होगी। आपकी एक क्या दस करोड वैदिक पाठशालाएँ समाज को बदलने मे रोक नही सकेगी, देख लीजिएगा।"

भैया साहब धर्म के आवेश मे आ गये, आँखे निकालते हुए बोले—"बडे-बडे सिकन्दर, बाबर और अँगरेज तो हमारे लाखो-करोडो बरस पुराने पवित्र हिन्दू धर्म को डिगा नही सके तुम—।"

"हम नही, समय उसका विकास करेगा। हम हिन्दुस्तान के धर्म को तनिक भी धक्का नही पहुँचा रहे। हाँ, उसके ढोंग को धक्का क्या एकदम ढा कर रहेगे देख लेना।"

"तुम हमको चुनौती देना चाहते हो, सज्जन, तो हम चुनौती भी मजूर करते है। मरभुखो के आगे कितने जूठे टुकडे डालोगे ? मरभुखे लाखो है सज्जन।"

"यही हकीकत तुमको खा डालेगी !"

भैया साहब बडी जोर से हँस बोले—"सज्जन, दाई से पेट छुपाने की कोशिश करना बेकार है। मरभुखा की आड लेकर तुम्हारे इस बिजनेस को हम सब खूब समझते है, लेकिन एक दोस्ताना सलाह हमसे भी लिए जाओ। तुम्हारी यह तरकीब जमीदाराना तरकीब है, ब्यौपाराना नही। तुमने जो पालिटिक्स सोची है उसे हम चार आदमी मिलकर साल भर मे जहन्नुम रसीद कर देगे। (हँसकर) तुम्हारे सात-आठ लाख—हद दस लाख हमारी तरकीबो के आगे मिनटो मे बारूद की ढेरी की तरह उड जायेगे। हमारा कुछ नही विगडेगा। हम धर्मादे की रकम बढादेगे—इन्कम टैक्स सुपर टैक्स से थोडी बहुत मुकती ही पा जायेगे।"

सज्जन भी उसी तरह शान्त स्वर मे हँसकर वोला—"चलो, इस बहाने तुम लोग पब्लिक की भलाई के लिए कुछ रुपया तो खर्च करोगे। और रहे मेरे दस लाख, सो वह बारूद की ढेरी की तरह उड भले ही जाये मगर तुम लोगो के करोडो रुपयो को साथ ही साथ उडा डालेगे। इसमे बहस की गुजाइश नही, आगे अपनी आँखो देखना।" कहकर सज्जन उठ खडा हुआ। चलते-चलते उसने मुडकर कहा—"तुम्हारी नोटिस का कानूनी जवाब पहुँच जाएगा लेकिन मै कहे जाता हूँ, जब तक मुझे दूसरी जगह मिल नही जायगी, हवेली नही छोडूँगा। हाँ, जल्द से जल्द दूसरी जगह जाकर देखूँगा।"

भैया साहब गरजे, बोले—"हवेली पन्द्रह दिन मे खाली हो जानी चाहिए सज्जन मल।"

"मै कोशिश करूँगा।" सज्जन ने ठडे स्वर मे कहा।

भैया साहब कुर्सी से उठ खडे हुए बोले—"कोशिश करोगे ? तब तीन दिन मे खाली हो जाए।"

"मै कोशिश करूगा।" सज्जन ने फिर उसी तरह कहा।

भैया साहब दो कदम तैश मे आगे बढे, बोले—"क्यो पुरखो के रिश्ते बिगाडते हो सज्जन। वरना फिर न कहना कि आपुस मे तबाही फैला दी।"

सज्जन वापिस लौटा, पास आया बोला—"मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ, मेरा कोई पोलिटिकल इरादा नही। मै एक सामाजिक प्रयोग कर रहा हूँ।"

"यही तो तुम्हारी सबसे बडी पौलिटिक्स है। अच्छा, हम तुमसे कहे, तुम अपने बैंक का आइडिया ड्राप कर दो और फिर करो सामाजिक प्रयोग। थोडा बहुत नया जमाना ही लाना चाहते हो न—ले आओ। बस, अभी मुहल्लो मे मुसलमान, किरस्टान से शादी-ब्याह का रिवाज न खोलना, बाकी जात-पाँत तोडक मैरिजे भी होने दो। बाबू जी के रहते हुए मै इस काम मे खुलेआम तो नही पर चुपचाप तुम्हारी मदद भी करूँगा। दस और बडे-बडे आदमियो की भी मदद दिलवा दूँगा "

भैया साहब ने काफी देर तक ठडा मीठा लॅक्चर पिलाया—'यह करवा दूँगा और वह करवा दूँगा।" सज्जन ने भी उतने ही शान्त मन से सुना, फिर बोला—"बैंक बन्द

कर दूँ तो मेरे सामाजिक प्रयोग पूरे कैसे होगे ?"

"भई, छोटे स्केल मे करो अपने प्रयोग । थोडा चन्दा मै लगवा दूँगा तुम्हारा ।"

"चन्दे की रकम पर जनता मे आत्मशक्ति कैसे आएगी । अच्छा, एक काम कीजिए आप," सज्जन ने एक प्रस्ताव किया—"आप—या डाइरेक्टली लाला जानकीसरन—और जो वहाँ के दूसरे महाजन है जिन्हे मुहल्लो या वार्डो के सहकारी पूँजी वाले बैको के खुलने से अपने लिए खतरा नजर आता है वह एक तरह से दूर भी हो सकता है । आप भी हमारी सहकारी पूँजी मे आइये और उसे भी अपना एक धन्धा मानकर उचित मुनाफा लीजिए ।"

भैया साहब बोले—"हम आपके बैक मे शामिल होने को तैयार है मगर एक शर्त पर, यो शेयर चाहे एक ही एक रुपये के रहे मगर बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स मे वही चुना जा सकेगा जिसके पास कम से कम पाँच सौ शेयर हो ।"

सज्जन बोला—"आप पब्लिक सहकारिता के नाम पर प्राइवेट धन्धा फैलाना चाहते है ? धन्धा जरूर फैलाइये मगर सार्वजनिक स्तर पर डाइरेक्टरो के बोर्ड मे आने के लिये एक रुपये वाला भी उतना ही अधिकारी है । हमे डाइरेक्टरो मे केवल धन्धा चलाने वाले नही, बल्कि सार्वजनिक लाभ के लिए धन्धे चलाने वाले योग्य लोगो की जरूरत है ।"

भैया साहब ने गभीरतापूर्वक सिर हिलाया, फिर हँस कर बोले—"बिनाश काले बिपरीत बुद्धी । खैर हवेली तीन दिन मे खाली कर दीजिएगा लाला सज्जनमल जी ।"

यह कहकर भैया साहब ने जाने के लिए रुख फेरा । सज्जन को उनका यह लाट साहबी तेवर और उनका बार-बार 'लाला' और 'मल' जोडकर नाम लेना बेहद खला` यद्यपि यही उसका पूरा नाम था । स्वर मे तेजी लाकर उसने कहा—"आपसे कह चुका हूँ कि कोशिश करूँगा, वादा नही कर सकता और जब तक मुझे दूसरी जगह न मिल जाएगी तब तक कोई शक्ति मुझे ताई की हवेली से निकाल नही सकती ।"

राजा साहब के घर से लौट कर सज्जन बेहद चिन्तित हो उठा था । हवेली से कन्या के स्कूल को हटाना इतनी बडी समस्या न थी जितना कि विरोधी पक्ष द्वारा अपने सृजनात्मक सपने के नष्ट-भ्रष्ट किए जाने का भय । वह आगे वाली परिस्थिति को देख रहा था । उससे अधिक बडी और सगठित पूँजी उसके विरोध मे खडी हुई थी । उस पूँजी का दलगत स्वार्थ समाज की वास्तविक उन्नति नही होने देना चाहता था । और जनता यद्यपि बडी तेजी से उसकी तरफ खिच रही थी परन्तु सज्जन अब तक जनशक्ति पर हृदय से विश्वास न कर पाया था। वह सोचता था कि वे लोग जो उस समय उससे सहायता पा रहे है उनमे से अधिकाश यदि विपक्ष से रिश्वत लेकर सज्जन को धोखा दे जायें तब वह क्या कर पाएगा ? सज्जन की योजना प्रयुक्त होते-होते अब यदि पुरानी पड गई होती, लोगो से उसका घनिष्ठ नाता हो चुका होता तब अधिक चिन्ता की बात न थी । विपक्ष से जितनी भी चाले चली जाएँगी वे सब अधिकाश मे भेद भरी होगी । इसके अतिरिक्त ये महाजन लोग राजनीतिक पार्टियो को भी अपने सगठन में शामिल करेंगे । सज्जन उस परिस्थिति से निश्चय ही अपनी योजनाओ को बचाना चाहता था । जनता

जागे, जनता अपने हित और अधिकार को सही तौर पर पहुँचाने, यह सज्जन की हार्दिक इच्छा है लेकिन वह कौन सा ऐसा काम करे जिससे कि लोग उसका विश्वास कर सके, जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए वह किस प्रकार आत्मोत्सर्ग करे।

"साधन के लिए सहज उपाय है राम जी, हम गोमती तट पर आए है। मिलो ! "

—अपनी कोठी के कमरे मे अकेले बैठे विचार करते सज्जन को बाबा जी का स्वर फिर उसी तरह सुनाई दिया जैसे दो दिन पहले सुनाई दिया था। सज्जन आश्चर्य से स्तब्ध रह गया, उसके मन मे द्वन्द्व मच गया, कही यह भ्रम तो नही। कही ऐसा तो नही कि मेरा ही मन मुझे धीरज बँधाने के लिए इस प्रकार रूप धर कर मुझे सन्तोष देता हो। गोमती तट पर मिलने की बात अवश्य ही कसौटी बन सकती है, सज्जन ने तुरन्त ही ड्राइवर को गाडी निकालने का आदेश दिया।

सच—सच, शिवाले के बरामदे मे बाबा जी लेटे हुए थे, देखते ही उठ बैठे और सदा की भाँति हँस कर कहा—"आओ राम जी, बडी बाट दिखाई।"

सज्जन बोला—"मै परसो आप के यहाँ आ रहा था—"

"हाँ ! राम भक्तिनियाँ मर गई बिचारी ! हमारा बडा उपकार कर गई राम जी। गाँव मे ऐसा बढिया आस्रम जमा है कि उससे बडा लोकोपकार हुइ सकेगा, पाठशाला, ब्यायाम-साला सब कुछ सुचारु रूप से चल रही है राम जी। हम आज इसलिए आए है कि आप हमे एक ट्राक्टर खरीदवा दे। "

सज्जन बोला—"आप जो चाहेगे हो जाएगा पर मेरी एक शका का समाधान कीजिए।"

बाबा जी हसे—"उसमे काहे की सका राम जी, एक तुम्हारे पास टैलीफून है और दूसरा हमारे पास है।" कह कर बाबा जी फिर हँसे।

"पर यह सभव कैसे है ?"

"साधन से।"

"वह कौन-सा साधन है !"

"आत्म-सयम और ध्यान।"

"मन कैसे एकाग्र होता है ?"

"सतत चिन्तन से।"

"एक का सतत चिन्तन सभव नही, जीवन मे अनेकता जो इतनी है।"

"तो उसी अनेकता का विचार करो। अपनी इच्छा को अनेकता मे फैलाकर देखो, कहाँ उसका वास्तविक रस है। तुम सामाजिक कार्जों के लिए पहले अपनी सम्पत्ति दान करने मे हिचकते थे, फिर पता चला कि जन को धन से अधिक अपनाने की तुम्हारी इच्छा प्रबल है। अब तुम मे और जन मे भेद पडा है, जिसे तुम अधिक चाहोगे उसी मे तुम्हारा ध्यान भी अधिक लगेगा, चित्त भी एकाग्र होगा।"

"मै जन जीवन मे एक हो जाना चाहता हूँ।"

"तो निश्चय ही हो जाओगे।"

"आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। परन्तु मेरी जिज्ञासा अब भी वैसी की वैसी ही बनी

हुई है आप की रहस्यमयता के सबन्ध मे।"

बावा जी पालथी मारे तनकर सहज भाव मे बैठे हुए थे बोले—"राम जी, सत्य मानना। रहस्य मेरा नही, मेरे विराट का है। मै तो छण-प्रित-छण साधारणता—सहजता को ही साधता रहता हू, तुम्हारे मन मे अद्वितीय बनने की भावना है। अलग रह कर विराट को कैसे पहिचानोगे राम जी ?"

सज्जन नतशिर गभीर हो गया। बाबा जी बोले—"मेरे गुरू ने मुझे सेवा का मन्त्र दिया, कहा सबको मेरा ही रूप समझ कर सेवा करना। पढा-लिखा तो हूँ नही राम जी। हाँ, निस्ठा से इसी एक बात को लेकर चल पडा। इसी सेवा की इच्छा ने मन को एकाग्र कर अपनी सूक्छ्म और बिलक्छन सक्तियो के दर्सन करा दिए। कहते है कि इच्छा करने पर बायु रूप धारण कर कही भी सदेह पहुँचा जा सकता है। अभी हमने उस सक्ति के दर्सन तो नही किए। प्रभु की इच्छा होगी तो हो जाएंगे अन्यथा कोन चिन्ता है। मै केवल निस्काम सेवा का ब्रत लेकर परम तत्त्व की खोज मे निकला हूँ, मार्ग मे जो भी अनुभव होगा उसका ज्ञान लाभ लेकर चले जाएँगे। हमे और कोई चाह नही।"

सुनकर सज्जन ने दीर्घ निश्वास छोडी, कहा—"आपकी बाते आसानी से समझ मे आने वाला रहस्य है मगर रहस्य फिर भी है।"

"आदत जो नही पडी राम जी। फिर रहस्य नही लगेगा क्योकि वह दैनिक जीवन का क्रम बन जाएगा। नई राह पर चलने मे सकोच और अटपटापन मालूम हुआ करता है। बस, इतनी-सी बात है। अपने से पूछते रहो कि तुम्हारी इच्छा क्या है फिर अपना उत्तर सुनो, फिर गुनो कि उस इच्छा मे कौन-कौन सी बाते तुम्हे बिसेस रूप से रुचती हैं और कौन-सी बुरी लगती हैं, फिर उसे बुनो अर्थात् अन्वय करके देखो कि तुम्हारी रुचियो-अरुचियो के पीछे कौन से घरेलू, सामाजिक, भौतिक आधिभौतिक तत्त्व है और मूल तत्त्व क्या है, फिर उसे बुनो अर्थात् अपनी इच्छा का मूल तत्त्व पहचान कर उसे बिकसित करने के लिए विचारो और वस्तुओ के ताने-बाने से बाताबरण प्रिस्तुत करो। फिर इच्छा तुम्हे पहन लेगी राम जी और तुम इच्छा को पहन लोगे अर्थात् फिर इच्छा को लेकर तुम्हारी द्रिस्टि कही उलझेगी नही। तुम्हारे द्वारा प्रत्येक छण मे जो भी ब्यापार होगा, तुम्हारी इच्छानुकूल होगा। उसमे तुम्हे अपनी रुचि का परिचय मिलेगा और सक्ति को पहचानते हुए ऐसी अनेक बिलक्छणताओ को आप ही आप अनुभव कर लोगे जो तुम्हे आज रहस्य सी लगती हैं। अनुभव का मार्ग सरल होता है रामजी केवल अभ्यास की आवस्यकता है।"

सज्जन बाबा जी द्वारा कही जाने वाली आसान बातो से प्रभावित हो मौन हो गया। वह सोच रहा था—बहुत गहरे में सोच रहा था, परन्तु उसी तरह जैसे मनुष्य नींद में सपना देखता है, होश और बेहोशी दोनो ही मिश्र स्थिति मे वह गुम हो गया था।

महिपाल पर मुकदमा चलाने का मानसिक हठ और भैया साहब, लाला जानकीसरन, रूप रतन आदि का सगठित विरोध उसकी इच्छा की कसौटी पर चढ रहे थे। दो दिन पहले कन्या द्वारा कही गई बात उसे इस समय फिर याद आ रही थी और इस समय हठ रहित हो उसका मन साफ-साफ यह पहचानने लगा कि ईर्ष्या की भावना उसमें है,

सदा से है, वह अद्वितीय ही रहना चाहता है। परन्तु यह चाहना क्या ठीक है ? यह चाहना निरी व्यक्तिगत हे, साथ ही मूर्खतापूर्ण भी। आज समाज के साथ, इतने विविध व्यापक और विशाल जीवन के साथ कौन व्यक्ति अद्वितीय हो सकता हे ? हाँ, इस प्रकार वह अद्वितीय अवश्य है कि जीव सब मे एक है, जीव अद्वितीय है। सज्जन यदि इस अद्वितीयता को पहचान ले तब किसी से ईर्ष्या-द्वेष नही रह जायगा। पर यही उसे भय लगता है जब दूसरो के ईर्ष्या-द्वेष भरे विरोधों से घिरेगा, दूसरो के झूठ की फाँसी उसके गले मे पडेगी, तब क्या वह ईर्ष्या-द्वेष किए विना बच पाएगा ? जो मनुष्य का साधारण गुण-अवगुण हे उससे वह भला कैसे बच सकता है। सज्जन बाबा जी से मिलने के बाद लौटते समय विचारो से गुथा चला आ रहा था। सेठ रूपरतन की कोठी रास्ते मे पडी। अपनी झडियो और सजावट-स्वागतम् के कारण दृष्टि मे अटकी, महिपाल का ध्यान आया, सज्जन का मन थम गया, मन मे ललक-सी आई कि महिपाल से मिलकर भाँजी के विवाह पर वह उसे बधाई दे दे। निमत्रण ? —निमत्रण नही आया न सही, वह ईर्ष्यालु होकर क्यो सोचे, महिपाल से उसकी अनेक वर्षो की गहरी दोस्ती रही है—वह इस बात को ही क्यो न अपने ध्यान मे रक्खे ? उसने ड्राइवर को गाडी रोकने का आदेश दिया। गाडी रुकते-रुकते तक उसने सोचा कि साथ मे वधू के लिए कुछ भेट भी ले जानी चाहिए। ड्राइवर को हजरतगज चलने का आदेश मिला, चलते-चलते विचार आया कि प्रेजेन्ट ले जाने से महिपाल कही यह न समझे कि मैं अपना बडप्पन जताने आया हूँ। ड्राइवर को गाडी लौटाने का आदेश मिला, गाडी लौट पडी परन्तु अब ड्राइवर यह जानना चाहता था कि गाडी लोटकर जाएगी कहाँ, सज्जन की कोठी या सेठ रूपरतन की कोठी ? उसने पूछा भी, सज्जन सुना-अनसुना कर गया। वह अपने मन मे अब यह निश्चय नही कर पा रहा था कि ऐसी हालत मे वह महिपाल से मिलने के लिए जाए या नही। न जाने पर वह स्वय अपनी ही दृष्टि मे ईर्ष्यालु सिद्ध होता था, जाने मे उसे सकोच था, अपमानित होने का भय था।

गाडी उसकी कोठी के पास आ गई। ड्राइवर ने फाटक की ओर उसका रुख किया। सज्जन ने तुरन्त आदेश दिया—"रूपरतन की कोठी चलो!"

उस समय महिपाल के यहाँ छोटी 'बडहार' हो रही थी। महिपाल और जयपाल वर के मामाओ से दही-शहद युक्त पान एक दूसरे की छाती पर चिपका कर मिलनी मिल रहे थे और इस मिलनी के समय महिपाल का मन अन्दर ही अन्दर द्वेष के कारण जला जा रहा था। वर के मामाओ के कारण इस विवाह मे बडी बदमजगी आ गई थी। बरात के जनवासे मे पहुँचते ही ठेठ बैसवाडे के निवासी इन मामाओ ने उसे और तमाम लडकी वालो को खून के आँसू रुलाना आरभ किया था। कल से अब तक पग-पग पर महिपाल का अपमान किया गया। वेतुके समय अनकटोटी फरमाइशो के मारे वर के बडे-छोटे और मंझले मामाओ ने लडकी वालो को बुरी तरह परेशान कर डाला। लडके के बडे मामा, महिपाल के ननिहाली रिश्ते से, उसके दूर के सबन्धी भी लगते थे। वे इसीलिए उसे बार-बार नाना-मामा के टुकडे तोडने का ताना कसते, कहते कि तुम्हारी माँ ने अपने मैके से जो माल मारा है वह निकालो, बडे-बडे रईसो-मिनिस्टरो से होड लेते हो तो हमारी

अमुक या अमुक फरमाइशे पूरी करो। कल से आज तक उसे मुँह बन्द कर जितना अपमान सहना पडा है उतना पहले कभी नही। डॉक्टर जयपाल एक तो हरदम सामने रहते ही न थे और यदि रहते भी तो डपट पडते थे। परन्तु महिपाल अपने छोटे भाई को बार-बार शान्त कर देता, हुज्जत करने पर वे लोग और भी तीखी बाते सुनाते। महिपाल और जयपाल की स्वर्गीया माता के सबन्ध मे छीटाकशी कर बैठते थे।

मिलनी के समय ही महिपाल को सज्जन के आने की सूचना मिली, उसे आश्चर्य हुआ, साथ ही मन ही मन कट भी गया। उसने सज्जन और कन्या को जान-बूझ कर नही बुलाया था। उसे बतलाया गया कि सज्जन सेठ रूपरतन के कमरे मे है और कर्नल भी वही बैठा है।

रूपरतन ने सज्जन की बडी आव-भगत की, फिर छेड कर उसके ट्रस्ट और आन्दोलन आदि का चर्चा चलाया। बातो-बातो मे रूपरतन ने कहा—"जब तक हिन्दुस्तान मे अनगिनत ऊँची-नीची जातियाँ है, तब तक इस देश मे जनता की सगठित शक्ति से कोई काम बन ही नही सकता। और जातियो को तोडना किसी के बस की बात नही। न जाने कितने तूफान आए और गए, परन्तु यह असख्य जातियाँ भारत की छाती पर मूँग दलती रही। तो मैं तो अब सीरियसली यह सोचने लग गया हूँ भाई जान, कि हम फैशन मे समाज सुधार या सोशलिज्म की चर्चा भले ही करते रहे, बेचारे गरीबो को तसल्ली देने के लिए इस तरह की चर्चा जरूरी भी है, पर सच्चे मन से किसी समझदार हिन्दुस्तानी को इन विलायती सिद्धान्तो पर विश्वास नही करना चाहिये। नौजवानी मे मैं भी कट्टर सोशलिस्ट था, अब भी वही व्यूज (दृष्टिकोण) है मेरे। मगर अब मैं समझ गया हूँ कि हिन्दुस्तानी जनता के लिए यह सब उपयोगी नही। कम से कम पचास बरस तो यहाँ खास-कुछ नही बदलेगा, भविष्य की बात भविष्य जाने।"

सज्जन को बुरा लगा, तुरन्त ही मन मे आया कि उसे बुरा क्यो लगा—बुरा क्यो लगना चाहिए? रूपरतन को ऐसे ही समाज मे रहने की इच्छा है जब कि स्वय उसकी इच्छा है कि वह ऐसे समाज मे रहे जहाँ व्यक्ति-व्यक्ति मे अनुचित असमता न रहे। यदि उसकी इस इच्छा मे सत्य है तो वह पूरी होकर ही रहेगी। उसे स्पष्ट समझ मे आया कि भैयासाहब, रूपरतन, महिपाल आदि की बातो को बुरा लगने के दृष्टिकोण से अपनाना नितान्त गलत है। इन बातो मे उसकी इच्छा-शक्ति प्रबल होनी चाहिये। इस प्रकार का विरोध उसकी इच्छा शक्ति के लिए परीक्षा बनकर आता है। उसने रूपरतन से कहा—"आप लोगो की बातो का मैं बुरा नही मानता। और आपकी बातो के सत्य को तो मैं बिल्कुल नही मानता। मैं आपके विरोधो से सविनय जूझने को तैयार हूँ।"

"अमा गाधीजी बन गए?" रूपरतन ने हँसकर ताना फेका।

सज्जन मुस्कुराया, बोला—"गाधीजी हिन्दुस्तानी थे, मैं भी अब हिन्दुस्तानी बनने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"तो अब तक क्या विलायती थे?"

"विलायती भी था और हवाई भी। न अपना था न पराया—अब अपना हो गया हूँ।"

महिपाल आया। वह इस समय अत्यन्त खिन्न था। कमरे मे आकर सज्जन से नजर न मिलाते हुए सोफा पर थक कर बैठ गया। सज्जन ने कहा—"मै तुम्हे बधाई देने आया हूँ।"

"थैंक्स! मै तो तुम्हारे बजाय तुम्हारे वकील की नोटिस का इन्तजार कर रहा था। सुना है मुझ पर मानहानि का मुकद्दमा चलाने वाले हो।"

सज्जन ने शान्त भाव से उत्तर दिया—"इरादा तो था लेकिन फिर देखा कि अभी मुझमे ही ईर्ष्या भाव बहुत है। इस कारण से मै खुद ही अपनी मानहानि किया करता हूँ। मन की अदालत मे अपना मुकद्दमा जीत जाऊँ तब किसी लायक बन सकूँगा।"

कर्नल के चेहरे पर बच्चो जैसी प्रसन्नता छा गई बोला—"सज्जन तुम महान हो! मै महिपाल के मुँह पर कहता हूँ उसमे तुम्हारे जैसी ग्रेटनेसता (बडप्पन) है ही नही।"

महिपाल को अपने अन्दर बहुत छोटापन महसूस हो रहा था। यह छोटापन उसे बेहद चिढा रहा था। जो तेज वह अपने समधियो के सामने नही दिखा पा रहा था, वह तेज तीखा व्यग बन कर इस समय सज्जन के सामने फूट पडा। कर्नल की बात का जवाब देते हुए उसने कहा—"बहुतो का बडप्पन देखा है मैंने, इनकी तो हैसियत ही क्या है। बडे-बडे करोडपतियो को भी देखा है मैंने। मेरे सामने कोई मुँह नही खोल सकता। आदर्श की बात पर सब को एक सिरे से फटकार रख देता हूँ। मैं किसी के पैसे मे नही डरता और न मुझे पैसे की परवाह है। कल से आज तक पानी की तरह रुपया बहाया है मैने।"

"हाँ भैया, जिसे मुफ्त की रकमे हाथ लग जायँ वह भला पानी की तरह से क्यो न बहाएगा?"—सेठ रूपरतन चिढ कर बोले।

महिपाल ने समधियो द्वारा बराबर अपमानित होने के कारण इतनी देर तक जो कष्ट सहा था वह सज्जन के बहाने अपना प्रतिकार लेते हुए आवश्यकता से अधिक उबल कर उसके मन से फूट निकला। सेठ रूपरतन इससे बुरा मान गए। महिपाल रईसो से होड ले रहा था। उन्होने महिपाल का मिजाज ठिकाने पर लगा देने की नीयत से अपनी बात और आगे बढाई। सेठ रूपरतन ने उसकी बडी मदद की थी। गहने बिकवाने के नाम पर स्वय खरीद कर महिपाल के लिए चालीस हजार की रकम खडी कर दी। शादी के लिए अपनी कोठी तक दे रक्खी है—फिर भी यह व्यक्ति इतना मगरूर और एहसान-फरामोश निकला कि स्वय उनके सामने अपनी आन और शान की शेखी बघारता है! सेठ रूपरतन फिर खूनी चुटकी लेकर बोले—"मामा के यहाँ डाका पडा, महिपाल शुकुल के भाग जाग गये। शुभचिन्तक बन कर डाकू की जान ले ली और डाकूओ के मत्थे दोष मढ, लूट चुराकर आप धन्ना सेठ बन गए!"

कर्नल और सज्जन एक दूसरे का मुँह देखने लगे! महिपाल पागल हो उठा; गरज कर बोला—"मेरा अपमान मत करो! मै खून पी लूँगा!"

सेठ रूपरतन हँसकर बोले—"हाँ भई, शान-बान वाले रईसे-आजम जो ठहरे! खून क्यो न पीयेंगे हमारा! लेकिन ठहर जाओ, अभी तुम्हारे ममेरे भाई को भी यहीं बुला

लूँ। मै उन्हे वह हार, जिसे कि तुम अपनी माँ का बतलाते थे, दिखा कर तुम्हारे मित्रो के सामने दुबारा पूछ लू कि हार किसका है।" सेठ रूपरतन ने टीपॉय पर रक्खी बिजली की घटी का बटन दबाया। सज्जन ने आगे बढकर रूपरतन के हाथ जोडे कहा—"इस तरह इज्जत न लो, महिपाल हम लोगो का—सबका पुराना दोस्त हैं।" कर्नल भी गिडगिडाई हुई मुद्रा मे सेठ रूपरतन को देख रहा था। महिपाल पत्थर की मूर्ति की तरह सिर झुका कर बैठ गया। रूपरतन ने एक नजर महिपाल पर डाल कर कहा—"अब कहाँ गई वह शानबान ? दुनिया भर को आदर्श सिखाते हैं, और खुद ऐसी करतूते करते है!!"

सज्जन बोला—"होगा, जाने दो रूपरतन।"

"अजी, जाने तो दिया ही। ये तो इनकी अकड पर मुझे ताव आ गया। और चोरी की बात भी ऐसे खुली कि इनके ममेरे भाई मेरे बडे पुराने क्लास-फेलो है उन्ही के थ्रू मैंने इनको जाना था। शादी मे इनके यहाँ आए हुए है तो परसो ऐसे ही बातचीत मे उनकी खानदानी ज्वेलरी और डाके के नुकसान का तजकिरा छिड गया। मैंने सोचा कि महिपाल की मदर का हार भी तो आखिर इन्ही के यहाँ का है। इसी बहाने मैंने उनको उनके घराने की भी चीजे दिखला दी। देखने ही हैरत मे आ गए। बोले, तुम्हे कहाँ से मिली ये चीजें ? यह जेवर तो अभी डाके मे हमारे यहाँ से गए थे। मुझे तुरत यकीन हो गया कि महिपाल ने डाके की गडबडी मे यह चोरी की है। खैर, उनके सामने तो मैंने बात बना दी, मगर आज इनकी आदर्शो की अकड पर मुझसे रहा नही गया। चोर! एहसान-फरामोश कही का!!—थू है तेरी औकात पर। बडा ब्राह्मण आदर्शवादी, विद्वान, लेखक बनता है। सज्जन लाख बुरे-भले हो, अपना लाखो रुपया पानी की तरह दूसरो के लिए बहा तो रहे है। और यह चोरी के धन पर अकड कर पानी की तरह रुपया बहाने की शेखी बघारते है! हम खान्दानी रईसो से होड लेते है। आए बडे धन्ना सेठ कही के!"

महिपाल की गर्दन जा झुकी तो फिर उठ न सकी। परिस्थिति की विषमता लख कर सज्जन महिपाल से बिना कुछ कहे रूपरतन से बिदा लेकर चला आया। कर्नल भी उसके साथ ही साथ उठ आया।

महिपाल के लिए दुनिया भारी पडने लगी। हर दिशा, हर व्यक्ति उसे अपने को चोर कहता नजर आया। रूपरतन के कमरे से बाहर निकल कर महिपाल फिर अपने बारात-घर की तरफ न जा सका। सीधा फाटक से बाहर निकल आया। उसका समस्त अध्ययन, चिन्तन, मनन, लेखन, आदर्श और सिद्धान्त, सब कुछ व्यर्थ था! धन के लोभ ने महिपाल को अनायास ही चोर बना दिया। जिस रहस्य को उसने समस्त ससार से छिपा हुआ माना था, वह रहस्य—महिपाल का वह पाप—अनायास ही फूट पडा! चलचित्र की तरह उसे वह रात स्पष्ट दिखलाई दे रही थी, जब कि नाना के महल पर डाकुओ का हमला हुआ था। कितनी निर्भीकता और साहस के साथ उसने डाकुओ का सामना किया। अपनी गोली के शिकार, मृत डाकू को जोश मे पास से देखने की इच्छा जागने पर वह उसके पास गया उसके पास ही पडे हुए झोले मे गहनो का डिब्बा मिला और और देखते ही देखते उसकी नीयत बिगड गई। उसने वह डिब्बा झोले मे छिपा दिया। किसी को उस पर शक भी नही हो सकता था। दो डाकू भाग गए थे, उन्ही पर

जेवर ले जाने का आरोप मढा गया। महिपाल तो एक डाकू को मारने के कारण हीरो बन गया था। उस दिन का हीरो आज अपने अनन्य मित्रो के सामने चोर सिद्ध हुआ। अब वह सज्जन के सामने विद्रोह मे तनकर सिर नही उठा सकता। अब वह रूपरतन के सामने बराबरी से नजर उठाकर देख न सकेगा। कर्नल जैसे व्यक्ति, कल्याणी, बच्चे, जब यह जानेगे तो वह अपने घर मे रहने के योग्य नही रह जाएगा।

सिर झुका हुआ था, कदम बढते चले जा रहे थे। महिपाल का अन्तर असख्य यत्रणाओ से भर उठा था—'यह मैने क्या किया—क्या कर डाला।' यह ठीक है कि महिपाल ने कभी पैसे को पैसा नही समझा, सदा अभाव से जूझा, पैसे को इच्छा बनी रही, फिर भी उसने पैसे के आगे कभी प्रत्यक्ष रूप से सिर नही झुकाया—यद्यपि धनाभाव से उसका जर्जर अचेतन मन पैसे के आगे परास्त हो चुका था। तभी तो वह चोरी कर सका। पैसा उसकी सारी शक्ति को खा गया। शादी, ब्याह, मुडन, जनेऊ, बच्चो की पढाई हैसियत की चढाओढ, कल्याणी का हठ,—सबने मिलकर क्रमश उसे आदर्श भ्रष्ट कर दिया। कितनी लगन से वह अपने देश का सामाजिक-सास्कृतिक इतिहास बटोर रहा था। उसने अपने सारे जीवन की साधना लोभ के एक क्षण मे नष्ट कर दी। 'भोले! अब तो तेरा नाम लेते भी मन जलता है! मैने यह क्या किया? मैने बहुत बुरा किया।'

बस्ती से दूर महिपाल सन्नाटे की सडको पर जा रहा था। सिकदरबाग पार हुआ, काठ का पुल भी पार हुआ, निशातगज की बस्ती से बचने के लिए महिपाल गोमती के तट पर बढ गया—बढता ही चला गया।

दिन बीता, रात आई, दूसरे दिन घरवालो के लिए चिन्ता का वारापार न रहा। कल्याणी का मन तो प्रतिक्षण पति की आहट बन गया था। उसका मन केवल पति की आहट ही सुन पाता था और सब तरह गुम हो गया था। किसी को खबर ही न थी कि महिपाल अचानक कहाँ लापता हो गए। ब्याह की रस्मे और चहल-पहल बदस्तूर थी। सुबह तीसरा कलेवा हुआ, बडी बडहार हुई। बत्तासी के समय अर्थात् बरातियो की बिदाई की दक्षिणा बाँटते समय सभा मे महिपाल को बहुत याद किया गया। बिदा हुई शकुन्तला सबसे मिलकर फूट-फूट कर रोई। लडकी की बिदाई के समय घर मे चारो ओर आँसू उमड पडते है परन्तु कल्याणी के आँसू सूख गए थे उसकी आँखे फटी-फटी चारो ओर देख रही थी। दिन भर पति की आहट से मन बँधा रहने पर भी उसका शरीर मशीन की तरह काम में लगा रहा, वह काम भी अब समाप्त हो गया था। कल्याणी एकदम सूनी थी, अब तो आहटो के बहाने से भी उसका मन एकदम छूट गया था। घरातियो-बरातियो सब में महिपाल के लापता हो जाने को लेकर तरह-तरह की शकाएँ और चर्चाएँ फैलने लगी थी।

शकुन्तला की बिदाई के समय कन्या अकस्मात-सी वहाँ आ गई थी। उसका अति गभीर मुख देख कर कल्याणी एक क्षण उसे टकटकी बाँधकर देखती रही फिर अनायास उसके पास जा, बाँह पकड कर औरो से अलग ले जाकर दबे किन्तु दृढ स्वर मे पूछा—"कोई खबर लाई हो।"

"पहले तो बेटी के लिए सुहाग भेंट लाई हूँ।" कह कर कन्या कल्याणी से नजरें बचाती हुई, शकुन्तला के पास पहुँच गई। शकुन्तला अपनी कन्या मामी से भी भेट कर

रोई। कर्नल, सज्जन, कर्नल की पत्नी और अपनी ओर से कन्या वर वधू के लिए भेट लेकर आई थी। यद्यपि यह भेंट देने का समय न था पर इसे ही उपयुक्त समय बना कर दोनो मामाओ ने अपने मृत साथी की ओर से वर-वधू को राजसी उपहार भेजे थे, ऐसे उपहार जिन्हे देने के लिए ही महिपाल को टूट जाना पडा और फिर मर जाना पडा। कीमती फर्नीचर, थान के थान रेशम, जडाऊ जेवर, नई मोटरकार—अल्लम-गल्लम जो कुछ भी दो बदहवास मित्रो से अपने अन्तरग मित्र के अभाव मे खरीदते भरते बना, वह सब खरीद कर चार ट्रको मे भर दिया। सब मिलाकर लगभग चालीस-पचास हजार का माल था। कर्नल का ड्राइवर नई कार को लेकर आया था। कार फूलो से सजाकर भेजी गई थी। वर-वधू अपनी ही कार पर बैठ कर गए। महिपाल के मित्रो द्वारा दिए गए अटाटूट दहेज से चर्चा का विषय बदल गया था।

बरात बिदा हो जाने के बाद घर मे घरातियो की चहल-पहल तो भरपूर रही मगर काम के उत्साह को पाला मार गया। कन्या कल्याणीके साथ कमरा बन्द कर बाते कर रही थी, लडके-बच्चो मे इससे एक सनसनी सी फैल गई थी। कल दोपहर के बाद से जिनका पिता रहस्यमय ढग से गायब हो गया हो उन बच्चो की मन-स्थिति विचित्र हो ही जाएगी। इतने मे डॉक्टर जयपाल कही बाहर से आए और अपनी पत्नी को बुलाकर अलग एक कोने मे धीरे-धीरे बाते करने लगे। बच्चो के चेहरे अनबूझ पहेली की यन्त्रणा सहते-सहते दयनीय से लगने लगे थे। पत्नी से बाते करने के बाद डॉक्टर जयपाल बच्चो के पास आए, तप्पू से पूछा—"तुम्हारी माँ कहाँ हैं ?" डरे हुए तप्पू ने बन्द कमरे की ओर इशारा कर दिया। डॉक्टर ने दरवाजे पर थपकी दी, कन्या ने दरवाजा खोला, कल्याणी के देवर को देखकर एक ओर सटक गई। कल्याणी बीच कमरे मे बैठी अपनी दाहिने हाथ से बाँये हाथ की कलाई मे पडी चूडियो को जोर से दबाकर तोड रही थी। उसकी आँखे अब भी आँसुओ से सूनी थी। जयपाल ने रोकर कहा—"भाभी क्या कर डाला भैया ने यह !" और फिर वही धरती पर बैठ कर फूट-फूट कर रोने लगा, कन्या की आँखो से ताजे आँसुओ की झडी लग गई, बडे लडके, लडकी यह दृश्य देख कमरे मे झपट पडे। कन्या ने राज्यश्री को कलेजे से लगा लिया, बडे ने चाचा से पूछा—"पिताजी को क्या हुआ ?" जयपाल प्रश्न के उत्तर में और फूट कर रो पडे बच्चो के प्रश्न और तीव्र हुए तब उनको, घर भर को यह विदित हो गया कि महिपाल—किसी का पिता, पति, भाई-भतीजा—अब इस लोक मे नही रहा।

आज सुबह कर्नल नित्य की तरह विवाह के घर में न आकर सज्जन के घर पहुँचा। दोनो मित्र अकेले में बैठे बाते करते रहे। महिपाल की मति पर पश्चाताप करते रहे। सज्जन ने एक-दो बार अपना यह भय भी प्रकट किया कि लाज के मारे महिपाल कही कुछ कर न बैठे परन्तु कर्नल का विश्वास था कि ब्याह की रसमे पूरी होने से पहले महिपाल कुछ भी नही करेगा और इसीलिए कि महिपाल को शर्म न लगे, वह आज सबेरे वहाँ नही गया था। हाँ, इस बात का भय उसे भी था कि ब्याह का काम निपटते ही महिपाल आत्म-हत्या का प्रयत्न कर सकता है। वह शाम को बरात की बिदाई के बाद से महिपाल पर पूरी निगरानी रखने की बात सोच रहा था।

वनकन्या कर्नल के आने के थोडी देर बाद ही नियमानुसार अपने काम पर चली गई थी। लगभग ग्यारह-साढे ग्यारह बजे सज्जन को एक दैनिक पत्र के सपादक का फोन मिला। उससे तुरन्त ही अखबार के दफ्तर मे आने की प्रार्थना की गई थी।

सज्जन के पहुँचने पर सपादक महोदय ने उसके सामने एक पत्र रख दिया। लिखावट महिपाल की थी। किसी स्कूली छात्र की अर्थमेटिक की रद्दी नोटबुक के रद्दी कागजो की सादी पुश्त पर पेन्सिल से लिखा हुआ पत्र था—

"सपादक जी,

यह मेरा अन्तिम लेख है, पत्र के रूप मे। इसे प्रकाशित देखने के लिए मै न रहूँगा। मेरा कर-बद्ध हो, सानुरोध निवेदन है कि इसे अपने पत्र मे यथासभव शीघ्र स्थान देकर एक मृत व्यक्ति की अन्तिम इच्छा पूरी करे। मै सार्वजनिक रूप से एक अपराध स्वीकार करता हूँ, लोभ के एक क्षण ने मुझे चोर बना दिया। मैंने अपने ममेरे भाई के घर—उस घर मे जहाँ कि मै पला था, डाका पडने के अवसर पर उपस्थित था। एक डाकू को मार कर मैंने उसकी जमा लूटी, वह जेवर मेरी ननिहाल ही के थे। मैंने तुरन्त उस थैले को पास ही रक्खे हुए चूने के ऊँचे ढेर मे छिपा दिया। दो डाकू भाग भी गए थे, उनके साथ कुछ गहने और नकद चला गया था, मेरे द्वारा छिपाए गए गहने भी उन्ही डाकुओ के अपराध मे जोड दिए गए। यह चोरी करते समय मेरी आत्मा बहुत काँपी थी परन्तु अभाव के तर्कों ने मेरी आत्मा को अपने सीखचो से जकड लिया। उन दिनो मेरी भाजी के विवाह की चिन्ता लगी हुई थी। मेरी पत्नी अपने जाति-समाज की परपरा के अनुसार ही उसका विवाह करने का हठ कर रही थी। उसके हठ मे समाज की नाडी बोल रही थी। मै स्वय भी अपनी मातृ-पितृ-विहीना भाजी का विवाह बहुत शानदार करना चाहता था। यही नही, मै हर काम बहुत शानदार ढग से करना चाहता था। ताल्लुकदारी के वातावरण मे पलकर मेरे सस्कार भी राजसी हो गए थे। उनके लिए, पिछले कुछ वर्षों से जब से कि मेरा आर्थिक जीवन सकटग्रस्त हो गया था, मेरे मन मे एक जबरदस्त अतृप्ति उत्पन्न हो गई थी। मेरी इसी हीन भावना ने औचक मे दबोच कर मेरे ईमान की हत्या कर डाली। मैंने सोचा यह धन मुझे ईश्वर से मिला है। एक के पास तो इतना धन है कि वह इन जवाहरात के चले जाने के बाद भी बडे हैसियतदार ही कहलायेगे। परन्तु इतने से मेरी भाजी के विवाह के लिए धन सग्रह की समस्या बडी आसानी के साथ हल हो जाएगी।

"आज अपने इस तर्क के खोखलेपन को अच्छी तरह से पहचान गया हूँ। चोरी करते ही मैं कायर हो गया था और कायर के तर्क प्रत्यक्षत' बडे क्रान्तिकारी लगते हुए भी नितान्त अशक्त होते हैं। मैंने अपने मन को झूठे तर्कों से बहलाया।

जो समाज व्यवस्था मेरे जैसे जागरूक व्यक्ति को अभावग्रस्त बना कर यो जीते जी मार सकती है वह अधिकतर अचेतनावस्था में, जड सस्कारो मे पलने वाले समाज को क्यो न पतन के उस गर्त मे गिरा दे जिसकी भयानकता से भरे विविध समाचार आप अपने पत्र में छापते है।

"अपनी कायरता को धोने के लिए मै स्वेच्छा से डूब कर आत्म-हत्या कर रहा हूँ।

"दूसरा अपराध यह भी स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपने परम मित्र, सुप्रसिद्ध और

सुयोग्य चित्रकार श्रीयुत सज्जन वर्मा के सपत्ति दान से ईर्ष्यालु होकर उनके उन सामाजिक आयोजनो का विरोध किया जो बरसो से मेरा आदर्श स्वप्न रहे है। मेरे व्यक्तित्व की यह सकीर्णता समाज मे सदा कलक रूप मे याद रक्खी जाए। इसे मै अपना ' ' से भी बडा अपराध मानता हूँ।

अधम

महिपाल शुक्ल"

पत्र के नीचे, पत्र से असबद्ध कुछ वाक्य लिखे थे "व्यक्ति व्यक्ति अवश्य रहे, पर उसके व्यक्तिवादी चिन्तन मे भी सामाजिक दृष्टिकोण का रहना अनिवार्य हो।—मै अकेला भी हूँ पर बहुजन के साथ मे हूँ, दुख-सुख, शान्ति-अशान्ति आदि व्यक्तिगत अनुभव है पर ये समाज मे प्रत्येक व्यक्ति के है, अतएव हमे यह मानना चाहिये कि समाज एक है—व्यक्ति तो अनेक है। सूर्य-चन्द्रमा-धरती यह सब एक—एक है—भले ही अनेक तत्वो से इनका निर्माण हुआ हो।"

सज्जन ने एक बार पत्र को पढा। वह स्तभित रह गया, फिर पढा तो पढते ही पढते पत्र हाथ से छूट गया और वह मेज पर सिर रख फूट-फूट कर रोने लगा।

कर्नल को सूचना हुई। डॉक्टर जयपाल को भी बुलाकर सूचित किया गया, पुलिस को भी सूचना दी गई। गोमती के किनारे-किनारे कुरिया घाट से लेकर बन्धे तक खोज की गई कि शायद कही महिपाल के कपडे रक्खे हुए मिल जायँ पर श्रम बेकार गया। कहाँ से महिपाल ने कागज और पेन्सिल पाया, किस समय आकर वह इस पत्र को सपादकजी के दफ्तर के आगे लगी हुई पत्र-पेटी मे डाल गया, कब और कहाँ प्राण दिए, यह सारे रहस्य महिपाल अपने साथ ले गया।

५२

महिपाल की मृत्यु के आघात ने कर्नल, सज्जन, कल्याणी, शीला और (इन सब की अन्तरग होने के नाते) कन्या पर भी अपनी एक स्थायी छाप छोडी। कुछ दिन तक तो सबके लिए ऐसा हो गया था कि मानो महिपाल अभी मरा ही नही, यही कही है, अब आता ही होगा।—या कभी उन्हे महिपाल अपने पास आया-सा जान पडता, कभी आवाज सुनी-सी लगती। लबी-लबी सिसकी जैसी साँसो के साथ चौक कर सभी के दिल अपनी विवशता लिए ऊँचे कही सूने मे आँसुओ भरी आँखे पसारते रोए है। सब के मनो ने अपने से लाखो सवाल पूछ डाले है। इन सब के जीवन से महिपाल क्या गया, जीवन का एक स्थायी क्रम उखड गया। एक स्पर्श, एक स्वर, रूप-वर्ण-गुण-अवगुण भरा एक जन—बन्धु—आत्मीय जरा-सी देर मे 'है' से 'था' हो गया।

जन्म-मृत्यु प्रकृति का नियम है। जन्म की खुशी और मृत्यु का शोक सदा से समाज

का व्यक्तिगत व्यापार रहा है और रहेगा भी। समय शोक को कम कर देता है। महिपाल यदि कठिन शारीरिक रोग से ग्रस्त होकर, भरपूर इलाज कर लेने के बाद मरा होता, या बुढ़ापे तक आयु भोग कर उसकी देह छूटी होती तो गम होता, मगर मन को बार-बार यो धक्के न लगते। महिपाल जैसे विचारक का एक गलत मोह मे पडकर उसके फलस्वरूप आत्महत्या करना एक ऐसा कचोट भरा सत्य था जिससे कि सज्जन को आँखे मिलाने के लिए बाध्य होना पड रहा था। महिपाल जैसी परिस्थितियो मे यदि सज्जन का जीवन बीता होता तो शायद उसका भी अत यो ही हुआ होता। सज्जन सोचने लगा ऐसा कौन-सा उपाय है जिससे कि आत्म-विश्वास और आत्म-बल खोकर मनुष्य यो बेहूदा ठोकरे खाने से बचाया जा सके।

सज्जन के सामने पुराना प्रश्न फिर ज्यो का त्यो आ गया। जिस देश मे कर्मयोग का सिद्धान्त है, वेद, उपनिषद, साहित्य, शास्त्र है, व्यास, वाल्मीकि जैसे युग-प्रवर्त्तक महर्षि है, इतना रस-ज्ञान है, अजन्ता, एलोरा, कोणार्क, दक्षिण भारत—सारे भारत मे व्याप्त अनुपम शिल्प है, सुनीतियाँ है, जिस देश का इतिहास इतना महिमामय है—वह देश जडता और गदगी मे रहना पसन्द करते हुए आज की भयकर अगति के रूप मे आत्म-हत्या क्यो कर रहा है। महिपाल और भारत अपने ज्ञान और अज्ञान को लेकर एक समान है।

महिपाल को भूलने के लिए सज्जन का मौन-हठ उससे कठिन श्रम कराने लगा। वह और कन्या घर-घर जाकर लोगो से उनकी समस्याओ की प्रत्यक्ष जानकारी करने लगे। गरीबी की महामारी तो आमतौर पर फैली-फैली ही हुई है, उसके अतिरिक्त हमारा देश समय के अनुकूल चलने के लिए नितान्त अशक्त है। समय के साथ चलने के लिए जिन सस्कारो का बल चाहिये उनके प्रति हमारा समाज अभी जागरूक नही।

—इसका कारण क्या है ?

हमारा देश विचारो और रीति-रिवाजो का एक महान अजायबघर है। सैकडो सदियो के रहन-सहन, रीति-बरताव और मान्यताओ को, जो आज भौतिक विज्ञान के युग मे एकदम अनुपयुक्त सिद्ध होती है, हमारा समाज अधनिष्ठा के साथ अपनाये हुए हैं। हर युग मे जो सुधार आये, जितने ऐतिहासिक प्रभाव पडे उनमे से अधिकतर आज भी हमारे सिर पर बने रक्खे है। हमारे घरो, गलियो मे रमे हुए साधु, बैरागी, फकीर हैं, चडी पाठ करने वाले पडित, ब्याह-मुडन, जनेऊ से लेकर मृतक सस्कार तक कराने वाले पडित, कथा बाँचने वाले पडित, शास्त्रार्थ करने वाले पडित, भूत झाडने वाले ओझा-सयाने, सनीचर का दान लेने वाले भड्डरी, टोना-टोटका, दहेज, ऊँच-नीच, तेंतीस क्रोड देवता—यह बेमतलब दिमाग खराब करने वाली दकियानूस बाते भरी हुई है। इनमें अध-विश्वास जमा होने के कारण हमारे समाज मे आत्म-विश्वास ही नही रहा। भौतिक विज्ञान की इतनी तेजस्वी प्रगति के युग मे ये तमाम पुराना ढाँचा अर्थहीन हो गया है। इन देवताओ से चिपकी मनुष्य की चेतना को तुरन्त मुक्त होना चाहिये। श्रद्धा के प्रतीक की आवश्यकता है परन्तु अध-श्रद्धा के प्रतीको की नही। सदा से इस देश का महान देवता पृथ्वी माता रही है। परमेश्वर खोखले आकाश में नहीं रहता, यह सत्य इस देश ने बहुत पहले से ही देश

लिया था। उसने हर जीव मे उसे देखा, मनुष्य मे उस परमशक्ति को पहचाना। इस देश ने ज्ञान और कर्म को ही अपने दर्शन का मुलाधार बनाया। इस प्रकार उसका दृष्टिकोण सृजनात्मक रहा है। यह सब बाते मनुष्य के आत्म-विश्वास को दृढ करती है। आज के युग मे हमे अपनी परपरा की यही शक्ति लेकर बढना है। मृत्यु के भय चक्र मे पडकर परलोक-चिंतन मे फँसाये रखने वाला दर्शन नितान्त जड और आत्मघातक है। इस परलोक वाले दर्शन और उसके धर्म को लोक-जीवन से समेट कर म्यूजियम मे रख देना ही उचित और समयानुकूल है। स्वामी विवेकानन्द ने कही कहा है कि आत्मविश्वास खोकर ईश्वर या माने हुए तैंतीस कोटि पौराणिक देवी-देवताओ मे विश्वास रखना गलत है। आत्मविश्वास ही नये युग का धर्म है।

हमारे आज के लोक जीवन मे फैले अविश्वास का दूसरा कारण आज की राजनीतिक पार्टियाँ है। इनके सचालक दूसरी प्रकार के पडित, पडे, ओझा-सयाने है। राजनीति जिस रूप मे आज प्रचलित है वह तनिक भी प्रगतिशील शक्ति नही है। राजनीति केवल दाँव-पेचो का अखाडा है, मानव हित के आदर्श से हीन, व्यक्तिगत अहकार के कारण राजनीति के खिलाडियो की बुद्धि, चतुराई और कार्य-कुशलता बहक गई है। वर्तमान राजनीति का जन्म साम्राज्यवाद से हुआ है। इसी साम्राज्यवादी नीति से औद्योगिक पूंजीवाद को शक्ति प्राप्त हुई है। उस शक्ति और जनहित का वैर स्वाभाविक है। साम्राज्यशाही चाहे पूंजीवाद की हो, राष्ट्रवाद, जातिवाद, धर्मवाद की हो सर्वथा गलत है। देश के पुराने-नये इतिहास के अनेक उदाहरण इस बात को सिद्ध करते है।

आज इस देश मे क्या काग्रेस, क्या सोशलिस्ट पार्टी, कम्यूनिस्ट पार्टी, जनसघ, हिन्दूमहासभा आदि जितनी भी राजनीतिक पार्टियाँ है—सब अधिकाश मे एक-एक से बढकर बेईमान, क्षुद्र आकाक्षाओ वाले जालसाज, दभी और मगरूरो द्वारा अनुशासित है, आदर्श ओर सिद्धान्त तो महज शिकार खेलने के लिए आड की टट्टियाँ है। इनका आपसी सघर्ष अधिकतर व्यक्तिगत है। इस देश की प्रतिक्रियावादी राजनैतिक शक्तियाँ भारतीय परपराओ को केवल रूढियो मे देखती है, तथाकथित प्रगतिशील शक्तियाँ भी अपने देश को केवल रूढियो ही मे पहचानती है, उसकी प्रगतिशील परपराओ की जानकारी उन्हे नही है या बहुत कम है, वे सारी प्रगतिशील परपराओ को केवल विदेशो ही मे देखती है। विदेशी परपराओ को वे यहाँ की परिस्थितियो पर जबरदस्ती लादना चाहती है।

जनजीवन अन्धविश्वास और भ्रान्तियो से जकडा हुआ है। ऐसी दशा मे बुद्धिवादी भला चुप बैठ सकते है? क्या आज वे भी पूंजी और व्यक्तिसत्तावादी वातावरण से प्रभावित होकर जनता को भरमाने मे ही योग देते रहेगे? क्या किसी को भी आज अपने देश से प्यार नही? देश की परपरागत अनेक सृजनात्मक शक्तियो पर अभिमान नही?

महिपाल कहा करता था कि बगाल के अकाल मे मनुष्य पर इतना सकट पडा कि सहते-सहते उनकी चेतना ही लुप्त हो गई। वह अपना नाम, अपने तक को भूल गया था। इस समय हम भारतीयो की भी यही दशा है। भारतीय यह भूल गया है कि वह भारतीय है, वह काग्रेसी है, सोशलिस्ट, जनसघी, कम्यूनिस्ट, अकाली है, वह यश-सिद्ध कवि,

कलाकार, नेता, डॉक्टर, बैरिस्टर, अफसर, या समाज मे 'कुछ' है, मगर अधिकाश मे भारतीय नही, मानव भी—?—नही। ये लोग प्राय दिन भर देश और मानवता का नाम झीकते हैं पर यह नही जानते कि उनका देश क्या है! उनके देश ने मानवता के मर्म को किस खूबी से पहचाना है! इस समय तो ऐसा लगता है कि इस देश मे, पृथ्वी पर, केवल व्यक्ति रहता है समाज नही। व्यक्ति केवल अपने दायरे मे रहता, सोचता और कर्म करता है। ऐसा लगता है जैसे हर व्यक्ति एक-एक द्वीप मे अलग-अलग है।

—क्या यह मनुष्य की प्राकृतिक स्थिति है ?—नही।

आज का मनुष्य अपने मन म कही न कही यह अवश्य अनुभव करता है कि वह गलत जा रहा है। इसलिए व्यक्ति अपने को नजर ओट कर हर दूसरे व्यक्ति को गलत बताता है। इससे हुज्जत बढती जाती है, आतक फैलता जाता है। मनुष्य की यह स्थिति अप्राकृतिक है।

मनुष्य का आत्मविश्वास जागना चाहिये, उसके जीवन मे आस्था जागनी चाहिये। मनुष्य को दूसरे के सुख-दुख मे अपना सुख-दुख मानना चाहिये। विचारो मे भेद हो सकता है, विचारो के भेद से स्वस्थ द्वन्द्व होता है और उससे उत्तरोत्तर उसका समन्वययात्मक विकास भी। पर शर्त यह है कि सुख-दुख मे व्यक्ति का व्यक्ति से अटूट सबध बना रहे—जैसे बूंद से बूंद जुडी रहती है—लहरो से लहरें। लहरो से समुद्र बनता है—इस तरह बूंद मे समुद्र समाया है।

सज्जन और कन्या एक लगन लेकर अपने छोटे से क्षेत्र मे मानवता का दर्शन करने के लिए कर्मरत हो गए। रूढिवादिता स्वय को सहार से बचाने से पहले कठिन प्रहार करती है, और भी करेगी परन्तु दोनो पति-पत्नी आस्था पर डटे रहेगे। व्यक्ति की सामाजिक चेतना जाग कर ही रहेगी।